

आचार्यपाणिनिप्रणीता

अष्टाध्यायी

(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक

राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान

गोरखपुर

आचार्यपाणिनिप्रणीता

अष्टाध्यायी

(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक

राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान

गोरखपुर

आचार्यपाणिनिप्रणीता
अष्टाध्यायी
(वार्तिकगणपाठसहिता)

सम्पादक
राजकिशोर मणि त्रिपाठी

संस्कृत सेवा संस्थान
गोरखपुर

प्रकाशक,

संस्कृत सेवा संस्थान

सी० १८९/१५९ खुरमपुर

पो०- गीताप्रेस

गोरखपुर-२७३००५

गीताप्रेस गीताप्रेस गीताप्रेस

गीताप्रेस

(गीताप्रेस गीताप्रेस गीताप्रेस)

अ) प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण

१९९८ ई०

गीताप्रेस गीताप्रेस गीताप्रेस

मूल्य : तीन सौ पचास रुपये

मुद्रक :

महावीर प्रेस

बी. २०/४४ भेलूपुर,

वाराणसी

गीताप्रेस गीताप्रेस गीताप्रेस

गीताप्रेस

प्रकाशकीय

पाणिनीय पद्धति से संस्कृत सीखने वाले व्यक्ति को दृष्टि में रखकर अष्टाध्यायी का यह संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इससे न केवल जिज्ञासु जनों को ही लाभ मिलेगा, अपितु, सभी को मिलेगा। इसमें सूत्रों के अर्थ के साथ अनुवृत्त पदों तथा अनुवृत्त होने वाले पदों एवं कौमुदी क्रमाङ्क का सन्निवेश किया गया है। साथ ही सूत्रों में प्रयुक्त वार्तिक एवं गणों का भी सन्निवेश सूत्रों के नीचे ही किया गया है। इससे विषय को सद्यः तथा स्थायी रीति से समझने में लाभ होगा।

यह विश्वास किया जाता है कि जिज्ञासु जन तथा शान-शौकत की पूर्ति में मँहगाई का उत्साहपूर्वक सामना करने वाले विद्यार्थी पुस्तक के मूल्य को अतिरिक्त बोझ न मानकर अपने ज्ञान का सम्वर्द्धन करेंगे।

FROM PUBLISHER'S PEN

This edition of **ASTHADHYAYI** is being published keeping in mind a learner of Sanskrit with the help of the PANINIYA system. This book will benefit not only the inguisitive but others also. In this book are included together with the meanings of the **SUTRAS**, ANUVRITTA and to be **Anuvritta Padas** and the serial numbers of **SUTRAS** given in **KAUMUDI**. At the same time under the very **SUTRAS** are given the **VARTIKAS** and the **GANAS** aslo. This will be helpful in a quick and lasting understanding of the text.

It is hoped that those who are keen to learn and those students who do not mind the rising cost when it comes to buying ostensible goods will not feel that the cost of the book will mean an additioned burden on them and will add to their knowledge by reading this book.

पाणिनये नमः

- (१) येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ॥ (पा० शि०)
- (२) येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः ॥ (पा० शि०)
- (३) अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः ॥ (पा० शि०)
- (४) पाणिनेराचार्यस्य सिद्धम् । (कात्यायन)
- (५) प्रमाणभूत आचार्यो दर्भपवित्रपाणिः शुचावकाशे
प्राङ्मुख उपविश्य महता यत्नेन सूत्रं प्रणयतिस्म ।
तत्राशक्यं वर्णेनाप्यनर्थकेन भवितुं किं पुनरियता सूत्रेण । (पतञ्जलि)
- (६) तत्राचार्यः सुहृद्भूत्वाऽन्याचष्टे । (पतञ्जलि)
- (७) तदनल्पमतेर्वचनं स्मरत । (पतञ्जलि)
- (८) आकुमारं यशः पाणिनेः । (पतञ्जलि)
- (९) यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम् । (पतञ्जलि)
- (१०) सर्ववेदपारिषदं हीदं शास्त्रम् । (पतञ्जलि)
- (११) शोभना खलु पाणिनेः सूत्रस्य कृतिः । (पतञ्जलि)
- (१२) पाणिनीयं महत् सुविहितम् । (पतञ्जलि)
- (१३) पाणिनि-शब्दो लोके प्रकाशते । (वामन)
- (१४) महती सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य । (वामन)
- (१५) मनसा वचसा च कर्मणा कृत एवायमिहानिवेशितः
न हि दर्भपवित्रपाणिताद्यपरं मङ्गलमत्र कीर्त्यते ॥ (हरदत्त)

(१६) For paninis Grammar is the centre of a vast and important branch of the anicient literature. No work has struck deeper roots than this in the soil of the scientific development of India.who is a Rishi in the proper sense of the word.

- (१७) पाणिनि ने संस्कृत भाषा को अमरता प्रदान की । (गोल्डस्ट्रुकर)
- (१८) भारतादन्यदेशेषु स्थापितं यैस्तु तद्यशः
तेषामग्र्याय मान्याय पाणिनये नमो नमः ॥ (वासुदेवशरण)
- (राजकिशोर)

समर्पण

जिनके तपः एवं स्वाध्याय से जमुई
'जमुई पण्डित' बना उन श्री रामदयालात्मज
महनीयकीर्ति पं० कुञ्जविहारी शुक्ल की
पावन भावना को उनके एक अन्यतम एवं
लघुतम दायभोक्ता के द्वारा सश्रद्ध समर्पित ।

—राजकिशोर मणि त्रिपाठी

श्री:

विभाकरं गणेशञ्च गौरीं मृत्युञ्जयं तथा
नारायणं हनुमन्तं श्रेयसे प्रणमाम्यहम् ।।

पुरोवाक्

अष्टाध्यायी का सम्पादन जिन लोगों ने सपरिश्रम किया है, उन्हें नमस्कार करके तथा उनके ग्रन्थों का अवलोकन करके वर्तमानकालोपयोगी एक अष्टाध्यायी संस्करण निकालने की अन्तःप्रेरणा मुझे हुई। फलस्वरूप यह संस्करण पाठकों के समक्ष है। इसके सम्पादन में मेरी भूमिका एक मालाकार की है। पुष्प किसी के हैं, चयन किसी ने किया है। मैंने तो सूई और तागा से काम किया है। फलस्वरूप इस माला की निर्मिति हुई है।

ग्रन्थस्वरूप—अध्याय और पाद का उल्लेख करके पाणिनीयसूत्र स्थूल अक्षर में बीच में दिया गया है। उसके सटे बायें सूत्राङ्क तथा सटे दायें सिद्धान्तकौमुदी का क्रमाङ्क दिया गया है। सिद्धान्तकौमुदी क्रमाङ्क के बाद उस सूत्र के जिन अंशों की अनुवृत्ति जहाँ तक जाती है, उसका उल्लेख किया गया है। सबसे बायें, उस सूत्र में पूर्व सूत्रों से जिन जिन पदों की अनुवृत्ति हुई है, उसका उल्लेख किया गया है तथा सबसे दायें राष्ट्रभाषामें संक्षिप्त अर्थ दिया गया है। सभी अन्वित पदों का समन्वय इसमें नहीं है। उसे ध्यान में रखना पड़ेगा। सूत्र लेखन के इस क्रम में जिन सूत्रों से सम्बद्ध वार्तिक मिलते हैं, उन्हें दूसरे टाइप में * इस चिह्न के अन्तर्गत उन्हीं सूत्रों के नीचे दिया गया है पर उनका अर्थ नहीं दिया गया है। क्योंकि सूत्रार्थ देना ही अपेक्षित था। जिन सूत्रों में गण का निर्देश आया है वहाँ सूत्र के नीचे गणशब्दों का उल्लेख भी कर दिया गया है। गणसूत्रों में अन्तर्गणसूत्र भी आते हैं, उन्हें वहाँ ही ऊपर या पार्श्व में एक क्रमाङ्क देकर निर्दिष्ट कर दिया गया है। अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करने में सुविधा के लिये बीस-बीस के छेदों में बाँटकर बचे हुये सूत्रों की संख्या पाद के अन्त में लिख दिया गया है। ग्रन्थ मुद्रण के बाद जो वार्तिक मिले उन्हें परिशिष्ट में संगृहीत कर दिया गया है। अन्त में सूत्रसूची, वार्तिकसूची, गणसूची तथा अन्तर्गणसूत्र सूची देकर ग्रन्थ को स्वरूप प्रदान किया गया है।

ग्रन्थोद्देश्य—पाणिनीय अष्टाध्यायी को पढ़ाने की दो विधियाँ सम्प्रति प्रचलित हैं। प्रथम में सूत्रों को स्मरण कराते हुए उनकी अनुवृत्ति आदि को ध्यान में रखकर सूत्रार्थ बताकर उदाहरण दिया जाता है। द्वितीय में प्रक्रिया के अनुसार सूत्रों का सङ्कलन कर निश्चित कार्य को निश्चित स्थान पर दिखाया जाता है तथा उदाहरण प्रस्तुत करके शब्द साधुत्व किया जाता है। ये दोनों ही विधियाँ सर्वथा निर्दुष्ट हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। अपितु, इन्हें एक दूसरे का पूरक मान लें तो सर्वथा सङ्गति बैठ जाती है। सूत्रक्रम से पढ़ने पर 'न धातुलोप आर्धधातुके' १.१.४ का अर्थ वहाँ ही प्रारम्भिक शिशु को समझाया ही नहीं जा सकता है। इसी प्रकार प्रक्रिया क्रम से पढ़ने पर सूत्रार्थ वैसा ही होता है, इसमें कोई प्रमाण नहीं बनता है तथा अर्थ करने में छात्र कुण्ठितबुद्धि हो जाता है। इसलिये सर्वप्रथम अष्टाध्यायी का, उसके क्रम के अनुसार, सामान्य ज्ञान कर एवं कराकर पुनः प्रक्रियाक्रम से उसका अनुशीलन करना एवं कराना ही वास्तविक विधि बनती है। इसी सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर इस पुस्तक का सम्पादन हुआ है। अष्टाध्यायी यदि बाल्यावस्था में कण्ठस्थ हो जाय तो इससे अच्छी बात कोई दूसरी नहीं है।

पाठन प्रक्रिया—आचार्य पाणिनि से कम से कम ३००० वर्ष पीछे हम हुये हैं। पाणिनिकाल में जैसा संस्कृत का प्रचार

था वैसा इस समय नहीं है। इसलिये प्रारम्भ में छात्रों को थोड़ा सा संस्कृत सिखाकर हमें अष्टाध्यायी प्रारम्भ करना चाहिये, जिससे छात्र सम्बुद्धौ बहुव्रीहौ तरप्तमपौ आदेःसर्वस्य आदि का अपनी मातृभाषा में अर्थ समझ लें। पुनः उन्हें सूत्र की शिक्षा दी जानी चाहिये। साथ में अनुवृत्ति का रहस्य बर्ताकर उनमें अर्थ करने की योग्यता उत्पन्न करनी चाहिये। यहाँ यथोद्देशपक्ष पर बल देना चाहिये। अवान्तर काल में प्रक्रिया ग्रन्थों के सहारे उन्हें व्युत्पन्न करना चाहिये तथा शब्दसाधुत्व बताना चाहिये।

विशेष—यह पुस्तक काशिकावृत्ति के आधार पर सम्पादित हुई है पर कहीं कहीं सिद्धान्त कौमुदी से भी सहायता ली गई है। यदि ईश्वरेच्छा से संस्करण की वृत्ति लिखी जा सकी तो अनागत विषयों की विस्तृत चर्चा उसमें होगी। यह संस्करण तो केवल स्वाध्याय एवं छात्र-पाठन के लिये है।

अन्त में इस पुस्तक के जटिल मुद्रण के लिये मैं महावीर प्रेस, वाराणसी के व्यवस्थापक को धन्यवाद देता हूँ।

कृष्णेन्द्रराज भवन,

गोरखपुर

अक्षय तृतीया, २०५५ वि०

राजकिशोर मणि त्रिपाठी

विषय सूची

१. प्रकाशकीय	
२. From Publisher's Pen	
३. पाणिनये नमः	
४. समर्पण	
५. पुरोवाक्	
६. अष्टाध्यायी	१
७. परिशिष्ट	३५७
८. सूत्रसूची	३६५
९. सपरिशिष्ट वार्तिक सूची	४०१
१०. गणपाठसूची	४११
११. अन्तर्गणसूत्रसूची	४१५

टिप्पणी

इस संस्करण में 'निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई' से १९२९ ई० तथा 'बालमनोरमा प्रेस, चेन्नई' से १९२९ ई० में छपी सिद्धान्त कौमुदी को आदर्श माना गया है।

लिखतः स्खलनं क्वापि

भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति पण्डितम्मन्याः

समादधति पण्डिताः ॥

श्रीः
अष्टाध्यायी

सूत्रपाठगणपाठवार्तिकपाठसहिता

अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्
लण्, जमङणनम्, झभञ्, घढधष,
जबगडदश्, खफछठथचटतव्,
कपय्, शषसर, हल्
इति माहेश्वराणि प्रत्याहारसूत्राणि ।

प्रथमोऽध्यायः
प्रथमः पादः

वृद्धिसंज्ञा			
१. वृद्धिरादैच् १६ ।	वृद्धिः ३	आत् और ऐच् वृद्धिसंज्ञक होते हैं ।	
गुणसंज्ञा			
२. अदेङ्गुणः १७ ।	गुणः ३	अत् और एङ् गुण कहलाते हैं ।	
गुणवृद्धिस्थानिनियम			
३. इको गुणवृद्धी ३४ ।	इकः ६ गुणवृद्धी ६	गुण और वृद्धि शब्द से जहाँ गुण और वृद्धि का विधान किया जाता है वहाँ इकः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित होता है ।	
गुणवृद्धिनिषेध			
गुणवृद्धी, इकः ४. न धातुलोप आर्धधातुके २६५६ ।	न ६	धात्वन्श लोप निमित्तक आर्धधातुक परे रहने पर इक् को गुणवृद्धि नहीं होती है ।	
न, गुणवृद्धी, इकः ५. विडिति च २२१७ ।		इक् को गुणवृद्धि तब नहीं होती है जब निमित्त गित्, कित् या डित् होता है ।	
न, गुणवृद्धी इकः ६. दीधीवेवीटाम् २१९० ।		दीधीङ्, वेवीङ् धातु तथा इट् को प्राप्त गुण वृद्धि नहीं होती है ।	
संयोग संज्ञा			
७. हलोऽनन्तराः संयोगः ३० ।		अच् से रहित दो या अनेक हलों के समुदाय की संयोग संज्ञा होती है ।	
अनुनासिक संज्ञा			
८. मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ९ ।		मुखसहित नासिका से उच्चार्यमाण वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं ।	

सवर्ण संज्ञा

१. तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् १० ।

* ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् ।

सवर्णम् १०

तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न (ये दोनों जिनका जिनसे) समान होते हैं वे परस्पर में सवर्ण संज्ञक होते हैं ।

सवर्णम्

१०. नाज्झली १३ ।

तुल्य आस्य प्रयत्न वाले अच् और हल् परस्पर में सवर्ण नहीं होते हैं ।

प्रगृह्य संज्ञा

११. ईदूदेदद्विवचनं प्रगृह्यम् १०० ।

ईदूत् १२

ईत् ऊत् एत् अन्त वाले द्विवचन शब्द प्रगृह्य संज्ञक होते हैं ।

प्रगृह्यम् १९

प्रगृह्यम्, ईदूत्

१२. अदसो मात् १०१ ।

अदस् शब्दावयव म से परे रहने वाले ईत् ऊत् प्रगृह्य होते हैं ।

प्रगृह्यम्

१३. शे १०२ ।

‘शे’ आदेश प्रगृह्य संज्ञक होता है । (वैदिक)

प्रगृह्यम्

१४. निपात एकाजनाङ् १०३ ।

निपातः १५

आङ् को छोड़कर एक अच् रूप निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है ।

प्रगृह्यम्, निपातः

१५. ओत् १०४ ।

ओत् १६

ओदन्त निपात प्रगृह्य संज्ञक होता है ।

प्रगृह्यम्, ओत्

१६. संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे १०५ ।

शाकल्यस्ये-१७
तावनार्षे

शाकल्य के मत में अवैदिक इति शब्द यदि पर में हो तो सम्बुद्धि निमित्तक ओकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है । (वैकल्पिक)

प्रगृह्यम्, शा-वै

१७. उजः १०६ ।

शा० के मत में अनार्ष इति के परे रहने पर उज् को प्रगृह्य संज्ञा होती है ।

प्रगृह्यम्, शा-वै

१८. ऊँ १०७ ।

शा० के मत में उज् को ऊँ ऐसा आदेश होता है और वह प्रगृह्य होता है ।

प्रगृह्यम्

१९. ईदूतौ च सप्तम्यर्थे १०९ ।

सप्तमी के अर्थ में पर्यवसित ईदन्त और ऊदन्त शब्द को प्रगृह्य संज्ञा होती है ।

घु संज्ञा

२०. दाघा घ्यदाप् २३७३ । ॥ १ ॥

डुदाज् दाण् दो देङ् डुधाज् धेट् धातु घु संज्ञक होते हैं । दाप् और दैप् को घु नहीं होता है ।

आद्यन्तवद्भाव

२१. आद्यन्तवदेकस्मिन् ३४८ ।

तदादि तदन्त को होने वाले कार्य तदादि तदन्त की तरह एक (अस-हाय) में भी हो ।

घ संज्ञा

२२. तरप्तमपौ घः २००३ ।

तरप् और तमप् (प्रत्यय) घ संज्ञक होते हैं ।

संख्या संज्ञा

२३. बहुगणवतुडति संख्या २५८ ।

संख्या २५

बहु गण वतु और डति संख्या संज्ञक होते हैं ।

षट् संज्ञा

संख्या

२४. षणान्ता षट् ३६९ ।

षट् २५

षान्त नान्त संख्यावाची शब्द षट् संज्ञक होते हैं ।

संख्या, षट्

२५. डति च २५९ ।

डति अन्त वाले संख्यावाची शब्द षट् संज्ञक होते हैं ।

निष्ठा संज्ञा

२६. क्तक्तवतु निष्ठा ३०१२ ।

क्त और क्तवतु (प्रत्यय) निष्ठा संज्ञक होते हैं ।

सर्वनाम संज्ञा

२७. सर्वादीनि सर्वनामानि २१३ ।

सर्वादीनि ३२ सर्व आदि वाले (परिगणित) शब्द सर्वनामानि ३६ सर्वनाम संज्ञक होते हैं ।

[ग.सू. १-३] सर्व विश्व उभ उभय डतर डतम अन्य अन्यतर इतर त्वत् त्व नेम सम सिम । 'पूर्वपरावर-दक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्' 'स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' । 'अन्तरं बहि-योगोप-संव्यानयोः' । त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि युष्मद् अस्मद् भवतु किम् ॥ इति सर्वादिः ॥१॥

सर्वादीनि, सर्व-नि

२८. विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ २९२ । बहुव्रीहौ २९

बहुव्रीहि दिक्समास में सर्वादि को विकल्प से सर्वनाम संज्ञा होती है ।

सर्वादीनि, सर्व-नि

२९. न बहुव्रीहौ २२२ ।

न ३१

बहुव्रीहि समास में सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।

बहुव्रीहौ

* अकच्वरौ तु कर्तव्यौ प्रत्यङ्गं मुक्तसंज्ञयौ ।

सर्वादीनि, न, सर्व-नि

३०. तृतीयासमासे-२२३ ।

तृतीयासमास में सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।

सर्वादीनि, न, सर्व-नि

३१. द्वन्द्वे च २२४ ।

द्वन्द्वे ३२

द्वन्द्व समास में भी सर्वादि को सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है ।

सर्वादीनि, सर्व-नि ३२. विभाषा जसि २२५ ।
द्वन्द्वे

विभाषा- ३६, द्वन्द्व समास में सर्वादि को जस्
जसि ३६ के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा
होती है । अर्थात् जस् को शी
विकल्प से होगा ।

विभाषा, जसि सर्व- ३३. प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च
नि २२६ ।

प्रथम आदि ७ शब्दों को जस्
के यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा
होती है ।

विभाषा, जसि सर्व- ३४. पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्था-
नि यामसंज्ञायाम् २१८ ।

पूर्वआदि ७ शब्दों को (गणपाठ
के कारण प्राप्त) सर्वनाम संज्ञा
जस् के यहाँ विकल्प से होगी ।
यदि व्यवस्था और असंज्ञा हो ।
ज्ञाति और धन से अतिरिक्त अर्थ-
वाले स्व शब्द को जस् के यहाँ
विकल्प से सर्वनाम संज्ञा हो ।

विभाषा, जसि सर्व- ३५. स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् २१९ ।
नि

बहिर्योग और उपसंव्यान अर्थ में
प्रयुक्त अन्तर शब्द को जस् के
यहाँ विकल्प से सर्वनाम संज्ञा हो ।

विभाषा, जसि सर्व- ३६. अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः २२० ।
नि * अपुरीति वक्तव्यम् ।

* विभाषाप्रकरणे तीयस्य डित्सूपसंव्यानम् ।
अव्यय संज्ञा

३७. स्वरदिनिपातमव्ययम् ४४७ ।

अव्ययम् ४१ स्वर आदि (परिगणित) शब्दों
तथा निपात को अव्यय संज्ञा होती
है ।

[ग.सू. ४-१५] स्वर अन्तर् प्रातर्-अन्तोदात्ताः ।
पुनर् सनुतर् उच्चैस् नीचैस् शनैस् ऋधक् ऋते
युगपत् आरात् (अन्तिकात्) पृथक्—आद्युदात्ताः ॥
ह्यस् श्वस् दिवा रात्रौ सायम् चिरम् मनाक् ईषत्
(शश्वत्) जोषम् तूष्णीम् वहिस् अधस् (अवस्)
समया निकषा स्वयम् मृषा नक्तम् नव् हेतौ (हे
है) इद्धा अद्धा सामि—अन्तोदात्ताः ॥ 'वत्' बत
सनत् सनात् तिरस्-आद्युदात्ताः ॥ अन्तरा—अन्तो-
दात्ताः ॥ (अन्तरेण) मक् ज्योक् योक् नक् कम्
शम् सना सहसा श्रद्धा अलम् स्वधा वषट् विना
नाना स्वस्ति अन्यत् अस्ति उपांशु क्षमा विहायसा
दोषा मुष्ठा दिष्ट्या वृथा मिथ्या । 'क्त्वातोसुन्कसुनः,
कृन्मकार-संध्यक्षरान्तः, अव्ययीभावश्च' पुरा मिथो
मिथिस् (प्रायस् मुहुस्) प्रबाहुकम् (प्रवाहिका)

आर्यहलम् अभीक्ष्णम् साकम् सार्धम् सत्रम् समम्
नमस् हिरुक् । तसिलादयस्तद्धिता एधाचपर्यन्ताः,
शस्तसी, कृत्वसुच्, सुच्, आस्थालौ, च्व्यर्थाश्च
(अथ) अम्, औम्, प्रताम्, (प्रतान्) प्रशान्—
आकृतिगणोऽयम् ॥ तेनान्येऽपि । तथाहि माङ् श्रम्
कामम् (प्रकामम्) भूयस् परम् साक्षात् साचि
(सावि) सत्यम् मङ्क्षु संवत् अवश्यम् सपदि
प्रादुस् आविस् अनिशम् नित्यम् नित्यदा सदा अजस्रम्
सन्ततम् उषा ओम् भूर् भुवर् इटिति तरसा सुष्ठु
कुअञ्जसा अ मिथु(अमिथु) विथक् भाजक् अन्वक्
चिराय चिरम् चिररात्राय चिरस्य चिरेण चिरात् अस्तम्
आनुषक् अनुषक् अनुषट् अम्रस् (अम्भस्) अम्मर्
(अम्भर्) स्थाने वरम् दुष्ठु बलात् शु अर्वाक्
शुदि वदि इत्यादि । तसिलादयः प्राक्पाशपः ।
शस्त्रमृतयः प्राक्समासान्तेभ्यः । मान्तः कृत्वोऽर्थः ।
तसिवती । नानजाविति—इति स्वरादिः ॥२॥

अव्ययम्

३८. तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ४४८ ।

जिससे सभी विभक्तियाँ उत्पन्न न
हों उस तद्धितान्त शब्द की अव्यय
संज्ञा होती है ।

अव्ययम्

३९. कृन्मेजन्तः ४४९ ।

मान्त एजन्त कृत् जिनके अन्त में
हों उन्हें अव्यय संज्ञा होती है ।

अव्ययम्

४०. क्त्वातोसुन्कसुनः ४५० । ॥२॥

क्त्वा तोसुन् कसुन् अन्त वाले शब्दों
की अव्यय संज्ञा होती है ।

अव्ययम्

४१. अव्ययीभावश्च ४५१ ।

अव्ययीभाव (समास) भी अव्यय
संज्ञक होता है ।

सर्वनामस्थान संज्ञा

४२. शि सर्वनामस्थानम् ३१३ ।

सर्वनामस्थानम् ४३ 'शि' को सर्वनामस्थान संज्ञा होती है ।
नपुंसक से अतिरिक्त सुट् (सु से औट्)
को सर्वनामस्थान संज्ञा होती है ।

सर्वनामस्थानम्

४३. सुडनपुंसकस्थ २२९ ।

विभाषा संज्ञा

४४. न वेति विभाषा २४ ।

न (निषेध) वा (विकल्प) इन
दोनों की विभाषा संज्ञा होती है ।

संप्रसारण संज्ञा

४५. इग्यणः संप्रसारणम् ३२८ ।

यण् के स्थान में प्रयुज्यमान इक्
की सम्प्रसारण संज्ञा होती है ।

आगमादेशस्थाननिर्देश

४६. आद्यन्तौ टकितौ ३६ ।

४७. मिदचोऽन्त्यात्परः ३७ ।

* अन्त्यात्पूर्वो मस्जेरनुषङ्गसंयोगादिलोपार्थम् ।

४८. एच इग्रस्वादेशो ३२३ ।

४९. षष्ठी स्थानेयोगा ३८ ।

५०. स्थानेऽन्तरमः ३९ ।

५१. उरण्परः ७० ।

* लपर इति वक्तव्यम् ।

५२. अलोऽन्त्यस्य ४२ ।

अलः, अन्त्यस्य ५३. डिच्च ४३ ।

५४. आदेः परस्य ४४ ।

५५. अनेकालिशत्सर्वस्य ४५ ।

स्थानिवद्भाव

५६. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ४९ ।

स्थानिवत्, आदेशः ५७. अचः परस्मिन्पूर्वविधौ ५० ।

स्थानिवत्, आदेशः ५८. न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानु-

अचः, परस्मिन्

स्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ५१ ।

* स्वरदीर्घयलोपेषु लोपाजादेशो न स्थानिवत् ।

* क्विलुगुपधात्वचङ्परनिर्हासिकुत्वेषूपसंख्या-
नम् ।

* पूर्वत्रासिद्धे न स्थानिवत् ।

* तस्य दोषः संयोगादिलोपलत्वणत्वेषु ।

टित् आगम आदि अवयव को और कित् अन्त्य को होता है ।

अचों के मध्य में अन्तिम अच् से परे मित् आगम होता है ।

ह्रस्वादेश में एच् को ह्रस्व इक् ही होता है ।

अनिर्द्धारित सम्बन्धविशेष षष्ठी स्थाने योग वाली होती है ।

स्थान में प्राप्त अनेकों में सदृशतम को आदेश होता है ।

ऋ के स्थान में होने वाले अण् के बाद रेफ जुड़ जाता है ।

अलः ५३, षष्ठीनिर्दिष्ट को होने वाला आदेश अन्त्यस्य ५३ । अन्तिम अल् को होता है ।

डित् आदेश भी अन्तिम अल् को होता है ।

पर को विहित कार्य उसके आदि को होता है ।

अनेकाल् कार्य और शित् कार्य सम्पूर्ण को होता है ।

स्थानिवत् ५९, अलाश्रय भिन्न कार्य करने में आदेश आदेशः ५९ । स्थानिसदृश होता है ।

अचः ५९, परनिमित्त अजादेश स्थानिसदृश होता है, यदि स्थानिभूत अच् से पूर्वत्वेन दृष्ट विधि कर्तव्य हो ।

पदान्त, द्विर्वचन, वरे, यलोप, स्वर, सवर्ण, अनुस्वार दीर्घ, जश् चर् विधियों में परनिमित्त अजादेश स्थानिवत् नहीं होता है ।

स्था०, आ०, अच्, ५९. द्विर्वचनेऽचि २२४३ ।
पर०

द्विर्वचन निमित्तक अच् के परे रहने पर यदि द्वित्व करना हो तो अच् को हुआ आदेश स्थानिवत् होता है। अर्थात् अच् को कोई आदेश नहीं होता है।

लोप संज्ञा

६०. अदर्शनं लोपः ५३ । ॥३॥

प्रसक्त का अदर्शन लोप कहलाता है।

६१. प्रत्ययस्य लुक्शलुलुपः २६० ।

(लुक् शलु लुप् शब्दों से किया गया) प्रत्यय का अदर्शन (क्रम-शः) लुक् शलु लुप् कहलाता है।

प्रत्ययलक्षण

६२. प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् २६२ ।

प्रत्ययलक्षणम्- प्रत्यय का लोप हो जाने पर भी प्रत्ययलक्षण कार्य होता है।

* वर्णाश्रये नास्ति प्रत्ययलक्षणम् ।

६३

६३. न लुमताऽङ्गस्य २६३ ।

लुक् शलु लुप् शब्दों से प्रत्यय के लुप्त होने पर अङ्ग को प्रत्ययलक्षण कार्य नहीं होता है।

* उत्तरपदत्वे चापदादिविधौ ।

प्रत्ययलक्षणम्

टि संज्ञा

६४. अचोऽन्त्यादि टि ७९ ।

अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है वह जिस समुदाय के आदि में हो, उस समुदाय की 'टि' संज्ञा होती है।

उपधा संज्ञा

६५. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा २४९ ।

अन्त्य अल् से पूर्व वर्ण को उपधा संज्ञा होती है।

* नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधिरनभ्यासविकारे ।

६६. तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ४० ।

सप्तमी निर्देश से विधीयमान कार्य वर्णान्तर से अव्यवहित पूर्व को होता है।

६७. तस्मादित्युत्तरस्य ४१ ।

पञ्चमी निर्देश से क्रियमाण कार्य वर्णान्तर से अव्यवहित पर को होता है।

शब्दस्वरूप ग्राहक

६८. स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा २५ ।

स्वं ७२,
रूपम् ७२ ।

* अर्थवग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम् ।

शब्द शास्त्र में जो संज्ञा होती है, उसे छोड़कर शब्द अपने रूप का संज्ञी होता है।

स्वं रूपम्

६९. अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः १४ ।

अविधीयमान (पर णकार तक का) अण् और उदित् (कु चु टु तु पु) सवर्ण के ग्राहक होते हैं और अपने रूप का भी बोधक होते हैं ।

स्वं रूपम्

७०. तपरस्तकालस्य १५ ॥

(त जिसके बाद हो अथवा त के बाद जो हो, दोनों प्रकार का) तपर अपना और अपने समकाल का ग्राहक होता है ।

स्वं रूपम्

७१. आदिरन्त्येन सहेता २ ।

अन्तिम इत् के साथ आदि वर्ण अपना और मध्यपतित वर्णों का ग्राहक होता है ।

स्वं रूपम्

७२. येन विधिस्तदन्तस्य २६ ।

जिस (विशेषण) से विधि हो रही हो वह अपना और जिसके अन्त में वह हो, उस पूरे समुदाय का भी बोधक होता है ।

* यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे ।

* समासप्रत्ययविधौ प्रतिषेधः ।

* उगिद्वर्णग्रहणवर्जम् ।

* सुसर्वार्थदिवच्छब्देभ्यो जनपदस्य ।

* ऋतोर्वृद्धिमद्विधावयवानाम् ।

* पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदुत्तरपदस्य च ।

* तन्मध्यपतितस्तदग्रहणेन गृह्यते ।

* अनिन्स्मन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति ।

* प्रत्ययग्रहणे चापञ्चम्याः ।

वृद्धसंज्ञा

७३. वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् १३३५ ।

* वा नामधेयस्य ।

वृद्धम् ७५ यस्या- जिस वर्ण समुदाय के अर्चों में आदि अच् वृद्धिसंज्ञक हो उस शब्द (वर्ण समुदाय) को वृद्ध संज्ञा होती है ।

यस्याचामादिः, वृद्धम् ७४. त्यदादीनि च १३३६ ।

त्यद् आदि (सर्वादिगण पठित १२ शब्द) की भी वृद्ध संज्ञा होती है ।

यस्याचामादिः, वृद्धम् ७५. एङ् प्राचां देशे १३३८ ।

* शैषिकेष्विति वक्तव्यम् ।

वृद्धिराद्यन्तवदव्ययीभावः प्रत्ययस्य लुक्पञ्चदश इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

यदि पूर्व के देश का नाम हो तो अर्चों में आदि अच् (विकल्प से) वृद्ध संज्ञक होता है ।

द्वितीयः पादः ।

डित्वातिदेश

१. गाङ्गुटादिभ्योऽङिण्डित् २४६१ ।
* व्यचेः कुटादित्वमनसि ।

डित् ४

(इङ् अध्ययने को होने वाले)
गाङ् आदेश से तथा कुटादि धातुओं से होने वाले प्रत्यय डित् होते हैं, यदि वे जित् तथा णित् न हों ।

डित्-डिद्वत्

ओविजी धातु से परे इडादि प्रत्यय डिद्वत् होते हैं ।

ऊर्णुञ् धातु से परे इडादि प्रत्यय विकल्प से डित् होते हैं ।

अपित् सार्वधातुक डिद्वत् होता है ।

डित्

२. विज इट् २५३६ ।

इट् ३

डित् इट्

३. विभाषोर्णोः २४४७ ।

डित्

४. सार्वधातुकमपित् २२३४ ।

अपित् ५

कित्वातिदेश

अपित्

५. असंयोगाल्लिट्कित् २२४२ ।

लिट् ६

- * ऋदुपधेभ्यो लिटः कित्त्वं गुणात्पूर्वविप्रति-
षेधेन । कित् २६

असंयोग से परे अपित् लिट् कित् होता है ।

कित् लिट्

६. इन्धिभवतिभ्यां च ३३९३ ।

- * ग्रन्थिग्रन्थिदम्भिभस्वङ्गीनां लिटः कित्त्वं वा ।

कित्

७. मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा

क्त्वा ८

३३२३ ।

इन्धी और भू धातु से परे लिट् कित् होता है ।

मृड मृद गुध कुष क्लिश वद् वस धातुओं से परे (सेट्) क्त्वा कित् होता है ।

कित् क्त्वा

८. रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च २६०९ । सन् १०

कित् सन्

९. इको झल् २६१२ ।

इकः ११

झल् १३

इगन्त धातुओं से परे झलादि सन् कित् होता है ।

- कित् सन् इकः झल् १०. हलन्ताच्च २६१३ ।

हलन्तात् ११

इक् समीप हल् से परे झलादि सन् कित् होता है ।

- कित् हलन्तात् इकः ११. लिङ्सिचावात्मनेपदेषु २३०० ।
झल्

लिङ् सिचौ १३

इक् समीप हल् से परे झलादि लिङ् आत्मनेपदेषु १७ और आत्मनेपदपरक सिच् दोनों कित् होते हैं ।

- कित् लिङ् सिचौ, १२. उश्च २३६८ ।
आत्मने०, झल्

ऋवर्ण से परे झलादि लिङ् और आत्मनेपद परक सिच् दोनों कित् होते हैं ।

कित् लिङ् सिचौ, १३. वा गम्: २७०० ।
आत्मने०, झल्

कित् आत्मने० १४. हनः सिच् २६ ९७ ।

सिच् १७

कित् आत्मने० सिच् १५. यमो गन्धने २६९८ ।

यमः १६

कित् यमः आ- १६. विभाषोपयमने २७३० ।
त्मने० सिच्

कित् आत्मने० सिच् १७. स्थाघ्वोरिच्च २३८९ ।

कित् १८. न क्त्वा सेट् ३३२२ ।
कित् न सेट् १९. निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः
३०५२ ।

सेट् २६ न २५
निष्ठा २२

सेट् क्त्वा कित् नहीं होता है ।
शीङ् स्विदि मिदि क्ष्विदि धृष् से
परे सेट् निष्ठा कित् नहीं होती
है ।

कित् न सेट् निष्ठा २०. मृषस्तितिक्षायाम् ३०५५ । ॥१॥

कित् न सेट् निष्ठा २१. उदुपधाद्वावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्
३०५६ ।

तितिक्षा अर्थ में मृष से परे सेट्
निष्ठा कित् नहीं होती है ।

उत् उपधा वाले धातुओं में परे
भाव तथा आदिकर्म में वर्तमान
सेट् निष्ठा कुछ लोगों की राय में
कित् नहीं होती है । अर्थात् विकल्प
से कित् होती है ।

कित् न सेट् निष्ठा २२. पूङ्गः क्त्वा च ३०५१ ।

क्त्वा २६

कित् न सेट् क्त्वा २३. नोपधात्थफान्ताद्वा ३३२४ ।

वा २६

पूङ् धातु से जहाँ इट् होता है
वहाँ सेट् क्त्वा तथा निष्ठा कित्
नहीं होती है ।

नकारोपध धातु थान्त तथा फान्त
धातु से परे सेट् क्त्वा विकल्प से
कित् नहीं होता है ।

कित् न सेट् वा २४. वञ्चिलुञ्जितश्च ३३२५ ।
क्त्वा

वञ्चि लुञ्चि ऋत् धातुओं से परे
सेट् क्त्वा विकल्प से कित् नहीं
होता है ।

कित् न सेट् वा क्त्वा २५. तृषिमृषिकृशोः काश्यपस्य ३३२६ ।

कित् सेट् वा क्त्वा २६. रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च २६१७ ।

काश्यप के मत से तृषि मृषि कृशि धातुओं से परे सेट् क्त्वा विकल्प से कित् नहीं होता है ।

इकार उकार उपधावाले रल् प्रत्याहारान्त हलादि धातुओं से परे सेट् क्त्वा तथा सन् विकल्प से कित् होते हैं ।

ह्रस्वादि संज्ञा

२७. ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ४ ।

ह्रस्व दीर्घ प्लुतः उ ऊ ऊ३ के उच्चारण काल के समान जिनका काल हो, ऐसे अच् क्रम से ह्रस्व दीर्घ तथा प्लुत संज्ञक होते हैं ।

ह्रस्वादिस्थान निर्देश

ह्रस्व दीर्घ प्लुतः २८. अचश्च ३५ ।

ह्रस्व दीर्घ प्लुत शब्द से विधीयमान कार्य स्वस्थानीय अच् को होंगे ।

स्वरविधि

२९. उच्चैरुदात्तः ५ ।

ऊर्ध्व अधः भाग में बटे तालु आदि स्थानों में ऊर्ध्व भाग में निष्पन्न अच् उदात्त संज्ञक होता है ।

३०. नीचैरनुदात्तः ६ ।

अधः भाग में निष्पन्न अच् अनुदात्त संज्ञक होता है ।

३१. समाहारः स्वरितः ७ ।

ऊर्ध्व और अधः दोनों भागों से एक साथ निष्पन्न अच् स्वरित संज्ञक होता है ।

३२. तस्यादित उदात्तमर्धह्रस्वम् ८ ।

स्वरित की पहली आधी मात्रा उदात्त होती है । (शेष मात्रायें अनुदात्त होती हैं ।)

३३. एकश्रुति दूरात्संबुद्धौ ३६६२ ।

एकश्रुति ३९ दूर से सम्बोधन में वाक्य एकश्रुति होता है ।

एकश्रुति

३४. यज्ञकर्मण्यजपन्यूहसामसु ३६६३ ।

यज्ञकर्मणि ३५ जप न्यूह साम को छोड़कर यज्ञ क्रिया में मन्त्र एकश्रुति होता है ।

एकश्रुति यज्ञकर्मणि ३५. उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ३६६४ ।

यज्ञ कर्म में वौषट् का उच्चारण उदात्ततर अथवा एकश्रुति विकल्प से होता है ।

एकश्रुति

३६. विभाषा छन्दसि ३६६५ ।

छन्द में एकश्रुति विकल्प से होती है ।

एकश्रुति	३७. न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः ३६६६ स्वरितस्य ३८	सुब्रह्मण्या नामक निगद में एकश्रुति नहीं होती है। स्वरित को उदात्त हो जाता है।
एकश्रुति स्वरितस्य	३८. देवब्रह्मणोरनुदात्तः ३६६७।	सुब्रह्मण्या में ही 'देवा ब्रह्माणः' में स्वरित को अनुदात्त हो जाता है।
एकश्रुति	३९. स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् ३६६८। अनुदात्तानाम् ४०	स्वरित से परे अनुदात्तों को एकश्रुति हो जाता है संहिता में।
अनुदात्तस्य	४०. उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ३६६९।।२।।	उदात्तस्वरित परक अनुदात्त अनुदात्ततर हो जाता है।

अपृक्त संज्ञा

४१. अपृक्त एकात्प्रत्ययः २५१।

एक अल् वाला प्रत्यय अपृक्त संज्ञक होता है।

कर्मधारय संज्ञा

४२. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
७४५।

समानाधिकरण अनेक पदों वाला तत्पुरुष कर्मधारय संज्ञक होता है।

उपसर्जन संज्ञा

४३. प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ६५३। समासे ४४
उपसर्जनम् ४४

समास शास्त्र में प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट उपसर्जन संज्ञक होता है। पूर्वनिपात छोड़कर विग्रहवाक्य में जो नियत विभक्तिक होता है वह उपसर्जन संज्ञक होता है।

समासे उपसर्जनम् ४४. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ६५५।
* एकविभक्तावषष्ठ्यन्तवचनम्।

प्रातिपदिक संज्ञा

४५. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् १७८ प्रातिपदिकम् ४६
* निपातस्थानर्थकस्य प्रातिपदिकसंज्ञा वक्तव्या।

धातु प्रत्यय प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् शब्दस्वरूप प्रातिपदिक संज्ञक होता है।

प्रातिपदिकम् ४६. कृतद्धितसमासाश्च १७९।

कृदन्त तद्धितान्त और समास प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

ह्रस्वविधि

४७. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ३१८। ह्रस्वः ४८

नपुंसक में प्रातिपदिक (अजन्त) को ह्रस्व होता है।

ह्रस्वः, प्रातिपदिकस्य ४८. गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ६५६।

प्रा० ४८

स्त्रियाः ४९

उपसर्जन गोशब्दान्त उपसर्जन स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है।

* ईयसो बहुव्रीहेनेति वाच्यम्।

उप स० ४९

लुक्

स्त्रियाः, उपसर्जनस्य ४९. लुक्द्धितलुकि १४०८।

तद्धित लुकि ५० तद्धित लुक् रहने पर उपसर्जन स्त्रीप्रत्यय का लुक् होता है।

- तद्धितलुकि ५०. इदादेश
तद्धितलुक् रहने पर गोणी के ई को इ हो जाता है ।
- युक्तवद्भाव
तद्धित (स्य) ५१. लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने १२९४ । लुपि, यु०, व्य० लुप् होने पर लिङ्ग और वचन प्रकृतिवत् रहते हैं ।
* समास उत्तरपदस्य बहुवचनस्य लुपः । ५२ लुप् होने पर लुबर्थ के विशेषणों के लिङ्ग और वचन प्रकृतिवत् रहते हैं, जाति को छोड़कर ।
- तद्धितलुपि, व्यक्ति- ५२. विशेषणानां चाजातेः १३०० ।
वचने, युक्तवत् * हरीतक्यादिषु व्यक्तिः ।
* खलतिकादिषु वचनम् ।
* मनुष्यलुपि प्रतिषेध ।
- अशिष्यत्वा
अशिष्यः ५३. तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् १२९५ । अशिष्यम् ५७ संज्ञा प्रमाण होने से 'युक्तवत्' यह नहीं कहना चाहिये ।
५४. लुब्धोगाप्रख्यानात् १२९६ । लुप् (भी) नहीं कहना चाहिये ।
(क्योंकि यहाँ) अवयवार्थ की प्रतीति नहीं हो रही है ।
५५. योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् १२९७ । यदि अवयवार्थ का बोधक होता तो उसके अभाव में दर्शन नहीं होता ।
- अशिष्यम् ५६. प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् अर्थस्य, अन्य- प्रत्ययार्थ प्रधान है, ऐसा भी नहीं १२९८ । प्रमाणत्वात् ५७ कहना चाहिये । क्योंकि अर्थ अन्य प्रमाण है । अर्थात् अर्थ लोक से सिद्ध होता है ।
काल और उपसर्जन में भी अशिष्यता समान है । क्योंकि अर्थ की सिद्धि लोक से होती है ।
- (अशिष्यम्, अर्थस्य ५७. कालोपसर्जने च तुल्यम् १२९९ ।
अन्य प्रमाणत्वात्
- वचनातिदेश
५८. जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् बहुवचनम् ६० जाति कही जाने पर एकवचन के ८१७ । अन्यतरस्याम्- स्थान में विकल्प से बहुवचन भी होता है ।
* संख्याप्रयोगे प्रतिषेधः । ६२
बहुवचनम् अन्यतर- ५९. अस्मदो द्वयोश्च ८१८ । द्वयोः ६० अस्मत् शब्द से एकत्व और द्वित्व की विवक्षा में विकल्प से बहुवचन भी हो सकता है ।
स्याम् * सविशेषणस्य प्रतिषेधः ।
बहुवचनम् अन्यतर- ६०. फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ८१९ । नक्षत्र वाचक फल्गुनी और प्रोष्ठपद शब्द से द्वित्व के अर्थ में विकल्प से बहुवचन भी हो सकता है ।
स्याम्, द्वयोः ॥ ३ ॥

अन्यरस्याम्

६१. छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ३३८७ । छन्दसि ६२

द्विवचन पुनर्वसु शब्द में वेद में

एकवचनम् ६२

एकवचन भी हो सकता है ।

एकवचनम् छन्दसि, ६२. विशाखयोश्च ३३८८ ।

द्विवचन विशाखा शब्द में वेद में

अन्यरस्याम्

एकवचन भी हो सकता है ।

६३. तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विव-
चनं नित्यम् ८२० ।नक्षत्र वाचक तिष्य (१) और पुन-
र्वसु (२) के द्वन्द्व में प्राप्त बहुवचन
को नित्य द्विवचन होता है ।

एकशेष

६४. सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ १८८ । शेषः ७३

एक विभक्ति में समानरूप वाले
शब्दों में एक ही अवशिष्ट रहता
है ।* विरूपाणामपि समानार्थकानामेकशेषो व-
क्तव्यः ।

शेषः (शिष्यते) ६५. वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ९३१ । वृद्धो यूना ६६,

तल्लक्षणश्चेदेव

विशेषः ६९

यदि गोत्र और युव निमित्तक ही
भेद हो तो गोत्रवाचक और
युववाचक शब्दों में गोत्रवाचक
अवशिष्ट रहता है ।

शेषः वृद्धो-विशेषः ६६. स्त्री पुंवच्च ९३२ ।

गोत्र वाचक स्त्रीलिङ्गान्त शब्द और
युववाचक पुँल्लिङ्ग शब्दों में स्त्री
शब्द ही शिष्ट रहता है यदि
गोत्रवाचक का अर्थ पुँल्लिङ्गवत्
हो ।

शेषः तल्ल-विशेषः ६७. पुमान्स्त्रिया ९३३ ।

पुंस्त्व और स्त्रीत्व मात्र से भेद
रहने पर पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग
शब्दों में पुँल्लिङ्ग अवशिष्ट रहता
है ।

शिष्यते

६८. भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ९३४ ।

भ्रातृ और स्वसृ शब्द तथा पुत्र
और दुहितृ शब्द साथ कहे जाँय
तो क्रमशः भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट
रहता है ।

शेषः तल्ल-विशेषः ६९. नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् अन्यतरस्याम् ७१

९३५ ।

नपुंसक और अनपुंसक मात्र का
भेद हो तो अनपुंसक और नपुंसक
में नपुंसक अवशिष्ट रहता है और
वह विकल्प से एकवत् होता है ।

शेषः अन्यतरस्याम् ७०. पिता मात्रा ९३६ ।

मातृ शब्द के साथ पितृ शब्द को
कहने पर विकल्प से पितृ शब्द
अवशिष्ट रहता है ।

शेषः अन्यतरस्याम् ७१. श्वशुरः श्वश्वा ९३७ ।

शेषः ७२. त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ९३८ ।
 * त्यदादितः शेषे पुंनपुंसकतो लिङ्गवचनानि ।
 * अद्वन्द्वतत्पुरुषविशेषणानाम् ।
 शेषः ७३. ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री ९३९ ।
 * अनेकशफेष्विति वक्तव्यम् ।

गाङ्गुटाद्युदुपधादपृक्तश्छन्दसि पुनर्वस्वोस्त्रयोदश
 इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

श्वश्रू शब्द के साथ कहा गया श्वशुर शब्द विकल्प से अवशिष्ट रहता है ।

सभी शब्दों के साथ कहे गये त्यद् आदि शब्द नित्य अवशिष्ट रहते हैं ।

तरुण भिन्न ग्राम्य पशुओं के सङ्घों में स्त्री ही अवशिष्ट रहती है ।

तृतीयः पादः ।

धातुसंज्ञा

१. भूवादयो धातवः १८ ।

(क्रिया वाची) भू आदि (पठित) शब्दों की धातु संज्ञा होती है ।

इत्संज्ञा

२. उपदेशोऽनुनासिक इत् ३ ।

इत् ८
 उपदेशे ३

उपदेश (अवस्था) में अनुनासिक अच् की इत् संज्ञा होती है ।

इत् उपदेशे

३. हलन्त्यम् १ ।

उपदेश (अवस्था) में अन्तिम हल् की इत् संज्ञा होती है ।

इत्

४. न विभक्तौ तुस्माः १९० ।

विभक्ति में वर्तमान तु स् और म् की इत् संज्ञा नहीं होती है ।

इत्

५. आदिर्जिटुडवः २२८९ ।

आदिः ८

(उपदेश में धातु के) आदि में वर्तमान जि टु डु की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः

६. षः प्रत्ययस्य ४७४ ।

प्रत्ययस्य ८

प्रत्यय के आदि में वर्तमान ष की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः प्रत्ययस्य ७. चुट् १८९ ।

* इर इत्संज्ञा वक्तव्या ।

प्रत्यय के आदि में रहने वाले चु और टु की इत् संज्ञा होती है ।

इत् आदिः प्रत्ययस्य ८. लशक्वतद्धिते १९५ ।

तद्धित भिन्न प्रत्यय के आदि में रहने वाले ल् श् और कु इत् संज्ञक होते हैं ।

९. तस्य लोपः ६२ ।

उस (इत् संज्ञक) का लोप होता है ।

संख्यातानुदेश

१०. यथासंख्यमनुदेशः समानाम् १२८ ।

सम संख्या वालों का क्रमानुसार विधान होता है ।

अधिकारस्वरूपनिर्देश

११. स्वरितेनाधिकारः ४६ ।

स्वरित (चिह्न) से अधिकार जानना चाहिये ।

आत्मनेपद

१२. अनुदात्तङित आत्मनेपदम् २१५७ ।

आत्मनेपदम् ७७ अनुदात्तेत् और (उपदेश) में जो ङित् हैं तदन्त धातुओं से होने वाला लकार आत्मनेपद होगा । भाव और कर्म में होने वाला लकार आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम् १३. भावकर्मणोः २६७९ ।

आत्मनेपदम् १४. कर्तरि कर्मव्यतिहारे २६८० ।

कर्मव्यतिहारे १६ कर्मव्यतिहार होने पर धातु से कर्ता कर्तरि ७८ अर्थ में आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि १५. न गतिहिंसार्थेभ्यः २६८१ ।

न १६ गत्यर्थक और हिंसार्थक धातुओं से कर्म व्यतिहार में भी आत्मनेपद नहीं होता है ।

कर्म-हारे * हसादीनामुपसंख्यानम् ।

* हरतेरप्रतिषेधः ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि १६. इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च २६८२ ।

न, कर्म-हारे * परस्परौपपदाच्चेति वक्तव्यम् ।

इतरेतर और अन्योन्य उपपद वाले धातु से कर्मव्यतिहार में आत्मनेपद नहीं होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि १७. नेर्विशः २६८३ ।

नि पूर्वक विश् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि १८. परिव्यवेभ्यः क्रियः २६८४ ।

परि वि अव पूर्वक डु क्रीञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि १९. विपराभ्यां जेः २६८५ ।

वि और परापूर्वक जि धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २०. आङो दोऽनास्यविहरणे २६८६ ।।१।। आङ् २१

* स्वाङ्कर्मकाच्चेति वक्तव्यम् ।

मुखविकसन से भिन्न अर्थ में आङ्पूर्वक डुदाञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २१. क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च २६८७ ।

आङ् * समोऽकृजने ।

अनु सम् परि तथा आङ् पूर्वक क्रीड् विहारे धातु से आत्मनेपद होता है ।

* आगमेः क्षमायाम् ।

* शिक्षेर्जिज्ञासायाम् ।

* किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ।

* हरतेर्गतताच्छील्ये ।

* आङि नुप्रच्छयोः ।

* आशिषि नाथः ।

* शप उपालम्भने ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २२. समवप्रविभ्यः स्थः २६८९ ।

स्थः २६

सम् अव प्र वि पूर्वक ष्ठा धातु से आत्मनेपद होता है ।

* आङः प्रतिज्ञायाम् ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २३. प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च २६९० ।

स्थः

स्वाभिप्रायकथन तथा विवादपद निर्णेतारूप अर्थकथन में ष्ठा धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २४. उदोऽनुर्ध्वकर्मणि २६९१ ।

स्थः

* ईहायामिति वक्तव्यम् ।

अनुर्ध्वकर्म अर्थ में वर्तमान स्था धातु को, यदि वह उत्पूर्व हो तो आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २५. उपान्मन्त्रकरणे २६९२ ।

उपात् २६

मन्त्रकरण अर्थ में वर्तमान उप पूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है ।

स्थः * उपादेवपूजासंगतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम् ।

* वा लिप्सायामिति वक्तव्यम् ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २६. अकर्मकाच्च २६९३ ।

स्थः उपात्

अकर्मकात् २९ अकर्मक क्रियावाची उप पूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २७. उद्धिभ्यां तपः २६९४ ।

अकर्मकात्

* स्वाङ्गकर्मकाच्च ।

अकर्मक क्रियावाची उत् और विपूर्वक तप धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २८. आङो यमहनः २६९५ ।

अकर्मकात्

* स्वाङ्गकर्मकाच्च ।

अकर्मक क्रियावाची आङ्पूर्वक यम उपरमे तथा हन हिंसागत्योः धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि २९. समो गम्यृच्छिभ्याम् २६९९ ।

अकर्मकात्

* विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम् ।

* अतिश्रुदृशिभ्यश्च ।

* उपसर्गादिस्यत्युहोर्वा वचनम् ।

अकर्मक क्रियावाची सम् पूर्वक गम्ल् गतौ तथा तौदादिक ऋच्छ धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३०. निसमुपविभ्यो ह्रः २७०३ ।

ह्रः ३१

नि सम् उप वि पूर्वक ह्रेञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३१. स्पर्धायामाङः २७०४ ।

ह्रः

स्पर्द्धा का विषय रहने पर आङ्-पूर्वक ह्रेञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३२. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्न- कृजः ३५
प्रकथनोपयोगेषु कृजः २७०५ ।

गन्धन अवक्षेपण सेवन साहसिक्य प्रतियत्न प्रकथन तथा उपयोग अर्थों में डुकृञ् करणे धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३३. अधेः प्रसहने २७०६ ।

कृजः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३४. वेः शब्दकर्मणः २७०७ ।

वेः ३५

कृजः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३५. अकर्मकाच्च २७०८ ।

कृजः वेः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३६. संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञानभृतिविग- नियः ३७
णानव्ययेषु नियः २७०९ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३७. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि २७१० ।

नियः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३८. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः २७११ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ३९. उपपराभ्याम् २७१२ ।

क्रमः वृत्तिसर्गताय-
नेषु

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४०. आङ उद्गमने २७१३ ।।२।।

क्रमः * ज्योतिरुद्गमन इति वक्तव्यम् ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४१. वेः पादविहरणे २७१४ ।

क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४२. प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् २७१५ ।

क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४३. अनुपसर्गाद्वा २७१६ ।

क्रमः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४४. अपह्ववे ज्ञः २७१७ ।

ज्ञः ४६

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४५. अकर्मकाच्च २७१८

ज्ञः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४६. संप्रतिभ्यामनाध्याने २७१९ ।

ज्ञः

प्रसहन अर्थ में अधिपूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

शब्दकर्म अर्थ में वर्तमान वि पूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

अकर्मक वि पूर्वक डुकृञ् धातु से आत्मनेपद होता है ।

सम्मानन उत्सञ्जन आचार्यकरण ज्ञान भृति विगणन व्यय अर्थों में णीञ् प्रापणे धातु से आत्मनेपद होता है ।

कर्तृस्थ कर्म के रहने पर शरीरावयव भिन्न में ही णीञ् प्रापणे से आत्मनेपद होता है ।

वृत्ति सर्ग तायनेषु वृत्ति सर्ग तायन अर्थ में क्रम् धातु ३९ क्रमः ४३ से आत्मनेपद होता है ।

वृत्ति सर्ग तायन अर्थ में यदि क्रम धातु उप और परापूर्वक हो तो भी आत्मनेपद होता है ।

उद्गमन अर्थ में वर्तमान आङ्-पूर्वक क्रम धातु से आत्मनेपद होता है ।

पादविहरण अर्थ में वर्तमान वि पूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है ।

तुल्यार्थ प्र उप पूर्वक क्रम् धातु से आत्मनेपद होता है ।

उपसर्ग रहित क्रम धातु से विकल्प से आत्मनेपद होता है ।

अपह्वव अर्थ में वर्तमान ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।

अकर्मक अर्थ में वर्तमान ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।

अनाध्यान अर्थ में वर्तमान सम् प्रति पूर्वक ज्ञा धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ४७. भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ५० वदः २७२० ।	भासन उपसंभाषा ज्ञान यत्न विमति उपमन्त्रण अर्थ में वर्तमान वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ४८. व्यक्तवाचां समुच्चारणे २७२१ । वदः	व्यक्ता वाक् के सामूहिक उच्चारण में वर्तमान वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ४९. अनोरकर्मकात् २७२२ । वदः व्य०-णे	व्यक्तवाक् विषयक अनुपूर्वक अ- कर्मक वद् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५०. विभाषा विप्रलापे २७२३ । वदः व्य०-णे	व्यक्त वाक् विषयक विप्रलाप अर्थ में प्रयुक्त वद् धातु से विकल्प से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५१. अवादग्रः २७२४ ।	ग्रः ५२ अव पूर्वक गृ निगरणे धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५२. समः प्रतिज्ञाने २७२५ । ग्रः	प्रतिज्ञान अर्थ में वर्तमान सम् पूर्वक गृ शब्दे धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५३. उदश्चरः सकर्मकात् २७२६ ।	चरः ५४ सकर्मक उत् पूर्वक चर् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५४. समस्तृतीयायुक्तात् २७२७ । चरः	समस्तृतीयायु- तृतीया विभक्ति से युक्त सम् पूर्वक क्तात् ५५ चर् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५५. दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे २७२८ । सम०-त् * अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया भवतीति वक्तव्यम् ।	चतुर्थी के अर्थ में वर्तमान तृतीया से युक्त दाण् दाने धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५६. उपाद्यमः स्वकरणे २७२९ ।	स्वकरण अर्थ में वर्तमान उप पूर्वक यम् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५७. ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः २७३१ ।	सनः ५९ सन्नन्त ज्ञा श्रु स्मृ दृश् धातु से आत्मनेपद होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५८. नानोर्ज्ञः २७३२ । सनः	न ५९ सन्नन्त अवपूर्वक ज्ञा धातु से आत्मनेपद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ५९. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः २७३३ । सनः, न	सन्नन्त प्रति आङ्पूर्वक श्रु धातु से आत्मनेपद नहीं होता है ।
आत्मनेपदम्, कर्तरि ६०. शदेः शितः २३६२	॥ ३ ॥ शितः ६१ शित् शदत्त शातने धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६१. प्रियतेर्लुङ्लिङोश्च २५३८ ।

शितः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६२. पूर्ववत्सनः २७३४ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६३. आम्प्रत्ययवत्कृओऽनुप्रयोगस्य २२४० ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६४. प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु २७३५ ।

* स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वक्तव्यम् ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६५. समः क्षणुवः २७३६ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६६. भुजोऽनवने २७३७ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६७. णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ताऽनाध्याने णेः ७१

२७३८ ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६८. भीस्म्योर्हेतुभये २५९४ ।

णेः

आत्मनेपदम्, कर्तरि ६९. गृध्रिवङ्मयोः प्रलम्भने २७३९ ।

णेः

प्रलम्भने ७०

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७०. लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च २५९२ ।

णेः प्रलम्भने

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७१. मिथ्योपपदात्कृओऽभ्यासे २७४० ।

णेः

मृङ् प्राणत्यागे से लुङ् लिङ् तथा शित् के यहाँ ही आत्मनेपद होता है ।

सन् होने से पहले जो धातु आत्मनेपद होता है, वह सन्नत के बाद भी रहता है ।

आम् प्रत्यय जिससे हुआ हो उससे कृज् का अनुप्रयोग होने पर कृज् को भी आत्मनेपद होता है ।

अयज्ञपात्रविषयक प्र उप पूर्वक युजिर् योगे धातु से आत्मनेपद होता है ।

सम् पूर्वक क्षणु तेजने धातु से आत्मनेपद होता है ।

अपालन अर्थ में प्रयुक्त भुज पालनाभ्यवहारयोः धातु से आत्मनेपद होता है ।

अण्यन्तावस्था की क्रिया यदि ण्यन्तावस्था में भी हो, अण्यन्तावस्था में प्रयुक्त कर्म यदि ण्यन्त में कर्ता हो तो धातु से आत्मनेपद होता है । आध्यान को छोड़कर । हेतु से यदि भय और स्मय हो तो ण्यन्त जिभी और स्मय् धातु से आत्मनेपद होता है ।

प्रलम्भन अर्थ में वर्तमान ण्यन्त गृधु तथा वञ्चु धातु से आत्मनेपद होता है ।

संमानन शालीनीकरण तथा प्रलम्भन अर्थ में विद्यमान ण्यन्त लीड् और ली धातु से आत्मनेपद होता है ।

अभ्यास अर्थ में विद्यमान मिथ्या उपपद से युक्त ण्यन्त कृ धातु से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम् कर्तरि ७२. स्वरितजितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले
२१५८ ।

कर्त्रभिप्राये क्रि- कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर स्वरि-
याफले ७७ तेत् और जित् धातु से आत्मनेपद
होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७३. अपाद्धः २७४१ ।
कर्त्र-फले

कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर अप
पूर्वक वद् धातु से आत्मनेपद होता
है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७४. णिचश्च २५६४ ।
कर्त्र-फले

कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर णिजन्त
से आत्मनेपद होता है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७५. समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे २७४२ ।
कर्त्र-फले

कर्तृगामी क्रियाफल रहने पर सम्
उत् आङ् पूर्वक यम् धातु से
आत्मनेपद होता है यदि प्रयोग ग्रन्थ
विषयक न हो ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७६. अनुपसर्गाज्जः २७४३ ।
कर्त्र-फले

अनुपसर्ग ज्ञा धातु से कर्तृगामी
क्रियाफल रहने पर आत्मनेपद होता
है ।

आत्मनेपदम्, कर्तरि ७७. विभाषोपपदेन प्रतीयमाने २७४४ ।
कर्त्र-फले

यदि कर्तृगामी क्रियाफलता किसी
उपपद से प्रतीत हो रही हो तो
स्वरितेतः आदि पाँच सूत्रों से होने
वाला आत्मनेपद विकल्प से हो ।

परस्मैपद

कर्तरि ७८. शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् २१५९ ।

कर्तरि ९३ जिस अर्थ में जिन धातुओं से
परस्मैपदम् ९३ आत्मनेपद किया गया है उनसे बचे
धातुओं से कर्ता अर्थ में परस्मैपद
होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् ७९. अनुपराभ्यां कृञः २७४५ ।

कृ धातु से जहाँ अनु और परा
उपसर्ग लगा हो वहाँ कर्ता में परस्मै-
पद होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् ८०. अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः २७४६ ॥४॥

अभि प्रति अति पूर्वक क्षिप् धातु
से कर्ता में परस्मैपद होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् ८१. प्राद्धः २७४७ ।

वहः ८२

प्रपूर्वक वह में कर्ता से परस्मैपद
होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् ८२. परेर्मुषः २७४८ ।

परिपूर्वक मृष् धातु से कर्ता में
परस्मैपद होता है ।

वहः

कर्तरि परस्मैपदम् ८३. व्याङ्परिभ्यो रमः २७४९ ।

रमः ८५

वि आङ् परि पूर्वक रम् धातु से
कर्ता में परस्मैपद होता है ।

कर्तरि परस्मैपदम् ८४. उपाच्च २७५० ।

रमः

कर्तरि परस्मैपदम् ८५. विभाषाऽकर्मकात् २७५१ ।

रमः उपात्

कर्तरि परस्मैपदम् ८६. बुधयुधनशजनेङ्प्रुदुस्तुभ्योणेः २७५२ । णेः ८९

कर्तरि परस्मैपदम् णेः ८७. निगरणचलनार्थेभ्यश्च २७५३ ।

* अदेः प्रतिषेधः ।

कर्तरि परस्मैपदम् णेः ८८. अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् २७५४ ।

कर्तरि परस्मैपदम् णेः ८९. न पादप्याङ्यमाङ्यसपरिमुहुरुचिन्तित्व-
दवसः २७५५ ।

* पादिषु धेट उपसंख्यानम् ।

कर्तरि परस्मैपदम् ९०. वा क्यषः २६६९ ।

वा ९३

कर्तरि परस्मैपदम् वा ९१. द्युद्भ्यो लुङि २३४५ ।

कर्तरि परस्मैपदम् वा ९२. वृद्भ्यः स्यसनोः २३४७ ।

स्यसनोः ९३

कर्तरि परस्मैपदम् वा ९३. लुटि च क्लृपः २३५१ ।

स्यसनोः ९३

उप पूर्वक रम् धातु से भी कर्ता में परस्मैपद होता है ।

उपपूर्वक रम् धातु यदि अकर्मक हो तो उससे कर्ता में विकल्प से परस्मैपद होता है ।

ण्यन्त बुध युध् नश् जन् इङ् प्रु द्रु स्तु धातुओं से परस्मैपद होता है ।

ण्यन्त निगरणार्थक और चलनार्थक धातुओं से परस्मैपद होता है ।

अण्यन्तावस्था में अकर्मक और चित्तवत्कर्तृक धातुओं से ण्यन्त में परस्मैपद हो जाता है ।

पा, दम्, आङ्पूर्वक यम्, आङ् पूर्वक यस्, परिपूर्वक मुह्, रुच् नृत् वद् वस् इन धातुओं से ण्यन्त में परस्मैपद नहीं होता है ।

क्यषन्त धातुओं से वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।

द्युत् से कृपू तक पठित धातुओं से लुङ् में वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।

वृत् वृधु शृधु स्यन्दू तथा कृपू से स्य और सन् परे रहने पर वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।

क्लृप् धातु से लुट् स्य और सन् परे रहने पर वैकल्पिक परस्मैपद होता है ।

भूवादयः क्रीडोऽनु वेः पादप्रियतेः प्राद्वह-
स्त्रयोदश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

एकसंज्ञाधिकार

१. आकडारादेका संज्ञा २३२ ।

यहाँ से कडाराः कर्मधारये २.२.३८ सूत्र तक एक ही संज्ञा होती है ।

विप्रतिषेधकार्यनिर्णय

२. विप्रतिषेधे परं कार्यम् १७५ ।

तुल्य बल विरोध होने पर परकार्य होता है ।

नदीसंज्ञा

३. यू स्र्याख्यौ नदी २६६ ।

* प्रथमलिङ्ग्रहणं च ।

यू ६, नदी ६ नित्य स्त्रीलिङ्ग ईदन्त ऊदन्त शब्द नदी संज्ञक होते हैं ।

यू नदी

४. नेयडुवड्स्थानावस्त्री ३०३ ।

इयडुवड्स्थानौ ६ इयङ् उवङ् के योग्य जो ईदन्त और ऊदन्त शब्द हैं उन्हें नदी संज्ञा नहीं होती है, केवल स्त्री शब्द को छोड़कर ।

यू इयडुवड्स्थानौ ५. वाऽऽमि ३०४ ।
नदी

वा ६ स्त्री शब्द को छोड़कर इयङ् उवङ् योग्य ईदन्त और ऊदन्त शब्दों को आम् के यहाँ विकल्प से नदी संज्ञा होती है ।

यू इयडुवड्स्थानौ वा ६. डिति ह्रस्वश्च २९६ ।
नदी

ह्रस्वः ७ स्त्री शब्द भिन्न इयङ् उवङ् के योग्य नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों को तथा स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व अकारान्त शब्दों को भी डित् परे रहने पर विकल्प से नदी संज्ञा होती है ।

घि संज्ञा

ह्रस्वः ७. शेषो घ्यसखि २४३ ।

घि ९ नदी संज्ञा से भिन्न और सखिशब्द को छोड़कर ह्रस्व इकारान्त ह्रस्व उकारान्त शब्द को घि संज्ञा होती है ।

घि ८. पतिः समास एव २५७ ।

पतिः ९ पति शब्द को समास में ही घि संज्ञा होती है ।

घि पतिः ९. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ३३८९ ।

षष्ठ्यन्त से युक्त पतिशब्द को वेद में विकल्प से घि संज्ञा होती है ।

लघु संज्ञा

१०. ह्रस्वं लघु ३१ ।

ह्रस्वं ११ ह्रस्व को लघु संज्ञा होती है ।

ह्रस्वम्	गुरु संज्ञा ११. संयोगे गुरु ३२ ।	गुरु १२	यदि संयोग परे हो तो ह्रस्व को गुरु संज्ञा होती है ।
गुरु	१२. दीर्घं च ३३ । अङ्ग संज्ञा १३. यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् १९९ ।		दीर्घ की भी गुरु संज्ञा होती है । जिससे प्रत्यय का विधान किया जाय तदादि शब्दरूप को प्रत्यय परे रहने पर अङ्ग संज्ञा होती है ।
पदम्	पदसंज्ञा १४. सुप्तिङन्तं पदम् २९ ।	पदम् १७	सुबन्त तिङन्त शब्दरूप को पद संज्ञा होती है ।
पदम्	१५. नः क्ये २६५९ ।		क्यच् क्यङ् क्यष् परे रहने पर नान्त शब्दरूप को ही पद संज्ञा होती है ।
पदम्	१६. सिति च १२५२ ।		सित् प्रत्यय परे रहने पर पूर्व को पद संज्ञा होती है ।
पदम्	१७. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने २३० ।	स्वादिषु असर्व- नामस्थाने १८	सर्वनामस्थान को छोड़कर कप् प्रत्ययावधिक स्वादि के परे रहने पर पूर्व को पद संज्ञा होती है ।
स्वा०-ने	भ संज्ञा १८. यच्चि भम् २३१ । * नभोऽङ्गिरोमनुपां वत्युपसंख्यानम् । * वृषण् वस्वश्चयोः ।	भम् २०	सर्वनामस्थान को छोड़कर कप् प्रत्ययावधिक यादि अजादि स्वादि के परे रहने पर पूर्व को भ संज्ञा होती है ।
भम्	१९. तसौ मत्वर्थे १८९६ ।		मतुप् प्रत्यय परे रहने पर तान्त और सान्त शब्दरूप को भ संज्ञा होती है ।
भम्	२०. अयस्मयादीनि छन्दसि ३३९० ।।१।। * उभयसंज्ञान्यपीति वक्तव्यम् । वचनविनियोग २१. बहुषु बहुवचनम् १८७ । २२. द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने १८६ ।		अयस्मय आदि शब्द वेद में सिद्ध होते हैं । बहुत्व में बहुवचन होता है । द्वित्व और एकत्व में (क्रमशः) द्विवचन और एकवचन होते हैं ।
	कारक २३. कारके ५३४	कारके ५५	१/४/५५/ तक कारके के अधिकार में संज्ञायें होंगी ।

अपादान संज्ञा

कारके २४. ध्रुवमपायेऽपादानम् ५८६ ।
* जुगुप्साविरामप्रमादाथानामुपसंख्यानम् ।

कारके अपादानम् २५. भीत्रार्थानां भयहेतुः ५८८ ।

कारके अपादानम् २६. पराजेषोढः ५८९ ।

कारके अपादानम् २७. वारणार्थानामीप्सितः ५९० ।

कारके अपादानम् २८. अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ५९१ ।

कारके अपादानम् २९. आख्यातोपयोगे ५९२ ।

कारके अपादानम् ३०. जनिकर्तुः प्रकृतिः ५९३ ।

कारके अपादानम् ३१. भुवः प्रभवः ५९४ ।

कर्तुः

अपादानम् ३१ अपाय साध्य रहने पर अवधिभूत कारक अपादान संज्ञक होता है ।
भयार्थक और त्राणार्थक धातु के प्रयोग होने पर भयहेतु कारक अपादान संज्ञक होता है ।

परापूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य अर्थ रूप कारक अपादान संज्ञक होता है ।

वारणार्थक धातु के प्रयोग में ईप्सितार्थ कारक अपादान संज्ञक होता है ।

व्यवधान रहने पर जिससे अपना अदर्शन इष्ट होता है वह कारक अपादान संज्ञक होता है ।

नियमपूर्वक विद्या स्वीकार करने पर वक्ता रूप कारक अपादान संज्ञक होता है ।

कर्तुः ३२

जायमान का हेतु कारक अपादान संज्ञक होता है ।

प्रथम प्रकाशन रूप प्रभवति के प्रयोग में प्रथम प्रकाशन स्थल रूप कारक अपादान संज्ञक होता है ।

सम्प्रदान संज्ञा

कारके कर्तुः ३२. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ५६९ । सम्प्रदानम् ४१ (कर्ता दान) कर्म से जिसे चाहता है वह सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
* क्रियया यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ।

* कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा
वक्तव्या ।

कारके सम्प्रदानम् ३३. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ५७१ ।

कारके सम्प्रदानम् ३४. श्लाघहुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ५७२ ।

कारके सम्प्रदानम् ३५. धाररुत्तमर्णः ५७३ ।

रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोग में प्रीयमाण अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

श्लाघ् हुङ् स्था शप् धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

धारि के प्रयोग में उत्तमर्ण अर्थरूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् ३६. स्पृहेरीप्सितः ५७४ ।

स्पृह धातु के प्रयोग में ईप्सित अर्थ रूप कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् ३७. क्रुधद्रुहेष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ५७५ । यं प्रतिकोपः ३८

क्रुध द्रुह ईष्या असूया अर्थक धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप हो वह अर्थरूप कारक सम्प्रदानसंज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् यं ३८. क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ५७६ ।
प्रतिकोपः

सोपसर्ग क्रुध द्रुह के योग में जिसके प्रति कोप होता है वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् ३९. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ५७७ ।

राष् और ईक्ष के योग में जिसके प्रति कोप हो वह कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् ४०. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ५७८ पूर्वस्य कर्ता ४१

॥२॥

प्रति आङ् पूर्वक श्रु धातु के योग में पूर्व प्रवर्तना रूप व्यापार का कर्ता कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

कारके सम्प्रदानम् ४१. अनुप्रतिगृणश्च ५७९ ।
पूर्वस्य कर्ता

अनुप्रति पूर्वक गृ शब्दे धातु के योग में पूर्व व्यापार का कर्तृभूत कारक सम्प्रदान संज्ञक होता है ।

करण संज्ञा

कारके ४२. साधकतमं करणम् ५६० ।

साधकतमम् ४३ क्रियासिद्धि में प्रकृष्टोपकारक कारक करणम् ४४ करणसंज्ञक होता है ।

कारके साधकतमम् ४३. दिवः कर्म च ५६१ ।
करणम्

दिव धातु के योग में साधकतम कारक कर्म संज्ञक तथा करण संज्ञक होता है ।

कारके करणम् ४४. परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ५८० ।

परिक्रयण में साधकतम विकल्प से सम्प्रदान संज्ञक होता है ।
(पक्ष) में करण संज्ञक होता है)

अधिकरण संज्ञा

कारके ४५. आधारोऽधिकरणम् ६३२ ।

आधारः ४८

कर्तृगत कर्मगत धारणाक्रिया का आश्रयीभूत आधार अधिकरण संज्ञक होता है ।

कारके आधार:	कर्म संज्ञा ४६. अधिशीङ्स्थासां कर्म ५४२ ।	कर्म ४८	अधि शीङ् स्था आस् धातुओं का आधार कारक कर्म संज्ञक होता है ।
कारके आधार:	कर्म ४७. अभिनिविशश्च ५४३ ।		अभि नि पूर्वक विश् धातु का आधार कर्म संज्ञक होता है ।
कारके आधार:	कर्म ४८. उपान्वध्याङ्वसः ५४४ । * वसेरश्यर्थस्य प्रतिषेधः		उप अनु अधि आङ् पूर्वक वस् धातु का आधार कर्म संज्ञक होता है ।
कारके	४९. कर्तुरीप्सिततमं कर्म ५३५ ।	कर्म ५३	कर्ता का क्रिया के द्वारा पाने के लिये जो अत्यन्त इष्ट हो वह कारक कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	५०. तथायुक्तं चानीप्सितम् ५३८ ।		ईप्सिततमवत् क्रिया से युक्त अनीप्सित कारक भी कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	५१. अकथितं च ५३९ । * अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् ।		(अपादानादि विशेष से) अविवक्षित कारक भी कर्म संज्ञक होता है ।
कर्म कारके	५२. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मकर्मकाणामणिकर्ता स णौ ५४० । * जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम् । * दृशेश्च । * अदिखाद्योर्न । * नीवह्योर्न । * नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः । * भक्षेरहिसार्थस्य न । * शब्दायतेर्न ।	अणिकर्ता स णौ ५३	गत्यर्थक बुद्ध्यर्थक प्रत्यवसानार्थक शब्दकर्म तथा अकर्मक धातुओं के योग में अण्यन्तावस्था का कर्ता ण्यन्तावस्था में कर्मसंज्ञक होता है ।
कर्म अणिकर्तासणौ कारके	५३. ह्रक्ोरन्यतरस्याम् ५४१ । * अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम् ।		ह और कृ धातु के अण्यन्तावस्था में जो कर्ता है वह ण्यन्तावस्था में कर्म संज्ञक होता है ।
कारके	कर्तृ संज्ञा ५४. स्वतन्त्रः कर्ता ५५९ ।	कर्ता ५५	(वक्ता क्रिया सिद्धि में स्वातन्त्र्य रूप से जिस अर्थ को कहने की इच्छा करता है) वह कर्तृ संज्ञक होता है ।

कर्ता कारके

५५. तत्प्रयोजको हेतुश्च २५७५ ।

कर्ता का प्रयोजक हेतु संज्ञक और कर्तृसंज्ञक होता है ।

निपात संज्ञा

५६. प्राग्नीश्वरान्निपाताः १९ ।

निपाताः ९८

यहाँ से अधिरीश्वरे १.४.९८ तक निपात का अधिकार है ।

निपाताः

५७. चादयोऽसत्त्वे २० ।

असत्त्वे ५८

अद्रव्यवाचक च आदि निपात संज्ञक होते हैं ।

(३) च वा ह (अह) एव एवम् नूनम् शश्वत्
 युपत् (युगपत्) (भूयस्) सूपत् कूपत् कुवित्
 नेत् चेत् चण् कच्चित् यत्र तत्र नह हन्त माकिम्
 (माकीम्) माकिर् नकिम् (नकीम्) नकिर्
 (आकीम्) माङ् नञ् तावत् यावत् त्वा त्वे त्वै
 (द्वै रै) रे श्रौषट् वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा ओम्
 तथा (तथाहि) खलु किल अथ सु (सुष्ठु) स्म
 अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ आदह उञ् उकञ्
 वेलायाम् मात्रायाम् यथा यत् तत् किम् पुरा वधा
 (वंध्वा) धिक् हाहा हे है (हहे) पाट् प्याट्
 आहो उताहो हो अहो नो (नौ) अथो ननु मन्ये
 मिथ्या असि ब्रूहि तु नु इति इव वत् वात् वन बत
 (सम् वशम् शिकम् दिकम्) सनुकम् छंवट्
 (छंवट्) शङ्के शुकम् खम् सनात् सनतर् नहिकम्
 सत्यम् ऋतम् अद्धा इद्धा नोचेत् नचेत् नहि जातु
 कथम् कुतः कुत्र अव अनु हा रे (है) आहोस्वित्
 शम् कम् खम् दिष्ट्या पशु वट् सह (अनुषट्)
 आनुषक् अङ्ग फट् ताजक् (भाजक्) अये अरे
 वाट् (चाटु) कुम् खुम् घुम् अम् ईम् सीम् सिम्
 सि वै । 'उपसर्गविभक्तिस्वर-प्रतिरूपकाश्च निपाताः'

१६—आकृतिगणोऽयम् ।। इति चादयः ।।

उपसर्ग संज्ञा

निपाताः असत्त्वे

५८. प्रादयः २१ ।

प्रादयः ६०

अद्रव्यवाची प्र आदि भी निपात संज्ञक होते हैं ।

(४) प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस्
 दुर् वि आङ् नि अधि अपि सु उद् अभि प्रति परि
 उप—इति प्रादयः ।।

* मरुच्छब्दस्योपसंख्यानम् ।

* श्रच्छब्दस्योपसंख्यानम् ।

निपाताः प्रादयः ५९. उपसर्गाः क्रियायोगे २२ ।

क्रियायोगे ७९ प्र आदि क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञक होते हैं ।

गति संज्ञा

प्रादयः क्रियायोगे ६०. गतिश्च २३

॥ ३ ॥ गतिः ७९

प्र आदि क्रिया के योग में गति संज्ञक भी होते हैं ।

निपाताः * कारिकाशब्दस्योपसंख्यानम् ।

* पुनश्च नसौ छन्दसि ।

* दुरः षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः ।

क्रियायोगे गतिः नि- ६१. ऊर्यादिच्चिडाचश्च ७६२ ।

पाताः

ऊरी आदि च्वि अन्त वाले और डाजन्त शब्द क्रिया के योग में गति संज्ञक होते हैं ।

(५) ऊरी उररी तन्थी ताली आताली वेताली धूली धूसी शकला संशकला ध्वंसकला भ्रंसकला गुलुगुधा सजूस् फल फली विक्ली आक्ली आलोष्ठी केवाली केवासी सेवासी (पर्याली) शेवाली वर्षाली अत्यूमशा वश्मशा (मस्मसा) मसमसा औषट् (श्रौषट्) वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा बन्धा प्रादुस् अत् आविस्—इत्यूर्यादयः ॥

क्रियायोगे गतिः नि- ६२. अनुकरणं चानितिपरम् ७६३ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः नि- ६३. आदरानादरयोः सदसती ७६४ ।

पाताः

पर में इति ऐसा शब्द न हो तो अनुकरण शब्द गतिसंज्ञक होता है । आदर में प्रयुक्त सत् शब्द और अनादर में प्रयुक्त असत् शब्द गतिसंज्ञक होते हैं ।

क्रियायोगे गतिः नि- ६४. भूषणेऽलम् ७६५ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः नि- ६५. अन्तरपरिग्रहे ७६६ ।

पाताः

* अन्तःशब्दस्याङ्गिविधिणत्वेषूपसर्गत्वं वाच्यम् ।

क्रियायोगे गतिः नि- ६६. कणेभनसी श्रद्धाप्रतीघाते ७६७ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः नि- ६७. पुरोऽव्ययम् ७६८ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः नि- ६८. अस्तं च ७६९ ।

पाताः, अव्ययम्

क्रियायोगे गतिः अ- ६९. अच्छ गत्यर्थवदेषु ७७० ।

व्ययम् निपाताः

अव्ययम् ६९

भूषण अर्थ में अलम् शब्द गति-संज्ञक होता है ।

अपरिग्रह अर्थ में अन्तरशब्द गति-संज्ञक होता है ।

श्रद्धानिवृत्ति अर्थ में कणे शब्द और मनस् शब्द गतिसंज्ञक होते हैं ।

अव्यय पुरस् शब्द गतिसंज्ञक होता है ।

अव्यय अस्तम् शब्द भी गतिसंज्ञक होता है ।

गत्यर्थक और वद् धातु के योग में अव्यय अच्छ शब्द गतिसंज्ञक होता है ।

क्रियायोगे गतिः नि- ७०. अदोऽनुपदेशे ७७१ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः नि- ७१. तिरोऽन्तर्धौ ७७२ ।

पाताः

क्रियायोगे गतिः ७२. विभाषा कृजि ७७३ ।

ति०-धौ निपाताः

क्रियायोगे गतिः वि- ७३. उपाजेऽन्वाजे ७७४ ।

भाषा कृजि निपाताः

क्रियायोगे गतिः वि- ७४. साक्षात्प्रभृतीनि च ७७५ ।

भाषा कृजि निपाताः

(६) साक्षात् मिथ्या चिन्ता भद्रा रोचना आस्था
अमा अद्धा प्राजर्या प्राजरुहा बीजर्या बीजरुहा संसर्या
अर्थे लवणम् उष्णम् शीतम् उदकम् आर्द्रम् अग्नौ
वशे विकसने प्रसहने प्रतपने प्रादुस् नमस्—
आकृतिगणोऽयम् ॥ इति साक्षात्प्रभृतयः ॥

* च्यर्थ इति वक्तव्यम् ।

क्रियायोगे गतिः वि- ७५. अनत्याधान उरसिमनसी ७७६

भाषा कृजि निपाताः

क्रियायोगे गतिः कृजि ७६. मध्ये पदे निवचने च ७७७ ।

निपाताः विभाषा

क्रियायोगे गतिः कृजि ७७. नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ७७८ ।

निपाताः

क्रियायोगे गतिः कृजि ७८. प्राध्वं बन्धने ७७९ ।

निपाताः

क्रियायोगे गतिः कृजि ७९. जीविकोपनिषदावौपम्ये ७८० ।

निपाताः

अनुपदेश अर्थ में प्रयुक्त अव्यय
अदस् गतिसंज्ञक होता है ।

तिरोऽन्तर्धौ ७२ व्यवधान में अव्यय तिरस् शब्द
गतिसंज्ञक होता है ।

विभाषा ७६ यदि कृधातु परे हो तो अव्यय
कृजि ७९ तिरस् शब्द विकल्प से गतिसंज्ञक
होता है ।

यदि कृ धातु परे हो तो अव्यय
उपाजे अन्वाजे शब्द विकल्प से
गतिसंज्ञक होते हैं ।

यदि कृ धातु परे हो तो अव्यय
साक्षात् आदि शब्द विकल्प से
गतिसंज्ञक होते हैं ।

यदि कृ धातु परे हो तो असंयोग
अर्थ में उरसि और मनसि शब्द
विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

यदि कृ धातु परे हो तो असंयोग
अर्थ में मध्ये पदे निवचने शब्द
विकल्प से गतिसंज्ञक होते हैं ।

यदि कृ धातु परे हो तो उपयमन
अर्थ में हस्ते और पाणौ शब्द
नित्य गतिसंज्ञक होते हैं ।

यदि कृ धातु परे हो तो बन्धन
अर्थ में प्राध्वम् अव्यय नित्य
गतिसंज्ञक होता है ।

यदि कृ धातु परे हो तो उपमा
विषय में जीविका और उपनिषद्
शब्द गतिसंज्ञक होते हैं ।

गत्युपसर्गाणां स्थाननिर्देशः

निपाताः ८०. ते प्राग्धातोः २२३० । ॥४॥

ते धातोः निपाताः ८१. छन्दसि परेऽपि ३३९१ ।

ते धातोः छन्दसि ८२. व्यवहिताश्च ३३९२ ।

निपाताः

कर्मप्रवचनीय संज्ञा

निपाताः ८३. कर्मप्रवचनीयाः ५४६ ।

कर्मप्र० निपाताः ८४. अनुलक्षणे ५४७ ।

कर्मप्र० अनुः निपाताः ८५. तृतीयार्थे ५४९ ।

कर्मप्र० अनुः निपाताः ८६. हीने ५५० ।

कर्मप्र० हीने निपाताः ८७. उपोऽधिके च ५५१ ।

कर्मप्र० निपाताः ८८. अपपरी वर्जने ५९६ ।

निपाताः कर्मप्र० ८९. आङ्मर्यादावचने ५९७ ।

* आङ्मर्यादाभिविध्योरिति वक्तव्यम् ।

कर्मप्र० निपाताः ९०. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रति- लक्ष-सु ९१ पर्यनवः ५५२ ।

कर्मप्र० निपाताः ९१. अभिरभागे ५५३ ।

लक्ष-सु

कर्मप्र० निपाताः ९२. प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ५९९ ।

कर्मप्र० निपाताः ९३. अधिपरी अनर्थकौ ५५४ ।

कर्मप्र० निपाताः ९४. सुः पूजायाम् ५५५ ।

कर्मप्र० निपाताः ९५. अतिरतिक्रमणे च ५५६ ।

पूजायाम्

ते ८२ धातोः वे उपसर्ग और गतिसंज्ञक शब्द ८२ धातु से पूर्व प्रयुक्त होते हैं ।

छन्दसि ८२ वे गत्युपसर्गसंज्ञक शब्द वेद में धातु के बाद भी प्रयुक्त होते हैं । वे गत्युपसर्गसंज्ञक शब्द वेद में व्यवहित भी प्रयुक्त होते हैं ।

कर्म-याः ९८ १/४/९८/ तक कर्म प्रवचनीयाः का अधिकार है ।

अनुः ८६ लक्षण द्योत्य रहने पर अनु को कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है । तृतीयार्थ द्योत्य रहने पर अनु शब्द कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

हीने ८७ हीन द्योत्य रहने पर अनु कर्म-प्रवचनीय संज्ञक होता है । अधिक हीन दोनों द्योत्य रहने पर उप कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है । वर्जन में अप और परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं ।

मर्यादावचन में आङ् कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

लक्षण इत्थम्भूताख्यान भाग वीप्सा में प्रति परि अनु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं ।

लक्षण इत्थम्भूताख्यान वीप्सा में अभि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है । प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में प्रति कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

अनर्थक अधि और परि कर्मप्रवचनीय संज्ञक होते हैं ।

पूजायाम् ९५ पूजा अर्थ में सु कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

अतिक्रमण और पूजा अर्थ में अति कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

निपाताः कर्मप्र० ९६. अपिः पदार्थसंभावनान्ववसर्गगर्हसमु-
च्चयेषु ५५७ ।

पदार्थ, संभावन, अन्ववसर्ग, गर्हा
तथा समुच्चय अर्थ में अपि कर्म-
प्रवचनीय संज्ञक होता है ।

निपाताः कर्मप्र० ९७. अधिरीश्वरे ६४४ ।

अधिः ९८

ईश्वर अर्थ में अधि कर्मप्रवचनीय
संज्ञक होता है ।

निपाताः कर्मप्र० ९८. विभाषा कृजि ६४६ ।

अधिः

कृ परे रहने पर अधि विकल्प से
कर्मप्रवचनीय संज्ञक होता है ।

परस्मैपद संज्ञा

९९. लः परस्मैपदम् २१५५ ।

लादेश परस्मैपद संज्ञक होते हैं ।

आत्मनेपद संज्ञा

१००. तडाज्ञावात्मनेपदम् २१५६ । ११५१ ।

त आताम् झ आदि नव तथा शानच्
कानच् आत्मनेपद संज्ञक होते हैं ।

तिङ्विभाग

१०१. तिङ्स्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः त्रीणित्रीणि १०३
२१६० ।

तिप् से महिङ् तक १८ वों में
क्रमशः ३-३ प्रथम मध्यम तथा
उत्तम कहलाते हैं ।

त्रीणित्रीणि

१०२. तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः एक-कशः १०३
२१६१ ।

प्रथम मध्यम उत्तम के भी ३-३
क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन
कहलाते हैं ।

सुबिभाग

एक-कशः त्रीणित्रीणि १०३. सुपः १८५ ।

सुपः १०४

सु से सुप् के भी ३-३ क्रमशः
एकवचन द्विवचन बहुवचन कह-
लाते हैं ।

सुपः

१०४. विभक्तिश्च १८४ ।

सुप् और तिङ् विभक्तिसंज्ञक होते
हैं ।

पुरुष संज्ञा

१०५. युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि ३०-अपि १०८
मध्यमः २१६२ । मध्यमः १०६

उपपद में युष्मद् अप्रयुज्यमान हो
या प्रयुज्यमान मध्यम कहलाता है ।

३०-अपि मध्यमः १०६. प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एक-
वच्च २१६३ ।

प्रहास में यदि दैवादिक मन, धातु
उपपद में हो मध्यम उत्तम के स्थान
में उत्तम मध्यम हो जाता है तथा
उत्तम में द्वित्व और बहुत्व के
स्थान में एकवत् होता है ।

३०-अपि

१०७. अस्मद्युत्तमः २१६४ ।

उपपद में अस्मद् अप्रयुज्यमान हो
या प्रयुज्यमान उत्तम (पुरुष)
कहलाता है

उ०-अपि

१०८. शेषे प्रथमः २१६५ ।

युष्मद् और अस्मद् से अतिरिक्त
हो वह प्रथम कहलाता है ।

संहिता संज्ञा

१०९. परः संनिकर्षः संहिता २८ ।

(वर्णों का) अतिशय संनिकर्ष
संहिता संज्ञक होता है ।

अवसान संज्ञा

११०. विरामोऽवसानम् २७ ।

(वर्णों का) अभाव अवसान संज्ञक
होता है ।

आ कडाराद्धुध्वनुप्रतिगृण ऊर्यादिच्छन्दसि
तिङो दश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थः
पादः अध्यायश्च ।

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

समर्थपरिभाषा

१. समर्थः पदविधिः ६४७ ।

पद सम्बन्धी विधि समर्थाश्रित होती है ।

पराङ्गवद्भावातिदेश

२. सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ३६५६ ।

सुप् २.२.३८

स्वर कर्तव्य में आमन्त्रित पर रहने पर पूर्ववर्ती सुप् पर के अङ्ग के समान हो जाता है ।

* षष्ठ्यामन्त्रितकारकवचनम् ।

* सुबन्तस्य पराङ्गवद्भावे समानाधिकरणस्यो-

पसंख्यानमनन्तरत्वात् ।

* पूर्वाङ्गवच्चेति वक्तव्यम् ।

* अव्ययानां न ।

* अव्ययीभावस्य त्विष्यते ।

समासाधिकार

सुप्

३. प्राक्कडारात्समासः ६४८ ।

समासः २.२.- कडाराः कर्मधारये २.२.३८ तक ३८ समास का अधिकार होगा ।

सुप् समासः

४. सह सुपा ६४९ ।

सह सुपा २.२.- १. सुबन्त समर्थ के साथ समस्त ३८ होगा । २. सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होगा ।

* इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च ।

अव्ययीभाव समास

सुप् समासः सहसुपा ५. अव्ययीभावः ६५१ ।

अव्ययीभावः २१ यहाँ से २.१.२१ तक अव्ययीभाव संज्ञक होंगे ।

सुप् समासः सहसुपा ६. अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिवृद्ध्यर्थाभा-

अव्ययम् २१

विभक्ति समीप समृद्धि वृद्धि अर्थाभाव अत्यय असंप्रति शब्द-प्रादुर्भाव पश्चात् यथानुपूर्व्य यौगपद्य सादृश्य संपत्ति साकल्य और अन्तवचन अर्थों में प्रयुक्त अव्यय समर्थ सुबन्त के साथ समस्त होंगे । असादृश्य अर्थ में वर्तमान यथा अव्यय समर्थ के साथ समस्त होगा । (ऐसे समास अव्ययीभाव संज्ञक होंगे)

अव्य-वः

वात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौ-

गपद्यसादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ६५२ ।

सुप् समासः सहसुपा ७. यथाऽसादृश्ये ६६१ ।

अव्य-वः अव्य०

सुप् समासः सहसुपा ८. यावदवधारणे ६६२ ।

अव्य-वः अव्य०

अवधारण अर्थ में यावत् सुबन्त के साथ समस्त होगा ।

सुप् समासः सहसुपा ९. सुप्प्रतिना मात्रर्थे ६६३ ।

अव्य-वः अव्य०

सुप् समासः सहसुपा १०. अक्षशलाकासंख्याः परिणा ६६४ ।

अव्य-वः अव्य०

सुप्, समा० सहसुपा ११. विभाषा ६६५ ।

विभाषा २.२.- २.२.३८ तक विभाषा का अधिकार ३८ होगा ।

सुप्, समा० सहसुपा १२. अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ६६६ ।

पञ्चम्या १३

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम्

सुप्, समा० सहसुपा १३. आङ्मर्यादाभिविध्योः ६६७ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम् पञ्च०

मात्रा अर्थ में 'प्रति' सुबन्त के साथ समस्त होगा ।

अक्ष शलाका तथा (एक द्वि त्रि चतुर पञ्चन् रूप) संख्या शब्द परि के साथ समस्त होंगे ।

मर्यादा और अभिविधि में प्रयुक्त आङ् पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होगा । (समास अव्ययी-भाव होगा) ।

अप परि बहिस् अञ्च पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होंगे ।

आङ् पञ्चम्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होगा । (समास अव्ययी-भाव होगा) ।

सुप्, समा० सहसुपा १४. लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ६६८ । लक्षणेन १६

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम्

सुप्, समा० सहसुपा १५. अनुर्यत्समया ६६९ ।

अनुः १६

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम् लक्ष०

सुप्, समा० सहसुपा १६. यस्य चायामः ६७० ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम् लक्ष० अनुः

सुप्, समा० सहसुपा १७. तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ६७१ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम्

आभिमुख्य अर्थ में अभि और प्रति लक्षणवाची सुबन्त के साथ विकल्प से समस्त होंगे ।

अनु समीप अर्थ में लक्षणवाची सुबन्त के साथ विकल्प से समस्त होगा ।

जिसमें आयाम हो ऐसे लक्षणवाची सुबन्त के साथ अनु विकल्प से समस्त होगा ।

तिष्ठद्गु आदि (निम्नलिखित) शब्द निपातित होते हैं ।

(७) तिष्ठद्गु वहद्गु आयतीगवम् खलेयवम् खले-
बुसम् लूवयवम् लूयमानयवम् पूतयवम् पूयमानयवम्
संहतयवम् संहियमाणयवम् संहतबुसम् संहिय-
माणबुसम् समभूमि समपदाति सुषमम् विषमम् दुःष-
मम् निःषमम् अपसमम् आयतीसमम् (प्रोढम्)
पापसमम् पुण-यसमम् प्राहम् प्रथम् प्रमृगम् प्रदक्षि-
णम् (अपरदक्षिणम्) संप्रति असंप्रति । 'इच्छत्ययः
समा-सान्तः' १७—इति तिष्ठद्गुप्रभृतयः ।।

सुप्, समा० सहसुपा १८. पारे मध्ये षष्ठ्या वा ६७२ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम्

सुप्, समा० सहसुपा १९. संख्या वंश्येन ६७३ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम्

सुप्, समा० सहसुपा २०. नदीभिश्च ६७४ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम् संख्या

सुप्, समा० सहसुपा २१. अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ६७५ ।

विभाषा अव्य-व०

अव्ययम् नदी

संख्या २०

॥ १ ॥ नदी २१

पार मध्य शब्द षष्ठ्यन्त के साथ विकल्प से समस्त होता है और वह अव्ययीभाव समास है ।

वंश्यवाची सुबन्त के साथ संख्या-शब्द समस्त होता है ।

नदीवाचक सुबन्त के साथ संख्या-वाचक शब्द समस्त होता है ।

अन्यपदार्थ में विद्यमान सुबन्त के साथ नदीवाचक शब्द नित्य समस्त होते हैं । यह अव्ययीभाव समास होता है ।

तत्पुरुष समास

सुप्, समा० सहसुपा २२. तत्पुरुषः ६८४ ।

विभाषा

सुप्, समा० सहसुपा २३. द्विगुश्च ६८५ ।

विभाषा तत्पुरुषः

सुप्, समा० सहसुपा २४. द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः द्वितीया २९

विभाषा तत्पुरुषः

६८६ ।

* गम्यादीनामुपसंख्यानम् ।

सुप्, समा० सहसुपा २५. स्वयं केन ६८७ ।

विभाषा तत्पुरुषः

सुप्, समा० सहसुपा २६. खट्वा क्षेपे ६८८ ।

विभाषा तत्पुरुषः

द्वि०, केन

सुप्, समा० सहसुपा २७. सामि ६८९ ।

विभाषा तत्पुरुषः

द्वि०, केन

सुप्, समा० सहसुपा २८. कालाः ६९० ।

विभाषा तत्पुरुषः

द्वि०, केन

सुप्, समा० सहसुपा २९. अत्यन्तसंयोगे च ६९१ ।

विभाषा, तत्पुरुषः

द्वि०, केन, कालाः

तत्पुरुषः २.२.- यहाँ २.२.२२ तक तत्पुरुषः का अधिकार होगा ।

२२

द्विगु भी तत्पुरुष संज्ञक होता है ।

श्रित अतीत पतित गत अत्यस्त प्राप्त आपन्न शब्दों के साथ द्वितीयान्त सुबन्त विकल्प से समस्त होता है । यह तत्पुरुष समास है । क्तान्त के साथ 'स्वयं' यह सुबन्त समस्त होता है ।

क्षेप गम्यमान होने पर द्वितीयान्त खट्वा शब्द समस्त होता है ।

(अर्द्धपर्याय) सामि यह अव्यय क्तान्त सुबन्त के साथ समस्त होता है ।

द्वितीयान्त कालवाची शब्द क्तान्त के साथ समस्त होते हैं ।

अत्यन्त संयोग में कालवाची द्वि-तीयान्त सुबन्त के साथ समस्त होते हैं ।

केन २८

कालाः २९

सुप्, समा० सहसुपा ३०. तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ६९२ । तृतीया ३५
विभाषा, तत्पुरुषः

सुप्, समा० सहसुपा ३१. पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्र-
विभाषा, तत्पुरुषः, लक्षणैः ६९३ ।

तृ० * अवरस्योपसंख्यानम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ३२. कर्तृकरणे कृता बहुलम् ६९४ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,

तृ०

सुप्, समा० सहसुपा ३३. कृत्यैरधिकार्थवचने ६९५ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा ३४. अत्रेन व्यञ्जनम् ६९६ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा ३५. भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ६९७ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

तृ०, कर्तृकरणे

सुप्, समा० सहसुपा ३६. चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ६९८
विभाषा, तत्पुरुषः * अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति
वक्तव्यम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ३७. पञ्चमी भयेन ६९९ ।

विभाषा, तत्पुरुषः * भयभीतभीतिभीभिरिति वक्तव्यम् ।

* भयनिर्गतजुगुप्सुभिरिति वक्तव्यम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ३८. अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरत्यशः ७००

विभाषा, तत्पुरुषः,

पञ्च०

सुप्, समा० सहसुपा ३९. स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ७०१

विभाषा, तत्पुरुषः,

पञ्च०

सुप्, समा० सहसुपा ४०. सप्तमी शौण्डैः ७१७

विभाषा, तत्पुरुषः

॥ २ ॥ सप्तमी ४८

(८) शौण्ड धूर्त कितव व्याड प्रवीण संवीत
अन्तर अधि पटु पण्डित कुशल चपल निपुण—
इति शौण्डादयः ॥

तृतीयान्त अर्थकृत गुणवचन अर्थ-
वाचक शब्दों के साथ तृतीयान्त
सुबन्त समस्त होते हैं ।

पूर्व सदृश सम ऊनार्थ कलह निपुण
मिश्र श्लक्षण शब्दों के साथ तृती-
यान्त समस्त होते हैं ।

कर्ता और करण में होने वाली
तृतीया बहुलतया कृदन्त के साथ
समस्त होती है ।

अधिकार्थवचन में कर्तृकरण विहित
तृतीया कृत्यान्त के साथ समस्त
होती है ।

व्यञ्जनवाची तृतीयान्त अत्रवाची
शब्द के साथ समस्त होता है ।

मिश्रीकरणवाची तृतीयान्त के साथ
भक्ष्यवाची सुबन्त समस्त होता है ।

तदर्थ अर्थ बलि हित सुख रक्षित
के साथ चतुर्थ्यन्त पद समस्त होता
है ।

पञ्चम्यन्त सुबन्त भय के साथ समस्त
होता है ।

अपेत अपोढ मुक्त पतित अपत्रस्त
के साथ कुछ ही पञ्चम्यन्त समस्त
होते हैं ।

पञ्चम्यन्त स्तोकार्थक अन्तिकार्थक
दूरार्थक और कृच्छ्र शब्द क्तान्त के
साथ समस्त होते हैं ।

शौण्ड आदि शब्दों के साथ
सप्तम्यन्त समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा ४१. सिद्धशुष्कपक्वबन्धश्च ७१८ ।

विभाषा, तत्पुरुषः

सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा ४२. ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ७१९ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा ४३. कृत्यैर्ऋणे ७२० ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा ४४. संज्ञायाम् ७२१ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा ४५. क्तेनाहोरात्रावयवाः ७२२ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त०

सुप्, समा० सहसुपा ४६. तत्र ७२३ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त० क्तेन

सुप्, समा० सहसुपा ४७. क्षेपे ७२४ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सप्त० क्तेन

सुप्, समा० सहसुपा ४८. पात्रेसमितादयश्च ७२५ ।

विभाषा तत्पुरुषः

सप्त० क्षेपे

सिद्ध शुष्क पक्व बन्ध के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है ।

ध्वाङ्क्षवाची के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है यदि क्षेप गम्यमान हो ।

यदि ऋण गम्यमान हो तो कृत्य-प्रत्ययान्त के साथ सप्तम्यन्त समस्त होता है ।

संज्ञा के विषय में सप्तम्यन्त सुबन्त के साथ समस्त होता है ।

क्तेन ४७

दिनरात्रि के अवयववाची सप्तम्यन्त शब्द क्तान्त के साथ समस्त होते हैं ।

तत्र रूप सप्तम्यन्त क्तान्त के साथ समस्त होते हैं ।

क्षेपे ४८

क्षेप गम्यमान होने पर सप्तम्यन्त क्तान्त के साथ समस्त होते हैं ।

क्षेप गम्यमान होने पर पात्रेसमिता आदि शब्द सिद्ध (निपातित) होते हैं ।

(९) पात्रेसमिताः पात्रेबहुलाः उदुम्बरमशकः (उदुम्बरमशकाः) उदुम्बरकृमिः कूपकच्छपः अवट-कच्छपः कूपमण्डूकः कुम्भमण्डूकः उदपानमण्डूकः नगरकाकः नगरवायसः मातरिपुरुषः पिण्डीशूरः पितरिशूरः गेहेशूरः गेहेनर्दी गेहेक्ष्वेडी गेहेविजिती गेहेव्याडः गेहेमेही (गेहेदाही) गेहेछत्तः गेहेधृष्टः गर्भेतृप्तः आखनिकवकः गोष्ठेशूरः गोष्ठेविजिती गोष्ठेक्ष्वेडी गोष्ठेपटुः गोष्ठेपण्डितः गोष्ठेप्रगल्भः कर्णेतिरिटिरा कर्णेचुरुचुरा—आकृतिगणोऽयम् । इति पात्रेसमितादयः ।।

तत्पुरुषान्तर्गत कर्मधारय समास

सुप्, समा० सहसुपा ४९. पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः स- समानाधिकरणेन पूर्वकाल एक सर्वजरत् पुराण नव
विभाषा, तत्पुरुषः मानाधिकरणेन ७२६ । ७२ केवल (ये सभी) समानाधिकरण

सुप्, समा० सहसुपा ५०. दिक्संख्ये संज्ञायाम् ७२७ । दिक्संख्ये ५१ संज्ञा विषय में दिग्वाची और संख्या
विभाषा, तत्पुरुषः, शब्द समानाधिकरण सुबन्त के साथ समस्त होते हैं ।
समाना० समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा ५१. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ७२८ । तद्धितार्थ विषय में उत्तरपद परे रहने
विभाषा, तत्पुरुषः, * द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम् । पर और समाहार में दिक्संख्या शब्द
समाना०, दिक्सं० * उत्तरपदेन परिमाणिना द्विगोः सिद्ध्ये बहूनां समानाधिकरण सुबन्त के साथ
तत्पुरुषस्योपसंख्यानम् । समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा ५२. संख्यापूर्वो द्विगुः ७३० । तद्धितार्थोत्तरपदसमाहार में संख्यापूर्व
विभाषा, तत्पुरुषः, समास द्विगु संज्ञक होता है ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ५३. कुत्सितानि कुत्सनैः ७३२ । कुत्सितवाची सुबन्त कुत्सनवचन
विभाषा, तत्पुरुषः, सुबन्तों के साथ समस्त होते हैं ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ५४. पापाणके कुत्सितैः ७३३ । कुत्स्यमान शब्द पाप और आणक
विभाषा, तत्पुरुषः, शब्द के साथ समस्त होते हैं ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ५५. उपमानानि सामान्यवचनैः ७३४ । उपमानवाची सुबन्त सामान्यवचन
विभाषा, तत्पुरुषः, सुबन्त के साथ समस्त होते हैं ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ५६. उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ७३५ यदि सामान्य-साधारण धर्म का प्रयोग
विभाषा, तत्पुरुषः, न हो तो उपमेयवाची सुबन्त व्याघ्र
समाना० आदि शब्दों के साथ समस्त होते हैं ।

(१०) व्याघ्र सिंह ऋक्ष ऋषभ चन्दन वृक वृष
वराह हस्तिन् तरु कुञ्जर रुरु पृषत् पुण्डरीक पलाश
कितव—इति व्याघ्रादयः । । आकृतिगणोऽयम् ।
तेन—मुखपद्मम् मुखकमलम् करकिसलयम् पार्थि-
वचन्द्रः इत्यादि ॥

सुप्, समा० सहसुपा ५७. विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ७३६ । विशेषणवाची सुबन्त समानाधिकरण
विभाषा, तत्पुरुषः, विशेष्यवाची सुबन्त के साथ बहुल
समाना० प्रकार से समस्त होते हैं ।

विशेषणवाची सुबन्त समानाधिकरण
विशेष्यवाची सुबन्त के साथ बहुल
प्रकार से समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा ५८. पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्य-
विभाषा, तत्पुरुषः, मवीराश्च ७३७ ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ५९. श्रेण्यादयः कृतादिभिः ७३८ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

(११) श्रेणि [ऊक] एक पूग कुन्दुम (मुकुन्द)
[राशि] निचय [विशेष] निधन (विधान) [पर]
इन्द्र देव मुण्ड भूत श्रमण वदान्य अध्यापक
अभिरूपक ब्राह्मण क्षत्रिय [विशिष्ट] पटु पण्डित
कुशल चपल निपुण कृषण—इत्येते श्रेण्यादयः ॥
(१२) कृत मित मत भूत उक्त [युक्त] समा-
ज्ञात समाम्नात समाख्यात संभावित [संसेवित]
अवधारित अवकल्पित निराकृत उपकृत उपाकृत
[छट कलित दलित उदाहृत विश्रुत उदित] आ-
कृतिगणोऽयम् ॥ इति कृतादयः ॥

* श्रेण्यादिषु च्यर्थवचनम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ६०. केन नञ्विशिष्टेनानञ् ७३९ ॥ ३॥
विभाषा, तत्पुरुषः, * शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्थो-
पसंख्यानम् ।
समाना०

(१३. वा० ग०) । शाकपार्थिव कुतपसौश्रुत
अजातौत्वलि — आकृतिगणोऽयम् ॥ कृतापकृत
भुक्ताविभुक्त पीतविपीत गतप्रत्यागत यातानुयात
क्रयाक्रयिका पुटापुटिका फलाफलिका [मानो-
न्मानिका ॥] इति शाकपार्थिवादयः ॥

सुप्, समा० सहसुपा ६१. सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ७४०
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ६२. वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम् ७४१ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ६३. कतरकतमौ जातिपरिग्रहने ७४२ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

पूर्व अपर प्रथम चरम जघन्य समान
मध्य मध्यम वीर ये सुबन्त समाना-
धिकरण सुबन्त के साथ समस्त
होते हैं ।

श्रेणि आदि सुबन्त समानाधिकरण
कृत आदि के साथ समस्त होते
हैं ।

अनञ् क्तान्त नञ्विशिष्ट क्तान्त के
साथ समस्त होते हैं ।

सत् महत् परम उत्तम उत्कृष्ट
पूज्यमान के साथ समस्त होते हैं ।

पूज्यमानवाची सुबन्त वृन्दारक नाग
कुञ्जर के साथ समस्त होते हैं ।

जाति परिग्रहण में वर्तमान कतर
कतम शब्द समर्थ सुबन्त के साथ
समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा ६४. किं क्षेपे ७४३ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ६५. पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेह- जातिः ६६
विभाषा, तत्पुरुषः, द्वष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः
समाना० ७४४ ।

सुप्, समा० सहसुपा ६६. प्रशंसावचनैश्च ७४७ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०, जातिः

सुप्, समा० सहसुपा ६७. युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ७४८
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ६८. कृत्यतुल्याख्या अजात्या ७४९ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ६९. वर्णों वर्णेन ७५० ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ७०. कुमारः श्रमणादिभिः ७५२ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

(१४) श्रमणा प्रव्रजिता कुलटा गर्भिणी तापसी
दासी बन्धकी अध्यापक अभिरूपक पण्डित पटु
मृदु कुशल चपल निपुण—इति श्रमणादयः ॥

सुप्, समा० सहसुपा ७१. चतुष्पादो गर्भिण्या ७५३ ।
विभाषा, तत्पुरुषः, * चतुष्पाज्जातिरिति वक्तव्यम् ।
समाना०

सुप्, समा० सहसुपा ७२. मयूरव्यंसकादयश्च ७५४ ।
विभाषा, तत्पुरुषः,
समाना०

(१५) मयूरव्यंसक छात्रव्यंसक कम्बोजमुण्ड यव-
नमुण्ड छन्दसि । हस्तेगृह्य (हस्तगृह्य) पादेगृह्य
(पादगृह्य) लाङ्गुलेगृह्य (लाङ्गुलगृह्य) पुनर्दाय ।

क्षेप गम्यमान होने पर किम् शब्द
सुबन्त के साथ समस्त होता है ।

पोटा युवति स्तोक कतिपय गृष्टि
धेनु वशा वेहत् वष्कयणी प्रवक्तृ
श्रोत्रिय अध्यापक धूर्त शब्दों के
साथ जातिवाचक सुबन्त समस्त
होता है ।

जातिवाची सुबन्त प्रशंसावचनों के
साथ समस्त होता है ।

समानाधिकरण खलति पलित वलिन
जरती शब्दों के साथ युवशब्द समस्त
होता है ।

कृत्य प्रत्ययान्त और तुल्यपर्याय
सुबन्त अजातिवचन के साथ समस्त
होता है ।

वर्ण विशेषवाची सुबन्त समाना-
धिकरण वर्णविशेषवाची सुबन्त के
साथ समस्त होता है ।

कुमार शब्द श्रमणा आदि शब्दों के
साथ समस्त होता है ।

चतुष्पादवाची सुबन्त गर्भिणी शब्द
के साथ समस्त होते हैं ।

मयूरव्यंसक आदि शब्द निपातित
होते हैं तथा तत्पुरुष कहलाते हैं ।

‘एहीडादयोऽन्यपदार्थे’ १८ । एहीडं वर्तते । एहियं
वर्तते । एहिवाणिजा क्रिया । अपेहिवाणिजा प्रेहि-
वाणिजा एहिस्वागता अपेहिस्वागता एहिद्वितीया
अपेहिद्वितीया प्रेहिद्वितीया एहिकटा अपेहिकटा
प्रेहिकटा आहरकटा प्रेहिकर्दमा प्रोहकर्दमा विधमचूडा
उद्धमचूडा (उद्धरचूडा) आहरचेला आहरवसना
[आहरसेना] आहरवनिता (आहरविनता)
कृन्तविचक्षणाउद्धरोत्पृजा उद्धरावसृजा उद्धभविधमा
उत्पचनिपचा उत्पतनिपता उच्चावचम् उच्चनीचम्
आचोपचम् आचपराचम् नखप्रचम् निश्चप्रचम्
अकिञ्चन स्नात्वाकालक पीत्वास्थिरक भुक्त्वासुहित
प्रोष्यपापीयान् उत्पत्यपाकला निपत्यरोहिणी निष-
ण्णश्यामा अपेहिप्रघसा एहिविघसा इहपञ्चमी
इहद्वितीया । ‘जहि कर्मणा बहुलभाभीक्ष्ये’ १९ ।
कर्तारं चाभिदधाति । जहिजोडः (जहिजोडम्)
जहिस्तम्बम् (जहिस्तम्बः) [उज्जाहिस्तम्बम्] ।
‘आख्यातमाख्यातेन क्रियासातल्ये’ २० ! अश्रीत-
पिबता पचतभृज्जता खादतमोदता खादतवमता
(खादताचमता) आहरनिवपा आहरनिष्क्रिा
(आवपनिष्क्रिा) उत्पचविपचा भिन्धिलवणा
कृन्धिविचक्षणा पचलवणा पचप्रकूटा—**आकृ-**
तिगणोऽयम् तेन । अकुतोभयः कान्दिशीकः
(कान्देशीकः) आहोपुरुषा आहोपुरुषिका अ-
हमहमिका यदृच्छा एहिरेयाहिरा उन्मृजावमृजा द्र-
व्यान्तरम् अवश्यकार्यम् ॥ इति मयूरव्यंसका-
दयः ॥

समर्थोऽन्यपदार्थे च सिद्धशुष्कसन्महद्द्वादश ।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः

तत्पुरुष समास

सुप, समा० सहसुपा १. पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ७१२ एकदे-णे ३
विभाषा, तत्पुरुषः,

एकत्वसंख्याविशिष्ट अवयवी के
साथ पूर्व अपर अधर उत्तर शब्द
समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा २. अर्धं नपुंसकम् ७१३ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

एक- देणे

सुप्, समा० सहसुपा ३. द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ७१४

विभाषा, तत्पुरुषः,

एक-देणे

सुप्, समा० सहसुपा ४. प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ७१५

विभाषा, तत्पुरुषः,

सुप्, समा० सहसुपा ५. कालाः परिमाणिना ७१६ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सुप्, समा० सहसुपा ६. नञ् ७५६ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

सुप्, समा० सहसुपा ७. ईषदकृता ७५५ ।

विभाषा, तत्पुरुषः, * ईषद्गुणवचनेनेति वक्तव्यम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ८. षष्ठी ७०२ ।

विभाषा, तत्पुरुषः, * कृद्योगा च षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ९. याजकादिभिश्च ७०३ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी

(१६) याजक पूजक परिचारक परिवेषक (परिषेचक) स्नापक अध्यापक उत्साहक उद्वर्तक होतृ भर्तृ रथगणक पत्तिगणक—इति याजकादयः ।।

सुप्, समा० सहसुपा १०. न निर्धारणे ७०४ ।

न १६

विभाषा, तत्पुरुषः, * प्रतिपदविधाना च षष्ठी न समस्यत इति

षष्ठी

वक्तव्यम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ११. पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधि-

विभाषा, तत्पुरुषः,

करणेन ७०५ ।

षष्ठी, न

सुप्, समा० सहसुपा १२. केन च पूजायाम् ७०६ ।

केन १३

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, न

सुप्, समा० सहसुपा १३. अधिकरणवाचिना च ७०७ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, न, केन

नित्यं नपुंसक समांशवाची अर्द्धशब्द एकत्वविशिष्ट अवयवी के साथ समस्त होता है ।

एकत्वसंख्या विशिष्ट अवयवी के साथ द्वितीय तृतीय चतुर्थ तुर्य शब्द विकल्प से समस्त होते हैं ।

प्राप्त और आपन्न शब्द द्वितीयान्त के साथ समस्त होते हैं ।

परिच्छेद्यवाची सुबन्त के साथ कालवाची शब्द समस्त होते हैं ।

समर्थ सुबन्त के साथ नञ् समस्त होता है ।

अकृदन्त सुबन्त के साथ ईषत् शब्द समस्त होता है ।

षष्ठ्यन्त सुबन्त समर्थ सुबन्त के साथ समस्त होता है ।

षष्ठ्यन्त, याजक आदि शब्दों के साथ समस्त होता है ।

निर्धारण में वर्तमान षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

पूरण गुण सुहितार्थ सत् अव्यय तव्य और समानाधिकरण के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

३.२.१८८ सूत्र से विहित क्त के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

३.४.७६ सूत्र से विहित क्त के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

सुप्, समा० सहसुपा १४. कर्मणि च ७०८ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, न

सुप्, समा० सहसुपा १५. तृजकाभ्यां कर्तरि ७०९ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, न

सुप्, समा० सहसुपा १६. कर्तरि च ७१० ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, न, तृज-म्

सुप्, समा० सहसुपा १७. नित्यं क्रीडाजीविकयोः ६११ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

षष्ठी, तृज-म्

सुप्, समा० सहसुपा १८. कुगतिप्रादयः ७६१ ।

विभाषा, तत्पुरुषः, * कर्मप्रवचनीयानां प्रतिषेधः ।

नित्यम् * प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया ।

* अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया ।

* अवादयः कुष्टाद्यर्थे तृतीयया ।

* पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या ।

* निरादयः क्रान्ताद्यर्थे प्रञ्चम्या ।

* इवेन विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च ।

सुप्, समा० सहसुपा १९. उपपदमतिङ् ७८२ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

नित्यम्

सुप्, समा० सहसुपा २०. अमैवाव्ययेन ७८३ । ॥ १ ॥

विभाषा, तत्पुरुषः,

उपपदम्

सुप्, समा० सहसुपा २१. तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ७८४ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

उपपदम्, अमैव,

अव्य०

सुप्, समा० सहसुपा २२. क्त्वा च ७८५ ।

विभाषा, तत्पुरुषः,

तृ०-नि

२.३.६६ सूत्र से कर्म में विहित षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

तृजकाभ्यां १७ कर्ता में होने वाली षष्ठी तृच् और अक् के साथ नहीं समस्त होती है ।

कर्ता में होने वाले तृच् और अक् के साथ षष्ठी नहीं समस्त होती है ।

नित्यम् १९ क्रीडा और जीविका में अक् के साथ षष्ठी नित्य समस्त होती है ।

कु अव्यय गति संज्ञक और प्रादि समर्थ के साथ नित्य समस्त होते हैं ।

उपपदम् २१ अतिङन्त उपपद समर्थ के साथ नित्य समस्त होता है ।

अमैव २१ अव्यय के साथ उपपद का जो समास होता है वह अम् के ही साथ होगा ।

तृ०-नि २२ ३.४.४७ सूत्र से प्रारम्भ कर जिन उपपदों की चर्चा की गई है वे अम् अव्यय के साथ विकल्प से समस्त होते हैं ।

पूर्वसूत्र में वर्णित उपपद क्त्वा के साथ विकल्प से समस्त होते हैं ।

बहुव्रीहि समास

सुप्, समा० सहसुपा २३. शेषो बहुव्रीहिः ८२९ ।
विभाषा

बहुव्रीहिः २८ २.२.२८ तक बहुव्रीहि का अधि-
कार है यह समास प्रथमान्त में
होता है ।

सुप्, समा० सहसुपा २४. अनेकमन्यपदार्थे ८३० ।
विभाषा, बहुव्रीहिः * प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः ।
* नञोऽस्त्यथानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः ।

अनेकम् २९ अन्य पदार्थ में वर्तमान अनेक
प्रथमान्त समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा २५. संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये
विभाषा, बहुव्रीहिः, ८४३ ।
अनेकम्

संख्येय अर्थ में प्रयुक्त संख्या शब्दों
के साथ अव्यय आसन्न दूर अधिक
और संख्या शब्द समस्त होते हैं ।
यदि अन्तराल वाच्य हो तो दिङ्-
नाम सुबन्त समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा २६. दिङ्नामान्यन्तराले ८४५ ।
विभाषा, बहुव्रीहिः,
अनेकम्

ग्रहण अर्थ में सरूप सप्तम्यन्त शब्द
तथा प्रहरण अर्थ में तृतीयान्त शब्द
समस्त होते हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा २७. तत्र तेनेदमिति सरूपे ८४६ ।
विभाषा, बहुव्रीहिः,
अनेकम्

तुल्य योग में वर्तमान सह शब्द
तृतीयान्त के साथ समस्त होता
हैं ।

सुप्, समा० सहसुपा २८. तेन सहेति तुल्ययोगे ८४८ ।
विभाषा, बहुव्रीहिः, * सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावो वक्तव्यः ।
अनेकम्

च के विषय में वर्तमान् अनेक
सुबन्त समस्त होते हैं । यह द्वन्द्व
संज्ञक समास होता है ।

सुप्, समा० सहसुपा द्वन्द्व समास
विभाषा, अनेकम् २९. चार्थे द्वन्द्वः ९०१ ।

पूर्वनिपात

सुप्, समा० सहसुपा ३०. उपसर्जनं पूर्वम् ६५४ ।
विभाषा

पूर्वम् ३८ समास में उपसर्जन संज्ञक का पूर्व
उपसर्जनम् ३१ में प्रयोग करना चाहिए ।

सुप्, समा० सहसुपा ३१. राजदन्तादिषु परम् ९०२ ।
विभाषा, पूर्वम् उप-
सर्जनम्

राजदन्त आदि शब्दों में उपसर्जन
का पर में प्रयोग करना चाहिये ।

(१७) राजदन्तः अग्रेवणम् लिप्तवासितम् नग्न-
मुषितम् सिक्तसंमृष्टम् मृष्टलुञ्चितम् अवक्लिन्नपक्वम्
अर्पितोप्तम् उप्तगाढम् उलूखलमुसलम् तण्डु-
लकिण्वम् दृषदुपलम् आरङ्गायनि (आरङ्गायन-
बन्धकी) चित्ररथबाह्वीकं अवन्त्यश्मकं शूदार्य
स्नातकराजानौ विष्वक्सेनार्जुनौ अक्षिभ्रुवम् दारगवम्
शब्दार्थौ धर्मार्थौ कामार्थौ अर्थशब्दौ अर्थधर्मौ अर्थकामौ

वैकारिमतं गाजवाजम् (गोजवाजं) गोपालिधान-
पूलासं (गोपालधानीपूलासम्) पूलासकारण्डं (पूला-
सककुरण्डम्) स्थूलासम् (स्थूलपूलासम्) उशीर-
बीजं [जिज्ञास्थि] सिञ्जास्थम् (सिञ्जाश्चत्थं)
चित्रास्वाती (चित्रस्वाती) भार्यापती दम्पती जम्पती
जायापती पुत्रपती पुत्रपशू केशश्मथू शिरोबीजु
(शिरोबीजम्) शिरोजानु सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी
[आद्यन्तौ] अन्तादी गुणवद्धी वृद्धिगुणौ—इति
राजदन्तादयः ।।

सुप्, समा० सहसुपा ३२. द्वन्द्वे घि १०३ ।

विभाषा, पूर्वम्

द्वन्द्वे ३४

द्वन्द्व समास में घि संज्ञक का पूर्व में प्रयोग करना चाहिये ।

सुप्, समा० सहसुपा ३३. अजाद्यदन्तम् १०४ ।

विभाषा, पूर्वम्, द्वन्द्वे

द्वन्द्व समास में अजादि अदन्त शब्द का पूर्व में प्रयोग करना चाहिये ।

सुप्, समा० सहसुपा ३४. अल्पाक्षरम् १०५ ।

विभाषा, पूर्वम्, द्वन्द्वे * अनेकप्राप्तावेकस्य नियमोऽनियमः शेषे ।

* ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण समानाक्षराणाम् ।

* अभ्यर्हितं च ।

* लघ्वक्षरम् ।

* वर्णानामानुपूर्व्येण ।

* धातुश्च ज्यायसः ।

* संख्याया अल्पीयस्याः ।

* धर्मादिषु भयम् ।

सुप्, समा० सहसुपा ३५. सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ ८९८ ।

विभाषा, पूर्वम्

बहुव्रीहौ ३७

बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त और विशेषण का पूर्वप्रयोग होता है ।

* सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम् ।

* वा प्रियस्य ।

* गङ्गादिभ्यः परा सप्तमी ।

सुप्, समा० सहसुपा ३६. निष्ठा ८९९ ।

विभाषा, पूर्वम्, बहु०

* जातिकालसुखादिभ्यः परानिष्ठा ।

* प्रहरणार्थेभ्यश्च परे निष्ठासप्तम्यौ ।

बहुव्रीहि समास में निष्ठान्त का पूर्व प्रयोग होता है ।

सुप्, समा० सहसुपा ३७. वाऽऽहिताग्न्यादिषु ९०० ।

विभाषा, पूर्वम्, बहु०

वा ३८

आहिताग्नि आदि शब्दों में निष्ठान्त का विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है ।

(१८) आहिताग्नि जातपुत्र जातदन्त जातश्मश्रु
तैलपीत घृतपीत [मद्यपीत] ऊढभार्य गतार्थ—

आकृतिगणोऽयम् ।। तेन । गडुकण्ठ अस्युद्यत
(अरमुद्यत) दण्डपाणिप्रभृतयोऽपि ।। इत्या-
हिताग्न्या-दयः ।।

सुप्, समा० सहसुपा ३८. कडाराः कर्मधारये ७५१ ।
विभाषा, पूर्वम्, वा०

कर्मधारय समास में कडार आदि
शब्दों का विकल्प से पूर्व प्रयोग
होता है ।

(१९) कडार गडुल खञ्ज खोड काण कुण्ठ
खलति गौर वृद्ध भिक्षुक पिङ्ग पिङ्गुल (पिङ्गल)
तड तनु [जठर] बधिर मठर कञ्ज बर्बर—इति
कडारादयः ।।

पूर्वापरार्धरोत्तरं तृतीयाप्रभृतीन्यष्टादश ।।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

विभक्ति विधान

१. अनभिहिते ५३६ ।

* तिङ्कृतद्धितसमासैः परिसंख्यानम् ।

द्वितीयाविभक्ति

२. कर्मणि द्वितीया ५३७ ।

* उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ।
द्वितीयाप्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ।।

* अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि ।

द्वितीया, कर्मणि ३. तृतीया च होश्छन्दसि ३३९४ ।

द्वितीया ४. अन्तरान्तरेणयुक्ते ५४५ ।

द्वितीया ५. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ५५८ ।

कालाध्वनोः, अत्य- ६. अपवर्गे तृतीया ५६३ ।
न्तसंयोगे

कालाध्वनोः ७. सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ६४३ ।

यहाँ से अनभिहिते का अधिकार
होगा ।

अनभिहित कर्म में द्वितीया हो ।

जुहोति के कर्म में तृतीया और
द्वितीया हो वेद में ।

अन्तरा और अन्तरेण के योग में
द्वितीया हो ।

कालाध्वनोः ७ अत्यन्त संयोग में काल और अध्वा
अत्यन्तसंयोगे ६ वाची शब्दों से द्वितीया हो ।

अपवर्ग गम्यमान होने पर अत्यन्त
संयोग में काल और अध्वा वाची
शब्दों से तृतीया हो ।

दो कारकों के मध्य में काल और
अध्वावाची शब्दों से सप्तमी और
पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं ।

	८. कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ५४८ ।	कर्मप्रवचनीय युक्ते ११	कर्मप्रवचनीय के योग में द्वितीया होती है ।
कर्म०-युक्ते	९. यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी ६४५ ।		‘जिससे अधिक या जिसका ऐश्वर्य’ ऐसा अर्थ जहाँ हो वहाँ कर्मप्रवचनीय के योग में सप्तमी होती है ।
कर्म०-युक्ते	१०. पञ्चम्यपाङ्परिभिः ५९८ ।	पञ्चमी ११	कर्मप्रवचनीय के योग में अप आङ्परि से पञ्चमी होती है ।
कर्म०-युक्ते, पञ्चमी ११.	प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ६०० ।		कर्मप्रवचनीय के योग में जिससे प्रतिनिधि और प्रतिदान हो वहाँ पञ्चमी होती है ।
	१२. गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थीं चेष्टायाम- नध्वनि ५८५ ।		चेष्टा रहने पर अध्वभिन्न गत्यर्थकर्म में द्वितीया और चतुर्थी होती हैं ।
	चतुर्थी विभक्ति		
	१३. चतुर्थी संप्रदाने ५७० ।	चतुर्थी १७	सम्प्रदान कारक में चतुर्थी होती है ।
	* तादर्थ्ये चतुर्थी वक्तव्या ।		
	* क्लृपि संपद्यमाने च ।		
	* उत्पातेन ज्ञापिते च ।		
	* हितयोगे च ।		
चतुर्थी	१४. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ५८१ ।		क्रियार्था क्रिया जिसका उपपद हो उस स्थानी से अप्रयुज्यमान तुमुन् के कर्म में चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	१५. तुमर्थाच्च भाववचनात् ५८२ ।		(३.३.११ सूत्र से विहित) तुमर्थ भाववचन प्रत्ययान्त से चतुर्थी होती है ।
चतुर्थी	१६. नमःस्वतिस्वाहास्वधालं वषट्चो गाल्च ५८३ ।		नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलं वषट् के योग में चतुर्थी होती है ।
	* अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् ।		
चतुर्थी	१७. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ५८४		अनादर गम्यमान रहने पर दैवा- दिक मन धातु के प्राणिरहित कर्म में चतुर्थी विकल्प से होती है ।
	* अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकात्रशुकशृगाल- वर्जेष्विति वाच्यम् ।		
	(२०. वा० ग०) नौ काक अत्र शुक शृगाल— इति नावादयः ।।		
	तृतीया विभक्ति		
	१८. कर्तृकरणयोस्तृतीया ५६१ ।	तृतीया २३	अनभिहित कर्ता कर्म में तृतीया होती है ।
	* प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् ।		

(२१. वा० ग०) प्रकृति प्राय गोत्र सम विषम
द्विद्रोण पञ्चक साहस्र—इति प्रकृत्यादयः ।।

तृतीया	१९. सहयुक्तेऽप्रधाने ५६४ ।	सहार्थ से युक्त अप्रधान में तृतीया होती है ।
तृतीया	२०. येनाङ्गविकारः ५६५ । ।। १ ।।	जिस अङ्ग के विकृत होने से अङ्गी का विकार लक्षित हो उससे तृतीया होती है ।
तृतीया	२१. इत्थंभूतलक्षणे ५६६ ।	इत्थंभूतलक्षण में तृतीया होती है ।
तृतीया	२२. संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ५६७ ।	सम् पूर्वक ज्ञा धातु के कर्म में विकल्प से तृतीया हो ।
तृतीया	२३. हेतौ ५६८ ।	हेतु अर्थ में तृतीया हो ।
हेतौ	* निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासिं प्रायदर्शनिम् । २४. अकर्तर्येणे पञ्चमी ६०१ ।	हेतौ २७ पञ्चमी २५ कर्तृवर्जित ऋण यदि हेतु हो तो उससे पञ्चमी हो ।
हेतौ, पञ्चमी	२५. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम् ६०२ ।	यदि स्त्रीलिङ्ग भिन्न गुण हेतु हो तो विकल्प से पञ्चमी होती है ।
हेतौ	२६. षष्ठी हेतुप्रयोगे ६०७ ।	षष्ठी हेतु प्रयोगे यदि हेतु शब्द का प्रयोग हो और हेतु ही द्योत्य हो तो षष्ठी हो ।
हेतौ, षष्ठी हेतु०	२७. सर्वनामस्तृतीया च ६०८ ।	यदि हेतु द्योत्य हो और सर्वनाम तथा हेतु शब्द का भी प्रयोग हो तो तृतीया और षष्ठी दोनों हों ।

पञ्चमी विभक्ति

	२८. अपादाने पञ्चमी ५८७ ।	पञ्चमी ३५ अपादान में पञ्चमी होती है ।
	* ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च ।	
	* यतश्चाध्वकालनिर्माणं तत्र पञ्चमी तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ कालात्सप्तमी च वक्तव्या ।	
पञ्चमी	२९. अन्यारादितरतेदिक्छब्दाञ्चत्तरपदाजाहि- युक्ते ५९५ ।	अन्य आरात् इतर ऋते दिक्शब्द अञ्चत्तरपद आच् आहि के योग में पञ्चमी होती है ।
पञ्चमी	३०. षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ६०९ ।	५.३.२८ के अनुसार अतसर्थ प्रत्यय के योग में षष्ठी हो ।
पञ्चमी	३१. एनपा द्वितीया ६१० ।	५.३.३५ के अनुसार एनबन्त के योग में द्वितीया हो ।
पञ्चमी	३२. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्	तृतीया ३५ अ- पृथक् बिना नाना के योग में तृतीया ६०३ । अन्यतरस्याम् ३३ पञ्चमी (और द्वितीया) हो ।

पञ्चमी, तृतीया, अ- न्यतरस्याम्	३३. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यास- त्त्वचनस्य ६०४ ।		असत्त्ववाची स्तोक अल्प कृच्छ्र कतिपय शब्दों से करण में तृतीया और पञ्चमी हो ।
पञ्चमी, तृतीया	३४. दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ६११ ।		दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी होती हैं ।
पञ्चमी, तृतीया	३५. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ६०५ ।	दूरा-थेभ्यः ३६	दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों से द्वितीया तृतीया और पञ्चमी होती हैं ।
दूरा-थेभ्यः	सप्तमी विभक्ति ३६. सप्तम्यधिकरणे च ६३३ । * क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम् । * साध्वसाधुप्रयोगे च । * अर्हणां कर्तृत्वेऽनर्हणामकर्तृत्वे तद्वैपरीत्ये च । * निमित्तात्कर्मसंयोगे ।	सप्तमी ४१	अधिकरण में तथा दूरार्थ अन्ति- कार्थ शब्दों से सप्तमी होती है ।
सप्तमी	३७. यस्य च भावेन भावलक्षणम् ६३४ ।	यस्य-लक्षणम् ३८	जिसकी क्रिया से क्रियान्तर लक्षित होता है उससे सप्तमी होती है ।
सप्तमी, यस्य-लक्ष- णम्	३८. षष्ठी चानादरे ६३५ ।	षष्ठी ४१	अनादराधिक्य क्रियान्तर लक्षण में षष्ठी और सप्तमी होती है ।
सप्तमी, षष्ठी	३९. स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसू- तैश्च ६३६ ।		स्वामिन् ईश्वर अधिपति दायाद साक्षिन् प्रतिभू प्रसूत शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
सप्तमी, षष्ठी	४०. आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ६३७ । ॥ २ ॥		आसेवा गम्यमान होने पर आयुक्त और कुशल शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
सप्तमी, षष्ठी	४१. यतश्च निर्धारणम् ६३८ ।	यतः-णम् ४२	जिससे निर्धारण किया जाय उससे षष्ठी और सप्तमी होती हैं ।
यतः-णम्	४२. पञ्चमी विभक्ते ६३९ ।		निर्धार्यमाण का जिसमें भेद हो उसमें पञ्चमी होती है ।
	४३. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ६४० ।	सप्तमी ४५	यदि प्रति का प्रयोग न हो और अर्चा गम्यमान हो तो साधु निपुण के योग में सप्तमी होती है ।
	* अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम् ।		

(२२) प्रति परि अनु—एते प्रत्यादयः ।

सप्तमी	४४. प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ६४१ । तृतीया ४५	प्रसित और उत्सुक के योग में तृतीया और सप्तमी होती हैं ।
सप्तमी, तृतीया	४५. नक्षत्रे च लुपि ६४२ ।	लुबन्त नक्षत्र शब्द से तृतीया और सप्तमी होती हैं ।
	प्रथमाविभक्ति	
	४६. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्र- प्रथमा ४७ थमा ५३२ ।	प्रातिपदिकार्थ मात्र लिङ्ग मात्र परि- माणमात्र और वचनमात्र में प्रथमा होती है ।
प्रथमा	४७. संबोधने च ५३३ । संबोधने ४८	संबोधन में प्रथमा होती है ।
	आमन्त्रित संज्ञा	
संबोधने	४८. सामन्त्रितम् ४११ ।	संबोधन में प्रथमान्त शब्दरूप आमन्त्रित कहलाता है ।
	संबुद्धि संज्ञा	
	४९. एकवचन संबुद्धिः १९२ ।	आमन्त्रित प्रथमा का एकवचन सम्बुद्धि संज्ञक होता है
	षष्ठी विभक्ति	
	५०. षष्ठी शेषे ६०६ ।	षष्ठी, शेषे ७३ कर्मादि एवं प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	५१. ज्ञोऽविदर्थस्य करणे ६१२ ।	अविदर्थ ज्ञा अवबोधने धातु के करण में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे	५२. अधीगर्थदयेशां कर्मणि ६१३ । कर्मणि ६१	स्मरणार्थक धातु दानगतिरक्षणार्थक दय धातु तथा ईश ऐश्वर्ये धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५३. कृजः प्रतियत्ने ६१४ ।		प्रतियत्न में कृ धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५४. रुजार्थानां भाववनचनानामज्वरेः ६१५ * अज्वरिसन्ताप्योरिति वक्तव्यम् ।		भावकर्तृक ज्वरिवर्जित रुजार्थ धातुओं के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५५. आशिषि नाथः ६१६ ।		आशीः अर्थ में नाथ धातु के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५६. जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम् ६१७ ।		हिसार्थक जासि निप्रहण नाट क्राय पिष् धातुओं के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।
षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५७. व्यवहपणोः समर्थयोः ६१८ ।		समानार्थ व्यवह और पण के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।

षष्ठी, शेषे, कर्मणि ५८. दिवस्तदर्थस्य ६१९ ।

दिवस्तदर्थस्य
६१

षष्ठी, शेषे, कर्मणि, ५९. विभाषोपसर्गे ६२० ।

दिवस्तदर्थस्य

षष्ठी, शेषे, कर्मणि, ६०. द्वितीया ब्राह्मणे ३३९५ ।। ३ ।।

दिवस्तदर्थस्य

षष्ठी, शेषे, कर्मणि, ६१. प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने ६२१ ।

दिवस्तदर्थस्य

* हविषोऽप्रस्थितस्य ।

षष्ठी, शेषे

६२. चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ३३९६ ।

* षष्ठ्यर्थे चतुर्थी

छन्दसि, बहुलम्
६३

षष्ठी, शेषे, छन्दसि ६३. यजेश्च करणे ३३९७ ।

बहुलम्

षष्ठी, शेषे

६४. कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ६२२ ।

षष्ठी, शेषे

६५. कर्तृकर्मणोः कृति ६२३ ।

* गुणकर्मणि वेध्यते ।

षष्ठी, शेषे

६६. उभयप्राप्तौ कर्मणि ६२४ ।

* स्त्रीप्रत्ययोरकाकारयोर्नायं नियमः ।

* शेषे विभाषा ।

षष्ठी, शेषे

६७. क्तस्य च वर्तमाने ६२५ ।

क्तस्य ६८

षष्ठी, शेषे, क्तस्य ६८. अधिकरणवाचिनश्च ६२६ ।

षष्ठी, शेषे

६९. न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम् ६२७ । न ७०

* उक्तप्रतिषेधे कमेर्भाषायामप्रतिषेधः ।

* अव्ययप्रतिषेधे तोसुन्कसुनोरप्रतिषेधः ।

* द्विषः शतुर्वा ।

षष्ठी, शेषे, न

७०. अकेनोर्भविष्यदाधमर्णयोः ६२८ ।

षष्ठी, शेषे

७१. कृत्यानां कर्तरि वा ६२९ ।

व्यवह पण् समानार्थ दिव् के कर्म में शेष में षष्ठी होती है ।

सोपसर्ग दिव् के कर्म में शेष में विकल्प से षष्ठी होती है ।

श्रुति के ब्राह्मण भाग में दिवस्त-
दर्थस्य के कर्म में द्वितीया होती है ।

देवता सम्प्रदान में प्रेष्य और ब्रू के कर्म हविष् वाचक शब्दों से शेष में षष्ठी होती है ।

वेद में चतुर्थी के अर्थ में बहुल प्रकार से षष्ठी होती है ।

वेद में यज् धातु के करण में बहुल प्रकार से षष्ठी होती है ।

कृत्वसुच् अर्थक के प्रयोग में कालवाची अधिकरण में शेष में षष्ठी होती है ।

कृत् के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है ।

कृत् के योग में जहाँ एक साथ कर्ता और कर्म हों वहाँ कर्म में ही षष्ठी होती है ।

वर्तमान में विहित क्त के योग में षष्ठी होती है ।

अधिकरणवाची क्त के योग में षष्ठी होती है ।

ल उक्त अव्यय निष्ठा खलर्थ और तृण् के योग में षष्ठी नहीं होती है ।

भविष्यत् काल में विहित अक् और भविष्यत् आधमर्ण्य में इन् के योग में षष्ठी नहीं होती है ।

कृत्य के प्रयोग में कर्ता में विकल्प से षष्ठी होती है ।

षष्ठी, शेषे ७२. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्
६३० ।

षष्ठी, शेषे ७३. चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखा-
र्थहितैः ६३१ ।

अनभिहित इत्थंभूतयतश्च प्रेष्यब्रुवोस्त्रयोदश ।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयास्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

एकवद्भाव

१. द्विगुरेकवचनम् ७३१ ।

एकवचनम् १६ द्विग्वर्थ (समाहार में) एकवत् होता है ।

एकवचनम् २. द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ९०६ ।

द्वन्द्वः १६ प्राण्यङ्ग तूर्याङ्ग सेनाङ्ग द्वन्द्व एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ३. अनुवादे चरणानाम् ९०७ ।
* स्थेणोर्लुङीति वक्तव्यम् ।

अनुवाद गम्यमान होने पर चरणों का द्वन्द्व एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ४. अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ९०८ ।

यजुर्वेद के अनपुंसक क्रतु वाची शब्दों को द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ५. अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ९०९ ।

अध्ययन से जिनकी प्रत्यासन्न आख्या होती है उनके द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ६. जातिरप्राणिनाम् ९१० ।

प्राणी को छोड़ कर जाति वाची शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ७. विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः ९११ ।

भिन्न लिङ्ग नदीवाचक शब्दों के तथा ग्रामातिरिक्त देशवाची शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ८. क्षुद्रजन्तवः ९१२ ।

क्षुद्र जन्तुवाचियों के द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ९. येषां च विरोधः शाश्वतिकः ९१३ ।

नित्य विरोधी वाचक शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः १०. शूद्राणामनिरवसितानाम् ९१४ ।

अनिरवसित शूद्रवाचक शब्दों के द्वन्द्व में एकवत् होता है ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः ११. गवाश्चप्रभृतीनि च ११५ ।

गवाश्च आदि शब्द यथालिखित साधु हैं ।

(२३) गवाश्चम् गवाविकम् गवैडकम् अजाविकम्
[अजैडकम्] कुब्जवामनम् कुब्जकिरातम् पुत्रपौत्रम्
श्चण्डालम् स्त्रीकुमारम् दासीमाणवकम् शाटीपटीरम्
शाटीप्रच्छदम् शाटीपट्टिकम् उष्ट्रखरम् उष्ट्रशशम्
मूत्रशकृत् मूत्रपुरीषम् यकृन्मेदः मांसशोणितम् दर्भशरम्
दर्भभृतीकम् अर्जुनशिरीषम् अर्जुनपुरुषम् तृणोपलम्
(तृणोलपम्) दासीदासम् कुटाकुटम् भागवती-
भागवतम् इति गवाश्चप्रभृतीनि ॥

एकवचनम्, द्वन्द्वः १२. विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुश- विभाषा १३

कुन्यश्चबडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् ११६ ।

* बहुप्रकृतिः फलसेनावनस्पतिमृगशकुनिक्षुद्र-
जन्तुधान्यतृणानाम् ।

एकवचनम्, द्वन्द्वः, १३. विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि ११७ ।

विभाषा

एकवचनम्, द्वन्द्वः १४. न दधिपयआदीनि ११८ ।

न १६

(२४) दधिपयसी सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी ब्रह्म-
प्रजापती शिववैश्रवणौ स्कन्दविशाखौ परिव्राजक-
कौशिकौ (परिव्राट्कौशिकौ) प्रवर्ग्योपसदौ शुक्ल-
कृष्णौ इध्माबर्हिषी दीक्षातपसी [श्रद्धातपसी
मेधातपसी] अध्ययनतपसी उलूखलमुसले आद्य-
वसाने श्रद्धामेधे ऋक्सामे वाङ्मनसे—इति दधि
पयआदीनि ॥

एकवचनम्, द्वन्द्वः, १५. अधिकरणैतावत्त्वे च ११९ ।

अधि-वे १६

न

एकवचनम्, द्वन्द्वः, १६. विभाषा समीपे १२० ।

न, अधि-वे

द्रव्यसंख्या के अवगम में एकवत् नहीं होता है ।

द्रव्यसंख्यावगम में यदि समीप-
लगभग-अर्थ भासित हो तो विकल्प
से एकवत् होता है ।

समासलिङ्ग प्रकरण

१७. स नपुंसकम् ८२१

नपुंसकम् २५

समाहार में द्विगु और द्वन्द्व नपुंसक होते हैं ।

नपुं०

१८. अव्ययीभावश्च ६५९ ।

अव्ययीभाव समास नपुंसक लिङ्ग होता है ।

नपुं०

१९. तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ८२२ ।

तत्पुरुषः २५

२५ वें सूत्र तक अनञ् अकर्मधा-

नपुं०, तत्पु०, अन- २०. संज्ञायां कन्थोशीनरेषु ८२३ ॥१॥

रयः

अन-रयः २५

रय तत्पुरुष का अधिकार रहेगा ।

संज्ञा में कन्थान्त तत्पुरुष नपुंसक लिङ्ग होता है, यदि वह कन्था उशीनर देश की हो ।

नपुं०, तत्पु०, अन- २१. उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् ८२४

रयः

यदि उपज्ञायमान और उपक्रम्यमान की प्रथमता को कहने की इच्छा हो तो उपज्ञात और उपक्रमान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है ।

नपुं०, तत्पु०, अन- २२. छाया बाहुल्ये ८२५ ।

रयः

यदि पूर्व पदार्थ की बहुलता हो तो छायान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है ।

नपुं०, तत्पु०, अन- २३. सभा राजाऽमनुष्यपूर्वा ८२६ ।

रयः

सभा २४

सभान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है यदि सभा राजपर्यायपूर्व और अमनुष्य पूर्व हो ।

नपुं०, तत्पु०, अन- २४. अशाला च ८२७ ।

रयः, सभा

सभान्त तत्पुरुष नपुंसक होता है यदि सभा का अर्थ सङ्घात हो ।

नपुं०, तत्पु०, अन- २५. विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम्

रयः

८२८ ।

सेना सुरा छाया शाला निशा अन्त वाला तत्पुरुष विकल्प से नपुंसक होता है ।

२६. परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ८१२ ।

* द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो

वक्तव्यः ।

(इतरेतर योग) द्वन्द्व और तत्पुरुष में परसदृश लिङ्ग होता है ।

२७. पूर्ववदश्वबडवौ ८१३ ।

पूर्ववत् २८

अश्वबडवा में पूर्ववत् लिङ्ग होता है ।

पूर्ववत्

२८. हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ३३९९

वेद में हेमन्तशिशिर तथा अहोरात्र में पूर्ववत् लिङ्ग होता है ।

२९. रात्राह्वाहाः पुंसि ८१४

* अनुवाकादयः पुंसि ।

* संख्यापूर्व रात्रं क्लीबम् ।

३०. अपथं नपुंसकम् ८१५ ।

* पुण्यसुदिनाभ्यामह्नः क्लीबतेष्टा ।

* पथः संख्याव्ययादेः ।

* अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः ।

* आबन्तो वा ।

* अनो नलोपश्च वा द्विगुः स्त्रियाम् ।

रात्र अहन् अह अन्तवाले द्वन्द्व तत्पुरुष पुल्लिङ्ग में ही होते हैं ।

तत्पुरुष अपथ नपुंसक होता है ।

* पात्राद्यन्तस्य न ।

* सामान्ये नपुंसकम् ।

३१. अर्धर्चाः पुंसि च ८१६ ।

अर्धर्च आदिशब्द पुँल्लिङ्ग और
नपुंसक दोनों में होते हैं ।

(२५) अर्धर्च गोमय कषाय कार्षापण कुतप
कुसप (कुणप) कपाट शङ्ख गूथ यूथ ध्वज
कबन्ध पद्म गृह सरक कंस दिवस यूष अन्धकार
दण्ड कमण्डलु मण्ड भूत द्वीप द्यूत चक्र धर्म
कर्मन् मोदक शतमान यान नख नखर चरण पुच्छ
दाडिम हिम रजत सक्तु पिधान सार पात्र घृत
सैन्धव औषध आढक चषक द्रोण खलीन पात्रीव
षष्टिक वारबाण (वारवारण) प्रोथ कपित्थ [शुष्क]
शाल शील शुक्ल (शुल्क) शीधु कवच रेणु
[शृण] कपट शीकर मुसल सुवर्ण वर्ण पूर्व चमस
क्षीर कर्ष आकाश अष्टापद मङ्गल निधन निर्यास
जृम्भ वृत्त पुस्त बुस्त क्ष्वेडित शृङ्ग निगड [खल]
मूलक मधु मूल स्थूल शराव नाल वप्र विमान
मुख प्रग्रीव शूल वज्र कटक कण्टक (कर्पट)
शिखर कल्क (वल्कल) नटमक (नाटमस्तक)
वलय कुसुम तृण पङ्क कुण्डल किरीट (कुमुद)
अर्बुद अङ्कुश तिमिर आश्रय भूषण इक्कस (इष्वास)
मुकुल वसन्त तटाक (तडाग) पिटक विटङ्क
विडङ्ग पिण्याक माष कोश फलक दिन दैवत
पिनाक समर स्थाणु अनीक उपवास शाक कर्पास
(वि-शाल) चषाल (चखाल) खण्ड दर विटप
(रण बल मक) मृणाल हस्त आर्द्र हल (सूत्र)
ताण्डव गाण्डीव मण्डप पटह सौध योध पार्श्व
शरीर फळ (छल) पुर (पुरा) राष्ट्र अम्बर बिम्ब
कुट्टिम मण्डल (कुक्कुट) कुडप ककुद खण्डल
तोमर तोरण मञ्चक पञ्चक पुङ्ख मध्य (बाल)
छाल वल्मीक वर्ष वस्त्र वसु देह उद्यान उद्योग
स्नेह स्तेन (स्तन स्वर) संगम निष्क केन गृह
क्षत्र पवित्र (यौवन कलह) मालक (पालक)
मूषिक (मण्डल वल्कल) कुज (कुञ्ज) विहार
लोहित विषाण भवन अरण्य पुलिन दृढ आसन
ऐरावत शूर्प तीर्थ लोमन (लोमश) तमाल लोह

दण्डक शपथ प्रतिसर दारु धनुस् मान वर्चस्क
कूर्च तण्डक मठ सहस्र ओदन प्रवाल शकट
अपराह नीड शकल तण्डुल—इत्यर्थर्चादिः ॥

अन्वादेशे आदेश

३२. इदमोऽन्वादेशोऽनुदात्तस्तृतीयादौ ३५० अश् ३३ इद- तृतीयादि में अन्वादेश विषयक
शे ३४ अशादेश होता है वह अनुदात्त होता है ।

इद-शे अश् ३३. एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ चानुदात्तौ १९६२ । एतदः ३४ अन्वादेश विषय में एतद् को अश्
होता है वह अनुदात्त है यदि त्र
और तस् हों और वे भी अनुदात्त
होते हैं ।

इद-शे, एतदः ३४. द्वितीयाटौस्त्वेनः ३५१ । अन्वादेशे में इदम् एतद् को एन
होता है जो अनुदात्त होता है, यदि
बाद में द्वितीया टा तथा ओस् हों ।

आर्द्धधातुके धात्वादेश
३५. आर्द्धधातुके २४३२ ।

आर्द्धधातुके ५७ २.४.५७ तक आर्द्धधातुके का
अधिकार होगा ।

आर्द्धधातुके ३६. अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ३०८० । अदः ४० तादि कित् और ल्यप् के यहाँ अद्
धातु को जग्ध् आदेश होगा ।

आर्द्धधातुके, अदः ३७. लुङ्सनोर्घस्त् २४२७ । घस्त् ४० लुङ् और सन् परे रहने पर अद्
को घस्त् होता है ।

आर्द्धधातुके, अदः, ३८. घञपोश्च ३२३६ । घञ् और अप् परे रहने पर अद्
को घस्त् आदेश होता है ।

घस्त् ३९. बहुलं छन्दसि ३३९८ । छन्दोविषय में अद् को बहुल प्रकार
से घस्त् होता है ।

आर्द्धधातुके, अदः, ४०. लिट्यन्यतरस्याम् २४२४ ॥२॥ लि-म् ४१ लिट् के यहाँ अद् को विकल्प से
घस्त् आदेश होता है ।

आर्द्धधातुके, लि०- ४१. वेजो वयिः २४११ । लिट् के यहाँ वेज् को विकल्प से
वयि आदेश होता है ।

म् ४२. हनो वध लिङि २४३३ । हनः ४४ आर्द्धधातुक लिङ् के यहाँ हन् को
वध आदेश होता है ।

आर्द्धधातुके, वध ४३. लुङि च २४३४ । लुङिः ४४ लुङ् परे रहने पर हन् को वध
आदेश होता है ।

हनः ४४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् २६९६ । यदि आत्मनेपद हो तो लुङ् के
यहाँ हन् को विकल्प से वध आदेश
होता है ।

आर्द्धधातुके	४५. इणो गा लुङि २४५८ । * इण्वदिक इति वक्तव्यम् ।	इणः ४७ ।	लुङ् परे रहने पर इण् को गा आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इणः	४६. णौ गमिरबोधने २६०७ ।	गमि-ने ४८	यदि णि परे हो तो अवबोधनार्थक इण् को गम् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इणः,	४७. सनि च २६१५ । गमि-ने०	सनि ४८	सन् परे रहने पर अवबोधनार्थक इण् को गम् होता है ।
आर्द्धधातुके, सनि,	४८. इडश्च २६१६ । गमि-ने०	इडः ५१	सन् परे रहने पर इड् धातु को भी गम् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इडः	४९. गाङ्लिटि २४५९ ।	गाङ् ५१	इड् को लिट् के यहाँ गाङ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, इडः,	५०. विभाषा लुङ्लङोः २४६० । गाङ्	विभाषा ५१	लुङ् और लृङ् के यहाँ इड् को विकल्प से गाङ् होता है ।
आर्द्धधातुके, इडः,	५१. णौ च संश्रुडोः २६०१ । गाङ्, विभाषा		ण्यन्त में सन् और चङ् के पर में रहने पर इड् को विकल्प से गाङ् होता है ।
आर्द्धधातुके	५२. अस्तेर्धूः २४७० ।		आर्द्धधातुक में अस् धातु को भू आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	५३. ब्रुवो वचिः २४५३ ।		आर्द्धधातुक में ब्रू को वच् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	५४. चक्षिङः ख्याञ् २४३६ । * वर्जने प्रतिषेधः । * असनयोश्च ।	चक्षिङः ख्याञ् ५५	आर्द्धधातुक में चक्षिङ् को ख्याञ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, चक्षिङः	५५. वा लिटि २४३७ । ख्याञ्		लिट् में चक्षिङ् को विकल्प से ख्याञ् आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके	५६. अजेर्व्यघञपोः २२९२ । * घञपोः प्रतिषेधे क्य उपसंख्यानम् । * वलादावार्धधातुके वेध्यते ।	अजेर्वी ५७	घञ् और अप् को छोड़कर आर्द्धधातुक में अज् को वी आदेश होता है ।
आर्द्धधातुके, अजेर्वी	५७. वा यौ ३२९२ ।		ल्युट् परे रहने पर अज् को विकल्प से वी आदेश होता है ।

लुक् प्रकरण

५८. ण्यक्षत्रियार्षजितो यूनि लुगणिजोः १२७६ यूनि ६१ लुक् णि प्रत्ययान्त क्षत्रियगोत्र प्रत्ययान्त ऋष्यभिधायी गोत्र प्रत्ययान्त और जित् से परे युवाभिधायी अण् और इज् का लुक् होता है ।

लुक्, यूनि

५९. पैलादिभ्यश्च १०८४ ।

पैल आदि शब्दों से युव प्रत्यय का लुक् होता है ।

(२६) पैल शालङ्कि सात्यकि सात्यंकामि राहवि रावणि औदञ्चि औदव्रजि औदमेघि औदव्यञ्जि (औदमज्जि) औदभृज्जि दैवस्थानि पैङ्गलौदायनि राहक्षति (राह क्षति) भौलिङ्गि राणि औदन्यि औद्राहमानि औज्जिहानि औदशुद्धि 'तद्राजाच्चाणः' २१ (तद्राज)—आकृतिगणोऽयम् ।। इति पैलादिः ।।

लुक्, यूनि

६०. इजः प्राचाम् १०८५ । ।। ३ ।।

गोत्र इज् प्रत्ययान्त से युव प्रत्यय का लुक् होता है, यदि गोत्र प्राक्-देशीय हो ।

लुक्, यूनि

६१. न तौल्वलिभ्यः १०८६ ।

तौल्वलि आदि शब्दों से युव प्रत्यय का लुक् नहीं होता है ।

(२७) तौल्वलि धारणि पारणि रावणि दैलीपि दैवति वार्कलि नैवति (नैवकि) दैवमित्रि (दैव-मति) दैवयज्ञि चाफष्ठकि बैल्वकि वैकि (वैङ्कि) आनुहारति (आनुराहति) पौष्करसादि आनुरोहति आनुति प्रादोहनि नैमिषि प्राडाहति बान्धकि वैशीति आसिनासि आहिंसि आसुरि नैमिषि आसिबन्धकि पौषि कारेणुपालि वैकर्णि वैरकि वैहति—इति तौल्वल्यादिः ।।

लुक्

६२. तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ११९३ । बहु-म् ७०

अस्त्रीलिङ्ग बहुर्थ में वर्तमान तद्राज संज्ञक प्रत्ययों का लुक् होता है, यदि बहुत्व तद्राजकृत हो ।

लुक्, बहु-म्

६३. यस्कादिभ्यो गोत्रे ११४६ ।

गोत्रे ७०

यस्क आदिशब्दों से अस्त्रीलिङ्ग बहुर्थ में वर्तमान गोत्र प्रत्यय का लुक् होता है, यदि बहुत्व गोत्र-प्रत्ययकृत हो ।

(२८) यस्क लह्य द्रुह्य अयस्थूण (अयःस्थूण) तृणकर्ण सदामत्त कम्बलहार बहियोग कर्णाढिक पर्णाढिक पिण्डीजङ्घ बकसस्थ (बकसक्थ) विश्रि कुद्रि अजबस्ति मित्रयु रक्षोमुख जङ्घारथ उत्कास कटुक मथक (मन्यक) पुष्करट् (पुष्करसद्) विषपुट उपरिमेखल क्रोष्टुकमान (क्रोष्टुमान) क्रोष्टुपाद

क्रोष्टुमाय शीर्षमाय खरप पदक वर्षुक भलन्दन
भडिल भण्डिल भडित भण्डित । एते यस्कादयः ।।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६४. यञञोश्च ११०८ ।

* यजादीनामेकस्य द्वयोर्वा तत्पुरुषे षष्ठ्या उप-
संख्यानम्

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६५. अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च
११४७ ।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६६. बह्वच् इजः प्राच्यभरतेषु ११४८ ।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६७. न गोपवनादिभ्यः ११४९ ।

(२९) गोपवन शेयु (शियु) बिन्दु भाजन अश्वा-
वतान श्यामाक (श्योमाक) श्यामक श्यापर्ण—
बिदाद्यन्तर्गणोऽयं गोपवनादिः ।।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६८. तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ११५० ।

(३०) तिककितवाः वङ्गरभण्डीरथाः उपकल-
मकाः फफकनरकाः बकनखगुदपरिणद्धाः उब्जक-
कुभाः लङ्कशान्तमुखाः उत्तरशलङ्कटाः कृष्णाजिन-
कृष्णसुन्दराः भ्रष्टाककपिष्ठलाः अग्निवेशदशेरुकाः
—एते तिककितवादयः ।।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ६९. उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ११५१ ।

(३१) उपक लमक भ्रष्टक कपिष्ठल कृष्णाजिन
कृष्णसुन्दर चूडारक आडारक गडुक उदङ्क सुधायुक्त
अबन्धक पिङ्गलक पिष्टक सुपिष्ट (सुपिष्ठ)
मयूरकर्ण खरीजङ्ग शलाथल पतञ्जल पदञ्जल कठेरणि
कुषीतक कशकृत्स्न (काशकृत्स्न) निदाय कल-

यञन्त और अञन्त शब्दों से
अस्त्रीलिङ्ग बह्वर्थ में वर्तमान गो-
त्रप्रत्यय का लुक् होता है, यदि
बहुत्व गोत्र प्रत्यय कृत हो ।

अत्रि भृगु कुत्स वसिष्ठ गोतम
अङ्गिरस् शब्दों से बह्वर्थ में वर्तमान
अस्त्रीलिङ्ग गोत्र प्रत्यय का लुक्
होता है, यदि बहुत्व गोत्र प्रत्यय
कृत हो ।

बह्वच् प्रातिपादिक से परे प्राच्य
तथा भरत गोत्र में वर्तमान इज् का
लुक् होता है, बहुत्व में ।
गोपवन आदि शब्दों से गोत्र प्रत्यय
का लुक् नहीं होता है ।

द्वन्द्व में तिककितवा आदि शब्दों
से बहुत्व में गोत्र प्रत्यय का लुक्
होता है ।

द्वन्द्व और अद्वन्द्व में उपक आदि
शब्दों से बहुत्व में गोत्र प्रत्यय का
विकल्प से लुक् होता है ।

शीकण्ठ दामकण्ठ कृष्णपिङ्गल कर्णक पर्णक
जटिरक बधिरक जन्तुक अनुलोम अनुपद प्रतिलोम
अपजग्ध प्रतान अनभिहित कमक वराटक लेखाभ्र
कमन्दक पिञ्जूलक वर्णक मसूरकर्ण मदाघ कबन्तक
कमन्तक कदामत्त दामकण्ठ—एते उपकादयः ।।

लुक्, बहु-म्, गोत्रे ७०. आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच्
११५२ ।

आगस्त्य और कौण्डिन्य शब्दों से
परे अण् और यञ् का—बहुत्व में
वर्तमान गोत्रप्रत्यय का—लुक् होता
है तथा प्रकृतिभाग को क्रमशः
अगस्ति और कुण्डिनच् आदेश होता
है ।

लुक् ७१. सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ६५० ।

धातु और प्रातिपदिक के अवयव
सुप् का लुक् होता है ।

लुक् ७२. अदिप्रभृतिभ्यः शप्: २४२३ । शप्: ७६

अद् भक्षणे आदि (आदादिक)
धातुओं से परे शप् का लुक् होता
है ।

लुक्, शप्: ७३. बहुलं छन्दसि ३४०० ।

छन्द में शप् का बहुल प्रकार से
लुक् होता है ।

लुक्, शप्: ७४. यङोऽचि च २६५० ।

अच् प्रत्यय परे रहने पर यङ् का
लुक् होता है ।

लुक्, शप्: ७५. जुहोत्यादिभ्यः श्लु: २४८९ । श्लु: ७६

हु (जुहोत्यादि) आदि धातुओं से
परे शप् को श्लु होता है ।

लुक्, शप्:, श्लु: ७६. बहुलं छन्दसि ३४०१ ।

छन्द में शप् को बहुल प्रकार से
श्लु होता है ।

लुक् ७७. गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सिचः ७९ पर-
२२२३ । षु ७८

परस्मैपद में गाति स्था घु पा भू से
सिच् का लुक् होता है ।

* गापोर्ग्रहणे इण्पिबत्योर्ग्रहणम् ।

लुक्, सिचः, पर-षु ७८. विभाषा घ्राघेट्शाच्छासः २३७६ । विभाषा ७९

परस्मै पद में घ्रा घेट् शा छा सा से
परे सिच् का विकल्प से लुक् होता
है ।

लुक्, सिचः, विभाषा ७९. तनादिभ्यस्तथासोः २५४७ ।

तनादि से परे, त और थास् के
यहाँ सिच् का विकल्प से लुक्
होता है ।

लुक् ८०. मन्त्रे घसह्रणशवृदहाद्वृक्कृगमिजनिभ्यो ले: ८१
ले: ३४०२ ॥४॥

मन्त्रविषय में घस ह्र णश वृ दह
आत् वृक् कृ गमि जनि से लि का
लुक् होता है ।

लुक्, ले:

८१. आमः २२३८ ।

आम् से परे लि का लुक् होता है ।

लुक्

८२. अव्ययादाप्सुपः ४५२ ।

सुपः ८३

अव्यय से परे आप् और सुप् का लुक् होता है ।

लुक्, सुपः

८३. नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ६५७ । अव्ययीभावात्, अतोऽम् ८४

अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का लुक् नहीं होता है और पञ्चमी से अतिरिक्त सुप् को अम् आदेश होता है ।

अतोऽम् अव्ययी- ८४. तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ६५८ ।
भावात्

अदन्त अव्ययीभाव से परे तृतीया और सप्तमी को बहुल प्रकार से अम् होता है ।

लुट् आदेश

८५. लुटः प्रथमस्य डारौरसः २१८८ ।

लुट् के प्रथमपुरुष को क्रमशः डा रौ रस् आदेश होते हैं ।

द्विगुरुपज्ञोपक्रमं वेजो वयिर्नतौल्वलिभ्य

आमः पञ्च ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः

पादः अध्यायश्च ।

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

प्रत्ययाधिकारः

प्रत्ययानुवृत्तिः ५.- १. प्रत्ययः १८० ।

४.१६०. यावदस्ति ।

अग्रे सप्तमसूत्रात् न दर्शिता ।

प्रत्ययः ५.४.-

१६०

प्रकृति उपपद उपाधि विकार आगम को छोड़कर यहाँ से पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक प्रत्यय संज्ञा का अधिकार होगा ।

प्रत्ययस्थान निर्देशः

प्रत्ययः

२. परश्च १८१ ।

पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक धातु या प्रातिपदिक से होने वाला प्रत्यय पर में होगा ।

प्रत्ययस्वरनिर्देशः

प्रत्ययः

३. आद्युदात्तश्च ३७०८ ।

जो प्रत्ययसंज्ञक होगा वह आद्युदात्त होगा ।

प्रत्ययः

४. अनुदात्तौ सुप्पितौ ३७०९ ।

सुप् और पित् प्रत्यय अनुदात्त होते हैं ।

सन्प्रत्ययः

प्रत्ययः

५. गुण्तिज्किभ्दयः सन् २३९३ ।

सन् ७

गुर्प् तिज् कित् धातु से सन् प्रत्यय होता है ।

प्रत्ययः, सन्

६. मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य २३९४

मान् वध दान् शान् धातु से सन् होता है तथा अभ्यास इकार को दीर्घ आदेश होता है ।

सन्

७. धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा वा ११ कर्मणः जो इष् धातु का कर्म हो और इष् २६०८ । १० इच्छायां ९ धातु के साथ समानकर्तृक भी हो

* आशङ्कायां सन्वक्तव्यः ।

उस धातु से इच्छा अर्थ में विकल्प से सन् होता है ।

सुब्धातु प्रत्ययः

वा, कर्मणः, इच्छा- ८. सुप् आत्मनः क्यच् २६५७ ।
याम्

* मान्तादव्ययाच्च क्यच् न ।

सुप्: ११

आत्म-नः ९

क्यच् १०

इष् धातु का कर्म और एषिता के द्वारा अपने लिये जो चाहा हो तद्वाचक सुबन्त से विकल्प से क्यच् प्रत्यय होता है, इच्छा अर्थ में ।

वा, कर्मणः, इच्छा- ९. काम्यच्च २६६३ ।

याम्, आ० क्यच्,

सुप्:

सुबन्त कर्म से आत्मेच्छा में काम्यच् प्रत्यय विकल्प से होता है ।

वा, कर्मणः, क्यच् १०. उपमानादाचारे २६६४
सुपः * अधिकरणाच्चेति वक्तव्यम् ।

आचारे ११
उपमानात् ११

उपमान कर्म सुबन्त से आचार
अर्थ में विकल्प से क्यच् प्रत्यय
होता है ।

वा, आचारे, ११. कर्तुः क्यङ्सलोपश्च २६६५ । क्यङ् १८
सुपः उपमानात् * आचारेऽवगल्भक्लीबहोढेभ्यः क्विब्व्या
वक्तव्यः ।

उपमान कर्ता सुबन्त से आचार
अर्थ में विकल्प से क्यङ् प्रत्यय
होता है और यदि कर्ता में स् हो
तो उसका लोप होता है ।

क्यङ् १२. भृशादिभ्यो भुव्यच्चेर्लोपश्च हलः २६६७ भुवि १३

अच्यन्त भृश आदि प्रातिपदिकों
से भवति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय
होता है और यदि प्रातिपदिक के
अन्त में हल् हो तो उसका लोप
भी होता है ।

(३२) भृश शीघ्र चपल मन्द पण्डित उत्सुक
सुमनस् दुर्मनस् अभिमानस् उन्मनस् रहस् रोहत्
रेहत् संश्रत् तृपत् शश्रत् भ्रमत् वेहत् शुचिस्
शुचिवर्चस् अण्डरवर्चस् ओजस् सुरजस् अरजस्—
एते भृशादयः ।

भुवि १३. लोहितादिडाज्यभ्यः क्यष् २६६८ ।

लोहित आदि से और डाजन्त से
भवति अर्थ में क्यष् प्रत्यय होता
है ।

(३३) लोहित चरित नलि फेनमद्र हरित दास
मन्द—लोहितादिराकृतिगणः ।।

* लोहितडाज्यभ्यः क्यष्चनम् ।

* भृशादिष्वितराणि ।

क्यङ् १४. कष्टाय क्रमणे २६७० ।

चतुर्थ्यन्त कष्ट शब्द से उत्साह
अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।

* सत्रकक्षकष्टकृच्छ्रगहनेभ्यः कण्वचिकीर्षा-
याधिति वक्तव्यम् ।

क्यङ् १५. कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः कर्मणः २०
२६७१ ।

कर्म में वर्तमान रोमन्थ और तपस्
शब्द से क्रमशः वर्तना एवं चरण
अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।

* हनुचलन इति वक्तव्यम् ।

* तपसः परस्मैपदं च ।

क्यङ्, कर्मणः १६. बाष्पोष्मभ्यामुबुधने २६७२ ।

कर्म में वर्तमान बाष्प एवम् ऊष्म
शब्द से उद्वमन अर्थ में क्यङ्
प्रत्यय होता है ।

* फेनाच्चेति वक्तव्यम् ।

क्यङ्, कर्मणः १७. शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेधेभ्यः करणे करणे २१
२६७३ ।

* सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्च ।

क्यङ्, कर्मणः, क- १८. सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् २६७४ ।
रणे

(३४) सुख दुःख तृप्त कृच्छ्र अस्र आस्र अलीक
प्रतीप करुण कृपण सोढ—इत्येतानि सुखादीनि ॥

करणे, कर्मणः १९. नमोवरिवश्चित्रङ्ः क्यच् २६७५ ।

* नमसः पूजायाम् ।

* वरिवसः परिचर्यायाम् ।

* चित्रङ् आश्चर्ये ।

करणे, कर्मणः २०. पुच्छभाण्डचीवराणिङ् २६७६ ॥१॥

* भाण्डात्समाचयने ।

* चीवरादाजने परिधाने च ।

* पुच्छादुदसने व्यसने पर्यसने च ।

करणे २१. मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृ-
ततूस्तेभ्यो णिच् २६७७ ।

* हलिकल्योरत्वनियातनं सन्वद्धावप्रतिषेधार्थम् ।

२२. धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् यङ् २४

२६२९ ।

* सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यत्यशूणोतिभ्यो यङ्वाच्यः ।

यङ् २३. नित्यं कौटिल्ये गतौ २६३४ ।

यङ् २४. लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो भाव
गर्हाभ्याम् २६३५ ।

२५. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालो- णिच् २६
मत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् २५६३ ।

* अर्थवेदसत्यानामापुक् ।

णिच् २६. हेतुमति च २५७६ ।

* तत्करोति तदाचष्टे ।

* आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक्प्रकृतिप्रत्या-
पत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम् ।

* प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलम् ।

कर्म में वर्तमान शब्द वैर कलह
अभ्र कण्व मेष शब्दों से करोति
अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है ।

कर्म में वर्तमान सुख आदि शब्दों
से वेदना अर्थ में क्यङ् होता है,
यदि सुखादि वेदनाकर्ता के ही हों ।

नमस् वरिवस् चित्रङ् शब्दों से करण
विशेष में क्यच् प्रत्यय होता है ।

पुच्छ भाण्ड चीवर शब्दों से करण
विशेष में णिङ् प्रत्यय होता है ।

मुण्ड मिश्र श्लक्ष्ण लवण व्रत वस्त्र
हल कल कृत तूस्त शब्दों से करण
विशेष में णिच् प्रत्यय होता है ।
क्रियासमभिहार में एकाच् हलादि
धातु से यङ् प्रत्यय होता है ।

गत्यर्थक धातुओं से कौटिल्य में
ही यङ् होता है ।

धात्वर्थगर्हा में लुप सदचरजप जभ
दह दश गृ धातु से यङ् होता है ।
सत्य आप पाश रूप वीणा तूल
श्लोक सेना लोमन् त्वच वर्म वर्ण
चूर्ण शब्दों से तथा चुरादि धातुओं
से णिच् प्रत्यय होता है ।

प्रेषणादिरूप प्रयोजकव्यापर रहने पर
धातु से णिच् प्रत्यय होता है ।

- * धातुरूपं च ।
- * कर्तृकरणाद्धात्वर्थे ।
- * (बहुलमेतन्निदर्शनम् ।)
- * णिङ्ङात्रिरसने ।

२७. कण्डूवादिभ्यो यक् २६७८ ।

(३५) कण्डूञ् मन्तु हणीङ् वल्गु असु (मनस्)
महीङ् लाट् लेट् इरस् इरज् (इरज्) दुवस् उषस्
वेट् मेधा कुषुभ (नमस्) मगध तन्तस् पम्पस्
(पपस्) सुख दुःख (भिक्ष चरण चरम अवर)
सपर अरर (अरर्) भिषज् भिण्णुज् (अपर आर)
इषुध वरण चुरण तुरण भुरण गद्रद एला केला
खेला (वेला शेला) लिट् लोट् लेखा लेख)
रेखा द्रवस् तिरम् अगद उरस् तरण (तरिण)
पयस् संभूयस सम्बर—आकृतिगणोऽयम् ।। इति
कण्डूवादिः ।।

२८. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः २३०३

२९. ऋतेरीयङ् २४२२ ।

३०. कमेर्णिङ् २३१० ।

३१. आयादय आर्धधातुके वा २३०५ ।

३२. सनाद्यन्ता धातवः २३०४ ।

विकरण प्रत्ययः

३३. स्यतासी ललुटोः २१८६ ।

३४. सिब्बहुलं लेटि ३४२५ ।

* सिब्बहुलं छन्दसि णिङ्ङात्त्वयः ।

३५. कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि २३०६ ।

* कास्यनेकाज्यहणं कर्तव्यम् ।

कण्डूञ् आदि से स्वार्थ में यक् प्रत्यय होता है ।

गूपू धूप विच्छ पण पन धातु से स्वार्थ में आय होता है ।

ऋत सौत्रधातु से स्वार्थ में ईयङ् होता है ।

कम् धातु से स्वार्थ में णिङ् होता है ।

आर्धधातुक विवक्षा में आय ईयङ् णिङ् विकल्प से होते हैं ।

सन् से णिङ् तक जिनके अन्त में हों उन्हें धातु संज्ञा होती है ।

लट् और लृट् के परे रहने पर तथा लुट् परे रहने पर धातु से क्रमशः स्य और तास् होते हैं । धातु से लेट् परे रहने पर बहुल प्रकार से सिप् होता है ।

आम् ४२ लिटि अमन्त्र विषय में लिट् के यहाँ कास् धातु से तथा प्रत्ययान्त धातुओं से आम् प्रत्यय होता है ।

आम्, लिटि ३६. इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः २२३७ ।

ऋच्छ को छोड़कर गुरुमान् इजादिं धातुओं से लिट् के यहाँ आम् प्रत्यय होता है ।

आम्, लिटि ३७. दयायासश्च २३२४ ।

दय अय आस धातुओं से लिट् के यहाँ आम् होता है ।

आम्, लिटि ३८. उषविदजागृभ्योऽन्तरस्याम् २३४१ । अन्य-म् ३९

उष विद जागृ धातुओं से लिट् के यहाँ विकल्प से आम् होता है ।

आम्, लिटि, अन्य-म् ३९. भीहीभृहुवां श्लुवच्च २४९१ ।

भीही भृ हु धातु से लिट् के यहाँ विकल्प से आम् होता है तथा श्लु के समान कार्य भी होता है ।

आम् ४०. कृञ्जानुप्रयुज्यते लिटि २२३९ । २।

लिट् के यहाँ आम् के पश्चात् कृ भू अस् का अनुप्रयोग होता है ।

आम् ४१. विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् २४६५ । अन्य-म् ४२

विकल्प से 'विदाङ्कुर्वन्तु' ऐसा निपातित होता है ।

आम्, अन्य-म् ४२. अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयारमयामकः
पावयांक्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ३४०३ ।

वेद में विकल्प से अभ्युत्सादयामकः प्रजनयामकः चिकयामकः रमयामकः पावयांक्रियात् विदामक्रन् निपातित होते हैं ।

४३. च्लि लुङि २२२१ ।

लुङ् के यहाँ धातु से च्लि प्रत्यय होता है ।

च्लेरादेशः

४४. च्लेः सिच् २२२२ ।

च्लेः ६६

च्लि को सिच् होता है ।

* स्पृशमृशकृषतृपदृपां च्लेः सिज्वा वक्तव्यः ।

च्लेः ४५. शल इगुपधादनितः क्सः २३३६ । क्सः ४७

इगुपध शलन्त धातु से अनिट् च्लि को क्स होता है ।

च्लेः, क्सः ४६. श्लिष आलिङ्गने २५१४ ।

आलिङ्गनार्थं श्लिष् धातु से परे च्लि को क्स होता है ।

च्लेः, क्सः ४७. न दृशः २४०७ ।

दृश् धातु से परे च्लि को क्स नहीं होता है ।

च्लेः ४८. णिश्रिद्रुसुभ्यः कर्तरि चङ् २३१२ । चङ् ५१

कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर ण्यन्त तथा श्रिद्रुसु धातु से च्लि को चङ् होता है ।

* कमेः श्लेः चङ् वक्तव्यः ।

च्लेः, चङ् ४९. विभाषा धेदृश्व्योः २३७५ ।

विभाषा ५०

कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर धेदृ तथा दुओश्चि धातु से च्लि को विकल्प से चङ् होता है ।

- च्लेः, चङ्, विभाषा ५०. गुपेच्छन्दसि ३४०४ । छन्दसि ५१ वेद में गुप् से परे च्लि को विकल्प से चङ् होता है ।
 च्लेः, चङ्, छन्दसि ५१. नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः ३४०५ वेद में ण्यन्त ऊन ध्वन इल अर्द धातु से च्लि को चङ् नहीं होता है ।
 च्लेः ५२. अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् २४३८ । अङ् ५९ कर्तृवाची लुङ् परे रहने पर असु वच ख्या से च्लि को अङ् होता है ।
 च्लेः, अङ् ५३. लिपिसिचिह्नश्च २४१८ । लि-हः ५४ लिप सिच ह्वेञ् से परे च्लि को अङ् आदेश होता है ।
 च्लेः, अङ्, लि-हः ५४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् २४१९ । आत्मनेपद में लिप सिच ह्वेञ् से परे च्लि को विकल्प से अङ् होता है ।
 च्लेः, अङ् ५५. पुषादिद्युतादयलृदितः परस्मैपदेषु २३४३ पर-देषु ५८ परस्मैपद में पुषादि द्युतादि लृदित् धातु से च्लि को अङ् होता है ।
 च्लेः, पर-देषु, अङ् ५६. सर्तिशास्त्यतिभ्यश्च २३८२ । सृ शासु ऋ धातु से परे च्लि को अङ् आदेश होता है ।
 च्लेः, पर-देषु, अङ् ५७. इरितो वा २२६९ । वा ५८ इरित् धातु से परे च्लि को विकल्प से अङ् होता है ।
 च्लेः, पर-देषु, अङ्, ५८. जृस्तम्भुमृचुम्लुचुमुचुग्लुचुग्लुञ्चिभ्य-वा जृ स्तम्भु मृचु म्लुचु मुचु ग्लुचु ग्लुञ्चि धातु से परे च्लि को विकल्प से अङ् आदेश होता है ।
 च्लेः, अङ् ५९. कृमृदृह्रिभ्यश्छन्दसि ३४०६ । वेद में कृ मृ दृ रुह्र धातु से परे च्लि को अङ् होता है ।
 च्लेः ६०. चिण्ते पदः २५१३ ॥३॥ चिण् ६५ ते ६६ पद धातु से परे च्लि को चिण् होता है, यदि पर में आत्मनेपद का एकवचन 'ते' हो ।
 च्लेः, चिण्, ते ६१. दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्माम् अन्य-म् ६३ दीपी जनी बुध पूरी तायृ प्यायी धातु से परे च्लि को विकल्प से चिण् होता है, यदि बात में ते हो ।
 च्लेः, चिण्, ते, अ- ६२. अचः कर्मकर्तरि २७६८ । कर्म कर्तरि ६५ कर्मकर्ता में अजन्त धातु से परे च्लि को चिण् होता है, यदि बाद में ते हो ।

च्लेः, चिण्, ते, कर्म ६३. दुहश्च २७६९ ।

कर्तरि, अन्य-म्

च्लेः, चिण्, ते, कर्म ६४. न रुधः २७७० ।

कर्तरि

च्लेः, चिण्, ते, कर्म ६५. तपोऽनुतापे च २७६० ।

कर्तरि, न

च्लेः, ते

६६. चिणभावकर्मणोः २७५८ ।

भाव-णोः

६७. सार्वधातुके यक् २७५६ ।

विकरणप्रत्ययाः

सा-के

६८. कर्तरि शप् २१६७ ।

सा-के, कर्तरि

६९. दिवादिभ्यः श्यन् २५०५ ।

सा-के, कर्तरि, श्यन् ७०. वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्कमुक्लमुत्रसिन्नुटिलषः वा ७२

२३२१ ।

सा-के, कर्तरि, श्य- ७१. यसोऽनुपसर्गात् २५२१ ।

न, वा

सा-के, कर्तरि, श्य- ७२. संयसश्च २५२२ ।

न, वा

सा-के, कर्तरि ७३. स्वादिभ्यः श्नुः २५२३ ।

सा-के, कर्तरि, श्नुः ७४. श्रुवः श्रु च २३८६ ।

सा-के, कर्तरि, श्नुः, ७५. अक्षोऽन्यतरस्याम् २३३८ ।

सा-के, कर्तरि, श्नुः, ७६. तनूकरणे तक्षः २३३९ ।

अन्य-म्

सा-के, कर्तरि ७७. तुदादिभ्यः शः २५३४ ।

सा-के, कर्तरि ७८. रुधादिभ्यः श्नम् २५४३ ।

न ६५

भाव-णोः ६७

सार्वधातुके ८२

कर्तरि ८८

श्यन् ७२

श्नुः ७६

अन्य-म् ७६

दुह से परे च्लि को विकल्प से चिण् होता है, कर्मकर्ता में ।

कर्मकर्ता में रुधिर से परे च्लि को चिण् नहीं होता है ।

कर्मकर्ता में अनुताप अर्थ में तप से परे च्लि को चिण् नहीं होता है ।

भाव-णोः ६७ भावकर्म में ते के यहाँ धातु से परे च्लि को चिण् होता है ।

सार्वधातुके ८२ भावकर्मवाची सार्वधातुक परे रहने पर धातु से यक् प्रत्यय होता है ।

कर्तृवाची सार्वधातुक परे रहने पर धातु से शप् प्रत्यय होता है ।

दिवादि धातुओं से श्यन् प्रत्यय होता है ।

भ्राश् भ्लाश् भ्रमु क्रमु क्लमु त्रसी त्रुटी लष धातु से विकल्प से श्यन् होता है ।

अनुपसर्ग यसु से विकल्प से श्यन् होता है ।

सम्-पूर्वक यस् से विकल्प से श्यन् होता है ।

स्वादि धातुओं से श्नु प्रत्यय होता है ।

श्रु से श्नु प्रत्यय होता है तथा श्रु को श्रु आदेश होता है ।

अक्षू से विकल्प से श्नु होता है ।

तनूकरण अर्थ में तक्ष धातु से विकल्प से श्नु प्रत्यय होता है ।

तुदादि धातुओं से श प्रत्यय होता है ।

रुधादि धातुओं से श्नम् प्रत्यय होता है ।

सा-के, कर्तरि	७९. तनादिकृञ्य उः २४६६ ।	उः ८०	तनादि धातुओं से तथा कृ धातु से उ प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, उः	८०. धिन्विकृण्व्योर च २३३२ । ॥४॥		धिन्वि कृवि धातुओं से उ प्रत्यय होता है तथा अकार अन्तादेश होता है ।
सा-के, कर्तरि	८१. क्रत्यादिभ्यः शना २५५४ ।	शना ८२	क्र्यादि धातुओं से शना प्रत्यय होता है ।
सा-के, कर्तरि, शना	८२. स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्यः शनुश्च २५५५ ।		स्तन्भु स्तुन्भु स्कन्भु स्कुन्भु स्कुञ् धातुओं से शना तथा शनु दोनों होते हैं ।
कर्तरि	८३. हलः श्रः शानज्झौ २५५७ ।	शनः ८४ हौ ८४	हि के यहाँ हल् से परे शना को शानच् आदेश होता है ।
कर्तरि, शनः, हौ	८४. छन्दसि शायजपि ३४३२ ।	छन्दसि ८६	वेद में शना को शायच् और शानच् दोनों होते हैं ।
	व्यत्ययः		
कर्तरि, छन्दसि	८५. व्यत्ययो बहुलम् ३४३३ ।		शप् आदि विकरण वेद में बहुल प्रकार से होते हैं ।
कर्तरि, छन्दसि	८६. लिङ्याशिष्यङ् ३४३४ ।		आशीर्लिङ् में वेद में अङ् प्रत्यय होता है ।
	* द्योर्गवक्तव्यः ।		
	कर्मवद्भावः		
कर्तरि	८७. कर्मवत्कर्षणा तुल्यक्रियः २७६६ ।	कर्मवत् ९०	कर्मस्थ क्रिया से तुल्यक्रिय कर्ता कर्मवत् होता है ।
	* सकर्मकाणां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।		
	* दुहिपच्योर्बहुलं सकर्मकयोः ।		
	* सृजियुज्योः श्यस्तु ।		
	* सृजेः श्रद्धोपपन्ने कर्तर्येवेति वाच्यम् ।		
	* भूषाकर्मकिरादिसनां चान्यत्रात्मनेपदात् ।		
कर्तरि, कर्मवत्	८८. तपस्तपःकर्मकस्यैव २७७१ ।		तपःकर्मक तपधातु का कर्ता कर्मवत् होता है ।
कर्मवत्	८९. न दुहस्नुनमां यक्चिणौ २७६७ ।		कर्मकर्ता में दुह स्नु नम् को यक् और चिण् नहीं होता है ।
	* यक्चिणोः प्रतिषेधे हेतुमणिणच् श्रिब्रूजामुप-संख्यानम् ।		
	* यक्चिणोः प्रतिषेधे णिश्रन्धिग्रन्धिब्रूजात्मने-पदाकर्मकाणामुपसंख्यानम् ।		

कर्मवत्

१०. कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन्यरस्मैपदं च २७७२

प्राचीन आचार्यों के मत से कर्म-कर्ता में कुष और रञ्ज को श्यन् होता है तथा परस्मैपद भी होता है ।

धातुविहिताः प्रत्ययाः

११. धातोः २८२९ ।

धातोः ३.४.- तृतीय अध्याय की समाप्ति तक ११७ धातोः का अधिकार है ।

उपपद संज्ञा

धातोः

१२. तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ७८१ ।

तत्र ९४

धात्वधिकार में सप्तमीनिर्दिष्ट उप-पद संज्ञक होता है ।

कृत्संज्ञा

धातोः, तत्र

१३. कृदतिङ् ३७४ ।

कृत् ३.४.७७ धात्वधिकार में तिङ्भिन्न प्रत्यय कृत् संज्ञक होता है ।

धातोः, तत्र, कृत्

१४. वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् २८३० ।

स्त्र्यधिकार को छोड़कर इस धात्व-धिकार में असरूप अपवाद प्रत्यय उत्सर्ग का विकल्प से बाधक होता है ।

कृत्यप्रत्ययः

धातोः, कृत्

१५. कृत्याः (प्राङ्ण्वुलः) २८३१ ।

कृत्याः १३२

ण्वुल्लृचौ सूत्र से पहले कृत्य संज्ञक प्रत्यय होते हैं ।

धातोः, कृत्याः, कृत्

१६. तव्यत्तव्यानीयरः २८३४ ।

धातु से तव्यत् तव्य और अनीयर प्रत्यय होते हैं ।

* केलिमर उपसंख्यानम् ।

* वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च ।

धातोः, कृत्याः, कृत्

१७. अचो यत् २८४२ ।

यत् १०६

अजन्त धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

* तकिशसिचितियतिजनिभ्यो यद्वाच्यः ।

* हनो वा यद्वधश्च वक्तव्यः ।

धातोः, कृत्याः, य-

१८. पोरदुपधात् २८४४ ।

अकारोपध पवर्गान्त धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

त, कृत्

धातोः, कृत्याः, य-

१९. शकिसहोश्च २८४७ ।

शक्त्व और षह धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

त, कृत्

धातोः, कृत्याः, य-

१००. गदमदचरयमश्चानुपसर्गे २८४८ ।

अनुपसर्गे १०८

अनुपसर्ग गद मद चर यम धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

* चरेराङि चागुरौ ।

॥५॥

धातोः, कृत्याः, य-

१०१. अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु

गर्ह्य पणितव्य अनिरोध अर्थ में क्रमशः अवद्य, पण्य वर्या शब्द निपातित होते हैं ।

त, अनु०, कृत्

२८४९ ।

धातोः, कृत्याः, य- १०२. वह्णं करणम् २८५० ।

त, अनु०, कृत्

धातोः, कृत्याः, य- १०३. अर्यः स्वामिवैश्ययोः २८५१ ।

त, अनु०, कृत्

धातोः, कृत्याः, य- १०४. उपसर्या काल्या प्रजने २८५२ ।

त, अनु०, कृत्

धातोः, कृत्याः, य- १०५. अजर्यं सङ्गतम् २८५३ ।

त, अनु०, कृत्

धातोः, कृत्याः, य- १०६. वदः सुपि क्यप्च २८५४ ।

त, अनु०, कृत्

क्यप् १२१

सुपि १०८

धातोः, कृत्याः, १०७. भुवो भावे २८५५ ।

सुपि, अनु०, क्यप्,

कृत्

भावे १०८

धातोः, कृत्याः, १०८. हनस्त च २८५६ ।

सुपि, अनु०, क्यप्,

कृत्, भावे

धातोः, कृत्याः, १०९. एतिस्तुशास्वृजुषः क्यप् २८५७ ।

क्यप्, कृत्

* आङ्पूर्वादिञोः संज्ञायामुपसंख्यानम् ।

* शंसिदुहिगुहिभ्यो वा ।

धातोः, कृत्याः, ११०. ऋदुपधाच्चाक्लपिचृतेः २८५९ ।

क्यप्, कृत्

धातोः, कृत्याः, १११. ई च खनः २८६० ।

क्यप्, कृत्

धातोः, कृत्याः, ११२. भृजोऽसंज्ञायाम् २८६१ ।

क्यप्, कृत्

* समञ्च बहुलम् ।

धातोः, कृत्याः, ११३. मृजेर्विभाषा २८६२ ।

क्यप्, कृत्

धातोः, कृत्याः, ११४. राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्या-

क्यप्, कृत्

व्यथ्याः २८६५ ।

करण अर्थ में वह धातु से यत् प्रत्यय होता है ।

स्वामी और वैश्य अर्थ में ऋ गतौ से यत् प्रत्यय होता है ।

गर्भग्रहण में प्राप्तकाल के लिये उपसर्या निपातित होता है ।

सङ्गत अर्थ में अजर्य निपातित होता है ।

अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर वद धातु से क्यप् और यत् प्रत्यय होते हैं ।

अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर भाव अर्थ में भू धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

अनुपसर्ग सुबन्त उपपद रहने पर भाव अर्थ में हन् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है और तकार अन्तादेश भी होता है ।

एति स्तु शास् वृ द् जुष् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

क्लप् और चृत् को छोड़कर ऋकारोपध धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

खन् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है और इकार अन्तादेश भी होता है ।

असंज्ञा में भृज् से क्यप् होता है ।

मृज् धातु से विकल्प से क्यप् प्रत्यय होता है ।

क्यप् परे रहने पर राजसूय सूर्य मृषोद्य रुच्य कुप्य कृष्टपच्य अव्यथ्य शब्द निपातित होते हैं ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ११५. भिद्योद्धयौ नदे २८६६ ।

क्यप्

धातोः कृत्, कृत्याः, ११६. पुष्यसिध्यौ नक्षत्रे २८६७ ।

क्यप्

धातोः कृत्, कृत्याः, ११७. विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु

क्यप्

२८६८ ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ११८. प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः २८६९ ।

क्यप्

* छन्दसीति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कृत्याः, ११९. पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च २८७० ।

क्यप्

धातोः कृत्, कृत्याः, १२०. विभाषा कृवृषोः २८७१ ॥६॥

क्यप्

धातोः कृत्, कृत्याः, १२१. युग्यं च पत्रे २८७३ ।

क्यप्

धातोः कृत्, कृत्याः १२२. अमावस्यदन्यतरस्याम् २८७४ ।

यदि नद अभिधेय हो तो भिद् और उज्झ् से क्यप् का निपातन होता है । यदि नक्षत्र अभिधेय हो तो पुष् और सिध् से अधिकरण में क्यप् का निपातन होता है ।

विपूय विनीय जित्य शब्द क्रमशः मुञ्ज कल्क और हलि अर्थ में निपातित होते हैं ।

वेद में प्रति अपि पूर्वक गृह् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है ।

पद अस्वैरी बाह्या पक्ष्य अर्थ में गृहधातु से क्यप् होता है ।

कृञ् और वृष् धातु से विकल्प से क्यप् होता है ।

वाहन अर्थ में युग्य का निपातन होता है ।

अमापूर्वक वस् धातु से काल अर्थ में ण्यत् का निपातन होता है तथा विकल्प से वृद्धि का अभाव होता है ।

वेद में निष्टक्य देवहूय प्रणीय उन्नीय उच्छिष्य मर्य स्तर्य अध्वर्य खन्य खान्य देवयज्या आपृच्छ्य प्रतिषीव्य ब्रह्मवाद्य भाव्य स्ताव्य उपचाव्यपृड शब्द निपातित होते हैं ।

ऋवर्णान्त और हलन्त धातु से ण्यत् प्रत्यय होता है ।

आवश्यक द्योत्य होने पर उवर्णान्त धातु से ण्यत् होता है ।

आङ्पूर्वक सु यु वप् रप् (लप्) ऋ चम् धातु से ण्यत् होता है ।

अनित्य अभिधेय हो तो आनाय्य निपातित होता है ।

धातोः कृत्, कृत्याः १२३. छन्दसि निष्टक्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छि-
ष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृ-
च्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योप-
चाव्यपृडानि ३४०७ ।

* हिरण्य इति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कृत्याः १२४. ऋहलोर्ण्यत् २८७२ ।

* पाणौ सृजेर्ण्यत् ।

* समवपूर्वाच्च ।

* लपिदभिभ्यां चेति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कृत्याः, १२५. ओरावश्यके २८८६ ।

ण्यत्

धातोः कृत्, कृत्याः, १२६. आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च २८८७ ।

ण्यत्

धातोः कृत्, कृत्याः, १२७. आनाय्योऽनित्ये २८८८ ।

ण्यत्

ण्यत् १३१

धातोः कृत्, कृत्याः, १२८. प्रणाय्योऽसंमतौ २८८९ ।

ण्यत्

धातोः कृत्, कृत्याः, १२९. पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मान-
ण्यत् हविर्निवाससामिधेनीषु २८९० ।

असंमतता अभिधेय हो तो प्रणाय्य निपातित होता है ।

पाय्य सान्नाय्य निकाय्य धाय्य शब्द निपातित होते हैं, यदि क्रमशः मान हविष् निवास सामिधेनी अभिधेय हो ।

धातोः कृत्, कृत्याः, १३०. क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ २८९१ ।

ण्यत्

धातोः कृत्, कृत्याः, १३१. अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः २८९२
ण्यत्

क्रतु अभिधेय होने पर कुण्डपाय्य और संचाय्य निपातित होते हैं । अग्नि धारणार्थ स्थलविशेष में परिचाय्य, उपचाय्य तथा समूह्य शब्द निपातित होते हैं ।

चित्य और अग्निचित्या शब्द निपातित होते हैं ।

धातोः कृत्, कृत्याः १३२. चित्याग्निचित्ये च २८९३ ।

कृतप्रत्ययः

धातोः कृत्, १३३. ण्वुल्तृचौ २८९५ ।

ण्यत्

धातोः कृत् १३४. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः २८९६

कर्ता अर्थ में सभी धातुओं से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं । नन्दि, ग्रहि और पच् आदि गणों से क्रमशः ल्यु, णिनि और अच् प्रत्यय होते हैं ।

(३६) 'नन्दिवाशिमदिदूषिसाधिवर्धिशोभिरोचि-
भ्योऽण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम्' २२ । नन्दनः वाशनः
मदनः दूषणः साधनः वर्धनः शोभनः रोचनः ।
'सहितपिदमः संज्ञायाम्' २३ । सहनः तपनः दमनः
जल्पनः रमणः दर्पणः संक्रन्दनः संकर्षणः जनार्दनः
यवनः मधुसूदनः विभीषणः लवणः चित्तविनाशनः
कुलदमनः (शत्रुदमनः) ॥ इति नन्द्यादिः ॥

(३७) ग्राही उत्साही उद्दासी उद्दासी स्थायी
मन्त्री संमर्दी । 'रक्षश्रुवपशां नौ' २४ । निरक्षी
निश्रावी निवापी निशायी । 'याचृव्याहसंख्याहव्रज-
वदवसां प्रतिषिद्धानाम्' २५ । अयाची अव्याहारी
असंव्याहारी अव्राजी अवादी अवासी । 'अचा-
मचित्तकर्तृकाणाम्' २६ । अकारी अहारी अविनायी
(विशायी विषायी) 'विशायी विषयी देशे' २७ ।
विशायी विषयी देशः । 'अभिभावी भूते' २८ ।
अपराधी उपरोधी परिभवी परिभावी ॥ इति
ग्रहादिः ॥

(३८) पच वच वप वद चल पत नदट्
भषट् प्लवट् चरट् गरट् तरट् चोरट् गाहट् सूरट्
देवट् (दोषट्) जर (रज) मर (मद) क्षम
(क्षप) सेव मेष कोप (कोष) मेध नर्त व्रण दर्श
सर्प [दम्भ दर्प] जारभर श्वपच ॥ इति पचादिरा-
कृतिगणः ॥

धातोः कृत्	१३५. इगुपधज्ञाग्रीकिरः कः २८९७ ।	कः १३६	इगुपध, ज्ञा, ग्री और किर धातु से क प्रत्यय भी होता है ।
धातोः कृत्, कः	१३६. आतश्चोपसर्गे २८९८ ।	उपसर्गे १३७	सोपसर्ग आकारान्त धातुओं से क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, उपसर्गे	१३७. पाघ्राध्माघेट्द्वाः शः २८९९ । * घ्रः संज्ञायां न ।	शः १३९	सोपसर्ग पा घ्रा ध्मा घेट् दृश् धातुओं से श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, शः	१३८. अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदे- जिचेतिसातिसाहिभ्यश्च २९०० । * नौ लिम्पेः । * गवादिषु विन्देः संज्ञायामुपसंख्यानम् ।	अनुपसर्गात् - १४०	अनुपसर्ग लिम्प विन्द धारि पारि वेदि उदेजि चेति साति साहि धातुओं से श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, शः, अनुपसर्गात्	१३९. ददातिदधात्योर्विभाषा २९०१ ।	विभाषा १४०	अनुपसर्ग डुदाञ् तथा डुधाञ् से वैकल्पिक श प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, विभाषा, अनुपसर्गात्	१४०. ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः २९०२ ॥७॥ णः १४३ * तनोतेर्ण उपसंख्यानम् ।		अनुपसर्ग ज्वलादि और कसन्त धातुओं से वैकल्पिक ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	१४१. श्याद्व्यधास्तुसंस्वतीणवसावहलिहश्लि- षश्चसश्च २९०३ ।		श्यैड्, आकारान्त धातु तथा व्यध, आपूर्वक स्तु, संस्तु, अतिपूर्वक इण, अवपूर्वक षो, अवपूर्वक ह, लिह, श्लिष तथा श्वस धातुओं से ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	१४२. दुन्योरनुपसर्गे २९०४ ।		'दु दु' उपतापे तथा णीञ् प्रापणे धातु यदि अनुपसर्ग हों तो ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, णः	१४३. विभाषा ग्रहः २९०५ ।	ग्रहः १४४	ग्रह धातु से विकल्प से ण प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, ग्रहः	१४४. गेहे कः २९०६ ।		यदि गेह कर्ता हो तो ग्रह धातु से क प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्	१४५. शिल्पिनि ष्वुन् २९०७ । * नृतिखनिरङ्गिभ्य इति वक्तव्यम् ।	शिल्पिनि १४७	यदि कर्ता शिल्पी हो तो धातु से ष्वुन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, शिल्पिनि १४६. गस्थकन् २९०८ ।

गः १४७

यदि कर्ता शिल्पी हो तो गै धातु से थकन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, गः, १४७. ण्युट् च २९०९ ।

ण्युट् १४८

यदि कर्ता शिल्पी हो तो गै धातु से ण्युट् प्रत्यय होता है ।

शिल्पिनि

धातोः कृत्, ण्युट् १४८. हश्च ब्रीहिकालयोः २९१० ।

ब्रीहि या काल को कहने पर कर्ता में ओहाक् ओहाङ् धातु से ण्युट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्

१४९. प्रुसृत्वः समभिहारे वुन् २९११ । वुन् १५०

* साधुकारिण्युपसंख्यानम् ।

यदि साधुकारिता लक्षित हो तो कर्ता में प्रु सृ ल् धातु से वुन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वुन्

१५०. आशिषि च २९१२ ।

प्रत्ययो मुण्डविदां दीपजनक्र चादिभ्योऽवद्य-

युग्यं च श्यादव्यधा दश ॥

यदि आशिष् गम्यमान हो तो धातु मात्र से कर्ता में वुन् प्रत्यय होता है ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

उत्तरपदप्रत्ययाः तत्र अणप्रत्ययः

धातोः कृत्

१. कर्मण्यण् २९१३ ।

अण्-२

कर्म उपपद रहने पर धातु से अण् प्रत्यय होता है ।

* शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः ।

कर्मणि ५६

* ईक्षिक्षमिभ्यां चेति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि,

२. ह्वावामश्च २९१४ ।

अण्

कर्म उपपद रहने पर ह्वेज् वेज् मा धातु से अण् प्रत्यय होता है ।

कं प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि

३. आतोऽनुपसर्गे कः २९१५ ।

अनुपसर्गे ६०

अनुपसर्ग आकारन्त धातुओं से कर्म उपपद रहने पर क प्रत्यय होता है ।

* कविधौ सर्वत्र प्रसारणिभ्यो डः ।

कः ७

धातोः कृत्, कर्मणि,

४. सुपि स्थः २९१६ ।

सुपि ७५

अनु-र्गे, कः

१. सुप् उपपद रहने पर आदन्त धातु से क प्रत्यय होता है ।

२. स्थाधातु से भाव में भी क प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि,

५. तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः २९१९ ।

अनु-र्गे, कः, सुपि

* आलस्यसुखाहरणयोरिति वक्तव्यम् ।

तुन्द और शोक यदि कर्मोपपद हों तो परिमृज् और अपनुद् से क प्रत्यय होता है ।

* कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम् ।

(३९) (वा० ग०) मूलविभुज नखमुच काक-

गुह कुमुद महीध्र कुध्र गिद्र—आकृतिगणोऽयम् ।।

इति मूलविभुजादयः ।।

धातोः कृत्, कर्मणि, ६. प्रे दाज्ञः २९२० ।
अनु-गें, कः, सुपि

धातोः कृत्, कर्मणि, ७. समि ख्यः २९२१ ।

अनु-गें, कः, सुपि

धातोः कृत्, कर्मणि, ८. गापोष्टक् २९२२ ।

अनु-गें, सुपि

* पिबतेः सुराशीध्वोरिति व्यक्तव्यम् ।

* बहुलं तणि ।

अच्प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि, ९. हरतेरनुद्यमनेऽच् २९२३ ।

अनु-गें, सुपि

* शक्तिलाङ्गलाङ्कुशयष्टितोमरघटघटीधनुष्युग्र-हरतेः ११
हेरुपसंख्यानम् ।

* सूत्रे च धार्येऽर्थे ।

धातोः कृत्, कर्मणि, १०. वयसि च २९२४ ।

अनु-गें, अच्, सुपि

हरतेः

धातोः कृत्, कर्मणि, ११. आङि ताच्छील्ये २९२५ ।

अनु-गें, अच्, सुपि

हरतेः

धातोः कृत्, कर्मणि, १२. अर्हः २९२६ ।

अनु-गें, अच्, सुपि

धातोः कृत्, कर्मणि, १३. स्तम्बकर्णयो रमिजपोः २९२७ ।

अनु-गें, अच्, सुपि * हस्तिसूचकयोरिति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि, १४. शमि धातोः संज्ञायाम् २९२८ ।

अनु-गें, अच्, सुपि * शमि संज्ञायां धातुग्रहणं कृजो हेत्वादिषु

टप्रतिषेधार्थम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि, १५. अधिकरणे शेतेः २९२९ ।

अनु-गें, अच्, सुपि * पार्श्वदिषूपसंख्यानम् ।

अधिकरणे १६ अधिकरण उपपद रहने पर शीङ्
धातु से अच् प्रत्यय होता है ।

प्रके कर्मोपपद में रहने पर दा रूप
तथां ज्ञा धातु से क प्रत्यय होता
है ।

सम् पूर्वक ख्या धातु से कर्म उप-
पद रहने पर क प्रत्यय होता है ।
अनुपसर्ग कर्म उपपद रहने पर गै
तथा पा धातु से टक् प्रत्यय होता
है ।

कर्म उपपद रहने पर श्रमरहित ह
से अच् प्रत्यय होता है ।

अवस्था लक्षित कराने वाले कर्म
उपपद रहने पर ह धातु से अच्
प्रत्यय होता है ।

ताच्छील्य गम्यमान रहने पर कर्मो-
पपद युक्त आपूर्वक ह धातु से
अच् प्रत्यय होता है ।

कर्म उपपद रहने पर अर्ह पूजायाम्
धातु से अच् प्रत्यय होता है ।

सुबन्त स्तम्ब और कर्ण के उपपद
रहने पर क्रमशः रमु और जप धातु
से अच् प्रत्यय होता है ।

संज्ञा में शम् उपपद रहने पर धातु
मात्र से अच् प्रत्यय होता है ।

(४०) (वा०ग०) पार्श्व उदर पृष्ठ उत्तान

अपमूर्धन्—इति पार्श्वदिः ।।

* दिग्धसह पूर्वच्चेति वक्तव्यम् ।

* उत्तानादिषु कर्तृषु ।

* गिरौ डश्छन्दसि ।

ट प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि १६. चरेष्टः २९३० ।

सुपि, अनु-गें, अधि-
करणे

टः २३

चरेः १७

अधिकरण सुबन्त उपपद रहने पर
चर धातु से ट प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि १७. भिक्षासेनादायेषु च २९३१ ।

सुपि, अनु-गें, टः

चरेः

धातोः कृत्, कर्मणि १८. पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सतैः २९३२ ।

सतैः १९

सुपि, अनु-गें, टः

धातोः कृत्, कर्मणि १९. पूर्वे कर्तरि २९३३ ।

सुपि, अनु-गें, टः,

सतैः

धातोः कृत्, कर्मणि २०. कृजो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु २९३४ । कृजः २३

सुपि, अनु-गें, टः

॥ १ ॥

भिक्षा सेना आदाय उपपद रहने
पर चर धातु से ट प्रत्यय होता
है ।

पुरस् अग्रतस् अग्र उपपद रहने
पर सृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।
कर्तृवाची पूर्व शब्द उपपद रहने
पर सृ धातु से ट प्रत्यय होता
है ।

यदि हेतु ताच्छील्य आनुलोम्य हो
तो कर्म उपपद रहने पर कृ धातु
से ट प्रत्यय होता है ।

हेतु आदि के न रहने पर भी दिवा
विभा निशा प्रभा भास् कार अन्त
अनन्त आदि बहु नान्दी किं लिपि
लिबि बलि भक्ति कर्तृ चित्र क्षेत्र
संख्या जङ्घा बाहु अहन् यत् तत्
धनुष् अरुष् के उपपद रहने पर
कृ धातु से ट प्रत्यय होता है ।

भृति अर्थ में कर्मवाची कर्म शब्द
उपपद रहने पर कृ धातु से ट
प्रत्यय होता है ।

हेत्वादि रहने पर भी शब्द श्लोक
कलह गाथा वर चाटु सूत्र मन्त्र
पद उपपद रहने पर कृ धातु से ट
प्रत्यय नहीं होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि २१. दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्ता-

सुपि, अनु-गें, टः,

कृजः

दिबहुनान्दीकिंलिपिलिबिलिभक्ति-

र्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाहुअहर्हर्तृनुररुः-

षु २९३५ ।

* कियत्तद्गुण कृजोऽज्यधानम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि २२. कर्मणि भृती २९३६ ।

सुपि, अनु-गें, टः,

कृजः

धातोः कृत्, कर्मणि २३. न शब्दश्लोककलहगाथावरचाटुसूत्र-

सुपि, अनु-गें, टः,

कृजः

मन्त्रपदेषु २९३७ ।

इन् प्रत्यय

धातोः कृत्, कर्मणि २४. स्तम्बशकृतीरिन् २९३८ ।

सुपि, अनु-गें

* ब्रीहिवत्सयोरिति वक्तव्यम् ।

इन् २७

स्तम्ब और शकृत् के कर्मोपपद
रहने पर कृ धातु से इन् प्रत्यय
होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि २५. हरतेर्घतिनाथयोः पशौ २९३९ ।
सुपि, अनु-गें, इन्

धातोः कृत्, कर्मणि २६. फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च २९४० ।
सुपि, अनु-गें, इन्

धातोः कृत्, कर्मणि २७. छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ३४०८ ।
सुपि, अनु-गें, इन्

खश् प्रत्यय

धातोः कृत्, कर्मणि २८. एजेः खश् २९४१ ।
सुपि, अनु-गें * वातशुनीतिलेशधेष्जधेटुदजहातिभ्य

उपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि २९. नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः २९४४ ।
सुपि, अनु-गें, खश् * स्तने धेटः ।

* नासिकायां ध्मश्च ।

* घटिखारीखरीषूपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि ३०. नाडीमुष्टयोश्च २९४५ ।
सुपि, अनु-गें, खश्,

ध्मा

धातोः कृत्, कर्मणि ३१. उदि कूले रुजिवहोः २९४६ ।
सुपि, अनु-गें, खश्

धातोः कृत्, कर्मणि ३२. बहाध्रे लिहः २९४७ ।
सुपि, अनु-गें, खश्

धातोः कृत्, कर्मणि ३३. परिमाणे पचः २९४८ ।
सुपि, अनु-गें, खश्

धातोः कृत्, कर्मणि ३४. मितनखे च २९४९ ।
सुपि, अनु-गें, खश्,

पचः

धातोः कृत्, कर्मणि ३५. विध्वरुषोस्तुदः २९५० ।
सुपि, अनु-गें, खश्

धातोः कृत्, कर्मणि ३६. असूर्यललाटयोर्दशितपोः २९५१ ।
सुपि, अनु-गें, खश्

खश् ३७

ध्माधेटोः ३०

पचः ३४

यदि कर्ता पशु हो तो दृति, नाथ के कर्मोपपद रहने पर ह धातु से इन् प्रत्यय होता है ।

फलेग्रहि तथा आत्मम्भरि शब्द निपातित होते हैं ।

वेद में कर्म उपपद रहने पर वन सन रक्ष मथे धातु से इन् प्रत्यय होता है ।

कर्म उपपद रहने पर ण्यन्त एज् धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

नासिका और स्तन के कर्मोपपद रहने पर ध्मा और धेट् धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

नाडी और मुष्टि के कर्मोपपद रहने पर ध्मा और धेट् धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

कूल के कर्मोपपद रहने उत्पूर्वक रुजो तथा वह धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

वह और अग्र के कर्मोपपद रहने पर लिह धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

परिमाण वाची के कर्मोपपद रहने पर पच धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

मित और नख के कर्मोपपद रहने पर पच धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

विध्व अरुष् के कर्मोपपद रहने पर तुद धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

असूर्य और ललाट के कर्मोपपद रहने पर दृश और तप धातु से खश् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ३७. उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च २९५२ ।
सुपि, अनु-गें, खश्

खच् प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि ३८. प्रियवशे वदः खच् २९५३ ।
सुपि, अनु-गें * गमेः सुपि वाच्यः ।
* विहायसो विह इति वाच्यम् ।
* खच्च डिद्वा वाच्यः ।
* डे च विहायसो विहादेशो वक्तव्यः ।

खच् ४७

उग्रम्पश्य इरम्मद और पाणिन्धम निपातित होते हैं ।

प्रिय और वश के कर्मोपपद रहने पर वद धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ३९. द्विषत्परयोस्तापेः २९५४ ।
सुपि, अनु-गें, खच्

द्विषत् और पर के कर्मोपपद रहने पर तापि धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४०. वाचि यमो व्रते २९५६ ।।२।।
सुपि, अनु-गें, खच्

यदि व्रत गम्यमान हो तो वाक् शब्द के कर्मोपपद रहने पर यम धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४१. पूःसर्वयोदारिसहोः २९५८ ।
सुपि, अनु-गें, खच् * भगे च दारेरिति काशिका ।

पुरस् और सर्व के कर्मोपपद रहने पर क्रमशः दारि और सह धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४२. सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः २९५९ ।
सुपि, अनु-गें, खच्

सर्व कूल अभ्र करीष के कर्मोपपद रहने पर कष धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४३. मेघर्तिभयेषु कृजः २९६० ।
सुपि, अनु-गें, खच्

कृजः ४४

मेघ ऋति भय के कर्मोपपद रहने पर कृ से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४४. क्षेमप्रियमद्रेऽण्व २९६१ ।
सुपि, अनु-गें, कृ-

क्षेम प्रिय मद्र के कर्मोपपद रहने पर कृ से अण् भी होता है ।

जः, खच्

धातोः कृत्, कर्मणि ४५. आशिते भुवः करणभावयोः २९६२ ।
सुपि, अनु-गें, खच्

सुबन्त आशित शब्द के उपपद रहने पर करण और भाव में भू धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४६. संज्ञायां भृतृवृजिधारिसहितपिदमः
सुपि, अनु-गें, खच्

संज्ञायाम् ४७

२९६३ ।

संज्ञा में सुबन्त उपपद रहने पर भृ तृ वृजि धारि सहि तपि दम धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४७. गमश्च २९६४ ।
सुपि, अनु-गें, सं-
ज्ञायाम्, खच्

गमश्च ४८

संज्ञा में सुबन्त उपपद रहने पर गम् धातु से खच् प्रत्यय होता है ।

डादि प्रत्ययः

धातोः कृत्, कर्मणि ४८. अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः २९६५ डः ५०
सुपि, अनु-गें, गमश्च * डप्रकरणे सर्वत्रपन्नयोरुपसंख्यानम् ।

* उरसो लोपश्च ।

* सुदुरोरधिकरणे ।

* निसो देशे ।

* अन्यत्रापि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि ४९. आशिषि हनः २९६६ ।
सुपि, अनु-गें, डः * दारावाहनोऽणन्तस्य च टः संज्ञायाम् ।

* चारौ वा ।

* कर्मणि समि च ।

धातोः कृत्, कर्मणि ५०. अपे क्लेशतमसोः २९६७ ।

सुपि, अनु-गें, डः,

हनः

धातोः कृत्, कर्मणि ५१. कुमारशीर्षयोर्णिनिः २९६८ ।

सुपि, अनु-गें, हनः

धातोः कृत्, कर्मणि ५२. लक्षणे जायापत्योष्टक् २९६९ ।

सुपि, अनु-गें, हनः

धातोः कृत्, कर्मणि ५३. अमनुष्यकर्तृके च २९७० ।

सुपि, अनु-गें, टक्,

हनः

धातोः कृत्, कर्मणि ५४. शक्तौ हस्तिकवाटयोः २९७१ ।

सुपि, अनु-गें, टक्,

हनः

धातोः कृत्, कर्मणि ५५. पाणिघताडघौ शिल्पिनि २९७२ ।

सुपि, अनु-गें, हनः * राजघ उपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, कर्मणि ५६. आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्- आढ्य-षु ५७

सुपि, अनु-गें यर्थेष्वच्चौ कृजः करणे ख्युन् २९७३ । च्य-च्चौ ५७

अन्त अत्यन्त अध्वन् दूर पार सर्व
अनन्त के कर्मोपपद रहने पर गम्
धातु से ड प्रत्यय होता है ।

यदि आशीः गम्यमान हो और
कर्मोपपद हो तो हन् धातु से ड
प्रत्यय होता है ।

क्लेश और तमस् के कर्मोपपद
रहने पर अपपूर्वक हन् धातु से ड
प्रत्यय होता है ।

यदि कुमार और शीर्ष उपपद हों
तो हन् धातु से णिनि प्रत्यय होता है ।

जाया और पति के कर्मोपपद रहने
पर हन् धातु से टक् प्रत्यय होता
है, यदि कर्ता लक्षणवान् हो ।

जाया और पति के कर्मोपपद रहने
पर हन् धातु से टक् प्रत्यय होता
है, यदि कर्ता मनुष्य न हो ।

हस्ति और कवाट के कर्मोपपद रहने
पर हन् से टक् प्रत्यय होता है,
यदि शक्ति गम्यमान हो ।

यदि कर्ता शिल्पी हो तो पाणिघ
और ताडघ निपातित होते हैं ।

यदि आढ्य सुभग स्थूल पलित
नग्न अन्ध प्रिय शब्द कर्मोपपद हों
तथा अच्यवन्त होते हुये च्यवन्त
अर्थ में हों तो करण में कृ धातु से
ख्युन् प्रत्यय होता है ।

आढ्य आदि पूर्वलिखित के
सुबन्तोपपद रहने पर तथा अच्यवन्त
होते हुये च्यवन्त अर्थ में वर्तमान
रहने पर कर्ता में कृ धातु से खिष्णु
च् और ख्युक् प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत् सुपि, ५७. कर्तरि भुवः खिष्णुच्युकजौ २९७४ ।

अनु-गें, आढ्य,

च्य-च्चौ

अविद्यमान प्रत्ययः

धातोः कृत् सुपि, ५८. स्पृशोऽनुदके क्विन् ४३२ ।
अनु-गें

क्विन् ६०

अनुदक सुबन्त उपपद रहने पर स्पृश धातु से कर्ता में क्विन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत् सुपि, ५९. ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिगश्चयुजिकृञ्चां च
अनु-गें, क्विन् ३७३ ।

३७३ ।

ऋत्विक् दधृक् सक् दिक् उष्णिक् (ये पाँच शब्द) निपातित होते हैं । सुबन्तोपपद अश्च तथा केवल युज् और कृञ् धातु से क्विन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत् सुपि, ६०. त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् ४२९ ।
अनु-गें, क्विन् ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

त्यदादिके उपपद रहने पर अनालोचन अर्थ में वर्तमान दृश् धातु से कञ् तथा क्विन् प्रत्यय होता है ।

* समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम् ।

* दृशोः क्सश्चेति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत् सुपि ६१. सत्सूद्विषद्रुहयुजविदभिदच्छिदजिनीरा- उपसर्गेऽपि ७०
जामुपसर्गेऽपि क्विप् २९७५ ।

सत् षूङ् द्विष द्रुह युज विद भिद छिद जि नी राज् धातुओं से क्विप् होता है, भले ही ये धातु उपसर्गयुक्त हों । (अनुपसर्ग में तो होता ही है) ।

धातोः कृत् सुपि, ६२. भजो णिवः २९७६ ।
उपसर्गेऽपि

णिवः ६४

सोपसर्ग अनुपसर्ग सुबन्तोपपद भज धातु से णिव प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत् सुपि, ६३. छन्दसि सहः ३४०९ ।
उपसर्गेऽपि, णिवः

छन्दसि ६७

वेद में सह धातु से सुबन्त उपपद रहने पर णिव प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत् सुपि, ६४. वहश्च ३४१० ।
उपसर्गेऽपि, णिवः,

वहः ६६

वेद में वह धातु से सुबन्तोपपद रहने पर णिव प्रत्यय होता है ।

छन्दसि

धातोः कृत् सुपि, ६५. कव्यपुरीषपुरीष्येषु ज्युट् ३४११ ।
उपसर्गेऽपि, वहः,

ज्युट् ६६

कव्य पुरीष पुरीष्य के उपपद रहने पर वह धातु से वेद में ज्युट् प्रत्यय होता है ।

छन्दसि

धातोः कृत् सुपि, ६६. हव्योऽनन्तःपादम् ३४१२ ।
उपसर्गेऽपि, वहः,

वेद में हव्योपपद वह धातु से ज्युट् होता है, यदि हव्य अन्तः-पाद न हो ।

छन्दसि, ज्युट्

धातोः कृत् सुपि, ६७. जनसनखनक्रमगमो विट् ३४१३ ।
उपसर्गेऽपि, छन्दसि

विट् ६९

वेद में जन जनी षणु षण खन क्रम गम धातु से सुबन्तोपपद रहने पर विट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, सुपि, ६८. अदोऽनन्ने २९७७ ।
उपसर्गेऽपि, विट्,

अदः ६९

अन्न शब्द भिन्न सुप् उपपद रहने पर अद धातु से विट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, सुपि, ६९. क्रव्ये च २९७८ ।
उपसर्गेऽपि, विट्,
अदः

क्रव्योपपद रहने पर अद से विट् होता है ।

धातोः कृत्, सुपि, ७०. दुहः कव्यश्च २९७९ ।
उपसर्गेऽपि

सुप् उपपद रहने पर दुह धातु से कप् होता है तथा घकार अन्तादेश होता है ।

धातोः कृत्, सुपि ७१. मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् मन्त्रे ७२
३४१४ । ण्विन् ७२

श्वेतवह उक्थशस् पुरोडाश शब्दों से ण्विन् होता है । अर्थात् निपातन होता है । यदि विषय मन्त्र हो ।

* श्वेतवहादीनां डस् पदस्येति वक्तव्यम् ।

* अवया श्वेतवाः पुरोडाश ।

धातोः कृत्, सुपि, ७२. अवे यजः ३४१५ ।
मन्त्रे, ण्विन्

यजः ७३

मन्त्र विषय में अवपूर्वक यज धातु से ण्विन् होता है ।

धातोः कृत्, सुपि, ७३. विजुपे छन्दसि ३४१७ ।
यजः

विच् ७५

छन्दसि ७४

छन्द में उपपूर्वक यज धातु से विच् प्रत्यय होता है ।

मनिन् क्वनिप् वनिपः

धातोः कृत्, सुपि, ७४. आतोमनिन्क्वनिब्बनिपश्च ३४१८ ।
विच्, छन्दसि

मनि-पः ७५

छन्द में सुप् उपपद रहने पर आकारान्त धातुओं से मनिन् क्व-निप् वनिप् तथा विच् प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत्, सुपि, ७५. अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते २९८० ।
मनि-पः, विच्

छन्दोभिन्न अन्य धातुओं से भी मनिन् क्वनिप् वनिप् विच् होते हैं ।

धातोः कृत् ७६. क्विप् २९८३ ।

क्विप् ७७

सोपपद निरुपपद, छन्द या लोक में, सभी धातुओं से क्विप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, क्विप् ७७. स्थः क च २९८७ ।

सुप् उपपद रहने पर स्था धातु से क और क्विप् होते हैं ।

णिनि प्रत्ययः

धातोः कृत् ७८. सुष्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये २९८८ ।

सुपि ८३

* णिङ्क्विधौ साधुकारिण्युपसंख्यानम् ।

णिनि ८६

* ब्रह्मणि वदः ।

सुप् उपपद रहने पर तथा ताच्छील्य गम्य रहने पर धातुओं से णिनि प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, णिनि, ७९. कर्तर्युपमाने २९८९ ।
सुपि

धातोः कृत्, णिनि, ८०. व्रते २९९० । ॥४॥
सुपि

धातोः कृत्, णिनि, ८१. बहुलमाभीक्ष्ये २९९१ ।
सुपि

धातोः कृत्, णिनि, ८२. मनः २९९२ । मनः ८३
सुपि

धातोः कृत्, णिनि, ८३. आत्ममाने खश्च २९९३ ।
सुपि, मनः

भूतकालिक कृत् प्रत्ययः
धातोः कृत्, णिनि ८४. भूते २९९५ ।

धातोः कृत्, णिनि, ८५. करणे यजः २९९६ ।
भूते

धातोः कृत्, णिनि, ८६. कर्मणि हनः २९९७ । हनः ८८
भूते कर्मणि ९२

धातोः कृत्, हनः, भूतकालिक क्विप् प्रत्ययः
कर्मणि, भूते ८७. ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् २९९८ । क्विप् ९२

धातोः कृत्, हनः, ८८. बहुलं छन्दसि ३४१९ ।
कर्मणि, क्विप्, भूते

धातोः कृत्, कर्मणि, ८९. सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः २९९९ ।
क्विप्, भूते

धातोः कृत्, कर्मणि, ९०. सोमे सुञः ३००० ।
क्विप्, भूते

धातोः कृत्, कर्मणि, ९१. अग्नौ चेः ३००१ । चेः ९२
क्विप्, भूते

कर्तृवाची उपमान उपपद में रहने पर धातुओं से णिनि प्रत्यय होता है ।

सुबन्तोपपद धातु से णिनि होता है, यदि व्रत गम्यमान हो ।

यदि आभीक्ष्य गम्यमान हो तो धातु से बहुल प्रकार से णिनि होता है ।

सुबन्तोपपद दैवादिक मन धातु से णिनि होता है ।

सुबन्तोपपद आत्ममान में वर्तमान दैवादिक मन धातु से खश् और णिनि होते हैं ।

जब तक वर्तमाने लट् न आये भूत का अधिकार रहेगा ।

भूत में करणोपपद यज धातु से णिनि प्रत्यय होता है ।

भूत में कर्मोपपद हन धातु से णिनि प्रत्यय होता है ।

ब्रह्म भ्रूण वृत्र उपपद रहने पर भूत में हन धातु से क्विप् प्रत्यय होता है ।

छन्द में अन्योपपद रहने पर भी हन धातु से बहुलतया क्विप् होता है ।

सु, कर्म पाप मन्त्र पुण्य के कर्मोपपद रहने पर हन् से क्विप् होता है ।

सोम के कर्मोपपद रहने पर षु धातु से क्विप् होता है ।

अग्नि के कर्मोपपद रहने पर चिञ् धातु से क्विप् होता है ।

धातोः कृत्, चेः, १२. कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ३००२ ।
कर्मणि, क्विप्, भूते

धातोः कृत्, भूते १३. कर्मणीनिविक्रियः ३००३ ।
* कुत्सितग्रहणं कर्तव्यम् ।

क्वनिप् प्रत्ययः

धातोः कृत्, भूते १४. दृशोः क्वनिप् ३००४ ।

धातोः कृत्, क्वनिप्, १५. राजनि युधिकृजः ३००५ ।
भूते

धातोः कृत्, क्वनिप्, १६. सहे च ३००६ ।
भूते

ड प्रत्ययः

धातोः कृत्, भूते १७. सप्तम्यां जनेडः ३००७ ।

धातोः कृत्, डः, भूते १८. पञ्चम्यामजातौ ३००८ ।

धातोः कृत्, डः, भूते १९. उपसर्गे च संज्ञायाम् ३००९ ।

धातोः कृत्, डः, भूते १००. अनौ कर्मणि ३०१० । ॥५॥

धातोः कृत्, डः, भूते १०१. अन्येष्वपि दृश्यते ३०११ ।

* अन्येष्वपि दृश्यते ।

धातोः कृत्, भूते १०२. निष्ठा ३०१३ ।

* आदिकर्मणि निष्ठा वक्तव्या ।

धातोः कृत्, भूते १०३. सुयजोर्ङ्वनिप् ३०११ ।

धातोः कृत्, भूते १०४. जीर्यतेरतृन् ३०१२ ।

धातोः कृत्, भूते १०५. छन्दसि लिट् ३०१३

धातोः कृत्, भूते, १०६. लिटः कानज्वा ३०१४ ।
छन्दसि

अग्न्याख्या में कर्मोपपद चिञ् धातु से कर्मकारक में क्विप् प्रत्यय होता है ।

कर्मोपपद वि पूर्वक क्री धातु से इनि होता है, यदि कर्म कुत्सा निमित्तक हो ।

क्वनिप् १६

कर्मोपपद दृश धातु से क्वनिप् प्रत्यय होता है ।

राजन् शब्द के कर्मोपपद रहने पर युध् और कृ धातु से क्वनिप् प्रत्यय होता है ।

सहोपपद युध् और कृ से क्वनिप् प्रत्यय होता है ।

डः १०१

सप्तम्यन्त उपपद रहने पर जन् धातु से ड प्रत्यय होता है ।

जाति वर्जित पञ्चम्यन्त उपपद रहने पर जन् से ड होता है ।

संज्ञा में सोपसर्ग जन् धातु से ड प्रत्यय होता है ।

कर्मोपपद रहने पर अनुपूर्वक जनी धातु से ड होता है ।

अन्य कारकों के उपपद में रहने पर भी जन् से ड होता है ।

निष्ठा प्रत्यय भूत में ही होते हैं ।

(स्वादि के) षु तथा यज धातु से भूत में ङ्वनिप् प्रत्यय होता है ।
जृ धातु से भूत में अतृन् प्रत्यय होता है ।

छन्दसि १०७

छन्दस् में धातु से लिट् प्रत्यय होता है ।

वा, लिटः १०९ छन्दस् में लिट् को विकल्प से कानच् आदेश होता है ।

धातोः कृत्, भूते, १०७. क्वसुश्च ३०९५ । छन्दसि, वा, लिट्:	क्वसुः १०९	छन्दस् में लिट् को क्वसु आदेश होता है ।
धातोः कृत्, भूते, १०८. भाषायां सदवसश्रुवः ३०९७ । क्वसुः, वा, लिट्:		भाषा में भूतसामान्य में भी सदवस श्रु धातुओं से लिट् होता है और उसे क्वसु आदेश होता है ।
धातोः कृत्, भूते, १०९. उपेयिवाननाश्चाननूचानश्च ३०९८ । क्वसुः, वा, लिट्:		उपेयिवान् अनाश्चान् अनूचान निपातित होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते ११०. लुङ् २२१८ ।		भूत में वर्तमान धातु से लुङ् प्रत्यय होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते १११. अनद्यतने लङ् २२०५ ।	अनद्यतने १२२	अनद्यतन भूत में वर्तमान धातु से लङ् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११२. अभिज्ञावचने लट् २७७३ । अनद्यतने, अ-ने	अ-ने लट् ११४	अभिज्ञा वाचक शब्द रहने पर अनद्यतन भूत में धातु से लट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११३. न यदि २७७४ । अनद्यतने, अ-ने		यदि अभिज्ञावचन में यत् का प्रयोग हो तो लट् नहीं होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११४. विभाषा साकाङ्क्षे २७७५ । अनद्यतने, अ-ने		प्रयोक्ता के साकाङ्क्ष रहने पर यत् शब्द का प्रयोग हो या न हो लट् विकल्प से होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११५. परोक्षे लिट् २१७१ । अनद्यतने * अत्यन्तापह्नवे लिङ्वक्तव्यः ।	परोक्षे ११८ लिट् ११७ । लङ् ११७	भूतानद्यतन परोक्षार्थ में धातु से लिट् प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११६. हशश्चतोलङ् च २७७६ । अनद्यतने, परोक्षे, लिट्		ह शश्चत् उपपद रहने पर भूतानद्यतन परोक्ष में धातु से लङ् और लिट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११७. प्रश्ने चासन्नकाले २७७७ । अनद्यतने, परोक्षे, लिट्, लङ्		पूछा गया प्रश्न यदि सद्यः का हो तो भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति धातु से लङ् लिट् दोनों होते हैं ।
धातोः कृत्, भूते, ११८. लट् स्मे २७७८ । अनद्यतने, परोक्षे	लट् १२२ स्मे ११९	स्म उपपद रहने पर भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्ति धातु से लट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, ११९. अपरोक्षे च २७७९ । अनद्यतने, परोक्षे, लट्, स्मे		भूतानद्यतन अपरोक्ष वृत्ति धातु से भी लट् होता है ।
धातोः कृत्, भूते, १२०. ननौ पृष्ठप्रतिवचने २७८० ॥६॥ पृष्ठ-ने १२१ लट्		पृष्ठप्रतिवचन भूत में धातु से ननु उपपद रहने पर लट् होता है ।

धातोः कृत्, भूते, १२१. नन्वोर्विभाषा २७८१ ।
लट्, पृष्ट-ने
धातोः कृत्, भूते, १२२. पुरि लुङ्चास्मे २७८२ ।
अनद्यतने, लट्, वि०

विभाषा १२२ न और नु उपपद रहने पर पृ-
ष्टप्रतिवचन भूत में लट् होता है ।
पुरा शब्द उपपद रहने पर और स्म
का प्रयोग न रहने पर भूतानद्यतन
अर्थ में धातु से लुङ् और लट्
दोनों होते हैं ।

वर्तमानकालिक प्रत्ययः

धातोः कृत् १२३. वर्तमाने लट् २१५१ ।
धातोः कृत्, वर्तमाने १२४. लटः शतृशानच्चावप्रथमासमानाधिक-
रणे ३१०० ।
धातोः कृत्, वर्तमाने, १२५. संबोधने च ३१०२ ।
लटः, श-चौ
धातोः कृत्, वर्तमाने, १२६. लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ३१०३ ।
लटः, श-चौ

वर्तमाने ३.३.१ वर्तमान अर्थ में धातु से लट् प्रत्यय
होता है ।
लटः १२६ अप्रथमान्त के साथ यदि सामान्या-
शतृ-शानचौ १-धिकरण हो तो लट् को शतृ-शानच्
२६ आदेश होते हैं ।
प्रथमा सामान्याधिकरण तथा
सम्बोधन में लट् को शतृ शानच्
आदेश होते हैं ।
लक्षण और हेतु अर्थ में वर्तमान
धातु से लट् को शतृ शानच् होते
हैं, यदि वे दोनों क्रिया के हेतु
हों ।

धातोः कृत्, वर्तमाने १२७. तौ सत् ३१०६ ।
धातोः कृत्, वर्तमाने १२८. पूङ्यजोः शानन् ३१०८ ।
धातोः कृत्, वर्तमाने १२९. ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्
३१०९ ।

शतृ और शानच् मात्र को सत्
संज्ञा होती है ।
पूङ् और यज् धातु को शानन् प्रत्यय
होता है ।
ताच्छील्य वयोवचन और शक्ति के
द्योत्य रहने पर धातु से वर्तमान में
चानश् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने १३०. इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ३११० । शतृ १३३

इङ् और धारि धातु से शतृ होता
है, यदि कर्ता अकृच्छ्री हो ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३१. द्विषोऽमित्रे ३१११ ।

अमित्र कर्ता होने पर द्विष धातु से
शतृ प्रत्यय होता है ।

शतृ
धातोः कृत्, वर्तमाने, १३२. सुजो यज्ञसंयोगे ३११२ ।

यज्ञ संयोग में वर्तमान सु धातु से
शतृ प्रत्यय होता है ।

शतृ
धातोः कृत्, वर्तमाने, १३३. अर्हः प्रशंसायाम् ३११३ ।
शतृ

अर्ह धातु से प्रशंसा में शतृ प्रत्यय
होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने १३४. आ क्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु तच्छील-षु १७८ भ्राजभास सूत्र १७७ तक जो भी प्रत्यय होंगे वे तच्छील तद्धर्म तत्साधुकारी अर्थ में होंगे ।
३११४ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३५. तृन् ३११५ ।

त-षु

* तृन्विधावृत्तिक्षु चानुपसर्गस्य ।

* नयतेः षुक् ।

* त्विषेर्देवतायामकारश्चोपधाया अनिट्त्वं च ।

* क्षदेश्च युक्ते ।

* छन्दसि तृच्च ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३६. अलंकृज्जिराकृज्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मद- इष्णुच् १३८

त-षु

रुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ३११६ ।

अलंकृ निराकृ प्रजन उत्पच उत्पत उन्मद रुचि अपत्रप वृतु वृधु सह चर धातुओं से कर्ता में तच्छील आदि अर्थों में इष्णुच् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३७. णेच्छन्दसि ३११७ ।

इष्णुच्, त-षु

छन्दसि १३८

ण्यन्त में तच्छील आदि अर्थों में धातुओं से कर्ता में इष्णुच् प्रत्यय होता है छन्द में ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३८. भुवश्च ३११८ ।

त-षु छन्दसि इष्णुच्

भुवः १३९

धातोः कृत्, वर्तमाने, १३९. ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः ३११९ ।

भुवः, त-षु

भू धातु से कर्ता में तच्छीलादि अर्थों में छन्द में इष्णुच् होता है । तच्छीलादि अर्थ में ग्ला जि स्था भू धातुओं से ग्स्नुः प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४०. त्रसिगृध्रिषृक्षिपेः कृः ३१२० ॥७॥

त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४१. शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ३१२१ ।

त-षु

घिनुण् १४५

तच्छीलादि अर्थ में त्रसि आदि धातुओं से कृ प्रत्यय होता है । शम आदि आठ धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४२. संपृचानुरुधाड्यमाड्यसपरिसृसंसृज-

घिनुण्, त-षु

परिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवद-

परिदहपरिमुहदुषद्विषद्विहदुहयुजाक्रीड-

विविचत्यजरजभजातिचरापचरामुषा-

भ्याहनश्च ३१२२ ।

संपृच आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४३. वौ कषलसकत्यस्त्रम्भः ३१२३ । वौ १४४

घिनुण्, त-षु

वि युक्त कष आदि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में घिनुण् होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४४. अपे च लषः ३१२४ ।
धिनुण्, वौ, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४५. प्रे लपसृद्धमथवदवसः ३१२५ ।
धिनुण्, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४६. निन्दहिंसक्लिशाखादविनाशपरिक्षिप- वुञ् १४७
त-षु परिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ्
३१२६ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४७. देविक्रुशोश्चोपसर्गे ३१२७ ।
वुञ्, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४८. चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच् ३१२८ । युच् १५३ अ-
त-षु कर्मकात् १४९ धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता

धातोः कृत्, वर्तमाने, १४९. अनुदात्तेश्च हलादेः ३१२९ ।
त-षु, युच्, अकर्म०

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५०. जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृग्धिज्वलशुचल-
त-षु, युच् षपतपदः ३१३० ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५१. क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ३१३१ ।
त-षु, युच्

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५२. न यः ३१३२ ।
त-षु, युच्

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५३. सुददीपदीक्षश्च ३१३३ ।
त-षु, युच्, न

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५४. लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य
त-षु उकञ् ३१३४ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५५. जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृडः षाकन् ३१३५
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५६. प्रजोरिनिः ३१३६ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५७. जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्र-
इनि, त-षु सूभ्यश्च ३१३७ ।

अप् युक्त लष धातु से तच्छीलादि
अर्थ में धिनुण् होता है, वि युक्त
को भी ।

प्र युक्त लप आदि धातुओं से
तच्छीलादि अर्थ में धिनुण् होता
है ।

तच्छीलादि अर्थ में निन्द हिंस आदि
धातुओं से कर्ता में वुञ् प्रत्यय
होता है ।

सोपसर्ग ण्यन्त दिव् तथा क्रुश धातु
से वुञ् होता है ।

चलनार्थ शब्दार्थ और अकर्मक
धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता
में युच् प्रत्यय होता है ।

हलादि अनुदात्तेत् अकर्मक धातुओं
से युच् प्रत्यय होता है ।

जु यङन्त क्रम तथा द्रम सृ आदि
धातुओं से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता
में युच् प्रत्यय होता है ।

क्रुध मडि अर्थ वाले धातुओं से
युच् प्रत्यय होता है ।

यकारान्त धातुओं से युच् प्रत्यय
नहीं होता है ।

सूद दीप दीक्ष धातुओं से युच् नहीं
होता है ।

लष आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में उकञ् प्रत्यय होता है ।

जल्प आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में षाकन् प्रत्यय होता
है ।

प्रपूर्वक जु धातु से तच्छीलादि अर्थ
में कर्ता में इनि प्रत्यय होता है ।

जि आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में इनि प्रत्यय होता
है ।

न १५३

इनिः १५७

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५८. स्पृहगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाम्य आ-
त-षु लुच् ३१३८ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १५९. दाधेदसिदसदो रुः ३१३९ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६०. सृघस्यदः क्मरच् ३१४० ॥८॥
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६१. भञ्जभासमिदो घुरच् ३१४१ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६२. विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ३१४२ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६३. इण्णशिजिसर्तिभ्यः क्वरप् ३१४३ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६४. गत्वश्च ३१४४ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६५. जागरूकः ३१४५ ।
त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६६. यजजपदशां यङः ३१४६ ।
ऊकः, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६७. नभिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः
त-षु ३१४७ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६८. सनाशंसभिक्ष उः ३१४८ ।
त-षु उः १७०

धातोः कृत्, वर्तमाने, १६९. विन्दुरिच्छुः ३१४९ ।
उः, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७०. क्याच्छन्दसि ३१५० ।
उः, त-षु छन्दसि १७१

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७१. आह्वामहनजनः किकिनौ लिट् च ३१५१
छन्दसि, त-षु * भाषायां धावृकसृगमिजनिनमिभ्यः ।

स्पृह आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में आलुच् प्रत्यय
होता है ।

दा आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में रु प्रत्यय होता
है ।

सृ घस् अद् धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में क्मरच् होता है ।

भञ्ज आदि धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में घुरच् प्रत्यय होता है ।

विदादि धातुओं से तच्छीलादि अर्थ
में कर्ता में कुरच् होता है ।

इण् नश् जि सर्ति से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में क्वरप् होता है ।

गम् से गत्वश्च बनता है । (इसमें
अनुनासिक लोप और क्वरप् होता
है ।

जागृ से ऊक प्रत्यय होता है
तच्छीलादि अर्थ में ।

यङन्त यजादि से ऊक प्रत्यय होता
है तच्छीलादि अर्थ में ।

नम कम्प स्मि नपूर्व जस कम
हिंस दीप् धातुओं से तच्छीलादि
अर्थ में कर्ता में र प्रत्यय होता
है ।

सन् प्रत्ययान्त, आपूर्वशंस तथा
भिक्ष धातुओं से तच्छीलादि अर्थ
में कर्ता में उ प्रत्यय होता है ।

विद इष से निपातनात् विन्दु इच्छु
बनता है तच्छीलादि में ।

क्य प्रत्ययान्त धातु से छन्द में
उकार होता है तच्छीलादि में ।

आकारान्त ऋवर्णान्त गम हन जन से
छन्द में कि किम् प्रत्यय होते हैं
तच्छीलादि में । वे लिङ्वत् होते हैं ।

* सासहिवावहिचाचलिपापतीनामुपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७२. स्वपितृषोर्नजिङ् ३१५२ ।

त-षु * धृषेष्टेति वाच्यम् ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७३. शृवन्द्योरारुः ३१५३ ।

त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७४. भियः कुक्लुकनौ ३१५४ ।

त-षु * कुक्लुक्त्रपि वक्तव्यः ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७५. स्थेशभासपिसकसो वरच् ३१५५ । वरच् १७६

त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७६. यश्च यङः ३१५६ ।

वरच्, त-षु

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७७. भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवः क्विप् १७९

त-षु क्विप् ३१५७ ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७८. अन्येभ्योऽपि छ्यते ३१५८ ।

क्विप्, त-षु * क्विव्वचिप्रच्छयायतस्तुकटप्रुजुश्रीणां दीर्घो-

ऽसंप्रसारणं च ।

* द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च ।

* जुहोतेर्दीर्घश्च ।

* छणातेर्ह्रस्वश्च । ।

* ध्यायतेः संप्रसारणं च ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १७९. भुवः संज्ञान्तरयोः ३१५९ ।

क्विप्

भुवः १८०

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८०. विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम् ३१६० ॥१॥

भुवः * डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, वर्तमाने १८१. धः कर्मणि घ्नन् ३१६१ ।

घ्नन् १८३

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८२. दाम्रीशसयुजस्तुतुदसिचमिहपतद- करणे १८६

घ्नन् शनहः करणे ३१६२ ।

स्वप् तृष धातु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में नजिङ् होता है ।

शृ वदि से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में आरु होता है ।

जिभी धातु से कुक् और लुकन् प्रत्यय होते हैं तच्छीलादि में ।

स्था ईश भासृ पिसृ पेसृ कस धातुओं से तच्छीलादि में कर्ता में वरच् प्रत्यय होता है ।

यङन्त या धातु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में वरच् होता है ।

भ्राज, भास, धुर्वि, द्युत, ऊर्जि, पृ, जु और ग्रावस्तु से तच्छीलादि अर्थ में कर्ता में क्विप् प्रत्यय होता है ।

तच्छीलादि अर्थ में अन्य धातुओं से भी क्विप् होता है ।

संज्ञा और अन्तर गम्यमान रहने पर भू धातु से क्विप् प्रत्यय होता है ।

वि प्र सम् पूर्वक भू धातु से डु प्रत्यय होता है, यदि संज्ञा न हो । घेट् और डुधाञ् से कर्म में घ्नन् प्रत्यय होता है ।

दाप् नी शसु यु युजिर् स्तु तुद षिञ् षिचिर् मिह पत्त्वं दंश नह धातुओं से करण में घ्नन् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८३. हलसूकरयोः पुवः ३१६४ ।
घृन्, करणे

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८४. अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ३१६५ । इत्रः १८६
करणे

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८५. पुवः संज्ञायाम् ३१६६ । पुवः १८६
इत्रः, करणे

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८६. कर्तरि चर्षिदेवतयोः ३१६७ ।
इत्रः, करणे, पुवः

धातोः कृत्, वर्तमाने १८७. जीतः क्तः ३०८८ । क्तः १८८

धातोः कृत्, वर्तमाने, १८८. मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ३०८९ ।
क्तः

यदि हल और सूकर का अवयव हो तो पू धातु से करण में घृन् प्रत्यय होता है ।

ऋ लू धू सू खन सह चर धातु से करण में घृन् होता है

पू धातु से करण में इत्र प्रत्यय होता है, यदि निष्पन्न शब्द संज्ञा हो ।

पू धातु से कर्ता और करण में इत्र प्रत्यय होता है । ऋषि सम्बन्ध में कर्ता में तथा देवता सम्बन्ध में करण में ।

जिन धातुओं से जि की इत्संज्ञा हो उनसे वर्तमान में भी क्त प्रत्यय होता है ।

मति बुद्धि पूजार्थक धातुओं से वर्तमान में भी क्त प्रत्यय होता है ।

कर्मणि दिवापूःसर्वसत्सूबहुलमन्येष्वपि नन्वोः

शमिति भञ्जभासथः कर्मण्यष्टौ ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

धातोः कृत्, वर्तमाने १. उणादयो बहुलम् ३१६९ ।

उणादयः ३

उणादि प्रत्यय वर्तमान में तथा संज्ञा में बहुल प्रकार से होते हैं । उणादि प्रत्यय प्रायः भूत में भी देखे जाते हैं ।

धातोः कृत्, उणादयः २. भूतेऽपि दृश्यन्ते ३१७० ।

भविष्यत्कालिक कृत्प्रत्ययः

धातोः कृत्, उणादयः ३. भविष्यति गम्यादयः ३१७१ ।

भविष्यति १५

भविष्यत् काल में गमी आदि शब्द निपातित होते हैं ।

(४१) गमी आगमी भावी प्रस्थायी प्रतिरोधी
प्रतियोधी प्रतिबोधी प्रतियायी प्रतियोगी—एते
गम्यादयः ।

धातोः कृत्, भविष्यति ४. यावत्पुरानिपातयोर्लट् २७८३ ।

लट् ९

निपाते संज्ञक यावत् और पुरा शब्द के उपपद रहने पर भविष्यत् काल में धातु से लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- ५. विभाषा कदाकह्योः २७८४ ।
ष्यति, लट्

विभाषा ९

कदा और कर्हि उपपद रहने पर भविष्यत् काल में धातु से विकल्पेन लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- ६. किंवृत्ते लिप्सायाम् २७८५ ।
ष्यति, लट्, विभा०

किंवृत्त उपपद रहने पर लिप्सा में भविष्यत् काल में धातु से विकल्पेन लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- ७. लिप्स्यमानसिद्धौ च २७८६ ।
ष्यति, लट्, विभा०

लिप्स्यमान सिद्धि गम्यमान हो तो भ० काल में विकल्प से लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- ८. लोडर्थलक्षणे च २७८७ ।
ष्यति, लट्, विभा०

लो-णे ९

लोडर्थ लक्षण धात्वर्थ के रहने पर धातु से भ० काल में विकल्प से लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- ९. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके २७८८ ।
ष्यति, लट्, विभा०,
लो-णे

ऊर्ध्वमौहूर्तिक भ० काल में लोडर्थ लक्षण में वर्तमान धातु से लिङ् तथा लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- १०. तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ३१७५ क्रिया-यां १३
ष्यति क्रि-म् १३

क्रियार्था क्रिया के उपपद रहने पर भविष्यत् काल में तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत्, भवि- ११. भाववचनाश्च ३१८० ।
ष्यति, क्रि०याम्
क्रि-म्

भाव के अधिकार में पठित प्रत्यय क्रियार्था क्रिया में भविष्यत् काल में होते हैं ।

धातोः कृत्, भवि- १२. अण्कर्मणि च ३१८१ ।
ष्यति, क्रि०याम्
क्रि-म्

कर्म उपपद रहने पर क्रियार्था क्रिया में भविष्यत् काल में धातु से अण् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- १३. लट् शेषे च २१९३ ।
ष्यति, क्रि०याम्
क्रि-म्

क्रियार्था क्रिया रहने पर भविष्यत् में तथा शुद्ध भविष्यत् में भी लट् होता है ।

धातोः कृत्, भवि- १४. लट् सद्वा ३१०७ ।
ष्यति

लट् के स्थान पर सत् अर्थात् शब्द शानच् विकल्प से होते हैं ।

धातोः कृत्, भवि- १५. अनद्यतने लुट् २१८५ ।
ष्यति

भविष्यत् अनद्यतन अर्थ में वर्तमान धातु से लुट् प्रत्यय होता है ।

घञ्प्रत्ययः

धातोः कृत्, १६. पदरुजविशस्पृशो घञ् ३१८२ । घञ् ५५

* स्पृश उपतापे ।

धातोः कृत्, घञ् १७. सृ स्थिरे ३१८३ ।

* व्याधिमत्स्यबलेषु चेति वाच्यम् ।

भावार्थक प्रत्ययः

धातोः कृत्, घञ् १८. भावे ३१८४ ।

भावे ११२

धातोः कृत्, घञ्, १९. अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ३१८६ । अक-म् ११२
भावे

धातोः कृत्, घञ्, २०. परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ३१९० । ११ ।

भावे, अक-म् * दारजारौ कर्तरि णिलुक् च ।

धातोः कृत्, घञ्, २१. इङश्च ३१९१ ।

भावे, अक-म् * अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानम् तदन्ताच्च वा
ङीष् ।

* शृवायुवर्णनिवृत्तेषु ।

धातोः कृत्, घञ्, २२. उपसर्गे रुवः ३१९२ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २३. समि युदुवः ३१९४ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २४. श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे ३१९५ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २५. वी क्षुश्रुवः ३१९६ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २६. अवोदोर्नियः ३१९७ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २७. प्रे द्रुस्तुसुवः ३१९८ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २८. निरभ्योः पूत्वोः ३१९९ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, २९. उन्ध्योर्ग्रः ३२०० ।

उन्ध्योः ३०

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ३०. कृ धान्ये ३२०१ ।

भावे, अक-म्,

उन्ध्योः

पद आदि धातुओं से (तीनों कालों में) घञ् प्रत्यय होता है ।

कर्ता के स्थिर रहने पर सृ धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

भाव वाच्य रहने पर धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

संज्ञा विषय में कर्तृभिन्न कारक में धातु से घञ् होता है ।

परिमाणाख्या गम्यमान रहने पर सभी धातुओं से घञ् होता है ।

इङ् धातु से घञ् होता है ।

उपसर्ग उपपद रहने पर रु धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

सम् उपसर्ग उपपद रहने पर यु दु द्रु से घञ् होता है ।

उपसर्गरहित श्रि णी भू धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

वि उपपद रहने पर क्षु श्रु धातु से घञ् होता है ।

अव और उद् उपपद रहने पर नी से घञ् होता है ।

प्र उपपद रहने पर द्रु स्तु सु से घञ् होता है ।

निर पूर्वक पू और अभिपूर्वक लू धातु से घञ् होता है ।

उद् नी उपपद रहने पर गृ धातु से घञ् होता है ।

धान्य विषयक कृ के प्रयोग में उद् नी उपपद रहने पर घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ३१. यज्ञे समि स्तुवः ३२०२ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ३२. प्रे स्त्रोऽयज्ञे ३२०३ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ३३. प्रथने वावशब्दे ३२०४ ।

भावे, अक-म्, स्त्रः

स्त्रः ३४

वौ ३४

धातोः कृत्, घञ्, ३४. छन्दोनाम्नि च ३२०५ ।

भावे, अक-म्, स्त्रः वौ

धातोः कृत्, घञ्, ३५. उदि ग्रहः ३२०७ ।

भावे, अक-म्

ग्रहः ३६

धातोः कृत्, घञ्, ३६. समि मुष्टौ ३२०८ ।

भावे, अक-म्, ग्रहः

धातोः कृत्, घञ्, ३७. परिन्योर्नीणोर्धूताभ्रेषयोः ३२०९ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ३८. परावनुपात्यय इणः ३२१० ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ३९. व्युपयोः शेतेः पर्याये ३२११ ।

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ४०. हस्तादाने चेरस्तेये ३२१२ ।।२।। चेः ४२

भावे, अक-म्

धातोः कृत्, घञ्, ४१. निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वदेशे कः आदेशे कः ४२

भावे, अक-म्, चेः

३२१३ ।

धातोः कृत्, घञ्, ४२. सङ्घे चानौत्तराधये ३२१४ ।

भावे, अक-म्, चेः,

आ-कः

धातोः कृत्, घञ्, ४३. कर्मव्यतिहारे णच्चित्रायाम् ३२१५ ।

भावे, अक-म्,

धातोः कृत्, घञ्, ४४. अभिविधौ भाव इनुण् ३२१८ ।

भावे, अक-म्

सम् पूर्वक स्तु से घञ् होता है, यदि यज्ञविषयक प्रयोग हो ।

प्र पूर्वक स्तृञ् धातु से घञ् होता है, यदि यज्ञविषय न हो ।

वि पूर्वक स्तृञ् धातु से घञ् होता है यदि प्रथन-विस्तीर्णता-शब्द विषयक न हो ।

वि पूर्वक स्तृ धातु से घञ् होता है, यदि विषय छन्द हो ।

उद् पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है ।

सम् पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है, यदि धात्वर्थ मुष्टि विषयक हो ।

परिपूर्वक नी और निपूर्वक इण् धातु से घञ् होता है, यदि धात्वर्थ क्रमशः द्यूत विषयक तथा अभ्रेष विषयक हो ।

यदि अनुपात्यय गम्यमान हो तो परिपूर्वक इण् से घञ् होता है ।

वि और उपपूर्वक शीङ् धातु से घञ् होता है, यदि पर्याय गम्यमान हो ।

हस्तादान गम्यमान हो तो चि से घञ् होता है, स्तेय में नहीं ।

निवास चिति शरीर उपसमाधान अर्थों में चि धातु से घञ् होता है और आदि को क हो जाता है ।

उत्तराधरभाव विहीन सङ्घ में चि धातु से घञ् तथा आदि को क हो जाता है ।

कर्मव्यतिहार गम्यमान रहने पर धातु से णच् होता है, यदि स्त्रीलिङ्ग भाव वाच्य हो ।

अभिविधि में धातु से भाव में इनुण् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ४५. आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ३२२० ।
भावे, अक-म्

ग्रहः ४७

आक्रोश गम्यमान होने पर अव नि पूर्वक ग्रह धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ४६. प्रे लिप्सायाम् ३२२१ ।
भावे, अक-म्, ग्रहः

लिप्सा गम्यमान होने पर प्र पूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ४७. परौ यज्ञे ३२२२ ।
भावे, अक-म्, ग्रहः

यदि यज्ञ विषय हो तो परिपूर्वक ग्रह धातु से घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ४८. नौ वृ धान्ये ३२२३ ।
भावे, अक-म्

धान्य विशेष अभिधेय होने पर निपूर्वक वृ धातु से घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ४९. उदि श्रयतिथौतिपू द्वुवः ३२२४ ।
भावे, अक-म्

उत् पूर्वक श्रि यु पू द्वु धातु से घञ् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ५०. विभाषाऽऽडि रूप्लुवोः ३२२५ ।
भावे, अक-म्

विभाषा ५५

आड् उपपद रहने पर रु प्लु धातु से विकल्प से घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ५१. अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ३२२६ ।
भावे, अक-म्, वि०

ग्रहः ५३

अव पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वर्ष प्रतिबन्ध अभिधेय हो ।

धातोः कृत्, घञ्, ५२. प्रे वणिजाम् ३२२७ ।
भावे, अक-म्, वि०,
ग्रहः

प्रे ५४

प्र पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वाच्य वणिक् सम्बन्धी हो ।

धातोः कृत्, घञ्, ५३. रश्मौ च ३२२८ ।
भावे, अक-म्, वि०,
ग्रहः, प्रे

प्र पूर्वक ग्रह धातु से विकल्पेन घञ् होता है, यदि वाच्य रश्मि हो ।

धातोः कृत्, घञ्, ५४. वृणोतेराच्छादने ३२२९ ।
भावे, अक-म्, वि०,
प्रे

यदि आच्छादन विशेष अर्थ हो तो प्रपूर्वक वृ धातु से विकल्पेन घञ् होता है ।

धातोः कृत्, घञ्, ५५. परौ भुवोऽवज्ञाने ३२३० ।
भावे, अक-म्, वि०

असत्कार अर्थ में परिपूर्वक भू धातु से विकल्पेन घञ् होता है ।

अच्प्रत्ययः

धातोः कृत्, भावे, ५६. एरच् ३२३१ ।
अक-म्

* भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम् ।

* जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ ।

अप् प्रत्ययः

धातोः कृत्, भावे, ५७. ऋदोरप् ३२३२ ।
अक-म्

अप् ८७

इवर्णान्ति धातुओं से अच् प्रत्यय होता है, भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में तथा संज्ञा में ।

ऋकारान्त तथा उवर्णान्ति धातुओं से अप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, भावे, ५८. ग्रहवृद्धिनिश्चिगमश्च ३२३४ ।

अक-म्, अप् * वशिरण्योश्चोपसंख्यानम् ।

* घञर्थे कविधानाम् ।

धातोः कृत्, भावे, ५९. उपसर्गेऽदः ३२३५ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ६०. नौ ण च ३२३७ ।

अक-म्, अप्, अदः

धातोः कृत्, भावे, ६१. व्यधजपोरनुपसर्गे ३२३८ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ६२. स्वनहसोर्वा ३२३९ ।

अक-म्, अप्, अनु०

धातोः कृत्, भावे, ६३. यमः समुपनिविषु च ३२४० ।

अक-म्, अप्,

अनु०, वा

धातोः कृत्, भावे, ६४. नौ गदनदपठस्वनः ३२४१ ।

अक-म्, अप्,

अनु०, वा

धातोः कृत्, भावे, ६५. क्वणो वीणायां च ३२४२ ।

अक-म्, अप्,

अनु०, वा, नौ

धातोः कृत्, भावे, ६६. नित्यं पणः परिमाणे ३२४३ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ६७. मदोऽनुपसर्गे ३२४४ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ६८. प्रमदसंमदौ हर्षे ३२४५ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ६९. समुदोरजः पशुषु ३२४६ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ७०. अक्षेषु ग्लहः ३२४७ ।

अक-म्, अप्

धातोः कृत्, भावे, ७१. प्रजने सर्तेः ३२४८ ।

अक-म्, अप्

ग्रह आदि धातुओं से अप् प्रत्यय होता है ।

अदः ६०

उपसर्ग रहने पर अद धातु से अप् प्रत्यय होता है ।

॥३॥

नि उपपद रहने पर अद धातु से ण तथा अप् प्रत्यय होता है ।

अनुपसर्गे ६५

उपसर्ग विहीन व्यध जप धातुओं से अप् होता है ।

वा ६५

उपसर्गहीन स्वन और हस धातु से वैकल्पिक अप् होता है ।

अनुपसर्ग यम अथवा सम् उप नि वि उपसर्ग युक्त यम धातु से विकल्पेन अप् होता है ।

नौ ६५

नि पूर्वक गद णद पठ स्वन से वैकल्पिक अप् होता है ।

अनुपसर्ग अथवा निपूर्व क्वण धातु से अप् होता है सोपसर्ग वीणाअर्थ में भी ।

परिमाण गम्यमान रहने पर पण से नित्य अप् होता है ।

अनुपसर्ग मद धातु से अप् प्रत्यय होता है ।

हर्ष गम्यमान रहने पर प्रमद संमद निपातित होते हैं ।

पशु विषय में सम् उद् पूर्वक अज धातु से धात्वर्थ में अप् प्रत्यय होता है ।

अक्षविषय में धात्वर्थ में ग्लह निपातित होता है ।

प्रजन अर्थ में सृ धातु से अप् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, भावे, ७२. ह्रः संप्रसारणं च न्यभ्युपविषु ३२४९ ।	ह्रः ७५	सि- नि अभि उप वि पूर्वक ह्रेञ् धातु
अक-म्, अप्		संप्रसारणम् ७५ से अप् तथा सम्प्रसारण होता है ।
धातोः कृत्, भावे, ७३. आङि युद्धे ३२५० ।		युद्ध विषय में आङ् पूर्वक ह्रेञ्
अक-म्, अप्, ह्रः,		धातु से सम्प्रसारण और अप्
सम्प्रसारणम्		प्रत्यय होता है ।
धातोः कृत्, भावे, ७४. निपानमाहावः ३२५१ ।		निपान विषय में आङ् पूर्वक ह्रेञ्
अक-म्, अप्, ह्रः,		धातु से सम्प्रसारण अप् प्रत्यय
सम्प्रसारणम्		तथा वृद्धि निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, ७५. भावेऽनुपसर्गस्य ३२५२ ।	भावे-स्य ७६	भाव में अनुपसर्ग ह्रेञ् धातु से
अक-म्, अप्, ह्रः,		सम्प्रसारण और अप् होता है ।
सम्प्रसारणम्		
धातोः कृत्, भावे, ७६. हनश्च वधः ३२५३ ।	हनः ८७	भाव में अनुपसर्ग हन् धातु से
अक-म्, अप्, भावे-		अप् होता है । (सन्निधौ वश)
स्य		होने वाला वध अन्तोदात्त होता
		है ।
धातोः कृत्, भावे, ७७. मूर्तौ घनः ३२५४ ।		मूर्ति अभिधेय होने पर हन् को
अक-म्, अप्, हनः		घन् आदेश तथा अप् प्रत्यय होता
		है ।
धातोः कृत्, भावे, ७८. अन्तर्घनो देशे ३२५५ ।		यदि देश अभिधेय हो तो हन् से
अक-म्, अप्, हनः		अप् तथा उसे घन आदेश होता
		है ।
धातोः कृत्, भावे, ७९. अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च ३२५६ ।		द्वार के बाहरी प्रकोष्ठ अर्थ में हन्
अक-म्, अप्, हनः		से प्रघण और प्रघाण शब्द निपातित
		होते हैं ।
धातोः कृत्, भावे, ८०. उद्धनोऽत्याधानम् ३२५७ ॥४॥		अत्याधान-ठीहा-में उत् पूर्वक हन्
अक-म्, अप्, हनः		से उद्धन निपातित होता है ।
धातोः कृत्, भावे, ८१. अपघनोऽङ्गम् ३२५८ ।		शरीर के एक भाग के लिये अप्
अक-म्, अप्, हनः		पूर्वक हन् से अपघन निपातित
		होता है ।
धातोः कृत्, भावे, ८२. करणेऽयोविद्गुषु ३२५९ ।	करणे ८४	अयस् वि द्रु उपपद हों तो करण
अक-म्, अप्, हनः		में हन् से अप् होता है तथा हन्
		को घन आदेश हो जाता है ।
धातोः कृत्, भावे, ८३. स्तम्बे क च ३२६० ।		स्तम्ब उपपद रहने पर हन् से
अक-म्, अप्, हनः,		करण में क प्रत्यय होता है तथा
करणे		अप् भी होता है ।

धातोः कृत्, भावे, ८४. परौ घः ३२६१ ।

अक-म्, अप्, हनः,

करणे

धातोः कृत्, भावे, ८५. उपघ्न आश्रये ३२६३ ।

अक-म्, अप्, हनः

धातोः कृत्, भावे, ८६. सङ्गोद्धौ गणप्रशंसयोः ३२६४ ।

अक-म्, अप्, हनः

धातोः कृत्, भावे, ८७. निघो निमित्तम् ३२६५ ।

अक-म्, अप्, हनः

धातोः कृत्, भावे, ८८. द्वितः क्त्रः ३२६६ ।

अक-म्

धातोः कृत्, भावे, ८९. द्वितोऽथुच् ३२६७ ।

अक-म्

धातोः कृत्, भावे, ९०. यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ् ३२६८ ।

अक-म्

धातोः कृत्, भावे, ९१. स्वपो नन् ३२६९ ।

अक-म्

धातोः कृत्, भावे, ९२. उपसर्गे घोः किः ३२७० ।

अक-स्

धातोः कृत्, भावे, ९३. कर्मण्यधिकरणे च ३२७१ ।

अक-म्, घोः किः

धातोः कृत्, भावे, ९४. स्त्रियां क्तिन् ३२७२ ।

अक-म् * निष्ठायां सेट इति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, भावे, ९५. स्थागापापचो भावे ३२७३ ।

अक-म्, स्त्रियां, क्तिन् * श्रुयजीषिस्तुभ्यः करणे ।

* ग्लाम्लाज्याहाभ्यो निः ।

धातोः कृत्, भावे, ९६. मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः उदात्तः १००

अक-म्, स्त्रियां,

क्तिन्, भावे

३४२० ।

परि उपपद में हन् धातु से करण में अप् होता है तथा घ आदेश हन् को हो जाता है ।

सामीप्य में उपपूर्वक हन् से अप् तथा उपधा लोप होता है ।

गणार्थ में सम् पूर्वक तथा प्रशंसा में उत् पूर्वक हन् अप् प्रत्यय टिलोप और घत्व निपातित होता है ।

भलीभांति जानने के अर्थ में नि पूर्वक हन् धातु से अप्, टिलोप घत्व निपातित होता है ।

द्वित् धातु से क्त्र प्रत्यय होता है भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में ।

भावादि में ही द्वित् धातु से अथुच् प्रत्यय होता है ।

भावादि में ही यज आदि धातुओं से नङ् प्रत्यय होता है ।

स्वप् धातु से नन् प्रत्यय होता है ।

घोः किः ९३

भाव तथा कर्तृभिन्न कारक में सोप-सर्ग घु संज्ञक धातुओं से कि प्रत्यय होता है ।

कर्म उपपद रहने पर अधिकरण में घु संज्ञक धातुओं से कि प्रत्यय होता है ।

स्त्रियां ११२

स्त्रीलिङ्ग में भावादि में धातु से क्तिन् प्रत्यय होता है ।

क्तिन् ९७

भावे ९६

स्था गा पा पच धातुओं से भाव में स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय होता है ।

मन्त्र विषय में वृष आदि धातुओं से भाव तथा स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय होता है, वह उदात्त होता है ।

धातोः कृत्, भावे, ९७. ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च ३२७४
अक-म्, स्त्रियां,

क्तिन्, उदात्तः

धातोः कृत्, भावे, ९८. ब्रजयजोभावे क्यप् ३२७५ ।

अक-म्, स्त्रियां,

उदात्तः

धातोः कृत्, भावे, ९९. संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविद्भु-

अक-म्, स्त्रियां, ङ्गीङ्भृजिणः ३२७६ ।

क्यप्, उदात्तः

धातोः कृत्, भावे, १००. कृजः श च ३२७७

॥५॥ श १०१

अक-म्, स्त्रियां,

क्यप्, उदात्तः

धातोः कृत्, भावे, १०१. इच्छा ३२७८ ।

अक-म्, स्त्रियां, शः * परिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानम् ।

* जागर्तैरकारो वा ।

धातोः कृत्, भावे, १०२. अ प्रत्ययात् ३२७९ ।

अक-म्, स्त्रियां

धातोः कृत्, भावे, १०३. गुरोश्च हलः ३२८० ।

अक-म्, स्त्रियां * निष्ठायां सेट इति वक्तव्यम् ।

धातोः कृत्, भावे, १०४. बिद्धिदादिभ्योऽङ् ३२८१ ।

अङ् १०६

अक-म्, स्त्रियां

(४२) ('भिदा विदारणे' २९) ('छिदा
द्वैधीकरणे' ३०) विदा । क्षिपा । ('गुहा गिर्योषधयोः'
३१) श्रद्धा । मेधा गोधा । ('आरा शस्त्र्याम्'
३२) हारा । ('कारा बन्धने' ३३) क्षिया । ('तारा
ज्योतिषि' ३४) ('धारा प्रपातने' ३५) रेखा
चूडा पीडा वपा वसा मृजा । ('क्रपेः संप्रसारणं
च' ३६) कृपा । इति भिदादिः ॥

* क्रपेः संप्रसारणं च ।

धातोः कृत्, भावे, १०५. चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ३२८२ ।

अक-म्, स्त्रियां, अङ्

धातोः कृत्, भावे, १०६. आतश्चोपसर्गे ३२८३ ।

अक-म्, स्त्रियां, अङ्

ऊति आदि शब्द निपातित होते हैं ।

क्यप् १००

ब्रज और यज धातु से स्त्रीलिङ्ग भाव में क्यप् प्रत्यय होता है ।

संज्ञा विषय में समज निपद निपत मन विद षुज् शीङ् भृज् तथा इण् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है । वह उदात्त होता है ।

कृ धातु से स्त्रीलिङ्ग में श होता है । क्यप् तथा क्तिन् भी होता है ।

इष धातु से स्त्रीलिङ्ग में इच्छा निपातित होता है ।

प्रत्ययान्त धातुओं से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय होता है ।

हलन्त गुरुमान् धातु से स्त्रीलिङ्ग में अ प्रत्यय होता है ।

षित् और भिदा आदि धातुओं से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है ।

चिति पूज कथ कुबि चर्च धातु से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है । उपसर्ग रहने पर आदन्त धातु से स्त्रीलिङ्ग में अङ् प्रत्यय होता है ।

१. एवं सर्वत्र धनुराकारान्तर्गतानि वार्तिकेष्वगतान्यपि गणसूत्रवत् गणे पठितानि भवन्ति ।

धातोः कृत्, भावे, १०७. ण्यासश्रन्थो युच् ३२८४ ।

अक-म्, स्त्रियां * घट्टिवन्दिविदिभ्यश्चेति वाच्यम् ।

* इषेरनिच्छार्थस्य ।

* परेर्वा ।

धातोः कृत्, भावे, १०८. रोगाख्यायां ण्वुल्बहुलम् ३२८५ । ण्वुल् ११०

अक-म्, स्त्रियां * धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल् ।

* इक्श्तपौ धातुनिर्देशे ।

* वर्णात्कारः ।

* रादिफः ।

* मत्वार्थाच्छः ।

* इणजादिभ्यः ।

* इञ् वपादिभ्यः ।

* इत्कृष्यादिभ्यः ।

* संपदादिभ्यः क्विप् ।

(४३) (वा० ग०) । संपद् विपद् आपद् प्रतिपद् परिषद्—एते संपदादयः ।।

धातोः कृत्, भावे, १०९. संज्ञायाम् ३२८६ ।

अक-म्, स्त्रियां,

ण्वुल्

धातोः कृत्, भावे, ११०. विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च ३२८७

अक-म्, स्त्रियां,

ण्वुल्

धातोः कृत्, भावे, १११. पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच् ३२८८ ।

अक-म्, स्त्रियां

धातोः कृत्, भावे, ११२. आक्रोशे नञ्यनिः ३२८९ ।

अक-म्, स्त्रियां

धातोः कृत् ११३. कृत्यल्युटो बहुलम् ३२९१ ।

धातोः कृत् ११४. नपुंसके भावे क्तः ३०९० ।

धातोः कृत्, नपुं-भा० ११५. ल्युट् च ३२९० ।

धातोः कृत्, नपुं- ११६. कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्तुः शरीरसुखम्

भा०, ल्युट् ३२९१ ।

ण्यन्त, आस तथा श्रन्थ धातु से स्त्रीलिङ्ग में युच् प्रत्यय होता है ।

रोगाख्या गम्यमान रहने पर धातु से बहुल प्रकार से ण्वुल् प्रत्यय होता है ।

संज्ञा में धातु से ण्वुल् प्रत्यय होता है ।

परिप्रश्न और आख्यान गम्यमान रहने पर धातु से इञ् प्रत्यय तथा ण्वुल् भी होता है । (यथा प्राप्त अन्य भी) पर्याय अर्ह ऋण उत्पत्ति अर्थों में धातु से ण्वुच् प्रत्यय होता है ।

धातु से नञ् उपपद रहने पर अनि प्रत्यय होता है, आक्रोश में । कृत्यसंज्ञक और ल्युट् प्रत्यय बहुल प्रकार से होते हैं ।

नपुं-के, भावे नपुंसक लिङ्ग में तथा भाव में धातु ११६ से क्त प्रत्यय होते हैं ।

नपुं-भा० ११५. ल्युट् च ३२९० । ल्युट् ११७ नपुंसक लिङ्ग में तथा भाव में धातु से ल्युट् प्रत्यय होते हैं ।

जिसके संस्पर्श से कर्ता को शरीर सुख प्राप्त हो उस कर्म के उपपद रहने पर धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, ल्युट् ११७. करणाधिकरणयोश्च ३२९३ ।

कर-योः १२५ करण और अधिकरण में धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कर-योः ११८. पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण ३२९६ ।

पुंसि-म् १२५ करणाधिकरण में पुंल्लिङ्ग अभि-
घः ११९ धेय रहने पर प्रायः धातु से घ प्रत्यय होता है, संज्ञा में ।

धातोः कृत्, कर- ११९. गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च

योः, पुंसि सं०, घः ३२९८ ।

धातोः कृत्, कर- १२०. अवे तृत्तोर्घञ् ३२९९ । ॥६॥ घञ् १२५

योः, पुंसि सं०

धातोः कृत्, कर- १२१. हलश्च ३३०० ।

योः, पुंसि सं०, घञ् * घञ्विधाववहाराधारावायानामुपसंख्यानम् ।

धातोः कृत्, कर- १२२. अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च ३३०१ ।

योः, पुंसि सं०, घञ्

धातोः कृत्, कर- १२३. उदङ्कोऽनुदके ३३०२ ।

योः, पुंसि सं०, घञ्

धातोः कृत्, कर- १२४. जालमानायः ३३०३ ।

योः, पुंसि सं०, घञ्

धातोः कृत्, कर- १२५. खनो घ च ३३०४ ।

योः, पुंसि सं०, घञ् * खनेर्ङडरेकेकबका वाच्याः ।

धातोः कृत् १२६. ईषदुःसुषु कृच्छाकृच्छार्थेषु खल् ईष-थेषु १३०

३३०५ । खल् १२७

धातोः कृत्, ई-थेषु, १२७. कर्तृकर्मणोश्च भूकृजोः ३३०८ ।

खल् * कर्तृकर्मणोश्चव्यर्थयोरिति वाच्यम् ।

धातोः कृत्, ई-थेषु १२८. आतो युच् ३३०९ ।

युच् १३०

धातोः कृत्, ई-थेषु, १२९. छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ३४२१ ।

छन्दसि १३०

युच्

धातोः कृत्, युच्, १३०. अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३४२२ ।

छन्दसि * भाषायां शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो यु-
ज्वाच्यः ।

पूर्वार्थ में ही घ प्रत्ययान्त गोचर आदि शब्द निपातित होते हैं ।

अव उपपद रहने पर तृ और स्तृ धातु से घञ् प्रत्यय होता है करणाधिकरण और संज्ञा में ।

हलन्त धातु से घञ् प्रत्यय पूर्वोक्त स्थिति में होता है ।

घञन्त अध्याय आदि शब्द निपा-
तित होते हैं ।

धात्वर्थ यदि अनुदक विषय हो तो उदङ्ग शब्द निपातित होता है ।

यदि जाल अर्थ हो तो आपूर्वक नी से आनाय बनता है ।

करणाधिकरण में खन् धातु से घ और घञ् होते हैं ।

ईषत् दुस् सु के उपपद में रहने पर कृच्छ्र और अकृच्छ्र अर्थ में भाव और कर्म में खल् प्रत्यय होता है ।

कर्ता कर्म ईषत् दुस् सु उपपद में रहें तो भू और कृ धातु से खल् प्रत्यय होता है ।

ईषत् दुस् सु उपपद में हों तो आकारान्त धातु से युच् प्रत्यय होता है ।

ईषदादि उपपद में हो तो छन्द में गत्यर्थक धातुओं से युच् प्रत्यय होता है ।

अगत्यर्थक धातुओं से भी छन्द में युच् प्रत्यय होता है ।

लकारार्थनिर्देशः

- धातोः कृत् १३१. वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा २७८९ । वर्त-वत् १३२ वर्तमाने लट् से उणादयो बहुलम् तक जो भी प्रत्यय हुये हैं वे वर्तमान के समीप में भी विकल्प से वर्तमान सरीखे ही होंगे ।
- धातोः कृत्, वर्त-वत् १३२. आशंसायां भूतवच्च २७९० । आ-यां १३३ आशंसा में भूत और वर्तमान की तरह भविष्य में भी प्रत्यय होते हैं । क्षिप्रवचन उपपद में हो और आशंसा गम्यमान हो तो धातु से लट् प्रत्यय होता है ।
- धातोः कृत्, आ-यां १३३. क्षिप्रवचने लट् २७९१ ।
- धातोः कृत् १३४. आशंसावचने लिङ् २७९२ । आशंसा वचन उपपद में हो तो धातु से लिङ् होता है ।
- धातोः कृत् १३५. नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ना-वत् १३८ क्रियाप्रबन्ध और सामीप्य गम्यमान रहने पर धातु से अनद्यतनवत् लकार नहीं होते हैं । २७९३ ।
- धातोः कृत्, ना-वत् १३६. भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् भ-ति १३९ मर्यादा वचन और उसके प्रविभाग के रहने पर अनद्यतनवत् प्रत्ययविधि नहीं होती है । २७९४ । म-ने १३८ अव-न् १३७
- धातोः कृत्, ना-वत्, १३७. कालविभागे चानहोरात्राणाम् २७९५ । काल-म् १३८ काल मर्यादा विभाग में उसके प्रविभाग के रहने पर भविष्य काल में अनद्यतनवत् प्रत्यय विधि नहीं होती है ।
- भ-ति, म-ने अव-न्
- धातोः कृत्, ना-वत्, १३८. परस्मिन्विभाषा २७९६ । यदि अहोरात्र सम्बन्धी प्रविभाग न हो तो अन्य विभाग में अनद्यतनवत् विधि विकल्प से होती है ।
- भ-ति, म-ने, का-म्
- धातोः कृत्, भ-ति, १३९. लिङ्निमित्ते लङ् क्रियातिपत्तौ २२२९ लिङ्-तौ १४१ यदि क्रियातिपत्ति हो तो लिङ्निमित्त भविष्यकाल में लङ् होता है ।
- धातोः कृत्, लिङ्- १४०. भूते च २७९७ ॥७॥ भूते १४१ भूत में भी लिङ् निमित्त क्रियातिपत्ति रहने पर लङ् होता है ।
- तौ
- धातोः कृत्, लिङ्- १४१. वोताप्योः २७९८ । उताप्योः १५१ ३.३.१५२ तक 'भूते लिङ् निमित्ते क्रियातिपत्तौ लङ् वा' का अधिकार रहेगा ।
- तौ, भूते
- धातोः कृत्, उताप्योः १४२. गर्हायां लङ्पिजात्वोः २७९९ । ग-यां १४४ अपि और जातु उपपद में हो और लट् १४३ गर्हा हो तो (सभी काल में) लट् होता है ।

१. उताप्योः की अनुवृत्ति का तात्पर्य 'भूते लिङ्निमित्ते क्रियातिपत्तौ लङ् वा' से है, उताप्योः के शब्दार्थ से नहीं है । नात्र शब्दार्थो विवक्षितः, अपि तु १३९-१४० सूत्राङ्क निर्दिष्टार्थो विवक्षितः ।

धातोः कृत्, उता- १४३. विभाषा कथमि लिङ् च २८०० ।
प्योः, लट्, ग-यां

कथम् उपपद में हो और गर्हा हो तो लिङ् लट् दोनों (प्राप्त सभी) होते हैं ।

धातोः कृत्, उता- १४४. किंवृत्ते लिङ्लटौ २८०१ ।
प्योः, ग-यां

लिङ्-टौ १४५ विभक्त्यन्त डतरडतमान्त किं शब्द निष्पन्न के उपपद में रहने पर गर्हा में लिङ् और लट् होते हैं ।

धातोः कृत्, उता- १४५. अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेऽपि २८०२ अन-योः १४८
प्योः, लिङ्-टौ

किंवृत्त उपपद में न हो तो भी असंभावना और अक्षमा अर्थ में धातु से लिङ् और लट् होते हैं । किंकिल तथा अस्त्यर्थक उपपद में हो तो धातु से लट् होता है । जातु और यत् उपपद में हो असंभावना अक्षमा में लिङ् होता है । यच्च और यत्र उपपद में हो तथा अनवक्लृप्ति या अमर्ष गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, उता- १४६. किंकिलास्त्यर्थेषु लट् २८०३ ।
प्योः, अन-योः

धातोः कृत्, उता- १४७. जातुयदोर्लिङ् २८०४ ।
प्योः, अन-योः * यदायद्योरुपसंख्यानम् ।

लिङ् १५०

धातोः कृत्, उता- १४८. यच्चयत्रयोः २८०५ ।
प्योः, अन-योः,
लिङ्

य-योः १५०

यच्च और यत्र उपपद में हो तथा गर्हा गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, उता- १४९. गर्हायां च २८०६ ।
प्योः, य-योः, लिङ्

धातोः कृत्, उता- १५०. चित्रीकरणे च २८०७ ।
प्योः, य-योः, लिङ्

चि-णे १५१

यच्च और यत्र उपपद में हो तथा चित्रीकरण गम्यमान हो तो धातु से लिङ् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, उता- १५१. शेषे लडयदौ २८०८ ।
प्योः, चि-णे

यच्च और यत्र के अतिरिक्त भी उपपद में हो तथा चित्रीकरण हो तो लट् होता है पर यदि शब्द न हो ।

धातोः कृत् १५२. उताप्योः समर्थयोर्लिङ् २८०९ । लिङ् १५५

समानार्थ उत अपि शब्द के उपपद में रहने पर धातु से लिङ् होता है ।

धातोः कृत्, लिङ् १५३. कामप्रवेदनेऽकच्चिति २८१० ।

कामप्रवेदन में धातु से लिङ् होता है पर उपपद 'कच्चित्' न हो ।

धातोः कृत्, लिङ् १५४. संभावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे २८११ संभा-गे १५५

सिद्ध के अप्रयोग में यदि सम्भावन ही पर्याप्त हो तो ऐसे संभावन में लिङ् होता है ।

धातोः कृत्, लिङ्, १५५. विभाषा धातौ संभावनवचनेऽयदि विभाषा १५६ संभा-गे	२८१२ ।	यदि यत् शब्द का प्रयोग न हो और धातु-से पहले संभावनवाचक शब्द हों तो धातु से विकल्प से लिङ् होता है ।
धातोः कृत्, विभाषा १५६. हेतुहेतुमतोर्लिङ् २८१३ ।		हेतु भूत अथवा फलभूत अर्थ में वर्त- मान धातु से वैकल्पिक लिङ् होता है।
धातोः कृत् १५७. इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ २८१४ । * कामप्रवेदन इति वक्तव्यम् ।	इ-षु १५९	यदि इच्छार्थक शब्दे धातु के उपपद में हो तो धातु से लिङ् और लोट् होते हैं ।
धातोः कृत्, इ-षु १५८. समानकर्तृकेषु तुमुन् ३१७६ ।	स-षु १५९	एक कर्तृक और इच्छार्थक उपपद रहने पर धातु से तुमुन् प्रत्यय भी होता है ।
धातोः कृत्, इ-षु, १५९. लिङ् च २८१५ । स-षु	लिङ् १६०	एककर्तृक और इच्छार्थक उपपद रहने पर धातु से लिङ् प्रत्यय भी होता है ।
धातोः कृत्, लिङ् १६०. इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने २८१६ ॥ ८ ॥		इच्छार्थक धातुओं से वर्तमान काल में विकल्प से लिङ् होता है ।
धातोः कृत् १६१. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थ- नेषु लिङ् २२०८ ।	विधि-षु १६२	विधि निमन्त्रण आमन्त्रण अधीष्ट संप्रश्न तथा प्रार्थना अर्थों में धातु से लिङ् होता है ।
धातोः कृत्, विधि- १६२. लोट् च २१९४ । षु	लोट् १६३	विध्यादि अर्थों में धातु से लोट् भी होता है ।
धातोः कृत्, लोट् १६३. प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च २८१७ प्रैषा-षु १६५		प्रैष अतिसर्ग प्राप्तकाल अर्थों में धातु से कृत्य प्रत्यय होते हैं तथा लोट् भी होता है ।
धातोः कृत्, प्रैषा-षु १६४. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके २८१८ ।	ऊ-के १६५	प्रैषादि गम्यमान रहने पर ऊर्ध्वमौहू- र्तिक अर्थ में लिङ् होता है ।
धातोः कृत्, प्रैषा-षु, १६५. स्मे लोट् २८१९ । ऊ-के	स्मे लोट् १६६	प्रैषादि गम्यमान रहने पर ऊर्ध्व मौहूर्तिक अर्थ में लोट् होता है, यदि उपपद में स्म हो ।
धातोः कृत्, स्मे लोट् १६६. अधीष्टे च २८२० ।		स्म के उपपद में रहने पर यदि अधीष्ट गम्यमान हो तो धातु से लोट् होता है ।
धातोः कृत् १६७. कालसमयवेलासु तुमुन् ३१७९ ।	का-सु १६८	काल समय वेला उपपद में हो तो धातु से तुमुन् होता है ।

धातोः कृत्, का-सु १६८. लिङ्यदि २८२१ ।

धातोः कृत् १६९. अर्हे कृत्यतृचश्च २८२२ ।

धातोः कृत् १७०. आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ३३११ । आव-योः १७१

धातोः कृत्, आ-योः १७१. कृत्याश्च ३३१२ ।

धातोः कृत्, कृत्याः १७२. शकि लिङ् च २८२३ ।

धातोः कृत् १७३. आशिषि लिङ्लोटौ २१९५ ।

धातोः कृत्, आशिषि १७४. क्तिक्तौ च संज्ञायाम् ३३१३ ।

धातोः कृत् १७५. माङि लुङ् २२१९

धातोः कृत्, माङि १७६. स्मोत्तरे लङ् च २२२० ।।
लुङ्

कालादि अर्थों में यदि यत् शब्द उपपद में हो तो लिङ् होता है । अर्ह यदि वाच्य या गम्यमान हो तो कृत्य तृच् तथा लिङ् होते हैं । यदि अवश्यभाव अथवा आधमर्ण्य वाच्य हो तो धातु से णिनि प्रत्यय होता है ।

कृत्याः १७२

आवश्यक और आधमर्ण्य में ही धातु से कृत्य प्रत्यय होते हैं । शक्नोति अर्थ को बताने के लिये यदि धातु का प्रयोग हो तो कृत्य-प्रत्यय और लिङ् प्रयुक्त होता है ।

आशिषि १७४

आशीः विशिष्ट अर्थ में विद्यमान धातु से लिङ् और लोट् होते हैं । आशीः अर्थ में यदि संज्ञा गम्यमान हो तो क्तिच् और क्त प्रत्यय होते हैं ।

माङि लुङ् १७६

माङ् उपपद रहने पर धातु से लुङ् होता है । उपपद में माङ् हो और इसके बाद स्म हो तो धातु से लङ् और लुङ् दोनों होते हैं ।

उणादय इडो निवासव्यधजपोरपघन इच्छा
हलश्च वोताप्योर्विधिषोडश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

लकारार्थनिर्देशः

धातोः कृत् १. धातुसंबन्धे प्रत्ययाः २८२४ ।

धा-न्धे ६

धातोः कृत्, धा-न्धे २. क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च लोट्-मोः ३
तद्ध्वमोः २८२५ ।

धात्वर्थों के सम्बन्ध में अयथा-कालोक्त प्रत्यय भी साधु होते हैं । समभिहार विशिष्ट क्रियावचन धातु से सभी कालों में लोट् होता है और उस लोट् में केवल हि और स्व होता है । लोट् के त और ध्वम् में यह नियम विकल्प से होता है ।

धातोः कृत्, धा-न्धे, ३. समुच्चयेऽन्यतरस्याम् २८२६ ।
लोट्-मोः

धातोः कृत्, धा-न्धे ४. यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् २८२७ । अनु-गः ५

धातोः कृत्, धा-न्धे, ५. समुच्चये सामान्यवचनस्य २८२८ ।
अनु-गः

धातोः कृत्, धा-न्धे ६. छन्दसि लुङ्लिट् ३४२३ । छन्दसि १७

धातोः कृत्, छन्दसि ७. लिङर्थे लेट् ३४२४ । लेट् ८

धातोः कृत्, छन्दसि, ८. उपसवादाशङ्कयोश्च ३४३१ ।
लेट्

तुमर्थ प्रत्ययः

धातोः कृत्, छन्दसि ९. तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै- तुमर्थे १३
कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ३४३६ ।

धातोः कृत्, छन्दसि, १०. प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ३४३७ ।
तुमर्थे

धातोः कृत्, छन्दसि, ११. द्यो विख्ये च ३४३८ ।

तुमर्थे

धातोः कृत्, छन्दसि, १२. शकि णमुल्कमुलौ ३४३९ ।

तुमर्थे

धातोः कृत्, छन्दसि, १३. ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ३४४० ।

तुमर्थे

धातोः कृत्, छन्दसि १४. कृत्यार्थे तवैकेकेन्यत्वनः ३४४१ । कृत्यार्थे १५

धातोः कृत्, छन्दसि, १५. अवचक्षे च ३४४२ ।

कृत्यार्थे

समुच्चयीयमान क्रियाविशिष्ट धातु से सभी कालों में लोट् होता है और उस लोट् में केवल हि स्व होता है । यह भी नियम त ध्वम् के यहाँ विकल्प से होता है ।

पूर्वकृत लोट् के विधान में यथा-विधि अनुप्रयोग होता है ।

समुच्चय वाले लोट् के विधान में सामान्यवचन धातु का अनुप्रयोग होता है ।

वेद में धात्वर्थसम्बन्ध में सभी कालों में लुङ् लट् लिट् होते हैं ।

वेद में लिङ् के अर्थ में लेट् भी होता है ।

उपसंवाद और आशङ्का गम्यमान हो तो वेद में लेट् होता है ।

वेद में तुमुन् के अर्थ में धातु से से सेन् असे असेन् कसे कसेन् अध्यै अध्यैन् कध्यै कध्यैन् शध्यै शध्यैन् तवै तवेङ् तवेन् प्रत्यय होते हैं । तुमर्थ के विषय में वेद में प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै शब्द निपातित होते हैं ।

वेद में तुमर्थ में ही द्यो विख्ये निपातित होते हैं ।

शक्ल धातु उपपद में हो तो तुमर्थ में वेद में णमुल् कमुल् होते हैं ।

ईश्वरशब्द उपपद में हो तुमर्थ में वेद में तोसुन् कसुन् होते हैं ।

वेद में कृत्यार्थ (भावकर्म) में तवै केन् केन्य त्वन् प्रत्यय होते हैं ।

वेद में कृत्यार्थ में अवपूर्वक चक्षिङ् से एश् निपातित होता है ।

धातोः कृत्, छन्दसि १६. भावलक्षणे स्थेणकृज्वदिचरिहुतमिजनि- भा-णे १७
भ्यस्तोसुन् ३४४३ ।

धातोः कृत्, छन्दसि, १७. सुपिबृदोः कसुन् ३४४४ ।
भा-णे

क्त्वाप्रत्ययः

धातोः कृत् १८. अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा क्त्वा २४
३३१६ ।

धातोः कृत्, क्त्वा १९. उदीचां माडो व्यतीहारे ३३१७ ।

धातोः कृत्, क्त्वा २०. परावरयोगे च ३३१९ ॥ १ ॥

धातोः कृत्, क्त्वा २१. समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ३३२० । स-ले २६

धातोः कृत्, क्त्वा, २२. आभीक्ष्ण्ये णमुल्च ३३४३ । आ-ये २३
स-ले णमुल् २४

धातोः कृत्, क्त्वा, २३. न यद्यनाकाङ्क्षे ३३४४ ।
स-ले, आ० णमुल्

धातोः कृत्, क्त्वा, २४. विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु ३३४५ ।
स-ले, णमुल्

धातोः कृत्, स-ले २५. कर्मण्याक्रोशे कृजः खमुज् ३३४६ । कृजः २८

णमुल् प्रत्ययः

धातोः कृत्, कृजः, २६. स्वादुमि णमुल् ३३४७ । णमुल् ६४
स-ले

धातोः कृत्, कृजः, २७. अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धाप्रयोगश्चेत् सिद्ध-गः २८
णमुल् ३३४८ ।

वेद में तुमर्थ में भावलक्षण में
वर्तमान स्था इण् कृज् वदि चरि
हु तमि जनि धातुओं से तोसुन्
प्रत्यय होता है ।

तुमर्थ में वेद में भावलक्षण में
वर्तमान सृप् तृद् धातु से कसुन्
प्रत्यय होता है ।

प्राचीन आचार्यों के मत में प्रतिषे-
धार्थक अलं खलु का यदि प्रयोग
हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय होता
है ।

व्यतिहार में माड् धातु से क्त्वा
होता है, उदीच्यों के मत में ।

पर से पूर्व का और अवर से पर
का योग हो तो धातु से क्त्वा
प्रत्यय होता है ।

समानकर्तृक दो धात्वर्थों में पूर्व-
काल में वर्तमान धातु से क्त्वा
प्रत्यय होता है ।

आभीक्ष्ण्य में णमुल् तथा क्त्वा
दोनों होते हैं ।

यत् शब्द उपपद में हो और
अनाकाङ्क्ष वाच्य हो तो क्त्वा णमुल्
दोनों नहीं होते हैं ।

अग्रे प्रथम पूर्व उपपद में हों तो
पूर्वकाल में वर्तमान धातु से क्त्वा
णमुल् विकल्प से होते हैं ।

आक्रोश गम्यमान हो और कर्म
उपपद में हो तो कृ धातु से खमुज्
होता है ।

स्वादु अर्थक उपपद में हो कृ धातु
से णमुल् होता है ।

अन्यथा एवं कथम् इत्थम् उपपद
में हो और सिद्धाप्रयोग हो तो कृ
धातु से णमुल् प्रत्यय होता है ।

धातोः कृत्, कृजः, २८. यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ३३४९ ।
णमुल्, सिद्ध-गः

धातोः कृत्, णमुल् २९. कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ३३५० । कर्मणि ३६

धातोः कृत्, कर्मणि, ३०. यावति विन्दजीवोः ३३५१ ।

णमुल्

धातोः कृत्, कर्मणि, ३१. चर्मोदरयोः पूरेः ३३५२ ।

पूरेः ३२

णमुल्

धातोः कृत्, कर्मणि, ३२. वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् वर्ष-णे ३३
णमुल्, पूरेः ३३५३ ।

धातोः कृत्, कर्मणि, ३३. चले क्लोपेः ३३५४ ।

णमुल्, वर्ष-णे

धातोः कृत्, कर्मणि, ३४. निमूलसमूलयोः कषः ३३५५ ।

णमुल्

धातोः कृत्, कर्मणि, ३५. शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ३३५६ ।

णमुल्

धातोः कृत्, कर्मणि, ३६. समूलाकृतजीवेषु हन्कृग्रहः ३३५७ ।

णमुल्

धातोः कृत्, णमुल् ३७. करणे हनः ३३५८ ।

करणे ४०

धातोः कृत्, णमुल्, ३८. स्नेहने पिषः ३३५९ ।

करणे

धातोः कृत्, णमुल्, ३९. हस्ते वर्तिग्रहोः ३३६० ।

करणे

धातोः कृत्, णमुल्, ४०. स्वे पुषः ३३६१ ।

॥ २ ॥

करणे

असूयाप्रतिवचन गम्यमान हो और
यथा तथा उपपद में हो तो कृ धातु
से णमुल् होता है ।

कर्म उपपद में हो तो साकल्य वि-
शिष्ट अर्थ में दृश् विद् धातु से
णमुल् होता है ।

यावत् शब्द उपपद में हो तो विदि
और जीव् धातु से णमुल् होता है ।
चर्म और उदर कर्मोपपद हों तो
पूरि से णमुल् होता है ।

पूरि से णमुल् होता है और ऊ का
विकल्प से लोप होता है, यदि
समुदाय से वर्षा के प्रमाण की इयत्ता
जानी जाय ।

वस्त्रार्थक कर्म उपपद में हो तो
ण्यन्त कृयी धातु से णमुल् होता है
यदि वर्षा के प्रमाण की इयत्ता
हो ।

निमूल समूल उपपद में हों तो कष
धातु से णमुल् होता है ।

कर्मवाची शुष्क चूर्ण रूक्ष उपपद
में हों तो पिष् से णमुल् होता है ।
कर्मवाचक समूल अकृत जीव यदि
उपपद में हों तो क्रमशः हन् कृज्
ग्रह धातु से णमुल् प्रत्यय होता
है ।

करणोपपद में हन् धातु से णमुल्
होता है ।

स्नेहनवाची करण के उपपद में रहने
पर पिष् से णमुल् होता है ।

हस्तवाची करणोपपद में ण्यन्त वृत्
तथा ग्रह से णमुल् होता है ।

स्ववाची करणोपपद में पुष् से णमुल्
होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् ४१. अधिकरणे बन्धः ३३६२ ।

बन्धः ४२

अधिकरणवाची उपपद में हो तो बन्ध से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, ४२. संज्ञायाम् ३३६३ ।

बन्धः

संज्ञा में बन्ध धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् ४३. कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ३३६४ । कर्त्रोः ४५

कर्तृवाची जीव और पुरुष यदि उपपद में हो तो क्रमशः नश और वह धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्त्रोः, ४४. ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ३३६५ ।

णमुल्

कर्तृवाची ऊर्ध्व उपपद में हो तो शुष् और पूर से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, कर्त्रोः, ४५. उपमाने कर्मणि च ३३६६ ।

णमुल्

कर्ता अथवा उपमान कर्म उपपद में हो तो धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् ४६. कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ३३६७ ।

३४वें से ४५वें सूत्र तक जिससे जैसे णमुल् कहा गया है वैसा ही होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् ४७. उपदंशस्तृतीयायाम् ३३६८ ।

तृतीयायां ५१

उपपूर्वक दंश धातु से णमुल् होता है, यदि तृतीयान्त उपपद हो ।

धातोः कृत्, तृ-यां, ४८. हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम् ३३६९

णमुल्

तृतीयान्त उपपद रहने पर अनु-प्रयोग धातु के समानकर्मक हिंसार्थक धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, तृ-यां, ४९. सप्तम्यां चोपपीडरुधकर्षः ३३७० । सप्तम्यां ५१

णमुल्

उपपूर्वक पीड रुध कर्ष धातुओं से सप्तम्यन्त उपपद रहने पर अथवा तृतीयान्त उपपद रहने पर णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, तृ-यां, ५०. समासत्तौ ३३७१ ।

णमुल्, सप्तम्यां

यदि समासत्ति गम्यमान हो तो तृतीया अथवा सप्तमी के उपपद में रहने पर धातु से णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, तृ-यां, ५१. प्रमाणे च ३३७२ ।

णमुल्, सप्तम्यां

प्रमाण गम्यमान हो उपपद में तृतीया सप्तमी हो तो णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल् ५२. अपादाने परीप्सायाम् ३३७३ ।

परीप्सायां ५३

परीप्सा गम्यमान हो उपपद में अपादान हो तो णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, ५३. द्वितीयायां च ३३७४ ।

परीप्सायां

द्वि-यां ५८

द्वितीया उपपद में हो परीप्सा गम्यमान हो तो णमुल् होता है ।

धातोः कृत्, णमुल्, ५४. स्वाङ्गेऽध्रुवे ३३७५ ।

स्वाङ्गे ५५

अध्रुव स्वाङ्गवाची द्वितीयान्त उपपद में हो तो धातु से णमुल् होता है ।

द्वितीयायां

धातोः कृत्, स्वाङ्गे, ५५. परिक्लिश्यमाने च ३३७७ ।
णमुल्, द्वितीयायां

धातोः कृत्, णमुल्, ५६. विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमा-
द्वितीयायां नयोः ३३७८ ।

धातोः कृत्, णमुल्, ५७. अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ३३७९
द्वितीयायां

धातोः कृत्, णमुल्, ५८. नाम्न्यादिशिग्रहोः ३३८० ।
द्वितीयायां

क्त्वाणमुल् प्रत्ययः

धातोः कृत्, णमुल् ५९. अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृजः क्त्वा- कृजः ६०
णमुलौ ३३८१ । क्त्वा-लौ ६४

धातोः कृत्, णमुल्, ६०. तिर्यच्यपवर्गे ३३८२ ॥ ३ ॥
क्त्वा-लौ, कृजः

धातोः कृत्, णमुल्, ६१. स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ३३८३ । कृभ्वोः ६२
क्त्वा-लौ

धातोः कृत्, णमुल्, ६२. नाधार्थप्रत्यये च्यर्थे ३३८४ ।
क्त्वा-लौ, कृभ्वोः

धातोः कृत्, णमुल्, ६३. तूष्णीमि भुवः ३३८५ । भुवः ६४
क्त्वा-लौ

धातोः कृत्, णमुल्, ६४. अन्वच्यानुलोम्ये ३३८६ ।
क्त्वा-लौ, भुवः

परिक्लिश्यमान स्वाङ्गवाची द्विती-
यान्त उपपद में हो तो धातु से
णमुल् होता है ।

यदि व्याप्यमान और आसेव्यमान
अर्थ गम्यमान हो तो विश् पत् पद्
और स्कदि धातु से णमुल् होता
है, द्वितीयान्त उपपद में रहे तो ।

क्रियान्तर में वर्तमान अस् तृष् धातु
से णमुल् होता है यदि द्वितीयान्त
उपपद हो और वह कालवाची हो ।
द्वितीयान्त नाम उपपद में हो तो
आदिश् और ग्रह से णमुल् होता
है ।

अव्यय उपपद में हो अयथाभिप्रे-
ताख्यान गम्यमान हो तो कृ धातु
से क्त्वा और णमुल् दोनों होते
हैं ।

यदि अपवर्ग गम्यमान हो और ति-
र्यक् शब्द उपपद में हो तो कृ
धातु से क्त्वा और णमुल् दोनों
होते हैं ।

स्वाङ्गवाची तस् प्रत्यय यदि उपपद
में हो तो कृ और भू से क्त्वा और
णमुल् दोनों होते हैं ।

च्यर्थविषयक नाधार्थ प्रत्ययान्त
उपपद में हो तो कृ भू से क्त्वा
णमुल् होते हैं ।

तूष्णीम् उपपद में हो तो भू से
क्त्वा णमुल् होते हैं ।

अन्वक् शब्द उपपद में हो तो भू
से क्त्वा णमुल् होते हैं, यदि
आनुलोम्य हो ।

तुमुन् प्रत्ययः

धातोः कृत् ६५. शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्य- तुमुन् ६६
थेषु तुमुन् ३१७७ ।

धातोः कृत्, तुमुन् ६६. पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु ३१७८ ।

कृत्प्रत्ययार्थः

धातोः कृत् ६७. कर्तरि कृत् २८३२ । कर्तरि ७०

धातोः कृत्, कर्तरि ६८. भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्ला-
व्यापात्या वा २८९४ ।

धातोः कृत्, कर्तरि ६९. लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः २९५२

धातोः कृत्, कर्तरि ७०. तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः २८३३ ।

धातोः कृत् ७१. आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ३०५३ । कर्तरि ७२ ।

धातोः कृत्, कर्तरि ७२. गत्यर्थकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजन-
रुहजीर्यतिभ्यश्च ३०८६ ।

धातोः कृत् ७३. दाशगोघ्नौ संप्रदाने ३१७२ ।

धातोः कृत् ७४. भीमादयोऽपादाने ३१७३ ।

(४४) भीम भीष्म भयानक वहचर (वह चर)
प्रस्कन्दन प्रतपन (प्रपतन) समुद्र स्तुव स्रक् वृष्टि
(दृष्टि) रक्षः संकसुक (शङ्कु सुक) मूर्ख खलति
—आकृतिगणोऽयम् ॥ इति भीमादिः ॥

धातोः कृत् ७५. ताभ्यामन्यत्रोणादयः ३१७४ ।

शक् धृष ज्ञा ग्लै घट रभलभक्रम
सह अर्ह उपपद में हों एवम्
अस्त्यर्थ में भी धातुमात्र से तुमुन्
होता है ।

पर्याप्तिवचन अलमर्थ उपपद में
हो तो धातु से तुमुन् प्रत्यय होता
है ।

कृत् संज्ञक प्रत्यय कर्ता कारक मे
होते हैं ।

भव्य गेय प्रवचनीय उपस्थानीय
जन्य आप्लाव्य आपात्य कर्ता में
विकल्प से निपातित होते हैं ।
सकर्मक धातुओं से लकार कर्म
और कर्ता में होते हैं तथा अकर्मक
धातुओं से भाव और कर्ता में
होते हैं ।

कृत्य क्त और खलर्थ प्रत्यय भाव
और कर्म में होते हैं ।

आदि कर्म में जो क्त है वह कर्ता
तथा भाव एवं कर्म में होता है ।
गत्यर्थ अकर्मक श्लिष शीङ् स्था
आस वस जन रुह तथा जृ धातुओं
से क्त कर्ता एवं भाव कर्म में होते
हैं ।

सम्प्रदान कारक में दाश और गोघ्न
निपातित होते हैं ।

भीम आदि शब्द अपादान में
निपातित होते हैं ।

सम्प्रदान और अपादान से अतिरिक्त
कारकों में उणादि प्रत्यय होते हैं ।

धातोः कृत्	७६. क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसाना- र्थेभ्यः ३०८७ ।		ध्रौव्य गति प्रत्यवसानार्थक धातुओं से विहित क्त अधिकरण में तथा यथाप्राप्त भी होता है ।
	लादेशः		
धातोः कृत्	७७. लस्य २१५३ ।	लस्य ११७	‘लस्य’ का अधिकार अध्यायान्त तक होगा ।
धातोः, लस्य	७८. तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासा- थांध्वमिड्वहिमहिङ् २१५४ ।		‘ल’ के स्थान में तिप् तस् झि, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस् तथा त आताम् झ, थास् आथाम् ध्वम्, इट् वहि महिङ् आदेश होते हैं ।
	लकारादेशः		
धातोः, लस्य	७९. टित आत्मनेपदानां टेरे २२३३ ।	टितः ८०	आत्मनेपद में टित् लकार के टि का ए हो जाता है ।
धातोः, लस्य, टितः ८०.	थासः से २२३६ ॥ ४ ॥		टित् लकार के थास् को से आदेश हो जाता है ।
धातोः, लस्य	८१. लिटस्तझयोरेशिरेच् २२४१ ।	लिटः ८२	लिडादेश त को एश् और झ को इरेच् हो जाता है ।
धातोः, लस्य, लिटः ८२.	परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः पर-नां ८४ २१७३ । ण-वमाः ८४		परस्मैपद में लिडादेश को क्रमशः णल् अतुस् उस् थल् अथुस् अ, णल् व म आदेश होते हैं ।
धातोः, लस्य, पर- ८३.	विदो लटो वा २४६४ ।	लटः ८४	विद् धातु के लडादेश को विकल्प से णल् आदि होते हैं, परस्मैपद में ।
नां, ण-वमाः			
धातोः, लस्य, पर- ८४.	ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः २४५०		परस्मैपद में ब्रू धातु के लट् के प्रथम पाँच को णल् आदि विकल्प से होते हैं तथा ब्रू को आह आदेश हो जाता है ।
नां, ण-वमाः, लटः			
धातोः, लस्य, लोटः ८५.	लोढो लङ्वत् २१९८ ।	लोटः ९३	लोट् को लङ्वत् कार्य होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः ८६.	एरुः २१९६ ।		लोडादेश इकार को उकार आदेश होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः ८७.	सेर्हपिच्च २२०१ ।	सेर्हपिच्च ८८	लोट् के सि को हि होता है और वह अपित् होता है ।
धातोः, लस्य, लोटः ८८.	वा छन्दसि ३५५२ ।		वेद में यह हि विकल्प से अपित् होता है ।
सेर्हपिच्च			

धातोः, लस्य, लोटः ८९. मेर्निः २२०३ ।	
धातोः, लस्य, लोटः ९०. आमेतः २२५१ ।	एतः ९१
धातोः, लस्य, लोटः ९१. सवाभ्यां वामौ २२५२ ।	
एतः	
धातोः, लस्य, लोटः ९२. आङुत्तमस्य पिच्च २२०४ ।	उत्तमस्य ९३
धातोः, लस्य, लोटः, ९३. एत ऐ २२५३ ।	
उत्तमस्य	
धातोः, लस्य ९४. लेटोऽडाटौ ३४२७ ।	लेटः ९८
धातोः, लस्य, लेटः ९५. आत ऐ ३४२९ ।	ऐ ९६
धातोः, लस्य, लेटः, ९६. वैतोऽन्यत्र ३४३० ।	वा ९८
ऐ	
धातोः, लस्य, लेटः, ९७. इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३४२६ ।	लोपः १००
वा	
धातोः, लस्य, लेटः, ९८. स उत्तमस्य ३४२८ ।	स-मस्य ९९
वा, लोपः	
धातोः, लस्य, स- ९९. नित्यं डितः २२०० ।	डितः १०१
य, लोपः	नित्यम् १००
धातोः, लस्य, डितः, १००. इतश्च २२०७	॥ ५ ॥
नित्यः, लोपः	
धातोः, लस्य, डितः १०१. तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः २१९९ ।	
धातोः, लस्य १०२. लिङः सीयुट् २२५५ ।	लिङः १०८
धातोः, लस्य, लिङः १०३. यासुट्परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च २२०९ या-तो १०४	
धातोः, लस्य, लिङः, १०४. किदाशिषि २२१६ ।	
या-त्तः	

लोट् के मि को नि होता है ।
 लोट् के एकार को आम् होता है ।
 स और व से परे लोट् के एकार को क्रमशः व और म होता है ।
 लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष को आट् आगम होता है और वह पित् होता है
 लोट् सम्बन्धी उत्तम के ए को ऐ होता है ।
 लेट् में पर्यायेण अट् और आट् आगम होता है ।
 लेट् सम्बन्धी आकार को ऐकार आदेश होता है ।
 'आत ऐ' से अतिरिक्त स्थल पर लेट् सम्बन्धी एकार को ऐकार आदेश विकल्प से होता है ।
 परस्मैपद में लेट् सम्बन्धी इकार का विकल्प से लोप होता है ।
 लेट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष सम्बन्धी स का विकल्प से लोप होता है ।
 डित् लकार में उत्तमपुरुष सम्बन्धी स का नित्य लोप होता है ।
 परस्मैपद में डित् लकार सम्बन्धी इ का नित्य लोप होता है ।
 डित् लकार सम्बन्धी तस् थस् थ और मिप् को क्रमशः ताम् तम् त और अम् होते हैं ।
 (आत्मनेपद में) लिङ् को सीयुट् का आगम होता है ।
 परस्मैपद में लिङ् को यासुट् का आगम होता है, वह उदात्त और डित् होता है ।
 आशीर्लिङ् में यासुट् होता है, वह उदात्त और कित् होता है ।

धातोः, लस्य, लिङ्: १०५. झस्य रन् २२५६ ।

लिङ् के झ को रन् आदेश होता है ।

धातोः, लस्य, लिङ्: १०६. इटोऽत् २२५७ ।

लिङादेश इट् को अत् आदेश होता है ।

धातोः, लस्य, लिङ्: १०७. सुट् तिथोः २२१० ।

लिङ् के त थ को सुट् का आगम होता है ।

धातोः, लस्य, लिङ्: १०८. झेर्जुस् २२१३ ।

झेर्जुस् ११२

लिङ् के झि को जुस् आदेश होता है ।

धातोः, लस्य, झेर्जुस् १०९. सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च २२२६ ।

सिच्, अभ्यस्तसंज्ञक तथा विद् के उत्तरवर्ती डित्सम्बन्धी झि को जुस् आदेश होता है ।

धातोः, लस्य, झेर्जुस् ११०. आतः २२२७ ।

आतः १११

सिच् लुक् होने पर आदन्त के बाद ही झि को जुस् होता है ।

धातोः, लस्य, झेर्जुस् १११. लङ्: शाकटायनस्यैव २४६३ ।
आतः

लङ्:-स्य ११२

आदन्त से परे लङ् के झि को शाकटायन के मत में जुस् होता है ।

धातोः, लस्य, झेर्जुस् ११२. द्विषश्च २४३५ ।

द्विष् से परे लङ् के झि को विकल्प से जुस् होता है ।

ल-स्य

लादेश संज्ञा

धातोः, लस्य ११३. तिङ्शित्सार्वधातुकम् २१६६ ।

तिङ् शित् प्रत्यय सार्वधातुक कहलाते हैं ।

धातोः, लस्य ११४. आर्धधातुकं शेषः २१८७ ।

आर्ध-कम् ११७

तिङ् शित् से भिन्न प्रत्यय आर्द्ध-धातुक कहलाते हैं ।

धातोः, लस्य, आ- ११५. लिट् च २१७२ ।

कम्

धातोः, लस्य, आ- ११६. लिङाशिषि २२१५ ।

लिङादेश को भी आर्द्धधातुक संज्ञा होती है ।

कम्

धातोः, लस्य, आ- ११७. छन्दस्युभयथा ३४३५ ।

आशीर्लिङ् भी आर्द्धधातुकसंज्ञक होता है ।

कम्

वेद में दोनों प्रकार की प्रवृत्ति है ।

धातुसंबन्धे समानाधिकरणे स्वाङ्गे

लिटस्तस्थस्थमिपां सप्तदश ।।

इति-पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य चतुर्थः

पादः अध्यायश्च ।

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः

सुप् प्रत्ययः

१. ड्याप्प्रातिपदिकात् १८२ ।

ड्या-त् ५.४.- ड्याप्प्रातिपदिकात् अधिकार सूत्र
१६० है ।२. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि-
भ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् १८३ ।डी आप् और प्रातिपदिक से सु
आदि प्रत्यय होते हैं ।

स्त्रीप्रत्ययः

ड्या-त्

३. स्त्रियाम् ४५३ ।

स्त्रियाम् ८१

स्त्रियाम् अधिकार सूत्र है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्

४. अजाद्यतष्टाप् ४५४ ।

अजादि प्रातिपदिक तथा अकारान्त
प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा
में टाप् होता है ।

(४) अजा एडका कोकिला चटका अश्वा मूषिका
बाला होढा पाका वत्सा मन्दा बिलाता पूर्वापिहाणा
(पूर्वापहाणा) अपरापहाणा । ('संभ्रस्त्राजिनश-
णपिण्डेभ्यः फलात्' ३७) ('सदच्काण्डप्रान्त-
शतैकेभ्यः पुष्पात्' ३८) ('शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः'
३९) कुञ्चा उष्णिहा देवविशा । ज्येष्ठा कनिष्ठा
मध्यमा पुंयोगेऽपि । (मूलान्नजः' ४०) दंष्ट्रा ।
('त्रिफला त्र्यनीका द्विगौ' ४१)—एतेऽजादयः ।

* शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः ।

स्त्रीप्रत्यये डीप् प्रत्ययः

ड्या-त्, स्त्रियाम्

५. ऋन्नेभ्यो डीप् ३०६ ।

डीप् २४

ऋकारान्त नकारान्त प्रातिपदिक से
स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् होता
है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्

६. उगितश्च ४५५ ।

डीप्

* धातोरुगितः प्रतिषेधः ।

* अञ्चतेश्चोपसंख्यानम् ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्

७. वनो र च ४५६ ।

डीप्

* वनो न हश् इति वक्तव्यम् ।

* बहुलं छन्दसि ।

* बहुव्रीहौ वा ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्

८. पादोऽन्यतरस्याम् ४५७ ।

डीप्

पादः ९

पादन्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्वविवक्षा
में विकल्प से डीप् होता है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ९. टाबृचि ४५८ ।
डीप्, पादः

यदि ऋक् वाच्य हो तो पादन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में टाप् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १०. न षट् स्वस्त्रादिभ्यः ३०८ । न १२
डीप्

षट्संज्ञक और स्वस् आदि से स्त्रीप्रत्यय नहीं होता है ।

(४६) स्वसृदुहितृ ननान्द यातृ मातृ तिसृ चतसृ
इति स्वस्त्रादिः ।।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ११. मनः ४५९ ।

मनः १३

मन्नन्त प्रातिपदिक से डीप् प्रत्यय नहीं होता है ।

डीप्, न

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १२. अनो बहुव्रीहेः ४६० ।

अ-हेः १३

अन्नन्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में डीप् नहीं होता है ।

डीप्, न, मनः

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १३. डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ४६१ ।

डीप्, अ-हेः, मनः

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १४. अनुपसर्जनात् ४६९ ।

अनुपसर्जनात्-

अनुपसर्जनात् यह अधिकार सूत्र है ।

डीप्

८१

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १५. टिङ्गुणञ्द्वयसज्जघ्नञ्मात्रच्छयष्टवठञ्क-
अनुप-त्, डीप् ज्ववरपः ४७० ।

अनुपसर्जन टित् ढ अण् आदि अन्त वाले अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।

* नञ्जनञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम् ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १६. यजश्च ४७१ ।

यजः १८

यजन्त प्रातिपदिक से भी स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।

अनुप-त्, डीप् * आपत्यग्रहणं कर्तव्यम् ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १७. प्राचां ष्फ तद्धितः ४७३ ।

ष्फः १९

प्राच्य आचार्यों के मत में यजन्त से स्त्रीलिङ्ग में ष्फ प्रत्यय होता है और वह तद्धित होता है ।

अनुप-त्, डीप्, यजः * आसुरेरुपसंख्यानम् ।

लोहितादि कतन्त यजन्त से नित्य ष्फ होता है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १८. सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ४७६ ।

अनुप-त्, डीप्, य-

जः, ष्फः

ड्या-त्, स्त्रियाम्, १९. कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ४७७ ।

अनुप-त्, डीप्, ष्फः

कौरव्य माण्डूक्य शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ष्फ होता है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, २०. वयसि प्रथमे ४७८ ।

॥१॥

प्रथमवयोवाची अदन्त से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।

अनुप-त्, डीप् * वयस्यचरम इति वाच्यम् ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, २१. द्विगोः ४७९ ।

द्विगोः २४

द्विगु संज्ञक अदन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।

अनुप-त्, डीप्

ड्या-त्, स्त्रियाम्, २२. अपरिमाणविस्ताचितकम्बल्येभ्यो न न-लुकि २४

अनुप-त्, डीप्, द्विगोः तद्धितलुकि ४८० ।

अपरिमाणान्त द्विगु विस्त अचित कम्बल्यान्त से डीप् नहीं होता है यदि तद्धित लुक् हो ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २३. काण्डान्तात्क्षेत्रे ४८१ ।

अनुप-त्, डीप्, द्विगोः,

न-लुकि

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २४. पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ४८२ ।

अनुप-त्, डीप्, द्विगोः,

न-लुकि

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २५. बहुव्रीहेरुधसो डीष् ४८४ ।

अनुप-त्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २६. संख्याव्ययादेर्डीप् ४८५

अनुप-त्, बहु-सो

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २७. दामहायनान्ताच्च ४८६ ।

अनुप-त्, डीप्, सं०, * वयोवाचकस्यैव हायनशब्दस्य डीप् णत्वं

बहु-सो

चेष्यते ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २८. अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ४८७ । अन-नो २९

अनु०-त्, डीप्,

बहु-सो

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, २९. नित्यं संज्ञाच्छन्दसोः ४८७ ।

अनु०-त्, डीप्, अ-

नो, बहु-सो

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३०. केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्थ-

अनु०-त्, डीप्, सं-

सो

कृतसुमङ्गलभेषजाच्च ४८८ ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३१. रात्रेश्चाजसौ ३४४५ ।

अनु०-त्, डीप्, सं- * अजसादिध्विति वक्तव्यम् ।

सो

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३२. अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ४८९ ।

अनु०-त्, डीप्, * अन्तर्वत्पतिवदिति गर्भधर्तृसंयोगे ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३३. पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ४९० ।

अनु०-त्, डीप्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३४. विभाषा सपूर्वस्य ४९१ ।

अनु०-त्, डीप्, नः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ३५. नित्यं सपत्न्यादिषु ४९२ ।

अनु०-त्, डीप्

काण्डान्त द्विगु से तद्धित लुक् होने पर यदि क्षेत्र वाच्य हो तो डीप् नहीं होता है ।

प्रमाण में पुरुषान्त द्विगु से तद्धित लुक् होने पर विकल्प से डीप् नहीं होता है ।

ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में डीष् होता है ।

संख्यादि अव्ययादि ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि से डीप् होता है ।

संख्यादि दामान्त हायनान्त बहुव्रीहि से डीप् होता है ।

उपधालोपी अन्नन्त बहुव्रीहि से विकल्प से डीप् होता है ।

संज्ञा और छन्द में उपधालोपी अन्नन्त बहुव्रीहि से नित्य डीप् होता है ।

संज्ञा और छन्द में केवल मामक आदि प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता है ।

जस् से अन्यत्र संज्ञा और छन्द में रात्रि शब्द से डीप् होता है ।

अन्तर्वत् और पतिवत् शब्द से डीप् तथा नुक् आगम होता है । पति शब्द को स्त्रीलिङ्ग में यदि यज्ञसंयोग हो तो नकार आदेश होता है ।

अनुपसर्जन सपूर्व पतिशब्दान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में नकारादेश होता है ।

सपत्नी आदि शब्दों में पति को नित्य ही नकारादेश होता है ।

बहु-सो २९

संख्यादेः २७

डीप् ३९

सं-सोः ३१

नः ३४

(४७) समान एक वीर पिण्डश्च (शिरी) भ्रातृ
भद्र पुत्र दासाच्छन्दसि ॥ इति समानादिः ॥

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ३६. पूतक्रतोरै च ४९३ ।

ऐ ३७

अनु०-त्, डीप्

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ३७. वृषाकप्यग्निकुसितकुसिदानामुदात्तः ४९४ उदात्तः ३८

अनु०-त्, डीप्, ऐ

पूतक्रतु से स्त्रीलिङ्ग में ऐकार
अन्तादेश और डीप् होता है ।

वृषाकपि आदि शब्दों को स्त्रीलिङ्ग
में उदात्त ऐकार अन्तादेश तथा डीप्
प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ३८. मनोरौ वा ४९५ ।

वा ३९

अनु०-त्, डीप्,

उदात्तः

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ३९. वर्णादिनुदात्तात्तोपधात्तो नः ४९६ ।

वर्ण-त्तात् ४०

अनु०-त्, डीप्, वा * असितपलितयोर्न ।

मनु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में डीप् होता
है तथा विकल्प से ऐकार औकार
उदात्त अन्तादेश होता है ।

अनुदात्त तकारोपध वर्णवाची शब्द
से स्त्रीलिङ्ग में डीप् तथा त को न
होता है ।

* छन्दसि क्रमेके ।

* पिशङ्गादुपसंख्यानम् ।

स्त्रीप्रत्ययेषु डीष् प्रत्ययः

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४०. अन्यतो डीष् ४९७ । ॥ २ ॥ डीष् ६५

अनु०-त्, वर्ण-त्

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४१. बिद्वौरादिभ्यश्च ४९८ ।

अनु०-त्, डीष्

तोपध से अतिरिक्त अनुदात्त वर्णवाची
शब्द से स्त्रीलिङ्ग में डीष् होता है ।
षित् प्रातिपदिक तथा गौर आदि से
स्त्रीलिङ्ग में डीष् होता है ।

(४८) गौर मत्स्य मनुष्य शृङ्ग पिङ्गल हय गवय
मुकय ऋष्य [पुट तूण] द्रुण द्रोण हरिण कोकण
(काकण) पटर उणक [आमाल] आमलक कुवल,
बिम्ब बदर फर्करक (कर्कर) तर्कर शर्कर पुष्कर
शिखण्ड सलद शष्कण्ड सनन्द सुषम सुषव अलिन्द
गडुल षण्डश आढक आनन्द आश्वत्थ सृपाट
आखक (आपच्चिक) शष्कुल सूर्य (सूर्म) शूर्प
सूच यूष (पूष) यूथ सूप मेथ वल्लक धातक
सल्लक मालक मालत साल्वक वेतस वृक्ष (वृस)
अतस [उभय] भृङ्ग महं मठ छेद पेश भेद श्वन्
तक्षन् अनडुही अनड्वाही । 'एषणः करणे' ४२ ।
देह देहल काकादन गवादन तेजन रजन लवण
औद्गाहमानि (आद्गाहमानि) गौतम (गोतम)
[पारक] अयस्थूण (अयःस्थूण) भौरिकि भौलिकि
भौलिङ्गि यान मेध आलम्बि आलजि आलब्धि
आलक्षि केवाल आपक आरट नट टोट नोट

मूलाट शातन [पोतन] पातन पाठन (पानठ)
 आस्तरण अधिकरण अधिकार अग्रहायणी
 (आग्रहायणी) प्रत्यवरोहिणी [सेचन] 'सुमङ्ग-
 लात्संज्ञायाम्' ४३ । अण्डर सुन्दर मण्डल मन्थर
 मङ्गल पट पिण्ड [षण्ड] उर्द गुर्द शम सूद औड
 (आर्द्र) हृद (हृद) पाण्ड [भाण्डल] भाण्ड
 (लोहाण्ड) कदर कन्दर कदल तरुण तलुन कल्माष
 बृहत् महत् (सोम) सौधर्म । 'रोहिणी नक्षत्रे' ४४ ।
 'रेवती नक्षत्रे' ४५ । विकल निष्कल पुष्कल ।
 'कटाच्छोणिवचने' ४६ । 'पिप्पल्यादयश्च' ४७ ।
 पिप्पली हरितकी (हरीतकी) कोशातकी शमी
 वरी शरी पृथिवी क्रोष्टु मातामह पितामह—इति
 गौरादिः ।।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४२. जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनी-
 अनु०-त्, डीष् लकुशकामुककबरादवृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमा-
 श्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुने-
 छाकेशवेशेषु ५०० ।
 * नीलादोषधौ प्राणिनि च ।
 * संज्ञायां वा ।

जानपद कुण्ड गोण स्थल भाज
 नाग काल नील कुश कामुक कबर
 शब्दों से वृत्ति अमत्र आवपन
 अकृत्रिमा श्राणा स्थौल्य वर्ण
 अनाच्छादन अयोविकार मैथुनेच्छा
 केशवेश अर्थ में क्रमशः डीष् होता
 है ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४३. शोणात्प्राचाम् ५०१ ।

अनु०-त्, डीष्

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४४. वोतो गुणवचनात् ५०२ ।

अनु०-त्, डीष् * गुणवचनात् डीबाधुदात्तार्थम् ।

* खरुसंयोगोपधात्र ।

ड्या-त्, स्त्रियाम्, ४५. बह्वादिभ्यश्च ५०३ ।

अनु०-त्, डीष्, वा

वा ४५

ब-च ४६

प्राच्य आचार्यों के मत में शोण से
 डीष् होता है ।

उकारान्त गुणवचन प्रातिपदिक से
 वैकल्पिक डीष् होता है ।

बहु आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में
 विकल्प से डीष् होता है ।

(४०) बहु पद्धति अञ्चति अङ्कति अंहति शकटि
 (शकति) । 'शक्तिः शस्त्रे' ४८ । शारि वारि राति
 राधि (शाधि) अहि कपि यष्टि मुनि । 'इतः ।
 प्राण्यङ्गात्' ४९ । 'कृदिकारादक्तिनः' ५० ।
 'सर्वतोऽक्तिन्नर्था-दित्येके' ५१ । चण्ड अराल कृपण
 कमल विकट विशाल विशङ्कट भरुज ध्वज । 'चन्द्र-
 भागान्नद्याम्' ५२ । (चन्द्रभागा नद्याम् । कल्याण
 उदार पुराण अहन् क्रोड नख खुर शिखा बाल

शफ गुद—आकृतिगणोऽयम् ।। तेन । भग गल
राग इत्यादि । इति वह्नादयः ।।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ४६. नित्यं छन्दसि ३४४६ ।

अनु०-त्, डीष्, ब-
च

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ४७. भुवश्च ३४४७ ।

अनु०-त्, डीष्,
छन्दसि

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ४८. पुंयोगादाख्यायाम् ५०४ ।

अनु०-त्, डीष् * पालकान्तात्र ।

* सूयद्विवतायां चाप् ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ४९. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययव-
अनु०-त्, डीष्, पुं- वनमातुलाचार्याणामानुक् ५०५ ।।

त् * हिमारण्ययोर्महत्त्वे ।

* यवाद्दोषे ।

* यवनाल्लिप्याम् ।

* मातुलोपाध्याययोरानुग्वा ।

* मुद्रलाच्छन्दसि लिच्च ।

* आचार्यादिणत्वं च ।

* अर्यक्षत्रियाभ्यां वा ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५०. क्रीतात्करणपूर्वात् ५०६ ।

अनु०-त्, डीष्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५१. क्तादल्पाख्यायाम् ५०७ ।

अनु०-त्, डीष्,

कर-त्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५२. बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ५०८ ।

अनु०-त्, डीष्, * जातान्तात्र ।

क्तात् * पाणिगृहीती भार्यायाम् ।

* बहुलं संज्ञाच्छन्दसोः ।

* अन्तोदात्तादबहुनञ्मुकालसुखादिपूर्वात् ।

* जातिपूर्वादिति वक्तव्यम् ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५३. अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ५०९ ।

अनु०-त्, डीष्,

क्तात्, बहु-त्

छन्दसि ४७

बहु आदि शब्दों से वेद में नित्य डीष् होता है ।

वेद में भू से नित्य डीष् होता है ।

पुं-त् ४९

पुरुषयोग के कारण जो शब्द स्त्रीलिङ्ग में आते हैं उनसे डीष् होता है, यदि आख्या हो ।

इन्द्र आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में डीष् और आनुक् आगम होता है ।

कर-त् ५१

करणपूर्व क्रीतशब्दान्त प्रातिपदिक से डीष् होता है ।

क्तात् ५३

अल्पाख्या में करणपूर्व क्तान्त प्रातिपदिक से डीष् होता है ।

बहु-त् ५३

अन्तोदात्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में डीष् होता है ।

वा ५५

अस्वाङ्ग पूर्वपद वाले क्तान्त अन्तोदात्त बहुव्रीहि से स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से डीष् होता है ।

ङ्यात्, स्त्रियाम्, ५४. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ५१० स्व-नात् ६०
अनु०-त्, डीष्, वा

असंयोगोपध उपसर्जन स्वाङ्ग
अन्तवाले अदन्त प्रातिपदिक से
स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से डीष् होता
है ।

नासिका आदि अन्तवाले प्रातिपदिक
से विकल्प से डीष् होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५५. नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ५११

अनु०-त्, डीष्, वा, * पुच्छाच्च ।

स्व-नात् * कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम् ।

* उपमानात्पक्षाच्च पुच्छाच्च ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५६. न क्रोडादिबह्वचः ५१२ ।

न ५८

अनु०-त्, डीष्,

स्व-नात्

क्रोड आदि अन्त वाले बह्वजन्त
प्रातिपदिक से डीष् नहीं होता है

(५०) क्रोड नख खुर गोखा उखा शिखा बाल
शप गुद—आकृतिगणोऽयम् ॥ इति क्रोडा-
दयः ॥

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५७. सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ५१३ ।

अनु०-त्, डीष्, न,

स्व-नात्

सह नञ् विद्यमान पूर्वक प्रातिपदिक
से डीष् नहीं होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५८. नखमुखात्संज्ञायाम् ५१४ ।

अनु०-त्, डीष्, न,

स्व-नात्

संज्ञा में नखमुखान्त प्रातिपदिक
से डीष् नहीं होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ५९. दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि ३४४८ ।

अनु०-त्, डीष्,

स्व-नात्

वेद में दीर्घजिह्वी निपातित होता
है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६०. दिक्पूर्वपदान्डीप् ५१५ । ॥ ३ ॥

अनु०-त्, डीष्,

स्व-नात्

दिक्पूर्वपद प्रातिपदिक से डीष् होता
है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६१. वाहः ५१६ ।

अनु०-त्, डीष्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६२. सख्यशिश्वीति भाषायाम् ५१७ ।

अनु०-त्, डीष्

वाहन्त प्रातिपदिक से डीष् होता
है ।

डीषन्त सखी और अशिश्वी शब्द
भाषा में निपातित होते हैं ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६३. जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ५१८ । जातेः ६४

अनु०-त्, डीष् * योपधप्रतिषेधे गवयहयमुकयमनुष्यमत्स्या-

नामप्रतिषेधः ।

जातिवाची वे प्रातिपदिक जो
स्त्रीलिङ्ग में ही नियत नहीं हैं तथा
अयोपध हैं उनसे स्त्रीलिङ्ग में डीष्
होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६४. पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ।

अनु०-त्, डीष्, ५१९ ।

जातेः * सदच्चाण्डप्रान्तशतैकेभ्यः पुष्पात्प्रतिषेधः ।

* संभस्त्राजिनशणापिण्डेभ्यः फलात् ।

* मूलान्नजः ।

* श्वेताच्च ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६५. इतो मनुष्यजातेः ५२० ।

अनु०-त्, डीष्

स्त्री प्रत्ययेषु ऊङ् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६६. ऊङुतः ५२१ ।

अनु०-त्, मनु-तेः * अप्राणिजातेश्चारज्ज्वादीनामुपसंख्यानम् ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६७. बाह्वन्तात्संज्ञायाम् ५२२ ।

अनु०-त्, ऊङ्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६८. पङ्गोश्च ५२३ ।

अनु०-त्, ऊङ् * श्वेशुरस्योकाराकारलोपश्च ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ६९. ऊरुत्तरपदादौपम्ये ५२४ ।

अनु०-त्, ऊङ्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७०. संहितशफलक्षणवामादेश्च ५२५ ।

अनु०-त्, ऊङ्, * सहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम् ।

उरू-त्

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७१. कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ३४४९ ।

अनु०-त्, ऊङ् * गुग्गुलुमधुजतुपतयालूनामिति वक्तव्यम् ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७२. संज्ञायाम् ५२६ ।

अनु०-त्, ऊङ्,

कद्रु-ल्वोः

स्त्रीप्रत्यययेषु डीन्प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७३. शार्ङ्गरवाद्यजो डीन् ५२७ ।

अनु०-त्

(५१) शार्ङ्गरव कापटव गौगुलव ब्राह्मण वैद
गौतम कामण्डलेय ब्राह्मणकृतेय (आनिचेय)
आनिधेय आशोकेय वात्स्यायन मौञ्जायन कैकस

पाक कर्ण आदि उत्तर पद वाले
जातिवाची प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग
में डीष् प्रत्यय होता है ।

मनु-तेः ६६

मनुष्यजातिवाची इकारान्त प्रातिपदिक
से स्त्रीलिङ्ग में डीष् प्रत्यय होता है ।

ऊङ् ७२

मनुष्यजातिवाची उकारान्त प्राति-
पदिक से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता
है, यदि वे अयोपध हों ।

संज्ञा में बाहुशब्दान्त प्रातिपदिक से
स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता है ।

पङ्गु शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् होता
है ।

ऊरू-दात् ७०

औपम्य गम्यमान होने पर पर ऊरूत्तर
पद प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ्
होता है ।

संहित शफ आदि शब्द पूर्व में हों
तथा उरू उत्तरपद में हों तो ऊङ्
प्रत्यय होता है ।

कद्रु-ल्वो ७२

कद्रु और कमण्डलु शब्द से स्त्रीलिङ्ग
में वेद में ऊङ् होता है ।

संज्ञा में कद्रु कमण्डलु शब्द से
स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् प्रत्यय होता है ।

शार्ङ्गरव आदि शब्दों से तथा अञ्-
सम्बन्धी अजन्त प्रातिपदिक से
स्त्रीलिङ्ग में डीन् प्रत्यय होता है ।

काप्य (काव्य) शैव्य एहि पर्येहि आश्मरथ्य औदपान
अराल चण्डाल वतण्ड 'भोगवद्भौरिमतोः संज्ञायां
घादिषु नित्यं ह्रस्वार्थम्' ५३ । 'नृनरयोर्वृद्धिश्च'
५४ । इति शार्ङ्गरवादिः ॥

स्त्रीप्रत्ययेषु चाप् प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७४. यङश्चाप् ५२८ ।
अनु०-त् * षाद्यञश्चाप् वक्तव्यः ।
ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७५. आवट्याच्च ५२९ ।
अनु०-त्, चाप्

चाप् ७५

यङन्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में
चाप् प्रत्यय होता है ।
आवट्य शब्द से स्त्रीलिङ्ग में चाप्
प्रत्यय होता है ।

तद्धिताधिकारः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७६. तद्धिताः ५३० ।
अनु०-त्

तद्धिताः ५/४/ यह अधिकार सूत्र है ।
१६०

स्त्रीप्रत्ययेषु तिप्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७७. यूनस्तिः ५३१ ।
अनु०-त्, तद्धिताः

युवन् इस प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग
में ति प्रत्यय होता है और वह
तद्धित संज्ञक होता है ।

स्त्रीप्रत्ययेषु ष्यङ्प्रत्ययः

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७८. अणिजोरनार्थयोग्रूपोत्तमयोः ष्यङ्गोत्रे ष्यङ् ८१
अनु०-त्, तद्धिताः ११९८ । गोत्रे ८०

अणिजोः ७९

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ७९. गोत्रावयवात् ११९९ ।
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ् गोत्रे अणि, जोः

गोत्र में गुरुपुत्तम अनार्थ अण् इञ्
अन्त वाले प्रातिपदिकों से स्त्रीलिङ्ग
में ष्यङ् आदेश होता है ।

गोत्रावयव (कुलाख्य) शब्दों से
गोत्र में विहित अण् इञ् अन्त
वाले शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में ष्यङ्
आदेश होता है ।

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ८०. क्रौड्यादिभ्यश्च १२०० ॥ ४ ॥
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ् गोत्रे

क्रौडि आदि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में
ष्यङ् होता है ।

(५२) क्रौडि लाडि व्याडि आपिशलि आपक्षिति
चौपयत चैटयत (नैटयत) सैकयत वैल्वयत सौधा-
तकि 'सूत युवत्याम्' ५५ । 'भोज क्षत्रिये' ५६ ।
यौतकि कौटि भौरिकि भौलिकि [शाल्मलि] शाला-
स्थलि कापिष्ठलि गौकक्ष्य—इति क्रौ-ङ्यादिः ॥

ङ्या-त्, स्त्रियाम्, ८१. दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्डेविद्धि
अनु०-त्, तद्धिताः,
ष्यङ्

दैवयज्ञि शौचिवृक्षि सात्यमुग्रि
काण्डेविद्धि शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में
विकल्प से ष्यङ् आदेश होता है ।

तद्धितेष्वपत्याधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः ८२. समर्थानां प्रथमाद्वा १०७२ ।

सम-वा ५/२/ यह अधिकार सूत्र है ।

१४४

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८३. प्राग्दीव्यतोऽण् १०७३ ।

प्राग्—तः ११ ४/४/२ तक सामान्यतः अण् का अधिकार होगा अर्थात् अपवाद को छोड़कर अण् होगा ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८४. अश्वपत्यादिभ्यश्च १०७४ ।

४/४/२ तक होने वाले सभी अर्थों में अश्वपति आदि शब्दों से अण् प्रत्यय होता है ।

सम-वा, प्रा-तः

(५३) अश्वपति (ज्ञानपति) शतपति धनपति गणपति [स्थानपति यज्ञपति] राष्ट्रपति कुलपति गृहपति (पशुपति) धान्यपति धन्वपति (बन्धुपति धर्मपति) सभापति प्राणपति क्षेत्रपति—इत्य-
श्वपत्यादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८५. दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः १०७७

सम-वा, प्रा-तः * वाङ्मतिपितृमतां छन्दस्युपसंख्यानम् ।

दिति अदिति आदित्य तथा पत्युत्तर शब्दों से प्राग्दीव्यतीय (४/४/२) अर्थों में ण्य प्रत्यय होता है ।

* यमाच्चेति काशिकायाम् ।

* पृथिव्या जाजौ ।

* देवाद्यजौ ।

* बहिषष्टिलोपो यञ्च ईकक् च ।

* ईकञ् छन्दसि ।

* स्थामोऽकारः ।

* लोमोऽपत्येषु बहुष्वकारो वक्तव्यः ।

* गोरजादिप्रसङ्गे यत् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८६. उत्सादिभ्योऽञ् १०७८ ।

सम-वा, प्रा-तः

प्राग्दीव्यतीय अर्थों में उत्स आदि शब्दों से अञ् प्रत्यय होता है ।

(५४) उत्स उदपान विकर विनद महानद महानस महाप्राण तरुण तलुन । बष्कयासे । पृथिवी (धेनु) पङ्क्ति जगती त्रिष्टुप् अनुष्टुप् जनपद भरत उशीनर ग्रीष्म पीलकुण । 'उदस्थान देशे' ५७ । पृषदंश भल्लकीय रथन्तर मध्यंदिन बृहत् महत् सत्त्वत् कुरु पञ्चाल इन्द्रावसान उष्णिह कैकुभ सुवर्ण देव । 'ग्रीष्मादच्छन्दसि' ५८—इत्युत्सादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८७. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्सनजौ भवनात् १०७९

सम-वा, प्रा-तः

धान्यानां भवने क्षेत्रे ५/२/१ सूत्र तक जितने भी अर्थ हैं, उन सभी अर्थों में स्त्रीपुंस शब्द से यथाक्रम नञ् और स्नञ् प्रत्यय होते हैं ।

तद्धित लुक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८८. द्विगोर्लुगनपत्ये १०८० ।

सम-वा, प्रा-तः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८९. गोत्रेऽलुगचि १०८१ ।

सम-वा, प्रा-तः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९०. यूनि लुक् १०८३ ।

सम-वा, प्रा-तः,

अचि

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९१. फक्फिजोरन्यतरस्याम् १०८७ ।

सम-वा, प्रा-तः,

अचि, यू-क्

अपत्याधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९२. तस्यापत्यम् १०८८ ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९३. एको गोत्रे १०९३ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९४. गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् १०९४ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९५. अत इञ् १०९५ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९६. बाह्यादिभ्यश्च १०९६ ।

सम-वा, त-म्, इञ्

अचि ९१

यू-क् ९१

त-म् ४.१.१७६ षष्ठ्यन्त कृतसन्धि समर्थ शब्द से अपत्य अर्थ में कहे गये तथा कहे जाने वाले प्रत्यय विकल्प से होते हैं ।

इञ् ९७

द्विगुनिमित्तक (तद्धित) शब्दों से अपत्य अर्थ को छोड़कर सभी प्राग्दीव्यतीय अर्थों में होने वाले प्रत्ययों का लुक् होता है, (यदि वे प्रत्यय अजादि हों) ।

अजादि विषयक प्राग्दीव्यतीय की विवक्षा में गोत्रप्रत्यय का अलुक् होता है ।

अजादि प्राग्दीव्यतीय प्रत्यय की विवक्षा में युवप्रत्यय का लुक् होता है ।

अजादि प्राग्दीव्यतीय प्रत्यय की विवक्षा में फक् फिज् इन युव प्रत्ययों का विकल्प से लुक् होता है ।

गोत्र में एक ही अपत्य प्रत्यय होता है ।

स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर युवापत्य अर्थ में गोत्रप्रत्ययान्त से ही अपत्य प्रत्यय होता है ।

अकारान्त प्रातिपदिक से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है ।

बाहु आदि शब्दों से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है ।

(५५) बाहु उपबाहु उपवाकु निवाकु शिवाकु
 वटाकु उपनिन्दु (उपविन्दु) वृषली वृकला चूडा
 बलाका मूषिका कुशला भगला (छगला) ध्रुवका
 [ध्रुवका] सुमित्रा दुर्मित्रा पुष्करसद् अनुहरत्
 देवशर्मन् अग्निशर्मन् [भद्रशर्मन् सुशर्मन्] कुना-

मन् (सुनामन्) पञ्चन् सप्तन् अष्टन् । 'अभितौजसः
सलोपश्च' ५९ । सुधावत् उदञ्चु शिरस् माष शराविन्
मरीची क्षेमवृद्धिन् शृङ्खलतोदिन् खरनादिन् नगरमर्दिन्
प्राकारमर्दिन् लोमन् अजीगर्त कृष्ण युधिष्ठिर अर्जुन
साम्ब गद प्रद्युम्न राम [उदङ्क] । 'उदकः संज्ञायाम्'
६० । 'संभूयोऽम्भसोः सलोपश्च' ६१—आकृ-
तिगणोऽयम् ।। तेन । सात्वकिः जाङ्घिः ऐन्दशर्मिः
आजधेनविः इत्यादि । इति बाह्यादयः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १७. सुधातुरकङ् च १०९७ ।

सम-वा, त-म्, इञ् * व्यासवरुडनिषादचण्डालबिम्बानां चेति
वक्तव्यम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १८. गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ् १०९९ । गोत्रे १११
सम-वा, त-म्

(५६) कुञ्ज ब्रध्न शङ्ख भस्मन् गण लोमन् शठ
शाक शुण्डा शुभ विपाश स्कन्द स्कम्भ—इति
कुञ्जादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १९. नडादिभ्यः फक् ११०१ ।
सम-वा, त-म्, गोत्रे

फक् १०३

सुधातृ शब्द से अपत्यार्थ में इञ्
प्रत्यय तथा अकङ् आदेश होता
है ।

गोत्रसंज्ञक अपत्यार्थ में कुञ्ज आदि
शब्दों से च्फञ् प्रत्यय होता है ।

(५७) नड चर (वर) बक मुञ्ज इतिक इतिश
उपक (एक) लमक । 'शलङ्कु शलङ्कं च' ६२ ।
सप्तल वाजप्य तिक । 'अग्निशर्मन्वृषगणे' ६३ ।
प्राण नर सायक दास मित्र द्वीप पिङ्गर किङ्कर
किङ्कल (कातर) कातल काश्यप (कुश्यप) काश्य
काव्य (काल्य) अज अमुष्य (अमुष्म) । कृष्णारणौ
ब्राह्मणवसिष्ठे' ६४ । अमित्र लिगु चित्र कुमार ।
'क्रोष्टु क्रोष्टं च' ६५ । लोह दुर्ग स्तम्भ शिंशपा
अग्र तृण शकट सुमनस् सुमत मिमत ऋच् जलंधर
अध्वर युगंधर हंसक दण्डिन् हस्तिन् [पिण्ड]
पञ्चाल चमसिन् सुकृत्य स्थिरक ब्राह्मण चटक
बदर अश्वल खरप लङ्क इन्ध अस्त्र कामुक ब्रह्मदत्त
उदुम्बर शोण अलोह दण्डप—इति नडादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १००. हरितादिभ्योऽजः ११०२ ।। ५ ।।

सम-वा, त-म्, गोत्रे,
फक्

नड आदि प्रातिपदिकों से गोत्रापत्य
अर्थ में फक् प्रत्यय होता है ।

हरित आदि शब्दों से तथा अवन्त
शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में फक्
होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. यञिजोश्च ११०३ ।

सम-वा, त-म्, गोत्रे,

फक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्साग्रायणेषु

सम-वा, त-म्, गोत्रे,

११०४

फक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम् ११०५

सम-वा, त-म्, गोत्रे,

फक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ११०६

सम-वा, त-म्, गोत्रे

(५८) बिद उर्व कश्यप कुशिक भरद्वाज उममन्यु
किलात कन्दर्प (किंदर्भ) विश्वानर ऋषिषेण
(ऋषिषेण) ऋतभाग हर्यश्व प्रियक आपस्तम्ब
कूचवार शरद्वत् शुनक (शुनक्) धेनु गोपवन
शिग्रु बिन्दु [भोगक] भाजन [शमिक] अश्ववतान
श्यामाक श्यामक [श्यावलि] श्यापर्ण हरित किंदास
बह्वस्क अर्कजूष (अर्कलूष) बध्योग विष्णु वृद्ध
प्रतिबोध रचित रथीतर (रथन्तर) गविष्ठिर निषाद
[शबर अलस] मठर (मृडाकु) सृपाकु मृदु पुनर्भू
पुत्र दुहितृ ननान्द । 'परस्त्री परशुं च' ६६ । इति
बिदादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. गर्गादिभ्यो यञ् ११०७ ।

सम-वा, त-म्, गोत्रे

यञ् १०९

(५९) गर्ग वत्स । 'वाजासे' ६७ । संकृति अज
व्याघ्रपात् विदभृत् प्राचीनयोग [अगस्ति] पुलस्ति
चमस रेभ अग्निवेश शङ्ख शट शक एक धूम
अवट मनस् धनञ्जय वृक्ष विश्वावसु जरमाण लोहित
शंसित बभ्रु वल्गु मण्डु गण्डु शङ्ख लिगु गुहलु
मङ्क्षु अलिगु जिगीषु मनु तन्तु मनायी सूनु कथक
कन्थक ऋक्ष तृक्ष (वृक्ष) [तनु] तरुक्ष तलुक्ष
तण्ड वतण्ड कपिकत (कपि कत) कुरुकत अनडुह
कण्व शकल गोकक्ष अगस्त्य कण्डिनी यज्ञवल्क

गोत्र में यजन्त इजन्त शब्द से
फक् होता है ।

भृगु वत्स आग्रायण से सम्बद्ध
शरद्वत् शुनक दर्भ शब्दों से
गोत्रापत्य में फक् होता है ।

द्रोण पर्वत जीवन्त से गोत्रापत्य
में विकल्प से फक् होता है ।

विदादि शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ
में अञ् होता है और जो अनृष्य
पुत्र दुहितृ ननान्द शब्द हैं, उनसे
अनन्तरापत्य अर्थ में ।

गर्गादि शब्दों से गोत्रापत्य अर्थ में
यञ् प्रत्यय होता है ।

पर्णवल्क अभयजात विरोहित वृषगण रहूगण शण्डिल
वर्णक (चणक) चुलुक मुद्रल मुसल जमदग्नि
पराशर जतूकर्ण (जातूकर्ण) महित मन्त्रित अश्मरथ
शर्कराक्ष पूतिमाष स्थूरा अदरक (अररक) एलाक
पिङ्गल कृष्ण (लो) गोलन्द उलूक तितिक्ष भिषज
(भिषज्) [भिष्णज] भडित भण्डित दल्भ चेकित
चिकित्सित देवहू इन्द्रहू एकलू पिप्पलू बृहदग्नि
[सुलोहिन्] सुलाभिन् उक्थ कुटीगु—इति
गर्गादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. मधुबभ्रवोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ११०९।
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
यञ्

यथासंख्यतः ब्राह्मण और कौशिक
वाच्य हो तो मधु और बभ्रु शब्द
से गोत्रापत्य में यञ् प्रत्यय होता
है।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. कपिबोधादाङ्गिरसे १११०।
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
यञ्

आ-से १०९

कपि और बोध शब्द यदि आङ्गिरस
हों तो गोत्रापत्य में यञ् होता है।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. वतण्डाच्च ११११।
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
यञ्, आ-से

व-त् १०९

आङ्गिरस में वतण्ड शब्द से गोत्र
में यञ् प्रत्यय होता है।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. लुक्स्त्रियाम् १११२।
सम-वा, त-म्, गोत्रे,
यञ्, आ-से, वत-त्

आङ्गिरस स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त वतण्ड
के यञ् का लुक् होता है।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. अश्वादिभ्यः फञ् १११३।
सम-वा, त-म्, गोत्रे

फञ् १११

अश्व आदि शब्दों से गोत्रापत्य में
फञ् होता है।

(६०) अश्व अश्मन् शङ्ख शूद्रक विद पुट रोहिण
खर्जूर (खजूर) [खज्जार वस्त] पिजूल भडिल
भण्डिल भडित भण्डित [प्रकृत रामोद] क्षान्त
[काश तीक्ष्ण गोलाङ्क अर्क स्वर स्फुट चक्र श्रविष्ठ]
पविन्द पवित्र गोमिन् श्याम धूम। धूम्र वाग्मिन्
विश्वानर कुट। 'शप आत्रेये' ६८। जन जड खड
ग्रीष्म अर्ह कित विशम्प विशाल गिरि चपल चुप
दासक वैल्व (बैल्य) प्राच्य [धर्म्य] आनडुह्य।
'पुंसि जाते' ६९। अर्जुन [प्रहत] सुमनस् दुर्मनस्
मन (मनस्) (प्रान्त) ध्वन। 'आत्रेय भरद्वाजे'
७०। 'भरद्वाज आत्रेये' ७१। उत्स आतव कितव

[वद धान्य पाद] शिव खदिर—इत्यश्वादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. भर्गात्रैर्गते १११४ ।

सम-वा, त-म्, गोत्रे,

फञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११२. शिवादिभ्योऽण् १११५ ।

सम-वा, त-म्

अण् ११९

भर्ग शब्द से त्रैर्गत गोत्र में फञ् प्रत्यय होता है ।

शिवादि से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

(६१) शिव प्रोष्ठ प्रोष्ठिकं चण्डं जम्भ भूरि
दण्ड कुठार ककुभ् (ककुभा) अनभिम्लान कोहित
सुख सन्धि मुनि ककुत्स्थ कहोड कोहड कहूय
कहय रोध कपिञ्जल (कुपिञ्जल) खञ्जन वतण्ड
तृणकर्ण क्षीरहृद जलहृद परिल [पथिक] पिष्ट
हैहय (पार्थिका) गोपिका कपिलिका जटिलिका
बधिरिका मञ्जीरक (मजिरक) वृष्णिक खञ्जार
खञ्जाल (कर्मार) रेख लेख आलेखन विश्रवण
रवण वर्तनाक्ष ग्रीवाक्ष (विटप पिटक) पिटाक
तृक्षाक नभाक ऊर्णनाभ जरत्कारु (पृथा उत्क्षेप)
पुरोहितिका सुरोहितिका सुरोहिका आर्यश्चेत
(अर्यश्चेत) सुपिष्ट मसुरकर्ण मयूरकर्ण (खर्जुरकर्ण)
कदूरक तक्षन् ऋष्टिषेण गङ्गा विपाश यस्क लह्य
द्रुह्य अयस्थूण तृणकर्ण (तृण कर्ण) पर्ण भलन्दन
विरूपाक्ष भूमि इला सपत्नी । 'द्व्यचो नद्याः' ७२ ।
'त्रिवेणी त्रिवणं च' ७३ । इति शिवादिः ॥

आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्नामिकाभ्यः

सम-वा, त-म्, अण्

१११६ ।

वृद्धसंज्ञाविहीन नदी नामक तथा
मानुषी नामक शब्दों से अपत्य
अर्थ में अण् प्रत्यय होता है यदि
वे शब्द नाम बन चुके हों ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. ऋध्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च १११७ ।

सम-वा, त-म्, अण्

प्रसिद्ध ऋषि वाचक शब्दों तथा
अन्धक वृष्णि और कुरुवंश में उ-
त्पन्न व्यक्ति वाचक शब्दों से अ-
पत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११५. मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः १११८ ।

सम-वा, त-म्, अण्

संख्या सम् तथा भद्र पूर्ववाले मातृ
शब्द से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय
होता है तथा उकार अन्तादेश होता
है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११६. कन्यायाः कनीन च १११९ ।
सम-वा, त-म्, अण्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११७. विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु
सम-वा, त-म्, अण् ११२० ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११८. पीलाया वा ११२१ ।
सम-वा, त-म्, अण्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११९. ढक्च मण्डूकात् ११२२ ।
सम-वा, त-म्, अण्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२०. स्त्रीभ्यो ढक् ११२३ ॥ ६ ॥ स्त्रीभ्यः १२१
सम-वा, त-म् ढक् १२७

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२१. द्व्यचः ११२४ ।
सम-वा, त-म्, द्व्यचः १२२

स्त्रीभ्यः, ढक्
ङ्या-त्, तद्धिताः, १२२. इतश्चानिजः ११२५ ।
सम-वा, त-म्,
द्व्यचः, ढक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२३. शुभ्रादिभ्यश्च ११२६ ।
सम-वा, त-म्, ढक्

(६२) शुभ्र विष्ट पुर (विष्टपुर) ब्रह्मकृत शतद्वार
शलाथल शलाकाभ्रू लेखाभ्रू (लेखाभ्र) विकास
(विकास) रोहिणी रुक्मिणी धर्मिणी दिशु शालूक
अजबस्ति शकंधि विमातृ विधवा शुक्र विश देवतर
शकुनि शुक्र उग्र ज्ञातल (शतल) बन्धकी सूकण्डु
विसि अतिथि गोदन्त कुशाम्ब मकष्टु शाताहर
पवष्टुरिक सुनामन् । 'लक्ष्मणश्यामयोर्वासिष्ठे' ७४ ।
गोधा कृकलास अणीब प्रवाहण भरत (भारत)
भरम भृकण्डु कर्पूर इतर अन्यतर आलीढ मुदन्त
सुदक्ष सुवक्षस् सुदामन् कद्रु तुद अकशाय कुमारिका
कुठारिका किशोरिका अम्बिका जिह्वाशिन् परिधि
वायुदत्त शकल शलाका खडूर कुबेरिका अशोका
गन्धपिङ्गला खडोन्मत्ता अनुदृष्टिन् (अनुदृष्टि)

कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में अण्
होता है तथा कन्या को कनीन आदेश
होता है ।

वत्स भरद्वाज और अत्रि के वंश
के यथासंख्य व्यक्ति विकर्ण शुङ्ग
छगल से अपत्यार्थ में अण् प्रत्यय
होता है ।

पीला शब्द से अपत्य अर्थ में
वैकल्पिक अण् होता है ।

मण्डूक शब्द से अपत्यार्थ में ढक्
और वैकल्पिक अण् होता है ।

स्त्रीवाचक शब्दों से अपत्य अर्थ में
ढक् होता है ।

स्त्रीवाचक दो अच् वाले शब्दों से
अपत्यार्थ में ढक् होता है ।

इकारान्त दो अच् वाले शब्दों से
अपत्यार्थ में ढक् होता है परन्तु
इकारान्त होने में इज् प्रत्यय कारण
न हो ।

शुभ्र आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय
होता है ।

जरतिन् बलीवर्दिन् विग्र वीज जीव श्वन् अश्मन्
अश्व अजिर ॥ इति शुभ्रादिः ॥ आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२४. विकर्णकुषीतकात्काश्यपे ११२७ ।
सम-वा, त-म्, ढक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. भ्रुवो वुक्च ११२८ ।
सम-वा, त-म्, ढक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२६. कल्याण्यादीनामिनङ् च ११३१ । इनङ् १२७
सम-वा, त-म्, ढक्

(६३) कल्याणी सुभगा दुर्भगा बन्धकी अनुदृष्टि
अनुसृति (अनुसृष्टि) जरती बलीवर्दी ज्येष्ठा कनिष्ठा
मध्यमा परस्त्री—इति कल्याण्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२७. कुलटाया वा ११३२ ।
सम-वा, त-म्, ढक्,
इनङ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. चटकाया ऐरक् ११३४ ।
सम-वा, त-म् * चटकस्येति वाच्यम् ।
* स्त्रियामपत्ये लुक् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. गोधाया ढक् ११३५ ।
सम-वा, त-म्
ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. आरगुदीचाम् ११३६ ।
सम-वा, त-म्, ढक्,
गोधायाः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. क्षुद्राभ्यो वा ११३७ ।
सम-वा, त-म्, ढक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३२. पितृष्वसुश्छण् ११३८ ।
सम-वा, त-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३३. ढकि लोपः ११३९ ।
म-वा, त-म्, पि-सुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३४. मातृष्वसुश्च ११४० ।
सम-वा, त-म्, पि-
सुः, ढ-पः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३५. चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ११४१ ।
सम-वा, त-म्

कश्यपवंश्य विकर्ण और कुषीतक
शब्दों से अपत्यार्थ में ढक् होता
है ।

भ्रू शब्द से अपत्य अर्थ में ढक्
प्रत्यय तथा वुक् का आगम होता
है ।

कल्याणी आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय
तथा इनङ् आदेश होता है ।

कुलटा शब्द से अपत्य अर्थ में
ढक् प्रत्यय होता है । विकल्प से
इनङ् आदेश भी होता है ।

चटका से अपत्य अर्थ में ऐरक्
होता है ।

गोधायाः १३० गोधा से अपत्य में ढक् होता है ।
ढक् १३१

औदीच्य आचार्यों के मत से गोधा
से अपत्यार्थ में आरक् होता है ।

क्षुद्रार्थवाची शब्दों से अपत्य अर्थ
में विकल्प से ढक् होता है ।

पि-सुः १३४ पितृस्वसृ से अपत्यार्थ में छण्
होता है ।

ढ-पः १३४ ढक् परे रहने पर पितृस्वसृ का
लोप होता है ।

मातृस्वसृ शब्द से पितृस्वसृवत्
कार्य होता है ।

ढञ् १३६

पशुविशेष वाची शब्दों से अपत्यार्थ
में ढञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३६. गृष्ट्यादिभ्यश्च ११४३ ।

सम-वा, त-म्, ढञ्

(६४) गृष्टि हृष्टि बलि हलि विश्रि कुद्रि अजवस्ति
मित्रयु—इति गृष्ट्यादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३७. राजश्चशुराद्यत् ११५३ ।

सम-वा, त-म् * राज्ञो जातावेवेति वाच्यम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३८. क्षत्रादघः ११६१ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३९. कुलात्खः ११६२ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४०. अपूर्वपदादन्यतरस्यां यङ्ढकजौ ११६३ अ-स्यां १४२

सम-वा, त-म्, कु-

॥ ७ ॥

लात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४१. महाकुलादञ्जौ ११६४ ।

सम-वा, त-म्, अ-

स्यां

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४२. दुष्कुलाङ्कुक् ११६५ ।

सम-वा, त-म्, अ-

स्यां

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४३. स्वसृश्छः ११६६ ।

सम-वा, त-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४४. भ्रातुर्व्यच्च ११६७ ।

सम-वा, त-म्, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४५. व्यन्सपत्ने ११६८ ।

सम-वा, त-म्, भ्रातुः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४६. रेवत्यादिभ्यष्ठक् ११६९ ।

सम-वा, त-म्

कुलात् १४०

छः १४४

भ्रातुः १४५

ठक् १४७

गृष्टि आदि शब्दों से अपत्यार्थ में ढञ् होता है ।

राजन् और श्वशुर शब्द से अपत्यार्थ में यत् होता है ।

क्षत्र शब्द से अपत्य अर्थ में घ होता है ।

कुल और कुलान्त शब्दों से अपत्यार्थ में ख होता है ।

अपूर्वपद कुल शब्द से अपत्यार्थ में विकल्प से यत् और ढकञ् प्रत्यय भी होते हैं ।

महाकुल शब्द से अपत्य अर्थ में अञ् खञ् और ख होते हैं ।

दुष्कुल शब्द से अपत्यार्थ में विकल्प से ढक् होता है ।

स्वसृ शब्द से अपत्यार्थ में छ प्रत्यय होता है ।

भ्रातृ शब्द से अपत्य अर्थ में व्यत् और छ होते हैं ।

यदि शत्रुवाच्य हो तो भ्रातृ से व्यन् होता है ।

रेवती आदि शब्दों से अपत्यार्थ में ठक् होता है ।

(६५) रेवती अश्वपाली मणिपाली द्वारपाली
वृकवञ्चिन् वृकबन्धु वृकग्राह कर्णग्राह दण्डग्राह
कुक्कुटाक्ष (ककुदाक्ष) [चामरग्राह]—इति
रेवत्यादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४७. गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ११७१ ।

सम-वा, त-म्, ठक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४८. वृद्धाङ्कुसौवीरेषु बहुलम् ११७२ ।

सम-वा, त-म्,

कुत्सने

कुत्सने १४९

ठक् १४९

सौ-लम् १५०

गोत्र में स्त्रीवाची शब्दों से ण और ठक् होते हैं यदि कुत्सा हो ।

वृद्ध सौवीरगोत्र शब्दों से अपत्यार्थ में बहुलतः ठक् होता है कुत्सा में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४९. फेष्ठ च ११७३ ।

सम-वा, त-म्, कु-
त्सने, ठक्, सौ-लं

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५०. फाण्टाहतिमिमताभ्यां णफिजौ ११७४

सम-वा, त-म्, सौ-
लं

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५१. कुर्वादिभ्यो ण्यः ११७५ ।

सम-वा, त-म्

ण्यः १५२

(६६) कुरु गर्ग मङ्गुष अजमार रथकार वावदूक ।
'सम्राज क्षत्रिये' ७५ । कवि मति (विमति)
कापिञ्जलादि वाक् वामरथ पितृमत् इन्द्रजाली
[इन्द्रजाली] एजि वातकि दामोष्णीषि गणकारि
कैशोरि कुट शालाका (शलाका) मुर पुर एरका
शुभ्र दर्भ केशिनी । 'वेनाच्छन्दसि' ७६ । शूर्पणाय
श्यावनाय श्यावरथ शावपुत्र सत्यंकार वडभीकार
पथिकार मूढ शकन्धु शङ्कु शाक शालिन् शालीन
कर्तृ हर्तृ इन पिण्डी तक्षन् । वामरथस्य कण-
वादिवत्स्वरवर्जम् ॥ इति कुर्वादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५२. सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ११७६ । से-भ्यः १५३

सम-वा, त-म्, ण्यः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५३. उदीचामिञ् ११७७ ।

सम-वा, त-म्, से- * तक्ष्णोऽण उपसंख्यानम् ।

भ्यः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५४. तिकादिभ्यः फिञ् ११७८ ।

सम-वा, त-म्

फिञ् १५९

(६७) तिक कितक (कितव) संज्ञाबालशिख
(संज्ञा बाला शिखा) उरश (उरस्) शाट्य सैन्धव
यमुन्द रूप्य ग्राम्य नील अमित्र गौकुक्ष्य [गौकक्ष्य]
कुरु देवरथ तैतल औरश (औरस) कौरव्य भौरिकि
भौलिकि चौपयत चैटयत शीकयत क्षैतयत वाजवत
चन्द्रमस् शुभ गङ्गा वरेण्य सुपामन् आरटव
[आरब्ध] वह्यका खल्या [खल्यका] वृष लोमक
उदन्य यज्ञ ॥ इति तिकादिः ॥

फिजन्त सौवीरगोत्र शब्दों से छ
और ठक् होते हैं कुत्सा में ।

सौवीरगोत्र में फाण्टाहति और
मिमत शब्दों से अपत्यार्थ में ण
और फिञ् होते हैं ।

कुरु आदि शब्दों से अपत्यार्थ में
ण्य होता है ।

सेनान्त लक्षण तथा कारिवाचक
शब्दों से अपत्य अर्थ में ण्य प्रत्यय
होता है ।

औदीच्य मत में सेनान्त लक्षण
तथा कारिवाचक शब्दों से इञ्
होता है ।

तिक आदि शब्दों से अपत्यार्थ में
फिञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५५. कौसल्यकार्मार्याभ्यां च ११७९ ।
सम-वा, त-म्, फिञ् * वदगुकोसलकर्मारिछागवृषाणां युक्त्वादिष्टस्य ।

कौसल्य कार्मार्य शब्द से फिञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५६. अणो द्व्यचः ११८० ।

अण् प्रत्ययान्त द्व्यच् प्रातिपदिक से फिञ् होता है ।

सम-वा, त-म्, फिञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५७. उदीचां वृद्धादगोत्रात् ११८१ ।

उ-त्रात् १५९

औदीच्य मत में अगोत्र वृद्ध शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् होता है ।

सम-वा, त-म्, फिञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५८. वाकिनादीनां कुक्च ११८२ ।

कुक् १५९

वाकिन आदि शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् प्रत्यय होता है तथा कुक् का आगम होता है ।

सम-वा, त-म्,

फिञ्, उ-त्रात्

(६८) वाकिन गौधेर कार्कष काक लङ्का ।

‘चर्मिर्वर्मिणोर्नलोपश्च’ ७७ । इति वाकिनादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५९. पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ११८३ ।

सम-वा, त-म्,

फिञ्, उ-त्रात्, कुक्

औदीच्य मत में पुत्रान्त वृद्ध शब्दों से अपत्यार्थ में फिञ् प्रत्यय होता है तथा विकल्प से कुक् का आगम होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६०. प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम् ११८४ ।

सम-वा, त-म्

॥८॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १६१. मनोजातावज्यतौ षुक्च ११८५ ।

सम-वा, त-म्

प्राच्य मत में अवृद्ध शब्दों से बाहुल्येन फिन् होता है ।
मनु शब्द से जाति अर्थ में अज् और यत् प्रत्यय होते हैं तथा षुक् का आगम होता है ।

गोत्र संज्ञा

ड्या-त्, तद्धिताः, १६२. अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् १०८९ ।

सम-वा, त-म्

* यूनश्च कुत्सायां गोत्रसंज्ञेति वाच्यम् ।

अप-ति १६५

पौत्र प्रभृति अपत्य को गोत्र संज्ञा होती है ।

युव संज्ञा

ड्या-त्, तद्धिताः, १६३. जीवति तु वंश्ये युवा १०९० ।

सम-वा, त-म्, *

वृद्धस्य च पूजायाम् ।

जीवति १६४

युवा १६५

वंश्य के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति अपत्य को युव संज्ञा होती है ।

अप-ति

ड्या-त्, तद्धिताः, १६४. भ्रातरि च ज्यायसि १०९१ ।

सम-वा, त-म्, अप-

ति, जीवति युवा

वंश्य के जीवित न रहने पर भी ज्येष्ठ भ्राता के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति अपत्य को युव संज्ञा होती है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६५. वाऽन्यस्मिन्सपिण्डे स्थविरतरे जीवति

सम-वा, त-म्, अप-

१०९२ ।

ति, युवा

दूसरे भी सपिण्ड या स्थविरतर के जीवित रहने पर पौत्र प्रभृति जीवित अपत्य को विकल्प से युव संज्ञा होती है ।

तद्राजसंज्ञक प्रत्यय

ड्या-त्, तद्धिताः, १६६. जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ् ११८६ । ज-यात् १७६
सम-वा, त-म् * क्षत्रियसमानशब्दाज्जनपदात्तस्य राजन्यप- अञ् १६७
त्यवत् ।

* पूरोरण् वक्तव्यः ।

* पाण्डोर्द्व्यण् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६७. साल्वेयगान्धारिभ्यां च ११८७ ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्, अञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १६८. व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् ११८८ ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १६९. वृद्धेत्कोसलाजादाज्यङ् ११८९ ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १७०. कुरुनादिभ्यो ण्यः ११९० ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १७१. साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ्

सम-वा, त-म्, ज-
यात्

११९१ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १७२. ते तद्राजाः ११९२ ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्

तद्राजाः १७६

ड्या-त्, तद्धिताः, १७३. कम्बोजाल्लुक् ११९४ ।

सम-वा, त-म्, ज- * कम्बोजादिभ्य इति वक्तव्यम् ।

लुक् १७६

यात्, तद्राजाः

(६९) कम्बोज चोल केरल शक यवन ॥ इति

कम्बोजदिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १७४. स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ११९५ । स्त्रियाम् १७५

सम-वा, त-म्, ज-
यात्, तद्राजाः, लुक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १७५. अतश्च ११९६ ।

सम-वा, त-म्, ज-
यात्, तद्राजाः, लुक्

स्त्रियाम्

जनपद क्षत्रिय वाची शब्दों से
अपत्यार्थ में अञ् प्रत्यय होता है ।

साल्वेय और गान्धारि शब्दों से
अपत्यार्थ में अञ् होता है ।

क्षत्रियवाची जनपदशब्द मगध
कलिङ्ग सूरमस तथा द्व्यच् से अण्
होता है ।

जनपद क्षत्रियवाची वृद्ध इकारान्त
तथा कोसल और अजादि शब्द से
ज्यङ् प्रत्यय होता है अपत्यार्थ में ।
क्षत्रियवाची जनपद कुरु और नादि
शब्दों से ण्य होता है ।

साल्वावयव प्रत्यग्रथ कलकूट तथा
अश्मक से अपत्यार्थ में इञ् प्रत्यय
होता है ।

जनपदवाची क्षत्रिय शब्दों से होने
वाले अञ् आदि प्रत्यय तद्राज
संज्ञक होते हैं ।

जनपद क्षत्रियवाची प्रत्यय यदि
कम्बोज से हों तो उनका लुक्
होता है ।

अवन्ति कुन्ति कुरु शब्दों से होने
वाले तद्राज प्रत्ययों का लुक् होता
है यदि अभिधेय स्त्रीलिङ्ग हो ।
स्त्रीलिङ्ग अभिधेय हो तो तद्राज
अकारान्त का लुक् हो जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १७६. न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ११९७
सम-वा, त-म्, ज-
यात्, तद्राजाः, लुक्,

प्राच्य क्षत्रियवाची शब्द भर्गादि शब्द
तथा यौधेयादि शब्दों से तद्राज का
लुक् नहीं होता है ।

(७१) भर्ग करुश केकय कश्मीर साल्व सुस्थाल
उरश (उरस्) कौरव्य ॥ इति भर्गादिः ॥
(७१) यौधेय शौकेय शौभ्रेय ज्यावाणेय धार्तेय
(धौर्तेय) त्रिगर्त भरत उशीनर ॥ इति यौधे-
यादिः ॥

ड्याब्धिगोः षिद्गौरादिवाहो दैवयज्ञियजिजो-
र्वचो महाकुलान्मनोर्जातौ षोडश ॥
इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य
प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

तद्धिते चातुरार्थिक प्रत्ययः

ड्या-त्, तद्धिताः, १. तेन रक्तं रागात् १२०२ ।
सम-वा

तेन १३
र-गात् २

रंगवाची शब्दों से रंगे गये इस
अर्थ में उन शब्दों से यथाविहित
प्रत्यय होते हैं ।

ड्यात्, तद्धिताः, २. लाक्षारोचनाटुक् १२०३ ।
सम-वा, तेन, र-गात् * शकलकर्दमाभ्यामुपसंख्यानम् ।

* (शकलकर्दमाभ्यामणपीति काशिका ।)

* नील्या अङ्गुक्तव्यः ।

* पीतात्कन्वक्तव्यः ।

* हरिद्रामहारजनाभ्यामञ् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३. नक्षत्रेण युक्तः कालः १२०४ ।
सम-वा, तेन

न-लः ५

‘नक्षत्र विशेषवाची शब्दों से युक्त’
इस अर्थ में यथा—विहित प्रत्यय
होते हैं पर युक्त काल होगा ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४. लुबविशेषे १२०५ ।
सम-वा, तेन, न-लः

लुप् ५

नक्षत्र युक्त काल से यदि विशेष न
बताया जा रहा हो तो होने वाले
प्रत्ययों का लुप् हो जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५. संज्ञायां श्रवणाश्चत्वाभ्याम् १२०६ ।
सम-वा, तेन, न-
लः, लुप्

संज्ञा के विषय में श्रवण और अश्चत्य
से उत्पन्न प्रत्ययों का लुप् होता
है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६. द्वन्द्वाच्छः १२०७ ।

सम-वा, तेन

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७. दृष्टं साम १२०८ ।

सम-वा, तेन

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८. कलेर्बक् १२०९ ।

सम-वा, तेन, दृ-म * सर्वत्राग्निकलिभ्यां ढग्वक्तव्यः ।

* अस्मिन्नर्थेऽण् डिद्वा वक्तव्यः ।

* जातार्थे प्रतिप्रसूतोऽण्वा डिद्वक्तव्यः ।

* तीयादीकक् स्वार्थे वाच्यः ।

* न विद्यायाः ।

* गोत्रादङ्कवत् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९. वामदेवाङ्गुङ्गौ १२१० ।

सम-वा, तेन, दृ-म

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०. परिवृतो रथः १२११ ।

सम-वा, तेन

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११. पाण्डुकम्बलादिनिः १२१२ ।

सम-वा, तेन, प-थः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२. द्वैपवैयाघ्रादञ् १२१३ ।

सम-वा, तेन, प-थः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३. कौमारापूर्ववचने १२१४ ।

सम-वा, तेन

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४. तत्रोन्वृतममत्रेभ्यः १२१५ ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५. स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते १२१६ ।

सम-वा, तत्र

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६. संस्कृतं भक्षाः १२१७ ।

सम-वा, तत्र

ङ्या-त्, तद्धिताः, १७. शूलोखाद्यत् १२१८ ।

स-म-वा, तत्र, सं-

क्षाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १८. दध्नष्ठक् १२१९ ।

सम-वा तत्र सं-क्षाः

दृ-म ९

प-थः १२

तत्र २०

सं-क्षा २०

ठक् १९

नक्षत्र द्वन्द्व से युक्त काल में छ प्रत्यय होता है ।

जो साम जिससे देखा जाय उससे यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

कलि से देखा गया इस अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है ।

वामदेव से देखा गया साम इस अर्थ में ड्यत् और ड्य होते हैं । जिससे ढंका जाय रथ इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

पाण्डु कम्बल से ढंका गया रथ इस अर्थ में इनि होता है ।

द्वैप और वैयाघ्र से ढंका गया रथ इस अर्थ में अञ् होता है ।

अपूर्ववचन में कौमार शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

अमत्रवाची शब्दों से उद्धृत इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

यदि व्रत हो तो स्थण्डिल पर सोने वाला इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

इसमें संस्कृत भक्ष इस अर्थ में इसमें वाले शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

संस्कृत भक्षाः इस अर्थ में शूल और उख शब्द से यत् होता है ।

संस्कृत भक्षाः इस अर्थ में दधि से ठक् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १९. उदश्चितोऽन्यतरस्याम् १२२० ।

स-म-वा, तत्र, सं-

क्षाः, ठक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २०. क्षीराङ्गु १२२२ । ॥ १ ॥

स-म-वा तत्र सं-क्षाः

ङ्यात्, तद्धिताः, २१. साऽस्मिन्यौर्णमासीति १२२३ । स-ति २३

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, २२. आग्रहायण्यश्वत्थाङ्गु १२२४ । ठक् २३

सम-वा, सा-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, २३. विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः

सम-वा, सा-ति, १२२५ ।

ठक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २४. साऽस्य देवता १२२६ ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, २५. कस्येत् १२२७ ।

सम-वा, सा-ता

ङ्या-त्, तद्धिताः, २६. शुक्रादघन् १२२८ ।

सम-वा, सा-ता

ङ्या-त्, तद्धिताः, २७. अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः १२२९ । अ-भ्यां २८

सम-वा, सा-ता

ङ्या-त्, तद्धिताः, २८. छ च १२३० । छ २९

सम-वा, सा-ता, * छप्रकरणे पैङ्गाक्षिपुत्रादिभ्य उपसंख्यानम् ।

अ-भ्यां * शतरुद्रादघ च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २९. महेन्द्रादघाणौ च १२३१ ।

सम-वा, सा-ता, छ

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३०. सोमाद्व्यण् १२३२ ।

सम-वा, सा-ता

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३१. वाय्वृतुपित्रुषसो यत् १२३३ । यत् ३२

सम-वा, सा-ता

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३२. द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवा-

सम-वा, सा-ता, यत् स्तोष्यतिगृहमेधाच्छ च १२३५ ।

संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में उदश्चित् शब्द से विकल्प से ठक् प्रत्यय होता है ।

संस्कृतं भक्षाः इस अर्थ में क्षीर से ङ्ग होता है ।

संज्ञा में यह पौर्णमासी इसमें है इस अर्थ में तत्तद् शब्दों से यथा-विहित प्रत्यय होते हैं ।

आग्रहायणी और अश्वत्थ से ठक् प्रत्यय होता है ।

फाल्गुनी आदि पौर्णमासी शब्दों से विकल्प से ठक् होता है ।

सास्यदेवता ३५ सा अस्य इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है, यदि सा देवता है ।

क देवता जिसके इस अर्थ में अण् होता है तथा क को इकार आदेश होता है ।

सास्य देवता इस अर्थ में शुक्र से घन् प्रत्यय होता है ।

अपोनप्तृ अपांनप्तृ से घ होता है, सास्य देवता अर्थ में ।

इन्हीं शब्दों से छ प्रत्यय भी होता है ।

सास्य देवता अर्थ में ही महेन्द्र से घ और अण् भी होते हैं ।

सास्य देवता अर्थ में सोम से व्यण् होता है ।

वायु ऋतु पितृ उषस् से यत् होता है सास्य देवता अर्थ में ।

द्यावापृथिवी शुनासीर मरुत्वत् अग्नी-बोध वास्तोष्यति गृहमेध से सास्य देवता अर्थ में छ और यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३३. अग्नेर्बक् १२३६ ।

सम-वा, सा-ता

ड्या-त्, तद्धिताः, ३४. कालेभ्यो भववत् १२३७ ।

सम-वा, सा-ता

ड्या-त्, तद्धिताः, ३५. महाराजप्रोष्ठपदाड्ज् १२३८ ।

सम-वा, सा-ता * तदस्मिन्वर्तत इति नवयज्ञादिभ्य उपसंख्यानम् ।

* पूर्णमासादणवक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३६. पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः १२४१

सम-वा

* पितुर्भ्रातरि व्यन् ।

* मातुर्बुलच् ।

* मातृपितृभ्यां पितरि डामहच् ।

* मातरि षिच्च ।

* अवेर्दुग्धे सोढूदूसमरीसचो वक्तव्याः ।

* तिलान्निष्फलात्पिञ्जपेजौ ।

* पिञ्जश्छन्दसि डिच्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३७. तस्य समूहः १२४३ ।

सम-वा

तस्य ५४

समूहः ५१

सास्य देवता अर्थ में अग्नि से ढक् होता है ।

कालवाची शब्दों से भव अर्थ में होने वाले प्रत्यय होंगे सास्य देवता इस अर्थ में भी ।

इसी अर्थ में महाराज प्रोष्ठपद से ठज् होता है ।

पितृव्य मातुल मातामह पितामह शब्द निपातित होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३८. भिक्षादिभ्योऽण् १२४४ ।

सम-वा, तस्य,

समूहः

(७२) भिक्षा गर्भिणी क्षेत्र करीष अङ्गार (अङ्गार)

चर्मिन् (चर्मन्) धर्मिन् सहस्र युवति पदाति प-

द्धति अर्थवन् दक्षिणा (भूत विषय श्रोत्र) ॥

इति भिक्षादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३९. गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्सम- वुज् ४०

सम-वा, तस्य,

नुष्याजाद्वुज् १२४६ ।

समूहः

* वृद्धाच्चेति वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४०. केदाराद्यञ्च १२४८ ।

सम-वा, तस्य,

* गणिकाया यजिति वक्तव्यम् ।

समूहः, वुज्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४१. ठञ्कवचिनश्च १२४९ ।

सम-वा, तस्य,

समूहः, के-त्

॥ २ ॥ के-त् ४१

तस्य इस षष्ठी समर्थ से समूह अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

तस्य समूह अर्थ में भिक्षा आदि शब्दों से अण् होता है ।

गोत्र उक्षा उष्ट्र उरभ्र राजन् राजन्य राजपुत्र वत्स मनुष्य अज शब्दों से तस्य समूह अर्थ में वुज् होता है । तस्य समूह अर्थ में केदार से यञ् और वुज् होते हैं ।

कवचिन् से तस्य समूह अर्थ में ठञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४२. ब्राह्मणमाणवबाडवाद्यन् १२५० ।

सम-वा, तस्य, * पृष्ठादुपसंख्यानम् ।

समूहः * वातादूलो वा ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४३. ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् १२५१ ।

सम-वा, तस्य, * गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् ।

समूहः * अहः खः क्रतौ ।

* पश्चा णस् वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४४. अनुदात्तादेरञ् १२५३ ।

सम-वा तस्य, समूहः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४५. खण्डिकादिभ्यश्च १२५४ ।

सम-वा, तस्य, स-

मूहः, अञ्

(७३) खण्डिक वडवा । 'क्षुद्रकडालवात् (क्षुद्र-
कमालवात्) सेना संज्ञायाम्' ७८ । भिक्षुक शुक
ऊलूक श्वन् अहन् युगवरत्रा (युगवरत्र) हलबन्धा
(हलबन्ध) इति खण्डिकादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ४६. चरणेभ्यो धर्मवत् १२५५ ।

सम-वा तस्य, समूहः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४७. अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् १२५६ ।

सम-वा तस्य, समूहः * धेनोरनञ् इति वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४८. केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् १२५७

सम-वा तस्य, समूहः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४९. पाशादिभ्यो यः १२५८ ।

सम-वा तस्य, समूहः

(७४) पाश तृण धूम वात अङ्गार (पाटल)
पोत गल पिटक पिटाक शकट हल [नट] वन ॥
इति पाशादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ५०. खलगोरथात् १२५९ ।

सम-वा, तस्य, स-

मूहः, यः

ड्यात्, तद्धिताः, स- ५१. इनित्रकट्यचश्च १२६० ।

म-वा, तस्य, समूहः * खलादिभ्य इनिः ।

(७५) खलिनी डूकिनी (डाकिनी) कुदुम्बिनी
(कुदुम्बिनी) द्रुमिणी अङ्किनी गविनी रथिनी
कुण्डलिनी ॥ इति खलादिः ॥

ब्राह्मण माणव बाडव से तस्य समूह
अर्थ में यन् होता है ।

ग्राम जन बन्धु से तस्य समूह अर्थ
में तल् होता है ।

अञ् ४५

अनुदात्तादि शब्दों से तस्य समूहः
अर्थ में अञ् होता है ।

तस्य समूहः अर्थ में खण्डिका आदि
शब्दों से अञ् होता है ।

समूह अर्थ में चरणवाची शब्दों से
धर्मवत् प्रत्यय होते हैं ।

अचित्तार्थक तथा हस्ति धेनु शब्द
से समूहार्थ में ठक् होता है ।

समूह अर्थ में केश और अश्व शब्दों
से क्रमशः यञ् और छ प्रत्यय
विकल्पेन होते हैं ।

समूह अर्थ में पाश आदि शब्दों से
य प्रत्यय होता है ।

यः ५०.

तस्य समूहः अर्थ में खल गो रथ
से य होता है ।

समूह अर्थ में खल गो रथ से इनि
त्र कट्यच् होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५२. विषयो देशे १२६१ ।

वि-शे ५४

सम-वा, तस्य

ड्या-त्, तद्धिताः, ५३. राजन्यादिभ्यो वुञ् १२६२ ।

सम-वा, तस्य,

वि०-शे

(७६) राजन्य आनृत बाभ्रव्य शालङ्कायन दैवयातव
(दैवयात) (अत्रीड वरत्रा) जालंधरायण (राजा-
यन) तेलु आत्मकामेयु अम्बरीषपुत्र वसाति बैल्ववन
शैलुष उदुम्बर तीव्र बैल्वज आर्जुनायन संप्रिय दाक्षि
ऊर्णनाभ ॥ इति राजन्यादिः ॥ आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ५४. भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ

सम-वा, तस्य,

१२६३ ।

वि०-शे

(७७) भौरिकी भौलिकी चौपयत चौटयत
(चेटयत) काणेय वाणिजक वाणिकाज्य (वालि-
काज्य) सैकयत वैकयत ॥ इति भौरिक्यादिः ॥

(७८) ऐषुकारि सारस्यायन (सारसायन) चान्द्रा-
यण द्रव्याक्षायण त्र्याक्षायण औडायन जौलायन
खाडायन दारामित्रि दासमित्रायण शौद्रायण दाक्षायण
शापण्डायन (शायण्डायन) ताक्षर्यायण शौभ्रायण
सौवीर (सौवीरायण) शपण्ड (शयण्ड) शौण्ड
शयाण्ड (शयान्ड) वैश्वमानव वैश्वध्येनव
(वैश्वधेनव) नड तुण्डदेव विश्वदेव (सापिण्ड)
इत्यैषुकार्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ५५. सोऽस्यादिरिति छन्दसः प्रगाथेषु १२६४ सोऽस्य ५६

सम-वा

* स्वार्थ उपसंख्यानम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५६. संग्रामे प्रयोजनयोद्धभ्यः १२६५ ।

सम-वा, सोऽस्य

ड्या-त्, तद्धिताः, ५७. तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायांणः १२६६

सम-वा

देशवाची विषय हो तो षष्ठ्यन्त से
यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

देश अर्थ में राजन्य आदि शब्दों
से वुञ् होता है ।

भौरिकी आदि तथा ऐषुकारि आदि
शब्दों से क्रमशः विधल् और भक्तल्
प्रत्यय होते हैं, यदि देश अर्थ
हो ।

वेद के प्रगाथ में 'यह इसका' इस
अर्थ में यथा-विहित प्रत्यय होता
है ।

प्रयोजनवाची और योद्धृवाची शब्दों
से 'यह इसका' इस अर्थ में यथा-
विहित प्रत्यय होता है, यदि वाच्य
संग्राम हो ।

यह इसमें प्रहरण है इस अर्थ में
प्रहरण से ण प्रत्यय होता है, यदि
क्रीडा हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५८. घञः साऽस्यां क्रियेति जः १२६७ ।
सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५९. तदधीते तद्वेद १२६९ ।
सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६०. क्रतूक्थादिसूत्रान्ताङ्गुक् १२७० ।।।३।।
सम-वा, तद्वेद

घञन्त क्रियावाची शब्दों से ज प्रत्यय होता है, यदि 'यह इसमें' ऐसा अर्थ हो ।

जिसको पढ़ा जाय या जाना जाय इस अर्थ में उससे यथाविहित प्रत्यय होता है ।

क्रतु विशेषवाची, उक्थ आदि शब्द तथा सूत्रान्त शब्दों से ठक् होता है 'तदधीते तद्वेद' इस अर्थ में ।

(७९) उक्थ लोकायत न्याय न्यास पुनरुक्त निरुक्त निमित्त द्विपदा ज्योतिष अनुपद अनुकल्प यज्ञ (धर्म) चर्चा क्रमेतर श्लक्ष (श्लक्षण) संहिता पदक्रम संघट सङ्घट्ट वृत्ति परिषद् संग्रह गण (गुण) आयुर्देव (आयुर्वेद) ॥ इत्युक्थादिः ।।

* मुख्याथार्त्तुक्थशब्दाङ्गुगणौ नेष्यते ।

* विद्यालक्षणकल्पान्ताच्चेति वक्तव्यम् ।

* सूत्रान्तात्त्वकल्पादेरेवेष्यते ।

* अङ्गक्षत्रधर्मात्रिपूर्वाविद्यान्तान्नेति वक्तव्यम् ।

* आख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणेभ्यश्च ।

* सवदिः सादेश्च लुक् ।

* द्विगोश्च ।

* अनुसूर्लक्ष्यलक्षणे ।

* इकन्यदोत्तरपदात् ।

* शतषष्टेष्मिकन् पथः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६१. क्रमादिभ्यो वुन् १२७१ ।
सम-वा, तद्वेद

'तदधीते तद्वेद' अर्थ में क्रम आदि शब्दों से वुन् होता है ।

(८०) क्रम पद शिक्षा मीमांसा सामन्—इति क्रमादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६२. अनुब्राह्मणादिनिः १२७२ ।
सम-वा, तद्वेद

'तदधीते तद्वेद' अर्थ में अनुब्राह्मण से इनि होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६३. वसन्तादिभ्यष्ठक् १२७३ ।
सम-वा, तद्वेद

'तदधीते तद्वेद' अर्थ में वसन्त आदि से ठक् होता है ।

(८१) वसन्त (ग्रीष्म) वर्षा शरद (शरत्) हेमन्त शिशिर प्रथम गुण चरम अनुगुण अथर्वन् आथर्वण ॥ इति वसन्तादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. प्रोक्ताल्लुक् १२७४ ।
सम-वा, तद्वेद

लुक् ६६

तदधीते तद्वेद अर्थ में प्रोक्तप्रत्ययान्त शब्दों से हुये प्रत्ययों का लोप हो जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. सूत्राच्च कोपधात् १२७७ ।
सम-वा, तद्वेद; लुक्

‘तदधीते तद्वेद’ अर्थ में सूत्रवाची कोपध शब्दों से प्रत्यय का लुक् हो जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि १२७८ ।
सम-वा, तद्वेद, लुक्

प्रोक्त प्रत्ययान्त छन्दस् एवं ब्राह्मण से प्रत्ययों का लुक् होता है यदि तदधीते तद्वेद विषय हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६७. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि १२७९ । दे-म्नि ७०
सम-वा

‘तदस्मिन् अस्ति’ इस अर्थ में तत् पद से अण् आदि प्रत्यय होते हैं, यदि प्रत्ययान्त से देश वाच्य हो । तेन निर्वृत्तम् इस अर्थ में तेनवाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. तेन निर्वृत्तम् १२८० ।
सम-वा, दे-म्नि

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. तस्य निवासः १२८१ ।
सम-वा, दे-म्नि

तस्य ७०

तस्य निवासः इस अर्थ में तस्य वाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७०. अदूरभवश्च १२८२ ।
सम-वा, दे-म्नि,
तस्य

तस्य अदूरभवः इस अर्थ में तस्यवाची से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७१. ओरञ् १२८३ ।
सम-वा

अञ् ७६

सूत्र ६७ से ७० तक के अर्थों में उवर्णान्त प्रातिपदिक से अञ् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. मतोश्च बह्वजङ्गात् १२८४ ।
सम-वा, अञ्

(बहुत अच् वाले) मतुप् अन्त शब्दों से चारों अर्थों में अञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७३. बह्वचः कूपेषु १२८५ ।
सम-वा, अञ्

कूपेषु ७४

बह्वच् प्रातिपदिक से चातुरार्थिक अञ् होता है, यदि अभिधेय कूप हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७४. उदक्च विपाशः १२८६ ।
सम-वा, अञ्, कूपेषु

विपाशा के उत्तर कूल में होने वाला कूप यदि अभिधेय हो तो चातुरार्थिक अञ् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७५. संकलादिभ्यश्च १२८७ ।
सम-वा, अञ्

सङ्कल आदि शब्दों से चातुरार्थिक अञ् प्रत्यय होता है ।

(८२) सङ्कल पुष्कल उत्तम उडुप उद्वेप उत्पुट
कुम्भ निधान सुदक्ष सुदत्त सुभूत सुपूत सुनेत्र सुमङ्गल
सुपिङ्गल सूत सिकत पूतिका (पूतिक) पूलास
कूलास पलाश निवेश गवेश (गवेष) गम्भीर
इतर आन् अहन् लोमन् वेमन् चरण (वरुण)
बहुल सद्योज अभिषिक्त गोभृत् राजभृत् भल्ल मल्ल
माल ॥ इति सङ्कलादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ७६. स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु १२८८ ।

सम-वा, अञ्

यदि स्त्रीलिङ्ग वाच्य हो तो सौवीर
साल्व प्राक् देश में प्रातिपदिक से
अञ् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७७. सुवास्त्वादिभ्योऽण् १२८९ ।

अण् ७९

सम-वा

सुवास्तु आदि शब्दों से चातुरार्थिक
अण् प्रत्यय होता है ।

(८३) सुवास्तु (सुवस्तु) वर्णु भण्डु खण्डु
सेवालिन कर्पूरिन् शिखण्डिन् गर्त कर्कश शकटीकर्ण
कृष्णकर्ण (कर्क) कर्कन्धुमती गोह अहिसक्थ ॥
इति सुवास्त्वादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ७८. रोणी १२९० ।

सम-वा, अण्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७९. कोपधाच्च १२९१ ।

सम-वा, अण्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८०. वुञ्छणकठजिलसेनिरढञ्जययफक्फिजि-
ञ्ज्यकक्ठकोऽरीहणकृशाश्चर्यकुमुदका-
शतृणप्रेक्षाश्मसखिसंकाशबलपक्षकर्ण-
सुतङ्गमप्रगादिन्वराहकुमुदादिभ्यः १२९२

॥ ४ ॥

रोणी शब्द से चातुरार्थिक अण् प्रत्यय
होता है ।

ककारोपध शब्द से चातुरार्थिक अण्
प्रत्यय होता है ।

अरीहणादि कृशाश्वादि ऋश्यादि
कुमुदादि काशादि तृणादि प्रेक्षादि
अश्मादि सख्यादि संकाशादि बलादि
पक्षादि कर्णादि सुतङ्गमादि प्रगद्यादि
वराहादि कुमुदादि शब्दों से क्रमशः
चातुरार्थिक वुञ् छण् क ठच् इल
श इनि र ढञ् ण्य य फक् फिञ्
इञ् ज्य कक् ठक् प्रत्यय होते हैं ।

(८४) अरीहण (अहीरण) द्रुगण द्रुहण भलग
(भगल) उलन्द किरण सांपरायण क्रौष्टायन
(क्रौष्टायण) औष्टायण त्रैगर्तायन मैत्रायण भास्त्रायण
वैमत्तायन (वैमतायन) गौमतायन सौमतायन
सौसायन धौमतायन सौमायन ऐन्द्रायण कौद्रायण
(कौन्द्रायण) खाडायन शाण्डित्यायन रायस्पोष
विपथ विपाश उद्दण्ड (उदञ्चन) खाण्डवीरण वीरण

काशकृत्स्न कृत्स्न (कशकृत्स्न) जाम्बवत शिशपा
रैवत (रेवत) बिल्व सुयज्ञ शिरीष बधिर जम्बु
खदिर सुशर्मन् (सशर्मन्) दलतृ भलन्दन खण्डु
कलन (कनल) यज्ञदत्त—इत्यरीहणादिः ॥

(८५) कृशाश्च अरिष्ट अरिश्म वेश्मन् विशाल
लोमश रोमश रोमक लोमक शबल कूट वर्चल
कुवर्चल सुकर सूकर प्रातर (प्रतर) सदृश पुरग
पुराग सुख धूम अजिन विनत अवनत कुविद्यास
[विकुट्यास] पराशर अरुस् अयस् मौद्रल्याकर
(मौद्रल्य युकर)—इति कृशाश्चादिः ॥

(८६) ऋश्य [ऋष्य] न्यग्रोध शर निलीन
(निवास निवात) निधान निबन्धन (निबन्ध)
(विबद्ध) परिगूढ (उपगूढ) असनि सित मत
वेश्मन् उत्तराश्मन् अश्मन् स्थूल बाहु खदिर शर्करा
अनडुह (अनडुह्) अरडु परिवंश वेणु वीरण
खण्ड दण्ड परिवृत्त कर्दम अंशु—इति ऋ-
श्यादिः ॥

(८७) कुमुद शर्करा न्यग्रोध इक्कट संकट कङ्कट
गर्त बीज परिवाप निर्यास शकट कच मधु शिरीष
अश्व अश्वत्थ बल्बज यवाष कूप विकङ्कत दश-
ग्राम—इति कुमुदादिः ॥

(८८) काश पाश अश्वत्थ पलाश पीयूक्षा चरण
वास नड वन कर्दम कच्छूल कङ्कट गुहा विस तृण
कर्पूर बर्बर मधुर ग्रह कपित्थ जतु सीपाल—इति
काशादिः ॥

(८९) तृण नड मूल वन पर्ण वर्ण वराण बिल
पुल फल अर्जुन अर्ण सुवर्ण बल चरण बस—
इति तृणादिः ॥

(९०) प्रेक्षा फलका (हलका) बन्धुका ध्रुवका
क्षिपका न्यग्रोध इक्कट कङ्कट (संकट) कट कूप
बुक पुक पुट मह परिवाप यवाष ध्रुवका गर्त
कूपक हिरण्य—इति प्रेक्षादिः ॥

(९१) अश्मन् यूथ ऊष मीन नद दर्भ बृन्द गुद
खण्ड नग शिखा कोट पाम कन्द कान्द कुल गह्व
गुड कुण्डल पीन गुह—इत्यश्मादिः ॥

(१२) सखि अग्रिदत्त वायुदत्त सखिदत्त (गो-
पिल) भल्लपाल (भल्ल पाल) चक्र चक्रवाक
छगल अशोक करवीर वासव वीर पूर वज्र कुशीरक
शीहर (सीहर) सरक सरस समर समल सुरस
रोह तमाल कदल सप्तल—इति सख्यादिः ॥

(१३) संकाश कपिल कश्मीर (समीर) सूरसेन
सरक सूर । 'सुपन्थिन्यन्थ च' । यूप (यूथ) (अंश)
अङ्ग नासा पलित अनुनाश अश्मन् कूट मलिन
दश कुम्भ शीर्ष चिरन्त (विरत) समल सीर
पञ्जर पन्थ नल रोमन् लोमन् पुलिन सुपरि कटिप
सकर्णक वृष्टि तीर्थ अगस्ति विकर नासिका—
इति संकाशादिः ॥

(१४) बल चुल नल दल वट लकुल उरल
पुख (पुल) मूल उलडुल (उल डुल) वन
कुल—इति बलादिः ॥

(१५) पक्ष तुक्ष तुष कुण्ड अण्ड कम्बलिका
वलिक चित्र अस्ति । 'पथिन्यन्थ च' ७९ । कुम्भ
सीरक सरक सकल सरस समल अतिश्वन् रोमन्
लोमन् हस्तिन् भ्रकर लोमक शीर्ष निवात पाक
सहक (सिंहक) अङ्कुश सुवर्णक हंसक हिंसक
कुत्स बिल खिल यमल हस्त कला सकर्णक—
इति पक्षादिः ॥

(१६) कर्ण वसिष्ठ अर्क अर्कलूष द्रुपद आनडुह्य
पाञ्चजन्य स्फिग (स्फिज्) कुम्भी कुन्ती जित्वन्
जीवन्त कुलिश आण्डीवत् (आण्डीवत) जव
जैत्र आकन (आनक)—इति कर्णादिः ॥

(१७) सुतङ्गम् मुनिचित विप्रचित महाचित महापुत्र
स्वन श्वेत गडिक (खडिक) शुक्र विग्र बीजावापिन्
(बीज वापिन्) अर्जुन श्वन् अजिर जीव खण्डित
कर्ण विग्रह ॥ इति सुतङ्गमादिः ॥

(१८) प्रगदिन् मगदिन् मददिन् कविल खण्डित
गदित चूडार मडार मन्दार कोविदार—इति
प्रगद्यादिः ॥

(१९) वराह पलाशा (पलाश) शेरिष (शिरीष)
पिनद्ध निबद्ध बलाह स्थूल विदग्ध (विजग्ध) विभग्

(निमग्न) बाहु खदिर शर्करा ॥ इति वराहादिः ॥

(१००) कुमुद गोमथ रथकार दशग्राम अश्वत्थ
शाल्मलि (शिरीष) मुनिस्थल कुण्डल कूट मधु-
कर्ण घासकुन्द शुचिकर्ण—इति कुमुदादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ८१. जनपदे लुप् १२९३ ।
सम-वा

लुप् ८३

यदि जनपद अभिधेय हो तो देशे
तन्नामि अर्थ में होने वाले चातुरर्थिक
प्रत्यय का लुप् हो जाता है ।
वरण आदि शब्दों से उत्पन्न
चातुरर्थिक प्रत्यय का लुप् हो जाता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८२. वरणादिभ्यश्च १३०१ ।
सम-वा, लुप्

(१०१) वरण शृङ्गी शाल्मलि शुण्डी शयाण्डी
पर्णी ताम्रपर्णी गोद आलिङ्ग्यायन जालपदी
(जानपदी) जम्बू पुष्कर चम्पा पम्पा वल्गु उज्जयनी
गया मथुरा तक्षशिला उरसा गोमती वलभी—इति
वरणादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ८३. शर्कराया वा १३०२ ।
सम-वा, लुप्

श-याः ८४

शर्करा शब्द से उत्पन्न चातुरर्थिक
प्रत्यय का विकल्प से लुप् हो
जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८४. ठक्छौ च १३०३ ।
सम-वा, श-याः

शर्कराशब्द से ठक् और छ चा-
तुरर्थिक प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८५. नद्यां मतुप् १३०४ ।
सम-वा

मनुप् ८६

यदि नदी अभिधेय हो तो चातुरर्थिक
मनुप् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८६. मध्वादिभ्यश्च १३०५ ।
सम-वा, मतुप्

मधु आदि शब्दों से चातुरर्थिक
मनुप् प्रत्यय होता है ।

(१०२) मधु विस स्थाणु वेणु कर्कन्धु शमी
करीर हिम किशरा शर्याण मरुत् वार्दाली शूर
इष्टका आसुति शक्ति आसन्दी शकल शलाका
आमिषी इक्षु रोमन् रुष्टि रुष्य तक्षशिला खड वट
वेत—इति मध्वादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ८७. कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् १३०६ ।
सम-वा * महिषाच्चेति वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८८. नडशादाड्ङ्वलच् १३०७ ।
सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ८९. शिकाया वलच् १३०८ ।
सम-वा

कुमुद नड वेतस शब्दों से
चातुरर्थिक ड्मतुप् प्रत्यय होता है ।
नड और शाद शब्द से चातुरर्थिक
ङ्वलच् प्रत्यय होता है ।
शिखा से चातुरर्थिक वलच् होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०. उत्करादिभ्यश्छः १३०९ ।
सम-वा

छः ११

उत्कर आदि शब्दों से चातुरथिक छ होता है ।

(१०३) उत्कर संफल शफर पिप्पल पिप्पली-
मूल अश्मन् सुवर्ण खलाजिन तिक कितव अणक
त्रैवण पिचुक अश्वत्थ काश क्षुद्र भस्त्रा शाल जन्या
अजिर चर्मन् उत्क्रोश क्षान्त खदिर शूर्पणाय श्याव-
नाय नैवाकव तृण वृक्ष शाक पलाश विजिगीषा
अनेक आतप फल संपर अर्क गर्त अग्नि वैराणक
इडा अरण्य निशान्त पर्ण नीचायक शङ्कर अवरोहित
क्षार विशाल वेत्र अरीहण खण्ड वातागर मन्त्रणार्ह
इन्द्रवृक्ष नितान्तवृक्ष (नितान्तावृक्ष) आर्द्रवृक्ष—
इत्युत्करादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११. नडादीनां कुक्च १३१० ।
सम-वा, छ

नड आदि से चातुरथिक छ प्रत्यय
तथा कुक् का आगम होता है ।

(१०४) नड प्लक्ष बित्त्व वेणु वेत्र वेतस इक्षु
काष्ठ कपोत तृण । 'क्रुच्चा हस्तत्वं च' ८० ।
'तक्षत्रलोपश्च' ८१ । इति नडादिः ।।

तद्धिते शैषिकप्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, १२. शेषे १३१२ ।
सम-वा

यहाँ से होने वाले प्रत्यय शेष में
होंगे । शेष का तात्पर्य अपत्याधिकार
तथा चातुरथिक से भिन्न है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३. राष्ट्रावारपारादघखौ १३१३ ।
सम-वा * अवारपाराद्विगृहीताद्विपरीताच्चेति वक्तव्यम् ।

राष्ट्र और अवारपार से क्रमशः घ
और ख होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १४. ग्रामाद्यखजौ १३१४ ।
सम-वा

ग्राम से य और ख होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५. कत्र्यादिभ्यो ढकञ् १३१५ ।
सम-वा

ढकञ् १६

कत्रि आदि शब्दों से ढकञ् होते
हैं ।

(१०५) कत्रि उम्भि पुष्कर पुष्कल मोदन कुम्भी
कुण्डिन नगरी माहिष्मती वर्मती उख्या ग्राम ।
'कुट्यायां यलोपश्च' ८२ । इति कत्र्यादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६. कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु १३१६
सम-वा, ढकञ्

श्वा असि अलङ्कार अर्थों में तथा
जातादि अर्थों में क्रमशः कुल कुक्षि
ग्रीवा शब्दों से ढकञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १७. नद्यादिभ्यो ढक् १३१७ ।
सम-वा

नदी आदि शब्दों से ढक् प्रत्यय
होता है ।

(१०६) नदी मही वाराणसी श्रावस्ती कौशाम्बी
वनकौशाम्बी (वनकोशाम्बी) काशपरी काशफारी
(काशफरी) खादिरी पूर्वनगरी पाठा माया शाल्वा
दार्वा सेतकी 'बडबाया वृषे' ८३ । इति नद्यादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १८. दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् १३१८ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १९. कापिण्याः षक् १३१९ ।

षक् १००

सम-वा

* बाह्व्युर्दिपदिभ्यश्चेति वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. रङ्गोरमनुष्येऽण्च १३२० ।। ५ ।।

सम-वा, षक्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् १३२१ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. कन्थायाष्ठक् १३२२ ।

कन्थायाः १०३

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. वर्णो वुक् १३२३ ।

सम-वा, कन्थायाः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. अव्ययात्यप् १३२४ ।

त्यप् १०५

सम-वा

* अमेहक्वतसित्रेभ्य एव ।

* त्यङ्गेर्ध्वे ।

* निसो गते ।

* अरण्याणाः ।

* दूरादेत्यः ।

* उत्तरादाहञ् ।

* आविष्ट्यस्योपसंख्यानं छन्दसि ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. ऐषमोह्यःश्चसोऽन्यतरस्याम् १३२५ ।

सम-वा, त्यप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. तीररूपोत्तरपदादञ्ज्यौ १३२७ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां जः १३२८ । दि-दात् १०८

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. मद्रेभ्योऽञ् १३२९ ।

अञ् १०९

सम-वा, दि-दात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात्

सम-वा, अञ्

१३३० ।

दक्षिणा पश्चात् पुरस् से शैषिक
त्यक् प्रत्यय होते हैं ।

कापिशी से शैषिक षक् होता
है ।

अमनुष्याभिवाची रङ्गु से शैषिक
अण् होता है और षक् भी ।

द्यु प्राच् अपाच् उदच् प्रत्यच् से
शैषिक यत् होता है ।

कन्था से शैषिक ठक् होता है ।

वर्णदेश में होने वाली कन्था से
शैषिक ठक् होता है ।

अव्यय से शैषिक् त्यप् प्रत्यय
होते हैं ।

ऐषमस् ह्यस् श्वस् से वैकल्पिक
त्यप् होता है ।

तीरोत्तर रूपोत्तर से क्रमशः अञ्
ज्य होते हैं ।

असंज्ञा में दिक्पूर्वपद से शैषिक
ज होता है ।

दिक्पूर्वपद मद्र शब्द से अञ् होता
है ।

बह्वच् अन्तोदात्त उदीच्य ग्रामवाची
शब्द से शैषिक अञ् प्रत्यय होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् १३३१ अण् ११३
सम-वा

प्रस्थोत्तरपद, पलदी आदि तथा
कोपध प्रातिपदिक से शैषिक अण्
प्रत्यय होता है ।

(१०७) पलदी परिषद् रोमक वाहीक कलकीट
बहुकीट जालकीट कमलकीट कमलकीकर कमल-
भिदा गौष्ठी नैकती परिखा शूरसेन गोमती पटच्चर
उदपान यकृल्लोम—इति पलद्यादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. कण्वादिभ्यो गोत्रे १३३२ ।
सम-वा, अण्

गोत्रे ११३

कण्वादि शब्दों से विहित गोत्र
प्रत्ययान्त शब्दों से शैषिक अण्
प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११२. इजश्च १३३३ ।
सम-वा, अण्, गोत्रे

इजः ११३

गोत्र में विहित इज् प्रत्ययान्त से
शैषिक अण् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. न द्रव्यचः प्राच्यभरतेषु १३३४ ।
सम-वा, अण्, गोत्रे,
इजः

प्राच्य भरत गोत्र में द्रव्यच् इजन्त
प्रातिपदिक से अण् नहीं होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. वृद्धाच्छः १३३७ ।
सम-वा

वृद्धात् ११८

वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक छ प्रत्यय
होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११५. भवतष्ठक्छसौ १३३९ ।
सम-वा, वृद्धात्

वृद्ध भवत् शब्द से शैषिक ठक्
छस् प्रत्यय होते हैं ।

ड्यात्, तद्धिताः, ११६. काश्यादिभ्यश्चिठौ १३४० ।
सम-वा, वृद्धात्

ठ-ठौ ११८

काशि आदि से शैषिक ठञ् जिठ्
प्रत्यय होते हैं ।

(१०८) काशि चेदि (वेदि) सांयाति संवाह
अच्युत मोदमान शकुलाद हस्तिकर्षू कुनामन् हिरण्य
करण गोवासन भारङ्गी अरिन्दम अरित्र देवदत्त
दशग्राम शौवावतान युवराज उपराज देवराज मोदन
सिन्धुमित्र दासमित्र सुधामित्र सोममित्र छागमित्र
साधमित्र (सधमित्र) 'आपदादिपूर्वपदात्कालान्तात्'
८४ । आपद् ऊर्ध्व तत्—इति काश्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ११७. वाहीकग्रामेभ्यश्च १३४१ ।
सम-वा वृद्धात् ठ-ठौ

वा-भ्यः ११८ वाहीक ग्राम वाची वृद्ध शब्दों से
ठञ् और जिठ् होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११८. विभाषोशीनरेषु १३४२ ।
सम-वा, वृद्धात्, ठ-
ठौ, वा-भ्यः

उशीनर स्थित वाहीक ग्राम वाची
वृद्ध शब्दों से विकल्प से ठञ् जिठ्
होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. ओर्देशे ठञ् १३४३ ।
सम-वा

ओः, ठञ्-१२० उवर्णान्त देशवाची शब्दों से शैषिक
देशे १४५ ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२०. वृद्धात्प्राचाम् १३४४ ।। ६ ।। वृद्धात् १२६

सम-वा, ओः, ठञ्,
देशे

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२१. धन्वयोपधाद्वुञ् १३४५ ।

सम-वा, देशे, वृ-
द्धात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२२. प्रस्थपुरवहान्ताच्च १३४६ ।

सम-वा, वुञ्, देशे,
वृद्धात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२३. रोपधेतोः प्राचाम् १३४७ ।

सम-वा, वुञ्, देशे,
वृद्धात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२४. जनपदतदवध्योश्च १३४८ ।

सम-वा, वुञ्, देशे,
वृद्धात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२५. अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् १३४९ अ-द्धात् १२६

सम-वा, वुञ्, देशे,
वृद्धात्, ज-ध्योः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२६. कच्छाग्निवक्त्रवर्तौत्तरपदात् १३५० ।

सम-वा, वुञ्, देशे,
वृद्धात्, अ-त्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२७. धूमादिभ्यश्च १३५१ ।

सम-वा, वुञ्, देशे

उवर्णान्त प्राग्देशवाची वृद्ध शब्दों
से ही शैषिक ठञ् होता है ।

धन्ववाची यकारोपध देशाभिधायी
वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक वुञ्
होता है ।

प्रस्थान्त पुरान्त वहान्त देशवाची
वृद्ध प्रातिपदिक से शैषिक वुञ्
होता है ।

रोपध ईकारान्त प्राग्देशवाची वृद्ध
शब्द से शैषिक वुञ् होता है ।

ज-ध्योः १२५ जनपद तथा तदवधि वाची वृद्ध
शब्द से शैषिक वुञ् होता है ।

अवृद्ध अथवा वृद्ध जनपद तथा
तदवधि वाची बहुवचन वाची प्राति-
पदिक से शैषिक वुञ् होता है ।
कच्छादि उत्तरपद वाले वृद्धावृद्ध
देशवाची शब्दों से शैषिक वुञ्
होता है ।

धूम आदि देशवाची प्रातिपादिक
से शैषिक वुञ् होता है ।

(१०९) धूम षडण्ड शशादन अर्जुनाव माहक
स्थली आनकस्थली माहिषस्थली मानस्थली अट्टस्थली
मद्रुकस्थली समुद्रस्थली दाण्डायनस्थली राजस्थली
विदेह राजगृह सात्रासाह शष्प मित्रवर्ध (मित्रवर्ध)
भक्षाली मद्रकूल आजीकूल द्व्यहव (द्व्याहाव)
त्र्यहव (त्र्याहाव) संस्फीय बर्बर वर्ज्य गर्त आनत
माठर पाथेय घोष पल्ली आराज्ञी धार्तराज्ञी आवय
तीर्थ । 'कूलात्सौवीरेषु' ८५ । 'समुद्रान्नावि मनुष्ये
च' ८६ । कुक्षि अन्तरीप द्वीप अरुण उज्जयनी
पट्टार दक्षिणापथ साकेत—इति धूमादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२८. नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः १३५२ ।

सम-वा, वुञ्, देशे

यदि कुत्सन और प्रावीण्य गम्यमान
हो तो नगर शब्द से शैषिक वुञ्
होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२९. अरण्यान्मनुष्ये १३५३ ।
सम-वा, वुञ्, देशे * पथ्यध्यायन्यायविहारमनुष्यहस्तिष्विति वक्तव्यम् ।
* वा गोमयेषु ।

यदि मनुष्य अभिधेय हो तो अरण्य से शैषिक वुञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३०. विभाषा कुरुयुगंधराभ्याम् १३५४ ।
सम-वा, वुञ्, देशे
ङ्या-त्, तद्धिताः, १३१. मद्रवृज्योः कन् १३५५ ।
सम-वा, देशे

कुरु युगंधर शब्दों से शैषिक वुञ् होता है ।

मद्र वृजि शब्दों से शैषिक कन् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३२. कोपधादण् १३५६ ।
सम-वा, देशे

अण् १३३

कोपध प्रातिपदिक से शैषिक अण् प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३३. कच्छादिभ्यश्च १३५७ ।
सम-वा, देशे, अण्

क-भ्यः १३४

कच्छ आदि देशवाची शब्दों से शैषिक अण् होता है ।

(११०) कच्छ सिन्धु वर्णु गन्धार मधुमत् कम्बोज
कश्मीर साल्व कुरु अनुषण्ड द्वीप अनूप अजवाह
विजापक कलूतर रङ्गु—इति कच्छादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३४. मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ् १३५८ ।
सम-वा, देशे, क-
भ्यः

म-योः १३५
वुञ् १३६

मनुष्य और मनुष्यस्थ (जात आदि) प्रत्ययार्थ रहने पर कच्छ आदि शब्दों से शैषिक वुञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३५. अपदातौ साल्वात् १३५९ ।
सम-वा, देशे, वुञ्,
म-योः

साल्वात् १३६

यदि पदाति का प्रयोग न हो तो मनुष्य और मनुष्यस्थ अर्थ में साल्व शब्द से वुञ् हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३६. गोयवाग्वोश्च १३६० ।
सम-वा, देशे, वुञ्,
साल्वात्

यदि गो और यवागू विवक्षित हो तो जातादि में साल्व से वुञ् हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३७. गर्तोत्तरपदाच्छः १३६१ ।
सम-वा, देशे

छः ४/३/१

गर्तोत्तर देशवाची शब्दों से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३८. गहादिभ्यश्च १३६२ ।
सम-वा, देशे, छः

गह आदि शब्दों से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।

(१११) गह अन्तस्थ सम विषय । 'मध्य मध्यमं चाण्चरणे' ८७ । उत्तम अङ्ग वङ्ग मगध पूर्वपक्ष अपरपक्ष अधमशाख उत्तमशाख एकशाख समान-शाख समानग्राम एकग्राम एकवृक्ष एकपलाश इष्वग्र इष्वनीक अवस्यनन्दन कामप्रस्थ शाडिकाडायनि (खाडायन) काठेरणि लावेरणि सौमित्रि शैशारि आसुत् दैवशर्मि श्रौति आहिसि आमित्रि व्याडि

वैजि आध्यश्चि आनृशसि (आनृशांसि) शौङ्गि
आग्निशर्मि भौजि वाराटकि वाल्मिकि (वाल्मीकि)
क्षेमवृद्धि आश्वत्थि औद्गाहमानि ऐक बिन्दवि दन्ताग्र
हंस तत्वग्र (तन्त्वग्र) उत्तर अन्तर (अनन्तर)
'मुखपार्श्वतसोलोपः' ८८ । 'जनपरयोः कुक्च' ८९ ।
'देवस्य च' ९० । 'वेणुकादिभ्यश्छण्' ९१ । इति
गहादिः ॥ आकृतिगणः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३९. प्राचां कटादेः १३६३ ।

सम-वा, देशे, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४०. राज्ञः क च १३६४ । ॥ ७ ॥

सम-वा, देशे, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४१. वृद्धादकेकान्तखोपधात् १३६५ । वृद्धात् १४२

सम-वा, देशे, छः * अकेकान्तग्रहणे कोपधग्रहणं सौसुकाद्यर्थम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४२. कन्थापलदनगरग्रामहृदोत्तरपदात्

सम-वा, देशे, छः, १३६६ ।

वृद्धात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४३. पर्वताच्च १३६७ ।

पर्वतात् १४४

सम-वा, देशे, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४४. विभाषाऽमनुष्ये १३६८ ।

सम-वा, देशे, छः,

पर्वतात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४५. कृकणपर्णाद्भारद्वाजे १३६९ ।

सम-वा, देशे, छः

तेन सास्मिन्ठञ्क्रमादिभ्यो जनपदे

द्युप्रागपागधन्ववृद्धात्पञ्च ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १. युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् १३७० । यु-दोः ३

सम-वा, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, २. तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ १३७१ । त-णि ३

सम-वा, यु-दोः

प्राग्देशवाची कट आदि वाले शब्दों

से शैषिक छ प्रत्यय होता है ।

राजन् शब्द से ककारान्तादेश तथा
छ होता है ।

अक इक अन्तवाले खकारोपध
वृद्ध देश वाची शब्दों से शैषिक
छ होता है ।

कन्था पलद नगर ग्राम हृद यदि
उत्तर पद में हों तो वृद्ध प्रातिपदिक
से शैषिक छ होता है ।

पर्वत शब्द से शैषिक छ होता
है ।

यदि अमनुष्य वाच्य हो तो पर्वत
से वैकल्पिक छ होता है ।

भारद्वाज देशवाची कृकण और पर्ण
शब्द से शैषिक छ होता है

युष्मद् और अस्मद् शब्द से शैषिक
खञ् और छ तथा अण् प्रत्यय
होते हैं ।

युष्मद् और अस्मद् से यदि खञ्
और अण् हों तो उन्हें युष्माक
और अस्माक आदेश हो जाते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३. तवकममकावेकवचने १३७२ ।

सम-वा, यु-दोः, त-
णि

ड्या-त्, तद्धिताः, ४. अर्धाद्यत् १३७४ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ५. परावराधमोत्तमपूर्वाच्च १३७५ ।

सम-वा, अर्धात् यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६. दिक्पूर्वपदाद्भुञ्ज १३७६ ।

सम-वा, अर्धात् यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७. ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ १३७७ ।

सम-वा, अर्धात्,

दि-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८. मध्यान्मः १३७८ ।

सम-वा * (आदेशेति वक्तव्यम्)

* (अवोधसोलोपश्च)

ड्या-त्, तद्धिताः, ९. अ सांप्रतिके १३७९ ।

सम-वा, म-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०. द्वीपादनुसमुद्रं यञ् १३८० ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ११. कालाद्भुञ्ज १३८१ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १२. श्राद्धे शरदः १३८२ ।

सम-वा, कालात्,

ठञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३. विभाषा रोगातपयोः १३८३ ।

सम-वा, कालात्,

ठञ्, शरदः

ड्या-त्, तद्धिताः, १४. निशाप्रदोषाभ्यां च १३८४ ।

सम-वा, कालात्,

ठञ्, विभाषा

ड्या-त्, तद्धिताः, १५. श्वसस्तुट् च १३८५ ।

सम-वा, कालात्,

ठञ्, विभाषा

अर्धात् ७

यत् ६

दि-त् ७

मध्यात् ९

कालात् २४

ठञ् १५

शरदः १३

विभाषा १५

खञ् तथा अण् के यहाँ ही उन्हीं शब्दों को एकवचन में तवक ममक आदेश हो जाते हैं ।

अर्ध शब्द से शैषिक यत् प्रत्यय होता है ।

पर अवर अधम उत्तम पूर्ववाले अर्ध शब्द से शैषिक यत् प्रत्यय होता है ।

दिक्पूर्व अर्ध शब्द से शैषिक ठञ् और यत् होते हैं ।

ग्राम जनपदैक देशवाची दिक्पूर्व अर्ध शब्द से अञ् और ठञ् प्रत्यय होते हैं ।

मध्य शब्द से शैषिक म प्रत्यय होता है ।

साम्प्रतिक अर्थ में मध्य शब्द से अ प्रत्यय होता है ।

समुद्र समीपस्थ द्वीप शब्द से शैषिक यञ् होता है ।

काल विशेषवाची प्रातिपदिक से शैषिक ठञ् होता है ।

यदि श्राद्ध अभिधेय हो तो शरद् से ठञ् होता है ।

यदि रोग और आतप अभिधेय हो तो शरद् से वैकल्पिक ठञ् होता है ।

निशा और प्रदोष से विकल्पेन शैषिक ठञ् होता है ।

श्वः शब्द से विकल्पेन ठञ् होता है और तुट् का आगम होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६. संधिवेलाद्युनक्षत्रेभ्योऽण् १३८७ ।
सम-वा, कालात्

(११२) सन्धिवेला सन्ध्या अमावास्या त्रयोदशी
चतुर्दशी पञ्चदशी पौर्णमासी प्रतिपत् । 'संवत्सरा-
त्फलपर्वणोः' ९२ । इति सन्धिवेलादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १७. प्रावृष एण्यः १३८८ ।

सम-वा, कालात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १८. वर्षाभ्यष्टक् १३८९ ।

सम-वा, कालात्

ड्या-त्, तद्धिताः, १९. छन्दसि ठञ् ३४ ५० ।

सम-वा, कालात्,

व-भ्यः

ड्या-त्, तद्धिताः, २०. वसन्ताच्च ३४५१ । ।। १ ।।

सम-वा, कालात्,

छ-ञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, २१. हेमन्ताच्च ३४५२ ।

सम-वा, कालात्,

छ-ञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, २२. सर्वत्राणच तलोपश्च १३९० ।

सम-वा, कालात्,

हे-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, २३. सायंचिरंप्राहेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युल्लौ तुट् ट्यु तुट् २४

सम-वा, कालात् च १३९१ ।

* चिरपरुत्परारिभ्यस्तो वक्तव्यः ।

* अत्रादिपश्चाद्भिमच् ।

* अन्ताच्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २४. विभाषा पूर्वाह्नापराह्नाभ्याम् १३९२ ।

सम-वा, कालात्,

ट्यु-तुट्

शैषिकप्रत्ययार्थनिर्देशः

ड्या-त्, तद्धिताः, २५. तत्र जातः १३९३

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, २६. प्रावृषष्टप् १३९४ ।

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः

सन्धि वेला आदि शब्दों से एवं
कालवृत्ति ऋतु और नक्षत्र वाची
शब्दों से शैषिक अण् होता है ।

प्रावृष शब्द से शैषिक एण्य प्रत्यय
होता है ।

व-भ्यः १९

वर्षा शब्द से शैषिक ठक् प्रत्यय
होता है ।

छ-ञ् २१

वर्षा शब्द से वेद में शैषिक ठञ्
होता है ।

वसन्त शब्द से वेद में शैषिक
ठञ् होता है ।

हे-त् २२

हेमन्त शब्द से वेद में शैषिक
ठञ् होता है ।

भाषा और छन्द में भी हेमन्त से
अण् और त लोप होता है ।

सायं चिरं प्राहे प्रगे इन से तथा
अव्ययों से ट्यु और ट्युल् होते
हैं तथा तुट् का आगम भी होता
है ।

पूर्वाह्न और अपराह्न से विकल्पेन
ट्यु और ट्युल् प्रत्यय होते हैं
तथा तुट् का आगम होता है ।

तत्र ५१

जातः ३७

सप्तमीसमर्थ शब्दों से जात अर्थ
में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

सप्तम्यर्थ प्रावृष से ठप् प्रत्यय
होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २७. संज्ञायां शरदो वुञ् १३९५ ।

सं-यां २८

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः

ङ्या-त्, तद्धिताः, २८. पूर्वाह्णापराह्णाद्रामूलप्रदोषावस्कराद्गुन्

वुन् ३०

सम-वा, कालात्,

१४०१ ।

तत्र, जातः, सं-यां

ङ्या-त्, तद्धिताः, २९. पथः पन्थ च १४०२ ।

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः, वुन्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३०. अमावास्याया वा १४०३ ।

अ-याः ३१

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः, वुन्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३१. अ च १४०४ ।

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः, अ-याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३२. सिन्ध्वपकराभ्यां कन् १४०५ ।

सि-यां ३३

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३३. अणञौ च १४०६ ।

सम-वा, कालात्,

तत्र, जातः, सि-यां

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३४. श्रविष्ठाफलगुन्यनूराधास्वातितिष्यपुनर्वसु लुक् ३७

सम-वा, कालात्, हस्तविशाखाऽषाढाबहुलाल्लुक् १४०७

तत्र, जातः

* चित्रारेवतीरोहिणीभ्यः स्त्रियामुपसंख्यानम् ।

* फल्गुन्यषाढाभ्यां टानौ वक्तव्यौ ।

* श्रविष्ठाऽषाढाभ्यां छण्वक्तव्यः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३५. स्थानान्तगोशालखरशालाच्च १४१० ।

सम-वा, तत्र, जातः,

लुक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३६. वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा

सम-वा, तत्र, जातः,

१४११ ।

लुक्

ङ्या-त् तद्धिताः स- ३७. नक्षत्रेभ्यो बहुलम् १४१२ ।

म-वा तत्र जातः लुक्

यदि संज्ञा गम्यमान हो तो (स०)
शरद् से वुञ् होता है ।

संज्ञा एवं तत्र जातः अर्थ में पूर्वाह्ण
आदि से वुन् होता है ।

पथि शब्द से तत्र जातः अर्थ में
वुन् होता है तथा पथ को पन्थ
आदेश होता है ।

अमावास्या से वुन् विकल्प से होता
है ।

अमावास्या से ही तत्र जातः अर्थ
में अ भी होता है ।

सिन्धु और अपकर से तत्र जातः
अर्थ में कन् होता है ।

सिन्धु और अपकर से ही अण्
अञ् भी होते हैं ।

श्रविष्ठा आदि शब्दों से तत्र जातः
अर्थ में विहित प्रत्ययों का बाहुलकात्
लुक् होता है ।

स्थानान्त गोशाल खरशाल शब्दों
से जातार्थ में विहित प्रत्यय का
लुक् होता है ।

वत्सशाल अभिजित् अश्वयुक्
शतभिषज् शब्दों से जातार्थ में विहित
प्रत्यय का विकल्प से लुक् होता
है ।

नक्षत्रवाची शब्दों से जातार्थ में प्रत्यय
का बहुलतया लुक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३८. कृतलब्धक्रीतकुशलाः १४१३ ।
सम-वा, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, ३९. प्रायभवः १४१४ ।
सम-वा, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, ४०. उपजानूपकर्णोपनीवेष्टक् १४१५ ॥२॥
सम-वा, तत्र, प्रा-
वः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४१. संभूते १४१६ ।
सम-वा, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, ४२. कोशाड्ढञ् १४१७ ।
सम-वा, तत्र, सं-ते

ड्या-त्, तद्धिताः, ४३. कालात्साधुपुष्यत्यच्यमानेषु १४१८ । कालात् ५२
सम-वा, तत्र, सं-ते

ड्या-त्, तद्धिताः, ४४. उप्ते च १४१९ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४५. आश्वयुज्या वुञ् १४२० ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्, उप्ते

ड्या-त्, तद्धिताः, ४६. ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् १४२१ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्, उप्ते

ड्या-त्, तद्धिताः, ४७. देयमृणे १४२२ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४८. कलाप्यश्वत्थयवबुसाद्बुन् १४२३ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्, दे-णे

ड्या-त्, तद्धिताः, ४९. ग्रीष्मावरसमादुञ् १४२४ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्, दे-णे

ड्या-त्, तद्धिताः, ५०. संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् १४२५ ।
सम-वा, तत्र, का-
लात्, दे-णे, वुञ्

प्रा-वः ४०

सं-ते ४३

उप्ते ४६

दे-णे ५०

वुञ् ५०

सप्तमी समर्थ शब्दों से कृत लब्ध
क्रीत कुशल अर्थ में यथाविहित
प्रत्यय होता है ।

सप्तमी समर्थ से प्रायभव अर्थ में
यथाविहित प्रत्यय होता है ।

उपजानु उपकर्ण उपनीवि (सप्तमी
समर्थ) से प्रायभव अर्थ में ठक्
होता है ।

सप्तमीसमर्थ से संभूत अर्थ में
यथाविहित प्रत्यय होता है ।

संभूत अर्थ में कोश शब्द से
ढञ् प्रत्यय होता है ।

कालविशेषवाची सप्तमीसमर्थ शब्दों
से साधु पुष्यत् पच्यमान अर्थ में
यथाविहित प्रत्यय होता है ।

सप्तमीसमर्थ कालविशेषवाची शब्दों
से उप्त अर्थ में यथाविहित प्रत्यय
होता है ।

आश्वयुजी शब्द से उप्त अर्थ में
वुञ् प्रत्यय होता है ।

उप्त अर्थ में ग्रीष्म वसन्त शब्द
से वैकल्पिक वुञ् प्रत्यय होता
है ।

सप्तमीसमर्थ कालवाची शब्दों से
देय अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता
है, यदि देय ऋण हो ।

कालार्थ में कलापि अश्वत्थ यवबुस
शब्दों से देयम् ऋणम् अर्थ में
वुन् प्रत्यय होता है ।

देयम् ऋणम् अर्थ में ग्रीष्म अवरसम
शब्दों से वुञ् होता है ।

देयम् ऋणम् अर्थ में संवत्सर
आग्रहायणी शब्दों से ठञ् वुञ्
प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५१. व्याहरति मृगः १४२६ ।

सम-वा, तत्र, का-
लात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५२. तदस्य सोढम् १४२७ ।

सम-वा, का-लात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५३. तत्र भवः १४२८ ।

सम-वा

त-वः ७३.

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५४. दिगादिभ्यो यत् १४२९ ।

सम-वा, त-वः

यत् ५५

(११३) दिश् वर्ग पूग गण पक्ष धाय्य मित्र
मेधा अन्तर पथिन् रहस् अलीक उखा साक्षिन्
देश आदि अन्त मुख जघन मेघ यूथ ।
'उदकात्संज्ञायाम्' ९३ । ज्ञाय (न्याय) वंश केश
काल आकाश—इति दिगादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५५. शरीरावयवाच्च १४३० ।

सम-वा, त-वः, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५६. दृत्तिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ् १४३३ । ढञ् ५७

सम-वा, त-वः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५७. ग्रीवाभ्योऽण्च १४३४ ।

सम-वा, त-वः, ढञ्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५८. गम्भीराज्यः १४३५ ।

ज्यः ५९

सम-वा, त-वः * बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५९. अव्ययीभावाच्च १४३६ ।

अ-त् ६१

सम-वा, त-वः * परिमुखादिभ्य एवेव्यते ।

ज्यः

(११४) (वा० ग०) । परिमुख परिहनु पर्योष्ठ
पर्युलूखल परिसीर उपसीर उपस्थूण उपकलाप अनु-
पथ अनुपद अनुगङ्ग अनुतिल अनुसीत अनुसाय
अनुसीर अनुमाष अनुयव अनुयूप अनुवंश
प्रतिशाख—इति परिमुखादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६०. अन्तःपूर्वपदाङ् १४३७ ।। ३ ।। ठञ् ६१

सम-वा, त-वः, अ- * अध्यात्मादेष्टजिष्यते ।

त्

व्याहरति मृगः इस अर्थ में काल-
वाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय
होता है ।

तदस्य सोढम् इस अर्थ में कालवाची
शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता
है ।

तत्र भवः इस अर्थ में सप्तमीसमर्थ
शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता
है ।

दिगादि शब्दों से तत्र भवः अर्थ में
यत् प्रत्यय होता है ।

तत्र भवः अर्थ में शरीरावयववाची
शब्दों से यत् प्रत्यय होता है ।

दृत्ति कुक्षि कलशि वस्ति अस्ति
शब्दों से तत्रभवः अर्थ में ढञ् प्रत्यय
होता है ।

तत्रभवः अर्थ में ग्रीवा से अण् और
ढञ् होते हैं ।

गम्भीर से तत्रभवः अर्थ में ज्य प्रत्यय
होता है ।

तत्र भवः अर्थ में अव्ययीभाव संज्ञक
शब्दों से ज्य होता है ।

अन्तःपूर्व पद अव्ययीभाव से तत्र
भवः अर्थ में ठञ् होता है ।

(११५) (वा० ग०) । अध्यात्म अधिदेव
अधिभूत—इत्यध्यात्मादिः ।।

* मुखपार्श्वतसोरीयः ।

* कुग्जनस्य परस्य च ।

* भवार्थे तु लुग्वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६१. ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् १४४० ।

सम-वा, त-वः, अ-

त्, ठञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६२. जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः १४४१ ।

छः ६३

सम-वा, त-वः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६३. वर्गान्ताच्च १४४२ ।

व-त् ६४

सम-वा, त-वः, छः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् १४४३ ।

सम-वा, त-वः, व-

त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. कर्णललाटात्कनलंकारे १४४४ ।

सम-वा, त-वः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः तस्य-नः ७३

सम-वा, त-वः

१४४५ । व्या-मः ७३

ड्या-त्, तद्धिताः, ६७. बह्वचोऽन्तोदात्ताद्गुञ् १४४६ ।

ठञ् ६९

सम-वा, त-वः, त-

मः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. क्रतुयज्ञेभ्यश्च १४४७ ।

सम-वा, त-वः, त-

मः, ठञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. अध्यायेष्वेवर्षेः १४४८ ।

सम-वा, त-वः, त-

मः, ठञ्

ड्या-त् तद्धिताः स- ७०. पौरोडाशपुरोडाशात्ठन् १४४९ ।

म-वा, त-वः, त-मः

ड्या-त् तद्धिताः स- ७१. छन्दसो यदणौ १४५० ।

म-वा, त-वः, त-मः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. द्रव्यजृद्धाहणकप्रथमाध्वरपुरश्चरणनामा-

सम-वा, त-वः, त-

ख्याताद्गुक् १४५१ ।

मः

* नामाख्यातग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।

परि अनुपूर्वक ग्रामान्त अव्ययीभाव
से तत्र भवः अर्थ में ठञ् प्रत्यय
होता है ।

तत्र भवः अर्थ में जिह्वामूल और
अङ्गुलि शब्द से छ प्रत्यय होता है ।
वर्गान्त शब्द से तत्र भवः अर्थ में
छ प्रत्यय होता है ।

वर्गान्त शब्द से तत्र भवः अर्थ में
यत् ख छ प्रत्यय विकल्प से होते
हैं, यदि वर्गार्थि वर्णविषयक न हो ।
अलंकार वाच्य होने पर कर्ण ललाट
शब्द से कन् होता है ।

व्याखातव्य ग्रन्थ प्रतिपादक षष्ठ्यन्त
से तत्र भवः तथा व्याख्यान अर्थ
में यथाविहित होते हैं ।

व्याख्यातव्य अन्तोदात्त बह्वच्
प्रातिपदिक से भव व्याख्यान में
ठञ् होता है ।

व्याख्यातव्य क्रतु यज्ञ शब्द से
भव और व्याख्यान अर्थ में ठञ्
होता है ।

प्रवरवाची ऋषि शब्द से भव
व्याख्यान अर्थ में ठञ् होता है ।
(प्रत्ययार्थ विशेषण में ही)

पौरोडाश पुरोडाश से भव व्याख्यान
अर्थ में छन् होता है ।

भव व्याख्यान अर्थ में छन्दस् से
यत् और अण् होते हैं ।

द्रव्यच् ऋत् ब्राह्मण ऋच् प्रथम अध्वर
पुरश्चरण नाम और आख्यात से भव
व्याख्यान अर्थ में ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७३. अणुगयनादिभ्यः १४५२ ।

सम-वा, त-वः, त-

मः

(११६) ऋगयन पदव्याख्यान छन्दोमान
छन्दोभाषा छन्दोविचिति न्याय पुनरुक्त निरुक्त
व्याकरण निगम वास्तुविद्या क्षत्रविद्या अङ्गविद्या
विद्या उत्पात उत्पाद उद्याव संवत्सर मुहूर्त उपनिषद्
निमित्त शिक्षा भिक्षा—इत्युगयनादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७४. तत आगतः १४५३ ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७५. ठगायस्थानेभ्यः १४५४ ।

सम-वा, तत-तः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७६. शुण्डिकादिभ्योऽण् १४५५ ।

सम-वा, तत-तः

(११६) शुण्डिक कृकण स्थण्डिल उदपान उपल
तीर्थ भूमि तृण पर्ण—इति शुण्डिकादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७७. विद्यायोनिःसंबन्धेभ्यो वुञ् १४५६ ।

सम-वा, तत-तः

तत-तः ८२

तत आगतः इस अर्थ में यथाविहित
प्रत्यय होता है ।

आयस्थानवाची शब्दों से तत आगतः
अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

शुण्डिक आदि शब्दों से तत आगतः
अर्थ में अण् होता है ।

(११६) शुण्डिक कृकण स्थण्डिल उदपान उपल
तीर्थ भूमि तृण पर्ण—इति शुण्डिकादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७७. विद्यायोनिःसंबन्धेभ्यो वुञ् १४५६ ।

सम-वा, तत-तः

वि-भ्यः ७८

विद्या योनिः सम्बन्ध वाची शब्दों से
तत आगतः में वुञ् प्रत्यय होता
है ।

ऋकारान्त विद्यायोनिवाची शब्दों से
ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७८. ऋतष्ठञ् १४५७ ।

सम-वा, तत-तः,

वि-भ्यः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७९. पितुर्यच्च १४५८ ।

सम-वा, तत-तः,

ठञ्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८०. गोत्रादङ्गवत् १४५९ । ॥ ४ ॥

सम-वा, तत-तः

ठञ् ७९

तत आगतः अर्थ में पितृ शब्द से
यत् और ठञ् होते हैं ।

गोत्रप्रत्ययान्त शब्दों से तत आगतः
अर्थ में अङ्गवत् प्रत्ययविधि होती
है ।

हेतु और मनुष्य से वैकल्पिक रूप्य
प्रत्यय होता है ।

तत आगतः अर्थ में ही हेतु मनुष्य
से मयद् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८१. हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः १४६१ हे-भ्यः ८२

सम-वा, तत-तः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८२. मयद् च १४६२ ।

सम-वा, तत-तः,

हे-भ्यः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८३. प्रभवति १४६३ ।

सम-वा

प्र-ति ८४

ततः प्रभवति अर्थ में यथाविहित
प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८४. विदूराज्यः १४६४ ।

सम-वा, प्र-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८५. तद्गच्छति पथिदूतयोः १४६५ ।

तद् ८८

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८६. अभिनिष्क्रामति द्वारम् १४६६ ।

सम-वा, तद्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८७. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे १४६७ ।

अ-थे ८८

सम-वा, तद् * लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८८. शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः

सम-वा, तद्, अ-

१४६८ ।

थे * द्वन्द्वे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८९. सोऽस्य निवासः १४६९ ।

सोऽस्य १००

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९०. अभिजनश्च १४७० ।

अ-नः ९४

सम-वा, सोऽस्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९१. आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते १४७१ ।

सम-वा, सोऽस्य, अ-

नः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९२. शण्डिकादिभ्यो ज्यः १४७२ ।

सम-वा, सोऽस्य, अ-

नः

(११८) शण्डिक सर्वसेन सर्वकेश शक शट

रक शङ्ख बोध । इति शण्डिकादिः ।।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९३. सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणजौ १४७३ ।

सम-वा, सोऽस्य, अ-

नः

(११९) सिन्धु वर्णु मधुमत् कम्बोज साल्व

कश्मीर गन्धार किष्किन्धा उरसा दरद (दरद्)

गन्दिका । इति सिन्ध्वादिः ।।

(१२०) तक्षशिला वत्सोद्धरण कैर्मेदुर ग्रामणी

छगल क्रोष्टुकर्ण सिंहकर्ण संकुचित किंनर काण्डधार

पर्वत अवसान बर्बर कंस । इति तक्षशिलादिः ।।

विदूर शब्द से ज्य होता है ततः प्रभवति अर्थ में ।

तद्गच्छति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है, यदि विषय पन्था या दूत का हो ।

तत् अभिनिष्क्रामति इस अर्थ में यथाविधि प्रत्यय होते हैं, यदि द्वार तत् से गृहीत हो ।

अधिकृत्य कृते ग्रन्थे अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

द्वितीयासमर्थ शिशुक्रन्द आदि शब्दों से 'अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' अर्थ में छ प्रत्यय होता है ।

सोऽस्य निवासः इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

सोऽस्य निवासः इस अर्थ में अभिजन विषयक शब्दों से यथा-विहित प्रत्यय होता है ।

पर्वतवाची प्रथमान्त शब्द से आयुधजीवी के लिये छ प्रत्यय होता है ।

अभिजन अर्थ में शण्डिक आदि से ज्य प्रत्यय होता है ।

सोऽस्य अभिजनः अर्थ में सिन्धु आदि शब्दों से अण् तथा तक्षशिला आदि से अञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १४. तूदीसलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढज्य-
सम-वा, सोस्य, अ-
नः

कः १४७४ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५. भक्तिः १४७५ ।

भक्तिः १००

सम-वा, सोस्य

ड्या-त्, तद्धिताः, १६. अचित्ताददेशकालाड्ढक् १४७६ ।

सम-वा, सोस्य,

भक्तिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १७. महाराजाड्ढक् १४७७ ।

सम-वा, सोस्य,

भक्तिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १८. वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् १४७८ ।

सम-वा, सोस्य,

भक्तिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १९. गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् १४७९ ।

सम-वा, सोस्य,

भक्तिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समा-

सम-वा, सोस्य, नशब्दानां बहुवचने १४८० ।।५।।

भक्तिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. तेन प्रोक्तम् १४८१ ।

ते-म् १११

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण्

सम-वा, ते-म् १४८२ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः णिनिः १०६

सम-वा, ते-म् १४८३ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. कलापिवैशम्पायनान्तेवासिभ्यश्च १४८४

सम-वा, ते-म्,

णिनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु १४८५ ।

सम-वा, ते-म्,

णिनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. शौनकादिभ्यश्छन्दसि १४८६ ।

स-म-वा, ते-म्,

णिनिः

तूदी सलातुर वर्मती कूचवार शब्दों से अभिजन अर्थ में क्रमशः ढक् छण् ढञ् यक् प्रत्यय होते हैं ।

सोऽस्य भक्तिः इस अर्थ में प्रथमान्त से यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

देशकालभिन्न अचित्त वाची शब्दों से भक्ति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

सोस्य भक्तिः अर्थ में महाराज से ठञ् होता है ।

भक्ति अर्थ में वासुदेव अर्जुन से वुन् होता है ।

गोत्राख्य क्षत्रियाख्य शब्दों से भक्ति अर्थ में विकल्प से वुञ् होता है ।

जनपद समान शब्दों तथा जनपद-वालों से बहुवचन में भक्ति अर्थ में जनपदवत् प्रत्यय होते हैं ।

तेन प्रोक्तम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

तित्तिर वरतन्तु खण्डिक उख से तेन प्रोक्तम् अर्थ में छण् प्रत्यय होता है ।

ऋषिवाची काश्यप कौशिक से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि होता है ।

कलापि-अन्तेवासी तथा वैशम्पायन-अन्तेवासी वाचक शब्दों से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि होता है ।

पुराणप्रोक्त ब्राह्मण कल्पों में तेन प्रोक्तम् अर्थ में तृतीयासमर्थ से णिनि होता है ।

छन्द में शौनक आदि शब्दों से तेन प्रोक्तम् अर्थ में णिनि प्रत्यय होता है ।

(१२१) शौनक वाजसनेय शार्ङ्गरव शापेय शाष्पेय
खाडायन स्तम्भ स्कन्ध देवदर्शन रज्जुभार रज्जुकण्ठ
कठशाठ कषाय तल दण्ड पुरुषांसक (अश्वपेज) ।

इति शौनकादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. कठचरकाल्लुक १४८७ ।

सम-वा, ते-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. कलापिनोऽण् १४८८ ।

सम-वा, ते-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. छगलिनो ढिनुक् १४८९ ।

सम-वा, ते-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः भि-योः १११

सम-वा, ते-म् १४९० ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. कर्मन्दकृशाश्वादिनिः १४९१ ।

सम-वा, ते-म्, भि-

योः

ड्या-त्, तद्धिताः, ११२. तेनैकदिक् १४९२ ।

सम-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. तसिश्च १४९३ ।

सम-वा, तेन, ए-क्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. उरसो यच्च १४९४ ।

सम-वा, तेन, ए-क्

तसिः

ड्या-त्, तद्धिताः, ११५. उपज्ञाते १४९५ ।

सम-वा, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ११६. कृते ग्रन्थे १४९६ ।

सम-वा, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ११७. संज्ञायाम् १४९७ ।

सम-वा, तेन, कृते

ड्या-त्, तद्धिताः, ११८. कुलालादिभ्यो वुञ् १४९८ ।

सम-वा, तेन, कृते,

सं-म्

कठ चरक शब्द से प्रोक्त प्रत्यय
का लुक् होता है ।

कलापिन् से तेन प्रोक्तम् अर्थ में
अण् होता है ।

तेन प्रोक्तम् अर्थ में छगलिन् से
ढिनुक् होता है ।

भिक्षु नट सूत्र में क्रमशः पाराशर्य
तथा शिलालिन् से णिनि होता है
तेन प्रोक्तम् अर्थ में ।

भिक्षु नटसूत्र अभिधेय हो तो तेन
प्रोक्तम् अर्थ में कर्मन्द और कृशाश्च
से इनि होता है ।

तेन ११९ तृतीया समर्थ से एकदिक् अर्थ में

एकदिक् ११४ यथाविहित प्रत्यय होता है ।

तसिः ११४ एक दिक् अर्थ में तसि प्रत्यय भी
होता है ।

एकदिक् अर्थ में उरस् से यत्
और तसि होता है ।

तृतीयासमर्थ से उपज्ञात अर्थ में
यथाविहित प्रत्यय होता है ।

कृते ११९ तृतीया समर्थ से कृते ग्रन्थे अर्थ
में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

सं-म् ११९ यदि समुदाय से संज्ञा ज्ञात होती
हो तो तृतीयासमर्थ से कृत अर्थ
में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

कुलाल आदि से वुञ् होता है तेन
कृते संज्ञायाम् अर्थ में ।

(१२२) कुलाल वरुड चण्डाल निषाद कर्मार
सेना सिरिन्ध्र (सिरिध्र) सैरिन्ध्र देवराज पर्षत्

(परिषत्) वधू मधु रुरु रुद्र अनडुह (अनडुह)

ब्रह्मन् कुम्भकार श्वपाक । इति कुलालादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् १४९९ ।

सम-वा, तेन, कृते,

सं-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२०. तस्येदम् १५००

॥ ६ ॥ त-म् १३३

सम-वा

* पत्राद्वाहो ।

* वहेस्तुरणिट् च ।

* अग्नीधः शरणे रण् भत्वं च ।

* समिधामाधाने षेण्यण् ।

* चरणान्दर्माम्नाययोः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२१. रथाद्यत् १५०१ ।

र-त् १२२

सम-वा, त-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२२. पत्रपूर्वादञ् १५०२ ।

अञ् १२३

सम-वा, त-म्, र-

त्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२३. पत्राध्वर्युपरिषदश्च १५०३ ।

सम-वा, त-म्, अञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२४. हलसीराडुक् १५०४ ।

सम-वा, त-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. द्वन्द्वाद्बुन्वैरमैथुनिकयोः १५०५ ।

सम-वा, त-म् * वैरे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२६. गोत्रचरणाद्बुञ् १५०६ ।

सम-वा, त-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२७. सङ्खाङ्गलक्षणेष्वज्यजिजामण् १५०७ स-षु १२८

सम-वा, त-म् * घोषग्रहणमपि कर्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. शाकलाद्वा १५०८ ।

सम-वा, त-म्, स-

सु

क्षुद्रा भ्रमर वटर पादप से तेन कृतं संज्ञायाम् अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है ।

षष्ठी समर्थ से तस्य इदं के विषय में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

तस्येदं के विषय में रथ से यत् प्रत्यय होता है ।

वाहनवाचक शब्द के पूर्व में रहने पर रथ शब्द से अञ् होता है तस्येदं के विषय में ।

तस्येदं के विषय में वाहनवाची शब्दों तथा अध्वर्यु और परिषद् शब्द से अञ् प्रत्यय होता है ।

हलसीर शब्दों से तस्येदं के विषय में ठक् होता है ।

षष्ठ्यन्त द्वन्द्व से तस्येदं के अर्थ में वुन् होता है यदि वुन् वैर और मैथुनिक में प्रयुक्त हो ।

गोत्रप्रत्ययान्त तथा शाखाध्येतृ वाची शब्दों से तस्येदं के अर्थ में वुञ् होता है ।

सङ्ख अङ्ग लक्षण यदि प्रत्ययार्थ विशेषण हों तो तस्येदं के विषय में अजन्त यजन्त इजन्त शब्दों से अण् होता है ।

सङ्खादि विशेषण में तस्येदं के विषय में शाकल शब्द से विकल्पेन अण् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबहुचनटाञ्ज्यः
सम-वा, त-म् १५०९ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. न दण्डमाणवान्तेवासिषु १५१० ।
सम-वा, त-म्
ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. रैवतिकादिभ्यश्छः १५११ ।
सम-वा, त-म्

(१२३) रैवतिक स्वापिशि क्षैमवृद्धि गौरग्रीव
(गौरग्रीवि) औदमेघि औदवापि वैजवापि । इति
रैवतिकादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३२. कौपिञ्जलहास्तिपदादण् १५१२ ।
सम-वा, त-म्
ड्या-त्, तद्धिताः, १३३. आथर्वणिकस्येकलोपश्च १५१३ ।
सम-वा, त-म्

तद्धितेषु प्रोद्दीव्यतीयप्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३४. तस्य विकारः १५१४ । त-रः १६८
सम-वा
ड्या-त्, तद्धिताः, १३५. अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः १५१५ अ-ये १६८
सम-वा, त-रः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३६. बिल्वादिभ्योऽण् १५१६ ।
सम-वा, त-रः, अ-
ये

(१२४) बिल्व ब्रीहि काण्ड मुद्ग मसूर गोधूम
इक्षु वेणु गवेधुका कर्पासी पाटली कर्कन्धु कुटीर ।
इति बिल्वादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३७. कोपधाच्च १५१७ ।
सम-वा, त-रः, अ-
ये

ड्या-त्, तद्धिताः, १३८. त्रपुजतुनोः षुक् १५१८ ।
सम-वा, त-रः, अ-
ये

छन्दोग औक्थिक याज्ञिक बहुच नट शब्दों से ज्य होता है तस्येदं के विषय में ।

दण्डप्रधान माणव अन्तेवासिन् शब्द से वुञ् नहीं होता है ।
रैवतिक आदि शब्दों से छ होता है तस्येदं के विषय में ।

कौपिञ्जल हास्तिपद से अण् होता है तस्येदं के अर्थ में ।
तस्येदं के विषय में आथर्वणिक से अण् होता है तथा इक का लोप होता है ।

षष्ठीसमर्थ से विकार अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।
प्राणी ओषधि वृक्ष वाची शब्दों से अवयव और विकार में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।
बिल्व आदि शब्दों से अवयव और विकार अर्थ में अण् प्रत्यय होता है ।

ककारोपध शब्दों से विकार अवयव अर्थों में अण् होता है ।

त्रपु और जतु से विकार में अण् एवं षुक् का आगम होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३९. ओरञ् १५१९ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४०. अनुदात्तादेश्च १५२० ॥ ७ ॥

सम-वा, त-रः, अ-
ये, अञ्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४१. पलाशादिभ्यो वा १५२१ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, अञ्

(१२५) पलाश खदिर शिंशपा स्पन्दन पूलाक
करीर शिरीष यवास विकङ्कत । इति पलाशादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४२. शम्याः प्लञ् १५२२ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४३. मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः मयट् १५२३ । भा-योः १४४

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४४. नित्यं वृद्धशरादिभ्यः १५२४ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, मयट्, भा-योः

(१२६) शर दर्भ मृद् (मृत्) कुटी तृण सोम
बल्बज । इति शरादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४५. गोश्च पुरीषे १५२५ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, मयट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४६. पिष्टाच्च १५२६ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, मयट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४७. संज्ञायां कन् १५२७ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, मयट्, पिष्टात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४८. व्रीहेः पुरोडाशे १५२८ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, मयट्

अञ् १४१

उवर्णान्त से विकारावयव में अञ्
होता है ।

अनुदात्तादि प्रातिपदिक से विका-
रावयव में अञ् होता है ।

पलाश आदि से विकारावयव में
विकल्प से अञ् होता है ।

शमी से विकारावयव में प्लञ् होता
है ।

भाषा में भक्ष्याच्छादन वर्जित
विकारावयव में प्रकृति मात्र से
विकल्पेन मयट् होता है ।

वृद्ध एवं शरादि से भक्ष्याच्छादन-
वर्जित विकारावयव में नित्य मयट्
होता है ।

गो शब्द से पुरीष अर्थ में मयट्
होता है ।

पिष्टात् १४७

तस्य विकारः अर्थ में पिष्ट से नित्य
मयट् होता है ।

विकार तथा संज्ञा में पिष्ट से कन्
होता है ।

यदि विकार पुरोडाश हो तो व्रीहि
से मयट् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १४९. असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् १५२९ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, मयट्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५०. द्व्यचश्छन्दसि ३४५३ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, मयट्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५१. नोत्वद्वर्ध्बिल्वत् ३४५४ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, मयट्, द्वय-सि

ड्या-त् तद्धिताः स- १५२. तालादिभ्योऽण् १५३० ।

म-वा, त-रः, अ-ये

(१२७) 'तालाद्धनुषि' ९४ । बर्हिण इन्द्रालिश

(इन्द्रासिष) इन्द्रादृश इन्द्रायुध चय श्यामाक
पीयूषा । इति तालादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५३. जातरूपेभ्यः परिमाणे १५३१ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, अण्

ड्या-त् तद्धिताः स- १५४. प्राणिरजतादिभ्योऽञ् १५३२ ।

म-वा, त-रः, अ-ये

अञ् १५५

(१२८) रजत सीस लोह उदुम्बर नीप दारु
रोहितक विभीतक पीतदारु तीव्रदारु त्रिकण्टक
कण्टकार । इति रजतादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५५. जितश्च तत्प्रत्ययात् १५३३ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, अञ्

ड्या-त् तद्धिताः स- १५६. क्रीतवत्परिमाणात् १५३४ ।

म-वा, त-रः, अ-ये

ड्या-त् तद्धिताः स- १५७. उष्ट्राद्वुञ् १५३५ ।

म-वा, त-रः, अ-ये

वुञ् १५८

ड्या-त्, तद्धिताः, १५८. उमोर्णयोर्वा १५३६ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये, वुञ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५९. एण्या ङञ् १५३७ ।

सम-वा, त-रः, अ-

ये

विकारावयव में असंज्ञा रहने पर
तिल यव शब्द से मयट् होता
है ।

द्वय-सि १५१

छन्द में द्व्यच् शब्द से विकारावयव
में मयट् होता है ।

उत्वत् वर्ध् बिल्व से मयट् नहीं
होता है ।

अण् १५३

ताल आदि से विकारावयव में अण्
होता है ।

जातरूपवाची प्रातिपदिकों से
परिमाण में अण् होता है ।

प्राणिवाची एवं रजत आदि से
विकारावयव में अञ् होता है ।

विकारावयव प्रत्ययान्त जित् वाले
शब्दों से अञ् प्रत्यय होता है
विकारावयव में ।

विकारार्थ में परिमाण से क्रीतवत्
प्रत्यय होते हैं ।

उष्ट्र से विकारावयव में वुञ् प्रत्यय
होता है ।

विकारावयव अर्थ में उमा ऊर्णा
शब्द से विकल्पेन वुञ् होता है ।

एणी शब्द से विकारावयव में ङञ्
प्रत्यय होता है ।

ङ्या-त् तद्धिताः स- १६०. गोपयसोर्यत् १५३८ ॥ ८ ॥ यत् १६१
म-वा, त-रः, अ-ये

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६१. द्रोश्च १५३९ ।

द्रोः १६२

सम-वा, त-रः, अ-
ये, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६२. माने वयः १५४० ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, द्रोः

ङ्या-त् तद्धिताः स- १६३. फले लुक् १५४१ ।

फले १६७

म-वा, त-रः, अ-ये

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६४. प्लक्षादिभ्योऽण् १५४२ ।

अण् १६५

सम-वा, त-रः, अ-
ये, फले

(१२९) प्लक्ष न्यग्रोध अश्वत्थ इङ्गुदी शिग्रु

(रुरु) कक्षतु बृहती । इति प्लक्षादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६५. जम्बू वा १५४४ ।

ज-वा-वा १६६ फल धान्य होने पर जम्बू से विकल्पेन
अण् होता है ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, फले, अण्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६६. लुप् च १५४५ ।

लुप् १६७

सम-वा, त-रः, अ- * फलपाकशुषामुपसंख्यानम् ।

ये, फले, ज-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६७. हरीतक्यादिभ्यश्च १५४६ ।

सम-वा, त-रः, अ-
ये, फले, लुप्

फल वाच्य रहने पर हरीतकी आदि
से प्रत्यय का लुप् होता है ।

(१३०) हरीतकी कोशातकी नखरजनी शष्कण्डी
दाडी दोडी श्वेतपाकी अर्जुनपाकी द्राक्षा काला ध्वाक्षा
गभीका कण्टकारिकी पिप्पली चिम्पा (चिञ्चा)
शेफालिका इति हरीतक्यादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६८. कंसीयपरशव्ययोर्यजौ लुक्च १५४७

सम-वा, त-रः, अ-
ये

कंसीय परशव्य शब्दों से विकार
अर्थ में क्रमशः यज् अज् होते हैं
तथा छ यत् का लुक् होता है ।

युष्मद्धेमन्तात्संभूते ग्रामाद्धेतुतेन रथा-

त्पलाशादिभ्यो द्रोश्चाष्टौ ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

तद्धितेषु ठक् प्रत्ययः

ड्या-त्, तद्धिताः, १. प्राग्वहतेष्ठक् १५४८ ।

ठक् ७५

'तद्वहतिरथ युग प्रासङ्गम्' तक ठक् का अधिकार है ।

सम-वा

* पुष्पमूलेषु बहुलम् ।

* तदाहेति माशब्दादिभ्य उपसंख्यानम् ।

(१३१) (वा० ग०) । माशब्दः । नित्य-

शब्दः । कार्यशब्दः ॥ इति माशब्दादिः ॥

* आहौ प्रभूतादिभ्यः ।

(१३२) (वा० ग०) प्रभूत पर्याप्त । इति

प्रभूतादिः ।

* पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः ।

(१३३) (वा० ग०) । सुस्नात सुखरात्रि

सुखशयन । इति सुस्नातादिः ॥

* गच्छतौ परदारादिभ्यः ।

(१३४) (वा० ग०) परदार गुरुतल्प । इति

परदारादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, २. तेन दीव्यति खनति जयति जितम् १५५० तेन २७

सम-वा, ठक्

तृतीयासमर्थ से दीव्यति खनति जयति जितम् अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३. संस्कृतम् १५५१ ।

सं-म् ४

तेन संस्कृतम् अर्थ में ठक् होता है ।

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ४. कुलुत्थकोपधादण् १५५२ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

सं-म्

संस्कृतम् अर्थ में कुलुत्थ तथा कोपध से अण् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५. तरति १५५३ ।

तरति ७

तेन तरति अर्थ में ठक् होता है ।

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ६. गोपुच्छाड् १५५४ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

तरति

तरति अर्थ में गोपुच्छ से ठक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७. नौद्व्यचष्ठन् १५५५ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

तरति

नौ और द्व्यच् शब्द से तरति अर्थ में ठक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८. चरति १५५६ ।

चरति ११

तेन चरति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ९. आकर्षात्ठल् १५५७ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

चरति

ड्या-त्, तद्धिताः, १०. पर्पादिभ्यः छन् १५५८ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

चरति

(१३५) पर्प अश्च अश्चत्थ रथ जाल न्यास

व्याल पाद । इति पर्पादिः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११. श्वगणाडुञ्च १५५९ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

चरति, छन्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२. वेतनादिभ्यो जीवति १५६२ ।

सम-वा, ठक्, तेन

(१३६) वेतन वाहन अर्धवाहन धनुर्दण्ड जाल

वेश उपवेश प्रेषण उपवस्ति सुख शय्या शक्ति

उपनिषद् उपदेश स्फिज् (स्फिज) पाद (उपस्थ)

उपस्थान उपहस्त । इति वेतनादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३. वस्नक्रयविक्रयाडुन् १५६३ ।

सम-वा, ठक्, तेन, * क्रयविक्रयग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।

जीवति

ड्या-त्, तद्धिताः, १४. आयुधाच्छ च १५६४ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

जीवति, ठन्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५. हरत्युत्सङ्गादिभ्यः १५६५ ।

सम-वा, ठक्, तेन

(१३७) उत्सङ्ग (उडुप) उत्पुत (उत्पन्न) उत्पुट

पिटक पिटाक । इत्युत्सङ्गादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १६. भस्त्रादिभ्यः छन् १५६६ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

हरति

(१३८) भस्त्रा भरट भरण शीर्षभार शीर्षेभार

अंसभार अंसेभार । इति भस्त्रादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १७. विभाषा विवधात् १५६७ ।

सम-वा, ठक्, तेन, * वीवधादपि ।

छन्, हरति

चरति अर्थ में आकर्ष से छल् होता है ।

छन् ११

पर्प आदि शब्दों से चरति अर्थ में छन् होता है ।

श्वगण से चरति अर्थ में ठक् छन् होते हैं ।

जीवति १४

तेन जीवति अर्थ में वेतन आदि शब्दों से ठक् होता है ।

ठन् १४

वस्न क्रय विक्रय शब्दों से जीवति अर्थ में ठन् होता है ।

जीवति अर्थ में आयुध से छ तथा ठन् होते हैं ।

हरति १८

तेन हरति अर्थ में उत्सङ्ग आदि शब्दों से ठक् होता है ।

छन् १७

हरति अर्थ में भस्त्रा आदि शब्दों से छन् होता है ।

विविध वीवध शब्द से हरति अर्थ में विकल्प से छन् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १८. अण्कुटिलिकायाः १५६८ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

हरति

ड्या-त्, तद्धिताः, १९. निर्वृत्तेक्षद्यूतादिभ्यः १५६९ ।

निर्वृत्ते २१

सम-वा, ठक्, तेन

हरति अर्थ में कुटिलिका से अण् होता है ।

तेन निर्वृत्तम् अर्थ में अक्षद्यूत आदि शब्दों से ठक् होता है ।

(१३९) अक्षद्यूत (जानुप्रहत) जङ्घाप्रहत
जङ्घाप्रहत पादस्वेदन कण्टकर्मर्दन गतानुगत गतागत
यातोपयात अनुगत । इत्यक्षद्यूतादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, २०. क्त्रेर्मग्नित्यम् १५७० । ॥ १ ॥

सम-वा, ठक्, तेन, * भावप्रत्ययान्तादिमब्वक्तव्यः ।

निर्वृत्ते

ड्या-त्, तद्धिताः, २१. अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ १५७१ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

निर्वृत्ते

ड्या-त्, तद्धिताः, २२. संसृष्टे १५७२ ।

संसृष्टे २५

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, २३. चूर्णादिनिः १५७३ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

संसृष्टे

ड्या-त्, तद्धिताः, २४. लवणाल्लुक् १५७४ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

संसृष्टे

ड्या-त्, तद्धिताः, २५. मुद्गादण् १५७५ ।

सम-वा, ठक्, तेन,

संसृष्टे

ड्या-त्, तद्धिताः, २६. व्यञ्जनैरुपसिक्ते १५७६ ।

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, २७. ओजःसहोऽम्भसा वर्तते १५७७ ।

वर्तते २९

सम-वा, ठक्, तेन

ड्या-त्, तद्धिताः, २८. तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् १५७८ । तत् ४६

सम-वा, ठक्, वर्तते

ड्या-त्, तद्धिताः, २९. परिमुखं च १५७९ ।

सम-वा, ठक्, तत्,

वर्तते

क्त्र प्रत्ययान्त शब्दों से निर्वृत्त अर्थ में नित्य मप् प्रत्यय होता है ।

निर्वृत्त अर्थ में अपमिति अयाचित शब्दों से क्रमशः कक् कन् होते हैं ।

तेन संसृष्टे अर्थ में ठक् होता है ।

संसृष्ट अर्थ में चूर्ण से इनि होता है ।

लवण से संसृष्ट अर्थ में प्रत्यय का लुक् होता है ।

संसृष्ट अर्थ में मुद्ग से अण् होता है ।

तेन उपसिक्तम् अर्थ में व्यञ्जनवाची शब्दों से ठक् होता है ।

तेन वर्तते अर्थ में ओजस् सहस् अम्भस् से ठक् होता है ।

द्वितीय समर्थ प्रति अनुपूर्वक ईप लोम कूल शब्दों से वर्तते अर्थ में ठक् होता है ।

तद्वर्तते अर्थ में परिमुख से ठक् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३०. प्रयच्छति गर्हाम् १५८० ।

प्र-यम् ३१

सम-वा, ठक्, तत् * वृद्धेर्वृधुषिभावो वक्तव्यः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३१. कुसीददशैकादशात्ष्ठञ्चौ १५८१ ।

सम-वा, ठक्, प्र-

यम्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३२. उञ्छति १५८२ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३३. रक्षति १५८३ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३४. शब्ददर्दुरं करोति १५८४ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३५. पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति १५८५ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३६. परिपन्थं च तिष्ठति १५८६ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३७. माथोत्तरपदपदव्यनुषदं धावति १५८७ । धावति ३८

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३८. आक्रन्दाड्डञ्च १५८८ ।

सम-वा, ठक्, तत्

धावति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३९. पदोत्तरपदं गृह्णाति १५८९ ।

गृह्णाति ४०

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४०. प्रतिकण्ठार्थललामं च १५९० ॥२॥

सम-वा, ठक्, तत्

गृह्णाति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४१. धर्मं चरति १५९१ ।

सम-वा, ठक्, तत् * अधर्माच्चेति वक्तव्यम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४२. प्रतिपथमेति ठञ्च १५९२ ।

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४३. समवायान्समवैति १५९३ ।

समवैति ४५

सम-वा, ठक्, तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४४. परिषदो ण्यः १५९४ ।

ण्यः ४५

सम-वा, ठक्, तत्

स-ति

तत् प्रयच्छति अर्थ में ठक् होता है, यदि तद्वाच्य गर्हाम् हो ।

प्रयच्छति गर्हाम् अर्थ में कुसीद दशैकादश से क्रमशः षन् षच् प्रत्यय होते हैं ।

तत् उञ्छति अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है ।

तत् रक्षति अर्थ में ठक् होता है ।

तत् करोति अर्थ में शब्द दर्दुर शब्द से ठक् होता है ।

तत् हन्ति अर्थ में पक्षिन् मत्स्य मृग से ठक् होता है ।

तत् तिष्ठति अर्थ में परिपन्थ से ठक् होता है ।

तद् धावति अर्थ में माथोत्तरपद तथा पदवी एवम् अनुपद शब्द से ठक् होता है ।

आक्रन्द शब्द से तद् धावति अर्थ में ठक् होता है ।

तद् गृह्णाति अर्थ में पदोत्तर पद से ठक् होता है ।

तद् गृह्णाति अर्थ में प्रतिकण्ठ अर्थ ललाम शब्दों से ठक् होता है ।

तत् चरति अर्थ में धर्म से ठक् होता है ।

तत् एति अर्थ में प्रतिपथ से ठक् होता है ।

तत् समवैति अर्थ में समवायवाची शब्दों से ठक् होता है ।

समवायान् समवैति अर्थ में परिषद् में ण्य होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४५. सेनाया वा १५९५ ।

सम-वा, ठक्, तत्,

स-ति, ण्यः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४६. संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति १५९६

सम-वा, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४७. तस्य धर्म्यम् १५९७ ।

सम-वा, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४८. अण्महिष्यादिभ्यः १५९८ ।

सम-वा, ठक्, तस्य,

धर्म्यम्

(१४०) महिषी प्रजापति प्रजावती प्रलेपिका
विलेपिका अनुलपिका पुरोहिता मणिपाली अनुवारक
(अनुचारक) होतृ यजमान । इति महिष्यादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४९. ऋतोऽञ् १५९९ ।

सम-वा, ठक्, तस्य, * नराच्चेति वक्तव्यम् ।

धर्म्यम् * विशसितुरिङ्लोपश्चाञ्च वक्तव्यः ।

* विभाजयितुर्णिङ्लोपश्चाञ्च वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५०. अवक्रयः १६०० ।

सम-वा, ठक्, तस्य

ड्या-त्, तद्धिताः, ५१. तदस्य पण्यम् १६०१ ।

सम-वा, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ५२. लवणाङ्गञ् १६०२ ।

सम-वा, ठक्, त-

य, प-म्

ड्या-त् तद्धिताः स- ५३. किसरादिभ्यः षन् १६०३ ।

म-वा, ठक्, प-म्,

त-य

(१४१) किसर नरद नलद स्थागल तगर गुग्गुल
उशीर हरिद्रा हरिद्रु पर्णी (पर्णी) । इति किस-
रादिः ।

ड्या-त् तद्धिताः स- ५४. शलालुनोऽन्यतरस्याम् १६०४ ।

म-वा, ठक्, त-य,

प-म्, षन्

समवायान् समवैति अर्थ में सेना-
शब्द से विकल्प से ण्य होता है ।

तत् पश्यति अर्थ में ललाट कुक्कुटी
शब्द से ठक् होता है, यदि संज्ञा
हो ।

त ५० ध ४९ तस्य धर्म्यम् अर्थ में ठक् होता
है ।

महिषी आदि शब्दों से तस्य धर्म्यम्
अर्थ में अण् होता है ।

तस्य धर्म्यम् अर्थ में ऋकारान्त
शब्दों से अञ् होता है ।

तस्य अवक्रयः अर्थ में ठक् होता
है ।

तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची
शब्दों से ठक् होता है, यदि
तद्वाची पण्य हो ।

तदस्य पण्यम् अर्थ में लवण से
ठक् होता है ।

षन् ५४ किसर आदि शब्दों से तदस्य पण्यम्
अर्थ में षन् होता है ।

तदस्य पण्यम् अर्थ में शलालु से
विकल्पेन षन् होता है

ड्या-त् तद्धिताः स- ५५. शिल्पम् १६०५ ।

शिल्पं ५६

म-वा, ठक्, त-य,

शिल्पम्

ड्या-त् तद्धिताः स- ५६. मङ्गुकझर्झरादन्यतरस्याम् १६०६ ।

म-वा, ठक्, त-य,

शिल्पम्

ड्या-त् तद्धिताः स- ५७. प्रहरणम् १६०७ ।

प्र-म् ५८

म-वा, ठक्, त-य

ड्या-त् तद्धिताः स- ५८. परश्वधाडुञ्च १६०८ ।

म-वा, ठक्, त-य,

प्रहरणम्

ड्या-त् तद्धिताः स- ५९. शक्तियष्ट्योरीकक् १६०९ ।

म-वा, ठक्, त-य

ड्या-त् तद्धिताः स- ६०. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः १६१० ।

म-वा, ठक्, त-य

॥ ३ ॥

ड्या-त् तद्धिताः स- ६१. शीलम् १६११

शीलं ६२

म-वा, ठक्, त-य

ड्या-त् तद्धिताः स- ६२. छत्रादिभ्यो णः १६१२ ।

म-वा, ठक्, त-य,

शीलम्

(१४२) छत्र शिक्षा प्ररोह स्था बुभुक्षा चुरा
तितिक्षा उपस्थान कृषि कर्मन् विश्वधा तपस् सत्य
अनृत विशिखा विशिका भक्षा उदस्थान पुरोडा
विक्षा चुक्षा मन्द्र । इति छत्रादिः ॥

ड्या-त् तद्धिताः स- ६३. कर्माध्ययने वृत्तम् १६१४ ।

कर्म-म् ६४

म-वा, ठक्, त-य

ड्या-त् तद्धिताः स- ६४. बह्वचूर्वपदाट्ठच् १६१५ ।

म-वा, ठक्, त-य,

कर्म-म्

ड्या-त् तद्धिताः स- ६५. हितं भक्षाः १६१६ ।

म-वा, ठक्, त-य

तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची शब्दों से ठक् होता है, यदि तद्वाची शिल्प होता हो ।

तदस्य शिल्पम् अर्थ में मङ्गुक झर्झर से विकल्पेन अण् होता है ।

तत् अस्य अर्थ में अस्यवाची से ठक् होता है यदि तद्वाची प्रहरण हो ।

प्रहरणम् अर्थ में परश्वध से ठक् ठक् दोनों होते हैं ।

तदस्य प्रहरणम् अर्थ में शक्ति यष्टि से ईकक् होता है ।

तत् अस्य इस अर्थ में अस्यवाची के साथ प्रयुक्त अस्ति नास्ति दिष्ट शब्दों से ठक् होता है, यदि तद्वाची मति हो ।

अस्य शीलम् अर्थ में अस्यवाची शब्दों से ठक् होता यदि तद्वाची शील हो ।

तदस्य शीलम् अर्थ में छत्र आदि शब्दों से ण होता है ।

तत् अस्य अर्थ में षष्ठ्यर्थ से ठक् होता है, यदि प्रथमार्थ कर्म हो तथा विषय अध्ययन हो ।

बह्वचूर्व प्रातिपदिक से ठक् होता है तदस्य कर्माध्ययने वृत्तम् अर्थ में ।

षष्ठ्यर्थ में ठक् होता है, यदि प्रथमार्थ हित एवं भक्ष हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६६. तदस्मै दीयते नियत (नियुक्त) म् १६१७ त-म् ६८
सम-वा, ठक्

ङ्या-त् तद्धिताः स- ६७. श्राणामांसौदनाट्टिठन् १६१८ ।

म-वा, ठक्, त-म् * मांसौदनग्रहणं संघातविगृहीतार्थम् ।

ङ्या-त् तद्धिताः स- ६८. भक्तादणन्यतरस्याम् १६१९ ।

म-वा, ठक्, त-म्

ङ्या-त् तद्धिताः स- ६९. तत्र नियुक्तः १६२० ।

म-वा, ठक्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७०. अगारान्ताड्डन् १६२१ ।

सम-वा, ठक्, तत्र,

नियुक्तः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७१. अध्यायिन्यदेशकालात् १६२२ ।

सम-वा, ठक्, तत्र

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७२. कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति

सम-वा, ठक्, तत्र

१६२३ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७३. निकटे वसति १६२४ ।

सम-वा, ठक्, तत्र

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७४. आवसथात्ठल् १६२५ ।

सम-वा, ठक्, तत्र,

वसति

तद्धितेषु प्राग्धितय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७५. प्राग्धिताद्यत् १६२६ ।

सम-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७६. तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् १६२७ ।

सम-वा, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७७. धुरो यड्ढकौ १६२८ ।

सम-वा, यत्, तत्,

वहति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७८. खः सर्वधुरात् १६३० ।

सम-वा, यत्, तत्,

वहति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७९. एकधुराल्लुक्च १६३१ ।

सम-वा, यत्, तत्,

वहति, खः

तत्र ७४

नि-त ७०

वसति ७४

यत् ५/१/४

तत् ८६

वहति ८२

खः ७९

तदस्मै दीयते विग्रह में अस्मै के अर्थ में ठक् होता है यदि तद्वाची नियत दिया जाता हो ।

तदस्मै दीयते नियतम् अर्थ में श्राणा मांसौदन शब्द से टिट्ठन् होता है । तदस्मै दीयते नियतम् अर्थ में भक्त से अण् होता है ।

तत्र नियुक्तः इस अर्थ में तत्रवाची शब्द से ठक् होता है ।

अगारान्त शब्दों से तत्रनियुक्तः अर्थ में ठन् होता है ।

सप्तमीसमर्थ देशकाल वाची शब्दों से ठक् होता है, यदि वाच्य अध्यायी हो ।

कठिनान्त प्रस्तार संस्थान शब्दों से तत्र व्यवहरति अर्थ में ठक् होता है ।

तत्र वसति अर्थ में निकट शब्द से ठक् होता है ।

आवसथ से तत्र वसति अर्थ में छल् होता है ।

तस्मै हितम् सूत्र तक यत् का अधिकार है ।

तद् वहति अर्थ में रथ युग प्रासङ्ग शब्द से यत् होता है ।

धुर शब्द से तद्वहति अर्थ में यत् ढक् होते हैं ।

सर्वधुरा शब्द से वहति अर्थ में ख होता है ।

एकधुरा शब्द से वहति अर्थ में ख होता है और लुक् हो जाता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८०. शकटादण् १६३२ ॥ ४ ॥

सम-वा, यत्, तत्,
वहति

वहति अर्थ में शकट से अण् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८१. हलसीराड् १६३३ ।

सम-वा, यत्, तत्,
वहति

हल सीर शब्द से वहति अर्थ में ठक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८२. संज्ञायां जन्याः १६३४ ।

सम-वा, यत्, तत्,
वहति

जनीशब्द से वहति अर्थ में यत् होता है यदि संज्ञा हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८३. विध्यत्यधनुषा १६३५ ।

सम-वा, यत्, तत्

विध्यति अर्थ में यत् होता है यदि साधन धनु न हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८४. धनगणं लब्धा १६३६ ।

लब्धा ८५

सम-वा, यत्, तत्

धन गण शब्दों से लब्धा अर्थ में यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८५. अत्राणः १६३७ ।

सम-वा, ठक्, यत्,
तत्, लब्धा

लब्धा अर्थ में अत्र से ण होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८६. वशं गतः १६३८ ।

सम-वा, यत्, तत्

गतः अर्थ में वश से यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८७. पदमस्मिन्दृश्यम् १६३९ ।

सम-वा, यत्

अस्मिन् दृश्यम् इस अर्थ पद से यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८८. मूलमस्याबर्हि १६४० ।

सम-वा, यत्

आबर्हि अस्य इस अर्थ में मूल से यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८९. संज्ञायां धेनुष्या १६४१ ।

सम-वा, यत्

संज्ञा में धेनुष्या निपातित होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९०. गृहपतिना संयुक्ते ज्यः १६४२ ।

सम-वा, यत्

तेन संयुक्ते इस अर्थ में गृहपति से ज्य होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९१. नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्ता-
र्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु

१६४३ ।

तृतीया समर्थ नौ वयस् धर्म विषमूल मूल सीता तुला शब्दों से क्रमशः तार्य तुल्य प्राप्य वध्य आनाम्य सम समित सम्मित अर्थों में यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९२. धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते १६४४ ।

सम-वा, यत्

पञ्चमीसमर्थ धर्म पथि अर्थ न्याय से अनपेत अर्थ में यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९३. छन्दसो निर्मिते १६४५ ।

निर्मिते ९४

सम-वा, यत्

तृतीया समर्थ छन्दस् से निर्मित अर्थ में यत् होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- ९४. उरसोऽण्च १६४६ ।

म-वा, यत्, नि-ते

ड्यात्, तद्धिताः, ९५. हृदयस्य प्रियः १६४७ ।

सम-वा, यत्

ड्या-त् तद्धिताः स- ९६. बन्धने चर्षी १६४८ ।

म-वा, यत्, ह-य

ड्या-त्, तद्धिताः, ९७. मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु १६४९ ।

सम-वा, यत्

तृतीया समर्थ उरस् से निर्मित अर्थ में अण् यत् होते हैं ।

हृदय शब्द से अस्य प्रियः अर्थ में यत् होता है ।

यदि बन्धन ऋषि हो तो षष्ठ्यन्त हृदय से यत् होता है ।

षष्ठ्यन्त मत जन हल से क्रमशः करण जल्प कर्ष अर्थ में यत् होता है ।

तत्र साधुः अर्थ में यत् प्रत्यय होता है ।

प्रतिजन आदि शब्दों से तत्र साधुः अर्थ में खञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९८. तत्र साधुः १६५० ।

सम-वा, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९९. प्रतिजनादिभ्यः खञ् १६५१ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

तत्र ११९

साधुः १०६

(१४३) प्रतिजन इदंयुग संयुग समयुग परयुग

परकुल परस्यकुल अमुष्यकुल सर्वजन विश्वजन

महाजन पञ्चजन । इति प्रतिजनादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. भक्ताणः १६५२ ।। ५ ।।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. परिषदो ण्यः १६५३ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. कथादिभ्यष्ठक् १६५४ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

तत्र साधुः अर्थ में भक्त से ण होता है ।

परिषद् से तत्र साधुः अर्थ में ण्य होता है ।

तत्र साधुः अर्थ में कथा आदि से ठक् होता है ।

(१४४) कथा विकथा विश्वकथा संकथा वितण्डा

कुष्टविद् (कुष्ठविद्) जनवाद जनेवाद जनोवाद

वृत्ति संग्रह गुण गण आयुर्वेद । इति कथादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. गुडादिभ्यष्ठञ् १६५५ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

तत्र साधुः अर्थ में गुड आदि से ठञ् होता है ।

(१४५) गुड कल्माष संक्तु अपूप मांसौदन इक्षु

वेणु संग्राम संघात (संक्राम संवाह) प्रवास निवास

उपवास । इति गुडादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्बज् १६५६ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. सभाया यः १६५७ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. ढश्छन्दसि ३४५५ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

साधुः, सभा

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. समानतीर्थे वासी १६५८ ।

सम-वा, यत्, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. समानादरे शयित ओ चोदात्तः १६५९ शयितः १०९

सम-वा, यत्, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. सोदराद्यः १६६० ।

सम-वा, यत्, तत्र,

शयितः

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. भवे छन्दसि ३४५६ ।

सम-वा, यत्, तत्र

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. पाथोनदीभ्यां ड्यण् ३४५७ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११२. वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ३४५८ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. स्रोतसो विभाषा ड्यङ्यौ ३४५९ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. सगर्भसयूथसनुताद्यन् ३४६० ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११५. तुग्रादघन् ३४६१ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११६. अग्राद्यत् ३४६२ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

तत्र साधुः अर्थ में पथि, अतिथि
वसति स्वपति से ढज् होता है ।

सभायाः १०६ सभा से तत्र साधुः अर्थ में य प्रत्यय
होता है ।

तत्र साधुः अर्थ में सभा से वेद में
ढ होता है ।

तत्र वासी अर्थ में समानतीर्थ से
यत् होता है ।

सप्तमीसमर्थ समानोदर शब्द से
शयित अर्थ में यत् होता है और
ओ उदात्त होता है ।

सोदर शब्द से शयित अर्थ में य
होता है ।

भवे ११८ तत्र भवः इस अर्थ में वेद में यत्
छन्दसि १४४ होता है ।

पाथस् और नदी शब्द से तत्र भवः
अर्थ में ड्यण् होता है वेद में ।

वेशन्त और हिमवन् से तत्र भवः
अर्थ में अण् होता है वेद में ।

स्रोतस् शब्द से तत्र भवः अर्थ में
विकल्प से ड्यत् ड्य होते हैं वेद
में ।

सगर्भ सयूथ सनुत से यन् होता है
वेद में ।

तुग्र से घन् होता है वेद में ।

अग्रात् ११७ अग्र से यत् होता है वेद में ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११७. घच्छौ च ३४६३ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे, अग्रात्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११८. समुद्राभ्राद्यः ३४६४ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०, भवे

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. बर्हिषि दत्तम् ३४६५ ।

सम-वा, यत्, तत्र,

छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२०. दूतस्य भागकर्मणी ३४६६ ॥६॥

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२१. रक्षोयातूनां हननी ३४६७ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२२. रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ३४६८

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२३. असुरस्य स्वम् ३४६९ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२४. मायायामण् ३४७०

सम-वा, यत्, अ-

य, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टिकासु लुक्च तद्वा-तोः १२६

सम-वा, यत्, छ०

मतोः ३४७१ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२६. अश्विमानण् ३४७२ ।

सम-वा, यत्, त-

तोः, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२७. वयस्यासु मूर्ध्नी मतुप् ३४७३ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. मत्वर्थे मासतन्वोः ३४७४ ।

सम-वा, यत्, छ० * मासतन्वोरनन्तरार्थे वा ।

* लुगकारेकाररेफाश्च ।

अग्र से यत् घ छ प्रत्यय होते हैं वेद में ।

समुद्र अभ्र से घ होता है भव अर्थ में वेद में ।

तत्र दत्तम् अर्थ में बर्हिष् से यत् होता है वेद में ।

भाग कर्म वाच्य होने पर दूत से अस्य इस अर्थ में यत् होता है वेद में ।

षष्ठी समर्थ रक्षस् यातु से हननी अर्थ में यत् होता है वेद में ।

षष्ठी समर्थ रेवती जगती हविष्या शब्द से प्रशस्य अर्थ में यत् होता है वेद में ।

अस्य स्वम् इस अर्थ में असुर से यत् होता है वेद में ।

असुर से माया में अण् होता है वेद में ।

वेद में यदि उपधान मन्त्र हों तो मत्वन्त प्रथमासमर्थ से यत् प्रत्यय हो आसाम् के अर्थ में । आसाम् से इष्टका अभिप्रेत होना चाहिये । मतुप् का लुक् भी होता है ।

अश्विमन् से अण् होता है वेद में ।

वयस्या में मूर्धन् शब्द से मतुप् होता है वेद में ।

मास तनु अर्थ में मतुप् के स्थान पर यत् होता है ।

अ-य १२४

म-र्थे १३२

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. मधोर्ज च ३४७५ ।

सम-वा, यत्, म-
र्थे, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. ओजसोऽहनि यत्खौ ३४७६ ।

सम-वा, यत्, म-
र्थे, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. वेशोयशआदेर्भगाद्यल् ३४७७ ।

सम-वा, यत्, म-
र्थे, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३२. ख च ३४७८ ।

सम-वा, यत्, म-
र्थे, छ०, वे-ल्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३३. पूर्वैः कृतमिनयौ च ३४७९ ।

सम-वा, यत्, छ०,
ख

ड्या-त्, तद्धिताः, १३४. अद्भिः संस्कृतम् ३४८० ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३५. सहस्रेण संमितौ घः ३४८१ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३६. मतौ च ३४८२ ।

सम-वा, यत्, स-
ण, छ०, घः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३७. सोममर्हति यः ३४८३ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १३८. मये च ३४८४ ।

सम-वा, यत्, सोम,
छ०, यः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३९. मधोः ३४८५ ।

सम-वा, यत्, छ०,
मये

ड्या-त्, तद्धिताः, १४०. वसोः समूहे च ३४८६ ॥ ७ ॥

सम-वा, यत्, छ०, * अक्षरसमूहे छन्दस उपसंख्यानम् ।

मये

ड्या-त्, तद्धिताः, १४१. नक्षत्रादघः ३४८७ ।

सम-वा, यत्, छ०

मत्वर्थ में मधु शब्द से ज और यत्
होते हैं वेद में ।

यदि अहन् वाच्य हो तो ओजस् से
मत्वर्थ में यत् और ख होते हैं वेद
में ।

वे-ल् १३२

वेशो यशस् आदि वाले भग से
यल् होता है वेद में ।

ख १३३

वेशो यशस् आदि वाले भग से
मत्वर्थ में यल् और ख दोनों होते
हैं वेद में ।

तेन कृतम् अर्थ में पूर्वशब्द से इन
य ख प्रत्यय होते हैं वेद में ।

स-ण, १३६

घः १३६

तेन संस्कृतम् अर्थ में अप् से यत्
होता है वेद में ।

संमिति अर्थ में सहस्र से घ होता
है वेद में ।

मत्वर्थ में सहस्र से घ होता है वेद
में ।

सोमं, १३८

यः १३८

मये १४०

अर्हति अर्थ में सोम से घ होता है
वेद में ।

मयट् के अर्थ में सोम से य होता
है वेद में ।

मधु शब्द से मयट् के अर्थ में यत्
होता है वेद में ।

वसु शब्द से समूह वाच्य में मयडर्थ
में भी यत् होता है वेद में ।

नक्षत्र से स्वार्थ में घ प्रत्यय होता
है वेद में ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १४२. सर्वदेवात्तातिल् ३४८८ ।

सम-वा, यत्, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १४३. शिवशमरिष्टस्य करे ३४८९ ।

सम-वा, यत्, ता-

ल, छ०

ड्या-त्, तद्धिताः, १४४. भावे च ३४९० ।

सम-वा, यत्, ता-

ल, छ०, शि-स्य

तातिल् १४४

शि-स्य १४४

सर्व और देव शब्द से स्वार्थ में तातिल् होता है वेद में ।

कर अर्थ में शिव शम् अरिष्ट से तातिल् होता है ।

भाव अर्थ में शिवादि शब्द से तातिल् होता है वेद में ।

प्राग्वहतेरपमित्यधर्म शीलं हलपरिषदो

रक्षोनक्षत्राच्चत्वारि ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य

चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

आर्हीये छयद्-विधि प्रकरणम्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १. प्राक् क्रीताच्छः १६६१ ।

छः ३६

स-वा, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २. उगवादिभ्यो यत् १६६२ ।

यत् ४

स-वा, यत्

तेन क्रीतम् सूत्र तक छ प्रत्यय का अधिकार है ।

उकारान्त तथा गो आदि शब्दों से प्राक्क्रीत अर्थ में छ प्रत्यय होता है ।

(१४६) गो हविस् अक्षर विष बर्हिस् अष्टका स्वदा युग मेधा स्रुच् । 'नाभि नभं च' ९५ । 'शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घत्वं तत्संनियोगेन चान्तोदात्तत्वम्' ९६ । 'ऊषसोऽनङ् च' ९७ । कूप खद दर खर असुर अध्वन् (अध्वन) क्षर वेद बीज दीस (दीप्त) ॥ इति गवादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३. कम्बलाच्च संज्ञायाम् १६६३ ।

स-वा, यत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४. विभाषा हविरपूपादिभ्यः १६६४ ।

स-वा, यत्

संज्ञा में कम्बल शब्द से प्राक्क्रीत अर्थ में यत् होता है ।

हविष्वाची तथा अपूप आदि शब्दों से प्राक्क्रीतार्थ में विकल्प से यत् होता है ।

(१४७) अपूप तण्डुल अभ्युष (कभ्यूष) [अभ्योष अवोष अभ्येष] पृथुक ओदन सूप पूष किण्व प्रदीप मुसल कटक कर्णवेष्टक [इर्गल] अर्गल । 'अन्नविकारेभ्यश्च' ९८ । यूप स्थूणा दीप अश्व पत्र ॥ इत्यपूपादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५. तस्मै हितम् १६६५ ।

स-वा, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६. शरीरावयवाद्यत् १६६६ ।

स-वा, छः, त-तं * यत्प्रकरणे रथाच्च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७. खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च १६६८ ।

स-वा यत् छः त-तं

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८. अजाविभ्यां थ्यन् १६६९ ।

स-वा, छः, त-तं

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९. आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्तः १६७० ।

स-वा, छः, त-तं * आचार्यदिणत्वं च ।

त-तम् ११

यत् ७

तस्मै हितम् अर्थ में यथाविहित (छ) प्रत्यय होता है ।

तस्मै हितम् अर्थ में शरीरावयव वाची शब्द से यत् होता है ।

खल यव माष तिल वृष ब्रह्मन् से तस्मै हितम् अर्थ में यत् होता है ।

तस्मै हितम् अर्थ में अजं अवि से थ्यन् होता है ।

आत्मन् विश्वजन तथा भोगोत्तरपद से तस्मै हितम् अर्थ में ख होता है ।

* पञ्चजनादुपसंख्यानम् ।

* सर्वजनादुञ् खञ् ।

* महाजनादुञ् ।

* कर्मधारयादेवेव्यते ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०. सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ १६७२ ।

स-वा, छः, त-तं * सर्वाणो वेति वक्तव्यम् ।

* पुरुषाद्वधविकारसमूहतेनकृतेष्विति वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११. माणवचरकाभ्यां खञ् १६७३ ।

स-वा, छः, त-तं

ड्या-त्, तद्धिताः, १२. तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ १६७४ ।

स-वा, छः

तद-तौ १५

ड्या-त्, तद्धिताः, १३. छदिरुपधिबलेर्ढञ् १६७५ ।

स-वा, छः, तद-तौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १४. ऋषभोपानहोर्ज्यः १६७६ ।

स-वा, छः, तद-तौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १५. चर्मणोऽञ् १६७७ ।

स-वा, छः, तद-तौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १६. तदस्य तदस्मिन्स्यादिति १६७८ ।

स-वा, छः

त-ति १७

ड्या-त्, तद्धिताः, १७. परिखाया ढञ् १६७९ ।

स-वा, छः, त-ति

आर्हीयः

ड्या-त्, तद्धिताः, १८. प्राग्वतेष्ठञ् १६८० ।

स-वा, छः

ठञ् ११४

ड्या-त्, तद्धिताः, १९. आर्हादिगोपुच्छसंख्यापरिमाणादुक् १६८१ ठक् ७१

स-वा, ठञ्, छः

ड्या-त्, तद्धिताः, २०. असमासे निष्कादिभ्यः १६८२ ॥१॥

स-वा ठञ् छः ठक्

(१४८) निष्क पण पाद माष वाह द्रोण षष्टि ॥

इति निष्कादिः ॥

* इत उर्ध्वं तु संख्यापूर्वपदानां तदन्तग्रहणं प्रा-
ग्वतेरिष्यते तच्चालुकि ।

सर्व और पुरुष से क्रमशः ण ढञ् होते हैं तस्मै हितम् अर्थ में ।

माणव चरक से तस्मै हितम् अर्थ में खञ् होता है ।

विकृति वाची शब्दों के लिये जब प्रकृतिवाची कहे जाय तो उनसे तस्मै हितम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

छदिष् उपधि बलि से तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ अर्थ में ढञ् होता है ।

ऋषभ उपानह से त० वि० प्र० अर्थ में ज्य प्रत्यय होता है ।

त० वि० प्र० अर्थ में चर्मन् से अञ् होता है ।

तत् अस्य स्यात्, तत् अस्मिन् स्यात् इस अर्थ में तद्वाची शब्द से यथाविहित प्रत्यय होता है ।

तत् स्यात् इस अर्थ में परिखा से ढञ् होता है ।

तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः सूत्रतक ठञ् का अधिकार है ।

तदर्हति सूत्रतक ठञ् के अन्तर्गत ठक् का अधिकार है, गोपुच्छ, संख्या परिमाण को छोड़कर ।

आर्हीय अर्थ में असमस्त निष्क आदि शब्दों से ठक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २१. शताच्च ठन्यतावशते १६८६ ।

सम-वा, ठञ्, छः,

ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २२. संख्याया अतिशदन्तायाः कन् १६८७ ।

स-वा ठञ् छः ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २३. वतोरिड्वा १६८८ ।

स-वा ठञ् छः ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २४. विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् १६८९

स-वा ठञ् छः ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २५. कंसाट्ठिठन् १६९० ।

स-वा ठञ् छः ठक् * अर्थाच्चेति वक्तव्यम् ।

* कार्षापिणाट्ठिठन्वक्तव्यः प्रतिरादेशश्च वा ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २६. शूर्पादजन्यतरस्याम् १६९१ ।

स-वा ठञ् छः ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २७. शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् १६९२

स-वा ठञ् छः ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, २८. अध्यर्धपूर्वद्विगौर्लुगसंज्ञायाम् १६९३ । अ-गोः ३५

स-वा ठञ् छः ठक्

लुक् ३१

ड्या-त्, तद्धिताः, २९. विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् १६९४ विभाषा ३१

स-वा, ठञ्, छः, * सुवर्णशतमानयोरूपसंख्यानम् ।

ठक्, अ-गो, लुक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ३०. द्वित्रिपूर्वात्रिष्कात् १६९५ ।

द्वि-त् ३१

स-वा ठञ् छः ठक् * बहुपवाच्चेति वक्तव्यम् ।

अ-गोः लुक् विभाषा

ड्या-त्, तद्धिताः, ३१. बिस्ताच्च १६९६ ।

स-वा, ठञ्, छः, * बहुपूर्वाच्च ।

ठक्, अ-गोः, लुक्

द्वि-त्, विभाषा

ड्या-त्, तद्धिताः, ३२. विंशतिकात्खः १६९७ ।

स-वा, ठञ्, छः,

ठक्, अ-गोः

ड्या-त्, तद्धिताः, ३३. खार्या ईकन् १६९८ ।

स-वा, ठञ्, छः, * केवलायाश्चेति वक्तव्यम् ।

ठक्, अ-गोः

आर्हीय में अशत वाच्य हो तो शत से ठन् यत् होते हैं ।

त्यन्त शदन्त को छोड़कर संख्या शब्दों से कन् होता है ।

आर्हीय अर्थ में वतु अन्त वाले संख्या शब्दों से कन् के साथ इट् भी विकल्प से होता है ।

असंज्ञा में विंशति त्रिंशत् से ड्वुन् होता है ।

आर्हीय अर्थ में कंस से टिठन् होता है ।

आर्हीय अर्थों में शूर्प से अञ् विकल्प से होता है ।

शतमान आदि शब्दों आर्हीय अर्थों में अण् होता है ।

अध्यर्धपूर्व तथा द्विगु से असंज्ञा में आर्हीय का लुक् होता है ।

अध्यर्धपूर्व द्विगु कार्षापण सहस्र शब्दों से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है ।

द्वि त्रि पूर्वक द्विगु निष्क से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है ।

द्वित्रि पूर्व विस्तान्त द्विगु से आर्हीय का विकल्प से लुक् होता है ।

अध्यर्धपूर्व द्विगु विंशतिक से आर्हीय ख प्रत्यय होता है ।

अध्यर्धपूर्व द्विगु खारी से आर्हीय अर्थ में ईकन् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३४. पणपादमाषशताद्यत् १६९९ ।

यत् ३६

स-वा, ठञ्, छः,

ठक्, अ-गोः

ड्या-त्, तद्धिताः, ३५. शाणाद्वा १७०० ।

शाणात् ३६

स-वा, ठञ्, छः,

ठक्, अ-गोः, यत्

ड्या-त् तद्धिताः स- ३६. द्वित्रिपूर्वादण्च १७०१ ।

वा, ठञ्, छः, ठक्,

अ-के, शा-त्, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ३७. तेन क्रीतम् १७०२ ।

स-वा, ठञ्, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ३८. तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ १७०४ । त-तौ ४१

स-वा, ठञ्, ठक् * वातपित्तश्लेष्मभ्यः शमनकोपयोरुपसंख्या-
नम् ।

* संनिपाताच्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३९. गोद्व्यचोऽसंख्यापरिमाणाश्चादेर्यत्

यत् ४०

स-वा, ठञ्, ठक्,

१७०५ ।

त-तौ

(१४०) अश्व अश्वन् गण ऊर्णा (उर्म) उमा

भङ्गा (गङ्गा) वर्षा वसु ॥ इत्यश्वादिः ॥

* ब्रह्मवर्चसादुपसंख्यानम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४०. पुत्राच्छ च १७०६

॥ २ ॥

स-वा, ठञ्, ठक्,

त-तौ, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४१. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणजौ १७०७ । स-जौ ४३

स-वा, ठञ्, ठक्,

त-तौ

ड्या-त् तद्धिताः स- ४२. तस्येश्वरः १७०८ ।

वा ठञ् ठक् स-जौ

ड्या-त्, तद्धिताः, ४३. तत्र विदित इति च १७०९ ।

त-दित ४४

स-वा, ठञ्, ठक्,

स-जौ

ड्या-त् तद्धिताः स- ४४. लोकसर्वलोकाद्वञ् १७१० ।

वा ठञ् ठक् त-दित

अध्यर्धपूर्व द्विगु पण पाद माष शत
से आर्हीय अर्थ में यत् प्रत्यय
होता है ।

आर्हीय अर्थ में अध्यर्धपूर्व द्विगु
शाण से यत् विकल्पेन होता है ।

द्वि त्रि पूर्वक शाण से आर्हीय
अर्थ में अण् तथा विकल्प से यत्
भी होता है ।

तेन क्रीतम् अर्थ में यथाविहित
प्रत्यय होता है ।

संयोग उत्पात में तस्य निमित्तम्
अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता
है ।

संख्या परिमाण अश्व आदि शब्दों
को छोड़कर गो तथा द्व्यच् शब्दों
से यत् होता है तस्य निमित्तं
संयोगोत्पातौ अर्थ में ।

तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ अर्थ में
पुत्र से छ और यत् होता है ।

तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ अर्थ में
सर्वभूमि पृथिवी से क्रमशः अण्
अञ् होता है ।

तस्य ईश्वरः अर्थ में सर्वभूमि पृथिवी
से अण् अञ् होता है ।

तत्र विदितः इस अर्थ में सर्वभूमि
पृथिवी शब्द से क्रमशः अण् अञ्
होता है ।

लोक सर्वलोक से तत्र विदितः
अर्थ में ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४५. तस्य वापः १७११ ।

त-पः ४६

स-वा, ठञ्, ठक्

ङ्या-त् तद्धिताः स- ४६. पात्रात्ठन् १७१२ ।

वा, ठञ्, ठक्, त-पः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४७. तदस्मिन्वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते त-ते ४९

स-वा, ठञ्, ठक्

१७१३ ।

* चतुर्थ्यर्थ उपसंख्यानम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४८. पूरणार्थाद्विन् १७१४ ।

ठन् ४९

स-वा, ठञ्, ठक्,

त-ते

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४९. भागाद्यच्च १७१५ ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

त-ते, ठन्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५०. तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः तत् ५५

स-वा, ठञ्, ठक्

१७१६ । हरति ५१

(१५०) वंश कुटज बल्वज मूल स्थूणा (स्थूण)

अक्ष अश्मन् अश्व श्लक्ष्ण इक्षु खट्वा ॥ इति

वंशादिः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५१. वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ १७१७ ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

तत्, हरति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५२. संभवत्यवहरति पचति १७१८ ।

स-ति ५५

स-वा, ठञ्, ठक्, * तत्पचतीति द्रोणादणच ।

तत्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५३. आढकाचितपात्रात्खोऽन्यतरस्याम् १७१९ आ-त् ५४

स-वा, ठञ्, ठक्,

तत्, स-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५४. द्विगोः छंश्च १७२० ।

द्वि-न् ५५

स-वा, ठञ्, ठक्,

तत्, स-ति, आ-त्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५५. कुलिजाल्लुक्खौ च १७२१ ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

तत्, स-ति, द्वि-न्

तस्य वापः इस अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

पात्र से छन् होता है तस्य वापः अर्थ में ।

वृद्धि आय लाभ शुल्क उपंदा (किसी) अर्थ में तदस्मिन् दीयते इस विग्रह में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

पूरणवाची शब्द तथा अर्द्धशब्द से तद्.....दीयते अर्थ में ठन् होता है ।

तद्.....दीयते अर्थ में भाग से यत् और ठन् होता है ।

वंश आदि पूर्व भार शब्द से हरति वहति आवहति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

हरति आदि अर्थों में वस्न द्रव्य से क्रमशः ठन् तथा कन् होता है ।

तत् संभवति अवहरति पचति अर्थों में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

संभवति अभ्यवहरति पचति अर्थों में द्वितीया समर्थ आढक आचित पात्र शब्द से विकल्प से ख होता है ।

संभवति आदि अर्थों में आढक आचित पात्रान्त द्विगु से छन् तथा विकल्प से ख होता है ।

कुलिजान्त द्विगु से संभवति आदि अर्थों में लुक् ख छन् विकल्प से होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५६. सोऽस्यांशवस्नभृतयः १७२२ ।

स-वा, ठञ्, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ५७. तदस्य परिमाणम् १७२३ ।

स-वा, ठञ्, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ५८. संख्यायाः संज्ञासंघसूत्राध्ययनेषु १७२४

स-वा, ठञ्, ठक्, * तत्र संज्ञायां स्वार्थे प्रत्ययो वाच्यः ।

तद-णम्

* स्तोमे डविधिः ।

* शनूशतोर्दिनिश्छन्दसि ।

* विंशतेश्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५९. पंक्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टि-

स-वा, ठञ्, ठक्, सप्तत्यशीतिनवतिशतम् १७२५ ।

तद-णम्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६०. पञ्चदशतौ वर्गे वा १७२६ ।। ३ ।। वर्गे ६१

स-वा, ठञ्, ठक्,

तद-णम्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६१. सप्तनोऽञ्छन्दसि ३४९१ ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

तद-णम्, वर्गे

ड्या-त्, तद्धिताः, ६२. त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां ङण्

स-वा, ठञ्, ठक्,

१७२७ ।

तद-णम्

ड्या-त्, तद्धिताः, स- ६३. तदर्हति १७२८ ।

वा, ठञ्, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. छेदादिभ्यो नित्यम् १७२९ ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

तद् अर्हति

तद् ७६

अर्हति ७१

नित्यं ६५

(१५१) छेद भेद द्रोह दोह नर्ति (नर्त) कर्ष

[तीर्थ] संप्रयोग विप्रयोग प्रयोग [विप्रकर्ष] प्रेषण

संप्रश्न विप्रश्न विकर्ष प्रकर्ष । 'विराग विरङ्गं च'

९९ । इति छेदादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. शीर्षच्छेदाद्यच्च १७३० ।

स-वा, ठञ्, ठक्,

तद्, अर्हति, नित्यम्

यत् ७०

सः अस्य इस अर्थ में अंश वस्न भृति से यथाविहित प्रत्यय होता है ।

तत् अस्य परिमाणम् अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

संज्ञा संघ सूत्र अध्ययन अर्थों में संख्यावाची शब्दों से सः अस्य परिमाणम् विग्रह में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

तदस्य परिमाणम् अर्थ में पंक्ति आदि शब्द निपातित होते हैं ।

यदि वर्ग अभिधेय हो तो तदस्य परिमाणम् अर्थ में पञ्चत् दशत् विकल्प से निपातित होते हैं ।

वेद में सप्तन् शब्द से वर्ग वाच्य रहने पर तदस्य परिमाणम् अर्थ में अञ् होता है ।

संज्ञा में त्रिंशत् चत्वारिंशत् शब्दों से तदस्य परिमाणम् अर्थ में ङण् प्रत्यय होता है, यदि ब्राह्मण अभिधेय हो ।

तत् अर्हति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।

नित्यम् अर्हति इस अर्थ में छेद आदि शब्दों से यथाविहित प्रत्यय होता है ।

नित्यम् अर्हति इस अर्थ में शीर्षच्छेद से यत् तथा यथाविहित प्रत्यय होते हैं

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. दण्डादिभ्यो यत् १७३१ ।
स-वा, ठञ्, ठक्,
तद्, अर्हति, यत्

(१५२) दण्ड मुसल मधुपर्क कशा अर्घ मेघ
मेघा सुवर्ण उदक वध युग गुहा भाग इभ भङ्ग ॥
इति दण्डादिः ।।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६७. छन्दसि च ३४९२ ।
स-वा, ठञ्, ठक्,
तद्, अर्हति, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. पात्राद्यंश्च १७३२ ।
स-वा, ठञ्, ठक्,
तद्, अर्हति, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. कडङ्करदक्षिणाच्छ च १७३३ ।
स-वा, ठञ्, ठक्,
तद्, अर्हति, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७०. स्थालीबिलात् १७३४ ।
स-वा, ठञ्, ठक्,
तद्, अर्हति, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७१. यज्ञत्विग्भ्यां घखजौ १७३५ ।
स-वा, ठञ्, ठक्, * यज्ञत्विग्भ्यां तत्कर्मर्हतीत्युपसंख्यानम् ।
तद्, अर्हति

ठञधिकारः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति १७३६
स-वा, ठञ्, तद्
ड्या-त्, तद्धिताः, ७३. संशयमापन्नः १७३७ ।

स-वा, ठञ्, तद्
ड्या-त्, तद्धिताः, ७४. योजनं गच्छति १७३८ ।
स-वा, ठञ्, तद् * क्रोशशतयोजनशतयोरुपसंख्यानम् ।
* ततोऽभिगमनमर्हतीति च वक्तव्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७५. पथः प्क्न् १७३९ ।
स-वा, ठञ्, तद्,
ग-ति

ड्या-त्, तद्धिताः, ७६. पन्थो ण नित्यम् १७४० ।
स-वा, ठञ्, पथः,
तद्, ग-ति

अर्हति अर्थ में दण्ड आदि शब्दों
से यत् होता है ।

तदर्हति अर्थ में शब्दमात्र से वेद में
यत् होता है ।

पात्र से तदर्हति अर्थ में घन् और
यत् होता है ।

तदर्हति अर्थ में कडङ्कर और दक्षिणा
से छ और यत् होता है ।

स्थालीबिल से तदर्हति अर्थ में छ
यत् होते हैं ।

यज्ञ और ऋत्विक् शब्द से तदर्हति
अर्थ में क्रमशः घ और खज होते
हैं ।

वर्तयति अर्थ में पारायण तुरायण
चान्द्रायण से ठञ् होता है ।

आपन्न अर्थ में संशय से ठञ् होता
है ।

गच्छति ७७

गच्छति अर्थ में योजन से ठञ्
होता है ।

पथः ७६

गच्छति अर्थ में पथिन् से प्क्न्
होता है ।

नित्यं गच्छति अर्थ में पथिन् से ण
प्रत्यय तथा पथिन् को पन्थ आदेश
होता है ।

ड्यात्, तद्धिताः, स- ७७. उत्तरपथेनाहतं च १७४१ ।

वा, ठञ्, ग-ति * आहतप्रकरणे वारिजङ्गलस्थलकान्तरपूर्वा-
दुपसंख्यानम् ।

* अजपथशङ्कुपथाभ्यां च ।

* मधुकमरीचयोरणस्थलात् ।

ड्यात्, तद्धिताः, ७८. कालात् १७४२ ।

स-वा, ठञ्

ड्यात्, तद्धिताः, ७९. तेन निर्वृत्तम् १७४३ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्यात्, तद्धिताः, ८०. तमधीष्टो भृतो भूतो भावी १७४४ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

॥ ४ ॥

ड्यात्, तद्धिताः, ८१. मासाद्वयसि यत्खजौ १७४५ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्यात्, तद्धिताः, ८२. द्विगोर्यप् १७४६ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

मा-त्, व-सि

ड्यात्, तद्धिताः, ८३. षण्मासाण्यच्च १७४७ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

यप्, व-सि

ड्यात्, तद्धिताः, ८४. अवयसि ठञ्श्च १७४८ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

ष-यत्

ड्यात्, तद्धिताः, ८५. समायाः खः १७४९ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्यात्, तद्धिताः, ८६. द्विगोर्वा १७५० ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

स-याः, खः

ड्यात्, तद्धिताः, ८७. रात्र्यहःसंवत्सराच्च १७५१ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

द्विगोः, खः, वा

ड्यात्, तद्धिताः, ८८. वर्षाल्लुक्च १७५३ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

द्विगोः, खः, वा

का-त् ९७

मा-त् ८२

वयसि ८३

यप् ८३

ष-यत् ८४

स-याः ८६

खः ८८

द्विगोः ८९

वा ८८

व-त् ८९

तेन आहतम् इस अर्थ में उत्तरपथ
से ठञ् होता है ।

यहाँ से आगे प्रातिपदिक के साथ
कालात् जुड़ा रहेगा ।

तेन निर्वृत्तम् अर्थ में कालवाची
शब्द से ठञ् होता है ।

तम् अधीष्टः भृतः भूतः भावी अर्थों
में कालवाचक शब्द से यथाविहित
प्रत्यय होता है ।

वयसि अर्थ में मास से यत् और
खञ् होते हैं ।

मासान्त द्विगु से वयसि अर्थ में
यप् होता है ।

वयसि अर्थ में षण्मास से ण्यत्
और यत् होते हैं ।

अवयसि अर्थ में षण्मास से ठन्
और ण्यत् होते हैं ।

तमधीष्टे आदि चारों अर्थों में समा
से ख होता है ।

समा शब्दान्त द्विगु से निर्वृत्त आदि
अर्थों में ख होता है ।

रात्रि अहः संवत्सरान्त द्विगु से
निर्वृत्तादि अर्थ में विकल्प से ख
होता है ।

वर्षान्त द्विगु से निर्वृत्तादि अर्थों में
विकल्प से ख होता है । पक्ष में
ठञ् होता है और लुक् भी होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८९. चित्तवति नित्यम् १७५५ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

द्विगोः, व-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९०. षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते १७५६ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९१. वत्सरान्ताच्छृण्वन्तसि ३४९३ ।

व-सि ९२

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९२. संपरिपूर्वात्ख च ३४९४ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

व-सि

ड्या-त्, तद्धिताः, ९३. तेन परिजय्यलभ्यकार्यसुकरम् १७५७ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९४. तदस्य ब्रह्मचर्यम् १७५८ ।

स-वा, ठञ्, का-त् * महानाम्यादिभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्य उपसंख्यानम् ।

(१५३) (वा० ग०) । महानाम्नी आदित्यव्रत
गोदान ॥ इति महानाम्यादिः ॥

* अवान्तरदीक्षादिभ्यो डेर्निर्वक्तव्यः ।

(१५४) (वा० ग०) । अवान्तरदीक्षा तिलव्रत
देवव्रत ॥ इत्यवान्तरदीक्षादिः ॥

* चतुर्मासाण्यो यज्ञे ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९५. तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः १७५९ ।

स-वा, ठञ्, का-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९६. तत्र च दीयते कार्यं भववत् १७६० । तत्र ९७

स-वा, ठञ्, का-त्

दी-म् ९८

ड्या-त्, तद्धिताः, ९७. व्युष्टादिभ्योऽण् १७६१ ।

स-वा, ठञ्, का-त्,

तत्र दी-म्

(१५५) व्युष्ट नित्य निष्क्रमण प्रवेशन [उप-
संक्रमण] तीर्थ [अस्तरण] संग्राम संघात ॥ इति
व्युष्टादिः ॥

* अग्निपदादिभ्य उपसंख्यानम् ।

(१५६) (वा० ग०) । अग्निपद पीलुमूल
(पीलू मूल) प्रवास उपवास ॥ इत्यग्निपदादिः ॥

आकृतिगणः ॥

प्रत्ययार्थ यदि चेतन हो तो वर्ष-
शब्दान्त द्विगु से निर्वृत्त आदि अर्थों
में नित्य लुक् होता है ।

षष्टिरात्रेण पच्यन्ते इस अर्थ में
षष्टिक निपातित होता है
वत्सरान्त शब्द से वेद में छ होता
है निर्वृत्तादि अर्थ में ।

सम् परि पूर्वक वत्सरान्त शब्द से
निर्वृत्तादि अर्थों में ख और छ वेद
में होता है ।

परिजय्य लभ्य कार्य सुकर अर्थों में
कालवाची शब्द से ठञ् होता है ।
अस्य ब्रह्मचर्यम् अर्थ में कालवाची
शब्द से ठञ् होता है ।

तस्य दक्षिणा अर्थ में यज्ञवाची शब्दों
से ठञ् होता है ।

तत्र दीयते कार्यम् अर्थ में कालवाची
शब्दों से 'तत्र भवः' के समान
प्रत्यय होते हैं ।

व्युष्ट आदि शब्दों से तत्र दीयते
कार्यम् अर्थ में अण् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १८. तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ १७६२
स-वा, ठञ्, दी-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १९. संपादिनि १७६३ ।

सं-नि १००

स-वा, ठञ्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १००. कर्मवेषाद्यत् १७६४ ॥ ५ ॥

स-वा, ठञ्, सं-नि

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०१. तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः १७६५ त-ति १०३

स-वा, ठञ्

(१५७) संताप संनाह संग्राम संयोग संपराय
[संवेशन] संपेष निष्पेष [सर्ग] निसर्ग विसर्ग
उपसर्ग प्रवास उपवास संघात संवेष संवास संमोदन
[सक्तु] 'मांसौदनाद्विगृहीतादपि' १०० । इति
संतापादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०२. योगाद्यच्च १७६६ ।

स-वा, ठञ्, त-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०३. कर्मण उकञ् १७६७ ।

स-वा, ठञ्, त-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०४. समयस्तदस्य प्राप्तम् १७६८ ।

त-य ११४

स-वा, ठञ्

प-म् १०७

ङ्या-त्, तद्धिताः स- १०५. ऋतोरण् १७६९ ।

ऋतोः १०६

वा ठञ् त-य प-म् * उपवस्त्रादिभ्य उपसंख्यानम् ।

यथाकथाच हस्त शब्दों से तेन दीयते कार्यम् अर्थ में ण और यत् होते हैं ।

तेन संपादिनि अर्थ में शब्दों से ठञ् होता है ।

कर्मन् और वेष शब्दों से तेन संपादिनि अर्थ में यत् होता है ।

संताप आदि शब्दों से तस्मै प्रभवति अर्थ में ठञ् होता है ।

तस्मै प्रभवति अर्थ में योग से यत् और ठञ् होते हैं ।

कर्मन् शब्द से तस्मै प्रभवति अर्थ में उकञ् होता है ।

तत् अस्य प्राप्तम् अर्थ में समय से ठञ् होता है ।

ऋतु शब्द से तत् अस्य प्राप्तम् अर्थ में अण् होता है ।

(१५८) (वा० ग०) । उपवस्तु प्राशित् ॥

इत्युपवस्त्रादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०६. छन्दसि घस् ३४९५ ।

स-वा, ठञ्, त-य,

प-म्, ऋतोः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०७. कालाद्यत् १७७० ।

कालात् १०८

स-वा, ठञ्, त-य,

प-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०८. प्रकृष्टे ठञ् १७७१ ।

स-वा, ठञ्, त-य,

कालात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०९. प्रयोजनम् १७७२ ।

प्र-म ११४

स-वा, ठञ्, त-य

तदस्य प्राप्तम् अर्थ में ऋतु शब्द से वेद में घस् होता है ।

काल शब्द से तदस्य प्राप्तम् अर्थ में यत् होता है ।

तदस्य अर्थ में प्रकृष्ट काल से ठञ् होता है ।

तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में ठञ् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११०. विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः १७७३
स-वा, ठञ्, त-य, * चूडादिभ्य उपसंख्यानम् ।
प्र-म्

(१५९) चूडा श्रद्धा ॥ इति चूडादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १११. अनुप्रवचनादिभ्यश्छः १७७४ । छः ११२
स-वा, ठञ्, त-य,
प्र-म्

विशाखा आषाढ से तदस्य प्रयोजनम्
अर्थ में यदि अभिधेय क्रमशः मन्थ
और दण्ड हो तो अण् होता है ।

तदस्य प्रयोजनम् अर्थ में अनुप्रवचन
आदि से छ प्रत्यय होता है ।

(१६०) अनुप्रवचन उत्थापन उपस्थापन संवेशन
प्रवेशन अनुप्रवेशन अनुवासन अनुवचन अनुवाचन
अन्वारोहण प्रारम्भण आरम्भण आरोहण ॥

इत्यनुप्रवचनादिः ॥

* (स्वर्गादिभ्यो यद्वक्तव्यः ।)

(१६१) (वा० ग०) । स्वर्गं यशस् आयुस्
काम धन ॥ इति स्वर्गादिः ॥

* पुण्याहवाचनादिभ्यो लुब्धक्तव्यः ।

(१६२) (वा० ग०) । 'पुण्याहवाचन
स्वस्तिवाचन शान्तिवाचन ॥ इति पुण्याह-
वाचनादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११२. समापनात्सपूर्वपदात् १७७५ ।
स-वा, ठञ्, त-य,
प्र-म्, छः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११३. ऐकागारिकट् चौरै १७७६ ।
स-वा, ठञ्, त-य,
प्र-म्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११४. आकालिकडाद्यन्तवचने १७७७ ।
स-वा, ठञ्, त-य, * आकालाट्टंश्च ।
प्र-म्

नञ्सन्नाधिकारः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११५. तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः १७७८ । वतिः ११८
स-वा
ङ्या-त्, तद्धिताः, ११६. तत्र तस्येव १७७९ ।
स-वा, वतिः
ङ्या-त्, तद्धिताः, ११७. तदर्हम् १७८० ।
स-वा, वतिः

सपूर्वपद समापन शब्द से तदस्य
प्रयोजनम् अर्थ में छ प्रत्यय होता
है ।

चौर के लिये ऐकागारिकट् निपातित
होता है ।

समानकालौ आद्यन्तौ अस्य अर्थ
में आकालिकट् निपातित होता है ।

तेन तुल्यम् अर्थ में यदि क्रिया
तुल्य हो तो वत् होता है ।

तत्र तस्य इव अर्थ में वत् प्रत्यय
होता है ।

तत् अर्हति अर्थ में वत् प्रत्यय
होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११८. उपसर्गच्छन्दसि धात्वर्थे ३४९६ ।
स-वा, वतिः

वेद में उपसर्ग से धात्वर्थसाधन में
वर्तमान शब्द से वत् प्रत्यय होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. तस्य भावस्त्वतलौ १७८१ ।
स-वा

तस्य-लौ १३६ तस्य भावः इस अर्थ में प्रातिपदिक
से त्व, तल् होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२०. आ च त्वात् १७८२ । ॥ ६ ॥
स-वा, त-लौ

ब्रह्मणस्त्वः (५.१.१३६) सूत्र
तक त्व तल् का अधिकार है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२१. न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणव-
स-वा, त-लौ टयुधकतरसलसेभ्यः १७८३ ।

चतुर संगत लवण वट युध कत
रस लस शब्दों को छोड़कर यहाँ
से त्व तल् से अतिरिक्त जो भाव
और कर्म में प्रत्यय होंगे वे नञ्पूर्व
तत्पुरुष से नहीं होंगे ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२२. पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा १७८४ ।
स-वा, त-लौ

इमनिच् १२४

तस्य भावः अर्थ में पृथु आदि
शब्दों से विकल्प से इमनिच् होता
है ।

(१६३) पृथु मृदु महत् पटु तनु लघु बहु साधु
आशु उरु गुरु बहुल खण्ड दण्ड चण्ड अकिञ्चन
बाल होड पाक वत्स मन्द स्वादु ह्रस्व दीर्घ प्रिय
वृष ऋजु क्षिप्र क्षुद्र अणु ॥ इति पृथ्वादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२३. वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् १७८७ ।

ष्यञ् १२४

वर्णविशेषवाची तथा दृढ आदि
शब्दों से तस्य भावः अर्थ में ष्यञ्
तथा विकल्प से इमनिच् होता है ।

स-वा, त-लौ, इम-
च्

(१६४) दृढ वृढ परिवृढ भृश कृश [वक्र]
शुक्र चुक्र आम्र [कृष्ट] लवण ताम्र शीत उष्ण
जड बधिर पण्डित मधुर मूर्ख मूक । 'वेर्यातलात-
मतिर्मनःशारदानाम्' १०१ । 'समा मतिमनसोः'
१०२ । जवन ॥ इति दृढादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२४. गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च

क-णि १३६

तस्य भावे, तस्य कर्मणि अर्थ में
गुणवचन एवं ब्राह्मण आदि शब्दों
से ष्यञ् होता है ।

स-वा, ष्यञ्, त-
लौ, इम-च्

१७८८ ।

(१६५) ब्राह्मण बाडव माणव । ('अर्हतो नुम्व')
१०३ । चोर धूर्त आराधय विराधय अपराधय
उपराधय एकभाव द्विभाव त्रिभाव अन्यभाव अक्षेत्रज्ञ
संवादिन् संवेशिवन् संभाषिन् बहुभाषिन् शीर्षघातिन्
विघातिन् समस्थ विषमस्थ परमस्थ मध्यमस्थ अनीश्वर

कुशल चपल निपुण पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ निश्चिन्
बालिश अलस दुःपुरुष कापुरुष राजन् गणपति
अधिपति गडुल दायाद विशस्ति विषम विपात
निपात । 'सर्ववेदादिभ्यः स्वार्थे' १०४ । 'चतु-
र्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च' १०५ । शौटीर ॥ आ-
कृतिगणोऽयम् । इति ब्राह्मणादिः ॥

* चतुर्वर्णादीनां स्वार्थ उपसंख्यानम् ।

(१६६) (वा० ग०) । चतुर्वर्ण चतुर्वेद
चतुराश्रम सर्वविद्य त्रिलोक त्रिखर षड्गुण सेना
अनन्तर संनिधि समीप उपमा सुख तदर्थ इतिह
मणिक ॥ इति चतुर्वर्णादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. स्तेनाद्यन्नलोपश्च १७९० ।

स-वा, त-लौ, क-
णि

ड्या-त्, तद्धिताः, १२६. सख्युर्यः १७९१ ।

स-वा त-लौ क-णि * दूतवणिग्भ्यां च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२७. कपिज्ञात्योर्ढक् १७९२ ।

स-वा त-लौ क-णि

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् १७९३ ।

स-वा त-लौ क-णि

(१६७) पुरोहित । 'राजाऽसे' १०६ । ग्रामिक
पिण्डिक सुहित बालमन्द (बाल मन्द) खण्डिक
दण्डिक वर्मिक कर्मिक धर्मिक शितिक (सूतिक
मूलिक तिलक) अञ्जलिक (अन्तलिक) [रूपिक
ऋषिक] पुत्रिक अविक छत्रिक पर्षिक पथिक चर्मिक
(प्रतिक) सारथि आस्तिक सूचिक संरक्षसूचक
(संरक्ष सूचक) नास्तिक [अजानिक शाक्वर नागर
चूडिक] ॥ इति पुरोहितादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्
स-वा त-लौ क-णि १७९४ ।

(१६८) उद्गातृ उन्नेतृ प्रतिहर्तृ प्रशास्तृ होतृ पोतृ
हर्तृ रथगणक पत्तिगणक सुष्ठु दुष्ठु अध्वर्यु वधू ।
'सुभग मन्त्रे' १०७ । इत्युद्गात्रादिः ॥

तस्य भावे कर्मणि अर्थ में स्तेन से
यत् प्रत्यय तथा न का लोप होता
है ।

भावकर्म में सखि शब्द से य होता
है ।

कपि और ज्ञाति से भावकर्म अर्थ
में ढक् होता है

भावकर्म में पत्यन्त तथा पुरोहित
आदि शब्दों से यक् प्रत्यय होता
है ।

प्राणभृज्जातिवाची वयोवचन तथा
उद्गातृ आदि शब्दों से भाव कर्म
अर्थ में अञ् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. हायनान्तयुवादिभ्योऽण् १७९५ । अण् १३१
स-वा त-लौ क-णि

हायनान्त एवं युवन् आदि शब्दों
से भाव कर्म में अण् होता है ।

(१६९) युवन् स्थविर होतृ यजमान । 'पुरुषासे'
१०८ । भ्रातृ कुतुक श्रमण (श्रमण) कटुक
कमण्डलु कुस्त्री सुस्त्री दुःस्त्री सुहृदय दुर्हृदय सुहृद्
दुर्हृद् सुभ्रातृ दुभ्रातृ वृषल, परिव्राजक सन्न्यासिनि
अनृशंस । 'हृदयासे' १०९ । कुशल चपल निपुण
पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ । ('श्रोत्रियस्य यलोपश्च')
११० ॥ इति युवादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. इगन्ताच्च लघुपूर्वात् १७९६ ।
स-वा, त-लौ, क-
णि, अण्

लघुपूर्व इगन्त प्रातिपदिक से
भावकर्म में अण् प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३२. योपधाद्गुरुपोत्तमाद्बुज् १७९७ । बुज् १३४
स-वा त-लौ क-णि

योपध गुरुपोत्तम प्रातिपदिक से
बुज् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३३. द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च १७९८ ।
स-वा, त-लौ, क-
णि, बुज्

द्वन्द्व संज्ञक एवं मनोज्ञ आदि शब्दों
से भाव कर्म में बुज् प्रत्यय होता
है ।

(१७०) मनोज्ञ प्रियरूप अभिरूप कल्याण
मेधाविन् आढ्य कुलपुत्र छान्दस छात्र श्रोत्रिय चोर
धूर्त विश्वदेव युवन् कुपुत्र ग्रामपुत्र ग्रामकुलाल ग्रामड
(ग्रामषण्ड) ग्रामकुमार सुकुमार बहुल (अवश्यपुत्र)
अमुष्यपुत्र अमुष्यकुल सारपुत्र शतपुत्र ॥ इति
मनोज्ञादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १३४. गोत्रचरणाच्छलाघात्याकारतदवेतेषु
स-वा, त-लौ, कर्म-
णि, बुज्

शलाघा अत्याकार तदवेत के विषय
में गोत्र वाचक चरणवाचक शब्दों
से भावकर्म में बुज् होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १३५. होत्राभ्यश्छः १८०० ।

वा, त-लौ, कर्म-णि

ऋत्विक् विशेषवाचक से भाव कर्म
में छ होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १३६. ब्रह्मणस्त्वः १८०१ ।
वा, त-लौ, कर्म-णि

भावकर्म में होतावाची ब्रह्मन् शब्द
से त्व होता है ।

प्राक्क्रीताच्छताच्च सर्वभूमिसप्तनोऽम्नासा-
त्तस्मै प्रभवति न नञ्पूर्वात्षोडश ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य प्रथमः

पादः ।

द्वितीयः पादः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १. धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् १८०२ । भव-त्रे ४
स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, २. ब्रीहिशाल्योर्ढक् १८०३ ।
स-वा, भ-त्रे

ड्या-त्, तद्धिताः, ३. यवयवकषष्टिकाद्यत् १८०४ । यत् ४
स-वा, भ-त्रे

ड्या-त्, तद्धिताः, ४. विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः १८०५
स-वा, भ-त्रे, यत्

ड्या-त्, तद्धिताः, ५. सर्वचर्मणः कृतः खखजौ १८०६ ।
स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ६. यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः १८०७ । खः १५
स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ७. तत्सवदिः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति तद् १७
स-वा, खः १८०८ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८. आप्रपदं प्राप्नोति १८०९ ।
स-वा, खः, तद्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९. अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु
स-वा, खः, तद् १८१० ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १०. परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति १८११ ।
स-वा, खः, तद्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११. अवारपारात्यन्तानुकामं गामी १८१२ ।
स-वा, खः, तद्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२. समांसमां विजायते १८१३ । वि-ते १३
स-वा, खः, तद् * खप्रत्ययानुत्पत्तौ यलोपो वा वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३. अद्यश्चीनाऽवष्टब्धे १८१४ ।
स-वा, खः, तद्,
वि-ते

क्षेत्रवाची भवन अर्थ में तस्य भवने
इस विग्रह में धान्यवाची शब्दों से
खञ् होता है ।

तस्य भवने अर्थ में ब्रीहिशालि से
ढक् होता है ।

तस्य भवने अर्थ में यव यवक षष्टिक
से यत् होता है ।

तस्य भवने अर्थ में तिल माष उमा
भङ्ग अणु से यत् विकल्प से होता
है ।

तेन कृतः अर्थ में सर्वचर्म से ख
खञ् होते हैं ।

तस्य दर्शनः अर्थ में यथामुख संमुख
से ख होता है ।

सर्वपूर्व पथिन् अङ्ग कर्मन् पत्र पात्र
अन्त वाले शब्दों से तद् व्याप्नोति
अर्थ में ख प्रत्यय होता है ।

आप्रपद से प्राप्नोति अर्थ में ख होता
है ।

अनुपद सर्वान्न अयानय शब्दों से
क्रमशः बद्धा भक्षयति नेय अर्थों में
ख होता है ।

तम् अनुभवति इस अर्थ में परोवर
परम्पर पुत्रपौत्र शब्द से ख होता
है ।

तद् गामी इस अर्थ में अवारपार
अत्यन्त अनुकाम शब्दों से ख होता
है ।

समांसमां विजायते इस अर्थ में
समांसमा से ख होता है ।

अवष्टब्ध अर्थ में अद्यश्चीन का
निपातन होता है ।

- ड्या-त्, तद्धिताः, १४. आगवीनः १८१५ ।
 स-वा, खः, तद्
 ड्या-त्, तद्धिताः, १५. अनुग्वलं गामी १८१६ ।
 स-वा, खः, तद्
 ड्या-त्, तद्धिताः, १६. अध्वनो यत्खौ १८१७ ।
 स-वा तद्, अलं-मी
 ड्या-त्, तद्धिताः, १७. अभ्यमित्राच्छ च १८१८ ।
 स-वा, यत्खौ, तद्,
 अलं-मी
 ड्या-त्, तद्धिताः, १८. गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे १८१९ ।
 स-वा
 ड्या-त्, तद्धिताः, १९. अश्वस्यैकाहगमः १८२० ।
 स-वा, खञ्
 ड्या-त्, तद्धिताः, २०. शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः १८२१
 स-वा, खञ् ॥ ११॥ .
 ड्या-त्, तद्धिताः, २१. ब्रातेन जीवति १८२२ ।
 स-वा, खञ्
 ड्या-त्, तद्धिताः, २२. साप्तपदीनं सख्यम् १८२३ ।
 स-वा, खञ्
 ड्या-त्, तद्धिताः, २३. हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् १८२४ ।
 स-वा, खञ्
 ड्या-त्, तद्धिताः, २४. तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कु- त-मूल २५
 स-वा णब्जाहचौ १८२५ ।

(१७१) पीलु कर्कन्धू (कर्कन्धु) शमी करीर
 बल (कुवल) बदर अश्वत्थ खदिर ॥ इति
 पील्वादिः ॥

(१७२) कर्ण अक्षि नख मुख केश पाद गुल्फ
 भ्रू शृङ्ग दन्त ओष्ठ पृष्ठ ॥ इति कर्णादिः ॥

- ड्या-त्, तद्धिताः, २५. पक्षात्तिः १८२६ ।
 स-वा, त-मूल
 ड्या-त्, तद्धिताः, २६. तेन वित्तश्चुष्णणपौ १८२७ ।
 स-वा

आगवीन शब्द निपातन से गोभृत्य
 के लिये प्रयुक्त होता है ।

अलं-मी १७

अनुगु शब्द से अलं गामी अर्थ में
 ख होता है ।

यत्खौ १७

अलंगामी अर्थ में अध्वन् से यत्
 और ख् होते हैं ।

अभ्यमित्र से अलंगामी अर्थ में छ
 और यत् होते हैं ।

खञ् २३

भूतपूर्व गोष्ठ शब्द से स्वार्थ में
 खञ् होता है ।

एकाहगम अर्थ में षष्ठीसमर्थ अश्व
 से खञ् होता है ।

अधृष्ट और अकार्य अर्थ में क्रमशः
 शालीन और कौपीन निपातित
 होते हैं ।

तेन जीवति अर्थ में ब्रात से खञ्
 होता है ।

यदि सख्य वाच्य हो तो साप्तपदीन
 निपातित होता है ।

संज्ञा में हैयङ्गवीन निपातित होता
 है ।

तस्य पाकः अर्थ में पीलु आदि
 शब्दों से तथा तस्य मूलम् अर्थ में
 कर्ण आदि शब्दों से क्रमशः कुणप्
 तथा जाहच् प्रत्यय होते हैं ।

तस्य मूलम् अर्थ में पक्ष से ति
 प्रत्यय होता है ।

तेन वित्तः इस अर्थ में चुष्णुप् तथा
 चणप् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २७. विनञ्भ्यां नानाजौ नसह १८२८ ।
स-वा

न सह अर्थ में प्रयुक्त वि और नञ् से ना और नाञ् प्रत्यय होते हैं स्वार्थ में ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २८. वेः शालच्छट्चौ १८२९ । वेः २९
स-वा

स्वार्थ में वि से शालच् शट्च होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २९. संप्रोदश्च कटच् १८३० । कटच् ३०
स-वा, वेः

सम् प्र उद् तथा वि से कटच् होता है ।

* अलाबूतिलोमाभङ्गाभ्यो रजस्युपसंख्यानम् ।

* गोष्ठजादयः स्थानादिषु पशुनामभ्यः ।

* संघाते कटच् ।

* विस्तारे पटच् ।

* द्वित्वे गोयुगच् ।

* षट्त्वे षड्गवच् ।

* स्नेहे तैलच् ।

* भवने क्षेत्रे शाकटशाकिनौ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३०. अवात्कुटारच्च १८३१ । अवात् ३१
स-वा, कटच्

अव से कुटारच् तथा कटच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३१. नते नासिकायाः संज्ञायां टीट्ज्नाट्ज्भ्र- न-याः ३३
स-वा, अवात् टचः १८३२ । सं-यां ३४

नासिकाया नते इस अर्थ में अव से टीटच् नाटच् और भ्रटच् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३२. नेर्बिडज्बिरीसचौ १८३३ । नेः ३३
स-वा सं-यां, न-याः

नि से नासिकाया नते अर्थ में बिडच् और बिरीसच् प्रत्यय होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३३. इनच्यिटच्चिकचि च १८३४ ।

स-वा, सं-यां, न- * कप्रत्ययचिकादेशौ च वक्तव्यौ ।

याः, नेः * क्लिन्नस्य चिल् पिल् लश्चास्य चक्षुषी ।

* चुल् च ।

नासिकाया नते अर्थ में नि से इनच् पिटच् होते हैं तथा नि को चिक चि आदेश भी होते हैं ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३४. उपाधिभ्यां त्यक्त्रासन्नारूढयोः १८३५
स-वा, सं-यां

उप अधि से क्रमशः आसन्न और आरूढ अर्थ में स्वार्थ में त्यक्न् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३५. कर्मणि घटोऽठच् १८३६ ।

स-वा

कर्मणि घटते इस अर्थ में अठच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३६. तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच् १८३७ तदस्य ३८
स-वा

तदस्य संजातम् इस अर्थ में तारका आदि शब्दों से इतच् होता है ।

(१७३) तारका पुष्प कर्णक मञ्जरी ऋजीष [क्षण सूच] मूत्र निष्क्रमण पुरीष उच्चार प्रचार (विचार) कुड्मल कण्टक मुसल (मुकुल) कुसुम कुतूहल

स्तवक (स्तवक) किसलय पल्लव (खण्ड)
 वेग निद्रा मुद्रा बुभुक्षा (धेनुष्या) पिपासा श्रद्धा
 अम्र पुलक अङ्गारक वर्णक द्रोह दोह सुख दुःख
 उत्कण्ठा भर व्याधि वर्मन् व्रण गौरव शास्त्र तरङ्ग
 तिलक चन्द्रक अन्धकार गर्व कुमुर (मुकुर) हर्ष
 उत्कर्ष (रण) कुवलय गर्ध क्षुध सीमन्त ज्वर गर
 रोग रोमाञ्च पण्डा कज्जल तृष् कोरक कल्लोल
 स्थपुट फल कञ्चुक शृङ्गार अङ्कुर शैवल वकुल
 श्वभ्र आराल कलङ्क कर्दम (कन्दल) मूर्च्छा अङ्गार
 हस्तक प्रतिबिम्ब विघ्न तन्त्र प्रत्यय दीक्षा गर्ज ।
 'गर्भादप्राणिनि' १११ ॥ इति तारकादिः ॥

आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ३७. प्रमाणे द्वयसज्दघ्नमात्रचः १८३८ । प्र-चः ३८

स-वा, तदस्य

* प्रमाणे लः ।

* द्विगोर्नित्यम् ।

* प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्यायाश्चापि संशये
 मात्रच् ।

* वत्त्वन्तात्स्वार्थे द्वयसज्मात्रचौ बहुलम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३८. पुरुषहस्तिभ्यामण्च १८३९ ।

स-वा, प्र-च, तदस्य

ड्या-त्, तद्धिताः, ३९. यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् १८४० । वतुप् ४१

स-वा

* युष्मदस्मदोः सादृश्ये वतुष्वाच्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४०. किमिदंभ्यां वो घः १८४१ ॥ २ ॥ वोघः ४१

स-वा, वतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४१. किमः संख्यापरिमाणे डति च १८४२ ।

स-वा, वतुप्, वोघः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४२. संख्याया अवयवे तयप् १८४३ ।

स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ४३. द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा १८४४ ।

स-वा

त-ज् ४४

ड्या-त्, तद्धिताः, ४४. उभादुदात्तो नित्यम् १८४५ ।

स-वा, त-ज्

अस्य प्रमाणम् इस अर्थ में द्वयसच्
 दघ्नच् तथा मात्रच् प्रत्यय होते
 हैं ।

तदस्य प्रमाणम् इस अर्थ में पुरुष
 और हस्तिन् से अण् द्वयसच् दघ्नच्
 मात्रच् होते हैं ।

परिमाणोपाधिक यत् तत् एतत् से
 वतुप् होता है ।

किम् इदम् से वतुप् तथा व को घ
 होता है ।

संख्यापरिच्छेद में वर्तमान किम्
 से अस्य अर्थ में डति तथा वतुप्
 होता है । व को घ भी होता है ।
 अवयव में वर्तमान संख्या से अस्य
 इस अर्थ में तयप् प्रत्यय होता
 है ।

द्वि त्रि से होने वाले तयप् को
 विकल्प से अयच् होता है ।

उभ से होने वाले तयप् को नित्य
 अयच् होता है और वह उदात्त
 होता है ।

मत्वर्थीय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४५. तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताङ् १८४६ तद-कं ४६
स-वा डः ४६

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४६. शदन्तविंशतेश्च १८४७ ।

स-वा, तद-कं, डः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४७. संख्याया गुणस्य निमाने मयट् १८४८

स-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४८. तस्य पूरणे डट् १८४९ ।

स-वा

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४९. नान्तादसंख्यादेर्मट् १८५० ।

स-वा, त-णे, डट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५०. थट् च छन्दसि ३४९७ ।

स-वा, त-णे, डट्

ना-त्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५१. षट्कृतिकतिपयचतुरां थुक् १८५१ ।

स-वा, त-णे, डट् * चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५२. बहुपूगणसङ्ख्यस्य तिथुक् १८५२ ।

स-वा, त-णे, डट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५३. वतोरिथुक् १८५३ ।

स-वा, त-णे, डट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५४. द्वेस्तीयः १८५४ ।

स-वा, त-णे

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५५. त्रैः संप्रसारणं च १८५५ ।

स-वा, त-णे, तीयः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५६. विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् १८५६ तमट् ५८

स-वा, त-णे

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५७. नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च

स-वा, त-णे, तमट्

१८५७ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५८. षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः १८५८ ।

स-वा, त-णे, तमट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५९. मतौ छः सूक्तसाम्नोः १८५९ ।

स-वा

म-छः ६२

तदस्मिन् अधिकम् इस अर्थ में दशान्त शब्दों से ड होता है ।

शदन्त शब्द तथा विंशति से ड प्रत्यय होता है इसी अर्थ में ।

गुण के निमान में प्रयुक्त संख्या शब्द से अस्य अर्थ में मयट् होता है ।

तस्य पूरणे अर्थ में संख्या शब्द से डट् प्रत्यय होता है ।

नान्त संख्यावाची शब्दों से हुये डट् को मट् हो जाता है ।

वेद में असंख्यादि संख्यावाची नान्त शब्दों से थट् तथा मट् होते हैं ।

षट् कति कतिपय चतुर से डट् के यहाँ थुक् का आगम होता है ।

बहु पूग गण सङ्ख से डट् के यहाँ तिथुक् आगम होता है ।

वतु को डट् के यहाँ इथुक् आगम होता है ।

तस्य पूरणे अर्थ में द्वि से तीय प्रत्यय होता है ।

त्रि से तस्य पूरणे अर्थ में तीय होता है और त्रि को सम्प्रसारण भी होता है ।

विंशति आदि से परे डट् को विकल्प से तमट् आगम होता है ।

शतादि शब्द तथा मास अर्द्धमास संवत्सर शब्दों से पूरणे अर्थ में नित्य मट् का आगम होता है ।

असंख्यादि षष्टि आदि संख्या शब्दों से नित्य मट् का आगम होता है ।

सूक्त और साम अभिधेय होने पर मत्वर्थ में छ प्रत्यय होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- ६०. अध्यायानुवाकयोर्लुक् १८६० ॥३॥ अ-योः ६२
वा, म-छः, अ-योः
ड्या-त् तद्धिताः स- ६१. विमुक्तादिभ्योऽण् १८६१ ।
वा, म-छः, अ-योः

(१७४) विमुक्त देवासुर रक्षोसुर उपसद सुवर्ण
परिसारक (सदसत्) वसु मरुत् पत्नीवत् वसुमत्
महीयत्व सत्त्वत् बर्हवत् दशार्ण दशार्ह वयस् हविर्धान
पतित्रिन् महित्री अस्यहत्य सोमापुषन् (सोमापूषन्)
इडा अग्राविष्णु उर्वशी वृत्रहन् ॥ इति विमुक्तादिः ॥

ड्या-त् तद्धिताः स- ६२. गोषदादिभ्यो वुन् १८६२ । वुन् ६३
वा, म-छः, अ-योः

(१७५) गोषद (गोषद्) इषेत्वा मातरिश्चन् देव-
स्य देवीरापः कृष्णोऽस्याखरेष्ठः देवीधिया (दैवी-
धिय) रक्षोहण युञ्जान अञ्जन प्रभूत प्रतूत कृशानु
(कृशाकु) ॥ इति गोषदादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ६३. तत्र कुशलः पथः १८६३ । तत्र ६७
स-वा, वुन् कुशलः ६४
ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. आकर्षादिभ्यः कन् १८६४ । कन् ८२
स-वा, तत्र कुशलः

(१७६) आकर्ष त्सरु पिशाच पिचण्ड अशनि
अश्मन् निचय चय (विजय) जय आचय नय
पाद दीप हृद ह्राद (गद्गद) शकुनि ॥ इत्या-
कर्षादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. धनहिरण्यात्कामे १८६५ ।

स-वा, तत्र, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते १८६६ । प्रसिते ६७

स-वा, तत्र, कन्

ड्या-त् तद्धिताः स- ६७. उदराट्टगाद्यूने १८६७ ।

वा, तत्र, कन्, प्रसिते

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. सस्येन परिजातः १८६८ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. अंशं हारी १८६९ ।

स-वा, कन्

अध्यायानुवाक अभिधेय हो तो
मत्वर्थ छ का लुक् होता है ।
अध्यायानुवाक अभिधेय हो तो
मत्वर्थ में विमुक्त आदि शब्दों से
अण् होता है ।

अध्यायानुवाक् अभिधेय हो तो
मत्वर्थ में गोषद आदि शब्दों से
वुन् होता है ।

तत्र कुशलः अर्थ में पथिन् शब्द
से वुन् होता है ।
आकर्ष आदि से तत्र कुशलः अर्थ
में कन् होता है ।

तत्र कामः अर्थ में धन हिरण्य से
कन् होता है ।

तत्र प्रसितः अर्थ में स्वाङ्गवाची
शब्दों से कन् होता है ।

आद्यून रहने पर उदर से तत्र प्रसितः
अर्थ में ठक् होता है ।

तेन परिजातः अर्थ में सस्य से
कन् होता है ।

तं हारी अर्थ में अंश से कन् होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७०. तन्नादचिरापहते १८७० ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७१. ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् १८७१ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. शीतोष्णाभ्यां कारिणि १८७२ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७३. अधिकम् १८७३ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७४. अनुकाभिकाभीकः कमिता १८७४ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७५. पार्श्वेनान्विच्छति १८७५ ।

अन्व-ति ७६

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७६. अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ १८७६

स-वा, कन्, अ-ति

ड्या-त्, तद्धिताः, ७७. तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा १८७७ ।

स-वा, कन् * तावतिथेन गृह्णातीति कन्वक्तव्यो नित्यं च लुक् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७८. स एषां ग्रामणीः १८७८ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७९. शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे १८७९ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८०. उत्क उन्मनाः १८८० । ॥ ४ ॥

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८१. कालप्रयोजनाद्रोगे १८८१ ।

स-वा, कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८२. तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञायाम् १८८२ । त-याम् ८३

स-वा, कन् * वटकेभ्य इनिर्वाच्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८३. कुल्पाषादञ् १८८३ ।

स-वा, कन्, त-याम्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८४. श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते १८८४ ।

स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ८५. श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ १८८५ । अनेन ८८

स-वा

तस्मात् अचिरापहतः अर्थ में तन्त्र से कन् होता है ।

संज्ञा में ब्राह्मणक उष्णिक निपातित होते हैं ।

तं कारी अर्थ में शीत उष्ण से कन् होता है ।

कर्ता या कर्म में अधिक निपातित होता है ।

कमिता अर्थ में अनुक अधिक अभीक निपातित होते हैं ।

तेन अन्विच्छति अर्थ में पार्श्व से कन् होता है ।

तेन अन्विच्छति अर्थ में अयःशूल दण्डाजिन से ठक् और ठञ् होते हैं ।

ग्रहणोपाधिक तृतीयान्त पूरणप्रत्ययान्त से स्वार्थ में कन् तथा पूरण का विकल्प से लुक् होता है ।

एषां ग्रामणीः अर्थ में प्रातिपदिक से कन् होता है ।

अस्य करभस्य बन्धनं अर्थ में शृङ्खल से कन् होता है ।

उन्मनाः के लिये उत्क निपातित होता है ।

रोग वाच्य होने पर काल और प्रयोजन से कन् होता है ।

संज्ञा में अस्मिन् अर्थ में प्रायः अन्न से कन् होता है ।

तदस्मिन् प्रायेण संज्ञायाम् में कुल्पाष से अञ् होता है ।

छन्दोऽधीते इस अर्थ में श्रोत्रिय निपातित होता है ।

अनेन भुक्तम् इस अर्थ में श्राद्ध से इनि, ठन् प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८६. पूर्वादिनिः १८८६ ।

स-वा, अनेन

ड्या-त्, तद्धिताः, ८७. सपूर्वाच्च १८८७ ।

स-वा, इनिः, अनेन,

पूर्वात्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८८. इष्टादिभ्यश्च १८८८ ।

स-वा, इनिः, अनेन

(१७७) इष्ट पूर्त उपासादित निगदित परिगदित
(परिवादित) निकथित निषादित निपठित संकलित
परिकलित संरक्षित परिरक्षित अर्चित गणित अवकीर्ण
आयुक्त गृहीत आम्रात श्रुत अधीत (अवधान)
आसेवित अवधारित अवकल्पित निराकृत उपकृत
उपाकृत अनुयुक्त अनुगणित अनुपठित व्याकुलित ॥
इतीष्टादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ८९. छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि

स-वा, इनिः

१८८९ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९०. अनुपद्यन्वेष्टा १८९०

स-वा, इनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, ९१. साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम् १८९१ ।

स-वा, इनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, ९२. क्षेत्रियच्यरक्षेत्रे चिकित्स्यः १८९२ ।

स-वा

ड्या-त्, तद्धिताः, ९३. इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्र-

स-वा

जुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा १८९३ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९४. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् १८९४ ।

स-वा

त-मिन् १४०

मतुप् १४०

ड्या-त् तद्धिताः स- ९५. रसादिभ्यश्च १८९५ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

(१७८) रस रूप वर्ण गन्ध स्पर्श स्नेह भाव ।

‘गुणात्’ ११२ । ‘एकाचः’ ११३ ॥ इति

रसादिः ॥

* गुणवचनेभ्यो मतुपो लुक् ।

इनिः ९१

पूर्वात् ८७

अनेन भुक्तम् आदि अर्थों में पूर्व
से इनि होता है ।

सपूर्व से भी इनि होता है ।

अनेन अस्मिन् अर्थ में इष्ट आदि
शब्दों से इनि होता है ।

पर्यवस्थाता वाच्य होने पर परि-
पन्थिन् परिपरिन् निपातित होते
हैं ।

अन्वेष्टा वाच्य होने पर अनुपदी
निपातित होता है ।

द्रष्टा वाच्य होने पर साक्षात् से
इनि होता है ।

तत्र चिकित्स्यः अर्थ में परक्षेत्र
शब्द से घच् प्रत्यय तथा पर का
लोप होता है ।

इन्द्रलिङ्ग इन्द्रदृष्ट इन्द्रसृष्ट इन्द्रजुष्ट
इन्द्रदत्त अर्थों में इन्द्रिय शब्द
निपातित होता है ।

अस्य अस्ति, अस्मिन् अस्ति इस
अर्थ में मतुप् होता है ।

रसआदि शब्दों से ‘अस्यास्मिन्
अस्ति’ अर्थ में मतुप् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ९६. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् १९०३ । लज्-म् ९९
स-वा, त-मिन्, * प्राण्यङ्गादेव ।

मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९७. सिध्मादिभ्यश्च १९०४ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, लज्-म्

(१७९) सिध्म गडु मणि नाभि बीज (वीणा)
कृष्ण निष्पाव पांसु पार्श्व पर्शू हनु सक्तु मास
(मांस) । 'पार्णिधमन्योर्दीर्घश्च' ११४ । 'वात-
दन्तबलललाटानामूङ् च' ११५ । 'जटाघटाकटा-
कालाः क्षेपे' ११६ । पर्ण उदक प्रज्ञा सक्थि कर्ण
स्नेह शीत श्याम पिङ्ग पित्त पुष्क पृथु मृदु मञ्जु
(मण्ड) पत्र चटु कपि गण्डु ग्रन्थि श्री कुश धारा
वर्ष्मन् पक्ष्मन् श्लेष्मन् पेश निष्पाद कुण्ड
'क्षुदजन्तूपतापयोश्च' ११७ ॥ इति सिध्मादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ९८. वत्सांसाभ्यां कामबले १९०५ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, लज्-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९९. फेनादिलच्च १९०६ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, लज्-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः

स-वा, त-मिन्, १९०७ ॥ ५ ॥

मतुप्

(१८०) लोमन् रोमन् बभ्रु हरि गिरि कर्क कपि
मुनि तरु ॥ इति लोमादिः ॥

(१८१) पामन् वामन् वेमन् हेमन् श्लेष्मन् कद्रु

(कद्रू) बलि सामन् ऊष्मन् कृमि । 'अङ्गात्कल्याणे'

११८ । 'शाकीपलालीदद्रूणां ह्रस्वत्वं च' ११९ ।

('विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः') १२० ।

'लक्ष्म्या अच्च' १२१ ॥ इति पामादिः ॥

(१८२) पिच्छा उरस् ध्रुवक ध्रुवक ।

'जटाघटाकालाः क्षेपे' १२२ । वर्ण उदक पङ्क

प्रज्ञा ॥ इति पिच्छादिः ॥

* विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः ।

प्राणिस्थ आकारान्त शब्दों में मतुबर्थ
में लच् और मतुप् होता है ।

सिध्म आदि शब्दों से लच् और
मतुप् होता है ।

क्रमशः कामवत् और बलवत् अर्थ
में वत्स अंस से लच् होता है ।

मत्वर्थ में फेन से इलच् और लच्
होता है ।

लोम आदि पामन् आदि पिच्छल
आदिसे क्रमशः श न इलच् होता
है, मतुप् भी होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १०१. प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः १९०८ ।

वा, त-मिन्, मतुप् * वृत्तेश्च ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १०२. तपःसहस्राभ्यां विनीनी १९०९ । तपः-म् १०३

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. अण्च १९१० ।

स-वा, त-मिन्, * ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम् ।

मतुप्, तपः-म्

अण् १०५

(१८३) (वा० ग०) ज्योत्स्ना तमिस्रा कुण्डल

कुतप विसर्थ विपादिका ॥ इति ज्योत्स्नादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. सिकताशर्कराभ्यां च १९११ । सि-म् १०५

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, अण्

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. देशे लुबिलचौ च १९१२ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, अण्, सि-म्

ड्या-त् तद्धिताः स- १०६ दन्त उन्नत उरच् १९१३ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, स- १०७. ऊषसुखिमुष्कमधो रः १९१४ ।

वा, त-मिन्, मतुप् * रप्रकरणे खमुखकुञ्जेभ्य उपसंख्यानम् ।

* नगपांसुपाण्डुभ्यश्च ।

* कच्च्वा ह्रस्वत्वं च ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १०८. द्युद्भुभ्यां मः १९१५ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, स- १०९. केशाद्वोऽन्यतरस्याम् १९१६

वा, त-मिन्, मतुप् * अन्येभ्योऽपि दृश्यत इति वक्तव्यम् ।

* अर्णसो लोपश्च ।

* छन्दसीवनिपी च ।

* मेघारथाभ्यामीरन्निरचौ वक्तव्यौ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. गाण्डयजगात्संज्ञायाम् १९१७ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, वः

ड्या-त् तद्धिताः स- १११. काण्डाण्डादीरन्नीरचौ १९१८ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त् तद्धिताः स- ११२. रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् १९१९ वलच् ११३

वा, त-मिन्, मतुप् * अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।

मतुबर्थ में प्रज्ञा श्रद्धा अर्चा से ण होता है ।

तपस् और सहस्र शब्द से क्रमशः विनि इनि प्रत्यय होते हैं मत्वर्थ में ।

तपस् सहस्र शब्द से अण् भी होता है ।

मत्वर्थ में सिकता शर्करा से अण् होता है ।

देश वाच्य रहने पर सिकता शर्करा शब्द से इलच् अण् मतुप् होते हैं तथा उनका लुप् भी होता है ।

उन्नत-उपाधि वाले दन्त शब्द से उरच् होता है मतुबर्थ में ।

मत्वर्थ में ऊष सुखि मुष्क मधु से र होता है ।

मत्वर्थ में द्यु दु से म होता है ।

केश शब्द से मत्वर्थ में विकल्प से व होता है ।

मत्वर्थमें संज्ञा में गाण्डी अजग से व होता है ।

काण्ड अण्ड से मत्वर्थ में क्रमशः ईरन् ईरच् होते हैं ।

रजस् कृषि आसुति परिषद् से वलच् मत्वर्थ में होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. दन्तशिखात्संज्ञायाम् ११२० । सं-म् ११४

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, वलच्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्व-

स-वा, त-मिन्, लगोमिन्मलिनमलीमसाः ११२१ ।

मतुप्, सं-म्

संज्ञा में दन्त शिखा से मत्वर्थ में वलच् होता है ।

संज्ञा रहने पर मत्वर्थ में ज्योत्स्ना तमिस्रा शृङ्गिण ऊर्जस्वल गोमिन् मलिन मलीमस शब्द निपातित होते हैं ।

मतुबर्थ में अकारान्त शब्दों से इनि और ठन् प्रत्यय होते हैं ।

मत्वर्थ में ब्रीहि आदि शब्दों से इनि ठन् होते हैं । मतुप् भी होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- ११५. अत इनिठनौ ११२२

इ-नौ ११७

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११६. ब्रीह्यादिभ्यश्च ११२३ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, इ-नौ

(१८४) ब्रीहि माया (शाला) शिखा माला मेखला केका अष्टका पताका चर्मन् कर्मन् वर्मन् दंष्ट्रा संज्ञा बडबा कुमारी नौ वीणा बलाका यवखदनौ कुमारी । 'शीर्षान्नजः' १२३ ॥ इति ब्रीह्यादिः ॥

* शिखामालासंज्ञादिभ्य इनिः ।

* यवखदादिभ्य इकः ।

* अन्येभ्य उभयम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११७. तुन्दादिभ्य इलच्च ११२४ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, इ-नौ

तुन्द आदि शब्दों से मत्वर्थ में इलच् इनि ठन् मतुप् होते हैं ।

(१८५) तुन्द उदर पितण्ड यव ब्रीहि ।

'स्वाङ्गाद्विवृद्धौ' १२४ ॥ इति तुन्दादिः ॥

ड्या-त् तद्धिताः स- ११८. एकगोपूर्वाङ्गित्यम् ११२५ । ठञ् ११९

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ११२६ ।

स-वा, त-मिन्,

मतुप्, ठञ्

एक और गो पूर्वशब्दों से मत्वर्थ में नित्य ठञ् होता है ।

निष्क से परे शत सहस्र से मत्वर्थ में ठञ् होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १२०. रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् १७२७ ॥ ६ ॥

वा, त-मिन्, मतुप् * अन्येभ्योऽपि दृश्यते ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १२१. अस्मायामेधास्त्रजो विनिः ११२८ । विनिः १२२

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२२. बहुलं छन्दसि ३४९८ ।

स-वा, त-मिन्, * आमयस्योपसंख्यानं दीर्घश्च ।

मतुप्, विनिः

आहत और प्रशंसा में प्रयुक्त रूप शब्द से यप् होता है ।

असन्त प्रातिपदिक और माया मेधा स्त्रज् से विनि होता है मत्वर्थ में । मत्वर्थ में विनि वेद में बहुल प्रकार से होता है ।

- * शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन् ।
- * फलबर्हाभ्यामिनच् ।
- * हृदयाच्चालुरन्यतरस्याम् ।
- * शीतोष्णातृप्रेभ्यस्तदसहने ।
- * हिमाच्चेलुः ।
- * बलादूलः ।
- * वातात्समूहे च ।
- * तप्यर्वमरुदभ्याम् ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १२३. ऊर्णाया युस् १९२९ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त् तद्धिताः स- १२४. वाचो ग्मिनिः १९३० ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. आलजाटचौ बहुभाषिणि १९३१ ।

स-वा, त-मिन्, म- * कुत्सित इति वक्तव्यम् ।

तुप्, वाचः

ड्या-त् तद्धिताः स- १२६. स्वामिन्नैश्वर्ये १९३२ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ड्या-त् तद्धिताः स- १२७. अर्शआदिभ्योऽच् १९३३ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

(१८६) अर्शस् उरस् तुन्द चतुर पलित जटा

(घटा) घाटा अभ्र (अघ) (कर्दम) अम्ल

लवण । 'स्वाङ्गाद्धीनात्' १२५ । वर्णात् ॥ इत्यर्श-

आदिः ॥ आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. द्वन्द्वोपतापगर्हात्प्राणिस्थादिनिः इनिः १३७

स-वा, त-मिन्,

१९३४ ।

मतुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. वातातीसाराभ्यां कुक्च १९३५ ।

स-वा, त-मिन्, म- * पिशाचाच्च ।

तुप्, इनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. वयसि पूरणात् १९३६ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. सुखादिभ्यश्च १९३७ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

मत्वर्थ में ऊर्णा शब्द से युस् प्रत्यय होता है ।

वाचः १२५

वाच् से मत्वर्थ में ग्मिनि प्रत्यय होता है ।

यदि बहुभाषी अभिधेय हो तो वाच् से मत्वर्थ में आलच् आटच् प्रत्यय होते हैं ।

ऐश्वर्य में स्व से मतुबर्थ में स्वामिन् निपातित होता है ।

अर्शस् आदि शब्दों से मत्वर्थ में अच् होता है ।

द्वन्द्व समास उपताप गर्हा वाची प्राणिस्थ शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता है ।

मत्वर्थ में वात और अतीसार से इनि तथा कुक् का आगम होता है ।

यदि वयस् गम्यमान हो तो पूरण प्रत्ययान्त से मत्वर्थ में इनि होता है ।

सुख आदि शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता है ।

(१८७) सुख दुःख तृप्त [तृप्] कृच्छ्र अस्त्र
(आश्र) आस्त्र (अस्त्र) अलीक करुण सोढ
प्रतीप शील हल । 'माला क्षेपे' १२६ । (कृपण)
प्रणाय (प्रणय) दल कक्ष ॥ इति सुखादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३२. धर्मशीलवर्णान्ताच्च १९३८ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३३. हस्ताज्जातौ १९३९ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३४. वर्णाद्ब्रह्मचारिणि १९४० ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३५. पुष्करादिभ्यो देशे १९४१ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

(१८८) पुष्कर पद्म उत्पल तमाल कुमुद नड
कपित्थ बिस मृणाल कर्दम शालूक विगर्ह करीष
शिरीष यवास (प्रवास) हिरण्य कैरव कल्लोल
तट तरङ्ग पङ्कज सरोज राजीव नालीक सरोरुह
पुटक अरविन्द अम्भोज अब्ज कमल (कल्लोल)
पयस् ॥ इति पुष्करादिः ॥

* बाहूरू पूर्वपदाद्वलात् ।

* सवदिश्च ।

* अर्थाच्चासंनिहिते ।

* तदन्ताच्च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३६. बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् १९४२ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

(१८९) बल उत्साह (उद्भास उद्भास) उद्भास
शिखा कुल चूडा सुल कूल आयाम व्यायाम उपयाम
आरोह अवरोह परिणाह (युद्ध) ॥ इति
बलादिः ॥

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३७. संज्ञायां मन्माभ्याम् १९४३ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्, इनिः

धर्म शील वर्ण अन्तवाले शब्दों से
इनि होता है ।

यदि जाति वाच्य हो तो हस्त से
मत्वर्थ में इनि होता है ।

यदि ब्रह्मचारी अर्थ हो तो वर्ण से
मत्वर्थ में इनि होता है ।

यदि देश गम्यमान हो तो पुष्कर
आदि शब्दों से मत्वर्थ में इनि होता
है ।

बल आदि शब्दों से मतुप् और
इनि होते हैं ।

मन् अन्त वाले और म अन्त वाले
शब्दों से मतुबर्थ में इनि होता है,
यदि संज्ञा वाच्य हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३८. कंशंभ्यां बभयुस्ति तु तयसः १९४४ ।

स-वा, त-मिन्, म-

तुप्

ङ्या-त् तद्धिताः स- १३९. तुन्दिवलिवटेर्भः १९४५ ।

वा, त-मिन्, मतुप्

ङ्या-त् तद्धिताः स- १४०. अहंशुभमोर्युस् १९४६ ।। ७ ।।

वा, त-मिन्, मतुप्

धान्यानां ब्रातेन किमो विमुक्तादिभ्यः काल-

प्रयोजनात्प्रज्ञाश्रद्धास्मायामेधाविंशतिः ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

प्राग्विदशीय प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १. प्राग्विदशो विभक्तिः १९४७ ।

स-वा

विभक्तिः २६

संज्ञा में कं और शं शब्द से मत्वर्थ में ब, भ, युस् ति तु त यस् होते हैं ।

मत्वर्थ में तुन्दि वलि वटि से भ होता है ।

अहं शुभं से मत्वर्थ में युस् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, २. किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः १९४८ ।

स-वा, विभक्तिः

सूत्र ५.३.२७ के पहले (प्राग्विदशः के पहले) विभक्ति का अधिकार होगा ।

किम् अद्व्यादि सर्वनाम तथा बहु शब्द से प्राग्विदशः विभक्तियाँ होंगी ।

प्राग्विदशीय परे रहने पर इदम् को इश् होता है ।

इदम् को प्राग्विदशीय के यहाँ एत इत आदेश होते हैं ।

प्राग्विदशीय में एतद् को अन् होता है ।

प्राग्विदशीय दकारादि के यहाँ सर्व को विकल्प से स होता है ।

पञ्चम्यन्त किं सर्वनाम बहु से तसिल् होता है ।

पञ्चम्यन्त किं सर्वनाम बहु से होने वाले तस् को भी तसिल् होता है ।

परि अभि से भी तसिल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३. इदम् इश् १९४९ ।

स-वा, विभक्तिः

इदमः ४

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४. एतेतौ रथोः १९५० ।

स-वा विभक्तिः इदमः * थाहेतौ च छन्दसि ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५. एतदोऽन् १९५१ ।

स-वा, विभक्तिः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६. सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि १९५२ ।

स-वा, विभक्तिः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७. पञ्चम्यास्तसिल् १९५३ ।

स-वा, विभक्तिः

तसिल् ९

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८. तसेश्च १९५५ ।

स-वा, विभक्तिः,

तसिल्

ङ्या-त् तद्धिताः स- ९. पर्यभिभ्यां च १९५६ ।

वा, विभक्तिः, तसिल् * सर्वोभयार्थाभ्यामेव ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०. सप्तम्यास्त्रल् १९५७ ।

स-वा वि०

स-म्याः २२

सप्तम्यन्त किं सर्वनाम बहु से त्रल् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११. इदमो हः १९५८ ।

स-वा, वि० स-म्याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १२. किमोऽत् १९५९ ।

स-वा, वि० स-म्याः

ङ्या-त् तद्धिताः वि० १३. वा ह च च्छन्दसि १९६१ ।

स-वा स-म्याः किमः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४. इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते १९६३ ।

वि० स-वा, स-म्याः * दृशिर्ग्रहणाद्भवदादियोग एव ।

(१९०) (वा० ग०) । भवान् दीर्घायुः देवानां

प्रियः आयुष्मान् ॥ इति भवदादिः ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५. सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा १९६४ । काले २२

वि० स-वा, स-म्याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६. इदमो हिल् १९६५ ।

वि० स-वा, स-म्याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १७. अधुना १९६६ ।

वि० स-वा, स-म्याः

काले, इदमः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १८. दानीं च १९६७ ।

वि० स-वा, स-म्याः

काले, इदमः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १९. तदो दा च १९६८ ।

वि० स-वा, स-म्याः * तदो दावचनमनर्थकं विहितत्वात् ।

वि० काले, दानीं

ङ्या-त् तद्धिताः वि० २०. तयोर्दाहिलौ च च्छन्दसि ३४९९ ॥ १॥

स-वा, स-म्याः काले

ङ्या-त्, तद्धिताः, २१. अनद्यतने हिलन्यतरस्याम् १९६९ ।

वि० स-वा, स-म्याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, २२. सद्यः परुत्परार्येषमः परेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्ये-
वि० स-वा, स-म्याः द्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्यु-

रुत्तरेद्युः १९७० ।

* समानस्य सभावो द्यस् चाहनि ।

* पूर्वपूर्वतरयोः परभाव उदारी च संवत्सरे ।

* इदम इश् समसण् प्रत्ययश्च संवत्सरे ।

सप्तम्यन्त इदम् से ह होता है ।

किमः १३

सप्तम्यन्त किम् से अत् होता है ।

सप्तम्यन्त किम् से वेद में ह भी होता है ।

सप्तमी पञ्चमी भिन्न विभक्तियों से भी तसिल् आदि देखे जाते हैं ।

सप्तम्यन्त सर्व एक अन्य किम् यत् तत् से काल अर्थ में दा होता है ।

कालार्थ में सप्तम्यन्त इदम् से हिल् होता है ।

अधुना शब्द निपातित होता है

इदमः १८

दानीं १९

कालार्थ में सप्तम्यन्त इदम् से दानीम् प्रत्यय होता है ।

सप्तम्यन्त तद् से कालार्थ में दा भी होता है ।

वेद में इदम् और तत् से दा और हिल् भी होते हैं ।

सप्तम्यन्त किं सर्वनाम बहु से अनद्यतन काल में विकल्प से हिल् होता है ।

सद्यः परुत् परारि ऐषमः परेद्यवि
अद्य पूर्वेद्युः अन्येद्युः अन्यतरेद्युः
इतरेद्युः अपरेद्युः अधरेद्युः उभयेद्युः
उत्तरेद्युः निपातित होते हैं ।

* परस्मादेष्टव्यहनि ।

* इदमोऽशभावो द्यश्च ।

* पूर्वान्यान्यतरेतरापराधरोभयोत्तरेभ्यो [ऽहनि]

एद्युस् ।

* द्युश्चोभयात् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २३. प्रकारवचने थाल् १९७१ ।

वि० स-वा

प्र-ने २६

प्रकारवचन में किं सर्वनाम बहु से थाल् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २४. इदमस्थमुः १९७२ ।

थमुः २५

प्रकारवचन में इदम् से थमु होता है ।

वि० स-वा, प्र-ने * एतदो वाच्यः ।

ड्या-त् तद्धिताः वि० २५. किमश्च १९७३ ।

किमः २६

किम् से प्रकारवचन में थाल् होता है ।

स-वा, प्र-ने, थमुः

प्रागिवीय प्रत्ययाः

ड्या-त् तद्धिताः वि० २६. था हेतौ च च्छन्दसि ३५०० ।

स-वा, प्र-ने, किमः

हेतु तथा प्रकारवचन में किम् से वेद में था होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः २७. दिक्छन्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दि-स-तिः ३८

दिग्देशकालेष्वस्तातिः १९७४ ।

दिग् देश काल में वर्तमान सप्तमी पञ्चमी प्रथमान्त शब्दों से स्वार्थ में अस्ताति होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २८. दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् १९७८ ।

अत-च् २९

दि-स-तिः

दिग्देशकाल में वर्तमान सप्तमी पञ्चमी प्रथमान्त दक्षिण उत्तर शब्द से स्वार्थ में अतसुच् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २९. विभाषा परावराभ्याम् १९७९ ।

दि-स-तिः, अत-च्

अस्ताति के अर्थ में पर अवर से विकल्पेन अतसुच् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३०. अञ्जेलुक १९८० ।

दि-स-तिः

अञ्ज उत्तर पद वाले दिक् शब्द से अस्ताति का लुक होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३१. उपर्युपरिष्ठात् १९८१ ।

दि-स-तिः

अस्ताति के अर्थ में उपरि उपरिष्ठात् का निपातन होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३२. पश्चात् १९८२ ।

दि-स-तिः

अस्ताति के अर्थ में पश्चात् का निपातन होता है ।

* अपरस्यार्थे पश्चभावो वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३३. पश्च पश्चा च च्छन्दसि ३५०१ ।

दि-स-तिः

वेद में अस्ताति के अर्थ में पश्च पश्चा पश्चात् बनते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३४. उत्तराधरदक्षिणादातिः १९८३ ।

उ-त् ३५

दि-स-तिः

उत्तर अधर दक्षिण से अस्ताति के अर्थ में आति होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३५. एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः १९८४ । अ-म्याः ३८

दि-स-तिः, उ-त्

पञ्चमी को छोड़कर यदि अवधि अवधिमान् के समीप में हो तो उत्तर अधर दक्षिण शब्द से विकल्पेन एनप् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३६. दक्षिणादाच् १९८५ ।

दि-स-तिः, अ-म्याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३७. आहि च दूरे १९८६ ।

दि-स-तिः, अ-म्याः

द-त् आच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ३८. उत्तराच्च १९८७ ।

दि-स-तिः, अ-म्याः

आ-रे, आच्

ङ्या-त्, तद्धिताः ३९. पूर्वाधरावराणामसि पुरध्वश्चैवाम् १९७५ पू-म् ४०

पु-वः ४०

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४०. अस्ताति च १९७६ । ॥ २ ॥ अति ४१

पू-म्, पु-वः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४१. विभाषाऽवरस्य १९७७ ।

अ-ति

ङ्या-त्, तद्धिताः ४२. संख्याया विधार्थे धा १९८८ । सं-ग्र ४३

धा ४३

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४३. अधिकरणविचाले च १९८९ ।

सं-या, धा

ङ्या-त्, तद्धिताः ४४. एकादशो ध्यमुजन्यतरस्याम् १९९० । धः ४६

अ-म् ४६

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४५. द्वित्र्योश्च धमुज् १९९१ । द्वि-त्र्योः ४६

धः, अ-म् * धमुजन्तात्स्वार्थे उदशनिम् ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४६. एधाच्च १९९२ ।

धः, अ-म्, द्वि-त्र्योः

ङ्या-त्, तद्धिताः ४७. याप्ये पाशप् १९९३ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः ४८. पूरणाद्भागे तीयादन् १९९४ । पू-त् ४९

भागे ५१
अन् ५०

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४९. प्रागेकादशभ्योऽछन्दसि १९९५ । अ-सि ५०

भागे, अन्, पू-त्

अस्ताति के अर्थ में दक्षिण से आच् होता है ।

अवधि अवधिमत् से दूर में हो तो दक्षिण से अस्ताति के अर्थ में आहि होता है ।

दूर में अस्ताति के अर्थ में उत्तर से आच् आहि होते हैं ।

अस्ताति के अर्थ में पूर्व अधर अवर में असि होता है तथा उन्हें क्रमशः पुर् अध् अक् आदेश होते हैं ।

अस्ताति के यहाँ भी पुर् अध् अक् आदेश होते हैं ।

अवर को अस्ताति के यहाँ अक् विकल्पेन होता है ।

संख्यावाची शब्दों से विधा अर्थ में धा होता है ।

अधिकरणविचाल में संख्यावाची शब्दों से धा होता है ।

एक शब्द से हुये धा को विकल्प से ध्यमुज् होता है ।

द्वि त्रि सम्बन्धी धा को धमुज् विकल्पेन होता है ।

द्वि त्रि सम्बन्धी धा को विकल्पेन एधाच् आदेश होता है ।

याप्य में प्रातिपदिक से स्वार्थ में पाशप् होता है ।

पूरण में हुये तीय अन्तवालों से स्वार्थ में अन् होता है भाग अर्थ में ।

एकादश से पहले वाले संख्यावाची पूरण प्रत्ययान्त से स्वार्थ में अन् होता है, यदि वेद का विषय न हो तथा भाग अर्थ हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५०. षष्ठाष्टमाभ्यां ज च १९९६ । भागे, अन्, अ-सि	ष-म् ५१	षष्ठ अष्टम से भागवाच्य रहने पर ज और अन् होते हैं लोक विषय में ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५१. मानपञ्चङ्गयोः कन्लुक्चौ च १९९७ । भागे, ष-म्	क-कौ ५२	षष्ठ अष्टम शब्द से क्रमशः कन् और लुक् होता है मान तथा पञ्चङ्ग वाच्य होने पर ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५२. एकादाकिनिच्वासहाये १९९८ । क-कौ		असहायवाची एक शब्द से आकिनिच् प्रत्यय होता है, तथा कन् और लुक् भी होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः ५३. भूतपूर्वे चरट् १९९९ ।	चरट् ५४	भूतपूर्व अर्थ में वर्तमान प्रातिपदिक से चरट् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५४. षष्ठ्या रूप्य च २००० । चरट्		षष्ठ्यन्त प्रातिपदिक से रूप्य तथा चरट् होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः ५५. अतिशायने तमबिष्ठनौ २००१ । अ-ने, त-नौ	अ-ने ५७ त-नौ ५६	अत्युत्कृष्ट अर्थ में प्रातिपदिक शब्द से स्वार्थ में तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५६. तिडश्च २००२ । अ-ने, त-नौ	तिडः ७१	अतिशय द्योत्य में तिडन्त से भी तमप् होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५७. द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ २००५ अ-ने, तिडः		द्व्यर्थप्रतिपादक और विभक्त्य विषयक उपपद रहने पर प्रातिपदिक तथा तिडन्त से तरप् और ईयसुन् होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५८. अजादी गुणवचनादेव २००६ । तिडः	अजादी ६५	इष्ठन् और ईयसुन् गुणवचन से ही होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ५९. तुश्छन्दसि २००७ । अजादी, तिडः		वेद में व्रन्त से इष्ठन् ईयसुन् होते हैं ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ६०. प्रशस्यस्य श्रः २००९ । ॥ ३ ॥ अजादी, तिडः	प्र-स्य ६१	इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ प्रशस्य को श्र हो जाता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ६१. ज्य च २०११ । अजादी, तिडः, प्र- स्य	ज्य ६२	प्रशस्य को ज्य होता है इष्ठन् ईयसुन् परे रहने पर ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ६२. वृद्धस्य च २०१३ । अजादी, तिडः, ज्य		इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ वृद्ध को ज्य आदेश होता है ।
ड्या-त्, तद्धिताः, ६३. अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ २०१४ । अजादी, तिडः		अन्तिक और बाढ को क्रमशः नेद और साध आदेश होते हैं इष्ठन् ईयसुन् के यहाँ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् २०१९ ।
अजादी, तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. विन्मतोर्लुक् २०२० ।
अजादी, तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. प्रशंसायां रूपप् २०२१ ।
तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६७. ईषदसमाप्तौ कल्पदेश्यदेशीयरः २०२२ ई-प्तौ ६८
तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. विभाषा सुपो बहुच्युरस्तात् २०२३ । सुपः ६९
ई-प्तौ, तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. प्रकारवचने जातीयर् २०२४ ।
सुपः, तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७०. प्रागिवाल्कः २०२५ ।
तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७१. अव्ययसर्वनामामकच्चाक्टेः २०२६ । अकच् ७२
कः, तिङः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. कस्य च दः २०२७ ।

कः, अकच् * ओकारसकारभकारादौ सुपि सर्वनामष्टेः
प्रागकच् ।

* अकच्चाकरणे तूष्णीमः काम् ।

* शीले को मलोपश्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७३. अज्ञाते २०२८ ।
कः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७४. कुत्सिते २०२९ ।
कः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७५. संज्ञायां कन् २०३० ।
कः, कु-ते

ड्या-त्, तद्धिताः, ७६. अनुकम्पायाम् २०३१ ।
कः

ड्या-त्, तद्धिताः, ७७. नीतौ च तद्युक्तात् २०३२ ।
कः, अ-म्

युवन् और अल्प को विकल्प से
कन् आदेश होता है इष्टन् और
ईयसुन् के यहाँ ।

विन् और मतुप् का लुक् होता है
इष्टन् ईयसुन् के यहाँ ।
प्रशंसा में प्रातिपदिक से रूपप् प्रत्यय
होता है ।

ईषत् असमाप्ति अर्थ में कल्पप्
देश्य देशीयर् प्रत्यय होते हैं ।

ईषत् असमाप्ति अर्थ में सुबन्त से
बहुच् प्रत्यय विकल्प से होता है
पर वह प्रकृति के पहले होता है ।
प्रकार वचन में वर्तमान शब्दसे स्वार्थ
में जातीयर् होता है ।

इवे प्रतिकृतौ सूत्र तक क का
अधिकार है ।

प्रागिवीय अर्थों में अव्यय सर्वनाम
को टि के पहले अकच् होता है ।

क् अन्त वाले अव्यय से अकच्
होने पर द अन्तादेश होता है ।

अज्ञात अर्थ में वर्तमान प्रातिपदिक
तथा तिङन्त से स्वार्थ में यथाविहित
प्रत्यय होता है ।

कुत्सित अर्थ में वर्तमान शब्द से
यथाविहित प्रत्यय होता है ।

यदि संज्ञा गम्यमान हो तो कुत्सित
अर्थ में कन् होता है ।

अनुकम्पा में प्रतिपदिक तथा तिङन्त
से यथाविहित प्रत्यय होता है ।

नीति वाच्य होने पर अनुकम्पायुक्त
से यथाविहित प्रत्यय होता है ।

कु-ते ७५

अ-म् ८२

नी-तौ ८१

त-त् ८०

ड्या-त्, तद्धिताः, ७८. बह्वचो मनुष्यनाम्नाष्टज्वा २०३३ । म-म्रः ८२
कः, अ-म्, नी-तौ, ब-चो,
त-त् ठ-वा ८०

वहच् प्रातिपदिक तथा मनुष्य नाम-
धेय से अनुकम्पा तथा नीति
गम्यमान रहने पर विकल्प से ठच्
होता है ।

उपरिलिखित स्थिति में घन् और
इलच् भी होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७९. घनिलचौ च २०३४ । घ-चौ ८०
कः, अ-म्, नी-तौ,
त-त्, म-म्रः, ब-चो,
ठ-वा

उपादि प्रातिपदिक वहच् मनुष्य-
नामवाची शब्दों से अडच् और
वुच् प्रत्यय होते हैं ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८०. प्राचामुपादेरड्जुचौ च २०३६ ।। ४ ।।
कः, अ-म्, नी-तौ,
त-त्, म-म्रः, ब-चो,
ठ-वा, घ-चौ

मनुष्य नाम के लिये प्रयुक्त
जातिवाची शब्द से अनुकम्पा और
नीति में कन् होता है ।

अजिनान्त मनुष्य नाम वाची शब्द
से कन् और उत्तरपद लोप होता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८१. जातिनामः कन् २०३७ । कन् ८२
कः, अ-म्, नी-तौ,
म-म्रः,

इस प्रकरण में ठ और अजादि
प्रत्यय के यहाँ द्वितीय अच् के
बाद के वर्णों का लोप हो जाता
है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८२. अजिनान्तरस्योत्तरपदलोपश्च २०३९ । लोपः ८४
कः, अ-म्, म-म्रः,
कन्

ड्या-त्, तद्धिताः, ८३. ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः २०३५ । ठा-दौ ८४
कः, लोपः * चतुर्थादच ऊर्ध्वस्य लोपो वक्तव्यः । अचः ८४

- * अनजादौ च विभाषा लोपो वक्तव्यः ।
- * लोपः पूर्वपदस्य च ।
- * विनापि ग्रन्थं पूर्वोत्तरपदयोर्वा लोपो वाच्यः ।
- * उवर्णाल्लि इलस्य च ।
- * (ऋवर्णादिपि) ।
- * ठग्रहणमुको द्वितीयत्वे कविधानार्थम् ।
- * द्वितीयं संध्यक्षरं चेत्तदादेर्लोपो वक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८४. शेवलसुपरिविशालवरुणार्थमादीनां
कः, लोपः, ठा-दौ, तृतीयात् २०३८ ।
अचः * एकाक्षरपूर्वपदानामुत्तरपदलोपो वक्तव्यः ।
* षष्ठ्याजादिवचनात्सिद्धम् ।

मनुष्यनामवाची शेवल सुपरि
विशाल वरुण अर्थमन् शब्दों से
ठाजादि प्रत्ययों के यहाँ तृतीय
अच् के बाद के वर्णों का लोप
होता है ।

अल्पत्व विशिष्ट शब्दों से अल्पार्थ
में यथाविहित प्रत्यय होते हैं ।
ह्रस्वत्व विशिष्ट शब्दों से ह्रस्वार्थ
में यथाविहित प्रत्यय होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ८५. अल्पे २०४० ।

कः

ड्या-त्, तद्धिताः, ८६. ह्रस्वे २०४१ ।

कः

ह्रस्वे ९०

ड्या-त्, तद्धिताः, ८७. संज्ञायां कन् २०४२ ।

कः. ह्रस्वे

ड्या-त्, तद्धिताः, ८८. कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः २०४३ ।

कः. ह्रस्वे

ड्या-त्, तद्धिताः, ८९. कुत्वा डुपच् २०४४ ।

कः. ह्रस्वे

ड्या-त्, तद्धिताः, ९०. कासूगोणीभ्यां ष्रच् २०४५ । ष्रच् ९१

कः. ह्रस्वे

ड्या-त्, तद्धिताः, ९१. वत्सोक्षाश्चर्षभेभ्यश्च तनुत्वे २०४६ ।

कः, ष्रच्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९२. किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् किं-णे ९३

कः २०४७ । ए-स्य ९३

ड-च् ९४

ड्या-त्, तद्धिताः, ९३. वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् २०४८ ड-मच् ९४

कः, किं-णे, ए-स्य,

ड-च्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९४. एकाच्च प्राचाम् २०४९ ।

कः, ड-मच्, ड-च्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९५. अवक्षेपणे कन् २०५० ।

कः

कन् १००

स्वार्थिक प्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, ९६. इवे प्रतिकृतौ २०५१ ।

कन्

इवे १११

प्र-तौ १००

ड्या-त्, तद्धिताः, ९७. संज्ञायां च २०५२ ।

कन्, इवे, प्र-तौ

सं-म् १००

ड्या-त्, तद्धिताः, ९८. लुम्पनुष्ये २०५३ ।

कन्, इवे, प्र-तौ,

लुप् १००

सं-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ९९. जीविकार्थे चापण्ये २०५४ ।

कन्, इवे, प्र-तौ,

सं-म्, लुप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. देवपथादिभ्यश्च २०५५ । ॥ ५ ॥

कन्, इवे, प्र-तौ,

सं-म्, लुप्

ह्रस्वत्व हेतु वाले शब्दों से संज्ञा में कन् होता है ।

ह्रस्वार्थ वाच्य रहने पर कुटी शमी शुण्डा से र होता है ।

कुतू से ह्रस्वत्व द्योत्य रहने पर डुपच् होता है ।

कासू गोणी से ह्रस्वत्व में ष्रच् होता है ।

ह्रस्वत्व में वत्स उक्षन् अश्व ऋषभ से ष्रच् होता है ।

दो में एक का निर्धारण करना हो तो किम् यत् तत् से डतरच् प्रत्यय होता है ।

बहुतों में एक का निर्धारण करना हो या जाति के विषय में पूछना हो तो किम् यत् तत् से विकल्पेन डतमच् होता है ।

एक शब्द से स्वार्थ में डतरच् डत-मच् विकल्पेन होते हैं प्राचीन मत में अवक्षेपणे में कन् होता है ।

प्रतिकृति विशेषणक इव के अर्थ में कन् होता है ।

संज्ञा में भी इवार्थ में कन् होता है ।

मनुष्य अभिधेय रहने पर संज्ञा में विहित कन् का लुप् हो जाता है ।

अपण्य जीविकार्थ वाच्य होने पर कन् का लुप् हो जाता है ।

इवार्थ संज्ञा में विहित कन् का देव-पथ आदि शब्दों से लुप् हो जाता है ।

(१९१) देवपथ (हंसपथ वारिपथ रथपथ)
स्थलपथ कारिपथ अजपथ राजपथ शतपथ शङ्कुपथ
सिन्धुपथ सिद्धगति उष्ट्रग्रीव वामरज्जु हस्त इन्द्र
दण्ड पुष्प मत्स्य इति देवपथादिः ॥ आ-
कृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. वस्तेर्बज् २०५६ ।

इवे

ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. शिलाया ढः २०५७ ।

इवे

ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. शाखादिभ्यो यः २०५८ । यः १०४

इवे

(१९२) शाखा मुख जघन शृङ्ग मेघ अभ्र चरण
स्कन्ध स्कद (स्कन्द) उरस् शिरस् अग्र (शाण)
शरण ॥ इति शाखादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. द्रव्यं च भव्ये २०५९ ।

इवे, यः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. कुशाग्राच्छः २०६० ।

छः १०६

इवे

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. समासाच्च तद्विषयात् २०६१ ।

इवे, छः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. शर्करादिभ्योऽण् २०६२ ।

इवे

(१९३) शर्करा कपालिका कपाटिका कपिष्ठिका
(कनिष्ठिका) पुण्डरीक शतपत्र गोलोमन् लोमन्
गोपुच्छ नराची नकुल सिकता ॥ इति शर्करादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. अङ्गुल्यादिभ्यष्टक् २०६३ ।

ठक् १०९

इवे

(१९४) अङ्गुली भरुज बभ्रु वल्गु मण्डर मण्डल
शङ्कुली हरि कपि मुनि रुह खल उदश्वित् गोणी
उरस् कुलिश ॥ इत्यङ्गुल्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् २०६४ ।

इवे, ठक्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. कर्कलोहितादीकक् २०६५ ।

इवे

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थालछन्दसि ३५०२ ।

इवे

इवार्थ मात्र द्योत्य रहने पर वस्ति
से ढज् होता है ।

शिला शब्द से इवार्थ में ढ होता
है ।

इवार्थ में शाखा आदि शब्दों से
विकल्पेन य प्रत्यय होता है ।

भव्य अर्थ में द्रव्य निपातित होता
है ।

इवार्थ में कुशाग्र से छ होता है ।

इवार्थ विषयक समास से दूसरे
इवार्थ में छ होता है ।

शर्करा आदि शब्दों से इवार्थ में
अण् होता है ।

इवार्थ में अङ्गुली आदि शब्दों से
ठक् होता है ।

एकशाला से इवार्थ में विकल्प से
ठक् होता है ।

इवार्थ में कर्क और लोहिते से
ईकक् होता है ।

वेद में इवार्थ में प्रत्न पूर्व विश्व
इम से थाल् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः ११२. पूगाज्योऽग्रामणीपूर्वात् २०६६ । ज्यः ११३

अग्रामणीपूर्व पूगवाचीशब्द से स्वार्थ में ज्य होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. व्रातच्छजोरस्त्रियाम् ११०० ।

व्रातवाची तथा च्छज् अन्तवाले शब्दों से स्वार्थ में ज्य होता है, यदि स्त्रीलिङ्ग न हो ।

ज्यः

ड्या-त्, तद्धिताः ११४. आयुधजीविसङ्घाज्यङ्वाहीकेष्वब्राह्म- आ-त् ११७
णराजन्यात् २०६७ ।

वाहीकस्थ आयुधजीवी सङ्घ के वाचक शब्दों से स्वार्थ में ज्यट् होता है पर वे शब्द ब्राह्मण तथा राजन्यवाची न हों ।

ड्यात्, तद्धिताः, ११५. वृकाट्टेण्यण् २०६८ ।

आयुधजीवी वृक से स्वार्थ में टेण्यण् होता है ।

आ-त्

ड्यात्, तद्धिताः, ११६. दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः २०६९ ।

आयुधजीवी दामनि आदि तथा त्रिगर्त षष्ठ शब्दों से स्वार्थ में छ प्रत्यय होता है ।

आ-त्

(११५) दामनि औलपि बैजवापि औदकि औदङ्कि
अच्युतन्ति (आच्युतन्ति) अच्युतदन्ति (आच्यु-
तदन्ति) शाकुन्तकि आकिदन्ति आक्तिदन्ति औडवि
काकदन्तकि शात्रुतपि सार्वसेनि बिन्दु वैन्दवि तुलभ
मौञ्जायन काकन्दि सावित्रीपुत्र ॥ इति दामन्यादिः ॥

ड्यात्, तद्धिताः, ११७. पश्चादियौधेयादिभ्योऽणञौ २०७० ।

पशु आदि तथा यौधेय आदि आयुध जीवि सङ्घवाची शब्दों से स्वार्थ में अण् अञ् होते हैं ।

आ-त्

(११६) पशु असुर रक्षस् बाह्वीक वयस् वसु
मरुत् सत्त्वत् दशार्ह पिशाच अशनि कार्षापण ॥
इति पश्चादिः ॥

(११७) यौधेय (कौशेय) शौक्रेय शौभ्रेय धार्तेय
घार्तेय ज्याबाणेय त्रिगर्त भरत उशीनर ॥ इति
यौधेयादिः ॥

११८. अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमी-
वदूर्णावच्छुमदणो यञ् २०७१ ।

अणन्त अभिजित् विदभृत् शालावत्
शिखावत् शमीवत् ऊर्णावत् शुम्भत्
शब्दों से स्वार्थ में यञ् होता है ।
जहाँ से ज्य (११२ से) प्रत्यय हुआ
है वहाँ से यहाँ तक (११९ तक)
विहित प्रत्यय तद्राज कहलाते हैं ।

११९. ज्यादयस्तद्राजाः २०७२ ।

प्राग्दिशोऽनद्यतने विभाषा ज्य च जातिनाम्नो
वस्तेरेकोनविंशतिः ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

स्वार्थिक प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः १. पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च पा-देः २
२०७३ । वुन् २

ङ्या-त्, तद्धिताः, २. दण्डव्यवसर्गयोश्च २०७४ ।
वुन्, पा-देः

ङ्या-त्, तद्धिताः ३. स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् २०७५ । कन् ६

(१९८) स्थूल अणु माषेषु (माष इषु) । 'कृष्ण
तिलेषु' १२८ । 'यव व्रीहिषु' १२९ । 'इक्षु तिल
पाद्यकालावदाताः सुरायाम्' १३० । 'गोमूत्र
आच्छादने' १३१ । 'सूरा अहौ' १३२ । 'जीर्ण
शालिषु' १३३ । 'पत्रमूल समस्तो व्यस्तश्च' १३४ ॥
कुमारीपुत्र कुमारीश्वशुर मणि ॥ इति स्थूलादिः ॥

* चञ्चद्वृहतोरुपसंख्यानम् ।

* (सुराया अहौ ।)

ङ्या-त्, तद्धिताः, ४. अनत्यन्तगतौ क्तात् २०७६ । क्तात् ५
कन्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ५. न सामिवचने २०७७ ।

कन्, क्तात्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ६. बृहत्या आच्छादने २०७८ ।

कन्

ङ्या-त्, तद्धिताः ७. अषडक्षाशितङ्ग्वलंकर्मालंपुरुषाऽध्युत्तरप- खः ८
दात्खः २०७९ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८. विभाषाञ्चरेदिविस्त्रयाम् २०८० ।
कन्, खः

ङ्या-त्, तद्धिताः ९. जात्यन्ताच्छ बन्धुनि २०८१ । छः १०

ङ्या-त्, तद्धिताः, १०. स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् २०८२
छः

संख्यादि पाद और शत अन्त वाले
शब्दों से वीप्सा में वुन् होता है
और अन्त का लोप होता है ।
दण्ड और दान वाच्य हो तो
संख्यादि पाद शतान्त से स्वार्थ में
वुन् तथा अन्त्यलोप होता है ।
प्रकार वचन द्योत्य रहने पर स्थूल
आदि शब्दों से कन् होता है ।

अनत्यन्तगति द्योत्य रहने पर क्तान्त
से कन् होता है ।
सामि उपपद में हो तो क्तान्त से
कन् नहीं होता है ।
बृहती से स्वार्थ में कन् होता है
यदि वह आच्छादन में हो ।
अषडक्ष आशितङ्गु अलंकर्मन्
अलंपुरुष शब्दों से तथा अध्युत्तर
पद से स्वार्थ में ख होता है ।
स्त्रीत्व में वर्तमान अञ्चत्यन्त
दिग्वाची शब्दों से स्वार्थ में ख
प्रत्यय होता है ।
बन्धुत्व में वर्तमान जात्यन्त शब्द
से स्वार्थ में छ होता है ।
स्थानान्त से छ प्रत्यय होता है
विकल्प से, यदि समानस्थान वाच्य
हो ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ११. किमेत्तिङव्ययधादाम्ब्रव्यप्रकर्षे २००४ कि-त् १५
छः आमु १५
अर्षे १५

ङ्यात्, तद्धिताः, १२. अमु च छन्दसि ३५०३ ।
कि-त्, आमु, अर्षे

ङ्या-त्, तद्धिताः, १३. अनुगादिनष्टक् २०८३ ।
कि-त्, आमु, अर्षे

ङ्या-त्, तद्धिताः, १४. णचः स्त्रियामञ् ३२१६ ।
कि-त्, आमु, अर्षे

ङ्या-त्, तद्धिताः, १५. अणिनुणः ३२१९ ।
कि-त्, आमु, अर्षे

ङ्या-त्, तद्धिताः, १६. विसारिणो मत्स्ये २०८४ ।
अण्

ङ्या-त्, तद्धिताः १७. संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् सं-याः १८
२०८५ । क्रि-च् २०

ङ्या-त्, तद्धिताः, १८. द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् २०८६ । सुच् १९
क्रि-च्, सं-याः

ङ्या-त्, तद्धिताः, १९. एकस्य सकृच्च २०८७ ।
क्रि-च्, सुच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २०. विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले २०८८ ।
क्रि-च् ११११

ङ्या-त्, तद्धिताः २१. तत्प्रकृतवचने मयट् २०८९ । तत्-ट् २५

ङ्या-त्, तद्धिताः, २२. समूहवच्च बहुषु २०९० ।
तत्-ट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २३. अनन्तावसथेतिहभेषजाज्यः २०९१ ।
तत्-ट्

ङ्या-त्, तद्धिताः, २४. देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् २०९२ । ता-ये २६
तत्-ट् यत् २५

ङ्या-त्, तद्धिताः, २५. पादार्धाभ्यां च २०९३ ।
यत्, तत्-ट्, ता-ये

घ प्रत्ययान्त किम् एकारान्त शब्द
तिङ् तथा अव्यय से आमु होता
है, यदि द्रव्य प्रकर्ष न हो ।

घ प्रत्ययान्त किम् एकारान्तशब्द
तिङ् तथा अव्यय से वेद में अमु
आमु दोनों होते हैं ।
अनुगादिन् से ठक् होता है ।

स्त्रीलिङ्ग में णजन्त से अञ् होता है ।

इनुणन्त से स्वार्थ में अण् होता
है ।

मत्स्य वाच्य होने पर विसारिन् से
स्वार्थ में अण् होता है ।

क्रियाभ्यावृत्तिगणन में वर्तमान संख्या
शब्दों से स्वार्थ में कृत्वसुच् होता
है ।

क्रियाभ्यावृत्तिगणन में वर्तमान द्वि
त्रि चतुर् से सुच् होता है ।

एक को क्रियागणन में सकृत् आदेश
तथा सुच् होता है ।

क्रियाभ्यावृत्तिगणन में बहु से
विकल्पेन धा होता है, यदि गणन
अविप्रकृष्ट कालिक है ।

प्रचुरता से प्रस्तुत अर्थ में शब्द से
मयट् होता है ।

बहु प्रकृत में समूहवत् प्रत्यय तथा
मयट् भी होता है ।

अनन्त आवसथ इतिह भेषज से
स्वार्थ में ज्य होता है ।

तादर्थ्य में देवतान्त शब्दों से यत्
होता है ।

चतुर्थीसमर्थ तादर्थ्य में पाद अर्ध
तथा अन्य शब्दों से भी (परि-
गणित) यत् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, २६. अतिथेर्ज्यः २०९४ ।

ता-ये

ड्या-त्, तद्धिताः २७. देवात्तल् २०९५ ।

ड्या-त्, तद्धिताः २८. अव्येः कः २०९६ ।

ड्या-त्, तद्धिताः २९. यावादिभ्यः कन् २०९७ ।

कन् ३३

(१९९) याव मणि अस्थि [तालु] जानु लान्द्र
पीत स्तम्ब । 'ऋतावुष्णशीते' १३५ । 'पशौ
लूनविपाते' १३६ । 'अणु निपुणे' १३७ । 'पुत्र
कृत्रिमे' १३८ । 'स्नात वेदसमाप्तौ' १३९ । 'शून्य
रित्ते' १४० । 'दान कुत्सिते' १४१ । 'तनु सूत्रे'
१४२ । 'ईयसश्च' १४३ । ज्ञात अज्ञात ।
कुमारीक्रीडनकानि च (कुमारक्रीडनकानि च) ॥
इति यावादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ३०. लोहितान्मणौ २०९८ ।

कन्

लो-त् ३२

* लोहिताल्लिङ्गबाधनं वा ।

* नवस्य नू आदेशः त्रप्तनपञ्चाश्च प्रत्यया

वक्तव्याः ।

* नश्च पुराणे प्रात् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३१. वर्णे चानित्ये २०९९ ।

कन्, लो-त्

अ-त्ये ३३

ड्या-त्, तद्धिताः, ३२. रक्ते २१०० ।

कन्, लो-त्, अ-त्ये

रक्ते ३३

ड्या-त्, तद्धिताः, ३३. कालाच्च २१०१ ।

कन्, रक्ते, अ-त्ये

ड्या-त्, तद्धिताः ३४. विनयादिभ्यष्ठक् २१०२ ।

ठक् ३५

(२००) विनय समय । 'उपायो ह्रस्वत्वं च'
१४४ । संप्रति संगति कथंचित् अकस्मात् समाचार
उपचार समाय (समयाचार) व्यवहार संप्रदान
समुत्कर्ष समूह विशेष अत्यय ॥ इति विन-
यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ३५. वाचो व्याहृतार्थायाम् २१०३ ।

ठक्

व्या-म् ३६

चतुर्थी समर्थ अतिथि से तादर्थ्य
में व्य होता है ।

देव से स्वार्थ में तल् प्रत्यय होता
है ।

अवि से स्वार्थ में क होता है ।

याव आदि शब्दों से स्वार्थ में कन्
होता है ।

मणि अर्थ में लोहित शब्द से कन्
होता है ।

अनित्य वर्णार्थक लोहित से स्वार्थ
में कन् होता है ।

रंगे गये अर्थ में लोहित से स्वार्थ
में कन् होता है ।

अनित्य और रक्त अर्थ में काल
से कन् होता है ।

विनय आदि शब्दों से स्वार्थ में
ठक् होता है ।

अर्थ प्रकाशक वाच् शब्द से स्वार्थ
में ठक् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३६. तद्युक्तात्कर्मणोऽण् २१०४ । अण् ३८
व्या-म् * अण्प्रकरणे कुलालवरुडनिषादचण्डालामि-

त्रेभ्यश्छन्दसि ।

* भागरूपनामभ्यो धेयः ।

* मित्राच्च छन्दसि ।

* आग्नीध्रसाधारणादञ् ।

* अवयसमरुद्ध्यां छन्दसि ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ३७. ओषधेरजातौ २१०५ ।

अण्

ड्या-त्, तद्धिताः, ३८. प्रज्ञादिभ्यश्च २१०६ ।

अण्

(२०१) प्रज्ञ वणिज् उशिज्, उष्णिज् प्रत्यक्ष
[विद्वस्] विद्वन् षोडन् विद्या मनस् । 'श्रोत्र शरीरे'
१४५ । जुह्वत् । 'कृष्ण मृगे' १४६ । चिकीर्षत्
चोर शत्रु योध चक्षुस् वसु (एनस्) मरुत् क्रुञ्च
सत्त्वन्तु दशार्ह वयस् (व्याकृत) असुर रक्षस्
पिशाच अशनि कार्षापण देवता बन्धु ॥ इति
प्रज्ञादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ३९. मृदस्तिकन् २१०७ । मृदः ४०

ड्या-त्, तद्धिताः, ४०. सस्नौ प्रशंसायाम् २१०८ । ॥ २ ॥ प्र-म् ४१

मृदः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४१. वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्लातिलौ च छन्दसि

प्र-म् ३५०४ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४२. बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् २१०९ शस् ४३

* बह्वल्पार्थान्मङ्गलामङ्गलवचनम् । अ-म् ४९

ड्या-त्, तद्धिताः, ४३. संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् २११० ।

शस्, अ-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४४. प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः २१११ । प-म्याः ४५

अ-म् * आद्यादिभ्य उपसंख्यानम् । तसिः ४९

(२०२) (वा० ग०) । आदि मध्य अन्त

पृष्ठ पार्श्व ॥ इत्याद्यादिः ॥ आकृतिगणः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, ४५. अपादाने चाहीयरुहोः २११२ ।

तसिः, अ-म्, प-म्याः

अर्थ प्रकाशक वाग्युत कर्माभिधायी
कर्मन् से अण् होता है ।

अजाति में वर्तमान ओषधि से स्वार्थ
में अण् होता है ।

प्रज्ञादि शब्दों से स्वार्थ में अण्
होता है ।

मृद से स्वार्थ में तिकन् होता है ।
प्रशंसा अर्थ में मृद से स और स्न
होते हैं ।

प्रशंसार्थ में वृक और ज्येष्ठ से
क्रमशः वेद में तिल् और तातिल्
प्रत्यय होते हैं ।

कारकाभिधायी बहु और अल्प से
विकल्पेन शस् प्रत्यय होता है ।
संख्यावाची शब्दों से तथा एक-
वचनार्थ शब्दों से वीप्सा में विकल्प
से शस् प्रत्यय होता है ।

प्रतियोग में विहित पञ्चमी से तसि
होता है ।

अपादान प्रयुक्त पञ्चमी से विकल्पेन
तसि प्रत्यय होता है, जबकि जहाति
और रुह का प्रयोग न हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४६. अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वाकर्तरि तृतीयायाः अति-याः ४७
तसिः, अम् २११३ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ४७. हीयमानपापयोगाच्च २११४ ।
तसिः, अम्, अति-
याः

ड्या-त्, तद्धिताः, ४८. षष्ठ्या व्याश्रये २११५ । षष्ठ्याः ४९
तसिः, अ-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ४९. रोगाच्चापनयने २११६ ।
तसिः, अम्, षष्ठ्याः

ड्या-त्, तद्धिताः ५०. कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः २११७ कृ-गे ५७
* अभूततद्भाव इति वक्तव्यम् । सं-रि ५२
च्विः ५१

ड्या-त्, तद्धिताः, ५१. अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च २१२१
कृ-गे, सं-रि, च्विः

ड्या-त्, तद्धिताः, ५२. विभाषा साति कात्स्नर्ये २१२२ । विभाषा ५३
कृ-गे, सं-रि साति ५५

ड्या-त्, तद्धिताः, ५३. अभिविधौ संपदा च २१२४ । संपदा ५५
कृ-गे, साति, विभाषा

ड्या-त्, तद्धिताः, ५४. तदधीनवचने २१२५ । त-ने ५५
कृ-गे, साति, संपदा

ड्या-त्, तद्धिताः, ५५. देये त्रा च २१२६ । त्रा ५६
कृ-गे, साति, संपदा,
त-ने

ड्या-त्, तद्धिताः, ५६. देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्त-
कृ-गे, त्रा म्योर्बहुलम् २१२७ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५७. अव्यक्तानुकरणाद्व्यजवरार्थादिनिती डाच् डाच् ६७
कृ-गे २१२८ ।

अतिग्रह अव्यथन क्षेप में बने
तृतीयान्त शब्दों से विकल्पेन तसि
होता है, यदि वह तृतीया कर्ता में
न हुई हो ।

अकर्ता में तथा हीयमान और पाप
के योग में बने तृतीयान्त से
विकल्पेन तसि होता है ।

व्याश्रय में षष्ठ्यन्त से विकल्पेन
तसि होता है ।

रोगवाची शब्दों से हुये षष्ठ्यन्त
से अपनयन में विकल्प से तसि
होता है ।

सम्पद्यमान में वर्तमान शब्दों से
कृ भू अस् के योग में च्वि प्रत्यय
होता है ।

कृ भू अस् के योग में अरुष् अनस्
चक्षुष् चेतस् रहस् रजस् के अन्त
का लोप तथा च्वि भी होता है ।

यदि कात्स्नर्य गम्यमान, हो तो इन्हीं
स्थितियों में विकल्प से साति होता
है ।

अभिविधि में सम्पद् तथा कृन्वादि
योग में च्व्यर्थ में साति विकल्प
से होता है ।

पूर्व स्थिति में अधीनवचन में शब्दों
से साति भी होता है ।

तदधीन देय वाच्य रहने पर पूर्व
स्थिति में त्रा भी होता है ।

द्वितीया सप्तम्यन्त देव मनुष्य पुरुष
पुरु मर्त्य शब्दों से बहुलतया त्रा
प्रत्यय होता है ।

अनेकाच्च भाग युक्त अव्यक्तानुक-
रण शब्द से कृभ्वस्ति योग में डाच्
होता है, यदि आगे इति न हो ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ५८. कृजो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ २१२९ कृजः ६७
डाच् कृषौ ५९

ड्या-त्, तद्धिताः, ५९. संख्यायाश्च गुणान्तायाः २१३० ।
डाच्, कृजः, कृषौ

ड्या-त्, तद्धिताः, ६०. समयाच्च यापनायाम् २१३१ । ॥३॥
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६१. सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने २१३२ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६२. निष्कुलान्निष्कोषणे २१३३ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६३. सुखप्रियादानुलोम्ये २१३४ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६४. दुःखात्प्रातिलोम्ये २१३५ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६५. शूलात्पाके २१३६ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६६. सत्यादशपथे २१३७ ।
डाच्, कृजः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६७. मद्रात्परिवापणे २१३८ ।
डाच्, कृजः

* भद्राच्चेति वक्तव्यम् ।

समासान्त प्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, ६८. समासान्ताः ६७६ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ६९. न पूजनात् ९५४ ।
स-न्ताः

* स्वतिथ्यामेव ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ७०. किमः क्षेपे ९५५ ।
स-न्ताः, न

ड्या-त्, तद्धिताः, ७१. नजस्तत्पुरुषात् ९५६ ।
स-न्ताः, न

ड्या-त्, तद्धिताः, ७२. पथो विभाषा ९५७ ।
स-न्ताः, न, न-षात्

ड्या-त्, तद्धिताः, ७३. बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात् ८५१ ।
स-न्ताः

* संख्यायास्तत्पुरुषस्य वाच्यः ।

कृ के योग में द्वितीय तृतीय शम्बबीज शब्दों से डाच् होता है; यदि कृषि वाच्य हो ।

यदि कृषि वाच्य हो तो गुणान्त संख्यावाची शब्दों से कृ योग में डाच् होता है ।

यापना में समयशब्द से डाच् होता है कृ के योग में ।

कृ के योग में अतिव्यथन में सपत्र निष्पत्र शब्द से डाच् होता है ।

निष्कोषण में निष्कुल शब्द से कृ के योग में डाच् होता है ।

आनुलोम्य में सुख प्रिय शब्द से कृ के योग में डाच् होता है ।

प्रातिलोम्य में दुःख से कृ योग में डाच् होता है ।

कृ के योग में शूल शब्द से पाक अर्थ में डाच् होता है ।

सत्य से कृ के योग में अशपथ अर्थ में डाच् होता है ।

परिवापण में मद्र से कृ योग में डाच् होता है ।

स-न्ताः १६० पाद समाप्ति तक समासान्ताः का अधिकार है ।

न ७२ पूजनवाची शब्दों से समासान्त प्रत्यय नहीं होते हैं ।

क्षेपार्थ किम् से परे समासान्त नहीं होता है ।

न-षात् ७२ नज् से परे तत्पुरुष से समासान्त नहीं होता है ।

नज् से परे पथिन् (तत्पुरुष) से समासान्त प्रत्यय विकल्प से होता है ।

संख्येय में होने वाले बहुव्रीहि में अबहुगण से डच् होता है ।

सर्वसमासान्तप्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७४. ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे ९४० ।

स-न्ताः * अनृचबह्वृचावध्येतयेव ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७५. अच्यत्यन्ववपूर्वात्सामलोमः ९४३ । अच् ८७

स-न्ताः * कृष्णादक्याण्डुसंख्यापूर्वाया भूमेरजिष्यते ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७६. अक्ष्णोऽदर्शनात् ९४४ ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७७. अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वननुहर्क्-

सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवप-

दष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिः-

श्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजा-

तोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ९४५ ।

* त्र्युपाभ्यां चतुरोऽजिष्यते ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७८. ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ९४६ ।

स-न्ताः, अच् * पत्यराजभ्यां च ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ७९. अवसमन्धेभ्यस्तमसः ९४७ ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८०. श्वसो वसीयः श्रेयसः ९४८ ।। ४ ।।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८१. अन्ववतप्ताद्रहसः ९४९ ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८२. प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ९५० ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८३. अनुगवमायामे ९५१ ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८४. द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ९५२ ।

स-न्ताः, अच्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८५. उपसर्गादध्वनः ९५३ ।

स-न्ताः, अच्

तत्पुरुषसमासान्त प्रत्ययाः

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८६. तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः ७८६ । त-स्य १०५

स-न्ताः, अच्

सं-देः ८८

अक्ष को छोड़कर ऋक् पुर अप् धुर् पथिन् शब्दों से समासान्त होता है ।

प्रति अनु अव पूर्वक सामान्त लोमान्त से अच् होता है ।

दर्शनातिरिक्त अक्षि से समासान्त अच् होता है ।

अचतुर विचतुर सुचतुर स्त्रीपुंस धेन्वनुहुह ऋक्साम वाङ्मनस अक्षिभ्रुव दारगव उर्वष्ठीव पदष्ठीव नक्तंदिव रात्रिंदिव अहर्दिव सरजस निःश्रेयस पुरुषायुष द्व्यायुष त्र्यायुष ऋग्यजुष जातोक्ष महोक्ष वृद्धोक्ष उपशुन गोष्ठश्च शब्द अच्यत्ययान्त निपातित होते हैं ।

ब्रह्म हस्ति पूर्वक वर्चस् से समासान्त अच् होता है ।

अव सम् अन्ध पूर्वक तमस् शब्दान्त से समासान्त अच् होता है ।

श्वस् पूर्वक वसीयस् और श्रेयस् से समासान्त अच् होता है ।

अनु अव तप्त से परे रहस् शब्द से समासान्त अच् होता है ।

प्रतिपूर्वक उरस् शब्द से समासान्त अच् होता है, यदि उरस् सप्तमी के अर्थ में हो ।

आयाम में अनुगवम् का निपातन होता है ।

यदि वेदि विवक्षित हो तो द्विस्तावा त्रिस्तावा बनते हैं ।

उपसर्गपूर्वक अध्वन् से समासान्त अच् होता है ।

संख्यादि अव्ययादि अङ्गुल्यन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् होता है ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८७. अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः
स-न्ताः, अच्, त-
स्य, सं-देः * अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम् ।

७८७ ।

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८८. अहोऽह एतेभ्यः ७९० ।
स-न्ताः, त-स्य, सं-
देः

अ-ऽहः ९०

ङ्या-त्, तद्धिताः, ८९. न संख्यादेः समाहारे ७९३ ।
स-न्ताः, त-स्य,
अ-ऽह

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९०. उत्तमैकाभ्यां च ७९४ ।
स-न्ताः, त-स्य,
अ-ऽह

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९१. राजाहःसखिभ्यष्टच् ७८८ ।
स-न्ताः, त-स्य

टच् ११२

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९२. गोरतद्धितलुकि ७२९ ।
स-न्ताः, टच्, त-
स्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९३. अग्राख्यायामुरसः ७९५ ।
स-न्ताः टच्, त-स्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९४. अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः ७९६ ।
स-न्ताः, टच्, त-
स्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९५. ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ७९७ ।
स-न्ताः टच्, त-स्य

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९६. अतेः शुनः ७९८ ।
स-न्ताः, टच्, त-स्य

शुनः ९७

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९७. उपमानादप्राणिषु ७९९ ।
स-न्ताः, टच्, त-
स्य, शुनः

उ-त् ९८

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९८. उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थः ८०० ।
स-न्ताः, टच्, त-
स्य, उ-त्

ङ्या-त्, तद्धिताः, ९९. नावो द्विगोः ८०१ ।
स-न्ताः टच्, त-स्य

नावः १००

द्विगोः १०१

अहन् सर्व एकदेश संख्यात पुण्य पूर्वक तथा संख्यादि अव्ययादि रात्र्यन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् होता है ।

सर्वादि से परे अहन् को अह आदेश होता है समासान्त में ।

संख्यादि तत्पुरुष यदि समाहार में हो तो अहन् को अह आदेश नहीं होता है ।

उत्तम एक से परे अहन् को अह नहीं होता है ।

राजन् अहन् सखि अन्त वाले शब्दों से टच् होता है ।

गो शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है, यदि तत्पुरुष तद्धितलुक् विषयक न हो ।

अग्राख्या में उरस् शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है ।

जाति और संज्ञा में अनस् अश्मन् अयस् सरस् शब्दान्त तत्पुरुष से टच् होता है ।

ग्राम कौट पूर्वक तक्षन् से तत्पुरुष में टच् होता है ।

अतिपूर्वक श्वन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

अप्राणी में वर्तमान उपमान वाची श्वन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

उत्तर मृग पूर्व पूर्वक तथा उपमान पूर्वक सक्थ से समासान्त टच् होता है ।

नौ शब्दान्त द्विगु से समासान्त टच् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १००. अर्धाच्च ८०२ ॥ ५ ॥ अर्धात् १०१
 स-न्ताः, टच्, त-
 स्य, द्विगोः, नावः
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०१. खार्याः प्राचाम् ८०३ ।
 स-न्ताः, टच्, त-
 स्य, द्विगोः, अ-त्
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०२. द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ८०४ ।
 स-न्ताः टच्, त-स्य
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०३. अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ३५०५ ।
 स-न्ताः टच्, त-स्य
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०४. ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ८०५ । ब्रह्मणः १०५
 स-न्ताः, टच्, त-
 स्य
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०५. कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ८०६ ।
 स-न्ताः, टच्, त-
 स्य, ब्रह्मणः

द्वन्द्व समासान्त प्रत्ययः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०६. द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे ९३० ।
 स-न्ताः, टच्

अव्ययीभाव समासान्त प्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, १०७. अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ६७७ । अ-ये ११२
 स-न्ताः, टच्

(२०२) शरद् विपाश् अनस् मनस् उपानह
 अनुडुह दिव हिमवत् हिरुक् विद् सद् दिश् दृश्
 विश् चतुर त्यद् तद् यद् कियत् । 'जराया जरस्
 च' १४७ । 'प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः १४८ । प-
 थिन् ॥ इति शरदादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १०८. अनश्च ६७८ । अनः १०९
 स-न्ताः टच्, अ-ये
 ड्या-त्, तद्धिताः, १०९. नपुंसकादन्यतरस्याम् ६८० । अ-म् १११
 स-न्ताः, टच्,
 अनः, अ-ये
 ड्या-त्, तद्धिताः, ११०. नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ६८१ ।
 स-न्ताः, टच्, अ-
 ये, अ-म्

अर्धपूर्वक नौ से तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

खारी शब्दान्त द्विगु तथा अर्द्धपूर्वक खारी से टच् होता है, पूर्वाचार्य के मत से ।

द्वि त्रि पूर्वक अञ्जलि से समासान्त टच् होता है ।

वेद में नपुंसक अन्नन्त असन्त से तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

यदि समास से जनपद बताया जाय तो ब्रह्मन् से तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

कु महत् पूर्वक ब्रह्मन् से विकल्पेन तत्पुरुषान्त टच् होता है ।

समाहार में वर्तमान चवर्गान्त दकारान्त णान्त हान्त द्वन्द्व से टच् होता है ।

अव्ययीभाव में शरद् आदि शब्दों से टच् होता है ।

अन्नन्त अव्ययीभाव से समासान्त टच् होता है ।

नपुंसक अन्नन्त अव्ययीभाव से विकल्पेन समासान्त टच् होता है ।

नदी पौर्णमासी आग्रहायणी अन्त वाले अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १११. झयः ६८२ ।

स-न्ताः, टच्, अ-
ये, अ-म्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११२. गिरेश्च सेनकस्य ६८३ ।

स-न्ताः, टच्, अ-
ये

बहुव्रीहि समासान्त प्रत्ययाः

ड्या-त्, तद्धिताः, ११३. बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् ८५२ ब-हौ १६०

स-न्ताः षच् ११४

ड्या-त्, तद्धिताः, ११४. अङ्गुलेर्दारुणि ८५३ ।

स-न्ताः, ब-हौ, षच्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११५. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ८५४ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, ११६. अप्पूरणीप्रमाणयोः ८३२ ।

अप् ११७

स-न्ताः, ब-हौ * नेतुर्नक्षत्रेऽव्यक्तव्यः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११७. अन्तर्बहिर्भ्यां च लोभः ८५५ ।

स-न्ताः, ब-हौ, अप्

ड्या-त्, तद्धिताः, ११८. अजासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् अच् १२१

स-न्ताः, ब-हौ ८५६ । ना-याः ११९

* खुरखराभ्यां वा नस् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, ११९. उपसर्गाच्च ८५८ ।

स-न्ताः, ब-हौ, अ- * वेग्रौ वक्तव्यः ।

च्, ना-याः * ख्यश्च ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२०. सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रणीप-

स-न्ताः, ब-हौ, अच् दाजपदप्रोष्ठपदाः ८६० ॥ ६ ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२१. नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् न-भ्यः १२२

स-न्ताः, ब-हौ, अच् ८६१ ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२२. नित्यमसिञ्जामेधयोः ८६२ ।

असिच् १२३

स-न्ताः, ब-हौ न-भ्यः

ड्या-त् तद्धिताः स- १२३. बहुप्रजाश्छन्दसि ३५०६ ।

न्ताः, ब-हौ, असिच्

झयन्त अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है ।

सेनक के मत में गिरिशब्दान्त अव्ययीभाव से विकल्पेन टच् होता है ।

स्वाङ्गवाची सक्थ्यन्त अक्ष्यन्त बहु-व्रीहि से समासान्त षच् प्रत्यय होता है ।

दारु के लिये प्रयुक्त अङ्गुल्यन्त बहुव्रीहि से षच् होता है ।

द्वित्रि पूर्वक मूर्धन् अन्तवाले बहुव्रीहि से ष होता है ।

स्त्रीलिङ्ग पूरण प्रत्ययान्त तथा प्रमाणी अन्त वाले बहुव्रीहि से अप् प्रत्यय होता है ।

अन्तरू बहिस् पूर्वक लोमन् शब्दान्त बहुव्रीहि से अप् प्रत्यय होता है ।

नासिका शब्दान्त बहुव्रीहि से संज्ञा में अच् होता है तथा नासिका को नस हो जाता है पर नासिका के पूर्व में स्थूल शब्द न हो ।

उपसर्ग पूर्वक नासिकान्त बहुव्रीहि से अच् होता है तथा नासिका को नस हो जाता है ।

सुप्रात सुश्व सुदिव शारिकुक्ष चतुरश्र एणीपद अजपद प्रोष्ठपद निपातित होते हैं ।

नञ् दुस् सु पूर्वक हल्यन्त सक्थ्यन्त बहुव्रीहि से विकल्पेन समासान्त अच् होता है ।

नञ् दुस् सु पूर्वक प्रजान्त मेधान्त बहुव्रीहि से नित्य अच् होता है । वेद में बहुप्रजा शब्द निपातित होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १२४. धर्मादिनिच्केवलात् ८६३ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १२५. जम्भा सुहरितृणसोमेभ्यः ८६४ ।

स-न्ताः, ब-हौ,

अनिच्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२६. दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ८६५ ।

स-न्ताः ब-हौ अनिच्

ड्या-त्, तद्धिताः, १२७. इच्कर्मव्यतिहारे ८६६ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १२८. द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ८६७ ।

स-न्ताः, ब-हौ, इच्

(२०४) द्विदण्डि द्विमुसलि उभाञ्जलि उभयाञ्जलि
उभादन्ति उभयादन्ति उभाहस्ति उभयाहस्ति उभाकर्णि
उभयाकर्णि उभापाणि उभयापाणि उभाबाहु उभयाबाहु
एकपदि प्रोष्ठपदि आचपदि (आढ्यपदि) सपदि
निकुच्यकर्णि संहतपुच्छि अन्तेवासि ॥ इति
द्विदण्ड्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १२९. प्रसंभ्यां जानुनोर्जुः ८६८ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १३०. ऊर्ध्वाद्धिभाषा ८६९ ।

स-न्ताः ब-हौ जा-जुः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३१. ऊधसोऽनङ् ४८३ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १३२. धनुषश्च ८७० ।

स-न्ताः ब-हौ अनङ्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३३. वा संज्ञायाम् ८७१ ।

स-न्ताः, ब-हौ, अ-

नङ्, धनुषः

ड्या-त्, तद्धिताः, १३४. जायाया निङ् ८७२ ।

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १३५. गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ८७४ । ग-येत् १३७

स-न्ताः, ब-हौ * गन्धस्येत्ये तदेकान्तग्रहणम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १३६. अल्पार्थवाचाम् ८७५ ।

स-न्ताः, ब-हौ, ग-

येत्

अनिच् १२६

केवल (एक) पद पूर्वक धर्मान्त
बहुव्रीहि से अनिच् होता है ।

सु हरित तृण सोम पूर्वक जम्भा
शब्दान्त बहुव्रीहि निपातित होता
है ।

लुब्धयोग में दक्षिणेर्मा शब्द निपा-
तित होता है ।

इच् १२८

कर्मव्यतिहार में बहुव्रीहि से इच्
प्रत्यय होता है ।

द्विदण्डि आदि शब्दों से भी इच्
प्रत्यय होता है ।

जा-जुः १३०

बहुव्रीहि में प्र सम् पूर्वक जानु
शब्द को जु आदेश होता है ।

ऊर्ध्वशब्दोत्तर जानु को विकल्प
से जु होता है ।

अनङ् १३३

ऊधस् शब्दान्त बहुव्रीहि को अनङ्
आदेश होता है ।

धनुषः १३३

धनुष् शब्दान्त बहुव्रीहि को अनङ्
आदेश होता है ।

धनुष् शब्दान्त बहुव्रीहि को संज्ञा
में विकल्पेन अनङ् होता है ।

जाया शब्दान्त बहुव्रीहि को निङ्
आदेश होता है ।

उत् पूति सु सुरभि पूर्वक गन्ध को
बहुव्रीहि में समासान्त इकार आदेश
होता है ।

अल्पार्थवाची गन्थान्त बहुव्रीहि में
इकारादेश होता है ।

ड्या-त् तद्धिताः स- १३७. उपमानाच्च ८७६ ।

न्ताः, ब-हौ, ग-येत्

ड्या-त्, तद्धिताः, १३८. पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ८७७ ।

स-न्ताः, ब-हौ, उ-

त्

(२०५) हस्तिन् (कुदाल अश्व कशिक कुरुत)

कटोल कटोलक गण्डोल गण्डोलक कण्डोल

कण्डोलक अज कपोत जाल गण्ड महेला दासी

गणिका कुसूल ॥ इति हस्त्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १३९. कुम्भपदीषु च ८७८ ।

स-न्ताः, ब-हौ

(२०६) कुम्भपदी एकपदी जालपदी (शूलपदी)

मुनिपदी गुणपदी शतपदी सूत्रपदी गोधापदी कल-

शीपदी विपदी (तृणपदी) द्विपदी त्रिपदी षट्पदी

दासीपदी शितिपदी विष्णुपदी सुपदी निष्पदी आर्द्रपदी

कुणिपदी कृष्णपदी शुचिपदी द्रोणीपदी (द्रोणपदी)

द्रुपदी सूकरपदी शकृत्पदी अष्टापदी स्थूणापदी अपदी

सूचीपदी ॥ इति कुम्भपद्यादिः ॥

ड्या-त्, तद्धिताः, १४०. संख्यासुपूर्वस्य ८७९ ॥ ७ ॥ सं-स्य १४१

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १४१. वयसि दन्तस्य दत् ८८० ।

स-न्ताः, ब-हौ, सं-

स्य

ड्या-त् तद्धिताः स- १४२. छन्दसि च ३५०७ ।

न्ताः, ब-हौ, दन्-त्

ड्या-त् तद्धिताः स- १४३. स्त्रियां संज्ञायाम् ८८१ ।

न्ताः, ब-हौ, दन्-त्

ड्या-त् तद्धिताः स- १४४. विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ८८२ । विभाषा १४५

न्ताः, ब-हौ, दन्-त्

ड्या-त्, तद्धिताः, १४५. अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ८८३ ।

स-न्ताः ब-हौ, दन्-

त्, विभाषा

ड्या-त्, तद्धिताः, १४६. ककुदस्यावस्थायां लोपः ८८४ । लोपः १५०

स-न्ताः, ब-हौ

ड्या-त्, तद्धिताः, १४७. त्रिककुत्पर्वते ८८५ ।

स-न्ताः ब-हौ, लोपः

उ-त् १३८

उपमान पूर्वक गन्थान्त बहुव्रीहि में इकारादेश होता है ।

हस्तिन् आदि उपमानों को छोड़कर उपमान पूर्वक पादान्त बहुव्रीहि में अन्त्य अ का लोप होता है ।

कुम्भपदी आदि शब्द निपातित होते हैं ।

संख्या और सु पूर्वक पादान्त बहुव्रीहि में अन्त्य का लोप होता है ।

यदि वय वाच्य हो तो संख्या और सु पूर्वक दन्त को दत् आदेश होता है बहुव्रीहि में ।

वेद में भी संख्या सु पूर्वक दन्त को दत् होता है ।

संज्ञा में दन्त को दत् होता है स्त्रीलिङ्ग बहुव्रीहि में ।

श्याव अरोक पूर्वक दन्त को विकल्प से दत् होता है ।

अग्रान्त तथा शुद्ध शुभ्र वृष वराह पूर्वक दन्त को दत् आदेश विकल्प होता है ।

यदि अवस्था गम्यमान हो तो ककु-दान्त बहुव्रीहि का अन्त्यलोप होता है ।

यदि पर्वत वाच्य हो तो बहुव्रीहि में त्रिककुद के अन्त का लोप होता है ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १४८. उद्धिभ्यां काकुदस्य ८८६ ।

स-न्ताः ब-हौ, लोपः

ड्या-त्, तद्धिताः, १४९. पूर्णाद्धिभाषा ८८७ ।

स-न्ताः, ब-हौ, लो-

पः, का-स्य

ड्या-त्, तद्धिताः, १५०. सुहृदुर्हदौ मित्रामित्रयोः ८८८ ।

स-न्ताः ब-हौ, लोपः

ड्या-त्, तद्धिताः, १५१. उरःप्रभृतिभ्यः कप् ८८९ ।

स-न्ताः, ब-हौ

(२०७) उरस् सर्पिस् उपानह पुमान् अनङ्वान्

पयः नौः लक्ष्मीः दधि मधु शाली (शालिः) ।

('अर्थान्नजः') १४९ ॥ इत्युरःप्रभृतयः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५२. इनः स्त्रियाम् ८९० ।

स-न्ताः, ब-हौ, कप् * अर्थान्नजः ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५३. नद्यतश्च ८३३ ।

स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५४. शेषाद्धिभाषा ८९१ ।

स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५५. न संज्ञायाम् ८९३ ।

स-न्ताः, ब-हौ, कप्

ड्या-त्, तद्धिताः, १५६. ईयसश्च ८९४ ।

स-न्ताः ब-हौ कप् न * ईयसो बहुव्रीहिर्नेति वाच्यम् ।

ड्या-त्, तद्धिताः, १५७. वन्दिते भ्रातुः ८९५ ।

स-न्ताः ब-हौ कप् न

ड्या-त्, तद्धिताः, १५८. ऋतश्छन्दसि ३५०८ ।

स-न्ताः ब-हौ कप् न

ड्या-त्, तद्धिताः, १५९. नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ८९६ ।

स-न्ताः ब-हौ कप् न

ड्या-त्, तद्धिताः, १६०. निष्प्रवाणिश्च ८९७ ॥ ८ ॥

स-न्ताः ब-हौ कप् न

पादशतस्य तत्प्रकृतवृकज्येष्ठाभ्यां सपत्रान्व-

वतप्तात्कार्या नञ्दुःसुभ्यो वयसि विंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थः

पादः अध्यायश्च ।

का-स्य १४९

उत् वि पूर्वक काकुद का. अन्त्यलोप बहुव्रीहि में होता है ।

पूर्ण पूर्वक काकुद का विकल्पेन अन्त्य लोप होता है ।

मित्र और अमित्र अर्थ में क्रमशः

सुहृत् दुर्हृत् निपातित होते हैं ।

उरस् आदि शब्दान्त बहुव्रीहि से कप् प्रत्यय होता है ।

स्त्रीलिङ्ग में इन् अन्त वाले बहुव्रीहि से कप् होता है ।

नद्यन्त तथा ऋकारान्त बहुव्रीहि से कप् होता है ।

जिस बहुव्रीहि में प्रत्यय का विधान न किया गया हो उनसे विकल्पेन कप् होता है ।

संज्ञा में बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।

ईयसन्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।

वन्दितार्थक भ्रातृशब्दान्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।

वेद में ऋवर्णान्त बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।

स्वाङ्ग में नाडी तन्त्री अन्त वाले बहुव्रीहि से कप् नहीं होता है ।

निष्प्रवाणिः में कप् का प्रतिषेध होता है ।

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

द्वित्व प्रकरणम्

ए-स्य	१. एकाचो द्वे प्रथमस्य २१७५ ।	ए-स्य ११	एकाचः प्रथमस्य द्वे का अधिकार होगा ।
ए-स्य	२. अजादेद्वितीयस्य २१७६ ।	अ-स्य ११	अजादेः द्वितीयस्य का भी अधिकार होगा ।
ए-स्य, अ-स्य	३. नन्द्राः संयोगादयः २४४६ । * ईर्ष्यतेस्तृतीयस्येति वाच्यम् । * कण्ड्वादीनां तृतीयस्येति वाच्यम् । * यथेष्टं नामधातुषु ।		अच् से परे संयोगादि न् द र् को द्वे नहीं होता है ।
ए-स्य, अ-स्य	४. पूर्वोऽभ्यासः २१७८ ।		(द्वे में) पूर्व को अभ्यास कहा जाता है ।
ए-स्य, अ-स्य	५. उभे अभ्यस्तम् ४२६ ।	अ-तम् ६	दोनों की अभ्यस्त संज्ञा होती है ।
ए-स्य, अ-स्य, अ-तम्	६. जक्षित्यादयः षट् ४२८ ।		जक्ष जागृ दरिद्रा चकासृ शासु दी-धीङ् वेवीङ् की अभ्यस्त संज्ञा होती है ।
ए-स्य, अ-स्य	७. तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ३५०९ । * तुजादिषु छन्दः प्रत्ययग्रहणं कर्तव्यम् ।	धा-स्य ११	तुज आदि के अभ्यास को वेद में दीर्घ होता है ।
ए-स्य, अ-स्य	८. लिटि धातोर्नभ्यासस्य २१७७ ।		लिट् में धातु का अनभ्यास पर धात्वयव के प्रथम एकाच् तथा आदिभूत अच् से परे द्वितीय को यथायोग द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	९. सन्यङोः २३९५ ।		सन्नन्त यङन्त के अनभ्यास धात्व-वयव प्रथम एकाच् तथा आदिभूत अच् से परे द्वितीय को यथायोग द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	१०. श्लौ २४९० ।		श्लु में भी पूर्ववत् द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	११. चङि २३१५ ।		चङ् में भी पूर्ववत् द्वित्व होता है ।
ए-स्य, अ-स्य, धा-स्य	१२. दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च ३६२९ । * चरिचलिपतिवदीनां वा द्वित्वमच्याक् चा-भ्यासस्य ।		दाश्वान् साह्वान् मीढ्वान् निपातित होते हैं ।

* हन्तेर्यत्वं च ।

* पाटेर्णिलुक् चोक्च दीर्घश्चाभ्यासस्य ।

१३. ष्यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे १००३ ष्यङः १४

स-म् ३१

स-म्, ष्यङः

१४. बन्धुनि बहुव्रीहौ १००५ ।

* मातृज्यातृकमातृषु वा ।

स-म्

१५. वचिस्वपियजादीनां किति २४०९ । व-नां १७

किति १६

स-म्, व-नां, किति १६. ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतित्वृश्चतिपृच्- ग्र-नां १७

छतिभृज्जतीनां डिति च २४१२ ।

स-म्, व-नां, ग्र-नां १७. लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् २४०८ ।

स-म्

१८. स्वापेश्रडि २५८४ ।

स-म्

१९. स्वपित्यमिव्येजां यङि २६४५ । यङि २१

स-म्, यङि

२०. न वशः २६४६ । ॥ १ ॥

स-म्, यङि

२१. चायः की २६४७ ।

स-म्

२२. स्फायः स्फी निष्ठायाम् ३०४४ । नि-म् २८

स-म्, नि-म्

२३. स्त्यः प्रपूर्वस्य ३०३३ ।

स-म्, नि-म्

२४. द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः ३०२० । श्यः २६

स-म्, नि-म्, श्यः २५. प्रतेश्च ३०२२ ।

स-म्, नि-म्, श्यः २६. विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ३०२३ ।

विभाषा २८

पुत्र पति शब्द यदि उत्तरपद में हों तो तत्पुरुष में ष्यङ् को सम्प्रसारण होता है ।

बहुव्रीहि में यदि बन्धु शब्द उत्तरपद में हो तो ष्यङ् को सम्प्रसारण होता है ।

वच स्वप् यज वप वह वस वेज् व्येज् हेज् वद श्वि को कित् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।

ग्रह ज्या वेज् व्यध् वश व्यच व्रश्च प्रच्छ भ्रस्ज को डित् और कित् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।

उपरिलिखित वचादि ग्रहादि को लिट् के यहाँ अभ्यास को सम्प्रसारण होता है ।

ण्यन्त स्वप को चङ् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।

ष्वप स्यम व्येज् को यङ् के यहाँ सम्प्रसारण होता है ।

वश को यङ् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है ।

चाय को यङ् के यहाँ की आदेश होता है ।

स्फायी को निष्ठा में स्फी आदेश होता है ।

प्र पूर्वक स्त्यै छ्यै को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।

द्रवमूर्ति और स्पर्श अर्थ में वर्तमान श्यैङ् धातु को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।

प्रतिपूर्वक श्यैङ् को निष्ठा में सम्प्रसारण होता है ।

अभि अव पूर्वक श्यैङ् को निष्ठा में विकल्प से सम्प्रसारण होता है ।

स-म्, नि-म्, विभाषा २७. श्रुतं पाके ३०६७ ।

स-म्, नि-म्, विभाषा २८. प्यायः पी ३०७२ ।

* आङ्पूर्वस्यान्धूसोरिति वक्तव्यम् ।

स-म्, प्या-पी २९. लिङ्यङोश्च २३२७ ।

स-म्, लि-ङोः ३०. विभाषा श्वेः २४२० ।

स-म्, विश्वेः ३१. णौ च संश्रङोः २५७९ ।

णौ, सं-ङोः, ३२. ह्रः संप्रसारणम् २५८६ ।

सं-म्, ह्रः ३३. अभ्यस्तस्य च २४१७ ।

सं-म्, ह्रः ३४. बहुलं छन्दसि ३५१० ।

सं-म्, छसि, व-ल ३५. चायः की ३५११ ।

सं-म्, छसि ३६. अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याज-
श्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः ३५१२ ।

सं-म् ३७. न संप्रसारणे संप्रसारणम् ३६३ ।
* रयेर्मतौ बहुलम् ।

* ऋचि त्रेरुत्तरपदादिलोपश्छन्दसि ।

सं-म्, न ३८. लिटि वयो यः २४१३ ।

सं-म्, न, लिटि ३९. वश्चास्यान्यतरस्यां किति २४१४ ।

सं-म्, न, लिटि ४०. वेजः २४१५ ।। २ ।।

सं-म्, न, वेजः ४१. ल्यपि च ३३३९ ।

सं-म्, न, ल्यपि ४२. ज्यश्च ३३४० ।

प्या-पी २९

लि-ङोः ३०

वि-श्वेः ३१

णौ, सं-ङोः
३२

सं-म् ४४
ह्रः ३४

व-ल ३५
छ-सि ३६

न ४४

लिटि ४०

वेजः ४१

ल्यपि ४४

श्रा पाके को क के यहाँ विकल्प से
शृ हो जाता है ।

प्यायी को निष्ठा में विकल्प से पी
होता है ।

लिट् और यङ् में प्यायी को पी
होता है ।

शिव को लिट् यङ् में विकल्प से
सम्प्रसारण होता है ।

णौ, सं-ङोः सन् परक यङ्परक णि के यहाँ श्वि
को विकल्प से सम्प्रसारण होता
है ।

सन्परक यङ्परक णि के यहाँ ह्रा
को सम्प्रसारण होता है ।

अभ्यस्तीभूत ह्रैच् (ह्रा) को
सम्प्रसारण होता है ।

वेद में ह्रा को बहुलतया सम्प्रसारण
होता है ।

वेद में चाय को बहुलतः की होता
है ।

वेद में अपस्पृधेथाम् आनृचुः आनृहुः
चिच्युषे तित्याज श्राताः श्रितम्
आशीरा आशीर्तः निपातनात् बनते
हैं ।

सम्प्रसारण परे रहने पर पूर्व यण्
को सम्प्रसारण नहीं होता है ।

लिट् के यहाँ वय् के य को
सम्प्रसारण नहीं होता है ।

वय् के व को कित् लिट् में विकल्प
से व होता है ।

वेज् को लिट् के यहाँ सम्प्रसारण
नहीं होता है ।

ल्यप् के यहाँ वेज् को सम्प्रसारण
नहीं होता है ।

ज्या को ल्यप् के यहाँ सम्प्रसारण
नहीं होता है ।

सं-म्, न, ल्यपि ४३. व्यश्च ३३४१ ।

व्यः ४४

व्येञ् को ल्यप् के यहाँ सम्प्रसारण नहीं होता है ।

सं-म्, न, ल्यपि, ४४. विभाषा परेः ३३४२ ।

व्यः

परिपूर्वक व्येञ् को ल्यप् के यहाँ विकल्प से सम्प्रसारण होता है ।

आत्व विधि प्रकरणम्

४५. आदेच उपदेशेऽशिति २३७० ।

आ-चः ५७

उ-शे ६५

उपदेश में एजन्त धातु को आ होता है, शित् के यहाँ नहीं होता है ।

उ-शे, आ-चः ४६. न व्यो लिटि २४१६ ।

व्येञ् को लिट् के यहाँ आकार नहीं होता है ।

उ-शे, आ-चः ४७. स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ३१८५ ।

स्फुर स्फुल के एच् को घञ् में आ होता है ।

उ-शे, आ-चः ४८. क्रीड्जीनां णौ २६०० ।

णौ ४९

णि परे रहने पर क्री इड् जि के एच् को आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, णौ ४९. सिद्धयतेरपारलौकिके २६०२ ।

अपारलौकिक अर्थ में षिधु के एच् को णि के यहाँ आकार आदेश होता है ।

उ-शे, आ-चः ५०. मीनातिमिनोतिदीडां ल्यपि च २५०८ । ल्यपि ५१

मीञ् मिञ् दीड् को ल्यप् के यहाँ तथा एज्जिमित्त अशित् रहने पर आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, ५१. विभाषा लीयतेः २५०९ ।

विभाषा ५६

ल्यपि

* प्रलम्भनशालिनीकरणयोश्च णौ नित्यमात्वम् ।

उ-शे, आ-चः, ५२. खिदेश्छन्दसि ३५१३ ।

विभाषा

ली लीड् को आ होता है विकल्प से ल्यप् तथा एच् के विषय में । वेद में खिद को एच् के स्थान में विकल्प से आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, ५३. अपगुरो णमुलि ३३७५ ।

विभाषा

अप पूर्वक गुरी धातु को एच् के स्थान में णमुल् में विकल्प से आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, ५४. चिस्फुरोर्णी २५६९ ।

णौ ५७

विभाषा

णि के यहाँ चिञ् स्फुर को एच् के स्थान में विकल्प से आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, ५५. प्रजने वीयतेः २६०३ ।

विभाषा, णौ

प्रजनार्थ वी को णि के यहाँ विकल्प से आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, ५६. विभेतेर्हेतुभये २५९३ ।

हे-ये ५७

विभाषा, णौ

हेतुभय में जिभी को विकल्प से णि के यहाँ आ होता है ।

उ-शे, आ-चः, हे- ५७. नित्यं स्मयतेः २५९६ ।

ये, णौ

हेतुभये में स्मिड् को नित्य आ होता है णि के यहाँ ।

उ-शे	५८. सृजिदृशोर्झल्यमकिति २४०५ ।	झ-ति ५९	झलादि अकित् प्रत्यय के यहाँ सृज दृशिर् धातु को अम् का आगम होता है ।
उ-शे, झ-ति	५९. अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् २४०२		उपदेश में अनुदात्त ऋकारोपध धातु को झलादि अकित् प्रत्यय के यहाँ विकल्प से अम् का आगम होता है ।
उ-शे	६०. शीर्षश्छन्दसि ३५१४ ।। ३ ।। शीर्ष न् ६१		वेद में शीर्षन् शब्द निपातित होता है ।
उ-शे, शीर्ष न्	६१. ये च तद्धिते १६६७ । * वा केशेषु । * अचि शीर्षः ।		यकारादि तद्धित परे रहने पर शिरस् को शीर्षन् आदेश होता है ।
+ उ-शे	६२. (अचि शीर्षः) १६६७ । * छन्दसि च ।		अजादि तद्धित परे रहने पर शिरस् को शीर्ष आदेश होता है ।
उ-शे	६३. पद्मोमासहृन्निशसन्धूषन्दोषन्यकञ्चकनु- दन्नासञ्चस्प्रभृतिषु २२८ । * मांसपृतनासानूनां मांसपृतन्वो वाच्याः । * नस् नासिकाया यत्तस् क्षुद्रेषु । * वर्णनगरयोर्नेति वक्तव्यम् ।		शस् आदि प्रत्ययों के यहाँ पाद दन्त नासिका मास हृदय निशा असृज् यूष दोष यकृद् शकृत् उदक आसन को क्रमशः पद् दत् नस् मास् हत् निश् असन् यूषन् दोषन् यकन् शकन् उदन् आसन् आदेश होते हैं ।
उ-शे	६४. धात्वादेः षः सः २२६४ । * सुब्धातुष्ठिवुष्पष्कतीनां सत्वप्रतिषेधो वक्तव्यः ।	धात्वादेः ६५	धातु के आदि ष को स् होता है ।
उ-शे, धात्वादेः	६५. णो नः २२८६ ।		धातु के आदि के ण् को न् होता है ।
	६६. लोपो व्योर्वलि ८७३ ।	लोपः ७०	प्रत्येक प्रकार के व् य् का वल् परे रहने पर लोप होता है ।
लोपः	६७. वेरपृक्तस्य ३७५ ।		अपृक्त व् (वि सम्बन्धी) का लोप होता है ।
लोपः	६८. हल्ङ्याभ्यो दीर्घात्सुतिस्वपृक्तं हल् २५२ हल् ६९		हलन्त दीर्घ डी आप् से परे सु ति सम्बन्धी अपृक्त हल् का लोप होता है ।
लोपः, हल्	६९. एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः १९३ ।		एङ्ह्रन्त हरचान्त से परे सम्बुद्धि के हल् का लोप होता है ।

लोपः

७०. शोश्छन्दसि बहुलम् ३५१६ ।

वेद में शि का बहुल प्रकार से लोप होता है ।

तुग् विधि प्रकरणम्

७१. ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् २८५८ ।

ह-य ७३

पित् कृत् परे रहने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है ।

तुक् ७६

७२. संहितायाम् १४५ ।

सं-यां १५७

यहाँ से 'अनुदात्तं पदमेकवर्जम्' तक संहिता का अधिकार है ।

सं-यां, ह-य, तुक् ७३. छे च १४६ ।

छे ७६

संहिता में छ परे रहने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है ।

सं-यां, छे, तुक् ७४. आङ्माङोश्च १४७ ।

छ परे रहने पर आङ् माङ् को तुक् आगम होता है ।

सं-यां, छे, तुक् ७५. दीर्घात् १४८ ।

दीर्घात् ७६

छ परे रहने पर दीर्घ स्वर को तुक् आगम होता है ।

सं-यां, छे, तुक् ७६. पदान्ताद्वा १४९ ।

दीर्घात् * (विश्वजनादीनां छन्दसि तुग्वा वक्तव्यः ।)

सं-यां ७७. इको यणचि ४७ ।

अचि १२३

अच् परे रहने पर इक् को यण् आदेश होता है ।

सं-यां, अचि ७८. एचोऽयवायावः ६१ ।

एचः ८०

अच् पर रहने पर एच् को क्रमशः अय् अव् आय् आव् आदेश होते हैं ।

सं-यां, एचः, अचि ७९. वान्तो यि प्रत्यये ६३ ।

वान्तः ८०

* गोयृतौ छन्दस्युपसंख्यानम् ।

यि-ये ८३

यकारादि प्रत्यय परे रहने पर ओ-औ को अव् आव् होते हैं ।

* अथपरिमाणे च ।

सं-यां, एचः, अचि, ८०. धातोस्तन्निमित्तस्यैव ६४ ॥ ४ ॥

धातोः ८३

वान्तः, यि-ये

धातु सम्बन्धी ए, ओ को अव् आव् होते हैं यदि उस ए ओ के बाद यकारादि प्रत्यय हों जो तन्निमित्त हों ।

सं-यां, अचि, धा- ८१. क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ६५ ।

तोः, यि-ये

शक्यार्थ में क्षय्य जय्य का निपातन होता है ।

सं-यां, अचि, धा- ८२. क्रय्यस्तदर्थे ६६ ।

तोः, यि-ये

तदर्थ में क्रय्य का निपातन होता है ।

सं-यां, अचि, धा- ८३. भय्यप्रवय्ये च छन्दसि ३५१७ ।

तोः, यि-ये

वेद में भय्य प्रवय्य का निपातन होता है ।

* हृदय्या उपसंख्यानम् ।

* शरस्य च अवादेशो भवतीति वक्तव्यम् ।

एकादेशः

सं-यां, अचि ८४. एकः पूर्वपरयोः ६८ ।

ए-योः ११२ यहाँ से 'ख्यत्यात् परस्य' सूत्र तक 'पूर्वपरयोः एकः' का सन्निवेश करना चाहिये ।

सं-यां, ए-योः, अचि ८५. अन्तादिवच्च ७५ ।

पूर्व पर के स्थान में होने वाला एकादेश पूर्व को अन्तवत् पर को आदिवत् होता है ।

सं-यां, ए-योः, अचि ८६. षत्वतुकोरसिद्धः ३३३३ ।

षत्व तुक् कर्तव्य में एकादेश असिद्ध होता है ।

एकादेशे गुणः

सं-यां, ए-योः, अचि ८७. आहुणः ६९ ।

आत् ९६ अ के बाद यदि अच् हो तो अ और अच् को गुण एकादेश होता है ।

एकादेशे वृद्धिः

सं-यां, ए-योः, अ- ८८. वृद्धिरेचि ७२ ।

वृद्धिः ९२ एचि ८९ अ के बाद यदि एच् हो तो अ और एच् को वृद्धि एकादेश होता है ।

चि, आत्

सं-यां, ए-योः, अ- ८९. एत्येधत्तुदसु ७३ ।

चि, आत्, वृद्धिः, * अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् ।

एचि

* स्वादीरेरिणोः ।

* प्रादूहोढोढ्येवैष्येषु ।

* ऋते च तृतीयासमासे ।

* प्रवत्सतरकम्बलवसनदशाणानामृणो ।

सं-यां, ए-योः, अ- ९०. आटश्च २६९ ।

चि, आत्, वृद्धिः

आट् के बाद यदि अच् हो तो पूर्वपर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है ।

सं-यां, ए-योः, अ- ९१. उपसर्गादृति धातौ ७४ ।

चि, आत्, वृद्धिः

उ-त् ९४

धातौ ९४

ऋति ९२

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि ऋकारादि धातु हो तो वृद्धि एकादेश होता है ।

सं-यां, ए-योः, अ- ९२. वा सुप्यापिशलेः ७७ ।

चि, आत्, वृद्धिः,

उ-त्, धातौ, ऋति

सं-यां, ए-योः, अ- ९३. औतोऽम्शसोः २८५ ।

चि, आत्

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि सुबन्त प्रकृतिक ऋकारादि धातु हो तो वृद्धि एकादेश विकल्प से होता है ।

ओत् के बाद अम् शस् हो तो आ एकादेश होता है ।

एकादेशे पररूपम्

सं-यां, ए-योः, अ- ९४. एङि पररूपम् ७८ ।

चि, आत्, उ-त्, * शकन्वादिषु पररूपं वक्तव्यम् ।

धातौ

अवर्णान्त उपसर्ग के बाद यदि एङादि धातु हो तो पूर्व पर के स्थान में पर वाला रूप रहता है ।

(२०८) (वा० ग०) । शकन्धुः कर्कन्धुः प-म् ९९

कुलटा । 'सीमन्तः केशवेशेषु' १५० । हलीषा

मनीषा लाङ्गलीषा पतञ्जलिः । 'सारङ्गः पशुपक्षिणोः'

१५१ ॥ इति शकन्ध्वादिः ॥

* एवे चानियोगे ।

* ओत्वोष्ठयोः समासे वा ।

* एमन्नादिषु छन्दसि ।

सं-यां, ए-योः, अ- ९५. ओमाङोश्च ८० ।

चि, आत्, प-म्

सं-यां, ए-योः, अ- ९६. उस्यपदान्तात् २२१४ ।

चि, आत्, प-म्

सं-यां, ए-योः, अ- ९७. अतो गुणे १९१ ।

चि, अ-त्, प-म्

सं-यां, ए-योः, अ- ९८. अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ ८१ ।

चि, प-म्

* एकाचो न ।

सं-यां, ए-योः, अ- ९९. नाम्नेडितस्यान्त्यस्य तु वा ८२ ।

चि, अव्य-तौ, प-

म्

+ सं-यां, ए-योः, १००. नित्यमाप्नेडिते डाचि २१२८ ।

अचि

॥ ५ ॥

एकादेशे दीर्घः

सं-यां, ए-योः, अ- १०१. अकः सवर्णे दीर्घः ८५ ।

चि

* ऋति सवर्णे ऋ वा ।

* लृति सवर्णे लृ वा ।

सं-यां, ए-योः, अ- १०२. प्रथमयोः पूर्वसवर्णः १६४ ।

चि, अकः, दीर्घः

सं-यां, ए-योः, अ- १०३. तस्माच्छसो नः पुंसि १९६ ।

चि, अकः, दीर्घः,

पू-र्णः

सं-यां ए-योः अचि, १०४. नादिचि १६५ ।

अकः, दीर्घः, पू-र्णः

अ-त् ९७

अव्य-तौ ९९

अकः १०७

दीर्घः १०६

पू-र्णः १०६

न, इचि १०६

अ से परे ओम् आङ् के रहने पर पूर्वपर के स्थान में पररूप एकादेश होता है ।

अपदान्त अवर्ण से परे उस् हो तो पररूप एकादेश होता है ।

अपदान्त अकार से परे गुण रहने पर पररूप होता है

अव्यक्तानुकरण अत् के बाद इति हो तो पररूप होता है ।

आप्नेडित अव्यक्तानुकरण अत् को इति परे रहने पर पररूप नहीं होता है विकल्प से । द्वितीय त् को आ होता है ।

आप्नेडित अव्यक्तानुकरण अत् के बाद यदि डाच् हो तो दोनों त को पररूप होता है ।

अक् के बाद यदि सवर्ण अच् हो तो पूर्वपर के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है ।

प्रथमा द्वितीया सम्बन्धी अक् के बाद अच् हो तो पूर्व सवर्ण दीर्घ आदेश होता है ।

पूर्वसवर्ण दीर्घ के बाद शस् के स् को पुँल्लिङ्ग में न होता है ।

अवर्ण के बाद इच् हो तो पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है ।

सं-यां, ए-योः, अ- १०५. दीर्घाज्जसि च २३९ ।

चि, अकः, दीर्घः,

पू-र्णः, न, इचि

सं-यां, ए-योः, अ- १०६. वा छन्दसि ३५१५ ।

चि, अकः, दीर्घः, पू-

र्णः, न, इचि, दी-सि

एकादेशे पूर्वरूपम्

सं-यां, ए-योः, अ- १०७. अमि पूर्वः १९४ ।

चि, अकः

सं-यां, ए-योः, अ- १०८. संप्रसारणाच्च ३३० ।

चि, पूर्वः

सं-यां, ए-योः, अ- १०९. एङः पदान्तादति ८६ ।

चि, पूर्वः

सं-यां, ए-योः, अ- ११०. डसिङ्सोश्च २४६ ।

चि, एङः, अति,

पूर्वः

एकादेशे उकारादेशः

सं-यां, ए-योः, अ- १११. ऋत उत् २७९ ।

चि, एङः, अति,

ङ-सोः

सं-यां, ए-योः, उत्, ११२. ख्यत्यात्परस्य २५५ ।

अ-चि, एङः, अति,

ङ-सोः

रोरुत्वविधिः

सं-यां, उत्, अ-चि, ११३. अतो रोरप्लुतादप्लुते १६३ ।

एङः अति

सं-यां, उत्, अ-चि, ११४. हशि च १६६ ।

एङः अति, अतोरोः

प्रकृतिभाव प्रकरणम्

सं-यां, उत्, अ-चि, ११५. प्रकृत्यान्तःपादमव्यपरे ३५१८ ।

एङः अति

सं-यां, प्रकृत्या, अ- ११६. अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्ववस्युषु

चि, एङः अति

च ३५१९ ।

दी-सि १०६ दीर्घ के बाद जस् या इच् हो तो पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है ।

वेद में दीर्घ के बाद जस् या इच् हो तो विकल्प से पूर्वसवर्ण दीर्घ होता है ।

पूर्वः ११० अक् के बाद यदि अम् हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।

सम्प्रसारण के बाद यदि अच् हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।

एङः १२२ पदान्त एङ् से परे यदि अ हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।

अति १२२ एङ् से परे यदि डसि डस् सम्बन्धी अ हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है ।

उत् ११४ ऋकारान्त से उत्तर डसि डस् का अ हो तो उकार एकादेश होता है ।

यण्सन्धि युक्त ख्य् त्य् के बाद यदि डसि डस् का अ हो तो उसे उकार आदेश होता है ।

अतो रोः ११४ अप्लुत अकार से परे से रु के रेफ् को उ होता है यदि बाद में भी अप्लुत अ हो ।

अ से परे रु के रेफ् को उ होता है, यदि उसके बाद हश् हो ।

प्रकृत्या १३० ऋक्पादमध्यस्थ ए को प्रकृतिभाव होता है, यदि आगे अ हो तथा उसके बाद व् य् नहीं हो ।

अव्यात् अवद्यात् अवक्रमु अव्रत अयम् अवन्तु अवस्यु में व्यपरक अ के रहने पर भी एङ् को प्रकृति भाव होता है ।

सं-यां, प्रकृत्या, अ- ११७. यजुष्युरः ३५२० ।

यजुषि १२१

चि, एङः अति

सं-यां, प्रकृत्या, अ- ११८. आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठेऽम्बेऽम्बा-

चि, एङः अति, लेऽम्बिके पूर्वे ३५२१ ।

यजुषि

सं-यां, प्रकृत्या, अ- ११९. अङ्ग इत्यादौ च ३५२२ ।

चि, एङः अति,

यजुषि

सं-यां, प्रकृत्या, अ- १२०. अनुदात्ते च कुधपरे ३५२३ ॥६॥ अ-त्ते १२१

चि, एङः अति,

यजुषि

सं-यां, प्रकृत्या, अ- १२१. अवपथासि च ३५२४ ।

चि, एङः अति,

यजुषि, अ-त्ते

सं-यां, प्रकृत्या, अ- १२२. सर्वत्र विभाषा गोः ८७ ।

गोः १२४

चि, एङः अति

सं-यां, प्रकृत्या, अ- १२३. अवङ् स्फोटायनस्य ८८ ।

अवङ् १२४ ।

चि, गोः

सं-यां, प्रकृत्या, गोः, १२४. इन्द्रे च ८९ ।

अवङ्

सं-यां, प्रकृत्या १२५. प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ९० ।

अचि १२८

सं-यां, प्रकृत्या, १२६. आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ३५२५ ।

अचि

सं-यां, प्रकृत्या, १२७. इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ९१ शा-वः १२८

अचि

* न समासे ।

* सिति च ।

सं-यां, प्रकृत्या, १२८. ऋत्यकः ९२ ।

अचि, शा-वः

यजुः में एङन्त उरस् को अ परे रहने पर भी प्रकृतिभाव होता है । आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे के एङ् को अ परे रहने पर भी यजुः में प्रकृतिभाव होता है तथा अम्बिके के परे रहने पर अम्बे अम्बाले के ए को प्रकृतिभाव होता है ।

अङ्ग के ए को तथा अङ्गपूर्व एङ् को अ परे रहने पर प्रकृतिभाव होता है ।

कवर्ग धकार परक अनुदात्त अ के परे रहने पर एङ् को यजुः में प्रकृतिभाव होता है ।

अवपथाः में अनुदात्त अ के परे रहने पर एङ् को प्रकृतिभाव होता है ।

लोक वेद में अ परे रहने पर एङन्त गो को प्रकृतिभाव होता है ।

पदान्त में अच् परे रहने पर गो को विकल्प से अवङ् होता है । इन्द्र शब्द परे रहने पर गो को नित्य अवङ् होता है ।

अच् परे रहने पर प्लुत और प्रगृह्य को नित्य प्रकृतिभाव होता है । वेद में आङ् के बाद यदि अच् हो तो आ को अनुनासिक होता है तथा प्रकृतिभाव भी होता है ।

पदान्त इक् के बाद यदि असवर्ण अच् हो तो विकल्प से प्रकृतिभाव तथा दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है । अक् के बाद यदि ऋ आदि तो प्रकृतिभाव तथा दीर्घ को विकल्प से होता है ।

अप्लुतवत्

सं-यां, प्रकृत्या १२९. अप्लुतवदुपस्थिते ९८ ।

अ-वत् १३०

अनार्ष इति शब्द यदि बाद में हो प्लुत को अप्लुवत् कार्य होता है । प्लुत ई३ के बाद यदि अच् हो तो विकल्प से अप्लुतवत् होता है । प्रातिपदिक दिव् पद को उकार आदेश होता है ।

सं-यां, प्रकृत्या, अ- १३०. ई३ चाक्रवर्मणस्य ९९ ।

वत्

सं-यां १३१. दिव उत् ३३७ ।

सुलोपः

सं-यां १३२. एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि सुलोपः १३४ १७६ । हलि १३३

यदि नञ्समास न हो तो ककारहीन एतत् तत् शब्द के सु का लोप होता है हल् पर रहने पर । वेद में स्य के सु का बहुलतया लोप होता है हल् पर रहने पर । सस् के सु का लोप होता है यदि बाद में अच् हो तथा पादपूर्ति अपेक्षित हो ।

सं-यां, हलि, सु- १३३. स्यश्छन्दसि बहुलम् ३५२६ ।

लोपः

सं-यां, हलि, सु- १३४. सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् १७७ ।

लोपः

सुट्प्रसङ्गः

सं-यां १३५. सुट्कात्पूर्वः २५५३ ।

सुट् १५७

पारस्कर प्रभृतीनि तक 'सुट् कात् पूर्वः' का अधिकार है ।

+ सं-यां, सुट् १३६. अडभ्यासव्यवायेऽपि २५३९ ।

अट् और अभ्यास का व्यवधान रहने पर भी क से पूर्व सुट् होता है । सम् परि (उप) पूर्वक भूषणार्थक कृ हो तो क से पहले सुट् होता है ।

* सं-यां, सुट् १३७. संपरिभ्यां करोतौ भूषणे २५५० सं-भ्यां १३८ करोतौ १३९

सम्परिपूर्वक समवायार्थक कृ धातु हो तो क से पहले सुट् होता है । उपपूर्वक प्रतियत्न वैकृत वाक्याध्याहारार्थक कृ हो तो क से पहले सुट् होता है ।

सं-यां, सुट्, कतौ, १३८. समवाये च २५५१ ।

सं-भ्यां

सं-यां, सुट्, कतौ १३९. उपात्प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु च उपात् १४१ २५५२ ।

सं-यां, सुट्, उपात् १४०. किरतौ लवने २५३९ ॥ ७ ॥ किरतौ १४२ ।

उप पूर्वक लवनार्थक कृ (किरति) का प्रयोग हो तो क से पहले सुट् का आगम होता है ।

सं-यां, सुट्, उपात्, १४१. हिंसायां प्रतेश्च २५४० ।

किरतौ

उप प्रति पूर्वक हिंसार्थक किरति का प्रयोग हो तो क से पहले सुट् होता है ।

+ यद्यपीदं वार्तिकम् तथापि काशिकायां सूत्रत्वेन गृहीतम् ।

* काशियायां 'संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे' इति सूत्रम् ।

सं-यां, सुट्, किरतौ १४२. अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने २६८८
* किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु ।

सं-यां, सुट् १४३. कुस्तुम्बुरुणि जातिः १०५८ ।

सं-यां, सुट् १४४. अपरस्पराः क्रियासातत्ये १०५९ ।

सं-यां, सुट् १४५. गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु १०६०

सं-यां, सुट् १४६. आस्पदं प्रतिष्ठायाम् १०६१ ।

सं-यां, सुट् १४७. आश्चर्यमनित्ये १०६२ ।

सं-यां, सुट् १४८. वर्चस्केऽवस्करः १०६३ ।

सं-यां, सुट् १४९. अपस्करो रथाङ्गम् १०६४ ।

सं-यां, सुट् १५०. विष्किरः शकुनौ वा १०६५ ।

सं-यां, सुट् १५१. ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ३५२७ ।

सं-यां, सुट् १५२. प्रतिष्कशश्च कशः १०६६ ।

सं-यां, सुट् १५३. प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी १०६७ ।

सं-यां, सुट् १५४. मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः
१०६८ ।

सं-यां, सुट् १५५. कास्तीराजस्तुन्दे नगरे १०६९ ।

सं-यां, सुट् १५६. कारस्करो वृक्षः १०७० ।

सं-यां १५७. पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् १०७१

अप के बाद किरति को सुट् होता है, यदि पशु पक्षी कृत आलेखन हो ।

यदि जाति अर्थ हो तो कुस्तुम्बुरुणि में सुट् निपातित होता है ।

क्रिया सातत्य में अपरस्पराः में सुट् निपातित होता है ।

सेवित असेवित प्रमाण में गोष्पद में सुट् तथा षत्व निपातित होता है ।

प्रतिष्ठा में आस्पद निपातित होता है ।

अद्भुत अर्थ में आश्चर्य निपातित होता है ।

उच्छिष्ट दूषित अन्न के अर्थ में अवस्कर निपातित होता है ।

यदि रथाङ्ग हो तो अपस्कर निपातित होता है ।

शकुनि अर्थ में विकल्प से विष्किर निपातित होता है ।

मन्त्रविषय में ह्रस्व के बाद यदि चन्द्र हो तो सुट् होता है ।

प्रति पूर्वक कश धातु से सुट् निपातित होता है ।

यदि ऋषि वाच्य हो तो प्रस्कण्व और हरिश्चन्द्र निपातित होते हैं ।

वेणु और परिव्राजक अर्थ में क्रमशः मस्कर और मस्करी निपातित होते हैं ।

नगरार्थ में कास्तीर और अजस्तुन्द निपातित होते हैं ।

यदि वृक्ष वाच्य हो तो कारस्कर निपातित होता है ।

संज्ञा में पारस्कर आदि शब्द निपातित होते हैं ।

(२०९) 'पारस्करो देशः' १५२ । 'कारस्करो वृक्षः' १५३ 'रथस्या [रयस्था] नदी' १५४ । 'किष्कुः प्रमाणम्' १५५ । 'किष्कन्धा गुहा' १५६ । ('तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च') १५७ 'प्रातुम्पतौ गवि कर्तरि' १५८ ॥ इति पारस्करादिः ॥

* प्रायस्य चित्तिचित्तयोः सुडस्कारो वा ।

स्वरविधिः

१५८. अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ३६५० ।

(जिस पद में एक को उदात्त या स्वरित किया जाय उस) एक पद को छोड़कर शेष अनुदात्त होते हैं ।

अन्तोदात्तः

१५९. कर्षात्त्वितो घञोऽन्त उदात्तः ३६८० । उदात्तः २२३

अन्तः १८४

कर्ष धातु आकार वान् तथा घञ् का अन्त उदात्त होता है ।

उदात्तः, अन्तः

१६०. उज्छादीनां च ३६८१ ॥ ८ ॥

उज्छ आदि का अन्त उदात्त होता है ।

(२१०) उज्छ म्लेच्छ जञ्जं नल्प (जल्प) जप वध 'युग कालविशेषे रथाद्युपकरणे च' १५९ । 'गरो दूष्ये' (गरो डूष्ये) १६० । अवन्तः । 'वेदवेगवेष्टबन्धाः करणे' १६१ । 'स्तयुद्रुवश्छन्दसि' १६२ । 'वर्तिनिः स्तोत्रे' १६३ । 'श्चभ्रे दरः' १६४ । 'साम्बतापौ भावगर्हायाम्' १६५ । 'उत्तमशश्वत्तमौ सर्वत्र' १६६ । 'भक्षमन्यभोगमन्याः' १६७ । हेहाः ॥ इत्युज्छादिः ॥

उदात्तः, अन्तः

१६१. अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ३६५१

उस अनुदात्त के आदि को उदात्त हो जाता है, जिससे पूर्व उदात्त का लोप होता है ।

उदात्तः, अन्तः

१६२. धातोः ३६७१ ।

धातु का अन्त उदात्त होता है ।

उदात्तः, अन्तः

१६३. चितः ३७१० ।

चितः १६४

चित् का अन्त उदात्त होता है ।

उदात्तः, अन्तः, चि-

१६४. तद्धितस्य ३७११ ।

त-स्य १६५

चित् तद्धित का अन्त उदात्त होता है ।

तः

उदात्तः, अन्तः, त-

१६५. कितः ३७१२ ।

कित् तद्धित का अन्त उदात्त होता है ।

स्य

उदात्तः, अन्तः

१६६. तिसृभ्यो जसः ३७१३ ।

तिसृ के उत्तरस्थित जस् का अन्त उदात्त होता है ।

उदात्तः, अन्तः १६७. चतुरः शसि ३६८२ ।

उदात्तः, अन्तः १६८. सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः ३७१४ ए-दिः १६९
वि-क्तिः १८४

उदात्तः, अन्तः, वि- १६९. अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्य- अ-त् १७८
भक्तिः, ए-दिः समासे ३७१५ ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १७०. अञ्जेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् ३७१६ अ-म् १७५
भक्तिः, अ-त्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७१. ऊडिदंपदाद्यप्पुग्रेद्युभ्यः ३७१७ ।
भक्तिः, अ-त्, अ- * ऊठ्युपधाग्रहणं कर्तव्यम् ।

म्
उदात्तः, अन्तः, वि- १७२. अष्टनो दीर्घात् ३७१८ ।
भक्तिः, अ-त्, अ-

म्
उदात्तः, अन्तः, वि- १७३. शतुरनुमो नद्यजादी ३७१९ । न-दी १७५
भक्तिः, अ-त्, अ- * बृहन्महतोरुपसंख्यानम् ।
म्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७४. उदात्तयणो हल्पूर्वात् ३७२० । उ-त् १७५
भक्तिः, अ-त्, अ-
म्, न-दी

उदात्तः, अन्तः, वि- १७५. नोङ्धात्वोः ३७२१ ।
भक्तिः, अ-त्, अ-
म्, न-दी, उ-त्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७६. ह्रस्वनुङ्भ्यां मतुप् ३७२२ । मतुप् १७७
भक्तिः, अ-त्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७७. नामन्यतरस्याम् ३७२३ ।
भक्तिः, अ-त्, मतुप्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७८. ड्याश्छन्दसि बहुलम् ३७२४ ।
भक्तिः, अ-त्

उदात्तः, अन्तः, वि- १७९. षट्त्रितुभ्यो हलादिः ३७२५ । ष-भ्यो १८१
भक्तिः

शस् परे रहने पर चतुर् का अन्त उदात्त होता है ।

सु में एकाच् रहने वाले से परे तृतीयादि विभक्ति उदात्त होती है । अनित्य समास में जिसका उत्तरपद अनुदात्त तथा एकाच् हो उससे तृतीया विभक्ति विकल्प से उदात्त होती है ।

अञ्च से परा असर्वनामस्थान विभक्ति वेद में उदात्त होती है ।

ऊट्, इदम् पदादि अप् पुम् रै दिव् से असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त होती है ।

दीर्घान्त अष्टन् शब्द से असर्वनाम स्थान विभक्ति उदात्त होती है ।

अनुम् शतृ प्रत्ययान्त अन्तोदात्त से परे नद्यजादि शसादि विभक्ति (असर्वनामस्थान) उदात्त होती है ।

उदात्तस्थान में हल् पूर्वक यण् से परे नदी शसादि विभक्ति उदात्त होती है ।

ऊङ् धातु और हल्पूर्व यण् से परे शसादि विभक्ति उदात्त नहीं होती है ।

ह्रस्वान्त अन्तोदात्त तथा नुट् से परे मतुप् होता है ।

मनुप् में ह्रस्वान्त अन्तोदात्त से परे नाम् उदात्त होता है विकल्प से ।

डी से परे नाम विकल्प से उदात्त होता है वेद में ।

षट् संज्ञक, त्रि, चतुर् से परे हलादि विभक्ति उदात्त होती है ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १८०. झल्युपोत्तमम् ३६८३ ।। ९ ।।
भक्तिः, ष-भ्यो

षट् संज्ञक, त्रि, चतुर् से परे झलादि तदन्त पद में उपोत्तम उदात्त होता है ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १८१. विभाषा भाषायाम् ३६८४ ।
भक्तिः, ष-भ्यो, झ-
म्

भाषा में यह नियम विकल्प से होता है ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १८२. न गोश्चन्साववर्णराडङ्कुङ्कृञ्चयः
भक्तिः

न १८३

गो श्चन् सु में अवर्णान्त राज, अङ् कुङ् तथा कृत् से उपरि लिखित नियम नहीं होता है ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १८३. दिवो झल् ३७२७ ।
भक्तिः, न

झल् १८४

दिव् से परे झलादि विभक्ति उदात्त नहीं होती है ।

उदात्तः, अन्तः, वि- १८४. नृ चान्यतरस्याम् ३७२८ ।
भक्तिः, झल्

नृ से परे झलादि विभक्ति विकल्प से उदात्त होती है ।

उदात्तः १८५. तित्स्वरितम् ३७२९ ।

ल-म् १९२

तित् स्वरित होता है ।

उदात्तः १८६. तास्यनुदात्तेऽङिदुपदेशाल्लसार्वधातु-
कमनुदात्तमहिन्वङोः ३७३० ।

हुङ् इङ् को छोड़कर तासि अनु-दात्तेत् ङित् अकारान्तोपदेश से परे ल सार्वधातुक अनुदात्त होता है ।

आद्युदात्तः

उदात्तः, ल-म् १८७. आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ३७३१ ।

आदिः १८८

सिजन्त का आदि विकल्प से उदात्त होता है

उदात्तः, ल-म्, आ- १८८. स्वपादिहिंसामच्यनिटि ३६७२ ।
दिः, अ-म्

अ-म् १८८

अच्-टि १८९

स्वप आदि तथा हिंस के बाद अजादि अनिट् ल सार्वधातुक हो तो विकल्प से आद्युदात्त होता है ।

उदात्तः, ल-म्, अ- १८९. अभ्यस्तानामादिः ३६७३ ।
च्-टि

अ-म् १९०

आदिः १९१

अजादि अनिट् ल सार्वधातुक परे रहने पर अभ्यस्त के आदि को उदात्त होता है ।

उदात्तः, ल-म्, अ- १९०. अनुदात्ते च ३६७४ ।
म्, आदिः

अविद्यमानोदात्त ल सार्वधातुक परे हो तो अभ्यस्त का आदि उदात्त होता है ।

उदात्तः, ल-म्, आ- १९१. सर्वस्य सुपि ३६८५ ।
दिः

सुप् परे रहते सर्व का आदि उदात्त होता है ।

उदात्तः, ल-म् १९२. भीहीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्य- प्र-पूर्वम् १९३
यात्पूर्वं पिति ३६७५ ।

प्र-पूर्वम् १९३

भी ही भृ हु मद जन धन दरिद्रा जागृ धातु के अभ्यस्त को प्रत्यय से पूर्व उदात्त होता है, यदि परमें पित् ल सार्वधातुक हो ।

उदात्तः, प्र-पूर्वम् १९३. लिति ३६७६ ।

१९४. आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ३६७७ । आदिः १९६
अ-म् १९५

उदात्तः, आदिः, अ- १९५. अचः कर्तृयकि ३६७८ ।
म्

उदात्तः, आदिः १९६. थलि च सेटीडन्तो वा ३७३२ ।

उदात्तः १९७. जित्यादिर्नित्यम् ३६८६ । आदिः २१६

उदात्तः, आदिः १९८. आमन्त्रितस्य च ३६५३ ।

उदात्तः, आदिः १९९. पथिमथोः सर्वनामस्थाने ३६८७ ।

उदात्तः, आदिः २००. अन्तश्च तवै युगपत् ३६८८ ॥ १० ॥

उदात्तः, आदिः २०१. क्षयो निवासे ३६८९ ।

उदात्तः, आदिः २०२. जयः करणम् ३६९० ।

उदात्तः, आदिः २०३. वृषादीनां च ३६९१ ।
(२११) वृषः जनः ज्वरः ग्रहः हयः गयः नयः
तायः तयः चयः अमः वेदः सूदः अंशः गुहा ।
'शमरणौ' संज्ञायां संमतौ भावकर्मणोः' १६८ ।
मन्त्रः शान्तिः कामः यामः आरा धारा कारा वहः
कल्पः पादः । इति वृषादिः ॥ आकृतिगणः ॥
अविहित-लक्षणमाद्युदात्तत्वं वृषादिषु ज्ञेयम् ॥

उदात्तः, आदिः २०४. संज्ञायामुपमानम् ३६९२ । सं-म् २०५

उदात्तः, आदिः, सं- २०५. निष्ठा च द्व्यजनात् ३६९३ ।
म्

उदात्तः, आदिः २०६. शुष्कधृष्टौ ३६९४ ।

उदात्तः, आदिः २०७. आशितः कर्ता ३६९५ ।

प्रत्यय से पूर्व को लित् के यहाँ उदात्त होता है ।

णमुल् परे रहने पर आदि को विकल्प से उदात्त होता है ।

उपदेश में अजन्त धातु के आदि को उदात्त होता है कर्तृयक् में ।

सेट् थल् में इट् उदात्त होता है, विकल्प से आदि अन्त भी उदात्त होता है ।

जित् नित् के यहाँ आदि नित्य उदात्त होता है ।

आमन्त्रित का आदि उदात्त होता है ।

सर्वनामस्थान में पथिन् मथिन् का आदि उदात्त होता है ।

तवै प्रत्ययान्त का आदि अन्त एक साथ उदात्त होते हैं ।

निवास वाच्य रहने पर क्षय का आदि उदात्त होता है ।

करणवाची जयशब्द आद्युदात्त होता है ।

वृष आदि का आदि उदात्त होता है ।

संज्ञा में उपमान शब्दों का आदि उदात्त होता है ।

संज्ञा में निष्ठान्त द्व्यच् का आदि उदात्त होता है, यदि आदि में आ न हो ।

शुष्क धृष्ट का आदि उदात्त होता है ।

कर्तृवाची आशित का आदि उदात्त होता है ।

उदात्तः, आदिः	२०८. रिक्ते विभाषा ३६९६ ।	विभाषा २०९	रिक्त शब्द में आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, वि- भाषा	२०९. जुष्टार्पिते च च्छन्दसि ३६९७ ।	जु-ते २१०	वेद में जुष्ट अर्पित शब्द विकल्प से आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः, जु- ते	२१०. नित्यं मन्त्रे ३६९८ ।		मन्त्र विषय में जुष्ट अर्पित नित्य आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः	२११. युष्मदस्मदोर्दसि ३६९९ ।	यु-दोः २१२	युष्मद् अस्मद् डस् के यहाँ आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः, यु- दो	२१२. डयि च ३७०० ।		ङि परे रहने पर युष्मद् अस्मद् आद्युदात्त होते हैं ।
उदात्तः, आदिः	२१३. यतोऽनावः ३७०१ ।		यत्प्रत्ययान्त द्व्यच् का आदि उदात्त होता है, नौ को छोड़कर ।
उदात्तः, आदिः	२१४. ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ३७०२ ।		ईड वन्द वृ शंस दुह के ण्यदन्त का आदि उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः	२१५. विभाषा वेण्विन्धानयोः ३७०३ ।	विभाषा २१६	वेणु इन्धान का आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः, आदिः, वि- भाषा	२१६. त्यागरागहासकुहश्चठक्रथानाम् ३७०४		त्याग राग हास कुह श्चठ क्रथ का आदि विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः	२१७. उपोत्तमं रिति ३७३३ ।	उ-मं २१८	रिदन्त का उपोत्तम उदात्त होता है ।
उदात्तः, उ-मं	२१८. चड्यन्यतरस्याम् ३६७९ ।		चडन्त में उपोत्तम विकल्प से उदात्त होता है ।
उदात्तः	२१९. मतोः पूर्वमात्संज्ञायां स्त्रियाम् ३७०५	सं-स्त्रियां २२१	मतुप् के पूर्व का आ उदात्त होता है, यदि मत्वन्त स्त्रीलिङ्ग हो तथा संज्ञा हो ।

अन्तोदात्तः

उदात्तः, सं-स्त्रियां	२२०. अन्तोऽवत्याः ३७०६ ।। ११ ।।	अन्तः २२३	संज्ञा में अवती का अन्त उदात्त होता है ।
उदात्तः, सं-स्त्रियां,	२२१. ईवत्याः ३७०७ ।		संज्ञा में ईवती का अन्त उदात्त होता है ।
अन्तः			
उदात्तः, अन्तः	२२२. चौ ३६५२ ।		चि परे रहने पर पूर्व के अन्त को उदात्त होता है ।
	* चोरतद्धित इति वक्तव्यम् ।		
उदात्तः, अन्तः	२२३. समासस्य ३७३४ ।		समास का अन्त उदात्त होता है ।
	एकाचश्चायो ल्यपि च ये च क्षय्यजय्यावकः		
	सवर्णेऽवपथाहिंसायामनुदात्तस्य विभाषा क्षय		
	ईवत्यास्त्रीणि ।।		

इति पाणिनीसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

पूर्वपदप्रकृतिस्वरः

- प्र-म् १. बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ३७३५ प्र-म् ६३
- प्र-म् २. तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय- त-षे २४
द्वितीयाकृत्याः ३७३६ ।
- प्र-म्, त-षे ३. वर्णो वर्णेष्वनेते ३७३७ ।
- प्र-म्, त-षे ४. गाधलवणयोः प्रमाणे ३७३८ ।
- प्र-म्, त-षे ५. दायाद्यं दायादे ३७३९ ।
- प्र-म्, त-षे ६. प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः ३७४० ।
- प्र-म्, त-षे ७. पदेऽपदेशे ३७४१ ।
- प्र-म्, त-षे ८. निवाते वातत्राणे ३७४२ ।
- प्र-म्, त-षे ९. शारदेऽनार्तवे ३७४३ ।
- प्र-म्, त-षे १०. अध्वर्युकषाययोजातौ ३७४४ ।
- प्र-म्, त-षे ११. सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ३७४५ ।

बहुव्रीहि में पूर्वपद के स्वर का प्रकृतिभाव होता है ।

तत्पुरुष में तुल्यार्थ तृतीयान्त सप्तम्यन्त उपमानवाची अव्यय द्वितीयान्त कृत्यान्त पूर्वपदस्वर प्रकृतिवत् रहता है ।

वर्णवाची पूर्वपद हो और वर्णवाची उत्तरपद हो तो एतत् शब्द को छोड़कर तत्पुरुष में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।

प्रमाणवाची तत्पुरुष में गाध लवण शब्द उत्तरपद में हों तो पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।

तत्पुरुष में दायाद शब्द के उत्तर में रहने पर तथा दायाद्यवाची शब्द के पूर्व में रहने पर पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

चिर कृच्छ के उत्तरपद में रहने पर प्रतिबन्धवाची पूर्वपद प्रकृतिवत् रहता है ।

अपदेश वाची पद शब्द के उत्तर में रहने पर तत्पुरुष में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।

वातत्राणवाची निवाते के उत्तर में रहने पर पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

अनार्तव वाची शारद के उत्तर में रहने पर पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

जातिवाची अध्वर्यु कषाय के पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है ।

यदि सदृश प्रतिरूप उत्तरपद में हो तो सादृश्य वाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

- प्र-म्, त-षे १२. द्विगौ प्रमाणे ३७४६ ।
- प्र-म्, त-षे १३. गन्तव्यपण्यं वाणिजे ३७४७ ।
- प्र-म्, त-षे १४. मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ३७४८ ।
- प्र-म्, त-षे १५. सुखप्रिययोर्हिते ३७४९ । सु-योः १६
- प्र-म्, त-षे, सु-योः १६. प्रीतौ च ३७५० ।
- प्र-म्, त-षे १७. स्वं स्वामिनि ३७५१ ।
- प्र-म्, त-षे १८. पत्यावैश्वर्ये ३७५२ । प-यें २०
- प्र-म्, त-षे, प-यें १९. न भूवाक्चिदिधिषु ३७५३ ।
- प्र-म्, त-षे, प-यें २०. वा भुवनम् ३७५४ । ॥ १ ॥
- प्र-म्, त-षे २१. आशङ्काबाधनेदीयस्सु संभावने ३७५५
- प्र-म्, त-षे २२. पूर्वे भूतपूर्वे ३७५६ ।
- प्र-म्, त-षे २३. सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ३७५७ ।

प्रमाणवाची तत्पुरुष में यदि द्विगु उत्तरपद में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

वाणिज उत्तरपद में हो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है गन्तव्य पण्यवाची तत्पुरुष में ।

मात्रा उपज्ञा उपक्रम छाया उत्तरपद में हो तो नपुंसक तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

सुखप्रिय उत्तरपद में हो तो हितवाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्रीति गम्यमान हो तो भी सुख प्रिय के पूर्व को प्रकृतिस्वर होता है ।

स्ववाची पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है स्वामिन् के उत्तर में रहने पर ।

पति शब्द उत्तर में हो तो ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

भू वाक् चित् दिधिषू को पूर्वपद-प्रकृतिस्वर नहीं होता है यदि पति शब्द बाद में हो ।

पतिशब्द के उत्तर में रहने पर भुवन शब्द को विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष में ।

संभावना में आशङ्का आबाध नेदीयस् उत्तर पद में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

भूतपूर्ववाची पूर्व शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

सामीप्यवाची तत्पुरुष में सविध सनीड समर्याद सवेश सदेश शब्द उत्तर में हों तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, त-षे

° २४. विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ३७५८ ।

विस्पष्ट आदि शब्द पूर्व में गुणवचन शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृति-स्वर होता है ।

(२१२) विस्पष्ट विचित्र विचित्त व्यक्त संपन्न
पटु पण्डित कुशल चपल निपुण ॥ इति वि-
स्पष्टादिः ॥

प्र-म्

२५. श्रज्यावमकन्यापवत्सु भावे कर्मधारये क-ये २८
३७५९ ।

कर्मधारय में भाववाची पूर्वपद कौ प्रकृतिस्वर होता है यदि उत्तर में श्रज्य अवम कन् तथा पापवत् शब्द हो ।

प्र-म्, क-ये

२६. कुमारश्च ३७६० ।

कुमारः २८

कर्मधारय में पूर्वपद कुमार को प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, क-ये, कुमारः २७. आदिः प्रत्येनसि ३७६१ ।

आदिः २८

कुमार शब्द का आदि उदात्त होता है यदि प्रत्येनस् शब्द उत्तर में हो ।

प्र-म्, क-ये, कुमा- २८. पूगेष्वन्यतरस्याम् ३७६२ ।
रः, आदिः

कुमार को विकल्प से आद्युदात्त हो यदि पूगवाची शब्द उत्तर में हों ।

प्र-म्

२९. इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ द्विगौ ३१
३७६३ । इ-षु ३०

द्विगु में यदि इगन्त, कालवाची, कपाल भगाल शराव शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होत है ।

प्र-म्, द्विगौ, इ-षु ३०. बह्वन्यतरस्याम् ३७६४ ।

अ-म् ३१

द्विगु में यदि बहु शब्द पूर्व में तथा इगन्त, कालवाची शब्द, कपाल भगाल शराव उत्तर में हों तो विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, द्विगौ, अ-म् ३१. दिष्टिवितस्त्योश्च ३७६५ ।

दिष्टि वितस्ति यदि उत्तर में हों तो द्विगु में विकल्प से पूर्वपदप्रकृति-स्वर होता है ।

प्र-म्

३२. सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात्
३७६६ ।

सिद्ध शुष्क पक्व बन्ध यदि उत्तर में हों तो द्विगु में कालभिन्नसप्तम्यन्त पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है ।

प्र-म्

३३. परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु
३७६७ ।

परि प्रति उप अप यदि पूर्व में हों तथा वर्ज्यमान अहोरात्रवाची अवयव उत्तर में हों तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है

प्र-म् ३४. राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ३७६८ द्वन्द्वे ३७

राजन्यवाची बहुवचनान्तों के द्वन्द्व में पूर्वपदप्रकृति स्वर होता है, यदि द्वन्द्व अन्धक वृष्णि में हो ।

प्र-म्, द्वन्द्वे ३५. संख्या ३७६९ ।

द्वन्द्व में संख्यावाची पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, द्वन्द्वे ३६. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी ३७७० ।

आचार्योपसर्जन तथा अन्तेवासियों के द्वन्द्व में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, द्वन्द्वे ३७. कार्तिकौजपादयश्च ३७७१ ।

कार्तिकौजप आदि द्वन्द्वों में पूर्वपद-प्रकृतिस्वर होता है ।

(२१३) कार्तिकौजपौ सावर्णिमाण्डकेयौ (सावर्णिमाण्डूकेयौ) अवन्त्यश्मकाः पैलश्यापर्णेयाः कपिश्यापर्णेयाः शैतिकाक्षपाञ्चालेयाः कटुकवाधूलेयाः शाकलशुनकाः शाकलशणकाः शणकबाभ्रवाः आर्चाभिमौद्गलाः कुन्तिसुराष्ट्राः चिन्तिसुराष्ट्राः तण्डवतण्डाः अविमत्तकामविद्धाः बाभ्रवशाल-इढायनाः बाभ्रवदानच्युताः कठकालापाः कठकौथमाः कौथुमलौकाक्षाः स्त्रीकुमारम् मौद्गपैप्पलादाः वत्सजरन्तः सौश्रुतपार्थवाः जरामृत्यू याज्यानुवाक्ये ॥ इति कार्तिकौजपादिः ॥

प्र-म् ३८. महान्त्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभा- महान् ३९
रतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ३७७२ ।

महान् पूर्वपद में हो तथा त्रीहि अपराह्ण गृष्टि इष्वास से जाबाल भार भारत हैलिहिल रौरव प्रवृद्ध उत्तर में हों तो प्रकृतिस्वर होता है । महान् और शुल्लक पूर्व में हों वैश्वदेव उत्तर में हो तो प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्, महान् ३९. शुल्लकश्च वैश्वदेवे ३७७३ ।

पूर्व में उष्ट्र उत्तर में सादि वामि हो तो प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म् ४०. उष्ट्रः सादिवाम्योः ३७७४ ॥ २ ॥

गो पूर्व में हो साद सादि सारथि उत्तर में हों तो प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म् ४१. गौः सादसादिसारथिषु ३७७५ ।

कुरुगार्हपत रिक्तगुरु असूतजरती अ-श्लीलदृढरूपा पारेवडवा तैतिलकद्रूपण्यकम्बल तथा दासीभार आदि में पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म् ४२. कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढ-
रूपापारेवडवातैतिलकद्रूपण्यकम्बलो दा-
सीभाराणां च ३७७६ ।

(२१४) दासीभारः देवहूतिः देवभीतिः देवलातिः
वसुनीतिः (वसूनितिः) ओषधिः चन्द्रमाः ॥ इति
दासीभारादिः ॥ आकृतिगणः ॥

* कुरुवृज्योर्गर्हिपते ।

प्र-म्	४३. चतुर्थी तदर्थे ३७७७ ।	चतुर्थी ४५	चतुर्थ्यन्त पूर्वपद में हो तदर्थाभि- धायी उत्तर में हो तो प्रकृतिस्वर होता है
प्र-म्, चतुर्थी	४४. अर्थे ३७७८ ।		चतुर्थ्यन्त पूर्वपद में अर्थ उत्तरपद में हो तो पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, चतुर्थी	४५. क्ते च ३७७९ ।	क्ते ४९	उत्तर में क्त तथा पूर्व में चतु- र्थ्यन्त हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	४६. कर्मधारयेऽनिष्ठा ३७८० ।		कर्मधारय में क्त उत्तर में हो अ- निष्ठान्त पूर्व में हो तो पूर्वपदप्र- कृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	४७. अहीने द्वितीया ३७८१ । * अनुपसर्ग इति वक्तव्यम् ।		क्त उत्तर में द्वितीयान्त पूर्व में हो तो अहीनवाची समास में पूर्वपद प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते	४८. तृतीया कर्मणि ३७८२ ।	कर्मणि ४९	कर्मवाची क्त उत्तर में तृतीयान्त पूर्व में हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, क्ते, कर्मणि	४९. गतिरनन्तरः ३७८३ ।	गतिः ५२ अ-रः ५१	कर्मवाची क्त उत्तर में अव्यवहित गति पूर्व में हो तो पूर्वपदप्रकृति- स्वर होता है ।
प्र-म्, गतिः, अ-रः	५०. तादौ च निति कृत्यतौ ३७८४ ।		तु भिन्न तादि नित् कृत् पर में हो अव्यवहित गति पूर्व में हो तो प्रकृतस्वर होता है ।
प्र-म्, गतिः, अ-रः	५१. तवै चान्तश्च युगपत् ३७८५ ।		तवै का अन्त उदात्त अव्यवहित गति प्रकृतिस्वर युक्त होता है ।
प्र-म्, गतिः	५२. अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ३७८६ ।	अञ्च-ये ५३	अनिगन्त गति को प्रकृतिस्वर होता है यदि व प्रत्ययान्त अञ्च बाद में हो ।
प्र-म्, अञ्च-ये	५३. न्यधी च ३७८७ ।		व प्रत्ययान्त अञ्च पर में हो तो नि अधि को प्रकृतिस्वर होता है ।

प्र-म्	५४. ईषदन्यतरस्याम् ३७८८ ।	अ-म् ६३	ईषद् को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्	५५. हिरण्यपरिमाणं धने ३७८९ ।		हिरण्य परिमाण वाची पूर्व में धन उत्तर में हो तो विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्	५६. प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ३७९० ।		अचिरोपसंपत्ति में पूर्वस्थित प्रथम शब्द को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्	५७. कतरकतमौ कर्मधारये ३७९१ ।	कर्म-ये ५९	पूर्वस्थित कतर कतम को कर्मधारय में विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, कर्म-ये, अ-म्	५८. आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः ३७९२ ।	ब्रा-योः ५९	ब्राह्मण, कुमार उत्तर में हों तो कर्मधारय समास में पूर्वपद आर्य को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, कर्म-ये, अ-म्, ब्रा-योः	५९. राजा च ३७९३ ।	राजा ६०	पूर्व में राजा उत्तर में ब्राह्मण कुमार हो तो पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्, राजा	६०. षष्ठी प्रत्येनसि ३७९४ । ॥३॥		षष्ठ्यन्त राजन् पूर्व में प्रत्येनस् उत्तर में हो तो विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्	६१. क्ते नित्यार्थे ३७९५ ।		नित्यार्थ में क्त उत्तर में हो तो विकल्प से पूर्वपदप्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्	६२. ग्रामः शिल्पिनि ३७९६ ।	शि-नि ६३	शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वपद ग्राम को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है ।
प्र-म्, अ-म्, शि-नि	६३. राजा च प्रशंसायाम् ३७९७ ।		यदि प्रशंसा हो शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वपद राजन् को प्रकृतिस्वर होता है ।
	पूर्वपदाद्युदात्तः		
	६४. आदिरुदात्तः ३७९८ ।	आ-त्तः ९१	यहाँ से आदिः उदात्तः का अधिकार है ।
आ-त्तः	६५. सप्तमीहारिणौ धर्म्योऽहरणे ३७९९ ।		सप्तम्यन्त और हारिवाची पूर्व में हो धर्म्यवाची हरण से भिन्न कोई उत्तर में हो तो आदि उदात्त होता है ।

आ-तः	६६. युक्ते च ३८०० ।	
आ-तः	६७. विभाषाऽध्यक्षे ३८०१ ।	विभाषा ६८
आ-तः, विभाषा	६८. पापं च शिल्पिनि ३८०२ ।	
आ-तः	६९. गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे ३८०३	
आ-तः	७०. अङ्गानि मैरेये ३८०४ ।	
आ-तः	७१. भक्ताख्यास्तदर्थेषु ३८०५ ।	
आ-तः	७२. गोविडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ३८०६ ।	
आ-तः	७३. अके जीविकार्थे ३८०७ ।	अके ७४
आ-तः, अके	७४. प्राचां क्रीडायाम् ३८०८ ।	
आ-तः	७५. अणि नियुक्ते ३८०९ ।	अणि ७७
आ-तः, अणि	७६. शिल्पिनि चाकृजः ३८१० ।	अकृजः ७७
आ-तः, अकृजः, अणि	७७. संज्ञायां च ३८११ ।	
आ-तः	७८. गोतन्तियवं पाले ३८१२ ।	
आ-तः	७९. णिनि ३८१३ ।	णिनि ८०
आ-तः, णिनि	८०. उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव ३८१४ ।	

युक्तवाची समास में पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

यदि अध्यक्ष उत्तर में हो तो विकल्प से पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

शिल्पवाची उत्तर में हो तो पूर्वमें पापको आद्युदात्त होता है ।

यदि क्षेपसमास हो, अन्त में गोत्र-वाची तथा अन्तेवासीवाची शब्द और माणव ब्राह्मण शब्द हों तो पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

मैरेय शब्द उत्तर में हो तो तदङ्ग-वाची पूर्वपद आद्युदात्त होते हैं ।

भक्तावाची शब्द आद्युदात्त होते हैं, यदि उत्तर में तदर्थ शब्द हों ।

गो विडाल सिंह सैन्धव उपमान-वाची होकर यदि उत्तरपद में हों तो पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

जीविकार्थवाची समास में अक के उत्तर में रहने पर पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।

प्राग्देशवाची क्रीडा वाच्य होने पर अक प्रत्ययान्त उत्तर पद के पूर्वपद को आद्युदात्त होता है ।

नियुक्तवाची समास में अण्यन्त उत्तर-पद के पूर्व को आद्युदात्त होता है ।

शिल्पवाची समास में कृ धातु से रहित अण्यन्त के पूर्वपद को आद्युदात्त होता है ।

संज्ञा में अकृज् अण्यन्त उत्तरपद के पूर्व को आद्युदात्त होता है ।

पाल उत्तर में हो तो पूर्वपद गो तन्ति यव को आद्युदात्त होता है ।

णिन्नत्त उत्तरपद में पूर्वपद आद्यु-दात्त होता है ।

शब्दार्थप्रकृति में णिन्नत्त उत्तर में हो तो पूर्व उपमान को आद्युदात्त होता है ।

- आ-त्तः ८१. युक्तारोह्यादयश्च ३८१५ । समास में युक्तारोही आदि शब्द आद्युदात्त होते हैं ।
- (२१५) युक्तारोही आगतरोही आगतयोधी आ-
गतवञ्ची आगतनन्दी आगतप्रहारी आगतमत्स्यः
क्षीरहोता भगिनीभर्ता ग्रामगोधुक् अश्वत्रिरात्रः गर्ग-
त्रिरात्रः व्युष्टित्रिरात्रः गणपादः एकशितिपाद् । 'पात्रे-
समितादयश्च' १६९ । इति युक्तारोह्यादिः ॥
- आ-त्तः ८२. दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे ३८१६ । जे ८३ दीर्घान्त शब्द काश तुष भ्राष्ट्र वट
के बाद ज उत्तर में हो तो पूर्वपद
आद्युदात्त होते हैं ।
- आ-त्तः, जे ८३. अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ३८१७ । उत्तर में ज हो तो बह्वच् पूर्वपद का
उपान्त्य उदात्त होता है ।
- आ-त्तः ८४. ग्रामेऽनिवसन्तः ३८१८ । निवासार्थभिन्न ग्राम उत्तर में हो तो
पूर्वपद आद्युदात्त होता है ।
- आ-त्तः ८५. घोषादिषु च ३८१९ । घोषादि के उत्तर में रहने पर पूर्वपद
आद्युदात्त होता है ।
- (२१६) घोष घट (कट) वल्लभ हृद बदरी
पिङ्गल (पिङ्गली) पिशङ्ग माला रक्षा शाला (वृट्)
कूट (कट्) शाल्मली अश्वत्थं तृण (शिल्पी)
मुनि प्रेक्षाकू (प्रेक्षा) ॥ इति घोषादिः ॥
- आ-त्तः ८६. छात्र्यादयः शालायाम् ३८२० । शाला उत्तर में हो तो छात्रि आदि
आद्युदात्त होते हैं ।
- (२१७) छात्रि पेलि भाण्डि व्याडि आखण्डि
आटि गोमि ॥ इति छात्र्यादिः ॥
- आ-त्तः ८७. प्रस्थेऽवृद्धमकक्यादीनाम् ३८२१ । प्रस्थे ८८ कर्कि आदि वर्जित अवृद्ध पूर्वपद
को आद्युदात्त होता है, यदि उत्तर
में प्रस्थ शब्द हो ।
- (२१८) कर्कि (कर्की) मघ्नी मकरी कर्कन्धु
शमी करीरि (करीर) कन्दुक कुबल (कवल)
बदरी ॥ इति कक्यादिः ॥
- आ-त्तः, प्रस्थे ८८. मालादीनां च ३८२२ । प्रस्थ उत्तर रहने पर पूर्व माला आदि
का आदि उदात्त होता है ।
- (२१९) माला शाला शोणा (शोण) द्राक्षा
स्नाक्षा क्षामा काञ्ची एक काम ॥ इति माला-
दिः ॥

आ-तः ८९. अमहन्नवन्नगरेऽनुदीचाम् ३८२३ ।

नगर उत्तर में हो तो महत् नव को छोड़-कर शेष पूर्वपद का आदि उदात्त होता है, अनुदीच्य में ।

आ-तः ९०. अर्मे चावर्णं द्यव्यच्च ३८२४ । अर्मे ९१

अर्म शब्द उत्तर में हो तो द्यव्यच्च अर्च्यन्त पूर्वपद आद्युदात्त होता है । उत्तर में अर्म हो तो भूत अधिक संजीव मद्र अश्मन् कज्जल पूर्वपद आद्युदात्त नहीं होता है ।

आ-तः, अर्मे ९१. न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् ३८२५

* आद्युदात्तप्रकरणे दिबोदासादीनां छन्दस्युप-
संख्यानम् ।

पूर्वपदान्तोदात्तः

९२. अन्तः ३८२६ ।

अन्तः ११०

यहाँ से 'पूर्वपदस्य अन्तः उदात्तः' का अधिकार है ।

अन्तः ९३. सर्वं गुणात्स्वर्त्ये ३८२७ ।

* गुणात्तरेण त्रयो लोपश्चेति वक्तव्यम् ।

अन्तः ९४. संज्ञायां गिरिनिकाययोः ३८२८ ।

गुण और कात्स्वर्त्य में सर्व पूर्वपद का अन्त उदात्त होता है ।

गिरि और निकाय यदि उत्तर में हो तो संज्ञा में पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः ९५. कुमार्यां वयसि ३८२९ ।

यदि कुमारी उत्तरपद हो अवस्था वाच्य हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः ९६. उदकेऽकेवले ३८३० ।

यदि उदक उत्तर में हो और अके-वल (मिश्र) वाची समास हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः ९७. द्विगौ क्रतौ ३८३१ ।

द्विगु में क्रत्वर्थ यदि उत्तर में हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः ९८. सभायां नपुंसके ३८३२ ।

सभा उत्तर में हो नपुंसकलिङ्गक समास हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः ९९. पुरे प्राचाम् ३८३३ ।

पुरे १०१

प्राच्य क्षेत्र में पुर शब्द उत्तर में हो तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः, पुरे १००. अरिष्टगौडपूर्वे च ३८३४ ।। ५ ।।

पुर उत्तर में हो तो अरिष्ट गौड एवं तत्पूर्वक शब्द को अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः, पुरे १०१. न हास्तिनफलकमार्देयाः ३८३५ ।

यदि पुर शब्द उत्तर में हो तो हास्तिन फलक मार्देय पूर्वपद को अन्तोदात्त नहीं होता है ।

अन्तः १०२. कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ३८३६ ।

बिल उत्तर में हो तो कुसूल कूप कुम्भ शाला पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः १०३. दिक्छब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु दि-दा १०५ ३८३७ ।

पूर्वपद दिक्शब्द अन्तोदात्त होते हैं, यदि उत्तर में ग्रामवाची जनपदवाची आख्यानवाची तथा चानराट शब्द हों ।

अन्तः, दि-दा १०४. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि ३८३८

दिक्शब्द अन्तोदात्त होते हैं यदि उत्तर में आचार्योपसर्जनान्तेवासी वाचक शब्द हों ।

अन्तः, दि-दा १०५. उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ३८३९ ।

उत्तरपद वृद्धि वाले शब्द यदि उत्तर में हों तो दिक्शब्द और सर्व शब्द अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः १०६. बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ३८४० । ब-हौ १२०

बहुव्रीहि में पूर्वपदीय विश्व शब्द अन्तोदात्त होता है, यदि संज्ञा हो ।

अन्तः, ब-हौ, स- १०७. उदराश्वेषु ३८४१ । स-म् १०८

उ-षु १०८ बहुव्रीहि में पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है, यदि संज्ञा हो तथा उदर अश्व इषु उत्तरपद में हों ।

अन्तः, ब-हौ, उ- १०८. क्षेपे ३८४२ । क्षेप में उदर अश्व इषु उत्तर में हों तो पूर्वपद अन्तोदात्त होता है संज्ञा में तथा बहुव्रीहि में ।

अन्तः, ब-हौ १०९. नदी बन्धुनि ३८४३ ।

बहुव्रीहि में बन्धुनि उत्तर में हो तो नद्यन्त पूर्वपद अन्तोदात्त होता है ।

अन्तः, ब-हौ ११०. निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ३८४४ ।

निष्ठान्त उपसर्गपूर्वक यदि पूर्वपद हो तो बहुव्रीहि में विकल्प से अन्तोदात्त होता है ।

उत्तरपदाद्युदात्तः

ब-हौ १११. उत्तरपदादिः ३८४५ ।

उत्त-दिः १११ यहाँ से 'उत्तरपदस्य आदिः उदात्तः' का अधिकार है ।

उत्त-दिः, ब-हौ ११२. कर्णो वर्णलक्षणात् ३८४६ ।

कर्णः ११३ वर्णवाची लक्षणवाची पूर्व में हो तो उत्तरपदस्थ कर्ण आद्युदात्त होता है ।

उत्त-दिः, ब-हौ, क- ११३. संज्ञौपम्ययोश्च ३८४७ । सं-योः ११५

संज्ञा औपम्य में बहुव्रीहिगत उत्तरपद कर्ण आद्युदात्त होता है ।

उत्त-दिः, ब-हौ, सं- ११४. कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च ३८४८ । योः

उत्तरपदगत कण्ठपृष्ठ ग्रीवा जङ्घा आद्युदात्त होते हैं, यदि संज्ञा और औपम्य हो तथा बहुव्रीहि हो ।

उत्त-दिः, ब-हौ, सं- ११५. शृङ्गमवस्थायां च ३८४९ ।
योः

उत्त-दिः, ब-हौ ११६. नञो जरमरमित्रमृताः ३८५० ।

उत्त-दिः, ब-हौ ११७. सोर्मनसी अलोमोषसी ३८५१ । सोः १२०

उत्त-दिः, ब-हौ, सोः ११८. क्रत्वादयश्च ३८५२ ।

(२२०) क्रतु दृशीक प्रतीक प्रतूर्ति हव्य भव्य
भग ॥ इति क्रत्वादिः ॥

उत्त-दिः, ब-हौ, सोः ११९. आद्युदात्तं द्यच्छन्दसि ३८५३ । छ-सि १२०

उत्त-दिः, ब-हौ, छ- १२०. वीरवीर्यौ च ३८५४ ॥ ६ ॥
सि, सोः

उत्त-दिः १२१. कूलतीरतूलमूलशालाक्षसममव्ययीभावे
३८५५ ।

उत्त-दिः १२२. कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ३८५६ ।

उत्त-दिः १२३. तत्पुरुषे शालायां नपुंसके ३८५७ । त-षे १२७
न-के १२५

उत्त-दिः, त-षे, न- १२४. कन्था च ३८५८ । कन्था १२५
के

उत्त-दिः, त-षे, न- १२५. आदिश्चिहणादीनाम् ३८५९ ।
के, कन्था

(१२१) चिहण मदुर मद्रुमर वैतुल पटत्क
बैडालिकर्णक बैडालिकर्णि कुक्कुट चिक्कण
चित्कण ॥ इति चिहणादिः ॥

उत्त-दिः, त-षे १२६. चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ३८६०

उत्त-दिः, त-षे १२७. चीरमुपमानम् ३८६१ ।

बहुव्रीहि में अवस्था संज्ञा औपम्य
हो तो उत्तरपदस्थ शृङ्ग आद्युदात्त
होता है ।

बहुव्रीहि में नञ् उत्तरवर्ती जर मर
मित्र मृत आद्युदात्त होते हैं ।

लोम और उषस् भिन्न मन्त्रन्त असन्त
आद्युदात्त होते हैं, यदि बहुव्रीहि
में सु के बाद हों ।

सु के बाद आये क्रतु आदि शब्द
बहुव्रीहि में आद्युदात्त होते हैं ।

बहुव्रीहि में सु के उत्तर में आद्युदात्त
द्व्यच् को आद्युदात्त ही होता है
वेद में ।

वेद में बहुव्रीहि में सु के बाद वीर
वीर्य आद्युदात्त होते हैं ।

अव्ययीभाव में उत्तरपदस्थ कूल
तीर तूल मूल शाला अक्ष सम
आद्युदात्त होते हैं ।

द्विगु में उत्तरपदस्थ कंस मन्थ शूर्प
पाय्य काण्ड आद्युदात्त होते हैं ।

तत्पुरुष नपुंसक में शालाशब्दान्त
उत्तरपद आद्युदात्त होता है ।

तत्पुरुष नपुंसक में उत्तरपद कन्था
शब्द आद्युदात्त होता है ।

कन्थान्त तत्पुरुष नपुंसक में चिहण
आदि का आदि उदात्त होता है ।

गर्हा में चेल खेट कटुक काण्ड उ-
त्तरपद तत्पुरुष में आद्युदात्त होते हैं ।

उपमानवाची तत्पुरुष में उत्तरपद
चीर आद्युदात्त होता है ।

उत्त-दिः, त-षे १२८. पललसूपशाकं मिश्रे ३८६२ ।

उत्त-दिः, त-षे १२९. कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम् ३८६३ ।

उत्त-दिः, त-षे १३०. अकर्मधारये राज्यम् ३८६४ । अ-ये १३१
* चेलराज्यादिस्वरादव्ययस्वरो भवति पूर्ववि-
प्रतिषेधेन ।

उत्त-दिः, त-षे, अ-ये १३१. वर्ग्यादयश्च ३८६५ ।

(२२२) दिगादिषु वर्गादयस्त एव कृतयदन्ता
वर्ग्यादयः ।

उत्त-दिः, त-षे १३२. पुत्रः पुंभ्यः ३८६६ । पुत्रः १३३

उत्त-दिः, त-षे, पुत्रः १३३. नाचार्यराजत्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः
३८६७ ।

उत्त-दिः, त-षे १३४. चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ३८६८ । अ-याः १३५

(२२३) चूर्ण करिव करिप शाकिन शाकट
द्राक्षा तूस्त कुन्दुम दलप चमसी चक्कन चौल ॥
इति चूर्णादिः ॥

उत्त-दिः, त-षे, अ-याः १३५. षट् च काण्डादीनि ३८६९ ।

(२२४) काण्ड चीर पलल सूप शाक कूल ॥
इति काण्डादिः ॥

उत्त-दिः, त-षे १३६. कुण्डं वनम् ३८७० ।

उत्तरपदप्रकृतिस्वरः

उत्त-दिः, त-षे १३७. प्रकृत्या भगालम् ३८७१ । प्र-त्या १४२

उत्त-दिः, प्र-त्या १३८. शितेर्नित्याबह्वब्रुह्रीहावभसत् ३८७२

मिश्रवाची तत्पुरुष में उत्तरपद पलल
सूप शाक आद्युदात्त होते हैं ।
संज्ञा में तत्पुरुष में उत्तरपद कूल
सूद स्थल कर्ष आद्युदात्त होते हैं ।
कर्मधारय वर्जित तत्पुरुष में राज्यम्
उत्तरपद आद्युदात्त होता है ।

अकर्मधारय तत्पुरुष में उत्तरपद वर्ग्य
आदि शब्द आद्युदात्त होते हैं ।

पुँल्लिङ्ग से उत्तरवर्ती पुत्र शब्द
तत्पुरुष में आद्युदात्त होता है ।
आचार्य राजा ऋत्विक् संयुक्त ज्ञाति
वाची शब्दों से पर पुत्र शब्द
आद्युदात्त नहीं होता है ।
तत्पुरुष में अप्राणिवाची षष्ठ्यन्त
से परे चूर्ण आदि उत्तरपद आद्युदात्त
होते हैं ।

अप्राणि षष्ठ्यन्त से परे काण्ड आदि
उत्तरपद आद्युदात्त होते हैं ।

वन्यपूर्वक उत्तरपद कुण्ड तत्पुरुष
में आद्युदात्त होता है ।

भगालवाची उत्तरपद में हो तो
प्रकृतिस्वर होता है ।
शिति से उत्तर भसत् वर्जित अबह्वच्
शब्द हों तो बहुव्रीहि में प्रकृति-
स्वर होता है ।

उत्त-दिः, प्र-त्या १३९. गतिकारकोपपदात्कृत् ३८७३ ।

तत्पुरुष में गतिकारक उपपद से परे कृदन्त को प्रकृतिस्वर होता है ।

उत्त-दिः, प्र-त्या १४०. उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ३८७४ । उभे १४२
॥ ७ ॥ यु-त् १४२

वनस्पति आदि शब्दों में दोनों पदों में साथ साथ प्रकृति स्वर होता है ।

(२२५) वनस्पतिः बृहस्पतिः शचीपतिः तनून
प्रात् नराशंसः शुनःशेफः शण्डामर्कौ तृष्णावरूत्री
लम्बाविश्ववयसौ मर्मृत्युः ॥ इति वनस्पत्यादिः ॥

उत्त-दिः, उभे, प्र- १४१. देवताद्वन्द्वे च ३८७५ ।

देवतावाची द्वन्द्व में दोनों पदों में साथ-साथ प्रकृतिस्वर होता है ।
पृथिवी रुद्र पूष मन्थि वर्जित देवता
द्वन्द्व में दोनों पदों में प्रकृतिस्वर नहीं होता है, यदि उत्तरपद अनु-
दात्तादि हो ।

त्या, यु-त्

उत्त-दिः, उभे, प्र- १४२. नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवीरुद्रपूषम-
त्या, यु-त् न्यिषु ३८७६ ।

उत्तरपदान्तोदात्तः

उत्त-दिः १४३. अन्तः ३८७७ ।

अन्तः १९९

यहाँ से 'उत्तरपदस्य अन्तः' का अधिकार है ।

उत्त-दिः. अन्तः १४४. थाथघञ्काजबित्रकाणाम् ३८७८ ।

गति कारक उपपद से परे थ अथ घञ् क्त अज् अप् इत्र क अन्तवाले उत्तरपदों का अन्त उदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः १४५. सूपमानात्कः ३८७९ ।

क्तः १४९

सु और उपमान से परे क्तान्त उत्तर पद अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः अन्तः, क्तः १४६. संज्ञायामनाचितादीनाम् ३८८० । सं-म् १४८

संज्ञा में गतिकारकोपपद से क्तान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है आचित आदि को छोड़कर ।

(२२६) आचित पर्यावित आस्थापित परिगृहीत
निरुक्त प्रतिपन्न अपश्लिष्ट प्रश्लिष्ट उपहित उप-
स्थित । 'संहितागवि' १७० ॥ इत्याचितादिः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, १४७. प्रवृद्धादीनां च ३८८१ ।
क्तः, सं-म्

प्रवृद्ध आदि के क्तान्त उत्तरपद अन्तो-दात्त होते हैं ।

(२२७) 'प्रवृद्धं यानम्' १७१ । 'प्रवृद्धो वृषलः'
१७२ । 'प्रयुता सूष्णवः' १७३ । 'आकर्षेऽवहितः'
१७४ । 'अवहितो भोगेषु' १७५ । खट्वारूढः ।
कविशस्तः ॥ इति प्रवृद्धादिः ॥ आकृतिग-

णोऽयम् ॥ तेन । प्रवृद्धं यानम् । अप्रवृद्धो वृष-
कृतो रथ इत्यादि ॥

उत्त-दिः. अन्तः, १४८. कारकदत्तश्रुतयोरेवाशिषि ३८८२ । का-त् १५१
क्तः, सं-म्

उत्त-दिः. अन्तः, १४९. इत्थंभूतेन कृतमिति च ३८८३ ।
क्तः, का-त्

उत्त-दिः. अन्तः, १५०. अनो भावकर्मवचनः ३८८४ ।

का-त्

उत्त-दिः. अन्तः, १५१. मन्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाज-
कादिक्नीताः ३८८५ ।

उत्त-दिः. अन्तः १५२. सप्तम्याः पुण्यम् ३८८६ ।

उत्त-दिः. अन्तः १५३. ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ३८८७ । तृ-याः १५४

उत्त-दिः. अन्तः, तृ- १५४. मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ ३८८८ ।
याः

उत्त-दिः. अन्तः १५५. नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्था- नञः १६१
स्तद्धिताः ३८८९ । गु-धे १५६

तद्धिताः १५६

उत्त-दिः. अन्तः, न- १५६. ययतोश्चातदर्थे ३८९० ।
जः, गु-धे, तद्धिताः

उत्त-दिः. अन्तः, न- १५७. अच्कावशक्तौ ३८९१ ।
जः

उत्त-दिः. अन्तः, न- १५८. आक्रोशे च ३८९२ ।
जः, अच्कौ

उत्त-दिः. अन्तः, न- १५९. संज्ञायाम् ३८९३ ।
जः, आ-शे

संज्ञा में आशीः वाच्य रहने पर
कारक से परे केवल दत्त और श्रुत
क्तान्त का ही अन्त उदात्त होता
है ।

इत्थंभूतेन कृतम् इस अर्थ में समस्त
क्तान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है ।
कारक से परे अन प्रत्ययान्त भाव-
वचन कर्मवचन अन्तोदात्त होता है ।
उत्तरपदस्थ मन्त्रन्त क्तिन्नन्त व्याख्यान
शयन आसन स्थान तथा याजकादि
एवं क्रीत पद अन्तोदात्त होते हैं ।
सप्तमी से परे पुण्य यह उत्तरपद
अन्तोदात्त होता है ।

तृतीया से परे ऊनार्थ तथा कलह
शब्द अन्तोदात्त होते हैं ।
यदि सन्धि न हो तो तृतीयान्त से
परे अनुपसर्ग मिश्र उत्तरपद अन्तो-
दात्त होता है ।

गुण प्रतिषेध में वर्तमान नञ् से परे
तथा सम्पादि अर्हहित अलम् अर्थ
में तद्धितान्त से परे उत्तरपद
अन्तोदात्त होते हैं ।

गुणप्रतिषेधक अतदर्थक य और यत्
अन्त वाले का उत्तरपद अन्तोदान्त
होता है ।

अच्कौ १५८ नञ् से परे अशक्तिवाचक अजन्त
कान्त उत्तरपद अन्तोदात्त होता है ।
आ-शे १५९ आक्रोश रहने पर नञ् से उत्तर
अच् और कान्त अन्तोदात्त होता
है ।

आक्रोश में संज्ञा में नञ् से परे
उत्तरपद अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, न- १६०. कृत्योकेष्णुच्चावादिद्यश्च ३८९४ ॥८॥
जः

(२२८) चारु साधु यौधिक (यौधिक) अनङ्ग ।
मेजय वदान्य अकस्मात् । 'वर्तमानवर्धमानत्वरमा-
णग्नियमाणक्रियमाणरोचमानशोभमानाः संज्ञायाम्'
१७६ । 'विकारसदृशे व्यस्तसमस्ते' १७७ । गृहपति
गृहपतिक ('राजाहोश्छन्दसि') १७८ ॥ इति
चावादिः ॥

* राजाहोश्छन्दसि ।

उत्त-दिः. अन्तः, न- १६१. विभाषा तृन्नन्ततीक्ष्णशुचिषु ३८९५ ।
जः

उत्त-दिः. अन्तः १६२. ब्रह्मव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरणोः ब-हौ १७७
क्रियागणने ३८९६ ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६३. संख्यायाः स्तनः ३८९७ । सं-नः १६४
हौ

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६४. विभाषा छन्दसि ३८९८ ।
हौ, सं-नः

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६५. संज्ञायां मित्राजिनयोः ३८९९ ।
हौ * ऋषिप्रतिषेधोऽमित्रे ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६६. व्यवायिनोऽन्तरम् ३९०० ।
हौ

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६७. मुखं स्वाङ्गम् ३९०१ । मु-ङ्गम् १६९
हौ

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६८. नाव्ययदिकछब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुव-
हौ, मु-ङ्गम् त्सेभ्यः ३९०२ ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १६९. निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ३९०३ ।
हौ, मु-ङ्गम्

कृत्य उक् इष्णुच् अन्तवाले तथा
चारु आदि शब्द यदि नञ् से परे
हों तो अन्तोदात्त होते हैं ।

नञ् से परे तृन्नन्त अत्र तीक्ष्ण
शुचि शब्द विकल्प से अन्तोदात्त
होते हैं ।

बहुव्रीहि में इदम् एतत् तत् से परे
प्रथम शब्द तथा पूरण प्रत्ययान्त
शब्द का अन्त उदात्त होता है,
यदि वे क्रियागणन में वर्तमान हों ।
'संख्या से परे स्तन शब्द बहुव्रीहि
में अन्तोदात्त होता है ।

वेद में संख्या से परे स्तन विकल्प
से अन्तोदात्त होता है ।
संज्ञा एवं बहुव्रीहि में यदि मित्र
और अजिन हों तो वे अन्तोदात्त
होते हैं ।

बहुव्रीहि में व्यवधान कारक शब्दों
से पर शब्द अन्तोदात्त होते हैं ।
बहुव्रीहि में स्वाङ्गवाची उत्तरपदस्थ
मुख शब्द अन्तोदात्त होता है ।
बहुव्रीहि में अव्यय दिकशब्द गो
महत् स्थूल मुष्टि पृथु वत्स से परे
स्वाङ्गवाची मुख शब्द अन्तोदात्त
नहीं होता है ।

निष्ठान्त उपमान से परे स्वाङ्गवाची
मुख शब्द बहुव्रीहि में विकल्प से
अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७०. जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात्को- जा-भ्यः १७१ बहुव्रीहि में आच्छादन वर्जित जाति
हौ ऽकृतमितप्रतिपन्नाः ३९०४ । वाची शब्दों कालवाची तथा सुख
आदि शब्दों से परे कृत मित प्रतिपन्न
भिन्न तान्त अन्तोदात्त होते हैं ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७१. वा जाते ३९०५ ।
हौ, जा-भ्यः

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७२. नञ्सुभ्याम् ३९०६ ।
हौ न-म् १७४ बहुव्रीहि में नञ् सु परे उत्तरपद
अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७३. कपि पूर्वम् ३९०७ ।
हौ, न-म् कपि १७४ नञ् सु पूर्व में हो कप् प्रत्यय अन्त
में हो तो पूर्व अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७४. ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम् ३९०८ ।
हौ, न-म्, कपि नञ् सु से परे ह्रस्वान्त उत्तरपद में
कप् से पूर्व अन्त्यपूर्व को उदात्त
होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७५. बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूमि ३९०९ ।
हौ बहोः १७६ उत्तरपदार्थ बहुत्ववाची बहुशब्द से
परे पद को नञ्वत् स्वर होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७६. न गुणादयोऽवयवाः ३९१० ।
हौ, बहोः अवयववाची बहु से परे गुणादि
बहुव्रीहि में अन्तोदात्त नहीं होते हैं ।

(२२९) गुण अक्षर अध्याय सूक्त छन्दोमान ॥

इति गुणादिः ॥ आकृतिगणः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, ब- १७७. उपसर्गात्सवाङ्गं ध्रुवमपर्शु ३९११ ।
हौ उ-त् १९६ उपसर्ग से पशुर्गृहित एकरूप स्वाङ्ग
बहुव्रीहि में अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १७८. वनं समासे ३९१२ ।
त् वनं १७९ उपसर्गोत्तर वन शब्द सभी समासों
में अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १७९. अन्तः ३९१३ ।
त्, वनं अन्तः शब्दोत्तर वन अन्तोदात्त होता
है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८०. अन्तश्च ३९१४ ॥ ९ ॥ अन्तः १८१
त् उपसर्गोत्तर अन्तः शब्द अन्तोदात्त
होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८१. न निविभ्याम् ३९१५ ।
त्, अन्तः नि वि से परे अन्तः शब्द अन्तोदात्त
नहीं होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८२. परेरभितोभावि मण्डलम् ३९१६ ।
त् परि से परे अभितोभाववाची तथा
मण्डल शब्द अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८३. प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम् ३९१७ ।
त् संज्ञा में प्रोत्तर अस्वाङ्गवाची शब्द
अन्तोदात्त होते हैं ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८४. निरुदकादीनि च ३९१८ ।
त् निरुदक आदि अन्तोदात्त होते हैं ।

(२३०) निरुदक निरुपल निर्मक्षिक निर्मशक
निष्कालक निष्कालिक निष्पेष दुस्तरीप निस्तरीप
निस्तरीक निरजिन (उदजिन) उपाजिन । 'परे-
हस्तपादकेशकर्षाः' १७९ ॥ इति निरुदकादिः ॥

आकृतिगणः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८५. अभेर्मुखम् ३९१९ ।

मुखम् १८६

अभि उत्तरवर्ती मुख अन्तोदात्त होता है ।

त्

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८६. अपाच्च ३९२० ।

अपात् १८७

अप उत्तरवर्ती मुख अन्तोदात्त होता है ।

त्, मुखम्

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८७. स्फिगपूतवीणाऽञ्जोऽध्वकुक्षिसीरनाम-

त्, अपात्

नाम च ३९२१ ।

अप उत्तरवर्ती स्फिग पूत वीणा अध्वन् कुक्षि सीरवाचक शब्द तथा नामन् शब्द अन्तोदात्त होते हैं ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८८. अधेरुपरिस्थम् ३९२२ ।

त्

अधि उत्तरवर्ती उपरिस्थवाची शब्द अन्तोदात्त होते हैं ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १८९. अनोरप्रधानकनीयसी ३९२३ ।

अनोः १९०

अनु उत्तरवर्ती अप्रधानवाची तथा कनीयस् शब्द अन्तोदात्त होते हैं ।

त्

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९०. पुरुषश्चान्वादिष्टः ३९२४ ।

त्, अनोः

अनु उत्तरवर्ती अन्वादिष्टवाची पुरुष अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९१. अतेरकृत्यदे ३९२५ ।

त्

* अतेर्धातुलोप इति वक्तव्यम् ।

अति उत्तरवर्ती अकृदन्तपद शब्द अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९२. नेरनिधाने ३९२६ ।

त्

अनिधान में नि उत्तरवर्ती पद अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९३. प्रतेरंश्चादयस्तत्पुरुषे ३९२७ ।

त-षे १९६

प्रति उत्तरवर्ती अंशु आदि शब्द तत्पुरुष में अन्तोदात्त होते हैं ।

त्

(२३१) अंशु जन (राजन्) उष्ट्र खेटक अजिर

आर्द्रा श्रवण कृत्तिका अर्धपुर ॥ इत्यंश्चादिः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९४. उपाङ्गयजजिनमगौरादयः ३९२८ ।

त्, त-षे

उपोत्तरवर्ती द्व्यच् शब्द तथा अ-जिन शब्द अन्तोदात्त होते हैं गौर आदि को छोड़कर ।

(२३२) गौर तैष तैल लेट लोट जिह्वा कृष्ण

कन्या गुध कल्प पाद ॥ इति गौरादिः ॥

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९५. सोरवक्षेपणे ३९२९ ।

त्, त-षे

अवक्षेपण में सु उत्तरवर्ती पद अन्तोदात्त होता है ।

उत्त-दिः. अन्तः, उ- १९६. विभाषोत्पुच्छे ३९३० ।

विभाषा १९८

तत्पुरुष में उत्पुच्छ विकल्प से अन्तोदात्त होता है ।

त्, त-षे

उत्त-दिः. अन्तः, १९७. द्वित्रिभ्यां पाहन्मूर्धसु बहुव्रीहौ ३९३१
विभाषा

उत्त-दिः. अन्तः, १९८. सक्थं चाक्रान्तात् ३९३२ ।
विभाषा

उत्त-दिः. अन्तः १९९. परादिश्छन्दसि बहुलम् ३९३३ ।
* त्रिचक्रादीनां छन्दस्युपसंख्यानम् ।
(२३३) (वा० ग०) । त्रिचक्रं त्रिवृत् त्रिव-
ङ्कर ॥ इति त्रिचक्रादिः ।। आकृतिगणः ।।
बहुव्रीहावाशङ्कागौः सादक्ते नित्यार्थे युक्तान
हास्तिनकूलतीरदेताविभाषा न
निव्येकोनविंशतिः ।।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

बहुव्रीहि में द्वि त्रि उत्तरवर्ती पाद
दत् मूर्धन् शब्द विकल्प से अन्तो-
दात्त होते हैं ।

आक्रान्त परक सक्थ विकल्प से
अन्तोदात्त होता है ।

पर में अवस्थित सक्थ का आदि
वेद में बहुलतया उदात्त होता है ।

तृतीयः पादः ।

उत्तरपदाधिकारे अलुक्

- | | | |
|--|---------------------|--|
| १. अलुगुत्तरपदे १५८ । | उ-दे १३८
अ-क् २३ | यहाँ से उत्तरपदे अलुक् का अ-
धिकार है । |
| उ-दे, अ-क् २. पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः १५९ ।
* ब्राह्मणाच्छंसिन् उपसंख्यानम् । | | स्तोकादि से परे पञ्चमी का अलुक्
होता है यदि बाद में पद हो । |
| उ-दे, अ-क् ३. ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः १६० । तृ-याः ५
* अञ्जस उपसंख्यानम् ।
* पुंसानुजो जनुषान्य इति च । | तृ-याः ५
मनसः ५ | ओजस् सहस् अम्भस् तमस् से परे
तृतीया का अलुक् होता है उत्तरपद
के पूर्व । |
| उ-दे, अ-क्, तृ-याः ४. मनसः संज्ञायाम् १६१ । | | संज्ञा में उत्तरपद परे रहते मनस्
की तृतीया का अलुक् होता है । |
| उ-दे, अ-क्, तृ-याः ५. आज्ञायिनि च १६२ ।
याः, मनसः | | आज्ञायिन् उत्तरपद में हो तो मनस्
की तृतीया का अलुक् होता है । |
| उ-दे, अ-क् ६. आत्मनश्च १६३ ।
* पूरणे । | | (पूरण प्रत्ययात्) उत्तर पद परे
रहने पर मनस् की तृतीया का अलुक्
होता है । |
| उ-दे, अ-क् ७. वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः १६४ । | वै-याः ८ | वैयाकरणाख्या में आत्मने की च-
तुर्थी का अलुक् होता है । |

१. विकृताक्ष इत्यपि भाष्ये पाठः ।

२. इदं विशिष्टं वार्तिकमिति भाष्यस्वरसः इति स्पष्टं शेखरे ।

उ-दे, अ-क्, वै-या: ८. परस्य च ९६५ ।

उ-दे, अ-क्, वै-या: ९. हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् ९६६ ।

* हद्युभ्यां च ।

उ-दे, अ-क्, स- १०. कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ९६८ ।

म्याः, ह-त्

उ-दे, अ-क्, स- ११. मध्याद्गुरौ ९६९ ।

म्याः, ह-त् * अन्ताच्च ।

उ-दे, अ-क्, स- १२. अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ९७० ।

म्याः, ह-त्

उ-दे, अ-क्, स- १३. बन्धे च विभाषा ९७१ ।

म्याः, ह-त्

उ-दे, अ-क्, स- १४. तत्पुरुषे कृति बहुलम् ९७२ ।

म्याः

उ-दे, अ-क्, स- १५. प्रावृट्शरत्कालदिवां जे ९७३ ।

म्याः, बहुलम्

उ-दे, अ-क्, स- १६. विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ९७४ ।

म्याः, जे

उ-दे, अ-क्, स- १७. घकालतनेषु कालनाम्नः ९७५ ।

म्याः, विभाषा

उ-दे, अ-क्, स- १८. शयवासवासिष्यकालात् ९७६ ।

म्याः, विभाषा * अपो योनियन्मतिषु ।

उ-दे, अ-क्, स- १९. नेन्सिद्धबध्नातिषु च ९७७ ।

म्याः

ह-त् १३

स-म्याः २०

बहुलम् १५

जे १६

विभाषा १८

न २०

पर के चतुर्थी का अलुक् होता है
वैयाकरणाख्या में ।

संज्ञा में हलन्त और अदन्त की
सप्तमी का अलुक् होता है ।

प्राच्य देश में हलन्त और अदन्त
की सप्तमी का अलुक् होता है
यदि उत्तरपद हलादि हो तथा वह
कार (कर) वाची हो ।

गुरु उत्तर पद में हो तो मध्य की
सप्तमी का अलुक् होता है ।

मूर्द्ध मस्तक भिन्न स्वाङ्गवाची शब्दों
की सप्तमी का अलुक् होता है,
यदि उत्तर पद में काम न हो ।

(घञन्त) बन्ध यदि उत्तर में हो
तो हलदन्त की सप्तमी का विकल्प
से अलुक् होता है ।

तत्पुरुष में यदि कृदन्त उत्तरपद
में हो तो सप्तमी का बहुलतया
अलुक् होता है ।

यदि ज उत्तरपद में हो तो प्रावृष्
शरत् काल दिव् की सप्तमी का
बाहुल्येन अलुक् होता है ।

यदि ज उत्तरपद में हो तो वर्ष क्षर
शर वर की सप्तमी का विकल्प
से अलुक् होता है ।

घ संज्ञक प्रत्यय, कालशब्द, तन
प्रत्यय उत्तरपद में हो तो काल-
वाची, शब्द की सप्तमी का विकल्प
से अलुक् होता है ।

यदि उत्तर में शय वास वासिन् हो
तो अकालवाची शब्दों की सप्तमी
का विकल्प से अलुक् होता है ।

यदि सिद्ध इन्नन्त बध्नाति उत्तर में
हों तो उनसे पूर्व की सप्तमी का
अलुक् नहीं होता है ।

उ-दे, अ-क्, स- २०. स्थे च भाषायाम् १७८ ।। १ ।।
म्याः, न

भाषा में स्थ के उत्तर में रहने पर उससे पूर्व की सप्तमी का अलुक् नहीं होता है ।

उ-दे, अ-क् २१. षष्ठ्या आक्रोशे १७९ । ष-या: २४
* वागिदक्पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषु । आ-शे २२
* आमुष्यायणामुष्यपुत्रिकामुष्यकुलिकेति च ।
* देवानां प्रिय इति च (मूर्खे) ।
* शोफपुच्छलाङ्गुलेषु शुनः संज्ञायाम् ।
* दिवश्च दासे ।

आक्रोश गम्यमान हो तो उत्तरपद के पूर्व की षष्ठी का अलुक् होता है ।

उ-दे, अ-क्, ष- २२. पुत्रेऽन्यतरस्याम् १८० ।
याः, आ-शे

पुत्र शब्द उत्तर में हो तथा आक्रोश गम्यमान हो तो षष्ठी का अलुक् होता है ।

उ-दे, अ-क्, ष-या: २३. ऋतो विद्यायोनिःसम्बन्धेभ्यः १८१ । ऋतः २४
* विद्यायोनिःसम्बन्धेभ्यस्तत्पूर्वोत्तरपदग्रहणम् । वि-भ्यः २५

ऋकारान्त की षष्ठी का अलुक् होता है, यदि विद्या योनि सम्बन्धी शब्द उत्तर में हों ।

उ-दे, वि-भ्यः, ष- २४. विभाषा स्वसुपत्योः १८२ ।
याः, ऋतः

यदि स्वसृ और पति शब्द उत्तर में हों तो विद्या योनि सम्बन्धी ऋकारान्त शब्दों की षष्ठी का विकल्प से अलुक् होता है ।

उत्तरपदविकारः

उ-दे, वि-भ्यः २५. आनङ्गतो द्वन्द्वे १२१ ।

आनङ् २६

विद्या योनि सम्बन्ध वाचक ऋकारान्त शब्दों को आनङ् होता है, यदि द्वन्द्व हो तथा उत्तरपद भी ऋकारान्त हो ।

उ-दे, आनङ् २६. देवताद्वन्द्वे च १२२ ।
* वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

दे-द्वे ३१

देवतावाची द्वन्द्व में पूर्वपद को आनङ् होता है ।

उ-दे, दे-द्वे २७. ईदग्नेः सोमवरुणयोः १२३ ।

अग्नेः २८

सोम वरुण के देवता द्वन्द्व में पूर्वपदस्थ अग्नि को ईकार आदेश होता है ।

उ-दे, दे-द्वे, अग्ने २८. इदवृद्धौ १२५ ।
* विष्णौ न ।

कृतवृद्धि उत्तरपद वाले देवता द्वन्द्व में पूर्वपदस्थ अग्नि को इकार आदेश होता है ।

उ-दे, दे-द्वे २९. दिवो द्यावा १२६ ।

दि-वा ३०

उत्तरपद पर रहने पर देवताद्वन्द्व में दिव् को द्यावा आदेश होता है । देवता द्वन्द्व में पृथिवी उत्तर में हो तो दिव् को दिवस् तथा द्यावा होता है ।

उ-दे, दे-द्वे, दि-वा ३०. दिवसश्च पृथिव्याम् १२७ ।

उ-दे, दे-द्वे

३१. उषासोषसः ९२८ ।

उ-दे

३२. मातरपितरावुदीचाम् ९२९ ।

उ-दे

३३. पितरामातरा च च्छन्दसि ३५२८ ।

पुंवद्भावः

उ-दे

३४. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधि- स्त्रि-वत् ४२

करणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ८३१ । भा-त् ४३

अनूङ् ४२

(२३४) प्रिया मनोज्ञा कल्याणी सुभगा दुर्भगा
भक्तिः सचिवा स्वसा (स्वा) कान्ता (क्षान्ता)
समा चपला दुहिता वामा (तनया) ॥ इति
प्रियादिः ॥

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-

वत्, अनूङ्

३५. तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ८३६ ।

(२३५) तसिल् त्रल् तरप् तमप् चरट् जातीयर्
कल्पप् देशीयर् रूपप् पाशप् थल् थाल् दा हिल्
तिल् ध्यन् ॥ एते तसिलादयः ॥

* शसि बहुल्यार्थस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः ।

* त्वतलोगुणवचनस्य ।

* भस्याडे तद्धिते ।

* ठक्छसोश्च ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-

वत्, अनूङ्

३६. क्यङ्मानिनोश्च ८३७ ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-

वत्, अनूङ्

३७. न कोपधायाः ८३८ ।

* कोपधप्रतिषेधे तद्धितवुग्रहणम् ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-

वत्, अनूङ्, न

३८. संज्ञापूरण्योश्च ८३९ ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि-

वत्, अनूङ्, न

३९. वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्थारक्तविकारे

८४० ।

उत्तरपद परे रहने पर देवता द्वन्द्व
में उषस् को उषासा होता है ।

औदीच्य मत में मातरपितरौ बनता
है ।

वेद में पितरामातरा बनता है ।

ऊङ्रहित भाषितपुंस्क स्त्री लिङ्ग
शब्द को पुंवत् हो जाता है यदि
समा-नाधिकरण स्त्रीलिङ्ग उत्तरपद
में हो । पर इस स्त्रीलिङ्ग में पूरण-
प्रत्ययान्त तथा प्रिया आदि शब्द
न हों ।

कृत्वसुजन्त तसिलादि परे रहने
पर अनूङ् भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग
शब्द को पुंवत् होता है ।

क्यङ् और मानी परे हो तो अनूङ्
भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुं-
वत् होता है ।

क उपधावाले स्त्रीलिङ्ग शब्दों को
पुंवद्भाव नहीं होता है ।

संज्ञा एवं पूरणप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग
शब्दों का पुंवद्भाव नहीं होता है ।

रक्त एवं विकारार्थरहित वृद्धिनिमित्त
तद्धितान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्-
भाव नहीं होता है ।

न ४१

उ-दे, भा-त्, स्त्रि- ४०. स्वाङ्गाच्चेतः ८४१ । ॥ २ ॥

वत्, अनूङ्, न * अमानिनीति वाच्यम् ।

उ-दे, भा-त्, स्त्रि- ४१. जातेश्च ८४२ ।

वत्, अनूङ्, न

उ-दे, भा-त्, स्त्रि- ४२. पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु ७४६ ।

वत्, अनूङ् * कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु ।

(२३६-२३७) (वा० ग०) । कुक्कुटी
मृगी काकी अण्ड पद शाब भ्रकुंस भ्रुकुटी ॥ इति
कुक्कुट्याद्यण्डादी ॥

उ-दे, भा-त् ४३. घरूपकल्पज्वेलङ्बुवगोत्रमतहतेषु ड्योऽ- घ-तेषु ४५
नेकाचो ह्रस्वः ९८५ । ह्रस्वः ४५

उ-दे, ह्रस्वः, घ-तेषु ४४. नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ९८६ । नद्व्याः ४५
* कृन्नद्या न । अ-म् ४५

उ-दे, ह्रस्वः, नद्व- ४५. उगितश्च ९८७ ।

याः, घ-तेषु, अ-म्

उ-दे ४६. आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः आत् ४९
८०७ ।

* महत् आत्वे घासकरविशिष्टेषूपसंख्यानं पुंव-
द्भावश्च ।

* अष्टनः कपाले हविषि ।

* गवि च युक्ते ।

उ-दे, आत् ४७. द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीहशीत्योः ८०८ द्व्य-त्योः ४९
* प्राक्शतादिति वक्तव्यम् ।

उ-दे, आत्, द्व्य- ४८. त्रेख्यः ८०९ ।
त्योः

त्रयः ४९

स्वाङ्गोत्तर ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों
का भी पुंवद्भाव नहीं होता है ।
जाति वाचक शब्दों से परे स्त्री प्रत्यय
वाले स्त्रीलिङ्ग वाचक शब्दों से भी
पुंवद्भाव नहीं होता है ।
कर्मधारय में तथा जातीय देशीय
युक्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का पुंवद्भाव
होता है, यदि वह भाषितपुंस्क तथा
अनूङ् हो ।

भाषितपुंस्क अनेकाच् डीबन्त को
ह्रस्व हो जाता है, यदि उसके बाद
घ रूप कल्पच् चेलट् ब्रुव गोत्र मत
और हत हों ।

अड्यन्त नदी तथा एकाच् ड्यन्त
को विकल्प से ह्रस्व होता है यदि
पर में घ रूप आदि हो ।

उगित् से परे नदी को घ रूप आदि
के यहाँ विकल्प से ह्रस्व होता है ।
समानाधिकरण या जातीयर् प्रत्यय
बाद में हो तो पूर्वस्थ महत् को
आकार आदेश होता है ।

द्वि और अष्टन् को आकार आदेश
होता है, यदि संज्ञा हो तथा उत्तर
में बहुव्रीहि और अशीति न हो ।
त्रि को त्रयस् आदेश होता है, यदि
संख्या हो तथा उत्तर में बहुव्रीहि
और अशीति न हो ।

उ-दे, आत्, द्वय- ४९. विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ८१०
त्योः, त्रयः

उ-दे ५०. हृदयस्य हल्लेख्यदण्णलासेषु ९८८ । ह-हत् ५१

उ-दे, ह-हत् ५१. वा शोकष्यञ्जोगेषु ९८९ ।

उ-दे ५२. पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ९९० । पादस्य ५६

उ-दे, पादस्य ५३. पद्यत्यतदर्थे ९९१ । पद् ५६

* इके चरतावुपसंख्यानम् ।

उ-दे, पद्, पादस्य ५४. हिमकाषिहतिषु च ९९२ ।

उ-दे, पद्, पादस्य ५५. ऋचः शे ९९३ ।

उ-दे, पद्, पादस्य ५६. वा घोषमिश्रशब्देषु ९९४ ।

* निष्के चेति वक्तव्यम् ।

उ-दे ५७. उदकस्योदः संज्ञायाम् ९९५ । उद-दः ६०

* उत्तरपदस्येति च वक्तव्यम् ।

उ-दे, उद-दः ५८. पेषंवासवाहनधिषु च ९९६ ।

उ-दे, उद-दः ५९. एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ९९७ अ-म् ६१

उ-दे, उद-दः, अ-म् ६०. मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारबीवधगा-
हेषु च ९९८ । ॥ ३ ॥

उ-दे, अ-म् ६१. इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ९९९ । ह्रस्वः ६६

* इयङ्कुवङ्भाविनामव्ययानां च नेति वाच्यम् ।

* अध्रुकुंसादीनामिति वक्तव्यम् ।

संख्या हो तथा उत्तर में बहुव्रीहि और अशीति न हो तो सभी द्वि त्रि अष्टन् को विकल्प से आ होता है चत्वारिंशत् आदि में ।

लेख यत् अण् लास यदि पर में हों तो हृदय को हत् होता है । शोक ष्यञ् रोग यदि पर में हो तो हृदय को विकल्प से हत् होता है ।

आजि आति ग उपहत यदि पर में हो तो पाद को पद होता है ।

अतदर्थ में यदि यत् प्रत्यय पर में हो तो पाद को पद् होता है ।

हिम काषि हति पर में हो तो पाद को पद् होता है ।

ऋक्सम्बन्धी पाद को पद् होता है श के यहाँ ।

पाद को विकल्प से पद् होता है यदि पर में घोष मिश्र शब्द हों ।

यदि उत्तर में कोई पद हो और संज्ञा हो तो उदक को उद होता है ।

पेषम् वास वाहन धि पर में हो तो उदक को उद आदेश होता है ।

पूरयितव्य एकहलादि यदि उत्तर में हो तो उदक को विकल्प से उद आदेश होता है ।

उदक को विकल्प से उद आदेश होता है, यदि बाद में मन्थ ओदन सक्तु विन्दु वज्र भार हार बीवध गाह हों ।

यदि उत्तर में कोई पद हो तो अङ्यन्त इगन्त को विकल्प से ह्रस्व होता है ।

उ-दे, ह्रस्वः ६२. एक तद्धिते च १००० ।

उ-दे, ह्रस्वः ६३. ड्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम् १००१ । ड्यापोः ६४
ब-म् ६४

उ-दे, ब-म्, ह्रस्वः, ६४. त्वे च १००२ ।

ड्यापोः

उ-दे, ह्रस्वः ६५. इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु
१००६ ।

उ-दे, ह्रस्वः ६६. खित्यनव्ययस्य २९४३ ।

खिति ६९

अ-स्य ६७

उ-दे, खिति, अ-स्य ६७. अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् २९४२ ।

मुम् ७२

उ-दे, मुम्, खिति ६८. इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च २९९४ ।

उ-दे, मुम्, खिति ६९. वाचंयमपुरन्दरौ च २९५७ ।

उ-दे, मुम् ७०. कारे सत्यागदस्य १००७ ।

* अस्तोश्चेति वक्तव्यम् ।

* भक्षस्य च छन्दसि ।

* धेनोर्भव्यायाम् ।

* लोकस्य पृणे ।

* इत्येऽनभ्याशस्य ।

* भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे ।

* गिलेऽगिलस्य ।

* गिलगिले च ।

* उष्णभद्रयोः करणे ।

* सूतोयराजभोजकुलमेरुभ्यो दुहितुः पुत्रइवा ।

उ-दे, मुम् ७१. श्येनतिलस्य पाते जे १२६८ ।

उ-दे, मुम् ७२. रात्रेः कृति विभाषा १००८ ।

यदि उत्तर में कोई पद हो या तद्धित हो तो एक को ह्रस्व होता है ।

संज्ञा और छन्द में ड्यन्त और आ-बन्त को बहुलतया ह्रस्व होता है ।

ड्याप् को बहुलतया ह्रस्व होता है यदि बाद में त्व हो ।

इष्टका इषीका माला को क्रमशः चित तूल भारिन् से पूर्व रहने पर ह्रस्व होता है ।

खिदन्त उत्तरपद में हो तो अनव्यय को ह्रस्व होता है ।

यदि खिदन्त उत्तर में हो तो अरुष् द्विषत् और अनव्यय अजन्त को मुम् का आगम होता है ।

एकाच् इजन्त से मुम् का आगम होता है, यदि खिदन्त परे हो । साथ ही मुम् द्वितीया के एकवचन के सदृश होता है ।

वाचंयम और पुरन्दर निपातित होते हैं ।

सत्य और अगद को मुम् होता है, यदि कार शब्द बाद में हो ।

श्येन तिल को मुम् आगम होता है यदि ज प्रत्यय तथा पात उत्तर में हो ।

रात्रि को विकल्प से मुम् होता है यदि उत्तर में कृत् हो ।

- उ-दे ७३. नलोपो नञः ७५७ । नञः ७७
* नञो नलोपस्तिङि क्षेपे ।
- उ-दे, नञः ७४. तस्मान्नुडचि ७५८ ।
- उ-दे, नञः ७५. नभ्राणनपात्रवेदानासत्यानमुचिनकुलनख- प्रकृत्या ७७
नपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ७५९ ।
- उ-दे, नञः, प्रकृत्या ७६. एकादिश्रैकस्य चादुक् ८११ ।
- उ-दे, नञः, प्रकृत्या ७७. नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् ७६० ।
- उ-दे ७८. सहस्य सः संज्ञायाम् १००९ । सहस्य ८३
सः ८९
- उ-दे, सः, सहस्य ७९. ग्रन्थान्ताधिके च १०१० ।
- उ-दे, सः, सहस्य ८०. द्वितीये चानुपाख्ये १०११ ।। ४ ।।
- उ-दे, सः, सहस्य ८१. अव्ययीभावे चाकाले ६६० ।
- उ-दे, सः, सहस्य ८२. वोपसर्जनस्य ८४९ ।
- उ-दे, सः, सहस्य ८३. प्रकृत्याशिषि ८५० ।
* अंगोवत्सहलेष्विति वाच्यम् ।
- उ-दे, सः ८४. समानस्य च्छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु १०१२ स-स्य ८९
- उ-दे, सः, स-स्य ८५. ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थान-
वर्णवयोवचनबन्धुषु १०१३ ।
- उ-दे, सः, स-स्य ८६. चरणे ब्रह्मचारिणि १०१४ ।

यदि उत्तर में कोई पद हो तो नञ् के न् का लोप होता है ।
लुप्तनकार नञ् (अ) को नुट् होता है अच् परे रहते ।
नभ्राट् नपात् नवेदा नासत्या नमुचि नकुल नख नपुंसक नक्षत्र नक्र नाक में न प्रकृतिवत् रहता है ।
एक आदि वाले नञ् को प्रकृतिभाव होता है तथा एक को आदुक् आदेश होता है ।
अप्राणि नग में नञ् को विकल्प से प्रकृतिभाव होता है ।
संज्ञा में सह का स आदेश होता है ।
ग्रन्थान्त और अधिक में सह को स होता है ।
द्वितीय अनुपाख्य में सह को स होता है ।
अव्ययीभाव में कालवाचिभिन्न उ-त्तर पद में सह को स आदेश होता है ।
उपसर्जन-बहुव्रीहि अवयव-सह को विकल्प से स होता है ।
आशीः अर्थ में सह को प्रकृतिभाव होता है ।
वेद में समान को स आदेश होता है, यदि उत्तर में मूर्धन् प्रभृति उदर्क न हो ।
समान को स आदेश होता यदि उत्तर में ज्योतिष् जनपद रात्रि नाभि नामन् गोत्र रूप स्थान वर्ण वयस् वचन बन्धु हों ।
चरण वाच्य रहने पर समान को स होता है यदि उत्तर में ब्रह्मचारिन् हो ।

उ-दे, सः, स-स्य	८७. तीर्थे ये १०१५ ।	ये ८८	यत् प्रत्ययान्त तीर्थ शब्द यदि पर में हो तो समान को स होता है । समान को विकल्प से स होता है यदि यत्प्रत्ययान्त उदर बाद में हो ।
उ-दे, सः, स-स्य, ये	८८. विभाषोदरे १०१६ ।		
उ-दे, सः, स-स्य	८९. दृग्दृशवतुषु १०१७ ।	दृ-षु ९१	दृग् दृश वतु परे हो तो समान को स होता है ।
	* दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।		
उ-दे, दृ-षु	९०. इदंकिमोरीशकी १०१८ ।		दृग् दृश् वतु परे हो तो इदम् और किम् को क्रमशः ईश् और की आदेश होता है ।
	* दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।		
उ-दे, दृ-षु	९१. आ सर्वनामः ४३० ।	स-मः ९२	सर्वनाम को आकार आदेश होता है यदि पर में दृग् दृश वतु हो ।
	* दृक्षे चेति वक्तव्यम् ।		
उ-दे, स-मः	९२. विष्णुदेवयोश्च टेरद्वयञ्चतावप्रत्यये ४१८ अ-ये ९५		विष्णु और देव तथा सर्वनाम के टि को अद्रि आदेश होता है, यदि अ प्रत्ययान्त अञ्चति बाद में हो ।
	* छन्दसि स्त्रियां बहुलं विष्णुदेवयोष्टेरद्वयादेशः ।		अ प्रत्ययान्त अञ्चति परे रहने पर सम् को समि आदेश होता है ।
उ-दे, अ-ये	९३. समः समि ४२१ ।		अलुप्ताकार अप्रत्ययान्त अञ्चति पर रहने पर तिरस् को तिरि आदेश होता है ।
उ-दे, अ-ये	९४. तिरसस्तिर्यलोपे ४२३ ।		
उ-दे, अ-ये	९५. सहस्य सध्रिः ४२२ ।	सहस्य ९६	अ प्रत्ययान्त अञ्चति परे रहने पर सह को सध्रि आदेश होता है ।
उ-दे, सहस्य	९६. सध-मादस्थयोश्छन्दसि ३५२९ ।		वेद में सह को सध होता है यदि पर में माद और स्थ हों ।
उ-दे	९७.. द्व्यन्तरूपसर्गेभ्योऽप ईत् ९४१ ।	अपः ९८	द्वि अन्तर् तथा उपसर्गों से परे अप को ईत् होता है ।
	* अवर्णान्ताद्वा ।		
उ-दे, अपः	९८. ऊदनोर्देशे ९४२ ।		यदि देशाभिधान हो तो अनु उत्तरवर्ती अप के अ को ऊ हो जाता है ।
उ-दे	९९. अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशा- स्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु	अष-दुक् १००	अषष्ठीस्थ अतृतीयास्थ अन्य शब्द को दुक् आगम होता है, यदि पर में आशीः आशा आस्था आस्थित उत्सुक उति कारक राग तथा छ हो ।
	१०२५ ।		अन्य को विकल्प से दुक् होता है यदि बाद में अर्थ हो ।
उ-दे, अष-दुक्	१००. अर्थे विभाषा १०२६ ।। ५ ।।		
उ-दे	१०१. कोः कत्तपुरुषेऽचि १०२७ ।	कोः १०८	तत्पुरुष में अजादि उत्तर पद रहने पर कु को कत् होता है
	* त्रौ च ।	कत् १०३	

उ-दे, कोः, कत् १०२. रथवदयोश्च १०२८ ।

उ-दे, कोः, कत् १०३. तृणे च जातौ १०२९ ।

उ-दे, कोः १०४. का पथ्यक्षयोः १०३० ।

का १०८

उ-दे, कोः, का १०५. ईषदर्थे १०३१ ।

उ-दे, कोः, का १०६. विभाषा पुरुषे १०३२ ।

विभाषा १०८

उ-दे, कोः, का, वि- १०७. कवं चोष्णे १०३३ ।
भाषा

कवं १०८

उ-दे, कोः, का, वि- १०८. पथि च छन्दसि ३५३० ।
भाषा, कवं

उ-दे १०९. पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् १०३४ ।

(२३८) पृषोदर पृषोत्थान वलाहक जीमूत श्म-
शान उलूखल पिशाच वृसी मयूर ॥ इति पृषो-
दरादिः ॥ आकृतिगणः ॥

* दिक्छन्देभ्यस्तीरस्य तारभावो वा ।

* षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेः ह्रुत्वं च ।

* धासु वेति वाच्यम् ।

* दुरो दाशनाशदभ्येषूत्वमुत्तरपदादेः ह्रुत्वं च ।

* स्वरो रोहतौ छन्दस्युत्वम् ।

* पीवोपवसनादीनां छन्दसि लोपः ।

उ-दे

११०. संख्याविषायापूर्वस्याहस्याहन्नन्यतरस्यां
डौ २३८ ।

रथ वद उत्तर में हो तो कु को
कत् आदेश होता है ।

जाति अभिधेय हो तो कु को कत्
होता है तृण पर रहते ।

पथिन् अक्ष पर रहते कु को का
होता है ।

ईषत् के अर्थ में कु को का होता
है ।

यदि पुरुष उत्तर में हो तो कु को
विकल्प से का होता है ।

यदि उष्ण उत्तर में हो तो कु को
कव होता है विकल्प से का भी
होता है ।

वेद में कु को विकल्प से कव का
होते हैं यदि पर में पथिन् हो ।

पृषोदर आदि यथोपदिष्ट साधु होते
हैं ।

संख्या वि साय पूर्व में हो तो अह
को विकल्प से डि के यहाँ अहन्
आदेश होता है ।

उत्तरपददीर्घः

उ-दे १११. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः १७४ ।

ढ्र-पे ११२

पू-स्य १३९

दीर्घः ६/४/१८

ढ्र लोप में पूर्व अण् को दीर्घ
होता है ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, ११२. सहिवहोरोदवर्णस्य २३५७ ।

ढ्र-पे

ढ्रलोप में सहि वहि के अ को ओ
होता है ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य ११३. साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे ३५३१

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य ११४. संहितायाम् १०३५ ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य ११५. कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छि-
न्नच्छिद्रस्तुवस्वस्तिकस्य १०३६ ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य ११६. नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ
१०३७ ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य ११७. वनगिर्योः संज्ञायां कोटरकिंशुलकादी- सं-म् १२०
नाम् १०३८ ।

(२३९) कोटर मिश्रक सिध्रक पुरग सारिक
(शारिक) इति कोटरादिः ॥

(२४०) किंशुलुक शाल्वनभ्र (नड) अञ्जन
भञ्जन लोहित कुक्कुट ॥ इति किंशुलुकादिः ॥

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, ११८. वले १०४० ।

सं-म्

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, ११९. मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् १०४१ । मतौ १२०

सं-म्

(२४१) अजिर खदिर पुलिन हंसक (हंस)
कारण्ड (कारण्डव) चक्रवाक ॥ इत्यजिरादिः ॥

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १२०. शरादीनां च १०४२ ॥ ६ ॥

सं-म्, मतौ

(२४२) शर वंश धूम अहि कपि मणि मुनि
शुचि हनु ॥ इति शरादिः ॥

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १२१. इको वहेऽपीलोः १०४३ ।

* अपील्लादीनामिति वाच्यम् ।

(२४३) (वा० ग०) । पीलु दारु रुचि चारु
गम् कम् ॥ इति पील्लादिः ॥

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १२२. उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् १०४४ उ-स्य १२४

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १२३. इकः काशे १०४५.

उ-स्य

इकः १२४

वेद में साढ्यै साढ्वा साढा निपातित
होता है ।

यहाँ से संहितायाम् का अधिकार है ।

विष्ट अष्ट पञ्च मणि भिन्न छिन्न
छिद्र स्तुव स्वस्तिक को छोड़कर
लक्षणवाची शब्दों को दीर्घ हो जाता
है यदि कर्ण उत्तरपद में हो ।

क्वि प्रत्ययान्त नहि वृति वृषि व्यधि
रुचि सहि तनि के पूर्वपद को दीर्घ
होता है संहिता में ।

वन पूर्ववर्ती कोटर आदि तथा गिरि
पूर्ववर्ती किंशुलुक आदि को संज्ञा
में दीर्घ हो जाता है ।

पूर्व को दीर्घ होता है यदि बाद में
वल हो ।

यदि मतुप् बाद में हो अजिर आदि
को छोड़कर बह्वच् को संज्ञा में
दीर्घ हो जाता है ।

मनुप् के यहाँ शर आदि को संज्ञा
में दीर्घ होता है ।

पीलु वर्जित इगन्त पूर्वपद को दीर्घ
होता है यदि बाद में वह हो ।

यदि मनुष्यभिन्न वाच्य हो तो घञ्
परे रहने पर उपसर्ग को विकल्प
से दीर्घ हो जाता है ।

इगन्त उपसर्ग को दीर्घ होता है
यदि बाद में काश हो ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १२४. दस्ति ३०७९ ।

उ-स्य, इकः

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १२५. अष्टनः संज्ञायाम् १०४६ ।

अ-नः १२६

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १२६. छन्दसि च ३५३२ ।

अ-नः * भाषायामष्टनो दीर्घो भवतीति वक्तव्यम् ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १२७. चित्तेः कपि १०४७ ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १२८. विश्वस्य वसुराटोः ३७९ ।

वि-स्य १३०

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १२९. नरे संज्ञायाम् १०४८ ।

वि-स्य

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १३०. मित्रे चर्षी १०४९ ।

वि-स्य

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १३१. मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ मन्त्रे १३२

३५३३ ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १३२. ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ३५३४

मन्त्रे

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १३३. ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ३५३५ ऋचि १३६

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १३४. इकः सुञि ३५३६ ।

ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १३५. द्व्यचोऽतस्तिडः ३५३७ ।

ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य, १३६. निपातस्य च ३५३८ ।

ऋचि

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १३७. अन्येषामपि दृश्यते ३५३९ ।

* शुनोदन्त दंष्ट्राकर्णकुन्दवराहपुच्छपदेषु दीर्घो वाच्यः ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १३८. चौ ४१७ ।

* चौ प्रत्यङ्गस्य प्रतिषेधः ।

उ-दे, दीर्घः, पू-स्य १३९. संप्रसारणस्य १००४ ।

स-स्य ६/४/२

इगन्त उपसर्ग को दीर्घ होता है यदि बाद में कृततकारादि दा हो । संज्ञा में उत्तरपद परे रहते अष्टन् को दीर्घ होता है ।

वेद में उत्तर पद रहते अष्टन् को दीर्घ होता है ।

कप् परे रहते चिति को दीर्घ होता है ।

यदि वसु और राट् उत्तर में हों तो विश्व को दीर्घ होता है ।

संज्ञा में नर परे रहते विश्व को दीर्घ होता है ।

यदि ऋषि अभिधेय हो और मित्र शब्द परे हो तो विश्व को दीर्घ होता है ।

यदि मन्त्र विषय हो और मतुप् परे हो तो अश्व सोम इन्द्रिय विश्वदेव्य को दीर्घ होता है ।

मन्त्र में प्रथमेतर विभक्ति परे रहे तो ओषधि को दीर्घ होता है ।

ऋक् में तु नु घ मक्षु तङ् कु त्र उरुष्य को दीर्घ होता है ।

मन्त्र में सुञ् परे रहते इगन्त को दीर्घ होता है ।

द्व्यच् तिडन्त के अ को दीर्घ होता ऋक् में ।

ऋक् विषय में निपात को दीर्घ होता है ।

अन्य में भी दीर्घ देखा जाता है ।

पूर्वपद को चि परे रहते दीर्घ होता है ।

उत्तर पद परे रहते सम्प्रसारणान्त पूर्वपद को दीर्घ होता है ।

अलुक्ष्णया जातेरिक्तोऽव्ययीभावे कोः

कत्तदिको वहे एकोनविंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

अङ्गाधिकारः (तत्र प्रत्ययविकाराः)

दीर्घः, स-स्य १. अङ्गस्य २०० ।

अङ्गस्य, दीर्घः, स- २. हलः २५५९ ।

स्य

अङ्गस्य, दीर्घः ३. नामि २०१ ।

अङ्गस्य, दीर्घः, नामि ४. न तिसृचतसृ ३०० ।

अङ्गस्य, दीर्घः, ना- ५. छन्दस्युभयथा ३५४० ।

मि, ति-सृ

अङ्गस्य, दीर्घः, ना- ६. नृ च २८३ ।

मि, उ-था

अङ्गस्य, दीर्घः, ना- ७. नोपधायाः ३७० ।

मि

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- ८. सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ २५० ।

याः

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- ९. वा षपूर्वस्य निगमे ३५४१ ।

याः, अ-द्धौ, स-ने

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १०. सान्तमहतः संयोगस्य ३१७ ।

याः, अ-द्धौ, स-ने

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- ११. अपृन्तृचस्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृ प्र-

याः, अ-द्धौ, स-ने शास्तृणाम् २७७ ।

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १२. इन्हन्युषार्यम्णां शौ ३५६ ।

याः, अ-द्धौ,

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १३. सौ च ३५७ ।

याः, अ-द्धौ, इ-णां,

अङ्गस्य ७.४.१७ सप्तम अध्याय परिसमाप्ति तक

अङ्गस्य का अधिकार है ।

अङ्गावयव हलपरक सम्प्रसारणा-
न्ताङ्ग को दीर्घ होता है ।

नामि ७

नाम् (नुट्सहित षष्ठी बहुवचन)
परे रहते अङ्ग को दीर्घ होता है ।

ति-सृ ५

तिसृ चतसृ को नाम् परे रहते दीर्घ
नहीं होता है ।

उ-था ६

तिसृ चतसृ को नाम् के यहाँ वेद
में दीर्घ अदीर्घ दोनों होता है ।

नाम् परे रहते नृ को दीर्घ अदीर्घ
दोनों होता है ।

नो-याः १८

नान्त अङ्ग के उपधा को नाम् के
यहाँ दीर्घ होता है ।

अ-द्धौ १८

स-ने ११

सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान परे रहने
पर नान्त अङ्ग के उपधा को दीर्घ
होता है ।

निगम में षपूर्व नापध अच् को
विकल्प से दीर्घ होता है, सम्बुद्धि
भिन्न सर्वनामस्थान में ।

सान्त संयोग और महत् के नकार
की उपधा को दीर्घ होता है सम्बुद्धि
भिन्न सर्वनामस्थान में ।

अपृ तृन् तृच् स्वसृ नप्तृ नेष्टृ त्वष्टृ
क्षत्तृ होतृ पोतृ प्रशास्तृ के उपधा
को दीर्घ होता है सम्बुद्धिभिन्न सर्व-
नामस्थान परे रहने पर ।

इ-णां १३

इन् हन् पूषन् अर्यमन् की उपधा
को शी के यहाँ दीर्घ होता है ।

सौ १४

सम्बुद्धिभिन्न सु के यहाँ इन् हन्
पूषन् अर्यमन् की उपधा को दीर्घ
होता है ।

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १४. अत्वसन्तस्य चाधातोः ४२५ ।

याः, अ-द्धौ, सौ

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १५. अनुनासिकस्य क्विङ्गलोः किङिति २६६६ । क्वि-ति २१
याः

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १६. अज्झनगमां सनि २६१४ ।

सनि १७

याः, क्वि-ति * गमेरिडादेशस्येति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, दीर्घः, नो- १७. तनोतेर्विभाषा २६२२ ।

विभाषा १८

याः, क्वि-ति, सनि

अङ्गस्य, दीर्घः, नो-

याः, क्वि-ति, वि- १८. क्रमश्च क्त्वि ३३२९ ।

भाषा

अङ्गस्य, क्वि-ति १९. च्छ्वोः शूडनुनासिके च २५६१ ।

च्छ्वोः २१

शू-के २०

अङ्गस्य, शू-के, २०. ज्वरत्वरस्त्रिव्यविम्वामुपधायाश्च २६४४

क्वि-ति, च्छ्वोः

॥ १ ॥

अङ्गस्य, क्वि-ति, २१. राल्लोपः २६५५ ।

च्छ्वोः

अङ्गस्य

२२. असिद्धवदत्राभात् २१८३ ।

* वुग्युटावुवङ्यणोः सिद्धौ वक्तव्यौ ।

अङ्गस्य

२३. शनान्न लोपः २५४४ ।

नलोपः ३३

अङ्गस्य, नलोपः

२४. अनिदितां हल उपधायाः किङिति ४१५ उ-याः ३४

* अनिदितां नलोपे लङ्गिकम्योरुपतापशरीर-
विकारयोरुपसंख्यानम् ।

* रञ्जेणौ मृगरमण उपसंख्यानम् ।

अङ्गस्य, नलोपः, २५. दंशसञ्जस्वञ्जां शपि २३९६ ।

शपि २६

उ-याः

अङ्गस्य, नलोपः, २६. रञ्जेश्च २३९७ ।

रञ्जेश्च २७

उ-याः, शपि

अधातु अत्वन्त असन्त के उपधा को सम्बुद्धिभिन्न सु के यहाँ दीर्घ होता है ।

क्वि और झलादि कित् डित् के यहाँ अनुनासिकान्त अङ्ग की उपधा को दीर्घ होता है ।

अजन्त अङ्ग और हन् गम् को दीर्घ होता है यदि सन् तथा झलादि कित् डित् पर में हो ।

सन् और झलादि कित् डित् में तनु (धातु-) को विकल्प से दीर्घ होता है ।

क्रम के उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है यदि पर में क्त्वा और झलादि कित् डित् हो ।

छ् के श् और व् को ऊठ होता है, यदि बाद में अनुनासिक प्रत्यय, क्वि और झलादि कित् डित् हो ।

ज्वर त्वर स्त्रिवि अव मव के व और उपधा के स्थान में ऊठ होता है यदि बाद में क्वि अनुनासिक झलादि कित् डित् हो ।

रेफ के बाद स्थित च्छ्व् का लोप होता है क्वि झलादि कित् डित् के यहाँ ।

पादपरिसमाप्ति तक समानाश्रय विधि में पूर्वविधि असिद्धवत् होगी । शनम् से परे न का लोप होता है ।

अनिदित हलन्त के उपधा न का लोप होता है यदि कित् डित् पर में हो ।

यदि शप् पर में हो तो दंश सञ्ज स्वञ्ज के उपधा न का लोप होता है । रञ्ज के उपधा न का लोप होता है शप् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, नलोपः, २७. घञि च भावकरणयोः ३१८७ ।	अञि २९	भावकरणवाची घञ् परे हो तो रञ्ज के उपधा न का लोप् होता है ।
उ-याः, रञ्जे:		यदि जव अभिधेय हो तो घञ् के यहाँ स्यद निपातित होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, २८. स्यदो जवे ३१८८ ।		अवोद एध ओद्य प्रश्रथ हिमश्रथ निपातित होते हैं ।
उ-याः, घञि		पूजा में अञ्चति के उधधा न का लोप नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, २९. अवोदैधौद्यप्रश्रथहिमश्रथाः ३१८९ ।		स्कन्द स्यन्द के न का लोप त्वा में नहीं होता है ।
उ-याः, घञि		क्त्वा परे रहने पर जान्त अङ्गों का तथा नश् के न का लोप विकल्पेन नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नलोपः, ३०. नाञ्जेः पूजायाम् ४२४ ।	न ३३	चिण् के यहाँ भञ्ज का न लोप विकल्प से नहीं होता है ।
उ-याः		
अङ्गस्य, नलोपः, ३१. क्त्वि स्कन्दिस्यन्दोः ३३२१ ।	क्त्वि ३२	
उ-याः, न		
अङ्गस्य, नलोपः, ३२. जान्तनशां विभाषा ३३३० ।	विभाषा ३३	
उ-याः, न, क्त्वि		
अङ्गस्य, नलोपः, ३३. भञ्जेश्च चिणि २७६४ ।		
उ-याः, न, विभाषा		
अङ्गस्य, उ-याः ३४. शास इदङ्हलोः २४८६ ।	शास ३५	शास के उपधा को इ होता है अङ् हलादि कित् डित् के यहाँ ।
* क्वौ च शास इत्वं भवतीति वक्तव्यम् ।		
* आङ्पूर्वाच्च ।		
अङ्गस्य, शास ३५. शा हौ २४८७ ।	हौ ३६	शास् को हि के यहाँ शा हो जाता है ।
अङ्गस्य, हौ ३६. हन्तेर्जः २४३१ ।		हि के यहाँ हन् को ज हो जाता है ।
अङ्गस्य ३७. अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि किङिति २४२८ ।	अनु-म् ३९ अनु-पः ४०	अनुदात्तोपदेश अङ्गों तथा वनति तनोति आदि के अनुनासिक का लोप होता है झलादि कित् डित् के यहाँ ।
अङ्गस्य, अनु-म्, ३८. वा ल्यपि ३३३४ ।		ल्यप् के यहाँ उपरिलिखित के अनुनासिक का लोप विकल्प से होता है ।
अनु-पः		
अङ्गस्य, अनु-म्, ३९. न क्तिचि दीर्घश्च ३३१४ ।		क्तिच् परे रहने पर उपरिलिखित का अनुनासिक लोप और दीर्घ नहीं होता है ।
अनु-पः		
अङ्गस्य, अनु-पः ४०. गम् कौ २९८६ ।	॥ २ ॥	क्वि परे रहने पर गम् का अनुनासिक लोप होता है ।
* गमादीनामिति वक्तव्यम् ।		
* ऊङ् च गमादीनामिति वक्तव्यम् ।		

अङ्गस्य	४१. विड्वनोरनुनासिकस्यात् २९८२ ।	आत् ४५	अनुनासिकान्त अङ्ग को आकार आदेश होता है यदि विट् और वन् बाद में हो ।
अङ्गस्य, आत्	४२. जनसनखनां सञ्जालोः २५०४ ।	ज-नां ४३	जन सन खन को आकार आदेश होता है यदि बाद में सन् झलादि कित् डित् हो ।
अङ्गस्य, आत्, ज- नां	४३. ये विभाषा २३१९ ।	विभाषा ४४	जन सन खन् को विकल्प से आ होता है यदि बाद में यकारादि कित् डित् प्रत्यय हो ।
अङ्गस्य, आत्, वि- भाषा	४४. तनोतेर्यकि २७५९ ।		यक् के यहाँ तनु को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, आत्	४५. सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ३३१५ ।		क्तिच् के यहाँ सन् को विकल्प से आकार आदेश और लोप होता है ।
अङ्गस्य	४६. आर्धधातुके २३०७ ।	आ-के ६८	यहाँ से आर्धधातुके का अधिकार है ।
अङ्गस्य, आ-के	४७. भ्रस्जो रोपधयो रमन्यतरस्याम् २५३५		भ्रस्ज् के रेफ और उपभा के स्थान में विकल्प से रम् का आगम होता है आर्धधातुक में ।
अङ्गस्य, आ-के	४८. अतो लोपः २३०८ । * ण्यत्लोपावियङ्यण्गुणवृद्धिदीर्घेभ्यः पूर्ववि- प्रतिषेधेन ।	लोपः ५४	आर्धधातुक में अकारान्त अङ्ग का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः	४९. यस्य हलः २६३१ ।	हलः ५०	आर्धधातुक में हल् उत्तरवर्ती य का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, हलः	५०. क्यस्य विभाषा २६६० ।		हल् उत्तरवर्ती क्य का आर्धधातुक में विकल्प से लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः	५१. णेरनिटि २३१३ ।	णेः ५७	अनिडादि आर्धधातुक में णि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	५२. निष्ठायां सेटि ३०५७ ।		सेट् आर्धधातुक में निष्ठा में णि का लोप होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	५३. जनिता मन्त्रे ३५४२ ।		मन्त्रविषय में जनिता निपातित होता है ।
अङ्गस्य, आ-के, लोपः, णेः	५४. शमिता यज्ञे ३५४३ ।		यज्ञ कर्म में शमिता निपातित होता है ।

अङ्गस्य, आ-के, णे: ५५. अयामन्ताल्वाय्येतिन्वष्णुषु २३११ । अय् ५७

आम् अन्त आलु आय्य इत्नु इष्णु परे रहने पर णि को अय् आदेश होता है ।

अङ्गस्य, आ-के, ५६. ल्यपि लघुपूर्वात् ३३३६ । ल्यपि ५९

लघुपूर्व धातु से परे णि को अय् आदेश ल्यप् में होता है ।

णे:, अय्

अङ्गस्य, आ-के, ५७. विभाषाऽऽपः ३३३७ ।

ल्यप् में आप् उत्तरवर्ती णि को विकल्प से अय् होता है ।

णे:, अय्, ल्यपि

अङ्गस्य, आ-के, ५८. युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ३५४४ । दीर्घः ६१

वेद में ल्यप् के यहाँ यु प्लु को दीर्घ होता है ।

ल्यपि

अङ्गस्य, आ-के, ५९. क्षियः ३३३८ । क्षियः ६१

ल्यप् में क्षि को दीर्घ होता है ।

दीर्घः, ल्यपि

अङ्गस्य, आ-के, ६०. निष्ठायामण्यदर्थे ३०१४ ॥ ३ ॥ नि-म्

ण्यदर्थ (भावकर्म) से अन्यत्र (कर्ता) में क्षि को दीर्घ होता है निष्ठा में ।

दीर्घः, क्षियः

अ-र्थे ६१

अङ्गस्य, आ-के, ६१. वाऽऽक्रोशदैन्ययोः ३०८१ ।

आक्रोश और दैन्य गम्यमान रहने पर अण्यदर्थ निष्ठा में क्षि को विकल्प से दीर्घ होता है ।

दीर्घः, क्षियः, नि-

म्, अ-र्थे

अङ्गस्य, आ-के ६२. स्यसिचसीयुदतासिषु भावकर्मणोरुप-
देशेऽज्जनग्रहदृशां वा चिण्वदिद् च ।

अजन्त अङ्ग, हन् ग्रह दृश को विकल्प से चिण्वत् कार्य तथा इट् होता है यदि भावकर्मविषयक स्य सिच् सीचुद् तास् हो ।

२७५७ ।

अङ्गस्य, आ-के ६३. दीङो युडचि किङिति २५०७ । अचि ६४

अजादि कित् डित् प्रत्यय परे रहने पर दीङ् को युट् का आगम होता है ।

क्-ति ६८

अङ्गस्य, आ-के, ६४. आतो लोप इटि च २३७२ । आतः ६५

इट् अजादि कित् डित् परे रहने पर आकारान्त अङ्ग का लोप होता है ।

क्-ति, अचि

अङ्गस्य, आ-के, ६५. ईद्यति २८४३ । ईत् ६६

यत् परे रहने पर आकारान्त अङ्ग को ईकार होता है ।

क्-ति, आतः

अङ्गस्य, आ-के, ६६. घुमास्थागापाजहातिसां हलि २४६२ । घु-सां ६९

घु संज्ञक मा स्था गा पा जहाति सा कों ई आदेश होता है हलादि कित् डित् परे रहने पर ।

क्-ति, ईत्

अङ्गस्य, आ-के, ६७. एलिङि २३७४ । एलिङि ६८

उपरिलिखित को लिङ् के यहाँ ए-कार आदेश होता है ।

क्-ति, घु-सां

अङ्गस्य, आ-के, ६८. वाऽन्यस्य संयोगादेः २३७८ ।
 क्-ति, घु-सां, ए-
 लिङि

अङ्गस्य, घु-सां ६९. न ल्यपि ३३३५ ।

ल्यपि ७०

अङ्गस्य, ल्यपि ७०. मयतेरिदन्यतरस्याम् ३३१८ ।

अङ्गस्य ७१. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः २२०६ ।

लु-ट् ७५
 उदात्तः ७२

अङ्गस्य, लु-ट्, उ- ७२. आडजादीनाम् २२५४ ।
 दात्तः

आट् ७५

अङ्गस्य लु-ट्, आट् ७३. छन्दस्यपि दृश्यते ३५४५ ।

अङ्गस्य लु-ट्, आट् ७४. न माङ्योगे २२२८ ।

अङ्गस्य लु-ट्, आट् ७५. बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि ३५४६ । ब-सि ७६

अङ्गस्य, ब-सि ७६. इरयो रे ३५४७ ।

अङ्गस्य ७७. अचि णुधातुभ्रुवां य्वोरियङ्वडौ २७१ अचि १००
 * तन्वादीनां बहुलं छन्दसि । य्वोः ७८
 इ-डौ ८०

अङ्गस्य, अचि, इ- ७८. अभ्यासस्यासवर्णे २२९० ।
 डौ, य्वोः

अङ्गस्य, अचि, इ- ७९. स्त्रियाः ३०१ ।
 डौ

स्त्रियाः ८०

अङ्गस्य, अचि, इ- ८०. वाऽम्शासोः ३०२ ॥ ४ ॥
 डौ, स्त्रियाः

अङ्गस्य, अचि ८१. इणो यण् २४५५ ।

यण् ८७

घु आदि से अतिरिक्त संयोगादि
 आकारान्त को लिङ् पर रहने पर
 एकार आदेश विकल्प से होता
 है ।

घु आदि को जो कहा गया है वह
 ल्यप् के यहाँ नहीं होता है ।
 मेङ् को इकारादेश विकल्प से
 होता है ।

लुङ् लङ् लृङ् के परे रहने पर
 अङ्ग को अट् आगम होता है और
 वह उदात्त होता है ।

लुङ् लङ् लृङ् पर रहते अजादि
 को आट् आगम होता है और वह
 उदात्त होता है ।

वेद में विहित स्थल के अतिरिक्त
 भी अन्यत्र आट् होता है ।

लुङादि में होने वाला अट् आट्
 माङ् के योग में नहीं होता है ।

वेद में अमाङ्योग में भी बहुलतया
 अडादि नहीं होते हैं (और माङ्
 के योग में भी हो जाते हैं) ।

वेद में इरे को प्रायः रे हो जाता
 है ।

अच् परे रहने पर णुप्रत्ययान्त,
 इवर्णोवर्णान्त धातु तथा भ्रू को
 क्रमशः इयङ् उवङ् होते हैं ।

असवर्ण अच् परे रहते अभ्यास
 के इवर्ण उवर्ण को इयङ् उवङ्
 हो जाता है ।

अजादि प्रत्यय परे रहते स्त्री शब्द
 को इयङ् आदेश होता है ।

अम्शास् परे रहते स्त्री को विकल्प
 से इयङ् होता है ।

इण् अङ्ग को यण् आदेश होता है
 यदि पर में अच् हो ।

अङ्गस्य, अचि, यण् ८२. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य २७२ ।
* गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण् नेष्यते ।

अङ्गस्य, अचि, य- ८३. ओः सुपि २८१ ।
ण्, अने-स्य

अङ्गस्य, अचि, य- ८४. वर्षाभ्वश्च २८२ ।
ण्, अने-स्य, सुपि * दृक्करपुनःपूर्वस्य भुवो यण्वक्तव्यः ।

अङ्गस्य, अचि, य- ८५. न भूसुधियोः २७३ ।
ण्, अने-स्य, सुपि
अङ्गस्य अचि यण् ८६. छन्दस्युभयथा ३५४८ ।
अने-स्य न-योः सुपि

अङ्गस्य, अचि, य- ८७. हुश्नुवोः सार्वधातुके २३८७ ।
ण्, अने-स्य

अङ्गस्य, अचि ८८. भुवो वुग्लुङ्लिटोः २१७४ ।

अङ्गस्य, अचि ८९. ऊदुपधाया गोहः २३६४ ।

अङ्गस्य, अचि, ऊ- ९०. दोषो णौ २६०४ ।

त, उ-याः
अङ्गस्य, अचि, उ- ९१. वा चित्तविरागे २६०५ ।
याः, णौ, दोषः ऊत्

अङ्गस्य, अचि, उ- ९२. मितां ह्रस्वः २५६८ ।

याः, णौ
अङ्गस्य, अचि, उ- ९३. चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् २७६२ ।
याः, मितां, णौ

अङ्गस्य, अचि, उ- ९४. खचि ह्रस्वः २९५५ ।

याः, णौ
अङ्गस्य, अचि, ह- ९५. ह्रादो निष्ठायाम् ३०७३ ।
स्वः

अङ्गस्य, अचि, ह- ९६. छादेर्घेऽह्युपसर्गस्य ३२९७ ।
स्वः

अने-स्य ८७

सुपि ८६

न-योः ८६

ऊत् ९१

उ-याः ९४

दोषः ९१

णौ ९४

मितां ९३

ह्रस्वः ९७

छादेः ९७

असंयोग पूर्व अनेकाच् धात्वङ्ग को
यण् होता है अच् परे रहने पर ।

असंयोगपूर्व अनेकाच् उवर्णान्त
धात्वङ्ग को यण् होता है अजादि
सुप् परे रहते ।

अजादि सुप् परे रहते वर्षाभू को
भी यणादेश होता है ।

भू और सुधी को यणादेश नहीं
होता है अजादि सुप् परे रहते ।

वेद में भू और सुधी का यणादेश
विकल्प से होता है अजादि सुप्
परे रहते ।

हु श्नु प्रत्ययान्त अनेकाच् अङ्ग
असंयोगपूर्व उवर्ण को यण् होता
है अजादि सार्वधातुक में ।

लुङ् लिट् में अजादि प्रत्यय परे
रहते भू को वुक् आगम होता है ।
अजादि प्रत्यय परे रहते गोह के
उपधा को ऊ होता है ।

णि परे रहते दोष के उपधा को ऊ
होता है ।

चित्त विरागार्थक दोष के उपधा को
विकल्प से ऊ होता है यदि णि
बाद में हो ।

मित् धातुओं की उपधा को ह्रस्व
होता है यदि णि परे हो ।

मित् अङ्ग की उपधा को विकल्प
से दीर्घ होता है यदि चिण्-णमुल्
णि परे हो ।

खच् परक णि—परे रहने पर उपधा
को ह्रस्व होता है ।

निष्ठा परे रहते ह्राद की उपधा को
ह्रस्व होता है ।

द्वि प्रभृति उपसर्गहीन छादि की उपधा
को ह्रस्व होता है यदि पर में घ हो ।

अङ्गस्य, अचि, ह- ९७. इस्मन्त्रन्विषु च २९८५ ।
स्वः, छादे:

अङ्गस्य, अचि ९८. गमहनजनखनघसां लोपः किङ्कत्यनङि लोपः १००
२३६३ । क्-ति १२६

अङ्गस्य, अचि, क्- ९९. तनिपत्योश्छन्दसि ३५४९ । छन्दसि १००
ति, लोपः

अङ्गस्य, अचि, क्- १००. घसिभसोर्हलि च ३५५० ।। ५ ।। हलि १०१
ति, लोपः, छन्दसि

अङ्गस्य, क्-ति, ह- १०१. हुङ्गलभ्यो हेर्धिः २४२५ । हेर्धिः १०३
लि

अङ्गस्य, क्-ति, हे- १०२. श्रुशृणुपृकृवृध्यश्छन्दसि ३५५१ । छन्दसि १०३
धिः

अङ्गस्य, क्-ति, हे- १०३. अङ्कितश्च ३५५३ ।
धिः, छन्दसि

अङ्गस्य, क्-ति १०४. चिणो लुक् २३२९ । लुक् १०६

अङ्गस्य, क्-ति, लु- १०५. अतो हेः २२०२ । हेः १०६
क्

अङ्गस्य, क्-ति, लु- १०६. उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् २३३४ । उतः ११०
क्, हेः प्र-त् ११०
अ-त् १०७

अङ्गस्य, उतः, प्र- १०७. लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः २३३३ । लोपः १०९
त्, क्-ति, अ-त् म्वोः १०८

अङ्गस्य, उतः, प्र- १०८. नित्यं करोतेः २५४८ । नित्यं १०९
त्, क्-ति, लोपः क-तेः ११०
म्वोः

अङ्गस्य, उतः, प्र- १०९. ये च २५४९ ।

त्, क्-ति, लोपः,
नित्यं, क-तेः

अङ्गस्य, उतः, प्र- ११०. अत उत्सार्वधातुके २४६७ । सा-के ११९
त्, क्-ति, क-तेः

इस् मन् वन् क्वि पर में हों तो
छादि की उपधा को ह्रस्व होता
है ।

अङ्विहीन अजादि कित् डित् परे
रहने पर गम हन जन खन घस
की उपधा का लोप होता है ।

अजादि कित् डित् परे रहने पर
वेद में तन और पत की उपधा
का लोप होता है ।

वेद में घस भस की उपधा का
लोप होता है अजादि हलादि कित्
डित् प्रत्यय परे रहने पर ।

हु और झलन्त से परे हलादि हि
को धि आदेश होता है

वेद में श्रु.शृणु पृ कृ वृ से उत्तर
हि को धि होता है ।

अङित् से परे हि को धि होता है
वेद में ।

चिण् उत्तरवर्ती प्रत्यय का लुक्
होता है ।

अकारान्त अङ्ग उत्तरवर्ती हि का
लुक् होता है ।

असंयोग पूर्व उकारान्त प्रत्यय
उत्तरवर्ती हि का लुक् होता है ।

असंयोग पूर्व उकारः प्रत्ययान्त अङ्ग
का विकल्प से लोप होता है, यदि
म व पर में हों ।

व म प्रत्यय यदि पर में हों तो कृ
धातु से हुये उ का नित्य लोप
होता है ।

यकारादि प्रत्यय परे रहने पर कृ
से हुये उ प्रत्यय का नित्य लोप
होता है ।

उकार प्रत्ययान्त कृ के अ के स्थान
में उ होता है सार्वधातुक में ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- १११. श्वसोरल्लोपः २४६९ ।
ति

अल्-पः ११२ श्ना और अस् के अ का लोप होता है यदि बाद में सार्वधातुक कित् डित् हो ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११२. श्नाभ्यस्तयोरातः २४८३ ।
ति, अल्-पः

आतः ११४ सार्वधातुक कित् डित् परे रहने पर श्ना-योः ११३ श्ना और अभ्यस्त के आ का लोप होता है ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११३. ई हल्यघोः २४९७ ।
ति, आतः, श्ना-योः

हलि ११६ घु भिन्न श्नान्त अङ्ग और अभ्यस्त के आ को ईकार आदेश सार्वधातुक कित् डित् परे रहने पर होता है । सार्वधातुक कित् डित् परे रहने पर दरिद्रा को इकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११४. इहरिद्रस्य २४८२ ।
ति, आतः, हलि * दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते आतो लोपो वाच्यः । लुङि वा सनि ण्वुलि ल्युटि च नं ।

इत् ११६

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११५. भियोऽन्यतरस्याम् २४९२ ।
ति, इत्, हलि

अ-म् ११७

भी को विकल्प से इकार आदेश होता है यदि पर में हलादि कित् डित् सार्वधातुक हो ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११६. जहातेश्च २४९८ ।
ति, इत्, हलि, अ-म्

ज-ते ११८

जहाति को विकल्प से इकार आदेश होता है हलादि कित् डित् सार्वधातुक परे रहने पर विकल्प से । हि परे रहने पर जहाति को विकल्प से आ इ ई होता है ।

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११७. आ च हौ २४९९ ।
ति, ज-ते, अ-म्

अङ्गस्य, सा-के, क्- ११८. लोपो यि २५०० ।
ति, ज-ते:

जहाति के आ का लोप होता है यदि बाद में यकारादि कित् डित् सार्वधातुक हो ।

अङ्गस्य, सा-के ११९. घ्वसोरेन्धावभ्यासलोपश्च २४७१ ।

एत् १२६
अ-पः १२६

हि परे रहने पर घु संज्ञकों तथा अस् को एकार आदेश और अभ्यास का लोप होता है ।

अङ्गस्य, क्-ति, ए- १२०. अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि २२६० अतः १२६
त्, अ-पः ॥ ६ ॥ लिटि १२६

ए-देः १२१

आदेशादिरहित धात्ववयव के असंयुक्तहल्मध्येस्थ अकार को एकार हो जाता है तथा अभ्यास का लोप भी होता है, यदि कित् लिट् पर में हो ।

* यजिवप्योश्च ।

* दम्भेश्च ।

अङ्गस्य, अतः, १२१. थलि च सेटि २२६१ ।
लिटि, क्-ति, ए-
देः ए-त्, अ-पः

थलि सेटि
१२६

यदि सेट् थल् बाद में हो तो आदेशादिरहित धात्ववयव के असंयुक्तहल्मध्येस्थ अ को ए तथा अभ्यास का लोप होता है ।

अङ्गस्य, अतः, लि- १२२. तृफलभजत्रपश्च २३०१ ।
 टि, क्-ति, थलि * श्रन्येति वक्तव्यम् ।
 सेटि, अ-पः

अङ्गस्य, अतः, लि- १२३. राधो हिंसायाम् २५३२ ।
 टि, क्-ति, थलि
 सेटि, अ-पः

अङ्गस्य, अतः, लि- १२४. वा जृभ्रमुत्रसाम् २३५६ ।
 टि, क्-ति, थलि
 सेटि, अ-पः

अङ्गस्य, अतः, लि- १२५. फणां च सप्तानाम् २३५४ ।
 टि, क्-ति, थलि
 सेटि, अ-पः, वा

अङ्गस्य, अतः, १२६. न शसददवादिगुणानाम् २२६३ ।
 लिटि, क्-ति, थलि
 सेटि, अ-पः

अङ्गस्य १२७. अर्वणस्त्रसावनजः ३६४ ।

तृ १२८

अङ्गस्य, तृ १२८. मघवा बहुलम् ३६० ।

अङ्गस्य १२९. भस्य २३३ ।

भस्य १७५

अङ्गस्य, भस्य १३०. पादः पत् ४१४ ।

अर्वन् अङ्ग को त् आदेश होता है
 यदि अर्वन् नञ् रहित हो तथा सु
 विभक्ति परे हो ।

मघवन् को तृ आदेश विकल्प से
 होता है ।

पादपरिसमाप्ति तक भस्य का
 अधिकार है ।

पाद अन्तवाले भ संज्ञक पाद को
 पत् होता है ।

वस्वन्त भ को सम्प्रसारण होता है ।

वाह अन्त वाले भ को ऊट्
 (सम्प्रसारण) होता है ।

अतद्धित प्रत्यय परे रहने पर श्वन्
 युवन् मघवन् को सम्प्रसारण होता
 है ।

अन् अन्तवाले भ के अकार का
 लोप होता है ।

अङ्गस्य, भस्य १३१. वसोः संप्रसारणम् ४३५ ।

सं-म् १३३

अङ्गस्य, भस्य, सं- १३२. वाह ऊट् ३२९ ।

म्
 अङ्गस्य, भस्य, सं- १३३. श्वयुवमघोनामतद्धिते ३६२ ।

म्

अङ्गस्य, भस्य १३४. अल्लोपोऽनः २३४ ।

अनः १३७

अ-पः १४५

अङ्गस्य, भस्य, अ- १३५. षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ११६० ।

पः, अनः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १३६. विभाषा डिश्योः २३७ ।

पः, अनः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १३७. न संयोगाद्धमन्तात् ३५५ ।

पः, अनः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १३८. अचः ४१६ ।

पः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १३९. उद ईत् ४२० ।

पः, अचः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४०. आतो घातोः २४० ॥ ७ ॥

पः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४१. मन्त्रेष्वड्यादेरात्मनः ३५५४ ।

पः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४२. ति विंशतेर्दिति ८४४ ।

पः

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४३. टेः ३१६ ।

पः, दिति

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४४. नस्तद्धिते ६७९ ।

पः, टेः

* नान्तस्य टिलोपे सङ्गह्यचारिपीठसर्पिकलापि-
कौथुमितैतिलिजाजंगलिशिलालिशिखण्डि-
सूकरसद्यसुपर्वणामुपसंख्यानं कर्तव्यम् ।

* अश्मनो विकारे टिलोपो वक्तव्यः ।

* अव्ययानां भमात्रे टिलोपः ।

* चर्मणः कोशे ।

* शुनः संकोचे ।

अङ्गस्य, भस्य, अ- १४५. अहृष्टखोरेव ७८९ ।

पः, टेः, तद्धिते

अङ्गस्य, भस्य, त- १४६. ओर्गुणः ८४७ ।

द्धिते

अङ्गस्य, भस्य, १४७. ङे लोपोऽकद्वाः ११४२ ।

ओः, तद्धिते

अङ्गस्य, भस्य, लो- १४८. यस्येति च ३११ ।

पः, तद्धिते

* औङः श्यां प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

यदि पर में अण् हो तो षपूर्व अन् हन् तथा धृतराजन् के अ का लोप होता है ।

डी और शी परे रहने पर अन् के अ का विकल्प से लोप होता है । वकारमकारान्त संयोग से परे वर्तमान अन् के अ का लोप नहीं होता है ।

लुप्तनकार अञ्चत्यन्त भ के अ का लोप होता है ।

उत्पूर्वक अञ्चत्यन्त अ को ई होता है ।

आकारान्त धात्वन्त शब्दों के भ का लोप होता है ।

मन्त्रों में आङ् परे रहने पर आत्मन् के आदि का लोप होता है ।

डित् प्रत्यय परे रहने भ संज्ञक विंशति के ति का लोप होता है ।

डित् परे रहने पर टि का लोप होता है ।

नकारान्त भ के टिका लोप होता है तद्धित परे रहने पर ।

ट ख परे रहने पर अहन् के टि का लोप होता है ।

तद्धित परे रहने पर उकारान्त भ को गुण होता है ।

ढ परे रहने पर कद्रुभिन्न उवर्णान्त भ का लोप होता है ।

ईकार तद्धित परे रहने पर इका-रोकारान्त भ का लोप होता है ।

अचः १३९

दिति १४३

टेः १४५

तद्धिते १४९

ओः १४७

लोपः १५५

ईति १५०

अङ्गस्य, भस्य, लो- १४९. सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः यः १५२
पः, ईति, तद्धिते ४९९ । उ-याः १५०

* मत्स्यास्य ड्याम् ।

* सूर्यागस्त्ययोश्छे च ड्यां च ।

* तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यलोप इति वाच्यम् ।

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५०. हलस्तद्धितस्य ४७२ । हलः १५२
पः, ईति, यः, उ-
याः

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५१. आपत्यस्य च तद्धितेऽनाति १०८२ । आ-स्य १५२
पः, यः, हलः त-ते १५३

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५२. क्यच्च्योश्च २११९ ।

पः, हलः, आ-स्य,
यः, त-ते

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५३. बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् १३११ ।
पः, त-ते

(२४४) बिल्व वेणु वेत्र वेतस तृण इक्षु काष्ठ
कपोत क्रुञ्चा तक्षन्—नडाद्यन्तर्गणो बिल्वादिः ।।
छविधानार्थं ये नडादयस्ते यदा छसंनियोगे कृत-
कुगागमास्ते ॥ इति बिल्वकादयः ।।

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५४. तुरिष्ठेमेयः सु २००८ । इ-स्सु १६३

पः

अङ्गस्य, भस्य, लो- १५५. टेः १७८६ ।

पः, इ-स्सु

* णाविष्ठवत् प्रातिपदिकस्य कार्यं भवतीति
वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १५६. स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादि-
स्सु परं पूर्वस्य च गुणः २०१५ ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १५७. प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदी-
स्सु र्घबृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बहिगर्वर्षित्र-
ब्धाधिवृन्दाः २०१६ ।

सूर्य तिष्य अगस्त्य मत्स्य के उपधा
य का लोप होता है ईकार तद्धित
परे रहने पर ।

ई परे रहने पर हलुत्तरवर्ती तद्धित
यकार उपधा का लोप होता है ।

अनाकार तद्धित परे रहने पर
हलुत्तरवर्ती आपत्य य का लोप
होता है ।

क्य च्वि परे रहने पर हलुत्तरवर्ती
आपत्य यकार का लोप होता है ।

कृत कुगागम बिल्व आदि के
उत्तरवर्ती छ और भ का लुक् होता
है यदि पर में तद्धित हो ।

इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् परे रहने
पर तृ का लोप होता है ।

भ के टि का लोप होता है यदि
पर में इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् हो ।

इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् परे रहने
पर स्थूल दूर युवन् ह्रस्व क्षिप्र
क्षुद्र के यणादि पर का लोप होता
है तथा पूर्व को गुण होता है ।

प्रिय स्थिर स्फिर उरु बहुल गुरु
वृद्ध तृप्र दीर्घ वृन्दारक को क्रमशः
प्र स्थ स्फ वर् बहि गर् वर्षि त्रप्
द्राधि वृन्द आदेश होते हैं यदि
पर में इष्ठन् इमनिच् ईयसुन् हो ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १५८. बहोर्लोपो भू च बहोः २०१७ ।
स्सु

बहोः १५९
भू-होः १५९

बहु से परे इष्टन् इमनिच् ईयसुन् का लोप होता है तथा बहु को भू आदेश होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, ब- १५९. इष्टस्य यिट् च २०१८ ।
होः, इ-स्सु, भू-होः

बहु से परे (इष्टन् का लोप, बहु को भू आदेश) तथा यिट् का आगम होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १६०. ज्यादादीयसः २०१२ । । ८ । ।
स्सु

ज्या उत्तरवर्ती ईयस् को आकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १६१. र ऋतो हलादेर्लघोः १७८५ ।
स्सु

र-तो १६२

हलादि लघु ऋकार को र आदेश होता है यदि पर में इष्टन् इमनिच् ईयसुन् हो ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १६२. विभाषर्जोश्छन्दसि ३५५५ ।
स्सु, र-तो

वेद में इष्टन् आदि परे रहने पर ऋजु के ऋ को विकल्प से रेफ होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, इ- १६३. प्रकृत्यैकाच् २०१० ।
स्सु

प्रकृत्या १७०

भसंज्ञक एकाच् को प्रकृतिभाव होता है यदि पर में इष्टन् आदि हों ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६४. इनण्यनपत्ये १२४५ ।
कृत्या

इन् १६६

अनपत्यार्थ अण् परे रहने पर इन्नन्त को प्रकृतिभाव होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६५. गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च १२७५
कृत्या, अणि, इन्

अणि १७१

गाथिन् विदथिन् केशिन् गणिन् पणिन् को प्रकृतिभाव होता है । यदि पर में अण् हो, अपत्यार्थ ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६६. संयोगादिश्च ११५६ ।
कृत्या, अणि, इन्

संयोगादि इन् को प्रकृतिभाव होता अण् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६७. अन् ११५५ ।
कृत्या, अणि

अन् १७०

(अपत्य-अनपत्य) अन् को प्रकृतिभाव होता है यदि अण् परे हो ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६८. ये चाभावकर्मणोः ११५४ ।
कृत्या, अणि, अन्

यादि तद्धित परे रहने पर अन् को प्रकृतिभाव होता है, भावकर्म में नहीं ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १६९. आत्माध्वानौ खे १६७१ ।
कृत्या, अणि, अन्

ख प्रत्यय परे रहने पर आत्मन् अध्वन् को प्रकृतिभाव होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, प्र- १७०. न मपूर्वोऽपत्येऽवर्मणः ११५७ ।
कृत्या, अणि, अन्

अपत्यार्थक अण् परे रहने पर वर्मन्-भिन्न मपूर्व अन् को प्रकृतिभाव नहीं होता है ।

अङ्गस्य, भस्य, अ- १७१. ब्राह्मोऽजातौ ११५८ ।
णि

अनपत्य अण् परे रहने पर ब्राह्म निपातित होता है ।

- अङ्गस्य, भस्य १७२. कार्मस्ताच्छील्ये १६१३ ।
- अङ्गस्य, भस्य १७३. औक्षमनपत्ये ११५९ ।
- अङ्गस्य, भस्य १७४. दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्वा-
शिनेय वाशिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसार-
वैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ११४५ ।
- अङ्गस्य, भस्य १७५. ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्मयानि
छन्दसि ३५५६ ।
अङ्गस्य राल्लोपो विड्वनोर्वाक्रोशेणो यणहु-
झल्भ्यस्थलि च मन्त्रेषु र ऋतः पञ्चदश ।।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः
अध्यायश्च ।

ताच्छील्य अर्थ में कार्म निपातित होता है ।

अनपत्य अर्थ में औक्ष निपातित होता है ।

दाण्डिनायन हास्तिनायन आथ-
र्वणिक जैह्वाशिनेय वाशिनायनि
भ्रौणहत्य धैवत्य सारव ऐक्ष्वाक
मैत्रेय हिरण्मय निपातित होते हैं ।

वेद में ऋत्व्य वास्त्व्य वास्त्व माध्वी
हिरण्मय निपातित होते हैं ।

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

अङ्गाधिकारे प्रात्ययिकविकारः

अङ्गस्य	१. युवोरनाकौ १२४७ ।		अनुनासिक यु वु को क्रमशः अन अक आदेश होते हैं ।
अङ्गस्य	२. आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् प्र-नाम् ५ ४७५ ।		प्रत्यय के आदि फ ढ ख छ घ को क्रमशः आयन् एय् ईन् ईय् इय् आदेश होते हैं ।
प्र-नाम्, अङ्गस्य	३. झोऽन्तः २१६९ ।	झः ७	प्रत्यय के अवयव झ् को अन्त् आदेश होता है ।
प्र-नाम्, झः, अ-ङ्गस्य	४. अदभ्यस्तात् २४७९ ।	अत् ७	अभ्यस्तोत्तर झ को अत् आदेश होता है ।
प्र-नाम्, झः, अत्, अङ्गस्य	५. आत्मनेपदेष्वनतः २२५८ ।		आत्मनेपद में अनकार से परे झ को अत् होता है ।
झः, अत्, अङ्गस्य	६. शीङो रुट् २४४२ ।	रुट् ८	शीङ् उत्तरवर्ती झादेश अत् को रुट् आगम होता है ।
झः, अत्, रुट्, अङ्गस्य	७. वेत्तेर्विभाषा २७०१ ।		विद् उत्तरवर्ती झादेश अत् को विकल्प से रुट् होता है ।
रुट्, अङ्गस्य	८. बहुलं छन्दसि ३५५७ ।		वेद में बहुलतया रुट् होता है ।
अङ्गस्य	९. अतो भिस् ऐस् २०३ ।	अतः १७ भि-स् ११	अकारान्त अङ्ग से उत्तर भिस् को ऐस् होता है ।
अतः, भि-स्, अ-ङ्गस्य	१०. बहुलं छन्दसि ३५५८ ।		ऐस् आदेश वेद में बहुलतया होता है ।
अतः, भि-स्, अ-ङ्गस्य	११. नेदमदसोरकोः ३४९ ।		अककार इदम् अदस् के भिस् को ऐस् नहीं होता है ।
अतः, अङ्गस्य	१२. टाडसिडसामिनात्स्याः २०१ ।		अकारान्त अङ्ग से उत्तर टा डसि डस् को क्रमशः इन आत् स्य होते हैं ।
अतः, अङ्गस्य	१३. डेर्यः २०४ ।	डेः १४	अकारान्त अङ्ग से उत्तर डे को य आदेश होता है ।
अतः, डेः, अङ्गस्य	१४. सर्वनाम्नः स्मै २१५ ।	स-म्नः १७	अकारान्त सर्वनाम से उत्तर डे को स्मै आदेश होता है ।
अतः, स-म्नः, अ-ङ्गस्य	१५. डसिङ्योः स्मात्स्मिनौ २१६ ।	डसि-नौ १६	अकारान्त सर्वनाम से उत्तर डसि डि को क्रमशः स्मात् स्मिन् आदेश होते हैं ।

अतः, अङ्गस्य, स- १६. पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा २२१
मः, डसि-नौ

अतः, अङ्गस्य, स- १७. जसः शी २१४ ।

मः

शी, अङ्गस्य १८. औड आपः २८७ ।

शी, अङ्गस्य, औडः १९. नपुंसकाच्च ३१० ।

अङ्गस्य, न-त् २०. जश्शसोः शिः ३१२ ॥ १ ॥ ज-सोः २२

अङ्गस्य, ज-सोः २१. अष्टाभ्य औश् ३७२ ।

अङ्गस्य, ज-सोः २२. षड्भ्यो लुक् २६१ ।

अङ्गस्य, लुक् २३. स्वमोर्नपुंसकात् ३१९ ।

अङ्गस्य, स्वमोः, न- २४. अतोऽम् ३०९ ।

त्

अङ्गस्य, स्वमोः २५. अदङ्गतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ३१५ ।

अङ्गस्य, स्वमोः, २६. नेतराच्छन्दसि ३५५९ ।

अदङ्ग * एकतरात्प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

अङ्गस्य २७. युष्मदस्मद्भ्यां डसोऽश् ३९९ ।

अङ्गस्य, यु-भ्यां २८. डे प्रथमयोरम् ३८२ ।

अङ्गस्य, यु-भ्यां २९. शसो न ३९१ ।

अङ्गस्य, यु-भ्यां ३०. भ्यसो भ्यम् ३९५ ।

अङ्गस्य, भ्यसः, यु- ३१. पञ्चम्या अत् ३९७ ।
भ्यां

शी १९

औडः १९

न-त् २०

ज-सोः २२

लुक् २३

स्वमोः २६

न-त् २४

अदङ्ग २६

यु-भ्यां ३३

भ्यसः ३१

प-त् ३२

पूर्व आदि नव सर्वनाम शब्दों से परे डसि डि को क्रमशः विकल्प से स्मात् स्मिन् होता है ।

अकारान्त सर्वनाम उत्तरवर्ती जस् को शी होता है ।

आबन्त अङ्ग से उत्तर औड् को शी होता है ।

नपुंसक अङ्ग से उत्तर औड् को शी होता है ।

नपुंसक अङ्ग से उत्तर जस् शस् को शि होता है ।

कृताकार अष्टन् उत्तरवर्ती जस् शस् को औश् होता है ।

षट् संज्ञक से जस् शस् का लुक् होता है ।

नपुंसक अङ्ग से उत्तर सु अम् का लुक् होता है ।

अदन्त नपुंसक से उत्तर सु अम् को अम् होता है ।

नपुंसक प्रयुक्त उत्तर आदि पाँच से परे सु अम् को अदट् होता है ।

इतरोत्तर सु अम् को वेद में अदट् नहीं होता है ।

युष्मद् अस्मद् उत्तर डस् को अश् होता है ।

युष्मद् अस्मद् उत्तरवर्ती डे तथा प्रथमा द्वितीया को अम् हो जाता है ।

युष्मद् अस्मद् से परे शस् को नकार आदेश होता है ।

युष्मद् अस्मद् से परे भ्यस् को भ्यम् (अभ्यम्) हो जाता है ।

युष्मद् अस्मद् से परे पञ्चमी के भ्यस् को अत् होता है ।

अङ्गस्य, प-त्, यु- ३२. एकवचनस्य च ३९६ ।

भ्यां

अङ्गस्य, यु-भ्यां ३३. साम आकम् ४०० ।

अङ्गस्य ३४. आत औ णलः २३७१ ।

अङ्गस्य ३५. तुह्योस्तातड्डाशिष्यन्यतरस्याम् २१९७ । अ-म् ३६

अङ्गस्य, अ-म् ३६. विदेः शतुर्वसुः ३१०५ ।

अङ्गस्य ३७. समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ३३३२ । स-प् ३८

अङ्गस्य, स-प् ३८. क्त्वापि छन्दसि ३५६० । छन्दसि ५०

अङ्गस्य, छन्दसि ३९. सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः
३५६१ ।

* इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम् ।

* आड्याजयारामुपसंख्यानम् ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४०. अमो मश् ३५६२ । ॥ २ ॥

अङ्गस्य, छन्दसि ४१. लोपस्त आत्मनेपदेषु ३५६३ ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४२. ध्वमो ध्वात् ३५६४ ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४३. यजध्वैनमिति च ३५६५ ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४४. तस्य तात् ३५६६ । तस्य ४५

अङ्गस्य, छन्दसि, तस्य ४५. तप्तनप्तनथनाश्च ३५६७ ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४६. इदन्तो मसि ३५६८ ।

अङ्गस्य, छन्दसि ४७. क्त्वो यक् ३५६९ । क्त्वः ४९

युष्मद् अस्मद् से परे पञ्चमी के एकवचन को अत् होता है ।

युष्मद् अस्मद् से परे सुट् सहित आम् को आकम् होता है ।

आदन्त अङ्ग से उत्तर णल् को औ होता है ।

आशीः में तु हि को विकल्प से तातड् होता है ।

(ज्ञानार्थक) विद् से परे शतृ को वसु आदेश होता है ।

अनञ्पूर्व समास में क्त्वा को ल्यप् आदेश होता है ।

वेद में अनञ्पूर्व समास में क्त्वा को क्त्वा तथा ल्यप् दोनों होता है ।

वेद में सुप् के स्थान में सु लुक् पूर्वसवर्ण आ आत् शे या डा ड्या याच् आल् आदेश होते हैं ।

मिप् सम्बन्धी अम् को वेद में मश् आदेश होता है ।

वेद में आत्मनेपद में त का लोप होता है ।

वेद में ध्वम् को ध्वात् आदेश हो जाता है ।

वेद में एनम् परे रहने पर यजध्वैनम् बनता है ।

वेद में (मध्यम पुरुष बहुवचन) त को तात् होता है ।

वेद में ते के स्थान में तप् तनप् तन थन होते हैं ।

वेद में मस् इकारान्त (मसि) होता है ।

वेद में क्त्वा को यक् का आगम होता है ।

अङ्गस्य, छन्दसि, ४८. इष्ट्वीनमिति च ३५७० ।

क्त्वः

अङ्गस्य, छन्दसि, ४९. स्नात्वाद्यश्च ३५७१ ।

क्त्वः

(२४५) स्नात्वी पीत्वी ॥ इति स्नात्वादिः ॥

आकृतिगणः ॥

अङ्गस्य, छन्दसि ५०. आज्ञसेरसुक् ३५७२ ।

आत् ५२

अ-क् ५१

अङ्गस्य, अ-क्, ५१. अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि

आत्

२६६२ ।

* अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायामिति वक्तव्यम् ।

* क्षीरलवणयोर्लालसायाम् ।

* सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि लालसायां सुगसुकौ च ।

अङ्गस्य, आत् ५२. आमि सर्वनाम्नः सुट् २१७ ।

आमि ५७

अङ्गस्य, आमि ५३. त्रेख्यः २६४ ।

अङ्गस्य, आमि ५४. ह्रस्वनद्यापो नुट् २०८ ।

नुट् ५७

* नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट्पूर्वविप्रतिषेधेन ।

अङ्गस्य, नुट्, आमि ५५. षट्चतुर्भ्यश्च ३३८ ।

अङ्गस्य, नुट्, आमि ५६. श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ३५७३ ।

अङ्गस्य, नुट्, आमि ५७. गोः पादान्ते ३५७४ ।

नुमप्रकरणम्

अङ्गस्य ५८. इदितो नुम्यातोः २२६२ ।

नुम् ८३

अङ्गस्य, नुम् ५९. शे मुचादीनाम् २५४२ ।

तुदाद्यन्तर्गणो मुचादिः ॥

* शे तुम्यादीनां नुम्याच्यः ।

अङ्गस्य, नुम् ६०. मस्जिनशोर्झलि २५१७ । ॥ ३ ॥

अङ्गस्य, नुम् ६१. रधिजभोरचि २३०२ ।

अचि ६४

वेद में (यज+क्त्वा) इष्ट्वीनम् निपातित होता है ।

वेद में स्नात्वी आदि निपातित होते हैं ।

वेद में अवर्णान्त से उत्तर जस् को असुक् आगम होता है ।

आत्मप्रीति अर्थ में क्यच् पर रहने पर अश्व क्षीर वृष लवण को असुक् आगम होता है ।

अवर्णान्त सर्वनाम से परे आम् को सुट् आगम होता है ।

आम् पर रहने पर त्रि को त्रय आदेश होता है ।

ह्रस्वान्त नद्यन्त आबन्त से आम् को नुडागम होता है ।

षट्संज्ञक और चतुर् से परे आम् को नुट् का आगम होता है ।

वेद में श्री और ग्रामणी से परे आम् को नुडागम होता है ।

ऋक्पादान्त में गो से परे आम् को नुडागम होता है ।

इदित् धातु को नुमागम होता है ।

श पर रहने पर मुच् आदि धातुओं को नुमागम होता है ।

झलादि प्रत्यय पर रहने पर मस्ज नश् को नुम् का आगम होता है ।

रध जभ् को मुम् का आगम होता है यदि बाद में अजादि प्रत्यय हो ।

अङ्गस्य, नुम्, अचि ६२. नेट्यलिटि रथे: २५१६ ।

अङ्गस्य, नुम्, अचि ६३. रभेरशब्बिलटो: २५८१ ।

अ-टो: ६९

अङ्गस्य, नुम्, अ- ६४. लभेश्च २५८२ ।
टो:, अचि

लभे: ६९ ।

अङ्गस्य, नुम्, अ- ६५. आडो यि २८४५ ।
टो:, लभे:

यि ६६

अङ्गस्य, नुम्, यि, ६६. उपात्रशंसायाम् २८४६ ।
अ-टो:, लभे:

अङ्गस्य, नुम्, अ- ६७. उपसर्गात्खल्यजो: ३३०६ ।
टो:, लभे:

उ-जो: ६८ ।

अङ्गस्य, नुम्, उ- ६८. न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ३३०७ ।
जो:, अ-टो:, लभे:

अङ्गस्य, नुम्, अ- ६९. विभाषा चिण्णमुलो: २७६५ ।
टो:, लभे:

अङ्गस्य, नुम् ७०. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातो: ३६१ । स-ने ७२

अङ्गस्य, नुम्, स- ७१. युजेरसमासे ३७६ ।
ने

अङ्गस्य, नुम्, स- ७२. नपुंसकस्य झलच: ३१४ ।
ने

न-स्य ७७

* बहूर्जेर्नुम्रतिषेध: ।

* अन्त्यात्पूर्वो वा नुम् ।

अङ्गस्य, नुम्, न- ७३. इकोऽचि विभक्तौ ३२० ।
स्य

इक: ७४

वि-कौ ७५

अङ्गस्य, नुम्, वि- ७४. तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्भालवस्य
कौ, इक:, न-स्य

तृ-षु ७५

३२१ ।

अङ्गस्य, नुम्, वि- ७५. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङ्कुदात्त: ३२२ ।
कौ, तृ-षु, न-स्य

अ-म् ७७

उदात्त: ७६

लिट् भिन्न इडादि प्रत्यय परे रहने पर रध को नुमागम नहीं होता है । शप् लिट् वर्जित अजादि प्रत्यय परे रहने पर रभ को नुमागम होता है ।

लभ को नुमागम होता है यदि पर में शप् लिट् वर्जित अजादि प्रत्यय हो ।

आङ्पूर्वक लभ को नुमागम होता है यदि प्रत्यय परे रहने पर ।

यदि प्रशंसा वाच्य हो तो यकारादि प्रत्यय से पूर्व उप से युक्त लभ को नुमागम होता है ।

उपसर्गोत्तर लभ को नुमागम होता है यदि बाद में खल् घञ् हो ।

केवल सु दुर् से युक्त लभ को खल् घञ् के यहाँ नुम् नहीं होता है ।

लभ को विकल्प से नुम् होता है यदि पर में चिण् तथा णमुल् हो । अधातु उगित् अङ्ग और अञ्च को नुमागम होता है यदि पर में सर्वनामस्थान हो ।

असमास में सर्वनामस्थान परे रहने पर युज को नुमागम होता है ।

नपुंसक झलन्त अजन्त को सर्वनामस्थान में नुमागम होता है ।

नपुंसक इगन्त अङ्ग को अजादि विभक्ति में नुमागम होता है ।

भाषितपुंस्क नपुंसक इगन्त को विकल्प से पुंवत् होता है यदि पर में तृतीयादि अजादि विभक्ति हो ।

अस्थि दधि सक्थि अक्षि को अनङ् आदेश होता है यदि तृतीयादि अजादि पर में हो । वह उदात्त होता है ।

अङ्गस्य, नुम्, अ- ७६. छन्दस्यपि दृश्यते ३५७५ ।

म्, उदात्तः, न-स्य

अङ्गस्य, नुम्, अ- ७७. ई च द्विवचने ३५७६ ।

म्, छन्दसि, न-स्य

अङ्गस्य, नुम् ७८. नाभ्यस्ताच्छतुः ४२७ ।

अङ्गस्य, नुम्, शतुः, ७९. वा नपुंसकस्य ४४४ ।

ना-त्

अङ्गस्य, नुम्, शतुः, ८०. आच्छीनद्योर्नुम् ४४५ ।

वा

अङ्गस्य, नुम्, शतुः, ८१. शष्पयनोर्नित्यम् ४४६ ।

शी-दयोः

अङ्गस्य, नुम् ८२. सावनडुहः ३३२ ।

अङ्गस्य, सौ, नुम् ८३. दृक्स्ववः स्वतवसां छन्दसि ३५७७ ।

अङ्गस्य, नुम्, सौ ८४. दिव औत् ३३६ ।

अङ्गस्य, सौ ८५. पथिमथ्यृभुक्षामात् ३६५ ।

अङ्गस्य, प-म् ८६. इतोऽत्सर्वनामस्थाने ३६६ ।

अङ्गस्य, स-ने, प- ८७. थो न्यः ३६७ ।

म्

अङ्गस्य, स-ने, प- ८८. भस्य टेलोपः ३६८ ।

म्

अङ्गस्य, स-ने ८९. पुंसोऽसुङ् ४३६ ।

अङ्गस्य, स-ने ९०. गोतो णित् २८४ ।

* ओतो णिदिति वाच्यम् ।

अङ्गस्य, णित्, स- ९१. णलुत्तमो वा २२८३ ।

ने

छन्दसि ७७

ना-त् ७९

शतुः ८१

वा ८०

॥ ४ ॥ शी-दयोः ८१

सौ ८५

प-म् ८८

स-ने ९८

णित् ९२

वेद में अनजादि में भी अस्थि आदि को अनङ् होता है ।

वेद में द्विवचन में अस्थि आदि को उदात्त ई होता है ।

अभ्यस्तोत्तर शतृ को नुम् नहीं होता है ।

अभ्यस्तोत्तर शतृ प्रत्ययान्त नपुंसक को विकल्प से नुम् होता है ।

अवर्णोत्तर शतृ को विकल्प से नुम् होता है शी और नदी पर रहने पर ।

शप् श्यन् सम्बन्धी शतृ को नित्य नुम् होता है यदि पर में शी और नदी हो ।

सु के यहाँ अनडुह को नुमागम होता है ।

वेद में दृक् स्ववस् स्वतवस् को नुम होता है सु के यहाँ ।

सु परे रहने पर दिव् को औत् आदेश होता है ।

पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् को सु के यहाँ आकार आदेश होता है ।

यदि सर्वनामस्थान पर में हो तो पथिन् आदि के इ के स्थान में अ आदेश होता है ।

पथि मथि के थ के स्थान में न्य आदेश होता है, यदि सर्वनामस्थान पर में हो ।

भसंज्ञक पथि आदि के टि का लोप होता है ।

सर्वनामस्थान परे रहने पर पुंस् को असुङ् होता है ।

गो से पर सर्वनामस्थान णिद्ववत् होता है ।

उत्तम णल् विकल्प से णित् होता है ।

अङ्गस्य, णित्, स- ९२. सख्युरसंबुद्धौ २५३ ।
ने

अङ्गस्य, अद्धौ, स- ९३. अनङ् सौ २४८ ।

ने, सख्युः

अङ्गस्य, अद्धौ, स- ९४. ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च २७६ ।

ने, अ-सौ

अङ्गस्य, अद्धौ, स- ९५. तृज्वत्क्रोष्टुः २७४ ।

ने

अङ्गस्य, स-ने, तृ- ९६. स्त्रियां च ३०५ ।

टुः

अङ्गस्य, स-ने, तृ- ९७. विभाषा तृतीयादिष्वचि २७८ ।

टुः

अङ्गस्य, स-ने ९८. चतुरनडुहोरामुदात्तः ३३१ ।

अङ्गस्य, च-होः ९९. अम्संबुद्धौ ३३३ ।

अङ्गस्य १००. ऋत इद्धातोः २३९० ॥ ५ ॥ ऋतः १०३

धातोः १०३

इत् १०१

अङ्गस्य, ऋतः, धा- १०१. उपधायाश्च २५७१ ।

तोः, इत्

अङ्गस्य, ऋतः, धा- १०२. उदोष्ठ्यपूर्वस्य २४९४ ।

तोः

अङ्गस्य, ऋतः, धा- १०३. बहुलं छन्दसि ३५७८ ।

तोः

अद्धौ ९५

सख्युः ९३

अ-सौ ९४

तृ-टुः ९७

च-होः ९९

सखि शब्द से पर सम्बुद्धिविहीन सर्वनामस्थान णिद्वत् होता है ।

सम्बुद्धिहीन सु के यहाँ सखि को अनङ् होता है ।

ऋकारान्त उशनस् पुरुदंस अनेहस् शब्दों को अनङ् होता है यदि पर में असम्बुद्धि सु हो ।

क्रोष्टु को तृज्वद्भाव होता है सम्बुद्धिहीन सर्वनामस्थान पर में रहने पर ।

स्त्रीलिङ्ग में क्रोष्टु को तृज्वद्भाव होता है ।

तृतीयादि अजादि परे रहने पर क्रोष्टु को विकल्प से तृज्वद्भाव होता है ।

चतुर अनडुह को आम् आगम होता है जो उदात्त होता है यदि पर में सर्वनामस्थान हो ।

सम्बुद्धि में चतुर् अनुडुह को अम् का आगम होता है ।

ऋकारान्त धातु अङ्ग को इकार आदेश होता है ।

धातु के उपधाभूत ऋ को इत् आदेश होता है ।

ओष्ठ्यपूर्व ऋकारान्त धातु को उत् आदेश होता है ।

वेद में ऋकारान्त धातु को बहुलतया उदादेश होता है ।

युवोरष्टाभ्यो लोपो
रधिशाण्यनोरुपधायास्त्रीणि ।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य
प्रथमः पादः ।

द्वितीयः पादः ।

सिचि वृद्धिः

अङ्गस्य	१. सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु २२९७ ।	सि-षु ७	परस्मैपद में सिच् परे रहने पर इगन्त अङ्ग को वृद्धि होती है ।
अङ्गस्य, सि-षु	२. अतो ल्रान्तस्य २३३० ।		ल् र् समीपस्थ धात्वङ्ग अत् को वृद्धि होती है यदि बाद में परस्मैपद का सिच् हो ।
अङ्गस्य, सि-षु	३. वदव्रजहलन्तस्याचः २२६७ ।	ह-स्य ४	वद व्रज और हलन्त धात्वङ्ग, अच् के स्थान में वृद्धि होती है यदि पर में परस्मैपद का सिच् हो ।
अङ्गस्य, ह-स्य, सि-षु	४. नेटि २२६८ ।	नेटि ७	हलन्त अङ्ग को वृद्धि नहीं होती है यदि इडादि सिच् पर में हो ।
अङ्गस्य, नेटि, सि-षु	५. ह्यन्तक्षणश्चजागृणिश्च्येदिताम् २२९९ ।		ह म् य् अन्तवाले तथा क्षण श्वस जागृ णि श्वि एवं एदित् धात्वङ्ग को वृद्धि नहीं होती है इडादि सिच् परस्मैपद परे रहने पर ।
अङ्गस्य, नेटि, सि-षु	६. ऊर्णोतेर्विभाषा २४४९ ।	विभाषा ७	इडादि सिच् परस्मैपद परे रहने पर ऊर्णुञ् को विकल्प से वृद्धि नहीं होती है ।
अङ्गस्य, विभाषा, नेटि, सि-षु	७. अतो हलादेर्लघोः २२८४ ।		हलादि धातु के अत् (लघु अकार) को पूर्वस्थिति में विकल्प से वृद्धि नहीं होती है ।
इण् निषेधः			
अङ्गस्य	८. नेड्वशि कृति २९८१ ।	नेट् ३४ कृति ९	वशादि कृत् परे रहने पर इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्, कृति	९. तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ३१६३ ।		ति तु त्र त थ सि सु सर क स कृत् परे रहने पर इडागम नहीं होता है ।
	* तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति वक्तव्यम् ।		
अङ्गस्य, नेट्	१०. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् २२४६ ।		उपदेशावस्था में अनुदात्त एकाच् धातु से इडागम नहीं होता है ।
अङ्गस्य, नेट्	११. श्र्युकः किति २३८१ ।	उकः १२	श्रि तथा उगन्त धातु को इडागम नहीं होता है कित् प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, नेट्, उकः	१२. सनि ग्रहगुहोश्च २६१० ।		ग्रह गुह तथा उगन्त धातु को सन् के यहाँ इट् नहीं होता है ।

अङ्गस्य, नेट् १३. कृसृभृवृस्तुद्रुसुश्रुको लिटि २२९३ ।

अङ्गस्य, नेट् १४. श्रीदितो निष्ठायाम् ३०३९ ।

नि-म् ३४

अङ्गस्य, नेट्, नि- १५. यस्य विभाषा ३०२५ ।

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- १६. आदितश्च ३०३६ ।

आदितः १७

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- १७. विभाषा भावादिकर्मणोः ३०५४ ।

म्, आदितः

अङ्गस्य, नेट्, नि- १८. क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफा-

म्

ण्टबाढानि मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्ट-
स्वरानायासभृशेषु ३०५८ ।

अङ्गस्य, नेट्, नि- १९. धृषिशसी वैयात्ये ३०५९ ।

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २०. दृढः स्थूलबलयोः ३०६० ॥ १ ॥

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २१. प्रभौ परिवृढः ३०६१ ।

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २२. कृच्छ्रगहनयोः कषः ३०६२ ।

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २३. घुषिरविशब्दने ३०६३ ।

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २४. अर्देः संनिविभ्यः ३०६४ ।

अर्देः २५

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २५. अभेश्चाविदूर्ये ३०६५ ।

म्, अर्देः

अङ्गस्य, नेट्, नि- २६. णेरध्ययने वृत्तम् ३०६६ ।

णेः २७

म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- २७. वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः वा २९

म्, णेः

३०६८ ।

कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु सु श्रु को लिट्
में इट् नहीं होता है ।

श्वि और ईदिट् धातु को निष्ठा में
इट् नहीं होता है ।

जिस धातु को विकल्प से इट् होता
है उसे निष्ठा में इट् नहीं होता है ।

आदिट् धातुओं से निष्ठा में इट्
नहीं होता है ।

आदिट् धातुओं से निष्ठा में विकल्प
से इट् नहीं होता है भाव तथा
आदि कर्म में ।

मन्थ मनः तमः सक्त अविस्पष्ट स्वर
अनायास भृश अर्थों में क्रमशः क्षुब्ध
स्वान्त ध्वान्त लग्न म्लिष्ट विरिब्ध
फाण्ट बाढ निपातित होते हैं ।

वैयात्य अर्थ में धृष शस को निष्ठा
में इट् नहीं होता है ।

स्थूल और बलवान् अर्थ में दृढ
निपातित होता है ।

प्रभु अर्थ में परिवृढ निपातित होता
है ।

कृच्छ्र गहन अर्थ में कष से निष्ठा
में इट् नहीं होता है ।

अविशब्दन में घुष से निष्ठा में इट्
नहीं होता है ।

सं निवि पूर्वक अर्द से निष्ठा में
इट् नहीं होता है ।

अविदूर्य अर्थ में अभिपूर्वक अर्द
से निष्ठा में इट् नहीं होता है ।

अध्ययन अर्थ में ण्यन्तवृत्त से वृत्त
निपातित होता है ।

ण्यन्त दम शम पूरी दस स्पश छद
ज्ञप् को निष्ठा में विकल्प से णिलोप
और इट् का अभाव होता है ।

अङ्गस्य, नेट्, नि- २८. रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ३०६९ ।
म्, वा

अङ्गस्य, नेट्, नि- २९. हृषेलोमसु ३०७० ।
म्, वा * विस्मितप्रतिधातयोश्च ।

अङ्गस्य, नेट्, नि- ३०. अपचितश्च ३०७१ ।
म् * क्तिनि नित्यं चिभावो वक्तव्यः ।

अङ्गस्य, नेट्, नि- ३१. ह्रु ह्रेश्छन्दसि ३५७९ । छन्दसि ३४
म्

अङ्गस्य, नेट्, नि- ३२. अपरिहृताश्च ३५८० ।
म्, छन्दसि

अङ्गस्य, नेट्, नि- ३३. सोमे ह्वरितः ३५८१ ।
म्, छन्दसि

अङ्गस्य, नेट्, नि- ३४. ग्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचतविकस्ता-
म्, छन्दसि विशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृवरुतृवरु-
तृवरुत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमिति वमित्य-
मितीति च ३५८२ ।

इङ्विधिः

अङ्गस्य ३५. आर्धधातुकस्येड्वलादेः २१८४ ।

अङ्गस्य ३६. स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते २३२३ ।

अङ्गस्य ३७. ग्रहोऽलिटि दीर्घः २५६२ । अलिटि ३८

अङ्गस्य, दीर्घः अ- ३८. वृतो वा २३९१ । दीर्घः ४०

लिटि वृतः ४२

अङ्गस्य, वृतः, दीर्घः ३९. न लिङि २५२९ । न ४०

अङ्गस्य, वृतः, दी- ४०. सिचि च परस्मैपदेषु २३९२ ॥ २ ॥
र्घः, न

अङ्गस्य, वृतः ४१. इट् सनि वा २६२५ । वा ४३

रुष अम त्वर संघुष आस्वन को
निष्ठा में विकल्प से इडागम नहीं
होता है ।

लोम अर्थ में हृष को निष्ठा में
विकल्प से इडागम नहीं होता है ।
अपपूर्वक चाय को निष्ठा में
अनिट्त्व और चि भाव निपातित
होता है ।

वेद में ह्रु को निष्ठा में हरु आदेश
होता है ।

वेद में अपरिहृत निपातित होता
है ।

वेद में ह्रु से निष्ठा में ह्वरित बनता
है सोम में ।

वेद में ग्रसित स्कभित स्तभित
उत्तभित चत विकस्त विशस्तृ शंस्तृ
शास्तृ तरुतृ तरुतृ वरुतृ वरुतृ
वरुत्रीः उज्ज्वलिति क्षरिति क्षमिति
वमिति अमिति निपातित होते हैं ।

वलादि आर्धधातुक को इट् का
आगम होता है ।

स्नु क्रम से वलादि आर्धधातुक
को तब इडागम होता है जब स्नु
क्रम आत्मनेपद के निमित्त न हों ।
ग्रह उत्तरवर्ती इट् को दीर्घ होता
है अलिट् में ।

वृड् वृज् तथा ऋकारान्त धातु से
इट् को विकल्प से दीर्घ होता है ।
लिङ् में वृ+ऋकारान्त से इट् को
दीर्घ नहीं होता है ।

परस्मैपद में वृ+ऋकारान्त उत्तरवर्ती
इट् को दीर्घ नहीं होता है ।

वृ+ऋकारान्त धातुओं को सन् परे
रहने पर विकल्प से इडागम होता
है ।

अङ्गस्य, वृत्तः, वा ४२. लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु २५२८ ।

लि-चोः ४३

आत्मनेपद में लिङ् सिच् पर रहने पर वृ+ऋकारन्त को विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा, लि- ४३. ऋतश्च संयोगादेः २५२६ ।
चोः

संयोगादि ऋदन्त धातु से आत्मनेपदमें लिङ् सिच् के यहाँ विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य ४४. स्वरतिसूतिसूयतिधूजूदितो वा २२७९ । वा ५१

स्वरति सूति सूयति धूजू तथा ऊदित धातुओं से बलादि आर्धधातुक को विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा ४५. रधादिभ्यश्च २५१५ ।

रध आदि ८ धातु से वलादि आर्धधातुक को विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा ४६. निरः कुषः २५६० ।

नि-षः ४७

निर पूर्वक कुष से बलादि आर्धधातुक को इडागम विकल्प से होता है ।

अङ्गस्य, वा, नि-षः ४७. इणिष्ठायाम् ३०४५ ।

निरपूर्वक कुष से निष्ठा में इट् होता है ।

अङ्गस्य, वा ४८. तीषसहलुभरुषरिषः २३४० ।

इष सह लुभ रुष रिष तकारादि आर्धधातुक में विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा ४९. सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्व्यूर्णुभरज्ञपिस-
नाम् २६१८ ।

* तनिपतिदरिद्रातिभ्यः सनो वा इङ् वाच्यः ।

इवन्त धातु तथा ऋधु भ्रस्ज दम्भु श्रि स्व यू ऊर्णु भर ज्ञप सन् को सन् पर रहने पर विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा ५०. क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ३०४९ ।

क्त्-योः ५४

क्त्वा और निष्ठा में क्लिश को विकल्प से इडागम होता है ।

अङ्गस्य, वा, क्त्- ५१. पूङश्च ३०५० ।

याः

अङ्गस्य, क्त्-योः ५२. वसतिक्षुधोरिद् ३०४६ ।

पूङ् को विकल्प से इडागम होता है क्त्वा और निष्ठा में ।

अङ्गस्य, क्त्-योः ५३. अञ्जेः पूजायाम् ३०४७ ।

क्त्वा और निष्ठा में वस और क्षुध से इट् होता है ।

अङ्गस्य, क्त्-योः ५४. लुभो विमोहने ३०४८ ।

पूजा अर्थ में अञ्ज से क्त्वा और निष्ठा में इट् होता है ।

अङ्गस्य ५५. जृव्रश्चयोः क्त्व ३३२७ ।

क्त्व ५६

विमोहन अर्थ में लुभ से क्त्वा और निष्ठा में इट् होता है ।

जृ और व्रश्च से क्त्वा में इडागम होता है ।

अङ्गस्य, क्त्वा	५६. उदितो वा ३३२८ ।	वा ५७
अङ्गस्य, वा	५७. सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः २५०६ ।	से ६०
अङ्गस्य, से	५८. गमेरिद् परस्मैपदेषु २४०१ ।	पर-षु ६०
अङ्गस्य, से, पर-षु	५९. न वृद्भ्यश्चतुर्थ्यः २३४८ ।	न ६५
अङ्गस्य, न, से, पर-षु	६०. तासि च क्लृपः २३५२ ।। ३ ।। तासि ६३	
अङ्गस्य, न, तासि	६१. अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् २२९४ ।	थलि ६६ अ-म् ६३
अङ्गस्य, अ-म्, न, थलि, तासि	६२. उपदेशेऽत्वतः २२९५ ।	
अङ्गस्य, अ-म्, न, थलि, तासि	६३. ऋतो भारद्वाजस्य २२९६ ।	
अङ्गस्य, न, थलि	६४. बभूथततन्थजगृभ्मववर्थेति निगमे २५२७	
अङ्गस्य, न, थलि	६५. विभाषा सृजिदृशोः २४०४ ।	
अङ्गस्य, थलि	६६. इडत्यतिव्ययतीनाम् २३८४ ।	
अङ्गस्य	६७. वस्वेकाजादघसाम् ३०९६ ।	वसु ६९
अङ्गस्य, वसु	६८. विभाषा गमहनविदविशाम् ३०९९ ।	
अङ्गस्य, वसु	* दृशेश्च ।	
अङ्गस्य, वसु	६९. सनिंससनिवांसम् ३५८३ ।	

उदित् धातु से क्त्वा में विकल्प से इट् होता है ।

सिच्भिन्न सकारादि आर्धधातुक में कृत चृत छृत तृद नृत धातुओं से विकल्प से इट् होता है ।

परस्मैपद में सकारादि आर्धधातुक परे रहने पर गम से इट् होता है ।

वृत आदि चार धातुओं से इट् नहीं होता है परस्मैपद सकारादि आर्धधातुक में ।

कृप से तास् तथा परस्मैपद सकारादि आर्धधातुक में इट् नहीं होता है ।

तास् में नित्य अनिट् अजन्त धातुओं से थल् के यहाँ भी तास् की तरह इट् नहीं होता है ।

तास् में नित्यानिट् उपदेश में अकारवान् धातुओं से तास् की तरह थल् में इट् नहीं होता है ।

थल् में इट् का न होना केवल ऋकारान्त धातु से ही होगा ।

निगम में बभूथ आततन्थ जगृभ्म ववर्थ निपातित होते हैं ।

सृज् दृश् से थल् के यहाँ विकल्प से इट् नहीं होता है ।

अत्ति अर्ति व्ययति को थल् में इट् होता है ।

कृतद्विर्वचनैकाच् आकारवान् घस् से ही वसु के यहाँ इट् होता है ।

वसु के यहाँ गम हन विद विश को विकल्प से इट् होता है ।

सनिम् पूर्वक सन धातु को (वसु के यहाँ वेद में) सनिंससनिवांसम् निपातित होता है ।

अङ्गस्य	७०. ऋद्धनोः स्ये २३६६ ।		ऋकारान्त धातु तथा हन को स्य के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य	७१. अङ्गेः सिचि २५४६ ।	सिचि ७३	अञ्जु को सिच् के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य, सिचि	७२. स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु २३८५ ।	पर-षु ७३	परस्मैपद सिच् के यहाँ स्तु सु धूञ् से इट् होता है ।
अङ्गस्य, पर-षु, सिचि	७३. यमरमनमातां सक्च २३७७ ।		यम रम नम आकारान्त धातुओं से सक् का आगम तथा परस्मैपद सिच् में इट् भी होता है ।
अङ्गस्य	७४. स्मिपूङ्ङ्रञ्जशां सनि २६२६ ।	सनि ७५	सन् परे रहने पर स्मिङ् पूङ् ऋ अञ्जु अशू धातुओं से इट् होता है ।
अङ्गस्य, सनि	७५. किरश्च पञ्चभ्यः २६११ ।		किरादि पाँच धातुओं से सन् के यहाँ इट् होता है ।
अङ्गस्य	७६. रुदादिभ्यः सार्वधातुके २४७४ ।	सा-के ८१	रुदादि से वलादि सार्वधातुक को इडागम होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	७७. ईशः से २४३९ ।	से ७८	ईश से परे से रहने पर सार्वधातुक को इट् होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, से	७८. ईडजनोर्ध्वे च २४४० ।		ईड जन् से परे ध्वे और से सार्वधातुक को इट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	७९. लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य २२११ ।		सार्वधातुक लिङ् अनन्त्य स् का लोप होता है ।
अङ्गस्य, सा-के	८०. अतो येयः २२१२ । ॥ ४ ॥	अतः ८२ इयः ८१	अकारान्त अङ्ग से परे या इस सार्वधातुक को इय् होता है ।
अङ्गस्य, सा-के, अतः, इयः	८१. आतो डितः २२३५ ।		अत से परे डित् आकार को इय् होता है ।
अङ्गस्य, अतः	८२. आने मुक् ३१०१ ।	आने ८३	धात्वङ्ग को मुक् आगम होता है आन परे रहने पर ।
अङ्गस्य, आने	८३. ईदासः ३१०४ ।		आस उत्तरवर्ती आन को ई होता है ।
अङ्गस्य	८४. अष्टन आ विभक्तौ ३७१ ।	आ ८९ विभक्तौ ११३	विभक्ति परे रहने पर अष्टन् को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, विभक्तौ, आ	८५. रायो हलि २८६ ।		हलादि विभक्ति में रै को आकार आदेश होता है ।

युष्मदस्मदोरादेशः

अङ्गस्य, विभक्तौ, ८६. युष्मदस्मदोरादेशे ३९३ ।

आ

यु-दोः ९८

अ-शे ८९

अनादेश विभक्ति परे रहने पर युष्मद् अस्मद् को आकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ८७. द्वितीयायां च ३९० ।

आ, यु-दोः, अ-शे

युष्मद् अस्मद् को आकार होता है द्वितीया में ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ८८. प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ३८७ ।

आ, यु-दोः, अ-शे

भाषा में प्रथमा द्विवचन परे रहने पर युष्मद् अस्मद् को आकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ८९. योऽचि ३९२ ।

आ, यु-दोः, अ-शे

युष्मद् अस्मद् को यकार आदेश होता है अनादेश अजादि परे रहने पर ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९०. शेषे लोपः ३८५ ।

यु-दोः

शेष में युष्मद् अस्मद् का लोप होता है ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९१. मपर्यन्तस्य ३८३ ।

यु-दोः

म-स्य ९८

यहाँ से मपर्यन्तस्य का अधिकार है ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९२. युवावौ द्विवचने ३८६ ।

म-स्य, यु-दोः

द्विवचन में युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को क्रमशः युव आव आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९३. यूयवयौ जसि ३८८ ।

म-स्य, यु-दोः

जसू के यहाँ म पर्यन्त युष्मद् अस्मद् को यूय वय आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९४. त्वाहौ सौ ३८४ ।

म-स्य, यु-दोः

म पर्यन्त युष्मद् अस्मद् को सु परे रहने पर त्व अह होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९५. तुभ्यमहौ डयि ३९४ ।

म-स्य, यु-दोः

डे के यहाँ युष्मद् अस्मद् के मपर्यन्त को तुभ्य मह्य आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९६. तवममौ डसि ३९८ ।

म-स्य, यु-दोः

युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को डसू के यहाँ तव मम होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९७. त्वमावेकवचने ३८९ ।

म-स्य, यु-दोः

त्व-ने ९८

(शेष) एकवचन में युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को त्व म आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, ९८. प्रत्ययोत्तरपदयोश्च १३७३ ।

म-स्य, यु-दोः, त्व-

ने

प्रत्यय उत्तरपद में रहने पर एकार्थाभिधायी युष्मद् अस्मद् के म पर्यन्त को त्व म आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ ९९. त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसु २९८ ।

ति-तसु १००

विभक्ति परे रहने पर स्त्रीलिङ्ग में त्रि चतुर् को क्रमशः तिसृ चतसृ आदेश होते हैं ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, १००. अचि र ऋतः २९९ ।। ५ ।।
ति-तसृ
अङ्गस्य, विभक्तौ, १०१. जराया जरसन्यतरस्याम् २२७ ।
अचि

अङ्गस्य, विभक्तौ, १०२. त्यदादीनामः २६५ ।
अचि * द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः ।
अङ्गस्य, विभक्तौ १०३. किमः कः ३४२ ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, १०४. कु तिहोः १९५४ ।
किमः
अङ्गस्य, विभक्तौ, १०५. क्वाति १९६० ।
किमः

अङ्गस्य, विभक्तौ १०६. तदोः सः सावनन्त्ययोः ३८१ । सौ १०८

अङ्गस्य, विभक्तौ, सौ १०७. अदस औ सुलोपश्च ४३७ ।
* अदस औत्वप्रतिषेधः साकच्छस्य वा वक्तव्यः
सादुत्वं च ।।

इदमो विकारः

अङ्गस्य, विभक्तौ, सौ १०८. इदमो मः ३४३ ।

अङ्गस्य, विभक्तौ, १०९. दश्च ३४५ ।

मः, इदमः

अङ्गस्य, विभक्तौ, ११०. यः सौ ४४१ ।

इदमः

अङ्गस्य, विभक्तौ, १११. इदोऽयुंसि ३४४ ।

सौ, इदमः

अङ्गस्य, विभक्तौ, ११२. अनाप्यकः ३४६ ।

इदः, इदमः

अङ्गस्य, विभक्तौ, ११३. हलि लोपः ३४७ ।

इदः, इदमः

वृद्धिः

अङ्गस्य ११४. मृजेवृद्धिः २४७३ ।

अजादि विभक्ति परे रहने पर तिसृ
चतसृ के ऋ को र हो जाता है ।
जरा को जरस् आदेश होता है
विकल्प से, यदि पर में अजादि
विभक्ति हो ।

त्यद् आदि को विभक्ति परे रहने
पर अकार आदेश होता है ।

विभक्ति परे रहने पर किम् को क
आदेश होता है ।

तकारादि हकारादि प्रत्यय परे रहने
पर किम् को कु आदेश होता है ।
अत् प्रत्यय परे रहने पर किम् को
क्व आदेश होता है ।

त्यद् आदि के अनन्त्य त द को स
होता है सु के यहाँ ।

सु के यहाँ अदस् के स को औ
होता है तथा सु का लोप होता है ।

इदमः ११३
मः १०९

इदम् को सु के यहाँ मकार अन्तादेश
होता है ।

सौ १११

विभक्ति परे रहने पर इदम् के द
को म होता है ।
सु के यहाँ इदम् के म को य होता
है ।

इदः ११३

इदम् के इत् को पुँल्लिङ्ग सु के
यहाँ अय् होता है ।

इदम् के अककार इद् को आप्
विभक्ति में अन होता है ।

हलादि विभक्ति के यहाँ इदम् के
अककार इत् का लोप होता है ।

वृद्धिः ७.३.३५ मृजू धातु के अङ्ग अक् को वृद्धि
होती है प्रत्यय परे रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः ११५. अचो ङिति २५४ ।

अचः ७.३.३१ जित् णित् के यहाँ अजन्त अङ्ग
ङिति ७.३.३५ को वृद्धि होती है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः ११६. अत उपधायाः २२८२ ।

धातु के उपधा अत् को वृद्धि होती
है जित् णित् प्रत्यय पर रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ११७. तद्धितेष्वचामादेः १०७५ ।
ङिति, अचः

त-देः ७.३.३५ तद्धित जित् णित् प्रत्यय पर में
रहने पर अङ्ग के अचों में आदि
अच् को वृद्धि होती है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ११८. किति च १०७६ ।
ङिति, अचः, त-
देः

किति ७.३.३१ तद्धित कित् प्रत्यय पर रहने पर
अङ्ग के अचों में आदि अच् को
वृद्धि होती है ।

सिचि प्रभाविट् सन्यचस्तास्वदातो जराया

अष्टादश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य
द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

वृद्धिविकल्पाः

अङ्गस्य; वृद्धिः, १. देविकाशिंशपादित्यवाद्दीर्घसत्रश्रेयसामात्
ङिति, अचः, त-
देः, किति १४३९ ।

जित् णित् कित् तद्धित पर रहने
पर देविका शिंशपा दित्यवाद्
दीर्घसत्र श्रेयस् के आदि अच् को
वृद्धि के स्थान में आकार होता
है ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, २. केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ११४४ ।
ङिति, अचः, त-
देः, किति

केकय मित्रयु प्रलय के यकारादि
को इय आदेश होता है तद्धित
जित् णित् कित् पर रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३. न खाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वो तु ताभ्यामैच् न ५
ङिति, अचः, त-
देः, किति १०९८ । खा-च् ४

पदान्त य् व् से परे आदि अच्
को वृद्धि नहीं होती है अपितु य्
व् से पहले क्रमशः ऐ औ हो
जाता है तद्धित जित् णित् कित्
पर रहने पर ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ४. द्वारादीनां च १३८६ ।
ङिति, अचः, त-
देः, न-च्, किति

द्वार आदि में भी य् व् उत्तरवर्ती
आदि अच् को वृद्धि नहीं होती
है अपितु य् व् से पहले ऐच् होता
है ।

(२४६) द्वार स्वर स्वग्राम (स्वाध्याय) व्यल्कश
स्वस्ति स्वर स्प्यकृत् (स्प्यकृत्) स्वादुमृदु श्वम्
श्वन् स्व ॥ इति द्वारादिः ॥

अङ्गस्य, वृद्धिः, ५. न्यग्रोधस्य च केवलस्य १५४३ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, न, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ६. न कर्मव्यतिहारे ३२१७ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ७. स्वागतादीनां च १५४९ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, न, किति

(२४७) स्वागत स्वध्वर स्वङ्ग व्यङ्ग व्यवहार
स्वपिति (स्वपति) ॥ इति स्वागतादिः ॥

अङ्गस्य, वृद्धिः, ८. श्वादेरिजि १५६० ।

जिगिति, अचः, त- * इकारादाविति वाच्यम् ।
देः, न, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ९. पदान्तस्यान्यतरस्याम् १५६१ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, न, श्वादेः, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, १०. उत्तरपदस्य १३९६ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ११. अवयवाद्भूतोः १३९७ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, उ-स्य, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, १२. सुसर्वाधाज्जनपदस्य १३९८ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, उ-स्य, किति

अङ्गस्य, वृद्धिः, १३. दिशोऽमद्राणाम् १३९९ ।

जिगिति, अचः, त-
देः, उ-स्य, किति,
ज-स्य

न ९

श्वादेः ९

उ-स्य ३१

ज-स्य १३

दिशः १४

केवल न्यग्रोध के यकार से उत्तर
अच् को वृद्धि नहीं होती है, अपितु
य से पूर्व ऐ का आगम होता है ।
उपरिलिखित नियम कर्म व्यतिहार
में नहीं होता है ।

स्वागत आदि में भी ऐच् का नियम
नहीं लगता है ।

इज् के यहाँ श्वादि में भी यह नियम
नहीं लगता है ।

पद शब्दान्त श्वादि में यह नियम
विकल्प से नहीं लगता है ।

यहाँ से उत्तरपदस्य का अधिकार
है ।

अवयववाची पूर्व शब्द से उत्तर
स्थित ऋतु वाची शब्दों के आदि
अच् को वृद्धि होती है यदि पर में
तद्धित जित् णित् कित् हो ।

सु सर्व अर्थ शब्द के बाद जन-
पदवाची उत्तरपद के आदि अच्
को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित्
कित् में ।

दिग्वाची शब्दोत्तर मद्रभिन्न जनपद
वाची शब्दों के आदि अच् को
वृद्धि होती है तद्धित जित् णित्
कित् में ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, १४. प्राचां ग्रामनगराणाम् १४०० ।

जिगिति, अचः, त-

देः, दिशः, किति,

उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, १५. संख्यायाः संवत्सरसंख्यस्य च १७५२ । सं-याः १७

जिगिति, अचः, त-

देः, किति, उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, १६. वर्षस्याभविष्यति १७५४ ।

जिगिति, अचः, त-

देः, सं-या, किति,

उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, १७. परिमाणान्तस्यासंज्ञाशाणयोः १६८३ ।

जिगिति, अचः, त- * कुलिजशब्दमपि केचित्पठन्ति।

देः, सं-या, किति,

उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, १८. जे प्रोष्ठपदानाम् १४०९ ।

जिगिति, अचः, त-

देः, किति, उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, १९. हृद्गसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ११३३ । पू-स्य २५

जिगिति, अचः, त-

देः, किति, उ-स्य

अङ्गस्य वृद्धिः जिगिति, अचः, त-देः, पूस्य, किति, उ-स्य २०. अनुशक्तिकादीनां च १४३८ ॥ १ ॥

ति, अचः, त-देः,

पूस्य, किति, उ-स्य

(२४८) अनुशक्तिक अनुहोड अनुसंवरण

(अनुसंचरण) अनुसंवत्सर अङ्गारवेणु असिंहत्य

(अस्यहत्य) अस्यहेति वध्योग पुष्करसद् अनुहरत्

कुरुकत कुरुपञ्चाल उदकशुद्ध इहलोक परलोक

सर्वलोक सर्वपुरुष सर्वभूमि प्रयोग परस्त्री ।

“राजपुरुषात्प्यजि” । सूत्रनड । इत्यनुशक्तिकादिः ॥

आकृतिगणोऽयम् ॥ तेन । अभिगम अधिभूत

अधिदेव चतुर्विद्या इत्यादयोऽप्यन्ये विज्ञेयाः ॥

प्राच्य देश में दिग्वाच्युत्तर ग्राम नगर के आदि के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में ।

संख्योत्तर संवत्सर तथा संख्या वाची शब्दों के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में ।

संख्योत्तर वर्ष शब्द के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में पर तद्धित भविष्यत् अर्थ में न हो ।

संख्योत्तर परिमाणान्त अङ्ग के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में पर परिमाणान्त संज्ञा या शाण न हो ।

जात अर्थ में विहित तद्धित जित् णित् कित् में प्रोष्ठपद शब्द के पद के आदि अच् को वृद्धि होती है ।

हृद भग सिन्धु अन्त वाले शब्दों में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों के आदि अच् की वृद्धि होती पूर्ववत् परे रहने पर ।

अनुशक्तिक आदि में उभयपदों के आदि अच् को वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, २१. देवताद्वन्द्वे च १२३९ ।

जिगिति, अचः त-देः,

पूस्य, किति, उ-स्य

अङ्गस्य वृद्धिः जिग- २२. नेन्द्रस्य परस्य १२४० ।

तिः अचः त-देः पूस्य

दे-द्वे, किति, उ-स्य

अङ्गस्य वृद्धिः जिग- २३. दीर्घाच्च वरुणस्य १२४१ ।

ति अचः त-देः पूस्य

दे-द्वे न किति उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, २४. प्राचां नगरान्ते १४३१ ।

जिगिति अचः त-देः,

पूस्य, किति, उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, २५. जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम्

जिगिति, अचः त-देः,

पूस्य, किति, उ-स्य

१४३२ ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, २६. अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा १६८४ । अ-स्य २७

जिगिति, अचः, त-

देः, किति, उ-स्य

पू-वा ३०

अङ्गस्य वृद्धिः जिग- २७. नातः परस्य १६८५ ।

ति अचः त-देः अ-

स्य पू-वा किति उ-स्य

अङ्गस्य वृद्धिः जिग- २८. प्रवाहणस्य ढे ११२९ ।

ति अचः त-देः अ-

स्य पू-वा किति उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, २९. तत्प्रत्ययस्य च ११३० ।

जिगिति, अचः, त-

देः, अ-स्य, पू-वा,

प्र-स्य, किति उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३०. नजः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् नजः ३१

जिगिति, अचः, त-

देः, पू-वा, किति,

उ-स्य

१४६० ।

दे-द्वे २३

न २३

देवता द्वन्द्व में उभयपदों के आदि अच् की वृद्धि होती तद्धित जित् णित् कित् पर रहने पर ।

इन्द्र शब्द यदि पर में हो तो उभयपद वृद्धि नहीं होती है देवता द्वन्द्व में ।

दीर्घोत्तर वरुण के रहने पर उभयपद वृद्धि नहीं होती है देवता द्वन्द्व में ।

प्राच्य देश में नगरान्त पद में उभयपद वृद्धि होती है तद्धित जित् णित् कित् में ।

जङ्गल धेनु वलज अन्त वाले शब्दों में पूर्वपद के आदि अच् को वृद्धि होती है, उत्तरपद में वृद्धि विकल्प से होती है ।

अर्ध शब्दोत्तर परिमाणवाची शब्द रहने पर केवल उत्तरपद के आदि अच् को वृद्धि होती है, पूर्व को विकल्प से होती है ।

अर्धोत्तर परिमाणाकार में वृद्धि नहीं होती है, पूर्व को विकल्प से होती है ।

ढ पर रहने पर उत्तरपदादिस्थ अच् की वृद्धि होती है, पूर्व में विकल्प से होती है ।

ढ प्रत्ययान्त प्रवाहण से तद्धित पर रहने पर पूर्वपद को विकल्प तथा उत्तरपद को नित्य वृद्धि होती है ।

नज उत्तरवर्ती शुचि ईश्वर क्षेत्रज्ञ कुशल निपुण शब्दों के आदि अच् को नित्य तथा पूर्वपद को विकल्प से वृद्धि होती है यदि तद्धित जित् णित् कित् पर में हो ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३१. यथातथायथापुरयोः पर्यायेण १७८९ ।
जिगिति, अचः त-देः,
नजः, किति, उ-स्य

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३२. हनस्तोऽचिण्णलोः २५७४ ।
जिगिति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३३. आतो युक्चिण्कृतोः २७६१ । चि-तोः ३५
जिगिति

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३४. नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः २७६३ । न ३५
जिगिति, चि-तोः * अनाचमिकमिवमीनामिति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, वृद्धिः, ३५. जनिवध्योश्च २५१२ ।
जिगिति, चि-तोः, न

णौ आगम विकारः

अङ्गस्य ३६. अर्तिह्रीव्लीरीक्यूक्ष्माय्यातां पुणौ णौ ४३
२५७० ।

नञ् से उत्तरवर्ती यथातथा यथापुर
में पर्याय से आदि अच् को वृद्धि
होती है, तद्धित जित् णित् कित्
यदि पर में रहें ।

हन् को तकारादेश होता है, यदि
बाद में चिण् णमुल् को छोड़कर
जित् णित् हो ।

चिण् कृत जित् णित् जित् परे रहने पर
आकारान्त अङ्ग को युक् का आगम
होता है ।

उदात्तोपदेश मान्त अङ्ग को चिण्
कृत जित् णित् परे रहने पर जो
कहा गया है वह नहीं होगा पर
मान्त आचम् न हो ।

चिण् कृत जित् णित् परे रहने पर
जो कहा गया है वह जन और
वध को नहीं होगा ।

अर्ति ह्री व्ली री क्यूयी क्ष्मायी
तथा आकारान्त अङ्ग को पुक्
आगम होता है यदि पर में णि
हो ।

यदि णि पर में हो तो शा छा सा
ह्वा व्या वे पा को युक् आगम
होता है ।

विधूनन अर्थ में वा को जुक् आगम
होता है णि परे रहने पर ।

णि परे रहने पर ली ला को विकल्प
से नुक् लुक् होता है, यदि धात्वर्थ
स्नेहविपातन हो ।

हेतुभय अर्थ में भी को णि परे
रहने पर षुक् आगम होता है ।

णि के यहाँ स्फाय् को वकार आदेश
होता है ।

अगति अर्थ में शद् को णि के
यहाँ तकारादेश होता है ।

अङ्गस्य, णौ ३७. शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् २५८५ ।

* पातेणीं लुग्वक्तव्यः ।

* धूअ्रीजोर्नुग्वक्तव्यः ।

अङ्गस्य, णौ ३८. खो विधूनने जुक् २५९० ।

अङ्गस्य, णौ ३९. लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने
२५९१ ।

अङ्गस्य, णौ ४०. भियो हेतुभये षुक् २५९५ ॥ २ ॥

अङ्गस्य, णौ ४१. स्फायो वः २५९७ ।

अङ्गस्य, णौ ४२. शदेरगती तः २५९८ ।

अङ्गस्य, णौ

४३. रुहः षोऽन्यतरस्याम् २५९९ ।

रुह् को पकारादेश होता है णि परे रहने पर ।

इकारादेशः

अङ्गस्य

४४. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः अतः ४९

४६३ । इत् ४८

प्रत्ययस्थ क से पूर्व अ को आप् परे रहने पर इ होता है, यदि वह आप् सुप् से परे न हो ।

* मामकरनरकयोरुपसंख्यानम् ।

* त्यक्त्यपोश्च ।

अङ्गस्य, अतः, इत् ४५. न यासयोः ४६४ ।

या सा को इकार आदेश नहीं होता है ।

* त्यकनश्च निषेधः ।

* पावकादीनां छन्दसि ।

* आशिषि वुनश्च न ।

* उत्तरपदलोपे न ।

* क्षिपकादीनां च ।

(२४९) (वा० ग०) । क्षिपका ध्रुवका चरका सेवका करका चटका अवका लहका अलका कन्यका ध्रुवका एडका ॥ इति क्षिपकादिः । आ-कृतिगणः ॥

* तारका ज्योतिषि ।

* वर्णका तान्तवे ।

* वर्तका शकुनौ प्राचाम् ।

* अष्टका पितृदेवत्ये ।

* सूतकापुत्रिकाबृन्दारकाणां वेति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, अतः, इत् ४६. उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ४६५ । उ-म् ४८

* धात्वन्तयकोस्तु नित्यम् ।

आ-ने ४९

औदीच्य मत में य क से पहले वाले (स्त्रीलिङ्ग) आ के स्थान में जो अ है उसे विकल्प से इत् होता है यदि वह क से पूर्व हो तथा बाद में आप् हो ।

अङ्गस्य, अतः, इत् ४७. भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वा नञ्पूर्वाणामपि ४६६
उ-म्, आ-ने

औदीच्य मत में ही नञपूर्वक भी भस्त्रा एषा अजा ज्ञा द्वा स्वा के अ को इ नहीं होता है ।

अङ्गस्य, अतः, इत् ४८. अभाषितपुंस्काच्च ४६७ ।
उ-म्, आ-ने

अ-कात् ४९

अभाषितपुंस्क से विहित आ के स्थान में स्थित अकार को इकारादेश नहीं होता है उदीच्य मत में ।

अङ्गस्य, अतः, अ- ४९. आदाचार्याणाम् ४६८ ।
कात्, आ-ने

आचार्यों के मत में पूर्वसूत्र के विषय में विकल्प से आत् होता है ।

अङ्गस्य	५०. ठस्येकः ११७० ।	ठस्य ५१	(अङ्गनिमित्त प्रत्यय) के ठ को इक् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ठस्य	५१. इसुसुक्तान्तकः १२२१ । * दोष उपसंख्यानम् । कुत्वविधिः		इस् उस् उक् त् अन्त वाले शब्दों से ठ को क होता है ।
अङ्गस्य	५२. चजोः कु घिण्यतोः २८६३ । * निष्ठायामनिट इति वक्तव्यम् ।	च-कु ६९	घित् ण्यत् परे रहने पर च ज को कवर्ग आदेश होता है ।
अङ्गस्य, च-कु	५३. नयङ्क्वादीनां च २८६४ ।		न्यङ्कु आदि शब्दों को कवर्ग आदेश होता है ।
(२५०) न्यङ्कु मद् भृगु दूरेपाक फलेपाक क्षणे- पाक दूरेपाका फलेपाका दूरेपाकु फलेपाकु तक्र (तत्र) वक्र (चक्र) व्यतिषङ्ग (अनुषङ्ग) अवसर्ग (उपसर्ग) श्वपाक मांसपाक (मासपाक) मूलपाक कपोतपाक उलूकपाक । 'संज्ञाया मेघनिदाघावदाघार्घाः' १८० । न्यग्रोध वीरुत् । इति न्यङ्क्वादि ।।			
अङ्गस्य, च-कु	५४. हो हन्तोर्णिन्नेषु ३५८ ।	हः ५५ हन्तेः ५६	हन् के ह को कवर्गादेश होता है यदि पर में ङित् णित् तथा नकार रहे ।
अङ्गस्य, च-कु, ह-	५५. अभ्यासाच्च २४३० । नोः, हः	अ-त् ५८	अभ्यासोत्तर हन्ति के हकार को कवर्ग होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, ह-	५६. हेरचङि २५३१ । नोः, अ-त्		अभ्यासोत्तर हिनोति के हकार को कवर्ग होता है, यदि पर में चङ् न हो ।
अङ्गस्य, च-कु, अ-	५७. सन्लिटोर्जेः २३३१ । त्	स-टोः ५८	अभ्यासोत्तर जि को कवर्ग होता है, यदि पर में सन् और लिट् हो ।
अङ्गस्य, च-कु, अ-	५८. विभाषा चेः २५२५ । त्, स-टोः		अभ्यासोत्तर चि को कवर्ग होता है विकल्प से, यदि पर में सन् और लिट् हो ।
अङ्गस्य, च-कु	५९. न क्वादेः २८७५ ।	न ६९	कु आदि वाले धातुओं के च ज को कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	६०. अजिब्रज्योश्च २८७६ ।	॥ ३ ॥	अज ब्रज को भी कवर्ग नहीं होता है ।
अङ्गस्य, च-कु, न	६१. भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः २८७७ ।		पाणि और उपताप अर्थ में भुज और न्युब्ज निपातित होते हैं ।

अङ्गस्य, च-कु, न ६२. प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे २८७८ ।

अङ्गस्य, च-कु, न ६३. वञ्चेर्गती २८७९ ।

अङ्गस्य, च-कु, न ६४. ओक उचः के २८८० ।

अङ्गस्य, च-कु, न ६५. ण्य आवश्यक २८८१ ।

ण्ये ६९

अङ्गस्य, च-कु, न, ६६. यजयाचरुचप्रवचर्चश्च २८८२ ।

ण्ये * त्यजेश्च ।

अङ्गस्य, च-कु, न, ६७. वचोऽशब्दसंज्ञायाम् २८८३ ।

ण्ये अङ्गस्य, च-कु, न, ६८. प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे २८८४ ।

ण्ये अङ्गस्य, च-कु, न, ६९. भोज्यं भक्ष्ये २८८५ ।

ण्ये अङ्गस्य ७०. घोलोपो लेटि वा ३५८४ ।

लोपः ७२

अङ्गस्य, लोपः ७१. ओतः श्यनि २५१० ।

अङ्गस्य, लोपः ७२. क्सस्याचि २३३७ ।

क्सस्य ७३

अङ्गस्य, क्सस्य ७३. लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये २३६५ ।

अङ्गस्य ७४. शमामष्टानां दीर्घः श्यनि २५१९ । दीर्घः ७६

अङ्गस्य, दीर्घः ७५. ष्ठिवुक्लमुचमां शिति २३२० । शिति ८२
* आङि चम इति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, शिति दीर्घः ७६. क्रमः परस्मैपदेषु २३२२ ।

अङ्गस्य, शिति ७७. इषुगमियमां छः २४०० ।

अङ्गस्य, शिति ७८. पाघ्राध्मास्थाम्रादाण्दृश्यर्तिसर्तिशदसदां
पिबजिग्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्चधौशी-

यज्ञाङ्ग में प्रयाज अनुयाज निपातित होते हैं ।

गति अर्थ में वञ्च को कवर्गदिश नहीं होता है ।

उच धातु को क प्रत्यय में ओक निपातित होता है ।

आवश्यक अर्थ में ण्य पर रहने पर कवर्ग नहीं होता है ।

यज याच रुच प्रवच ऋच को ण्य पर रहने पर कवर्ग नहीं होता है ।

अशब्द संज्ञा में ण्यत् पर रहने पर वच को कवर्ग नहीं होता है ।

शक्यार्थ में प्रयोज्य नियोज्य निपातित होते हैं ।

भक्ष्य अर्थ में भोज्य निपातित होता है ।

लेट् पर रहने पर घु संज्ञकों का विकल्प से लोप होता है ।

श्यन् पर रहने पर ओकारात् अङ्ग का लोप होता है ।

अजादि प्रत्यय रहने पर क्स का लोप होता है ।

दुह दिह लिह गुह के क्स का विकल्प से लोप होता है यदि पर में आत्मनेपदीय दन्त्य तङ् हो ।

श्यन् पर रहने पर शम आदि आठ धातुओं को दीर्घ होता है ।

शित् पर रहने पर ष्ठिवुक्लमु आचम् को दीर्घ होता है ।

परस्मैपद में शित् पर रहने पर क्रम को दीर्घ होता है ।

शित् पर रहने पर इषु गमि यम को छकार होता है ।

शित् पर रहने पर पा घ्रा ध्मा स्था म्रा दाण् दृशि अर्ति सर्ति शद सद

यसीदाः २३६० ।

अङ्गस्य, शिति ७९. ज्ञाजनोर्जा २५११ ।

अङ्गस्य, शिति ८०. प्वादीनां ह्रस्वः २५५८ ॥ ४ ॥ ह्रस्वः ८१

अङ्गस्य, शिति, ह्र- ८१. मीनातेर्निगमे ३५८५ ।

स्वः

अङ्गस्य, शिति ८२. मिदेर्गुणः २३४६ ।

गुणः ८८

अङ्गस्य, गुणः ८३. जुसि च २४८१ ।

अङ्गस्य, गुणः ८४. सार्वधातुकार्धधातुकयोः २१६८ । सा-योः ८६

अङ्गस्य, गुणः, सा- ८५. जाग्रोऽविचिण्णलङित्सु २४८० ।

योः

अङ्गस्य, गुणः, सा- ८६. पुगन्तलघूपधस्य च २१८९ ।

पु-स्य ८७

योः

अङ्गस्य, गुणः, पु- ८७. नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके २५०३ न ८८

स्य

* बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम् ।

पिति ९४

सा-के १०१

अङ्गस्य, गुणः, सा- ८८. भूसुवोस्तिङि २२२४ ।

के, पिति, न

अङ्गस्य, सा-के, ८९. उतो वृद्धिर्लुकि हलि २४४३ ।

पिति

वृद्धिः ९०

हलि १००

अङ्गस्य, हलि, सा- ९०. ऊर्णोतेर्विभाषा २४४५ ।

के, पिति, वृद्धिः

ऊर्णोते ९१

अङ्गस्य, हलि, सा- ९१. गुणोऽपृक्ते २४४८ ।

के, पिति, ऊर्णोतेः

धातु को क्रमशः पिब जिघ्र धम
तिष्ठ मन यच्छ पश्य ऋच्छ धौ
शीय सीद आदेश होते हैं ।

ज्ञा और जन को जा आदेश होता
है शित् पर रहने पर ।

पू आदि (प्वादि) धातुओं को
शित् पर रहने पर ह्रस्व होता
है ।

निगम में शित् पर रहने पर मीनाति
को ह्रस्व होता है ।

अङ्ग मिद के इक् को गुण होता
है शित् पर रहने पर ।

जुस् पर रहने पर इगन्त अङ्ग को
गुण होता है ।

इगन्त अङ्ग को गुण होता है
सार्वधातुक आर्धधातुक प्रत्यय पर
रहने पर ।

यदि वि चिण् णल् डित् पर में न
हों तो जागृ को गुण होता है ।

पुगन्त तथा लघूपध अङ्ग को गुण
होता है पर में सार्वधातुक आर्ध-
धातुक के रहने पर ।

अभ्यस्त संज्ञक लघूपध को गुण
नहीं होता है, यदि पर में सार्वधातुक
पित् हो ।

सार्वधातुक तिङ् पर रहने पर भू
सू को गुण नहीं होता है ।

लुक् होने पर हलादि पित् सार्व-
धातुक पर रहने पर उकारान्त अङ्ग
को वृद्धि होती है ।

ऊर्णोति को हलादि पित् सार्वधातुक
में विकल्प से वृद्धि होती है ।

पित् सार्वधातुक में अपृक्त हल्
पर रहने पर ऊर्णोति को गुण
होता है ।

अङ्गस्य, हलि, सा- ९२. तृणह इम् २५४५ ।
के, पिति

अङ्गस्य, हलि, सा- ९३. ब्रुव ईट् २४५२ ।
के, पिति

अङ्गस्य, हलि, सा- ९४. यङो वा २६५१ ।
के, पिति, ईट्

अङ्गस्य, हलि, सा- ९५. तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके २४४४ ।
के, ईट्, वा

अङ्गस्य, हलि, सा- ९६. अस्तिसिचोऽपृक्ते २२२५ ।
के, ईट्

अङ्गस्य, हलि, सा- ९७. बहुलं छन्दसि ३५८६ ।
के, ईट्, अचो, अ-
पृक्ते

अङ्गस्य, हलि, सा- ९८. रुदश्च पञ्चभ्यः २४७५ ।
के, ईट्, अपृक्ते

अङ्गस्य, हलि, सा- ९९. अङ्गार्ग्यगालवयोः २४७६ ।
के, रु-भ्यः, अपृक्ते

अङ्गस्य, हलि, सा- १००. अदः सर्वेषाम् २४२६ । ॥ ५ ॥
के, अट्, अपृक्ते

अङ्गस्य, सा-के १०१. अतो दीर्घो यजि २१७० ।

अङ्गस्य, अतः, दी- १०२. सुपि च २०२ ।
जि

अङ्गस्य, अतः, सुपि १०३. बहुवचने झल्येत् २०५ ।

अङ्गस्य, अतः, एत् १०४. ओसि च २०७ ।

ईट् ९८

वा ९५

अ-चोः ९७

अपृक्ते १००

रु-भ्यः ९९

अट् १००

अतः १०४

दी-जि १०२

सुपि १०३

एत् १०६

ओसि १०५

हल् पित् सार्वधातुक में तृणह को
इम् आगम होता है ।

ब्रू उत्तरवर्ती हलादि पित् सार्वधातुक
को ईडागम होता है ।

यङ् उत्तरवर्ती हलादि पित् सार्व-
धातुक को विकल्प से ईट् आगम
होता है ।

तु रु षुञ् शम अम से परे हलादि
सार्वधातुक को विकल्प से ईट् आ-
गम होता है ।

अस् और सिजन्त अङ्ग से परे
अपृक्त सार्वधातुक को ईट् का आगम
होता है ।

अस्तिसिच् के सार्वधातुक को
विकल्पेन ईट् होता है वेद में ।

रुद आदि पाँच धातुओं से परे अपृक्त
हलादि सार्वधातुक को ईट् का आगम
होता है ।

रुदादि पाँच धातुओं से परे अपृक्त
सार्वधातुक को अट् का आगम
होता है (गार्ग्य गालव के मत में)।
अद (भक्षणे) से उत्तर अपृक्त
सार्वधातुक को अट् का आगम
सब आचार्यों के मत में होता है ।

यजादि सार्वधातुक परे रहने पर
अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है ।
अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है यजादि
सुप् परे रहने पर ।

बहुवचन में झलादि सुप् परे रहने
पर अदन्त अङ्ग को एकार आदेश
होता है ।

अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता
है ओस् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, ओसि, एत् १०५. आङि चापः २८९ ।	आपः १०६	आबन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है यदि पर में तृतीया का एकवचन या ओस् हो ।
अङ्गस्य, आपः, एत् १०६. संबुद्धौ च २८८ ।	सं-द्धौ १०८	सम्बुद्धि परे रहने पर आबन्त अङ्ग को एत्व होता है ।
अङ्गस्य, सं-द्धौ १०७. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः २६७ ।		अम्बार्थ और नद्यन्त को ह्रस्व होता है सम्बुद्धि में ।
अङ्गस्य, सं-द्धौ १०८. ह्रस्वस्य गुणः २४२ ।	ह्रस्वस्य १०९	ह्रस्वान्त अङ्ग को सम्बुद्धि में गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः, ह- १०९. जसि च २४१ ।	गुणः १११	जस् परे रहने पर ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है ।
स्वस्य		डि और सर्वनामस्थान परे रहने पर ऋकारान्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, गुणः ११०. ऋतो डिसर्वनास्थानयोः २७५ ।		
अङ्गस्य, गुणः १११. घेडिति २४५ ।	डिति ११५	घ्यन्त अङ्ग को गुण होता है डित् प्रत्यय परे रहने पर ।
अङ्गस्य, डिति ११२. आणनद्याः २६८ ।		नद्यन्त से उत्तर डित् प्रत्यय को आट् आगम होता है ।
अङ्गस्य, डिति ११३. याडापः २९० ।	आपः ११४	आबन्तोत्तर डित् प्रत्यय को याट् का आगम होता है ।
अङ्गस्य, डिति, आ- ११४. सर्वनामः स्याड्ब्रह्मस्वश्च २९१ ।	स्याट् ११५	आबन्त सर्वनाम से परे डित् को स्याट् आगम तथा डित् के पूर्व को ह्रस्व होता है ।
पः		द्वितीया तथा तृतीया से उत्तर डित् को विकल्प से स्याट् आगम तथा ह्रस्व होता है ।
अङ्गस्य, डिति, ११५. विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् २९३ ।		
स्याट्		
अङ्गस्य ११६. डेराम्नद्याग्नीभ्यः २७० ।	डेः ११९	नद्यन्त आबन्त तथा नी से उत्तर डि को आम् होता है ।
अङ्गस्य, डेः, आम् ११७. इदुब्ध्याम् २९७ ।	आम् ११७	इकार उकार नदीसंज्ञक से उत्तर डि को आम् आदेश होता है ।
अङ्गस्य, डेः, इ-म् ११८. औत् २५६ ।	इ-म् ११८	इत् उत् से उत्तर डि को औ आदेश होता है ।
अङ्गस्य, डेः, औत् ११९. अच्च घेः २४७ ।	औत् ११९	घि संज्ञक से उत्तर डि को औ आदेश होता है तथा घि को अत् आदेश होता है ।
	घेः १२०	

अङ्गस्य, घे:

१२०. आडो नाडंस्त्रियाम् २४४ । ॥६॥

स्त्रीलिङ्ग से अन्यत्र घि उत्तरवर्ती
आड् (टा) को ना होता है ।

देविकादेवतास्फायो भुजमीनातेरतो दीर्घो

विंशतिः ॥

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य

तृतीयः पादः ।

चतुर्थः पादः ।

णौ ह्रस्वविधिः

अङ्गस्य

१. णौ चड्युपधाया ह्रस्वः २३१४ ।

णौ-याः ८

चङ्परक णि परे रहने पर अङ्गोपधा
को ह्रस्व होता है ।

अङ्गस्य, णौ-याः,

२. नाग्लोपिशास्वृदिताम् २५७२ ।

ह्रस्वः ३

अग्लोपी शास ऋदित् धातु के
उपधा को ह्रस्व नहीं होता है, पर
में चङ्परक णि के रहने पर ।

ह्रस्वः

अङ्गस्य, णौ-याः,

३. भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम्

ह्रस्वः

२५६५ ।

भ्राज भास भाष दीप जीव मील
पीड की उपधा को चङ्परक णि
के यहाँ विकल्प से ह्रस्व होता है ।

* काण्यादीनां वेति वक्तव्यम् ।

(२५१) (वा० ग०) । कण रण भण श्रण

लुप हेठ हायि वाणि (चाणि) लोटि (लोठि)

लोपि ॥ इति कणादिः ॥

अङ्गस्य, णौ-याः

४. लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य २५८७ ।

णि चङ् परे रहने पर पा के उपधा
का लोप होता है तथा अभ्यास ऋ
ईकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, णौ-याः

५. तिष्ठतेरित् २५८८ ।

इत् ६

णि चङ् के यहाँ स्था के उपधा को
विकल्प से इकार होता है ।

अङ्गस्य, णौ-याः,

६. जिघ्रतेर्वा २५८९ ।

वा ७

घ्रा के उपधा को विकल्प से इकार
आदेश होता है णि चङ् में ।

इत्

अङ्गस्य, णौ-याः,

७. उर्हृत् २५९७ ।

उ-त् ८

उपधा के ऋ को ऋत् विकल्प से
होता है णि चङ् में ।

वा

अङ्गस्य, णौ-याः,

८. नित्यं छन्दसि ३५८७ ।

उ-त्

अङ्गस्य

९. दयतेर्दिगि लिटि २३८८ ।

लिटि १२

उपधा के ऋ को नित्य ऋ होता है
णि चङ् के यहाँ वेद में ।

* दिग्यादेशेन द्वित्वबाधनमिष्यते ।

अङ्गस्य, लिटि

१०. ऋतश्च संयोगादेर्गुणः २३७९ ।

गुणः ११

लिट् में दय को, दिगि आदेश होता
है ।

ऋकारान्त संयोगादि को लिट् के
यहाँ गुण होता है ।

अङ्गस्य लिटि, गुणः ११. ऋच्छत्युताम् २३८३ ।

ऋच्छति के ऋ को तथा ऋकारान्त को लिट् परे रहने पर गुण होता है ।

अङ्गस्य, लिटि १२. शृदृप्रां ह्रस्वो वा २४९५ ।

ह्रस्वः १५

शृ दृ पृ को विकल्प से ह्रस्व होता है लिट् में ।

अङ्गस्य, ह्रस्वः १३. केऽणः ८३४ ।

अणः १४

क प्रत्यय परे रहने पर अण् को ह्रस्व होता है ।

अङ्गस्य, ह्रस्वः, अ- १४. न कपि ८३५ ।

न-पि १५

कप् प्रत्यय परे रहने पर अण् को ह्रस्व नहीं होता है ।

णः

अङ्गस्य, ह्रस्वः, न- १५. आपोऽन्यतरस्याम् ८९२ ।

आबन्त अङ्ग को कप् के यहाँ विकल्प से ह्रस्व नहीं होता है ।

पि

अङ्गस्य १६. ऋदृशोऽङि गुणः २४०६ ।

अङि २०

ऋवर्णान्त और दृश को अङ् परे रहने पर गुण होता है ।

अङ्गस्य, अङि १७. अस्यतेऽप्युक् २५२० ।

अङ् परे रहते अस्यति को थुक् आगम होता है ।

अङ्गस्य, अङि १८. श्रयतेरः २४२१ ।

श्रयति को अङ् परे रहने पर अकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, अङि १९. पतः पुम् २३५५ ।

अङ् परे रहने पर पत् को पुम् आगम होता है ।

अङ्गस्य, अङि २०. वच उम् २४५४ ।

॥ १ ॥

वच को उम् आगम होता है अङ् परे रहने पर ।

अङ्गस्य २१. शीङः सार्वधातुके गुणः २४४१ ।

शीङः २२

सार्वधातुक परे रहने पर शीङ् को गुण होता है ।

अङ्गस्य, शीङः २२. अयङिच क्ङिति २६४९ ।

जि-ति २५

यकारादि कित् ङित् परे रहने पर शी को अयङ् होता है ।

अङ्गस्य, जि-ति २३. उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः २७०२ ।

उ-त् २४

उपसर्गोत्तर ऊह को ह्रस्व होता है यकारादि कित् ङित् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, जि-ति, उ- २४. एतेर्लिङि २४५७ ।

त्

उपसर्गोत्तर एति को ह्रस्व होता है लिङ् में यकारादि कित् ङित् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, जि-ति २५. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः २२९८ ।

अ-योः २९

अकृत यकार असार्वधातुक यकार कित् ङित् परे रहने पर अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है ।

दीर्घः २६

अङ्गस्य, अ-योः, २६. च्वौ च २१२० ।

च्वौ २७

अजन्त अङ्ग को च्वि परे रहने पर दीर्घ होता है ।

दीर्घः

अङ्गस्य, अ-योः, २७. रीङ् तः १२३४ । चौ	ऋतः ३०	ऋकारान्त अङ्ग को रीङ् आदेश होता है अकृद्येकार असार्वधातुक यकार च्वि परे रहने पर ।
अङ्गस्य, ऋतः, अ- २८. रिङ् शयग्लिङ्क्षु २३६७ । योः	श-क्षु २९	श यक् लिङ् असार्वधातुक यकार परे रहने पर रिङ् आदेश होता है ऋकारान्त अङ्ग को ।
अङ्गस्य, ऋतः, अ- २९. गुणोऽतिसंयोगाद्योः २३८० । योः, श-क्षु	गु-द्योः ३०	यक् यदि आर्धधातुक लिङ् परे रहने पर ऋ तथा संयोगादि ऋदन्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, ऋतः, गु- ३०. यङि च २६३३ । द्योः	यङि ३१	यङ् परे रहने पर ऋ, संयोगादि ऋदन्त अङ्ग को गुण होता है ।
अङ्गस्य, यङि ३१. ई घ्राध्मोः २६४८ ।	ई ३३	घ्रा ध्मा को यङ् परे रहने पर ईकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, ई ३२. अस्य च्वौ २११८ ।	अस्य ३५	अवर्णान्त अङ्ग को च्वि परे रहने पर ई होता है ।
अङ्गस्य, अस्य, ई ३३. क्यचि च २६५८ ।	क्यचि ३९	क्यच् परे रहने पर अवर्णान्त अङ्ग को ईकार होता है ।
अङ्गस्य अस्य क्यचि ३४. अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु २६६१ ।		बुभुक्षा पिपासा गर्ध अर्थ में अशनाय उदन्य धनाय निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य अस्य क्यचि ३५. न छन्दस्यपुत्रस्य ३५८८ । * अपुत्रादीनामिति वक्तव्यम् ।	छन्दसि ३९	पुत्रभिन्न अवर्णान्त को वेद में क्यच् परे रहने पर दीर्घ और ई नहीं होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि, ३६. दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति क्यचि ३५८९ ।		दुरस्युः द्रविणस्युः वृषण्यति रिषण्यति वेद में निपातित होते हैं ।
अङ्गस्य, छन्दसि, ३७. अश्वाघस्यात् ३५९० । क्यचि	आत् ३८	वेद में क्यच् परे रहने पर अश्व और अघ को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि, ३८. देवसुम्रयोर्यजुषि काठके ३५९१ । क्यचि, आत्		काठक यजुष् में क्यच् परे रहने पर देव और सुम्र को आकार आदेश होता है ।
अङ्गस्य, छन्दसि, ३९. कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ३५९२ । क्यचि		ऋक् में क्यच् परे रहने पर कवि अध्वर पृतना के अन्त्य का लोप होता है ।
अङ्गस्य ४०. द्यतिस्यतिमास्थामिति किति ३०७४ । इत् ४१ ॥ २ ॥ तिकिति ४७		द्यति स्यति मा स्था को इकार होता है तादि कित् प्रत्यय परे रहने पर ।

अङ्गस्य, तिकिति, ४१. शाच्छोरन्यतरस्याम् ३०७५ ।। २ ।।

इत् * इयतेरित्वं व्रते नित्यमिति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, तिकिति ४२. दधातेर्हिः ३०७६ ।

हिः ४४

अङ्गस्य, तिकिति, ४३. जहातेश्च क्त्वि ३३३१ ।

ज-त्वि ४४

हिः

अङ्गस्य, तिकिति, ४४. विभाषा छन्दसि ३५९३ ।

छन्दसि ४५

हिः, ज-त्वि

अङ्गस्य, तिकिति, ४५. सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च

छन्दसि ३५९४ ।

अङ्गस्य, तिकिति ४६. दो ददघोः ३०७७ ।

दः घोः ४७

अङ्गस्य, तिकिति, ४७. अच उपसर्गात्तः ३०७८ ।

तः ४९

दः घोः

अङ्गस्य, तः ४८. अपो भि ४४२ ।

* मासश्छन्दसीति वक्तव्यम् ।

* स्ववस्वतवसोर्मास उषसश्च त इष्यते ।

अङ्गस्य, तः ४९. सः स्यार्धधातुके २३४२ ।

सः ५२

सि ५७

अङ्गस्य, -सि, सः ५०. तासस्त्योलोपः २१९१ ।

ता-योः ५२

लोपः ५३

अङ्गस्य, लोपः, सि, ५१. रि च २१९२ ।

सः, ता-योः

अङ्गस्य, लोपः, सि, ५२. ह एति २२५० ।

सः, ता-योः

अङ्गस्य, लोपः, सि ५३. यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः २४८८ ।

अङ्गस्य, सि ५४. सनि भीमाधुरभलभशकपतपदामच इस् सनि ५७

२६२३ ।

अचः ५६

* राधो हिंसायां सनीस् वाच्यः ।

अङ्गस्य, सनि, सि, ५५. आप्ताप्यृधामीत् २६१९ ।

ईत् ५६

अचः

अङ्गस्य, सनि, सि, ५६. दम्भ इच्च २६२१ ।

अचः, ईत्

तादि कित् में शा छा को इकार आदेश होता है ।

धा को हि आदेश होता है तादि कित् परे रहने पर ।

क्त्वा परे रहने पर हा को हि होता है ।

वेद में हा को विकल्प से हि होता है ।

वेद में सुधित वसुधित नेमधित धिष्व धिषीय निपातित होते हैं ।

घु संज्ञक दा को दद् होता है तादि कित् परे रहने पर ।

अजन्तोपसर्ग से उत्तर घु संज्ञक दा को त होता है तादि कित् में ।

अप् को भादि प्रत्यय परे रहने पर त आदेश होता है ।

सकारादि आर्धधातुक परे रहने पर सकारान्त अङ्ग को तकार आदेश होता है ।

सकारादि प्रत्यय परे रहने पर तास् और अस्ति के स का लोप होता है ।

रेफादि प्रत्यय के यहाँ भी तास् अस्ति के स का लोप होता है । तास् अस्ति के स को ह होता है यदि पर में ए हो ।

य और इ परे रहने पर दीधी वेवी के अन्त्य का लोप होता है ।

भी मा घु रभ लभ शक पत पद के अच् के स्थान पर इस् होता है सादि सन् परे रहने पर ।

आप् णप् ऋध के अच् को ई होता है सादि सन् परे रहने पर ।

दम्भ के अच् को इ और ई होता है सादि सन् परे रहने पर ।

अङ्गस्य, सनि, सि ५७. मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा २६२४ ।

अकर्मक मुच् को विकल्प से गुण होता है सादि सन् पर रहने पर ।

अभ्यासविकारः

अङ्गस्य ५८. अत्र लोपोऽभ्यासस्य २६२० ।

अभ्या-य ९७. सूत्र ५४ से ५७ तक अभ्यास का लोप होता है । यहाँ से अध्याय समाप्ति तक अभ्यासस्य का अधिकार है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य ५९. ह्रस्वः २१८० ।

अभ्यास को ह्रस्व होता है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य ६०. हलादिः शेषः २१७९ ।। ३ ।। शेषः ६१

अभ्यास का आदि हल् शेष रहता है, शेष का लोप होता है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६१. शर्पूर्वाः खयः २२५९ ।

अभ्यास का शर्पूर्व खय रहता है, शेष लुप्त होता है ।

शेषः

अङ्गस्य, अभ्या-य ६२. कुहोश्चुः २२४५ ।

चुः ६४

अभ्यास के कु ह को चु होता है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६३. न कवतेर्यङि २६४१ ।

न, यङि ६४

कवति के अभ्यास को यङ् पर रहते चु नहीं होता है ।

चुः

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६४. कृषेच्छन्दसि ३५९५ ।

छन्दसि ६५

वेद में यङ् पर रहने पर कृष के अभ्यास को चु नहीं होता है ।

चुः, न, यङि

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६५. दाधर्तिदर्थर्तिदर्थर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्याप-
नीफणत्संसनिष्यदत्करिक्त्कनिक्कदद्भरि-
भ्रहविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतःसरीसृपतंव-
रीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च ३५९६ ।

वेद में दाधर्ति दर्थर्ति दर्थर्षि बोभूतु तेतिक्ते अलर्षि आपनीफणत् सं- निष्यदत् करिक्त् कनिक्कदत् भरिभ्रत् दविध्वतः दविद्युतत् तरित्रतः सरी- सृपतं वरीवृजत् मर्मृज्य आगनीगन्ति निपातित होते हैं ।

अङ्गस्य, अभ्या-य ६६. उरत् २२४४ ।

ऋवर्णान्त अभ्यास को अकार आदेश होता है ।

अङ्गस्य, अभ्या-य ६७. द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम् २३४४ । सं-म् ६८

द्युति स्वापि के अभ्यास को सम्प्र- सारण होता है लिट् में ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६८. व्यथो लिटि २३५३ ।

लिटि ७४

व्यथ के अभ्यास को सम्प्रसारण होता है लिट् में ।

सं-म्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ६९. दीर्घ इणः किति २४५६ ।

दीर्घः ७०

कित् लिट् पर रहने पर इण् के अभ्यास को दीर्घ होता है ।

लिटि

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७०. अत आदेः २२४८ ।

लिट् पर रहने पर अभ्यास के आदि अकार को दीर्घ होता है ।

लिटि, दीर्घः

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७१. तस्मान्नुड् द्विहलः २२८८ ।

त-ट् ७२

उस दीर्घभूत आ से परे द्विहल् को नुट् का आगम होता है ।

लिटि

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७२. अङ्गोत्तेश्च २५३३ ।

लिटि, त-ट्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७३. भवतेरः २१८१ ।

लिटि

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७४. ससूवेति निगमे ३५९७ ।

लिटि, अः

अङ्गस्य, अभ्या-य ७५. निजां त्रयाणां गुणः श्लौ २५०२ ।

अः ७४

त्र-म् ७६

श्लौ ७८

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७६. भृजामित् २४९६ ।

श्लौ, त्र-म्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७७. अर्तिपिपत्योश्च २४९३ ।

श्लौ, इत्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७८. बहुलं छन्दसि ३५९८ ।

श्लौ, इत्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ७९. सन्यतः २३१७ ।

इत्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८०. ओः पुयण्यपरे २५७७

सनि, इत्

॥ ४ ॥ ओः, अपरे ८१

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८१. स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां

सनि, इत्, ओः, वा २५७८ ।

अपरे

अङ्गस्य, अभ्या-य ८२. गुणो यङ्लुकोः २६३० ।

य-कोः ९०

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८३. दीर्घोऽकितः २६३२ ।

य-कोः

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८४. नीग्वञ्चुखंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम्

य-कोः

२६४२ ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८५. नुगतोऽनुनासिकान्तस्य २६४३ ।

य-कोः

नुक् ८७

दीर्घोभूत से उत्तर अशू को नुद् का आगम होता है ।

लिट् में भू के अभ्यास को अ होता है ।

वेद में ससूव का निपातन होता है ।

णिजिर् आदि तीन धातुओं के अभ्यास को गुण होता है श्लु में ।

भृज् आदि तीन धातुओं के अभ्यास को इत् होता है श्लु में ।

अर्तिपिपति के अभ्यास को श्लु में इ होता है ।

वेद में श्लु में अभ्यास को इकार बहुलतया होता है ।

अकारान्त अभ्यास को इ होता है सन् परे रहने पर ।

सन् में अभ्यास उ को इ होता है यदि पवर्ग यण् जकार पर में हो जिसके बाद अ हो ।

स्रवति शृणोति द्रवति प्रवति प्लवति च्यवति के अभ्यास उ को सन् में अवर्णपर यण् परे रहने पर विकल्प से इ होता है ।

इगन्त अभ्यास को यङ् और यङ्लुक् में गुण होता है ।

अकित् अभ्यास को दीर्घ होता है यङ् और यङ् लुक् परे रहने पर ।

वञ्चु खंसु ध्वंसु भ्रंसु कत पत पद स्कन्द धातु के अभ्यास को नीक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में ।

अनुनासिकान्त धातु के अभ्यास अ को नुक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८६. जपजभदहदशभञ्जपशां च २६३८ ।

य-कोः, नुक्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८७. चरफलोश्च २६३९ ।

य-कोः, नुक्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८८. उत्परस्यातः २६३७ ।

य-कोः, च-लोः

अङ्गस्य, अभ्या-य, ८९. ति च ३०३७ ।

य-कोः, उत्, अतः,

च-लोः

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९०. रीगृदुपधस्य च २६४४ ।

य-कोः * रीगृत्वत इति वक्तव्यम् ।

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९१. रुग्रिकौ च लुकि २६५२ ।

रीक्, ऋ-स्य

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९२. ऋतश्च २६५३ ।

लुकि, रीक्, रु-कौ

अङ्गस्य, अभ्या-य ९३. सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनगलोपे २३१६ । ल-नि ९४

च-पे ९७

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९४. दीर्घो लघोः २३१८ ।

च-पे, ल-नि

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९५. अत्स्मृदृत्वरप्रथमदस्तृस्पशाम् २५६६ । अत् ९७

च-पे

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९६. विभाषा वेष्टिचेष्ट्योः २५८३ ।

च-पे, अत्

अङ्गस्य, अभ्या-य, ९७. ई च गणः २५७३ ।

च-पे, अत्

जप जभ दह दश भञ्ज पश के अभ्यास को नुक् आगम होता है यङ् और यङ्लुक् में ।

च-लोः ८९

चर फल के अभ्यास को नुक् होता है यङ् यङ्लुक् में ।

उत्, अतः ८९

चर फल के अभ्यासोत्तर अ को उ होता है यङ् और यङ्लुक् में ।

तादि प्रत्यय पर रहने पर चर फल के अ को उ होता है ।

रीक् ९२

ऋदुपध धातु के अभ्यास को रीक् आगम होता है यङ् यङ्लुक् में ।

ऋ-स्य ९१

रु-कौ ९२

ऋदुपध के अभ्यास को रुक् रीक् भी होता है यङ्लुक् में ।

लुकि ९२

ऋदन्त धातु के अभ्यास को रुक् रीक् आगम होता है यङ्लुक् में ।

चङ्पर णि से पूर्व लघु पर अभ्यास को सन्वत् कार्य होता है यदि णि अगलोपी न हो ।

लघु अभ्यास को दीर्घ होता है यदि पर में चङ्पर अनगलोपी णि हो ।

स्मृ दृ त्वर प्रथमदस्तृ स्पश धातु के अभ्यास को अत् आदेश होता है चङ्पर णि के यहाँ ।

चङ्पर णि पर रहने पर वेष्टि चेष्टि के अभ्यास को विकल्प से अत् आदेश होता है ।

गण के अभ्यास को ई और अत् होता है, यदि पर में चङ्पर णि हो ।

णौ च शीडः शाच्छोः शर्पूर्वाः

स्रवतिसप्तदश ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्याध्यास्य

चतुर्थः पादः अध्यायश्च ।

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ।

आष्टमिक द्वित्वम्

	१. सर्वस्य द्वे २१३९ ।	स-द्वे १५	यहाँ से 'सर्वस्य द्वे' का अधिकार है । अर्थात् 'सर्वस्य पदस्य द्वे भवतः' जुड़ेगा ।
स-द्वे	२. तस्य परमाग्रेडितम् ८३ ।	आ-तम् ३	द्विरक्त का जो दूसरा रूप होगा, उसकी आग्रेडित संज्ञा होगी ।
स-द्वे, आ-तम्	३. अनुदात्तं च ३६७० ।		जो आग्रेडित है वह अनुदात्त भी है ।
स-द्वे	४. नित्यवीप्सयोः २१४० ।		नित्य और वीप्सा अर्थ में द्वित्व होता है ।
स-द्वे	५. परेर्वर्जनि २१४१ ।		वर्जन में परि को द्वित्व होता है ।
	* परेर्वर्जनि वा वचनम् ।		
स-द्वे	६. प्रसमुपोदः पादपूरणे ३५९९ ।		यदि द्विर्वचन से ही पादपूर्ति हो रही हो तो पादपूरण में प्र सम् उप उद् को द्वित्व होता है ।
स-द्वे	७. उपर्यध्यधसः सामीप्ये २१४२ ।		सामीप्य की विवक्षा में उपरि अधि अधस् को द्वित्व होता है ।
स-द्वे	८. वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयाऽसंमतिकोपकु- त्सनभर्त्सनिषु २१४३ ।		असूया असंमति कोप कुत्सन भर्त्सन में आमन्त्रित वाक्य को द्वित्व होता है ।
स-द्वे	९. एकं बहुव्रीहिवत् २१४४ ।	ब-वत् १०	एक शब्द को द्वित्व होता है जो बहुव्रीहिवत् होता है ।
स-द्वे, ब-वत्	१०. आबाधे च २१४५ ।		आबाध (पीडा) में शब्द को द्वित्व होता तथा वह बहुव्रीहिवत् होता है ।
स-द्वे	११. कर्मधारयवदुत्तरेषु २१४६ ।	क-वत् १४	यहाँ से द्विर्वचन कर्मधारयवत् होगा, यह अधिकार है ।
स-द्वे, क-वत्	१२. प्रकारे गुणवचनस्य २१४७ ।		सादृश्य में गुणवचन शब्द को द्वित्व होता है ।
	* आनुपूर्व्ये द्वे वाच्ये ।		
	* क्रियासमभिहारे च ।		
	* डाचि विवक्षिते द्वे बहुलम् ।		
	* स्त्रीनपुंसकयोरुत्तरपदस्थाया विभक्तेराभ्यावो वा यक्तव्यः ।		

स-द्वे, क-वत् १३. अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् २१४८

अकृच्छ्र में प्रिय और सुख को विकल्प से द्वित्व होता है।

स-द्वे, क-वत् १४. यथास्वे यथायथम् २१४९ ।

यथास्व में यथायथम् निपातित होता है।

स-द्वे १५. द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्र-
प्रयोगाभिव्यक्तिषु २१५० ।

रहस्य मर्यादावचन व्युत्क्रमण यज्ञ-
पात्रप्रयोग अभिव्यक्ति अर्थ में द्वन्द्व
शब्द निपातित होता है।

पदविकाराः

१६. पदस्य ४०१ ।

पदस्य ८.३.५४ (अपदान्ताधिकार से पूर्व तक)
पदस्य का अधिकार है।

पदस्य १७. पदात् ४०२ ।

पदात् ६९ (प्राक् कुत्सने तक) पदात् का
अधिकार है।

पदस्य, पदात् १८. अनुदात्तं सर्वमपादादौ ४०३ ।
* समानवाक्ये निघातयुष्मदस्मदादेशा व-
क्तव्याः ।

अपा-दौ ७४ (पाद परिसमाप्ति तक) अनुदात्तं
सर्वम् अपादादौ का अधिकार है।

पदस्य, पदात् अ- १९. आमन्त्रितस्य च ३६५४ ।

पद से परे आमन्त्रित का सब अनु-
दात्त होता है।

पादौ २०. युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वा- यु-दोः २६
दौ नावौ ४०४ । ॥ १ ॥ ष-योः २२

युष्मद् अस्मद् (पद) से परे षष्ठी
चतुर्थी द्वितीया (द्विवचन) में स्थित
(विभक्ति) को वाम् और नौ आदेश
क्रमशः होते हैं।

पदस्य, पदात् अपा- २१. बहुवचनस्य वस्नसौ ४०५ ।
दौ, यु-दो, ष-योः

बहुवचनान्त युष्मद् अस्मद् से षष्ठी
चतुर्थी द्वितीयास्थ विभक्ति को क्र-
मशः वस् नस् आदेश होते हैं।

पदस्य, पदात् २२. तेमयावेकवचनस्य ४०६ ।
अपा-दौ, यु-दो, ष-
योः

एक-स्य २३ एकवचनान्त युष्मद् अस्मद् से षष्ठी
चतुर्थीस्थ विभक्ति को क्रमशः ते मे
आदेश होते हैं।

पदस्य, यु-दोः पदात् २३. त्वामौ द्वितीयायाः ४०७ ।
अपा-दौ, एक-स्य

एकवचनान्त युष्मद् अस्मद् से
द्वितीयास्थ विभक्ति को क्रमशः त्वा
मा आदेश होते हैं।

पदस्य, यु-दोः पदात् २४. न चवाहाहैवयुक्ते ४०८ ।
अपा-दौ

न २६

च वा ह अह एव के योग में वाम्
नौ आदि नहीं होते हैं।

पदस्य, यु-दोः पदात् २५. पश्यार्थेऽनानालोचने ४०९ ।
अपा-दौ, न

पश्यार्थ से अनालोचन में प्रवृत्त
युष्मद् अस्मद् को वाम् नौ आदि
नहीं होते हैं।

पदस्य, यु-दोः पदात् २६. सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ४१० ।
अपा-दौ, न

अनुदात्तविधिः

पदस्य, पदात्, अ- २७. तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः
पा-दौ ३९३४ ।

(२५२) गोत्र ब्रुव प्रवचन प्रहसन प्रकथन प्र-
त्ययन प्रपञ्च प्राय न्याय प्रचक्षण विचक्षण अवच-
क्षण स्वाध्याय भूयिष्ठ (भूयिष्ठ) वानाम ॥ इति
गोत्रादिः ॥

पदस्य, पदात्, अ- २८. तिङ्ङितिङः ३९३५ ।
पा-दौ

तिङ् ६६

पदस्य, तिङ्, पदात्, २९. न लुट् ३९३६ ।
अपा-दौ

न ६६

पदस्य, तिङ्, न, ३०. निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चणकच्चिद्-
पदात्, अपा-दौ यत्रयुक्तम् ३९३७ ।

पदस्य, तिङ्, न, ३१. नह प्रत्यारम्भे ३९३८ ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ३२. सत्यं प्रश्ने ३९३९ ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ३३. अङ्गाप्रातिलोम्ये ३९४० ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ३४. हि च ३९४१ ।

पदात्, अपा-दौ,

अप्रा-म्ये

पदस्य, तिङ्, न, ३५. छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम् ३९४२ ।

पदात्, अपा-दौ, हि

पदस्य, तिङ्, न, ३६. यावद्यथाभ्याम् ३९४३ ।

पदात्, अपा-दौ

अप्रा-म्ये ३४

हि ३५

याव-म् ३८

विद्यमान पूर्व प्रथमान्तोत्तर युष्मद्
अस्मद् को वाम् नौ आदि आदेश
विकल्प से नहीं होते हैं ।

तिङन्त से परे कुत्सन और आभी-
क्ष्य अर्थ में वर्तमान गोत्र आदि
शब्द अनुदात्त होते हैं ।

अतिङन्त पद से परे तिङन्त
अनुदात्त होता है ।

अतिङन्त पद से परे लुट् अन्त
वाला तिङन्त अनुदात्त नहीं होता
है ।

यत् यदि हन्त कुवित् नेत् चेत्
चण् कच्चित् यत्र निपातों से युक्त
तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

प्रत्यारम्भ में नह से युक्त तिङन्त
अनुदात्त नहीं होता है ।

सत्यम् पद से युक्त तिङन्त अनु-
दात्त नहीं होता है, यदि प्रश्न
हो ।

अप्रातिलोम्य में अङ्ग से युक्त
तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

अप्रातिलोम्य हि से युक्त तिङन्त
अनुदात्त नहीं होता है ।

वेद में अनेक भी साकाङ्क्ष तिङन्त
हि युक्त रहने पर अनुदात्त नहीं
होते हैं ।

यावत् यथा से युक्त तिङन्त अनु-
दात्त नहीं होता है ।

पदस्य, तिङ्, न, ३७. पूजायां नानन्तरम् ३९४४ ।

पदात्, अपा-दौ,

याव-म्

पदस्य, तिङ्, न, ३८. उपसर्गव्यपेतं च ३९४५ ।

पदात्, अपा-दौ,

याव-म्, पू-म्, न

पदस्य, तिङ्, न, ३९. तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ३९४६ । पू-म् ४०

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ४०. अहो च ३९४७ ।

॥ २ ॥ अहो ४१

पदात्, अपा-दौ, पू-

म्

पदस्य, तिङ्, न, ४१. शेषे विभाषा ३९४८ ।

विभाषा ४२

पदात्, अपा-दौ,

अहो

पदस्य, तिङ्, न, ४२. पुरा च परीप्सायाम् ३९४९ ।

पदात्, अपा-दौ,

विभाषा

पदस्य, तिङ्, न, ४३. नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ३९५० ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ४४. किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ३९५१ किं-द्धम् ४५

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ४५. लोपे विभाषा ३९५२ ।

पदात्, अपा-दौ,

किं-द्धम्

पदस्य, तिङ्, न, ४६. एहिमन्ये प्रहासे लृट् ३९५३ ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ४७. जात्वपूर्वम् ३९५४ ।

अपूर्वम् ४९

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ४८. किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ३९५५ ।

पदात्, अपा-दौ,

अपूर्वम्

पदस्य, तिङ्, न, ४९. आहो उताहो चानन्तरम् ३९५६ ।

आहो ५०

पदात्, अपा-दौ,

अपूर्वम्

पूजा में यावत् यथा से अनन्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

पूजा में यावत् यथा से युक्त उप-सर्गव्यपेत तिङन्त भी अनुदात्त नहीं होता है ।

तु पश्य पश्यत अह से युक्त तिङन्त पूजा में अनुदात्त नहीं होता है ।

पूजा में अहो युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

पूजातिरिक्त में अहोयुक्त तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

परीप्सा में पुरा से युक्त तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

अनुज्ञाप्रार्थना में ननु युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

क्रिया प्रश्न में वतर्मान किम् से युक्त अनुपसर्ग अप्रतिषिद्ध तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

क्रिया प्रश्न में अप्रयुक्त किम् के रहने पर भी अनुपसर्ग अप्रतिषिद्ध तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

प्रहास में एहि मन्ये से युक्त लृङ् अनुदात्त नहीं होता है ।

पूर्वपदविहीन जातु से युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

अविद्यमान पूर्व चिदुत्तर जो किंवृत्त है उससे युक्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

अपूर्व आहो उताहो से युक्त अनन्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

पदस्य, तिङ्, न, ५०. शेषे विभाषा ३९५७ ।

पदात्, अपा-दौ,

आहो

पदस्य, तिङ्, न, ५१. गत्यर्थलोटा लृण चेत्कारकं सर्वान्यत् ग-टा ५३

पदात्, अपा-दौ ३९५८ ।

न-क ५३

स-त् ५३

पदस्य, तिङ्, न, ५२. लोट् च ३९५९ ।

लोट् ५४

पदात्, अपा-दौ, ग-

टा, न-क, स-त्

पदस्य, तिङ्, न, ५३. विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ३९६० ।। वि-मम् ५४

पदात्, अपा-दौ, ग-

टा, न-क, स-त्,

लोट्

पदस्य, तिङ्, न, ५४. हन्त च ३९६१ ।

पदात्, अपा-दौ,

लोट्, वि-मम्

पदस्य, तिङ्, न, ५५. आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ३९६२ ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ५६. यद्धितुपरं छन्दसि ३९६३ ।

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ५७. चनचिदिवगोत्रादितद्धिताप्रेडितेष्वगतेः अगतेः ५८

पदात्, अपा-दौ

३९६४ ।

पदस्य, तिङ्, न, ५८. चादिषु च ३९६५ ।

पदात्, अपा-दौ,

अगतेः

पदस्य, तिङ्, न, ५९. चवायोगे प्रथमा ३९६६ ।

प्रथमा ६५

पदात्, अपा-दौ

पदस्य, तिङ्, न, ६०. हेति क्षियायाम् ३९६७ । ।। ३ ।। क्षि-म् ६८

पदात्, अपा-दौ, प्र०

पदस्य, तिङ्, न, ६१. अहेति विनियोगे च ३९६८ ।

पदात्, अपा-दौ,

प्र०, क्षि-म्

आहो उताहो से युक्त व्यवहित तिङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

गत्यर्थ लोट् से युक्त लृङन्त तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि जिस कारक में लोट् हो वहाँ ही लृट् भी हो ।

गत्यर्थ लोट् से युक्त लोङन्त अनुदात्त नहीं होता है ।

गत्यर्थ लोट् से युक्त सोपसर्ग उत्तमवर्जित लोङन्त विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

सोपसर्ग उत्तमवर्जित लोङन्त हन्त से युक्त होने पर विकल्प से अनुदात्त नहीं होता है ।

अनन्तिक में आम से पर एकपद व्यवहित भी आमन्त्रित अनुदात्त नहीं होता है ।

यत् हि तु से पर तिङन्त वेद में अनुदात्त नहीं होता है ।

अगति से उत्तर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि पर में चन चिद् इव गोत्रादितद्धित आप्रेडित हों । अगति से पर तिङन्त अनुदात्त नहीं होता है यदि चादि पर में हों ।

च वा के योग में प्रथमा तिङ् विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है । आचारभेद में ह से युक्ता प्रथमा तिङ् विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।

विनियोग में अह से युक्त प्रथमा तिङ् विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।

पदस्य, तिङ्, न, ६२. चाहलोप एवेत्यवधारणम् ३९६९ ।

पदात्, अपा-दौ,

प्र०, क्षि-म्

पदस्य, तिङ्, न, ६३. चादिलोपे विभाषा ३९७० ।

विभाषा ६५

पदात्, अपा-दौ,

प्र०, क्षि-म्

पदस्य, तिङ्, न, ६४. वैवावेति च छन्दसि ३९७१ ।

छन्दसि ६५

पदात्, अपा-दौ,

प्र०, विभाषा क्षि-म्

पदस्य, तिङ्, न, ६५. एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ३९७२ ।

पदात्, अपा-दौ,

प्र०, विभाषा, क्षि-

म्, छन्दसि

पदस्य, तिङ्, न, ६६. यद्वृत्तान्नित्यम् ३९७३ ।

पदात्, अपा-दौ, * अत्र व्यवहिते कार्यमिष्यते ।

क्षि-म्

पदस्य, पदात्, अ- ६७. पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ३९७४ पू-तम् ६८

पा-दौ, क्षि-म्

(२५३) काष्ठ दारुण अमातापुत्र वेश अनाज्ञात
अनुज्ञात अपुत्र अयुत अद्भुत (अनुक्त) भृश घोर
सुख परम सु अति ॥ इति काष्ठादिः ॥

पदस्य, पदात्, अ- ६८. सगतिरपि तिङ् ३९७५ ।

स-ङ् ६९

पा-दौ, क्षि-म्, पू- * गतिग्रहणे उपसर्गग्रहणमिष्यते ।

तम्

पदस्य, पदात्, अ- ६९. कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ३९७६ ।

पा-दौ, स-ङ् * क्रियाकुत्सन इति वाच्यम् ।

* पूतिश्चानुबन्ध इति वाच्यम् ।

* वा बह्वर्थमनुदात्तमिति वाच्यम् ।

पदस्य, अपा-दौ ७०. गतिर्गतौ ३९७७ ।

गतिः ७१

पदस्य, अपा-दौ, ७१. तिङि चोदात्तवति ३९७८ ।

गतिः

पदस्य, अपा-दौ ७२. आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ४१२ । आ-वत् ७४

च अह के लोप होने पर ही प्रथमा तिङ्विभक्ति अनुदात्त नहीं होती है ।

चादि लोप रहने पर प्रथमातिङ्विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।

वेद में वै वाव से युक्त प्रथमा तिङ्विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।

तुल्यार्थ एक अन्य शब्दों से युक्त प्रथमा द्विङ् विभक्ति विकल्प से अनुदात्त नहीं होती है ।

यद्वृत्त से उत्तर तिङन्त नित्य अनुदात्त नहीं होता है ।

पूजन काष्ठ आदि से पूजित वचन (सुबन्त) अनुदात्त होता है ।

पूजन काष्ठ आदि से पूजित सगति अगति तिङन्त अनुदात्त होता है ।

कुत्सन में गोत्रादि वर्जित सुबन्त परक अगति सगति तिङ् अनुदात्त होता है ।

गति परे रहने पर गति अनुदात्त होता है ।

उदात्तवत् तिङन्त पर रहने पर गति अनुदात्त होता है ।

पूर्व में आमन्त्रित अविद्यमानवत् होता है ।

पदस्य, आ-वत्, ७३. नामन्त्रिते समानाधिकरणे सामान्यवचनम् ना-णे ७४
अपा-दौ ४१३ ।

पदस्य, आ-वत्, ७४. सामान्यवचनं विभाषितं विशेषवचने
अपा-दौ, ना-णे ३६५५ ।

* बहुवचनमित्यपि भाष्यम् ।

सर्वस्य बहुवचनस्य शेषेऽहेति चतुर्दश ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य प्रथमः

पादः ।

द्वितीयः पादः ।

असिद्धत्वम्

पदस्य

१. पूर्वत्रासिद्धम् १२ ।

* पूर्वत्रासिद्धीयमद्विवचने ।

पू-म् ८.४.६८

अध्याय परिसमाप्ति तक पूर्वत्र असिद्धम् का अधिकार है अर्थात् सपादसप्ताध्यायी के प्रति त्रिपादी असिद्ध है और त्रिपादी में भी पूर्व के प्रति पर शास्त्र असिद्ध है । कृत् में सुप् स्वर संज्ञा तुग्विधि में पूर्वत्र न लोप असिद्ध होता है । मु भाव नाभाव में न लोप असिद्ध नहीं होता है ।

पदस्य, पू-म्

२. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ३५३

पदस्य, पू-म्

३. न मु ने ४३९ ।

स्वरविधिः

पदस्य, पू-म्

४. उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य

अनु-स्य ६

३६५७ ।

पदस्य, पू-म्, अनु-स्य

५. एकादेश उदात्तेनोदात्तः ३६५८ ।

ए-न ६

पदस्य, पू-म्, ए-न, अनु-स्य

६. स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ ३६५९ ।

उदात्त यण् स्वरित यण् से परे अनुदात्त को स्वरित होता है । उदात्त के साथ अनुदात्त का एकादेश स्वरित होता है । अनुदात्त पदादि में उदात्त के साथ जो एकादेश होता है वह विकल्प से उदात्त स्वरित होता है ।

न लोपः

पदस्य, पू-म्

७. नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य २३६ ।

न-स्य ८

* अहो नलोपप्रतिषेधः ।

प्रातिपदिक के अन्त्य न का लोप होता है ।

पदस्य, पू-म्, नस्य ८. न डिसंबुद्धयोः ३५२ ।

* डावुत्तरपदे प्रतिषेधः ।

मतुब्बत्वम्

पदस्य, पू-म् ९. मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः १८९७ मतोः १६

वः १५

डि और सम्बुद्धि में न का लोप नहीं होता है ।

यव आदि से अतिरिक्त मान्त मोपधान्त अकारान्त अकारोपधान्त से परे मतुप् के म को व होता है ।

(२५४) यव दल्मि ऊर्मि (उर्मि) भूमि कृमि
क्रुञ्चा वशा द्राक्षा ध्राक्षा ध्रजि (व्रजि) ध्वजि निजि
सिजि सञ्जि हरित् ककुत् मरुत् इक्षु द्रु मधु ॥ इति
यवादिः ॥ आकृतिगणः ॥

पदस्य, पू-म्, वः, १०. झयः १८९८ ।

मतोः

पदस्य, पू-म्, वः, ११. संज्ञायाम् १८९९ ।

सं-म् १३

मतोः

पदस्य, पू-म्, सं- १२. आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्गुमण्व-
म्, वः, मतोः चर्मण्वती १९०० ।

झयन्त से उत्तर मतुप् के म को व होता है ।

संज्ञाविषय में मतुप् के म को व होता है ।

संज्ञा में आसन्दीवत् अष्ठीवत् चक्रीवत् कक्षीवत् गुमण्वत् चर्मण्वती निपातित होते हैं ।

संज्ञा में उदधि अर्थ में उदक को उदन् भाव निपातित होता है ।

सौराज्य में राजन्वान् निपातित होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- १३. उदन्वानुदधौ च १९०१ ।

म्, वः, मतोः

पदस्य, पू-म्, वः, १४. राजन्वान्सौराज्ये १९०२ ।

मतोः

पदस्य, पू-म्, वः, १५. छन्दसीरः ३६०० ।

छन्दसि १७

मतोः

पदस्य, पू-म्, छ- १६. अनो नुट् ३६०१ ।

नुट् १७

न्दसि, मतोः

पदस्य, पू-म्, छ- १७. नादघस्य ३६०२ ।

न्दसि, नुट्

* भूरिदाव्यस्तुड्वाच्यः ।

* ईद्रथिनः ।

लत्वविधिः

पदस्य, पू-म् १८. कृपो रो लः २३५० ।

रो लः २२

कृप धातु के रेफ को लकार आदेश होता है ।

* वालमूललध्वसुरालमङ्गुलीनां वा लो रमापद्यत
इति वाच्यम् ।

* कपिलकादीनां संज्ञाच्छन्दसोर्वेति वाच्यम् ।

(२५५) (वा० ग०) । कपिलक निर्विलीक
लोमानि पांसुल कल्म शुक्ल कपिलिका तर्पिलिका
तर्पिलि ॥ आकृतिगणोऽयम् । इति कपिल-
कादिः ॥

पदस्य, पू-म्, रोलः १९. उपसर्गस्यायतौ २३२६ ।

पदस्य, पू-म्, रोलः २०. ओ यङि २६३९ ।

॥ १ ॥ ग्रः २१

पदस्य, पू-म्, ग्रः, २१. अचि विभाषा २५४१ ।

विभाषा २२

रोलः

पदस्य, पू-म्, वि- २२. परेश्च घाङ्कयोः ३२६२ ।

भाषा, रोलः * घ इति स्वरूपस्य ग्रहणम् ।

* योगे चेति वाच्यम् ।

लोपविधिः

पदस्य, पू-म् २३. संयोगान्तस्य लोपः ५४ ।

सं-स्य २४

* यणः प्रतिषेधो वाच्यः ।

लोपः २९

पदस्य, पू-म्, सं- २४. रात्सस्य २८० ।

सस्य २८

स्य, लोपः

पदस्य, पू-म्, सस्य, २५. धि च २२४९ ।

लोपः * सङीति वक्तव्यम् ।

पदस्य, पू-म्, सस्य, २६. झलो झलि २२८१ ।

झलि ३७

लोपः

पदस्य, पू-म्, झलि, २७. ह्रस्वादङ्गात् २३६९ ।

सस्य, लोपः

पदस्य, पू-म्, झलि, २८. इट ईटि २२६६ ।

सस्य, लोपः

पदस्य, पू-म्, झलि, २९. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ३८० ।

अन्ते ३७

लोपः

झलिपदान्ते च विकारः

पदस्य, पू-म्, झलि, ३०. चोः कुः ३७८ ।

अन्ते

पदस्य, पू-म्, झलि, ३१. हो ङः ३२४ ।

अन्ते

अयति परे रहने पर उपसर्ग के
रेफ को लादेश होता है ।

यङ् में गृ धातु के रेफ को लकारा-
देश होता है ।

अजांदि प्रत्यय परे रहने पर गृ
धातु के रेफ को विकल्प से ल-
कारादेश होता है ।

घ और अङ्क शब्द परे रहने पर
परि के रेफ को विकल्प से लकार
होता है ।

संयोगान्त पद का लोप होता है ।

संयोगान्तोत्तर रेफ से परे स का
लोप होता है ।

धकारादि प्रत्यय परे रहे तो स का
लोप होता है ।

झल् से उत्तर स का लोप होता है
यदि पर में झल् हो ।

यदि झल् पर में हो तो ह्रस्वान्त
अङ्ग से स का लोप होता है ।

इट् से उत्तर स का लोप होता है
यदि बाद में ईट् हो ।

पदान्त में या झल् परे रहने पर
तत्पूर्व संयोग के आदि में होने
वाले स क का लोप होता है ।

चवर्ग को कवर्ग होता है पदान्त
में या झल् परे रहने पर ।

ह को ङ होता है पदान्त में या
झल् परे रहने पर ।

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३२. दादेर्धातोर्घः ३२५ ।

अन्ते

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३३. वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ३२७ ।

अन्ते

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३४. नहो धः ४४० ।

अन्ते

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३५. आहस्थः २४५१ ।

अन्ते

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३६. ब्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः

अन्ते

२९४ ।

पदस्य, पृ-म्, झलि, ३७. एकाचो बशो भष्ठाषन्तस्य स्थ्वोः ३२६ वशो-भष् ३८

अन्ते

स्थ्वोः ३८

पदस्य, पृ-म्, स्थ्वोः ३८. दधस्तथोश्च २५०१ ।

वशो-भष्

पदस्य, पृ-म् ३९. झलां जशोऽन्ते ८४ ।

पदस्य; पृ-म् ४०. झषस्तथोर्धोऽधः २२८० ॥ २ ॥

पदस्य, पृ-म् ४१. षढोः कः सि २९५ ।

निष्ठाविकारः

पदस्य, पृ-म् ४२. रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ३०१६ नि-नः ६१

पदस्य, पृ-म्, नि- ४३. संयोगादेरातो धातोर्धण्वतः ३०१७ ।

नः

पदस्य, पृ-म्, नि- ४४. ल्वादिभ्यः ३०१८ ।

नः

* ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः ।

* दुग्धोर्दीर्घश्च ।

* पूजो विनाशे ।

* सिनोतेर्ग्रासिकर्मकर्तृकस्य ।

दादि धातु के ह को ष होता है पदान्त में या झल् पर रहने पर ।

पदान्त में या झल् पर रहने पर द्रुह मुह ण्णुह णिह के ह को विकल्प से ष होता है ।

नह के ह को ध होता है यदि पर में झल् हो पदान्त हो ।

झल् पर रहने पर आह के ह को थ होता है ।

ब्रश्च भ्रस्ज सृज मृज यज राज भ्राज के छकारान्त शकारान्त को ष होता है पदान्त में या झल् पर रहने पर ।

धात्ववयव एकाच् एवं झषन्त के अवयव बश को भष् होता है झल् या स ध्व पर रहने पर ।

द्विरुक्त झषन्त धाज् के बश को भष् होता है त थ सध्व पर रहने पर ।

पदान्त में वर्तमान झल् को जश् होता है ।

झष् उत्तरवर्ती त थ के स्थान पर ध होता है दधाति को छोड़ कर ।

ष और ढ को क् होता है यदि बाद में स हो ।

र और द से परे निष्ठा के त को न होता है और पूर्व को द होता है ।

संयोगादि आकारान्त यण्वानु धातु से परे निष्ठा के त को न होता है ।

लूज् से वृज् तक के धातु से उत्तरवर्ती निष्ठा त को न होता है ।

पदस्य, पू-म्, नि- ४५. ओदितश्च ३०१९ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ४६. क्षियो दीर्घात् ३०१५ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ४७. श्योऽस्पर्शे ३०२१ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ४८. अञ्चोऽनपादाने ३०२४ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ४९. दिवोऽविजिगीषायाम् ३०२८ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५०. निर्वाणोऽवाते ३०२९ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५१. शुपः कः ३०३० ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५२. पचो वः ३०३१ ।

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५३. क्षायो मः ३०३२ ।

मः ५४

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५४. प्रस्थोऽन्यतरस्याम् ३०३४ ।

नः, मः

पदस्य, पू-म्, नि- ५५. अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः

नः

३०३५ ।

* उत्फुल्लसंफुल्लयोरुपसंख्यानम् ।

पदस्य, पू-म्, नि- ५६. नुदविदोन्द्राग्राहीभ्योऽन्यतरस्याम्

नः

३०३८ ।

पदस्य, पू-म्, नि- ५७. न ध्याख्यापृमूर्च्छिमदाम् ३०४० ।

न ६१

नः

पदस्य, पू-म्, नि- ५८. वित्तौ भोगप्रत्यययोः ३०४१ ।

नः, न

पदस्य, पू-म्, नि- ५९. भित्तं शकलम् ३०४२ ।

नः, न

पदस्य, पू-म्, नि- ६०. ऋणमाधमर्ण्ये ३०४३

॥ ३ ॥

नः, न

ओदित् धातु से उत्तर निष्ठा के त को न होता है ।

दीर्घ क्षिय् से उत्तर निष्ठा के त को न होता है ।

स्पर्श में श्यै उत्तर निष्ठा के त को न होता है ।

अनपादान में अञ्चुत्तर निष्ठा त को न होता है ।

अविजिगीषा में दिव् उत्तर निष्ठा त को न होता है ।

अवात में निरपूर्वक वा से परे निष्ठा त को न होता है ।

शुष् से उत्तर निष्ठा त को क होता है ।

पच् से उत्तर निष्ठा त को व होता है ।

क्षै से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से म होता है ।

प्रपूर्वक स्तयै से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से म होता है ।

उपसर्ग विहीन फुल्ल क्षीब कृश उल्लाघ निपातित होते हैं ।

नुद विद उन्दी त्रा ग्रा ही से उत्तर निष्ठा त को विकल्प से न होता है ।

ध्या ख्या पृ मूर्च्छि मद से उत्तर निष्ठा त को न नहीं होता है ।

यदि भोग और प्रत्ययवाच्य हो तो विद लाभे से उत्तर निष्ठा त को न नहीं होता है ।

शकल अर्थ में भित्त निपातित होता है ।

आधमर्ण्य में ऋ से निष्ठा ऋण निपातित होता है ।

पदस्य, पृ-म्, नि- ६१. नसत्तनिपत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि
नः, न ३६०३ ।

कुत्वविधिः

पदस्य, पृ-म् ६२. क्विन्प्रत्ययस्य कुः ३७७ ।

कुः ६३

वेद में नसत्त निषत्त अनुत्त प्रतूर्त
सूर्त गूर्त निपातित होते हैं ।

पदस्य, पृ-म्, कुः ६३. नशेर्वा ४३१ ।

क्विन् प्रत्ययान्त को पदान्त में कु
होता है ।

पदान्त में नश् को विकल्प से कवर्ग
होता है ।

पदस्य, पृ-म् ६४. मो नो धातोः ३४१ ।

मो-तोः ६५

मकारान्त धातु के म को पदान्त में
न होता है ।

पदस्य, पृ-म्, मो- ६५. म्वोश्च २३०९ ।

मकारान्त धातु को न होता है यदि
पर में म व हो ।

तोः

रुत्वविधिः

पदस्य, पृ-म् ६६. ससजुषो रुः १६२ ।

रुः ७०

सकारान्त और सजुष् को रु होता
है ।

पदस्य, पृ-म्, रुः ६७. अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च ३४१६ ।

अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः निपातित
होते हैं ।

पदस्य, पृ-म्, रुः ६८. अहन् ४४३ ।

अहन् ६९

अहन् के न को रु होता है ।

* रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम् ।

पदस्य, पृ-म्, रुः, ६९. रोऽसुपि १७२ ।

रः ७१

अहन् कै न को रु होता है यदि
पर में सुप् न हो ।

अहन्

पदस्य, पृ-म्, रुः, ७०. अम्ररूधरवरित्युभयथा छन्दसि ३६०४ । उभ-सि ७१

वेद में अम्रस् ऊधस् अवस् को रु
होता है नहीं भी होता है ।

रः

* अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः ।

(२५६) (वा० ग०) । अहर् गीर् धूर् ॥

इत्यहरादिः ॥

(२५७) पति गण पुत्र ॥ इति पत्यादिः ॥

पदस्य, पृ-म्, रः, ७१. भुवश्च महाव्याहतेः ३६०५ ।

वेद में महाव्याहति के भुवस् को
उभयथा होता है ।

उभ-सि

पदस्य, पृ-म् ७२. वसुसंसुध्वंस्वनडुहां दः ३३४ ।

दः ७५

वसु संसु ध्वंसु अनडुह को द होता
है ।

पदस्य, पृ-म्, दः ७३. तिष्यनस्तेः २४८४ ।

अस् को छोड़कर शेष सकारान्त
को द होता है तिप् में ।

पदस्य, पृ-म्, दः ७४. सिपि धातो रूर्वा २४८५ ।

सिपि ७५

सिप् परे रहने पर सकारान्त धातु
को रु द दोनों होते हैं ।

रूर्वा ७५

धातोः ७७

पदस्य, पृ-म्, दः, ७५. दश्च २४६८ ।

दकारान्त धातु को भी सिप् परे
रहने रु द दोनों होते हैं ।

धातोः, सिपि, रूर्वा

पदस्य, पू-म्, धातोः ७६. वोरूपधाया दीर्घ इकः ४३३ ।

वों: दी-कः ७९ रेफ और व से उत्तर धातु के
उ-या: ७८ उपधा इक् को दीर्घ होता है ।

पदस्य, पू-म्, उ- ७७. हलि च ३५४ ।

हलि ७८ हल् पर रहने पर रेफवकारान्त
धातूपधा के इक को दीर्घ होता
है ।

याः, धातोः, वों:

दी-कः

पदस्य, पू-म्, उ- ७८. उपधायां च २२६५ ।

याः, हलि, वों:, दी-

कः

पदस्य, पू-म्, वों:, ७९. न भकुर्छुराम् १६२९ ।

दी-कः

पदस्य, पू-म् ८०. अदसोऽसेर्दादु दो मः ४१९ ॥ ४ ॥ अदसः ८१

दात् ८१

दो-मः ८१

पदस्य, पू-म्, दोमः, ८१. एत ईद्वहुवचने ४३८ ।

दात्, अदसः

प्लुतोदात्तः

पदस्य, पू-म् ८२. वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ९३ ।

वा-टे: ९९

पदस्य, पू-म्, वा- ८३. प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ९४ ।

टे:

* स्त्रियां न ।

* भोराजन्यविशां वेति वाच्यम् ।

पदस्य, पू-म्, वा- ८४. दूराद्धूते च ९५ ।

दू-ते ८६

टे:

पदस्य, पू-म्, वा- ८५. हैहेप्रयोगे हैहयोः ९६ ।

टे:, दू-ते

पदस्य, पू-म्, वा- ८६. गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ९७

टे:, दू-ते

पदस्य, पू-म्, वा- ८७. ओमभ्यादाने ३६०६ ।

टे:

पदस्य, पू-म्, वा- ८८. ये यज्ञकर्मणि ३६०७ ।

टे:

पदस्य, पू-म्, वा- ८९. प्रणवष्टे: ३६०८ ।

टे:, य-णि

य-णि ९२

टे: ९०

‘वाक्य का टि प्लुत और उदात्त
है’ इसका अधिकाग है ।

अशूद्रविषयक प्रत्यभिवाद में प्रयुक्त
वाक्य का टि प्लुत उदात्त होता
है ।

दूर से बुलाने में प्रयुक्त वाक्य का
टि प्लुत तथा उदात्त होता है ।

है और हे युक्त बुलाने के वाक्य
में है हे ही प्लुत होता है ।

सूत्र ८३ से होने वाला प्लुत यदि
गुरु विषयक हो तो ऋकार वर्जित
अन्त्य टि अनन्त्य स्वर और आदि
स्वर को प्लुत होता है ।

अभ्यादान में ओम् शब्द प्लुत होता
है ।

यज्ञकर्म में ये प्लुत होता है ।

यज्ञ कर्म में दि को प्रणव होता
है ।

पदस्य, पृ-म्, वा- १०. याज्यान्तः ३६०९ ।

टेः, य-णि, टेः

पदस्य, पृ-म्, वा- ११. ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः ३६१० आदेः १२

टेः, य-णि

पदस्य, पृ-म्, वा- १२. अग्नीत्त्रेषणे परस्य च ३६११ ।

टेः, य-णि, आदेः

पदस्य, पृ-म्, वा- १३. विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः ३६१२ । विभाषा ९४

टेः

पदस्य, पृ-म्, वा- १४. निगृह्यानुयोगे च ३६१३ ।

टेः, विभाषा

पदस्य, पृ-म्, वा- १५. आप्रेडितं भर्त्सने ३६१४ ।

भर्त्सने ९६

टेः * भर्त्सने पर्यायेणेति वक्तव्यम् ।

पदस्य, पृ-म्, वा- १६. अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ३६१५ ।

टेः, भर्त्सने

पदस्य, पृ-म्, वा- १७. विचार्यमाणानाम् ३६१६ ।

वि-म् ९८

टेः

पदस्य, पृ-म्, वा- १८. पूर्वं तु भाषायाम् ३६१७ ।

टेः, वि-म्

पदस्य, पृ-म्, वा- १९. प्रतिश्रवणे च ३६१८ ।

टेः

पदस्य, पृ-म् १००. अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ३६१९ अ-म् १०२

॥ ५ ॥

पदस्य, पृ-म्, अ- १०१. चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ३६२०

म्

पदस्य, पृ-म्, अ- १०२. उपरिस्विदासीदिति च ३६२१ ।

म्

पदस्य, पृ-म् १०३. स्वरितमाप्रेडितेऽसूयासंमतिकोपकुत्स- स्व-म् १०५
नेषु ३६२२ ।

पदस्य, पृ-म्, स्व- १०४. क्षियाशीःप्रेषेषु तिङाकाङ्क्षम् ३६२३ ।

म्

पदस्य, पृ-म्, स्व- १०५. अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ३६२४

म्

यज्ञकर्म में याज्या के अन्त्य टि प्लुत होता है ।

यज्ञकर्म में ब्रूहि प्रेष्य श्रौषट् वौषट् आवह का आदि प्लुत होता है । अग्नीत्त्रेषण में आदि और पर दोनों प्लुत होते हैं ।

पृष्ट प्रतिवचन में हि विकल्प से प्लुत होता है ।

निगृह्यानुयोग में प्रयुक्त वाक्य का टि विकल्प से प्लुत होता है ।

भर्त्सने में आप्रेडित को प्लुत होता है ।

अङ्ग से युक्त तिङन्त यदि साकाङ्क्ष है तो प्लुत होता है ।

विचार्यमाण वाक्यों में टि प्लुत होता है ।

भाषा में विचार्यमाण का पूर्व प्लुत होता है ।

प्रतिश्रवण में वाक्य का टि प्लुत होता है ।

प्रश्नान्त अभिपूजित परे रहने पर अनुदात्त प्लुत होता है ।

उपमार्थ में यदि चित् का प्रयोग हो वाक्य का टि अनुदात्त प्लुत होता है ।

उपरिस्विदासीत् का टि अनुदात्त प्लुत होता है ।

असूया संमति कोप कुत्सन वाच्य हो तो आप्रेडित परे रहने पर स्वरित प्लुत होता है ।

क्षिया आशीःप्रेष वाच्य हो तो आकाङ्क्ष तिङन्त का स्वरित प्लुत हो जाता है ।

प्रश्न और आख्यान में अनन्त्य पद का भी टि प्लुत हो जाता है ।

पदस्य, पू-म् १०६. प्लुतावैच इदुतौ ३६२५ ।

पदस्य, पू-म् १०७. एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्या-
दुत्तरस्येदुतौ ३६२६ ।

* प्रश्नान्ताभिपूजितविचार्यमाणप्रत्यभिवादनया-
ज्यान्तेष्वेव ।

* पदान्तग्रहणं कर्तव्यम् ।

* आमन्त्रिते छन्दसि प्लुतविकारोऽयं वक्तव्यः ।

पदस्य, पू-म् १०८. तयोर्ध्वावचि संहितायाम् ३६२७ । सं-म ८.४.६७ उपर्युक्त इ उ को संहिता में य् व् भी होता है । अध्याय परिसमाप्ति तक संहितायाम् का अधिकार भी है ।

पूर्वत्राचि षढोर्नसत्तैत ईच्चिदित्यष्टौ ।।
इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य
द्वितीयः पादः ।

तृतीयः पादः ।

रुविधिः

पदस्य, पू-म्, सं- १. मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि ३६२८ । रु १२
म

* वन उपसंख्यानम् ।

* विभाषा भवद्भगवदध्वतामोच्चावस्य छन्दसि
भाषायां च ।

पदस्य, पू-म्, सं- २. अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा १३६ । अनु-कः ३
म, रु पू-स्य ४

वेद में मतुप् और वसु को सम्बुद्धि में रु होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- ३. आतोऽटि नित्यम् ३६३२ ।
म, रु, अ-कः, पू-
स्य

यहाँ (रु प्रकरण में) (रु के) पूर्वस्वर को विकल्प से अनुनासिक होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- ४. अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः १३७ ।
म, रु, पू-स्य

अट् परे रहने पर रु के पूर्वआ-स्वर को नित्य अनुनासिक होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- ५. समः सुटि १३५ ।

म, रु

* संपुंकानां सो वक्तव्यः ।

अनुनासिक को छोड़कर रु से पूर्वस्वर को अनुस्वार का आगम होता है
संहिता में सुट् परे रहने पर सम् को रु होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- ६. पुमः खय्यम्परे १३९ ।
म, रु

अम्परे ८

अम् परक खय् परे रहने पर पुम्
को रु होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- ७. नश्छव्यप्रशान् १४० ।
म, रु, अम्परे

नः १२

छवि ८

प्रशान् वर्जित नकारान्त पद को रु
होता है अम् परक छव् परे रहने
पर ।

पदस्य, पू-म्, सं- ८. उभयथर्क्षु ३६३० ।
म, रु, नः, छवि,
अम्परे

ऋक् में रु और न विकल्प से होते
हैं ।

पदस्य, पू-म्, सं- ९. दीर्घादिति समानपादे ३६३१ ।
म, रु, नः

ऋक्समानपाद में अट् परे रहने पर
दीर्घोत्तर पदान्त न् को रु होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- १०. नृन्ये १४१ ।
म, रु, नः

नृन् के न् को रु होता है यदि बाद
में प हो ।

पदस्य, पू-म्, सं- ११. स्वतवान्यायौ ३६३३ ।
म, रु, नः

स्वतवान् के न् को रु होता है यदि
बाद में पायु हो ।

पदस्य, पू-म्, सं- १२. कानाग्रेडिते १४३ ।
म, रु, नः

कान् के न् को रु होता है यदि पर
में आग्रेडित हो ।

पदस्य, पू-म्, सं- १३. ढो ढे लोपः २३३५ ।
म

लोपः १४

ढ परे रहने पर ढ का लोप होता
है ।

पदस्य, पू-म्, सं- १४. रो रि १७३ ।
म, लोपः

रः १७

र परे रहने पर र का लोप होता
है ।

पदस्य, पू-म्, सं- १५. खरवसानयोर्विसर्जनीयः ७६ ।
म, रः

वि-यः १६

यदि खर् पर में हो या अवसान हो
तो र को विसर्ग होता है ।

पदस्य, पू-म्, सं- १६. रोः सुप्ति ३३९ ।
म, रः, वि-यः

रोः १७

रु के र् को विसर्ग होता है यदि
बाद में सुप् हो ।

पदस्य, पू-म्, सं- १७. भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि १६७ ।
म, रः, रोः

भो-स्य २१
अशि २०

भो भगो अघो और अ यदि पूर्व में
हो तो रु के र को य् हो जाता है
यदि पर में अश् हो ।

पदस्य, पू-म्, सं- १८. व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाकटायनस्य १६८ ।
म, भो-स्य, अ-शि

व्योः २१

पदान्त व् य् के बाद यदि अश् हो
तो लघूच्चारण व् य् हो जाता है
विकल्प से ।

पदस्य, पू-म्, सं- १९. लोपः शाकल्यस्य ६७ ।
म, भो-स्य, अ-शि,
व्योः

लोपः २२

अवर्णपूर्व पदान्त य् व् का विकल्प
से लोप होता है, यदि पर में अश्
हो । (शाकल्य मत)

पदस्य, पू-म्, सं- २०. ओतो गार्ग्यस्य १६९ ।
म, भो-स्य, लोपः,
अ-शि, व्योः

॥ १ ॥

ओकार से उत्तर य् का लोप होता
है अश् परे रहने पर । (गार्ग्य के
मत में)

पदस्य, पू-म्, सं- २१. उजि च पदे १७० ।

म, लोपः, भो-स्य,

व्योः

पदस्य, पू-म्, सं- २२. हलि सर्वेषाम् १७१ ।

म, लोपः

पदस्य, पू-म्, सं- २३. मोऽनुस्वारः १२२ ।

म, हलि

पदस्य, पू-म्, सं- २४. नश्चापदान्तस्य झलि १२३ ।

म, मो-रः

पदस्य, पू-म्, सं- २५. मो राजि समः क्वौ १२६ ।

म

पदस्य, पू-म्, सं- २६. हे मपरे वा १२७ ।

म, मः

* यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम् ।

पदस्य, पू-म्, सं- २७. नपरे नः १२९ ।

म, वा, हे

पदस्य, पू-म्, सं- २८. ङ्णोः कुक्कुक्षारि १३० ।

म, वा

पदस्य, पू-म्, सं- २९. डः सि धुट् १३१ ।

म, वा, शरि

पदस्य, पू-म्, सं- ३०. नश्च १३२ ।

म, वा, शरि, सि-

ट्

पदस्य, पू-म्, सं- ३१. शि तुक् १३३ ।

म, वा, नः

पदस्य, पू-म्, सं- ३२. डमो ह्रस्वादचि डमुणित्यम् १३४ । अचि ३३

म

पदस्य, पू-म्, सं- ३३. मय उजो वो वा १०८ ।

म, अचि

विसर्गसत्वे

पदस्य, पू-म्, सं- ३४. विसर्जनीयस्य सः १३८ ।

म

हलि २३

मो-रः २४

मः २६

हे २७

वा ३१

शरि ३०

सि-ट् ३०

नः ३१

अचि ३३

वि-स्य ५४

अवर्णपूर्व पदान्त य् व् का लोप होता है उज् पर रहने पर ।

भो भगो अघो अ पूर्व पदान्त य् का लोप होता है यदि बाद में हल् हो ।

पदान्त म् को हल् पर रहने पर अनुस्वर आदेश होता है ।

अपदान्त न् म् को झल् पर रहने पर अनुस्वर आदेश होता है ।

सम् के म् को म् ही रहता है क्विबन्त राज पर रहने पर ।

म् को विकल्प से म् होता है यदि पर में मपरक ह हो ।

नकार परक ह यदि पर में हो तो म् को विकल्प से न् होता है ।

पदान्त ङ ण को कुक् टुक् आगम विकल्प से होता है, यदि बाद में शर् हो ।

ङकारान्त पद से उत्तरवर्ती स-कारादि पद को धुट् का आगम विकल्प से होता है ।

नकारान्त पद से उत्तर स को विकल्प से धुडागम होता है ।

पदान्त न को विकल्प से तुक् आगम होता है यदि पर में श हो ।

ह्रस्व से परे पदान्त डम् से उत्तर अच् को डमुट् का नित्य आगम होता है ।

मय् से उत्तर उज् को विकल्प से व आदेश होता है अच् पर रहने पर ।

(खर् पर रहने पर) विसर्जनीय को स् आदेश होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ३५. शर्परि विसर्जनीयः १५० ।
म, वि-स्य

वि-यः ३६

शर्परक खर् परे रहने पर विसर्ग को विसर्ग होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ३६. वा शरि १५१ ।
म, वि-स्य, वि-यः * खर्परि शरि वा विसर्गलोपो वक्तव्यः ।

विसर्ग को विकल्प से विसर्ग होता है शर् परे रहने पर ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ३७. कुप्वोः ऋक ऋषौ च १४२ ।
म, वि-स्य

कुप्वोः ५४

कु और पु यदि पर में हो तो विसर्ग को क्रमशः *क *प आदेश होते हैं तथा विसर्ग भी होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ३८. सोऽपदादौ १५२ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः * पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम् ।
* अनव्ययस्तेति वाच्यम् ।
* काम्ये रोरेवेति वाच्यम् ।

सः ५४

अ-दौ ३९

अपदादि कु पु परे रहने पर विसर्ग को स् होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ३९. इणः पः १५३ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, अ-दौ

षः ४८

अपदादि कु पु परे रहने पर इण् उत्तरवर्ती विसर्ग को ष् आदेश होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४०. नमस्पुरसोर्गत्योः १५४ ।। २ ।।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः

कु पु परे रहने पर गतिसंज्ञक नमः पुरः के विसर्ग को सकारादेश होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४१. इदुदुपथस्य चाप्रत्ययस्य १५५ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः, * मुहुसः प्रतिषेधः ।
सः, षः

इकार उकार उपधा वाले अप्रत्यय विसर्ग को ष् आदेश होता है यदि पर में कु पु हों ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४२. तिरसोऽन्यतरस्याम् १५६ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः

अ-म् ४४

कु पु परे रहते तिरः के विसर्ग को विकल्प से स् होता है ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४३. द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे १५७ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः, अ-म्

कृत्वसुच् के अर्थ में प्रयुक्त द्वि त्रि चतुर के विसर्ग को विकल्प से ष् होता है कु पु परे रहने पर ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४४. इसुसोः सामर्थ्ये १५८ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः, अ-म्

इसुसोः ४५

सामर्थ्य में इस् उस् के विसर्ग को विकल्प से ष होता है कु पु परे रहने पर ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४५. नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य १५९ ।
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः, इसुसोः

अ-स्य ४७

समासे ५४

समास में इस् उस् के विसर्ग को नित्य ष होता है, यदि वह उत्तरपद में न हो तथा कु पु परे हो ।

पदस्य, पृ-म्, सं- ४६. अत ऋकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णी-
म, वि-स्य, कुप्वोः,
सः, षः, अ-स्य,
समासे

अ-स्य ४७

ष्वनव्ययस्य १६० ।

अकारोत्तर अनव्ययविसर्ग अनुत्तर-पदस्थ को नित्य स होता है यदि बाद में कृ कमि कंस कुम्भ पात्र कुशा कर्णी शब्द हों ।

पदस्य, पू-म्, सं- ४७. अधःशिरसी पदे १६१ ।

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, षः, अ-स्य,

अस्य, समासे

पदस्य, पू-म्, सं- ४८. कस्कादिषु च १४४ ।

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, षः, समासे

(२५८) कस्कः कौतस्कुतः भ्रातुष्पुत्र शुनस्कर्णः

सद्यस्कालः सद्यस्क्रीः साद्यस्कः कांस्कान् सर्पि-

ष्कुण्डिका धनुष्कपालम् बहिष्पलम् (बर्हिष्पलम्)

यजुष्पात्रम् अयस्कान्तः तमस्काण्डः अयस्काण्डः

मेदस्पिण्डः भास्करः अहस्करः ॥ इति कस्का-

दिः ॥ आकृतिगणः ॥

पदस्य, पू-म्, सं- ४९. छन्दसि वाप्राप्रेडितयोः ३६३४ ।

छन्दसि ५४

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, समासे

पदस्य, पू-म्, सं- ५०. कःकरत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ३६३५

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, समासे, छन्दसि

पदस्य, पू-म्, सं- ५१. पञ्चम्याः परावध्यर्थे ३६३६ ।

प-याः ५२

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, समासे, छन्दसि

पदस्य, पू-म्, सं- ५२. पातौ च बहुलम् ३६३७ ।

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, समासे, छन्द-

सि, प-याः

पदस्य, पू-म्, सं- ५३. षष्ठीयाः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु

ष-षु ५४

म, वि-स्य, कुप्वोः,

३६३८ ।

सः, समासे, छन्दसि

पदस्य, पू-म्, सं- ५४. इडाया वा ३६३९ ।

म, वि-स्य, कुप्वोः,

सः, समासे, छन्द-

सि, ष-षु

समास में अनुत्तरपदस्थ अधस् शि-
रस् के विसर्ग को स आदेश होता
है, यदि पद शब्द पर में हो ।

कस्क आदि में यथायोग विसर्ग
को स् ष होते हैं ।

वेद में प्र और आम्प्रेडित से अति-
रिक्त स्थल में विसर्ग को विकल्प
से स होता है कु पु परे रहने पर ।
अदिति शब्द यदि पूर्व में न हो
तो वेद में विसर्ग को स होता है
यदि पर में कःकरत् करति कृधि
कृत हों ।

पञ्चम्युत्तर विसर्ग को स होता है
यदि पर में अध्यर्थ परि हों ।

वेद में पातु परे रहने पर पञ्चमी
के विसर्ग को बहुलतया स होता
है ।

वेद में षष्ठी विसर्ग को स आदेश
होता है यदि बाद में पति पुत्र पृष्ठ
पार पद पयस् पोष शब्द हों ।
इडा के षष्ठी विसर्ग को वेद में
विकल्प से स होता है यदि बाद
में पति पुत्र आदि शब्द हों ।

षत्वविधिः

पू-म्, सं-म ५५. अपदान्तस्य मूर्धन्यः २१० ।

अ-यः ११९ पादपरिसमाप्ति तक 'अपदान्तस्य मूर्धन्यः' का अधिकार है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः ५६. सहेः साडः सः ३३५ ।

साङ् रूप सह धातु के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः ५७. इण्कोः २११ ।

इण्कोः ११९ पादपरिसमाप्ति तक 'इणः कवर्गात्' का अधिकार है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ५८. नुम्विसर्जनीयशर्व्ववायेऽपि ४३४ ।
इण्कोः

नु-पि ११९ नुम् विसर्ग शर् का व्यवधान रहने पर भी इण् कु से उत्तर अपदान्त स को मूर्धन्य हो ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ५९. आदेशप्रत्यययोः २१२ ।

इण्कोः, नु-पि

इण् कु से उत्तर अपदान्त स को मूर्धन्य होता है यदि स आदेश अथवा प्रत्यय का हो ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६०. शासिवसिघसीनां च २४१० ।। ३ ।।

इण्कोः, नु-पि

इण् कु से उत्तर शास् वस् घस् के अपदान्त स को मूर्धन्य हो जाता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६१. स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् २६२७ । ष-त् ६२

इण्कोः, नु-पि

ष्टु और ण्यन्त से षत्वभूत सन् के परे रहने पर अभ्यास इण् से उत्तर आदेश स को ष होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६२. सः स्विदिस्वदिसहीनां च २६२८ ।

इण्कोः, नु-पि, ष-

उपरिलिखित स्थिति में स्विद स्वद सह के स को स होता है ।

त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६३. प्राक्सितादङ्व्यवायेऽपि २२७६ ।

इण्कोः, नु-पि

अङ्-पि ७०

७० वें सूत्र के पहले यहाँ अङ् व्यवायेऽपि का अधिकार है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६४. स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य २२७७ । अ-स्य ६५

इण्कोः, नु-पि, अ-

ङ्-पि

स्था सेनय सेध में अभ्यास के व्यवधान रहने पर मूर्धन्य होता है अभ्यास सकार को भी होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६५. उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभ- उ-त् ७७

इण्कोः, नु-पि,

अङ्-पि, अ-स्य

तिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् २२७०

उपसर्ग से उत्तरवर्ती सुनोति सुवति स्यति स्तौति स्तोभति तथा सेनय सेध सिच सञ्ज स्वञ्ज के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६६. सदिरप्रतेः २२७१ ।

इण्कोः, नु-पि, उ-

त्, अङ्-पि

प्रतिभिन्न उपसर्ग से परे सद के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६७. स्तम्भेः २२७२ ।
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, अङ्-पि

स्तम्भेः ६८

उपसर्गोत्तर स्तम्भ के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६८. अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः २२७३ । अवात् ६९
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, अङ्-पि, स्तम्भेः

आलम्बन और आविदूर्य अर्थ में अव उपसर्ग से उत्तर स्तम्भ के स को मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ६९. वेश्च स्वनो भोजने २२७४ ।
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, अङ्-पि, अवात्

भोजनार्थ में वि, अव उत्तर स्वन के स को मूर्धन्य आदेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७०. परिनिविध्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तु- प-भ्यः ७१
 इण्कोः, नु-पि, उ- स्वञ्जाम् २२७५ ।
 त्, अङ्-पि

परि नि वि पूर्वक सेव सित सय सिवु सह सुट् स्तु स्वञ्ज के स को मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७१. सिवादीनां वाऽङ्गव्यायेऽपि २३५९ । वा ७६
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, प-भ्यः

उपरिलिखित स्थिति में सिव आदि धातुओं को अट् व्यवधान रहने पर भी विकल्प से मूर्धन्यादेश होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७२. अनुपर्यभिनिविध्यः स्यन्दतेरप्राणिषु
 इण्कोः, नु-पि, उ- २३४९ ।
 त्, वा

अनु परि अभि नि वि से अप्राण्यर्थ प्रयुक्त स्यन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७३. वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् २३९८ । स्कन्देः ७५
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, वा

अनिष्ठा में वि पूर्वक स्कन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७४. परेश्च २३९९ ।
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, वा, स्कन्देः

परिपूर्वक स्कन्द के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७५. परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ३०२६ ।
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, वा, स्कन्देः

प्राच्यभरत में परिस्कन्द निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७६. स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्विध्यः २५३७ ।
 इण्कोः, नु-पि, उ-
 त्, वा

निर् नि वि से उत्तर स्फुर स्फुल के स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७७. वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् २५५६ ।

इण्कोः, नु-पि, उ-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७८. इणः षीध्वंलुङ्लिट्ठां धोऽङ्गात् २२४७ । इ-ध्वं ७९

इण्कोः, नु-पि

धो-त् ७९

पू-म्, सं-म, अ-यः, ७९. विभाषेटः २३२५ ।

इण्कोः, नु-पि, इ-

ध्वं धो-त्

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८०. समासेऽङ्गुलेः सङ्गः १०१९ ।। ४ ।। समासे ८५

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८१. भीरोः स्थानम् १०२० ।

इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८२. अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ९२४ ।

इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८३. ज्योतिरायुषः स्तोमः १०२१ ।

इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८४. मातृपितृभ्यां स्वसा ९८४ ।

स्वसा ८५

इण्कोः नु-पि, समासे

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८५. मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ९८३ ।

अ-म् ८६

इण्कोः, नु-पि, स-

मासे, स्वसा

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८६. अभिनिसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम् ३१९३

इण्कोः, नु-पि, अ-म्

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८७. उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्चरः २४७२ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८८. सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः २४७७ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ८९. निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ३०८२ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९०. सूत्रं प्रतिष्ठातम् ३०८३ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, ९१. कपिष्ठलो गोत्रे ३०८४ ।

इण्कोः, नु-पि

वि पूर्वक स्कभ्नाति के स को नित्य मूर्धन्य होता है ।

इण् अन्त वाले धातु से उत्तर षी ध्वम् लुङ् लिट् का धकार मूर्धन्य होता है ।

इण् से उत्तर होने वाले इट् से भी उत्तर षी ध्वम् लुङ् लिट् के धकार को मूर्धन्य होता है ।

समास में अङ्गुलि के उत्तर सङ्ग के स को मूर्धन्य आदेश होता है ।

समास में भीरु से उत्तर स्थान का स मूर्धन्य होता है ।

समास में अग्नि से उत्तरवर्ती स्तुत् स्तोम सोम के स को मूर्धन्य होता है ।

समास में ज्योतिष् आयुष् से उत्तर स्तोम का स मूर्धन्य होता है ।

समास में मातृ पितृ से उत्तर स्वसृ के स को मूर्धन्य होता है ।

मातुर् पितुर् से उत्तर स्वसा का स विकल्प से मूर्धन्य होता है समास में ।

शब्द संज्ञा में अभि उत्तर स्तनति का स मूर्धन्य विकल्प से होता है ।

उपसर्ग और प्रादुस् से परे अस्ति के स को मूर्धन्य होता है, किन्तु स के बाद य अथवा अच् रहना चाहिये ।

सु वि निर् दुर् के उत्तर सुपि सूति सम के स को मूर्धन्य होता है ।

कौशल अर्थ में नि नदी पूर्वक स्नाति के स को मूर्धन्य होता है ।

सूत्र के विषय में प्रतिष्ठातम् निपातित होता है ।

गोत्रविषय में कपिष्ठल निपातित होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १२. प्रष्ठोऽग्रगामिनि २९१७ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १३. वृक्षासनयोर्विष्टरः ३२३३ ।

विष्टरः ९४

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १४. छन्दोनाम्नि च ३२०६ ।

इण्कोः नु-पि, विष्टरः

पू-म्, सं-म, अ-यः, १५. गवियुधिभ्यां स्थिरः ९६७ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १६. विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ३०८५ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १७. अम्बाम्बगोभूमिसव्याऽपद्वित्रिकुशेकुशङ्-

इण्कोः, नु-पि

क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः

२९१८ ।

* स्थास्थिन्स्थूणांमिति वक्तव्यम् ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १८. सुषामादिषु च १०२२ ।

इण्कोः, नु-पि

(२५९) सुषामा निःषामा दुःषामा सुषेधः निषेधः

(निःषेधः) दुःषेधः सुषन्धिः निःषन्धिः दुःषन्धिः

सुष्ठु दुष्ठु 'गौरिषक्थः संज्ञायाम्' १८१ । प्रतिष्ठाका

जलाषाहम् (जलाषाढम्) नौषेचनम् दुन्दुभिषेवणम्

(दुन्दुभिषेचनम्) 'एति संज्ञायामगात्' १८२ ।

'नक्षत्राद्वा' १८३ । हरिषेणः रोहिणीषेणः ॥ इति

सुषामादिः ॥ आकृतिगणः ॥

पू-म्, सं-म, अ-यः, १९. एति संज्ञायामगात् १०२३ ।

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १००. नक्षत्राद्वा १०२४ ।

॥५॥

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०१. ह्रस्वात्तादौ तद्धिते १३२५ ।

तादौ १०४

इण्कोः, नु-पि

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०२. निसस्तपतावनासेवने २४०३ ।

इण्कोः, नु-पि, तादौ

अग्रगामी अर्थ में प्रष्ठ निपातित होता है ।

वृक्ष और आसन में विष्टर निपातित होता है ।

छन्दोनाम में विष्टर निपातित होता है ।

गवि युधि के उत्तर स्थिर का स मूर्धन्य होता है ।

वि कु शमि परि उत्तरवर्ती स्थल का स मूर्धन्य होता है ।

अम्ब आम्ब गो भूमि सव्य अप द्वि त्रि कु शेकु शङ्कु अङ्गु मञ्जि पुञ्जि परमे बर्हिस् दिवि अग्नि से उत्तरवर्ती स्थ का स मूर्धन्य होता है ।

सुषामा आदि में स को मूर्धन्य होता है ।

ए पर में हो जिस स के उसको मूर्धन्य होता है, पर स को इण् कु से परे (ग भिन्न) तथा संज्ञा में होना चाहिये ।

पूर्व स्थिति में नक्षत्रवाची शब्द से उत्तर स को विकल्प से मूर्धन्य होता है ।

तादि तद्धित परे रहने पर ह्रस्वोत्तर स को मूर्धन्य होता है ।

अनासेवन अर्थ में तपति परे रहने पर निस् के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०३. युष्मत्तत्तक्षुष्वन्तःपादम् ३६४० ।
इण्कोः, नु-पि, तादौ

यु-षु १०४

युष्मदादेश तत् तत्क्षुः यदि पर में
हों तथा अन्तःपाद हों तो पूर्व स
को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०४. यजुष्येकेषाम् ३६४१ ।
इण्कोः, नु-पि, ता-
दौ, यु-षु

ए-म् १०६

यजुः विषय युष्मदादेश तत् तत्क्षुस्
परे रहने पर स को मूर्धन्य होता
है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०५. स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ३६४२ ।
इण्कोः, नु-पि, ए-म्

छन्दसि १०९

स्तुत स्तोम के स को वेद में मूर्धन्य
होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०६. पूर्वपदात् ३६४३ ।
इण्कोः, नु-पि, छ-
न्दसि, ए-म्

पू-त् ११९

वेद में पूर्वपद के बाद आये स को
मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०७. सुजः ३६४४ ।
इण्कोः, नु-पि, छ-
न्दसि, पू-त्

वेद में पूर्वपद के बाद आये सुज्
के स को मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०८. सनोतेरनः ३६४५ ।
इण्कोः, नु-पि, छ-
न्दसि, पू-त्

अनकारान्त सनोति के स को मूर्धन्य
होता है (वेद में) ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, १०९. सहेः पृतनर्ताभ्यां च ३६४६ ।
इण्कोः, नु-पि, छ-
न्दसि, पू-त्

पृतना ऋत से उत्तर सह का स
मूर्धन्य होता है ।

पू-म्, सं-म, अ-यः, ११०. न रपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् न ११९
इण्कोः, नु-पि, पू- ३१६८ ।
त्

रेफ से परे यदि स हो तो उसे तथा
सृप सृज स्पृश स्पृह सवन आदि
के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।

(२६०) सवने सवने । सूते सूते । सोमे सोमे ।
सवनमुखे सवनमुखे । किंसं किंसम् (किंसः किं-
सः) । अनुसवनं अनुसवनम् । गोसनिं गोसनिम् ।
अश्वसनिं अश्वसनिम् ॥ पाठान्तरम् ॥ सवने सवने
सवनमुखे सवनमुखे । अनुसवनमनुसवनम् । संज्ञायां
बृहस्पतिसवः ॥ शकुनिसवनम् । सोमे सोमे । सुते
सुते । संवत्सरे संवत्सरे । बिसं बिसम् । किंसं किं-
सम् । मुसलं मुसलम् । गोसनिम् अश्वसनिम् ॥ इति
सवनादिः ॥

पू-म्, सं-म, अ-यः, १११. सात्यदाद्योः २१२३ ।
इण्कोः, नु-पि, पू-
त्, न

साति का अवयव तथा पदादि स
को मूर्धन्य नहीं होता है ।

- पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११२. सिचो यङि २६४० ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११३. सेधतेर्गतौ २२७८ ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११४. प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ३०२७ ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११५. सोढः २३५८ ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११६. स्तम्भुसिवुसहां चङि २५८० ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११७. सुनोतेः स्यसनोः २५२४ ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त्
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११८. सदेः परस्य लिटि २३६१ ।
 इण्कोः नु-पि न पू-त् * स्वञ्जैरुपसंख्यानम् ।
 पू-म्, सं-म्, अ-यः, ११९. निव्यभिभ्योऽङ्व्यवाये वा छन्दसि
 इण्कोः नु-पि न पू-त् ३६४७ ।

यङ् परे रहते सिच् के स् को
 मूर्धन्य नहीं होता है ।
 गत्यर्थक सेधति के स को मूर्धन्य
 नहीं होता है ।
 प्रतिस्तब्ध निस्तब्ध निपातित होते
 हैं ।
 सोढः के स को मूर्धन्य नहीं होता
 है ।
 चङ् परे रहने पर स्तम्भु सिवु सह
 के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
 स्य और सन् परे रहने पर सुनोति
 के स को मूर्धन्य नहीं होता है ।
 सदि के स को मूर्धन्य नहीं होता
 है लिट् परे रहने पर ।
 वेद में अट् का व्यवधान रहने पर
 भी नि वि अभि से उत्तरवर्ती स
 को विकल्प से मूर्धन्य नहीं होता
 है ।

मतुवसोरुजि चेदुदुपधस्य स्तौतिण्योर्भीरोर्ह-
 स्वात्तादावेकोनविंशतिः ।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य तृतीयः

पादः ।

चतुर्थः पादः ।

णत्वविधिः

पू-म्, सं-म् १. रषाभ्यां नो णः समानपदे २३५ । र-णः ३९
 * ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् ।

पू-म्, सं-म्, र-णः २. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि १९७ ।

पू-म्, सं-म्, र-णः ३. पूर्वपदात्संज्ञायामगः ८५७ ।

पू-त् १३
 सं-म् ४

समानपद में र ष से परे न को ण
 होता है ।
 यदि अट् कु पु आङ् नुम् का
 व्यवधान भी हो तो र ष से पर न
 को ण होता है ।
 संज्ञा विषय में गकार वर्जित पूर्व-
 पद निमित्त से उत्तर न को ण
 होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ४. वनं पुरगामिश्रकासिध्रकाशारिकाकोटरा- वनं ६
पू-त्, सं-म्, ग्रेभ्यः १०३९ ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ५. प्रनिरन्तःशरेश्प्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षा-
पू-त्, वनं भ्योऽसंज्ञायामपि १०५० ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ६. विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः १०५१ ।

पू-त्, वनं * द्व्यच्च्यज्भ्यामेव ।

* इरिकादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

(२६१) (वा० ग०) । इरिका मिरिका ति-
मिरा । इतिरिकादिः ॥ आकृतिगणः ॥

पू-म्, सं-म्, र-णः, ७. अह्नोऽदन्तात् ७९१ ।

पू-त्

पू-म्, सं-म्, र-णः, ८. वाहनमाहितात् १०५२ ।

पू-त्

पू-म्, सं-म्, र-णः, ९. पानं देशे १०५३ ।

पू-त्

पू-म्, सं-म्, र-णः, १०. वा भावकरणयोः १०५४ ।

पू-त्, पानं * गिरिनद्यादीनां वा ।

(२६२) (वा० ग०) । गिरिनदी गिरिनख
गिरिनद्ध गिरिनितम्ब चक्रनदी चक्रनितम्ब तूर्यमान
माषोऽन आर्गयन ॥ इति गिरिनद्यादिः ॥ आकृति-
गणः ॥

पू-म्, सं-म्, र-णः, ११. प्रातिपदिकान्तनुम्बिभक्तिषु च १०५५ । प्रा-षु १३

पू-त्, वा * युवादेर्न ।

(२६३) (वा० ग०) । युवन् पक्वं अहन् ॥
इति युवादिः ॥ (आर्ययूना क्षत्रिययूना प्रपक्वानि
परिपक्वानि दीर्घाही) ॥ आकृतिगणोऽयम् ॥

पू-म्, सं-म्, र-णः, १२. एकाजुत्तरपदे णः ३०७ ।

पू-त्, प्रा-षु

संज्ञा में पुरगा मिश्रका सिध्रका
शारिका कोटरा अग्रे पूर्वपद में हों
तो वन के न को ण होता है ।

प्र निर् अन्तः शर इक्षु प्लक्ष आम्र
कार्ष्य खदिर पीयूक्षा पूर्वपद में हों
तो वन के न को ण होता है, चाहे
संज्ञा हो या असंज्ञा ।

ओषधि और वनस्पतिवाची शब्द
पूर्वपद में हों तो वन के न को
विकल्प से ण होता है ।

यदि अदन्त पूर्वपद में हो तो अहन्
के न को ण होता है ।

यदि आहितवाची पूर्वपद में हो तो
वाहन के न को ण होता है ।

देशाभिधान में पूर्वपदोत्तर पान के
न को ण होता है ।

पूर्वपदोत्तर पान के न को ण विकल्प
से होता है, यदि पान शब्द भाव
या करण में निष्पन्न हो ।

पूर्वपदोत्तर प्रातिपदिकान्त नुम् बि-
भक्ति में न को विकल्प से ण होता
है ।

एक अच् उत्तर पद में हो जिस
समास में, उसमें प्रातिपदिकान्त नुम्
विभक्ति में न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, १३. कुमति च १०५६
पू-त्, प्रा-षु

पू-म्, सं-म्, र-णः १४. उपसर्गदिसमासेऽपि णोपदेशस्य २२८७ उ-त् २३

पू-म्, सं-म्, र-णः, १५. हिनुमीना २५३० ।

उ-त्

पू-म्, सं-म्, र-णः, १६. आनि लोट् २२३१ ।

उ-त्

पू-म्, सं-म्, र-णः, १७. नेर्गदनदपतपदधुमास्यतिहन्तियातिवाति- नेः १८

उ-त्

द्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदे-
ग्धिषु च २२८५ ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, १८. शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे

उ-त्, नेः

२२३२ ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, १९. अनितेः २४७८ ।

उ-त्

अ-तेः २१

पू-म्, सं-म्, र-णः, २०. अन्तः २९८४

॥ १ ॥

उ-त्, अ-तेः

पू-म्, सं-म्, र-णः, २१. उभौ साभ्यासस्य २६०६ ।

उ-त्, अ-तेः

पू-म्, सं-म्, र-णः, २२. हन्तेरत्पूर्वस्य ३५९ ।

उ-त्

ह-स्य २३

पू-म्, सं-म्, र-णः, २३. वमोर्वा २४२९ ।

उ-त्, ह-स्य

पू-म्, सं-म्, र-णः २४. अन्तरदेशे ३२९४ ।

अ-शे २५

पू-म्, सं-म्, र-णः, २५. अयनं च ३२९५ ।

अ-शे

पू-म्, सं-म्, र-णः २६. छन्दस्यृदवग्रहात् ३६४८ ।

छन्दसि २७

यदि उत्तरपद कवर्ग युक्त हो तो पूर्वपदोत्तर प्रातिपदिकान्त नुम् विभक्ति में न को ण होता है ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर णोपदेश धातु के न को ण होता है असमास में भी ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर हिनु मीना के न को ण होता है ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर लोडादेश आनि के न को ण होता है ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर नि के न को ण होता है यदि बाद में गद नद पत पद धु मा स्यति हन्ति याति वाति द्राति प्साति वपति वहति शाम्यति चिनोति देग्धि हो ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर नि के न को विकल्प से ण होता है, यदि उत्तर धातु उपदेशावस्था में अकादि अरवादि तथा अषान्त हो । उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अनिति के न को ण होता है ।

(इसी सन्दर्भ में) पदान्त में वर्तमान अनिति के न को ण होता है ।

(इसी सन्दर्भ में) साभ्यास अनिति के दोनों न को ण होता है ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अत् युक्त हन् के न को ण होता है ।

(इसी सन्दर्भ में) हन् के न को ण होता है यदि बाद में व म हो ।

अदेशाभिधान में अन्तर् उत्तरवर्ती अत्पूर्व हन् के न को ण होता है ।

अदेशाभिधान में अन्तर् उत्तरवर्ती अयन के न को ण होता है ।

वेद में ऋकारान्त अवग्रह पूर्वपद में हो तो उत्तर न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, २७. नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ३६४९ ।
छन्दसि

नः २८

धातुस्थ निमित्तोत्तर उरुशब्दोत्तर षु
शब्दोत्तर नस् के न को ण होता
है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, २८. ^१उपसर्गादिनोत्परः ८५९
नः

उ-त् ३४

यदि ओत्परक न हो तो उपसर्गस्थ
निमित्त से परे नस् के न को ण
होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, २९. कृत्यचः २८३५ ।
उ-त् * निर्विण्णस्योपसंख्यानम् ।

कृति ३४

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर अजुत्तर
कृत्य न को ण होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३०. णेर्विभाषा २८३६ ।
कृति, उ-त्, अचः

अचः ३१

विभाषा ३१

ण्यन्त से विहित कृत्प्रत्ययस्थ न
को विकल्प से ण होता है यदि
पूर्वपद में उपसर्गस्थ निमित्त हो ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३१. हलश्चेजुपधात् २८३७ ।
कृति, उ-त्, अचः,
विभाषा

हलः ३२

हलादि इजुपध धातु से परे,
कृत्सम्बन्धी न को विकल्प से ण
होता है यदि उसके पूर्व में अच् हो
तथा पूर्व में उपसर्गादि निमित्त हों ।
इसी स्थिति में इजादि सनुम् हलन्त
धातु से विहित कृत् के न को ण
होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३२. इजादेः सनुमः २८३८ ।
कृति, उ-त्, हलः

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३३. वा निसनिक्षनिन्दाम् २८३९ ।
कृति, उ-त्

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर निस
निक्ष निन्द के न को विकल्प से ण
होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३४. न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् २८४० । न ३९
कृति, उ-त् * पूज एवेह ग्रहणमिष्यते ।
* ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम् ।

उपसर्गस्थ निमित्त से उत्तर भा भू पू
कपि गमि प्यायी वेपा के कृत् न
को ण नहीं होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३५. षात्पदान्तात् ३३१० ।
न

पदान्त ष से उत्तर न को ण नहीं
होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३६. नशोः षान्तस्य २५१८ ।
न

षकारान्त नश् के न को ण नहीं
होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३७. पदान्तस्य १९८ ।
न

पदान्त न को ण नहीं होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३८. पदव्यवायेऽपि १०५७ ।
न * अतद्धित इति वाच्यम् ।

पद व्यवधान रहने पर न को ण
नहीं होता है ।

पू-म्, सं-म्, र-णः, ३९. क्षुभ्नादिषु च ७९२ ।
न

क्षुभ्नादि में न को ण नहीं होता
है ।

(२६४) क्षुभ्ना नृनमन नन्दिन् नन्दन नगर ।
 एतान्युत्तरपदानि संज्ञायां प्रयोजयन्ति । हरिनन्दी
 हरिनन्दनः गिरिनगरम् । नृतिर्यङि प्रयोजयति ।
 नरीनृत्यते । नर्तन गहन नन्दन निवेश निवास अग्नि
 अनूप । एतान्युत्तर पदानि प्रयोजयन्ति । परिनर्तनम्
 परिगहनम् परिनन्दनम् शरनिवेशः शरनिवासः श-
 राग्निः दर्भानूपः । 'आचार्यादणत्वं च' १८४ । आ-
 चार्यभोगीनः । आकृतिगणोऽयम् । पाठान्त-
 रम् । क्षुभ्ना तृप् नृनमन नरनगर नन्दन । यङ्नुती ।
 गिरिन्दी गृहगमन निवेश निवास अग्नि अनूप आ-
 चार्यभोगीन चतुर्हायन । 'इरिकादीनि वनोत्तरपदानि
 संज्ञायाम्' १८५ । इरिका तिमिर समीर कुबेर हरि
 कर्मार । इति क्षुभ्नादिः ।।

* अग्रग्रामाभ्यां नयतेर्णो वाच्यः ।

सन्धिप्रकरणम्

पू-म्, सं-म् ४०. स्तोः शुना श्चुः १११ ।। २ ।। स्तोः ४२

* श्रुत्वं ध्रुटि सिद्धं वाच्यम् ।

पू-म्, सं-म्, स्तोः ४१. घुना घुः ११३ । घुः ४४

पू-म्, सं-म्, स्तोः, ४२. न पदान्ताद्वोरनाम् ११४ । न ४४

घुः * अनामवतिनगरीणामिति वक्तव्यम् ।

पू-म्, सं-म्, घुः, न ४३. तोः षि ११५ । तोः ४४

पू-म्, सं-म्, तोः, ४४. शात् ११२ ।

घुः, न,

पू-म्, सं-म् ४५. यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ११६ । यरः ४७

* ग्रत्यये भाषायां नित्यम् ।

पू-म्, सं-म्, यरः ४६. अचो रहाभ्यां द्वे ५१ । अचः ४७

द्वे ५२

पू-म्, सं-म्, यरः, ४७. अनचि च ४८ ।

द्वे, अचः, * यणो मयो द्वे वाच्ये ।

पू-म्, सं-म्, द्वे ४८. नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य ५५ । न ५२

* तत्परे च ।

* वा हतजगधयोः ।

* चयो द्वितीयाः शरि पौष्करसादेरिति वाच्यम् ।

सकार तवर्ग को शकार चवर्ग के
 योग में शकार चवर्ग होता है ।
 सकार तवर्ग को षकार टवर्ग के
 योग में षकार टवर्ग होता है ।
 नाम् को छोड़कर पदान्त टवर्ग से
 उत्तर स्तु को घु नहीं होता है ।
 तवर्ग को षकार परे रहने पर घुत्व
 नहीं होता है ।
 शकार से उत्तर तवर्ग को श्रुत्व
 नहीं होता है ।
 अनुनासिक परे रहने पर पदान्त
 यर् को विकल्प से अनुनासिक
 होता है ।
 अच् से उत्तरवर्ती रेफ हकार से
 परे यर् को द्वित्व होता है ।
 अच् से परे यर् को द्वित्व होता है
 यदि पर में अच् न हो ।
 आक्रोश गम्यमान हो तो आदिनी
 शब्द से पहले पुत्र को द्वित्व नहीं
 होता है ।

पू-म्, सं-म्, न, द्वे ४९. शरोऽचि ३४० ।

पू-म्, सं-म्, न, द्वे ५०. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ५६ ।

पू-म्, सं-म्, न, द्वे ५१. सर्वत्र शाकल्यस्य ५७ ।

पू-म्, सं-म्, न, द्वे ५२. दीर्घादाचार्याणाम् ५८ ।

पू-म्, सं-म् ५३. झलां जश्झशि ५२ ।

पू-म्, सं-म्, झलां ५४. अभ्यासे चर्च २१८२ ।

पू-म्, सं-म्, झलां, ५५. खरि च १२१ ।

चर्

पू-म्, सं-म्, झलां, ५६. वाऽवसाने २०६ ।

चर्

पू-म्, सं-म्, वा-ने ५७. अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ११० ।

पू-म्, सं-म् ५८. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः १२४ । अ-णः ५९

पू-म्, सं-म्, अ-णः ५९. वा पदान्तस्य १२५ ।

पू-म्, सं-म् ६०. तोलि ११७ । ॥ ३ ॥

पू-म्, सं-म् ६१. उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ११८ । पू-स्य ६२

पू-म्, सं-म्, पू-स्य ६२. झयो होऽन्यतरस्याम् ११९ ।

पू-म्, सं-म्, झयः, ६३. शश्छोऽटि १२० ।

अ-म् * छत्वममीति वाच्यम् ।

पू-म्, सं-म्, अ-म् ६४. हलो यमां यमि लोपः ६० ।

पू-म्, सं-म्, अ-म्, ६५. झरो झरि सवर्णे ७१ ।

हलो-पः

अच् परे रहने पर शर् को द्वित्व नहीं होता है ।

शाकटायन मत में तीन से अधिक संयुक्त व्यञ्जन हों तो दित्व नहीं होता है ।

सर्वत्र द्विर्वचन नहीं होता है । (शा०)

दीर्घ से उत्तर को दीर्घ नहीं होता है कुछ आचार्यों के मत में ।

झल् के स्थान में जश् होता है यदि पर में झश् हो ।

अभ्यास में वर्तमान झल् को चर् होता है तथा जश् भी होता है ।

यदि पर में खर् हों तो झल् को चर् होता है ।

अवसान में झल् को विकल्प से चर् होता है ।

अवसान में अप्रगृह्य अण् को विकल्प से अनुनासिक होता है ।

यय् परे रहने पर अनुस्वर को परसवर्ण होता है ।

पदान्त अनुस्वर को यय् परे रहने पर विकल्प से परसवर्ण होता है ।

तवर्ग को लकार परे रहने पर परसवर्ण होता है ।

उद् से परे स्था स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होता है ।

झञ् से उत्तर ह को विकल्प से पूर्वसवर्ण होता है ।

झञ् से उत्तर श को विकल्प से छ होता है, यदि पर में अट् हो ।

हल् से उत्तर यम् का विकल्प से लोप होता है, यदि बाद में यम् हो ।

हल् से उत्तर झर् का विकल्प से लोप होता है, यदि पर में सवर्ण

झर् हो ।

- पू-म्, सं-म् ६६. उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः ३६६० । अनु-स्य ६७ । उदात्त से उत्तर अनुदात्त को स्वरित होता है ।
- पू-म्, सं-म्, अनु- ६७. नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगाल- उदात्तपर स्वरितपर अनुदात्त को
स्य वानाम् ३६६१ । स्वरित नहीं होता है । (गा० का० गालव)
- पू-म् ६८. अ अ ११ । (विवृत) अ को (संवृत) अ होता है ।

रषाभ्यामुभौ धुनाष्टुरुदः स्थाष्टौ ।।

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य चतुर्थः

पादः अध्यायश्च ।

श्रीः

परिशिष्टम्

अत्र अष्टाध्याय्यामनेकेषु सूत्रेषु अन्यान्यपि वार्तिकादीनि समुपलभ्यन्ते (परन्तु अस्मिन् संस्करणे नोद्धृतानि)
तानि संगृह्य प्रकाशयन्ते ।

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	प्रथमोऽध्यायः (प्रथमः पादः)			(चतुर्थः पादः)	
६८	स्वं रूपं शब्दस्याशब्द संज्ञा	* सित्तद्विशेषाणां वृक्षा- द्यर्थम् * पित्पर्यायवचनस्य च स्वाद्यर्थम् * जित्पर्यायवचनस्यैव राजाद्यर्थम् * झित्तद्विशेषाणां च मत्स्याद्यर्थम्	६०	गतिश्च	* गत्युपसर्गसंज्ञकाः क्रि- यायोगे यत्क्रियायुक्तास्तं प्रतीति वचनम्
				द्वितीयोऽध्यायः (प्रथमः पादः)	
			२०	नदीभिश्च	* नदीभिः संख्यायाः समाहारेऽव्ययीभावो वक्तव्यः
७३	वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम्	* गोत्रोत्तरपदस्य च * गोत्रान्ताद् वाऽ सम- स्तवत् * जिह्वाकात्य हरित कात्य वर्जम्	३३	कृत्यैधिकारार्थवचने	* कृत्यग्रहणे यण्य- तोर्ग्रहणम्
			३९	स्तोकान्तिकदूरार्थं कृच्छ्राणि क्तेन	* शतसहस्रौ परेणेति वक्तव्यम्
			४२	ध्वाङ्क्षेण क्षेपे	* ध्वाङ्क्षेणेत्यर्थग्रहणम्
			४३	कृत्यैर्ऋणे	* कृत्यैर्नियोगे यद्ग्रहणम्
			६०	क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ्	* कृतापकृतादीनामु- संख्यानम् कर्तव्यम्
	(द्वितीयः पादः)			(द्वितीयः पादः)	
६	इन्धिमवतिभ्यां च	* श्रन्थिग्रन्थिदम्भि स्व- ञ्जीनामिति वक्तव्यम्	८	षष्ठी	* तत्स्थैश्च गुणैः षष्ठी समस्यत इति वक्त- व्यम्
५९	अस्मदो द्वयोश्च	* अस्मदः सविशेष- णस्य प्रयोगे न			* न तु तद्विशेषणैः
७२	त्यदादीनि सर्वे नित्यम्	* त्यदादीनां मिथो यद्- यत्परं ततच्छिष्यते			* गुणात्तरेण तरलोश्चेति वक्तव्यम्
	(तृतीयः पादः)				
२०	आडो दोऽनास्यविहरणे	* आस्यविहरणसमान क्रियादपि प्रतिषेधो वक्तव्यः	१८	कुगतिप्रादयः	* स्वती पूजायाम् * दुर्निन्दायाम् * आडीषदर्थे

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
२४	अनेकमन्यपदार्थे	<ul style="list-style-type: none"> * कुः पापार्थे * अव्ययं प्रवृद्धादिभ्यः * बहुव्रीहिः समानाधिकरणानाम् * अव्ययानां न बहुव्रीहिर्वक्तव्यः * सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च * समुदायविकरणषष्ठ्याश्च * सुबधिकारेऽस्तिक्षीरादीनाम् 	५८	ण्यक्षत्रियार्षजितोयूनि लुगणिजोः	<ul style="list-style-type: none"> * बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम् * अब्राह्मणगोत्रमात्राद्युवप्रत्ययस्योपसंख्यानम्
३३	अजाद्यन्तम्	<ul style="list-style-type: none"> * बहुष्वनियमः * द्वन्द्वे घ्यजाद्यदन्तं विप्रतिषेधेन 	८४	तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्	<ul style="list-style-type: none"> * सप्तम्या ऋद्धिनदीसमास संख्यावयवेभ्यो नित्यमिति वक्तव्यम्
१२	(तृतीयः पादः) गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनिक्तस्य च वर्तमाने	<ul style="list-style-type: none"> * अध्वन्यर्थग्रहणम् * आस्थितप्रतिषेधश्च * नपुंसके भाव उपसंख्यानम् 	५	तृतीयोऽध्यायः (प्रथमः पादः) गुप्तिज्किद्भ्यः सन्	<ul style="list-style-type: none"> * निन्दा क्षमा व्याधिप्रतीकारेषु सन्निष्यते
६७	(चतुर्थः पादः) विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः	<ul style="list-style-type: none"> * नपुंसके भाव उपसंख्यानम् * शेषविज्ञानात् सिद्धम् 	६	मान्वध दान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य	<ul style="list-style-type: none"> * अत्रापि सन्नर्थविशेष इष्यते । मानेर्जिज्ञासायाम् । वधेर्वैरूप्ये । दानेरार्जवे । शानेर्निशाने ।
७	स नपुंसकम्	<ul style="list-style-type: none"> * अग्रामा इत्यत्र नगराणां प्रतिषेधो वक्तव्यः * उभयतश्च ग्रामाणां प्रतिषेधो वक्तव्यः 	७	धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा	<ul style="list-style-type: none"> * इच्छासन्नन्तात्प्रतिषेधो वक्तव्यः
१७	अव्ययीभावश्च	<ul style="list-style-type: none"> * वाऽऽबन्तः स्त्रियाँमिष्टः * अंनो नलोपश्च वा द्विगुः स्त्रियाम् 	८	सुप आत्मनः क्यच्	<ul style="list-style-type: none"> * छन्दसि परेच्छायायामिति वक्तव्यम्
२९	रत्रिन्हाहाः पुंसि	<ul style="list-style-type: none"> * क्रियाविशेषणानां च क्लीवतेष्यते 	११	कर्तुः क्यङ् सलोपश्च	<ul style="list-style-type: none"> * ओजसोऽप्सरसो नित्यं पयसस्तु विभाषया
५४	चक्षिङः ख्याञ्	<ul style="list-style-type: none"> * अनुवाकादयः पुंसीति वक्तव्यम् * खशादिरप्यमादेश इष्यते 	१७	शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेधेभ्यः करणे	<ul style="list-style-type: none"> * सर्वप्रातिपदिकेभ्य इत्येके
			२६	हेतुमति च	<ul style="list-style-type: none"> * अटाट्टाशीकाकोटापोटासोटाकष्टा ग्रहणं कर्तव्यम् * आङ्लोपश्च कालात्यन्तसंयोगे मर्यादायाम् * चित्रीकरणे प्रापि

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
३६	इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः	* नक्षत्रयोगे जि * ऊर्णोतिश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः	१७१	आदृगम हन जनः कि- किनौ लिट् च	* किकिनावुत्सर्गश्छ- न्दसि सदादिभ्यो दर्श- नात्
१०३	अर्यः स्वामिवैश्ययोः	* स्थानिन्यन्तोदात्तत्वं च वक्तव्यम्	३	(तृतीयः पादः) भविष्यति गम्यादयः	* अनद्यतन उपसंख्या- नम्
११०	ऋदुपधाचाक्लृपिचृतेः	* समवपूर्वाच्च	१५	अनद्यतने. लुट्	* परिदेवने श्वस्तनी भ- विष्यदर्शे वक्तव्या
११२	भृजोऽसंज्ञायाम्	* संपूर्वाद् विभाषा	३५	उदि ग्रहः	* उद्ग्राभ निग्राभौ च छन्दसि सुगुघमननि- पातयोः
११८	प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः	* छन्दसीति वक्तव्यम्	४०	हस्तादाने चेरस्तेये	* उच्चयस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः
१४३	विभाषा ग्रहः (द्वितीयः पादः)	* भवतेश्चेति वक्तव्यम्	९४	स्त्रियां क्तिन्	* स्त्रियां क्तिन्नावादिभ्यः * श्रु यजिस्तुभ्यः * ऋकारत्वादिभ्यः क्ति- न्निष्ठावद् भवतीति वक्तव्यम्
४३	मेघर्तिभयेषु कृजः	* उपपदविधौ भयादि- ग्रहणं तदन्तविधिं प्र- योजयति	२१	(चतुर्थः पादः) समानकर्तृकयोः पूर्वकाले	* आस्यं व्यादाय स्व- पिति संमील्य हस- तीत्युपसंख्यानमपूर्व- कालत्वात्
७८	सुप्यजातौ णिनिस्ता- च्छील्ये	* उत्प्रतिभ्यामाङि स- तेरुपसंख्यानम्	१९	चतुर्थोऽध्यायः (प्रथमः पादः)	* कौरव्यमाण्डूकयोराः सुरेरुपसंख्यानम्
११०	लुङ्	* वसतेलुङ्, रात्रिवि- शेषे जागरण संततौ वक्तव्यः	५३	अस्वाङ्गपूर्वपदाद् वा	* बहुलं संज्ञा छन्दसो- रिति वक्तव्यम्
१११	अनद्यतने लङ्	* परोक्षे च लोकवि- ज्ञाते प्रयोक्तुर्दर्शन- विषये लङ् वक्तव्यः	५४	स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसं- योगोपधात्	* अङ्गाग्रकण्ठेभ्य इति वक्तव्यम्
१२४	लटः शतृशानचावप्रथ- मासमानाधिकरणे	* माङ्याक्रोशे	६५	इतो मनुष्यजातेः	* इज उपसंख्यानमजा- त्यर्थम्
१२८	पृङ्यजोः शानन्	* द्विषः शतुर्वा वचनम्			
१३६	अलंकृञ्-निराकृञ् प्र- जनोत्पतोन्मदरुच्यपत्रप- वृतु वृधु सह चर इष्णुच्	* अलङ्कृञो मण्डना- र्थाद् युचः पूर्ववि- प्रतिधेधेनेष्णुज्वक्तव्यः			
१३९	ग्लाजिस्थश्च क्सनुः	* दंशेश्छन्दस्युपसंख्या- नम्			
१५८	स्पृहि गृहि पति दयि निद्रा तन्द्रा श्रद्धाभ्य आलुच्	* आलुचि शीङो ग्रहणम्			
१६२	विदि भिदिच्छिदेः कुरच्	* व्यधेः सम्प्रसारणं कु- रच् वक्तव्यः			

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
१२०	स्त्रीभ्यो ढक्	* वडवाया वृषे वाच्ये * अण् कृञ्चा कोकिलात् स्मृतः * आरक् पुंसि ततोऽ- न्यत्र * गोधाया द्वग्विधौ स्- मृतः	१२१	रथादयत्	* स्थाप्रो लुग् वक्तव्यः * अजिनान्ताच्च * रथाङ्ग एवेष्यते * रथसीता हलेभ्यो य- द्विधाविति तदन्तविधि रुपसंख्यायते
१५६	अणो द्व्यचः (द्वितीयः पादः)	* त्यदादीनां वा फिञ् वक्तव्यः	१३१	रैवतिकादिभ्यश्छः	* कौपिञ्जल हास्तिप- दादण् * आथर्वणिकस्येक- लोपश्च
३७	भिक्षादिभ्योऽण्	* गुणदिभ्यः ग्रामज्व- क्तव्यः	१४०	(चतुर्थः पादः) वसोः समूहे च	* वसुशब्दादपि यद् वक्तव्यः
५१	इनि त्र कट्यचश्च	* कमलादिभ्यः खण्डच् * नर करि तुरङ्गाणां स्कन्धच् प्रत्ययः * पूर्वादिभ्यः काण्डः		पञ्चमोऽध्यायः (प्रथमः पादः)	
६५	सूत्राच्च कोपधात् (तृतीयः पादः)	* संख्या प्रकृतेरिति व- क्तव्यम्	९	आत्मन् विश्वजन भोगो- त्तर पदात्तवः	* राजाचार्याभ्यां नित्यम्
४	अर्धाद् यत्	* सपूर्वपदाट्ठञ् वक्त- व्यः	२१	शताच्च ठन्यतावशते	* शतप्रतिषेधेऽन्यशत- त्वेऽप्रतिषेधः
२३	सायं चिरं प्राह्णे प्रगेऽव्य- येभ्यष्ट्यु ट्युलौ तुट् च	* प्रगस्य छन्दसि गलो- पश्च	३३	खार्या ईकन्	* काकिण्याश्चोपसंख्या- नम्
६०	अन्तः पूर्वपदाट्ठञ्	* समानशब्दट्ठञ् व- क्तव्यः * तदादेश्च * ऊर्ध्व दमाच्च ठञ् वक्तव्यः * देहाच्च * लोकोत्तरपदाच्च * जनपरयोः कुक् च * मध्य शब्दादीयः * षण्मीयौ च प्रत्ययौ वक्तव्यौ	३५ ९४ १११	शाणाद् वा तदस्य ब्रह्मचर्यम् अनुप्रवचनादिभ्यश्छः	* शताच्चेति वक्तव्यम् * तच्चरतीति च * चातुर्मास्यानां य लो- पश्च * अष्टाचत्वारिंशतोङ्कु- शश्च * संज्ञायामण् वक्तव्यः * छ प्रकरणे विशिपूरि पति रुहि प्रकृतेरनात् सपूर्वपदादुपसंख्यानम्

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
१२४	गुणवचन ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च	* अर्हतो नुम् च	८४	शेवल सुपरि विशाल वरुणार्यमादीनां तृतीयात्	* अर्धे च * वरुणादीनाम तृतीया- दचो लोपः स चाकृ- सन्धीनामिति वक्तव्यम्
१३२	योपधाद् गुरुपोत्तमाद् वुञ् (द्वितीयः पादः)	* सहायाद् वेति वक्त- व्यम्		(चतुर्थः पादः)	
११	अवारपारात्यन्तानुकामं गामी	* विपरीताच्च * विगृहीतादपीष्यते	३६	तदयुक्तात्कर्मणोऽण्	* नव सूर मर्त यवि- ष्ठेभ्यो यत्
१२	समां समां विजायते	* पूर्वपदस्य यलोपव- चनम्	६९	न पूजनात्	* क्षेमाद्यः * प्राग्बहुव्रीहिग्रहणं च कर्तव्यम्
२९	संप्रोदश्च कटच्	* भङ्गायाश्च			
३७	प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ् मात्रचः	* शक्छनोर्दिनिर्वक्तव्यः * डट् स्तोमे वक्तव्यः	१०३	अनसन्तात्रपुंसकाच्छ- दसि	* अनसन्तात्रपुंसकाच्- छन्दसि वा वचनम्
४६	शदन्त विंशतेश्च	* शतग्रहणेऽन्त ग्रहणं प्रत्ययग्रहणे यस्मात् स तदादेरधिकारार्थम् * संख्याग्रहणं च कर्त- व्यम्	११६	अप्पूरणी प्रमाण्योः	* अपि प्रधानपूरणीग्र- हणं कर्तव्यम् * छन्दसि च नेतुरुप- संख्यानम् * आसाद् भृतिप्रत्यय- पूर्वपदाट्ठज्विधिः * अप्रत्ययोऽपीष्यते
१०९	केशाद्वोऽन्यतरस्याम्	* व प्रकरणे मणिहि- रण्याभ्यामुपसंख्या- नम्	११८	अज्जासिकायाः सज्ञायां नसं चास्थूलात्	
१२२	बहुलं छन्दसि	* छन्दोविन्प्रकरणेऽष्टा- मेखलाद्वयोभयरुजा- हृदयानां दीर्घश्च * मर्मणश्चेति वक्तव्यम् * सर्वत्रामयस्योपसंख्या- नम्	१३१	ऊधसोऽनङ्	* ऊधसोऽनङि स्त्रीग्र- हणम्
	(तृतीयः पादः)		३	नन्द्राः संयोगादयः	* वा नामधातूनां तृ- तीयस्य द्वे भवत इति वक्तव्यम्
२	किंसर्वनाम बहुभ्योऽद्व- यादिभ्यः	बहुग्रहणे संख्या ग्रहणम्	८	लिटिधातोरनभ्यासस्य	* द्विवचनप्रकरणे छ- न्दसि वेति वक्तव्यम्
३२	पश्चात्	* दिक्पूर्वपदस्यापरस्य पश्चभावो वक्तव्यः आतिश्च प्रत्ययः * अर्धोत्तरपदस्य च स- मासे	१२	दाश्चान् साह्वान् मीढ- वांश्च	* द्विवर्चन प्रकरणे कृ- जादीनां के
			३७	न सम्प्रसारणे सम्प्रसा- रणम्	* कक्षायाः संज्ञायाम्

संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्याः	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
५०	मीनाति मिनोति दीडां ल्यपि च	* निमीमिलियां खलचोः प्रतिषेधो वक्तव्यम्		सप्तम्युपमानाव्यय द्वि- तीया कृत्याः (तृतीयः पादः)	तानाम्
८६	षत्वतुकोरसिद्धः	* पदान्त पदाद्योरेका- देशोऽसिद्ध इति व- क्तव्यम्	५	आज्ञायिनि च	* आत्मनश्च पूरणे इ- त्युपसंख्यानम्
८९	एत्येधत्युदसु	* ऋणदशाभ्यां च,	८९	दृग्दृशवतुषु	* दृशोः क्सप्रत्ययोऽपि तत्रैव वक्तव्यः
९४	एङि पररूपम्	* सीमन्तः केशवेशे	१०९	पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्	* वाचो वादेडत्वं वल- भावश्चोत्तरपदस्येजि
१२७	इकोऽसवर्णे शाकल्य- स्य ह्रस्वश्च	* ईषा अक्षादिषु प्रकृ- तिभावमात्रं वक्तव्यम्	१२२	उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम्	* सादकारयोः कृत्रिमे * अमनुष्यादिष्विति व- क्तव्यम्
१४४	अपरस्पराः क्रियासातत्ये	* समो हितततयोर्वा लोपः * सन्तुमुनोः कामे * मनसि च * अवश्यमः कृत्ये		(चतुर्थः पादः)	* प्रतिवेशादीनां विभाषा
१५०	विष्किरः शकुनौ वा	* विष्किरं शकुनौ वि- किरो वा	८४	वर्षाभ्वश्च	* वर्षाहन्कार पुनः पूर्व- स्य भुव इति वक्तव्यम्
१५८	अनुदात्तं पदमेकवर्जम्	* विभक्तिस्वरान्नञ्स्वरो वलीयानिति वक्तव्यम् * विभक्तिनिमित्त स्व- राच्च नञ्स्वरो वली- यानिति वक्तव्यम्	९६	छादेर्धेऽद्वयुपसर्गस्य	* अद्विप्रभृत्युपसर्गस्ये- ति वक्तव्यम्
१७४	उदात्तयणो हल्पूर्वात्	* उदात्तयणि हल्प्रहणं नकारान्ताद्यर्थम्	१०६	उतश्च प्रत्ययादसंयोग पूर्वात्	* उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्
१७६	ह्रस्वनुङ्भ्यां मतुप्	* मतुबुदात्तत्वे रेग्रहणम् * त्रेश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः	११४	इददरिद्रस्य	* सिद्धश्च प्रत्ययविधौ भवतीति वक्तव्यम्
१८७	आदिः सिचोऽन्यतरस्याम्	* सिच आद्युदात्तत्वे- ऽनितः पित उपसं- ख्यानम्	१३२	वाह ऊर्	* अघतन्यां वेति वक्त- व्यम्
१९१	सर्वस्य सुपि	* सर्वस्वरोऽनञ्चस्येति वक्तव्यम्	१४८	यस्येति च	* असिद्धं वहिरङ्गम- न्तरङ्गे
२	(द्वितीयः पादः) तत्पुरुषे तुल्यार्थं तृतीया	* अव्यये नञ्कुनिपा-	१४९	सूर्यं तिष्यागस्त्य मत्स्- यानां य उपधायाः	* इयडुवङ्भ्यां लोपो भवति विप्रतिषेधेन * अन्तिकस्य तसि का- दिलोप आद्युदात्तत्वं च * तमे तादेश

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
	सप्तमोऽध्यायः (प्रथमः पादः)			(चतुर्थः पादः)	
९८	चतुरनडुहामुदात्तः	* आमनुडुहः स्त्रियां वे- ति वक्तव्यम्	१	णौ चङ्युपाधाया ह्रस्वः	* उपधाह्रस्वत्वे णेर्णि- च्युपसंख्यानम्
१०२	उदोष्ठ्यपूर्वस्य	* इत्वोत्वोभ्यां गुणवृद्धी भवतो विप्रतिषेधेन	१०	ऋतश्च संयोगादेर्गुणः	* संयोगादेर्गुणविधाने संयोगोपधग्रहणं कृ- जर्थम्
	(द्वितीयः पादः)		६१	शर्पूर्वाः खयः	* शर्पूर्वविशेषे खपूर्वग्रहणम्
१३	कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्तु	* कृञोऽ सुट इति व- क्तव्यम्	८५	नुगतोऽनुनासिकान्तस्य	* पदान्तवच्चेति वक्त- व्यम्
३६	श्रुवो लिटि			अष्टमोऽध्यायः (प्रथमः पादः)	
३६	स्तुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते	* क्रमेः कर्तर्यात्मनेपद- विषयात् कृति प्रतिषेधो वक्तव्यः	१२	प्रकारे गुणवचनस्य	* स्वार्थेऽवधार्यमाणेऽ नेकस्मिन् * चापले द्वे भवत इति वक्तव्यम् * आभ्रीक्ष्ये द्वे भवतः * पूर्वप्रथमयोरर्थातिशय विवक्षायाम् * उतरडतमयोः सम- संप्रधारणायां स्त्रीनि- गदे भावे द्वे भवतः * कर्मव्यतिहारे सर्व- नाम्नो द्वे भवत इति वक्तव्यम् * युष्मदस्यदोरन्यतरस्- यामनन्वादेश इति वक्तव्यम् * सर्व एव वान्नावादयो ऽ नन्वादेशे विभाषा वक्तव्याः * वा याथाकाम्ये
४९	सनीवन्तर्ध भ्रस्ज दम्भु	* इषेस्तकारे, श्यन्त्र- त्ययात् प्रतिषेधः			
९९	श्रि स्तु यूर्णु भर ज्ञपि				
	सनाम्				
	त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृ	* तिसृभावं संज्ञायां क- न्युपसंख्यानम्			
	चतसृ	* चहसर्याद्युदात्तनिपातनं च			
	(तृतीयः पादः)				
१	देविका शिंशपा दित्य-	* वहीनरस्येद् वचनम्			
	वाङ् दीर्घसत्र श्रेयसामात्				
१०७	अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः	* डलकवतीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः * छन्दसि वेति वक्तव्यम् * तलो ह्रस्वो वा डि- सम्बुद्ध्योरिति वक्त- व्यम् * मातृणां मातृत् पुत्रार्थ मर्हते * जसादिषु छन्दसि वा वचनं प्राङ्णौ चङ्- चुपधायाः	२६	सपूर्वायाः प्रथमाया वि- भाषा	
१०९	जसि च		६६	यद्वृत्तान्नित्यम्	

संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि	संख्या:	सूत्राणि	वार्तिकादीनि
६	(द्वितीयः पादः) स्वरितो वानुदात्ते पदादौ	<ul style="list-style-type: none"> * एकादेशेस्वरोऽन्तरङ्गः सिद्धो वक्तव्यः * संयोगान्तलोपो रोरुत्वे सिद्धः * सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वक्तव्यः * प्लुतिस्तुग्विधौ छे सिद्धौ वक्तव्यः * निष्ठादेशः षत्वस्वर-प्रत्ययेङ्विधिषु सिद्धो वक्तव्यः * श्रुत्वं घुटि सिद्धं वक्तव्यम् * अभ्यासजश्त्वच-त्वमेत्वतुकोः सिद्धे वक्तव्ये * द्विर्वचने परसवर्णत्वं सिद्धं वक्तव्यम् * पदाधिकारश्चेल्लत्व-ढत्वधत्वनत्वरुत्व ष-त्वणत्वानुनासिक छत्वानि सिद्धानि वक्तव्यानि 	<ul style="list-style-type: none"> ८३ १०३ ४१ १०१ ११४ ४५ ६१ 	<ul style="list-style-type: none"> छन्दसि प्रत्यभिवादे शूद्रे स्वरितमाग्रेडितेऽसूया संमति कोपकुत्सनेषु (तृतीयः पादः) इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य युष्मत्तत्तक्षुःष्वन्तः पादम् स्तम्भु सिवुसहां चडि (चतुर्थः पादः) यरोऽनुनासिके ऽ नुना-सिको वा उदः स्थास्तम्भोः पू-र्वस्य 	<ul style="list-style-type: none"> प्रचेतसो राजन्युपसं-ख्यानम् * असूद्रस्यसूयकेषु * असूयादिषु वावचनं कर्तव्यम् * पुम्मुहुसोः प्रतिषेधो वक्तव्यः * ह्रस्वात्तादां तिङि प्र-तिषेधः * स्तम्भु सिवु सहां चडि उपसर्गादिति वक्तव्यम् * शरः खयो द्वे भवत इति वक्तव्यम् * उदः पूर्वत्वे स्कन्दे-श्छन्दस्युपसंख्या-नम्
८	न डिसंबुद्धयो	* वा नपुंसकानामिति वक्तव्यम्			
१८	कृपो रो लः	* कृपणादीनां प्रतिषेधः			
२२	परेश्च घाङ्कयोः	* योगे चेति वक्तव्यम्			
२९	स्कोः संयोगाद्योरन्ते च	* ह्रग्रहोर्भश्छन्दसि ह-स्येति वक्तव्यम्			
३२	दादेर्धातोर्घः	* ह्रग्रहोर्भश्छन्दसि ह-स्येति वक्तव्यम्			
७०	अग्नरुधरवरित्युभयथा	* छन्दसि भाषायां च			

...

अष्टाध्यायीसूत्राणां सूची (१)

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
११	अ अ ८।४।६८	८५३	अङ्गुलेर्दारुणि ५।४।११४	२०२८	अज्ञाते ५।३।७३
१८६९	अंशंहारी ५।२।६९	२०६३	अङ्गल्यादिभ्यष्ठक् ५।३।१०८	३०४७	अञ्जेः पूजायाम् ७।२।५३
८५	अकः सवर्णे दीर्घः ६।१।१०१	१४०४	अ च ४।३।३१	१९८०	अञ्जेलुक् ५।३।३०
५३९	अकथितं च १।४।५१	३०७८	अच उपसर्गात् ७।४।४७	३७१६	अञ्जेश्छन्दस्यसर्वं ६।१।१७०
३१८८	अकर्तरि च कारके ३।३।१९	४१६	अचः ६।४।१३८	३०२४	अञ्जोऽनपादाने ८।२।४८
६०१	अकर्तर्युणे पञ्चमी २।३।२४	३६७८	अचः कर्तृयकि ६।१।१९५	२५४६	अञ्जेः सिचि ७।२।७१
२६९३	अकर्मकाच्च १।३।२६	२७६८	अचः कर्मकर्तरि ३।१।६२	८५६	अञ्जासिकायाः सं० ५।४।११८
२७०८	अकर्मकाच्च १।३।३५	५०	अचः परस्मिन्पूर्ववि० १।१।५७	१९७	अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये० ८।४।२
२७१८	अकर्मकाच्च १।३।४५	९४५	अचतुरविचतुरसुच० ५।४।७७	२४७६	अङ् गार्ग्यगालवयोः ७।३।९९
३८६४	अकर्मधारये राज्यम् ६।२।१३०	३५	अचश्च १।२।२८	१४०६	अणजौ च ४।३।३३
२१४८	अकृच्छ्रे प्रियसुखं ८।१।१३	२२९४	अचस्तास्वत्यत्य० ७।२।६१	२७५४	अणावकर्मकाञ्चित् ० १।३।८८
२२९८	अकृत्सार्वधातुकयोः ० ७।४।२५	१२५६	अचित्तहस्तिधेनो० ४।२।४७	३८०९	अणि नियुक्ते ६।२।७५
३८०७	अके जीविकार्थे ६।२।७३	१४७६	अचिताददेशका० ४।३।९६	११८०	अणो व्यचः ४।१।१५६
६२८	अकेनोर्भविष्यदाध० २।३।७०	२९९	अचि र ऋतः ७।२।१००	११०	अणोऽप्रगृह्यस्यानुना० ८।४।५७
६६४	अक्षशलाकासंख्याः ० २।१।१०	२५४१	अचि विभाषा ८।२।८१	३१८१	अणकर्मणि च ३।३।१२
३२४७	अक्षेषु ग्लहः ३।३।७०	२७१	अचि श्रुधातुभ्रुवां० ६।४।७७	१५६८	अणकुटिलिकायाः ४।४।१८
२३३८	अक्षोऽन्यतरस्याम् ३।१।७५	२५४	अचोऽज्जिति ७।२।११५	१९१०	अणच ५।२।१०३
९४४	अक्षणोऽदर्शनात् ५।४।७६	७९	अचोऽन्त्यादि टि १।१।६४	११९८	अणिजोरनार्थयोर्गुरू० ४।१।७८
१६२१	अगारान्ताङ्गन् ४।४।७०	२८४२	अचो यत् ३।१।९७	३२१९	अणिनुणः ५।४।१५
३२५६	अगारैकदेशे प्रघणः ० ३।३।७९	५९	अचो रहाभ्यां द्वे ८।४।४६	१४	अणुदित्सवर्णस्य चा० १।१।६९
३६११	अग्रीत्प्रेषणे परस्य च ८।२।९२	३८९१	अच्कावशक्तौ ६।२।१५७	१४५२	अणुगयनादिभ्यः ४।३।७३
९२४	अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ८।३।८२	२४७	अच्च घेः ७।३।११९	१५९८	अणमहिष्यादिभ्यः ४।४।४८
१२३६	अग्नेर्दक् ४।२।३३	७७०	अच्छगत्यर्थवदेषु १।४।६९	२२४८	अत आदेः ७।४।७०
३००१	अग्रौ चेः ३।२।९१	९४३	अच्यत्यन्वपूर्वा० ५।४।७५	१०९५	अत इञ् ४।१।९५
२८९२	अग्रौ परिचाय्यो० ३।१।१३१	२८५३	अजर्य संगतम् ३।१।१०५	१९२२	अत इनिठनौ ५।२।११५
७९५	अग्राख्यायामुरसः ५।४।९३	२००६	अजादी गुणवचना० ५।३।५८	२४६७	अत उत्सार्वधातुके ६।४।११०
३४६२	अग्राद्यत् ४।४।११६	२१७६	अजादेर्द्वितीयस्य ६।१।२	२२८२	अत उपधायाः ७।२।११६
८८३	अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृ० ५।४।१४५	४५४	अजाद्यतष्टाप् ४।१।४	२२६०	अत एकहल्मध्ये० ६।४।१२०
३५५३	अङितश्च ६।४।१०३	९०४	अजाद्यदन्तम् २।२।३३	१६०	अतः कृकमिकंसकुंभ० ८।३।४६
३५२२	अङ्ग इत्यादौ च ६।१।११९	१६६९	अजाविभ्यां थ्यन् ५।१।८	११९६	अतश्च ४।१।१७७
३६१५	अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम् ८।२।९६	२०३९	अजिनान्तस्योत्तरप० ५।३।८२	२११३	अतिग्रहाव्यथनक्षे० ५।४।४६
२००	अङ्गस्य ६।४।१	२८७६	अजिब्रज्योश्च ७।३।६०	२०९४	अतिथेर्ज्यः ५।४।२६
३८०४	अङ्गानि मैरेये ६।२।७०	२२९२	अजेर्व्यघजपोः २।४।५६	५५६	अतिरतिक्रमणे च १।४।९५
३९४०	अङ्गात्प्रातिलोम्ये ८।१।३३	२६१४	अज्झनगमां सनि ६।४।१६	२००१	अतिशायने तमबिष्ठनौ ५।३।५५

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
७९८	अतेः शुनः ५।४।९६	१९८९	अधिकरणविचाले च ५।३।४३	३४६	अनाप्यकः ७।२।११२
३९२५	अतेकृत्यदे ६।२।१९१	३३६२	अधिकरणे बन्धः ३।४।४१	३७८६	अनिगन्तोऽञ्चतौ व० ६।२।५२
१९१	अतो गुणे ६।१।९७	२९२९	अधिकरणे शेतेः ३।२।१५	२४७८	अनितेः ८।४।१९
२१७०	अतो दीर्घो यञि ७।३।१०१	९१९	अधिकरणैतावत्त्वे च २।४।१५	४१५	अनिदितां हल उप० ६।४।२४
२०३	अतो भिस ऐस् ७।१।९	१४६७	अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ४।३।८७	२०३१	अनुकम्पायाम् ५।३।७६
३०९	अतोऽम् ७।१।२४	५५४	अधिपरी अनर्थको १।४।९३	७६३	अनुकरणं चानितिप० १।४।६२
२२१२	अतो येयः ७।२।८०	६४४	अधिरीश्वरे १।४।९७	१८७४	अनुकाभिकाभीकः ५।२।७४
१६३	अतो रोरप्नुतादप्लुते ६।१।११३	५४२	अधिशीङ्स्थासां कर्म १।४।४६	९५१	अनुगवमायामे ५।४।८३
२३०८	अतो लोपः ६।४।४८	६१३	अधीगर्थदयेशां कर्मणि २।३।५२	२०८३	अनुगादिनष्टक् ५।४।१३
२३३०	अतो लान्तस्य ७।२।२	२८२०	अधीष्टे च ३।३।१६६	१८१६	अनुग्वलंगामी ५।२।१५
२२८४	अतो हलादेर्लघोः ७।२।७	१९६६	अधुना ५।३।१७	४०३	अनुदातं सर्वमपादादौ ८।१।१८
२२०२	अतो हेः ६।४।१०५	२७०६	अधेः प्रसहने १।३।३३	२१५७	अनुदातङित आत्म० १।३।१२
६९१	अत्यन्तसंयोगे च २।१।२९	३९२२	अधेरुपरिस्थम् ६।२।१८८	३६७०	अनुदातं च ८।१।३
२६२०	अत्रलोपोऽभ्यासस्य ७।४।५८	९०९	अध्ययनतो विप्रकृष्टा० २।४।५	३६५०	अनुदातं पदमेक० ६।१।१५८
१३६	अत्रानुनासिकः पूर्वस्य० ८।३।२	१६९३	अध्यर्धपूर्वद्विगोर्लु० ५।१।२८	३६१९	अनुदातं प्रश्नान्ता० ८।२।१००
११४७	अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ट० २।४।६५	३३०१	अध्यायन्यायोद्याव० ३।३।१२२	३६५१	अनुदातस्य च य० ६।१।१६१
४२५	अत्वसन्तस्य चाधातोः ६।४।१४	१८८०	अध्यायानुवाकयोर्लुक् ५।२।६०	२४०२	अनुदातस्य चर्दुपध० ६।१।५९
२५६६	अत्स्मृदृत्वरप्रथप्रद० ७।४।९५	१६२२	अध्यायिन्यदेशका० ४।४।७१	१२५३	अनुदात्तादेरञ् ४।२।४४
२४२६	अदः सर्वेषाम् ७।३।१००	१४४८	अध्यायेष्वेवर्षेः ४।३।६९	१५२०	अनुदात्तादेश ४।३।१४०
२४७९	अदभ्यस्तात् ७।१।४	१८१७	अध्वनो यत्खौ ५।२।१६	३६७४	अनुदात्ते च ६।१।१९०
५३	अदर्शनं लोपः १।१।६०	३७४४	अध्वर्युक्षाययोजातौ ६।२।१०	३५२३	अनुदात्ते च कुधपरे ६।१।१२०
४३७	अदस औ सुलोपश्च ७।२।१००	९०८	अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् २।४।४	३१२९	अनुदात्तेतश्च हलादेः ३।२।१४९
१०१	अदसो मात् १।१।१२	११५८	अन् ६।४।१६७	२४२८	अनुदात्तोपदेशवन० ६।४।३७
४१९	अदसोऽसेर्दादुदो मः ८।२।८०	४६२	अन उपधालोपिनो० ४।१।२८	३७०९	अनुदात्तौ सुप्तिता ३।१।४
२४२३	अदिप्रभृतिभ्यः शपः २।४।७२	२४८	अनङ् सौ ७।१।९३	२६६६	अनुनासिकस्य क्वि० ६।४।१५
१२८२	अदूरभवंश्च ४।२।७०	४८	अनचि ८।४।४७	१३७	अनुनासिकाकात्परोऽनु० ८।३।४
१७	अदेङ्गुणः १।१।२	२०७६	अनत्यन्तगतौ क्तात् ५।४।४	१८१०	अनुपदसर्वात्रायानय० ५।२।९०
३०८०	अदोजग्धिर्त्यप्तिकि० २।४।३६	७७६	अनत्याधान उरसि० १।४।७५	१८९०	अनुपधान्वेष्टा ५।२।९०
२९७७	अदोऽनन्ने ३।२।६८	२२०५	अनद्यतने लङ् ३।२।१११	२७४५	अनुपराभ्यां कृजः १।३।७९
७७१	अदोऽनुपदेशो १।४।७०	२१८५	अनद्यतने लुट् ३।३।१५	२७४३	अनुपसर्गाज्जः १।३।७६
३१५	अदतरादिभ्यः पञ्च० ७।१।२५	१९६९	अनद्यतनेर्हिलन्यत० ५।३।२१	३०३५	अनुपसर्गात्कुल्लक्षीब० ८।२।५५
३४८०	अद्भिः संस्कृतम् ४।४।१३४	२०९१	अनन्तावसथेतिह० ५।४।२३	२७१६	अनुपसर्गाद्वा १।३।४३
१८१४	अद्यश्चिनावाष्टब्धे ५।२।१३	३६२४	अनन्त्यस्यापि प्र० ८।२।१०५	२९००	अनुपसर्गात्लिम्प० ३।१।१३८
१६१	अधःशिरसी पदे ८।३।४७	५३६	अनभिहिते २।३।१	४६९	अनुपसर्जनात् ४।१।१४
१८७३	अधिकम् ५।२।७३	२८०२	अनवक्लृप्त्यमर्ष० ३।३।१४५	५७९	अनुप्रतिगृणश्च १।४।४१
६२६	अधिकरणवाचिनश्च २।३।६८	६७८	अनश्च ५।४।१०८	१७७४	अनुप्रवचनादिभ्य० ५।१।१११
७०७	अधिकरणवाचिना च २।२।१३	३५०५	अनसन्तात्रपुंसका० ५।४।१०३	१२७२	अनुब्राह्मणादिनिः ४।२।६२

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ६६९ अनुर्यत्समयां २।१।१५
 ५४७ अनुर्लक्षणे १।४।८४
 ९०७ अनुवादे चरणानाम् २।४।३
 २३४९ अनुविपर्यभिनिभ्यः ० ८।३।७२
 ४१३८ अनुशतिकादीनां च ७।३।२०
 १२४ अनुस्वारस्य ययि ० ८।४।५८
 ११०६ अनुष्यानन्तर्ये बिं ० ४।१।१०४
 ८३० अनेकमन्यपदार्थे २।२।२४
 ४५ अनेकाल्शित्सर्वस्य १।१।५५
 ३६०१ अनो नुट् ८।२।१६
 ४६० अनो बहुव्रीहेः ४।१।१२
 ३८८४ अनो भावकर्मवचनः ६।२।१५०
 २७२२ अनोरकर्मकात् १।३।४९
 ३९२३ अनोरप्रधानकनी ० ६।२।२८९
 ७९६ अनोश्मायः सरसां ० ५।४।९४
 ३०१० अनौ कर्मणि ३।२।१००
 ३८२६ अन्तः ६।२।९२
 ३८७७ अन्तः ६।२।१४३
 ३९१३ अन्तः ६।२।१७९
 २९८४ अन्तः ८।४।२०
 १४३७ अन्तः पूर्वपदाद् ७ ४।३।६०
 २२० अन्तरंबहिर्योगोप ० १।१।३६
 ३२९४ अन्तरदेशे ८।४।२४
 ७६६ अन्तरपरिग्रहे १।४।६५
 ५४५ अन्तरान्तरेण युक्ते २।३।४
 ३२५५ अन्तर्धनो देशे ३।३।७८
 ५९१ अन्तर्धौ येनादर्शन ० १।४।२८
 ८५५ अन्तर्बहिर्भ्यां च ० ५।४।११७
 ४८९ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ४।१।३२
 ३९१४ अन्तश्च ६।२।१८०
 ३६८५ अन्तश्च तवै युगपत् ६।१।२००
 २९६५ अन्तात्यन्ताध्वदूर ० ३।२।४८
 ७५ अन्तादिवच्च ६।१।८५
 २०१४ अन्तिकबाढयोर्नेद ० ५।३।६३
 ३७१५ अन्तोदात्तादुत्तर ० ६।१।१६९
 ३७०६ अन्तोऽवत्याः ६।१।२२०
 ३८१७ अन्त्यापूर्वं बह्वचः ६।२।८३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १६३७ अत्राणः ४।४।८५
 ६९६ अत्रेन व्यञ्जनम् २।१।३४
 ४९७ अन्यतो डीष् ४।१।४०
 ३३४८ अन्यधैवंकथत्थिं सु ० ३।४।२७
 ६७५ अन्यपदार्थे च संज्ञा ० २।१।२१
 ५९५ अन्यारादितरते दि ० २।३।२९
 ३१५८ अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३।२।१७८
 ३४२२ अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३।३।१३०
 २९८० अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ३।२।७५
 ३५३९ अन्येषामपि दृश्यते ६।३।१३७
 ३०११ अन्येष्वपि दृश्यते ३।२।१०१
 ३३८६ अन्वच्यानुलोभ्ये ३।४।६४
 ९४९ अन्ववतप्ताद्रहसः ५।४।८१
 ३३७५ अपगुरो णमुलि ६।१।५३
 ३२५५ अपगनोऽङ्गम् ३।३।८१
 ३०७१ अपचितश्च ७।२।३०
 १०८९ अपत्यं पौत्रप्रभृति ० ४।१।१६२
 ८१५ अपथं नपुंसकम् २।४।४०
 १३५९ अपदातौ साल्वात् ४।२।१३५
 २१० अपदान्तस्य मूर्धन्यः ८।३।५५
 ६६६ अपपरिबहिरञ्चवः ० २।१।१२
 ६९६ अपपरी वर्जने १।४।८८
 १५७१ अपमित्ययाचिता ० ४।४।२१
 १०५९ अपरस्पराः क्रिया ० ६।१।१४४
 ४८० अपरिमाणजिस्ताचि ० ४।१।२२
 ३५८० अपरिहृताश्च ७।२।३२
 २७७९ अपरोक्षे च ३।२।११९
 ५६३ अपवर्गे तृतीया २।३।६
 १०६४ अपस्करो रथाङ्गम् ६।१।१२९
 ३५०२ अपस्पृधेयामानृचुरा ० ६।१।३६
 २७१७ अपह्वे ज्ञः १।३।४४
 ३९२० अपाञ्च ६।२।१८६
 २६८८ अपाचतुष्पाच्छकु ० ६।१।१४२
 २११२ अपादाने चाहीयरुहोः ५।४।४५
 ५८७ अपादाने पञ्चमी २।३।२८
 ३३७५ अपादाने परीप्सायाम् ३।४।५२
 २७४६ अपाद्वदः १।३।७३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ५५७ अपिः पदार्थसंभाव ० १।४।९६
 ११६३ अपूर्वपदादन्यतर ० ४।१।१४०
 २५१ अपृक्त एकात्प्रत्ययः १।२।४१
 २९६७ अपे क्लेशतमसोः ३।२।५०
 ३१२४ अपे च लषः ३।२।१४४
 ७०० अपेतापोढमुक्तपति ० २।१।३८
 १२२९ अपोनक्षपानप्तृभ्यांषः ४।२।२७
 ४४२ अपो भि ७।४।४८
 २७७ अप्तृन्तृन्वृत्तृन्पृत्ते ० ६।४।११
 ८३२ अप्पूरणीप्रमाणयोः ५।४।११६
 ३२७९ अ प्रत्ययात् ३।३।१०२
 ९८ अप्लुतवदुपस्थिते ६।१।१२९
 ४६७ अभाषितपुंस्काच्च ७।३।४८
 १४७० अभिजनश्च ४।३।९०
 २०८१ अभिजिद्विदभृद ० ५।३।११८
 २७७३ अभिज्ञावचने लट् ३।२।११२
 ५४३ अभिनिविशश्च १।४।४७
 १४६६ अभिनिष्कामति द्वा ० ४।३।८६
 ३१९३ अभिनिसः स्तन ० ८।३।८६
 २७४६ अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः १।३।८०
 ५५३ अभिरभागे १।४।९१
 ३२१८ अभिविधौ भाव इनुण् ३।३।४४
 २१२४ अभिविधौ संपदा च ५।४।५३
 ३९१९ अभेर्मुखम् ६।२।१८५
 ३०६५ अभेषाविदुर्ये ७।२।२५
 १८१८ अभ्यमित्राच्छ च ५।२।१७
 २४१७ अभ्यस्तस्य च ६।१।३३
 ३६७३ अभ्यस्तानामादिः ६।१।१८९
 २२९० अभ्यासस्यासवर्णे ६।४।७८
 ३४२० अभ्यासाच्च ७।३।५५
 २१८२ अभ्यासे चर्च ८।४।५४
 ३४०३ अभ्युत्सादयांप्रजन ० ३।१।४२
 २९७० अमनुष्यकर्तृके च ३।२।५३
 ३८२४ अमहन्नवं नगरेऽनु ० ६।२।८९
 २८७४ अमावस्यादन्यतर ० ३।१।१२२
 १४०३ अमावास्याया वा ४।३।३०
 १९४ अमि पूर्वः ६।१।१०७

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३५०३	अमु च च्छन्दसि ५।४।१२	९५८	अलंखत्वोः प्रतिषे० ३।४।१८	४५१	अव्ययीभावश्च १।१।४१
९७०	अमूर्धमस्तकात्स्वा० ६।३।१२	४२	अलुगुतरपदे ६।३।१	६५९	अव्ययीभावश्च २।४।१८
७८३	अमैवाव्ययेन २।२।२०	२४९	अलोऽन्त्यस्य १।१।५२	१४३६	अव्ययीभावाच्च ४।३।५९
३५६२	अमो मश् ७।१।४०	८७५	अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधां १।१।६५	६६०	अव्ययीभावे चाकाले ६।३।८१
३६०४	अम्ररूधरवरित्युभय० ८।२।७०	९०५	अप्लाख्यायाम् ५।४।१३६	६७७	अव्ययीभावे शर० ५।४।१०७
२९१८	अम्बाम्बगोभूमिस० ८।३।९७	२०४०	अल्पे ५।३।८५	३३८१	अव्यये यथाभिप्रेता० ३।४।५९
२६७	अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ७।३।१०७	२३४	अल्लोपोऽनः ६।४।१३४	३५१९	अव्यादवद्यादव० ६।१।११६
३३३	अम् संवृद्धौ ७।१।९९	१६००	अवक्रयः ४।४।५०	२६६१	अशनायोदन्यध० ७।४।३४
१८७६	अयः शूलदण्डाजि० ५।२।७६	२०५०	अवक्षेपणे कन् ५।३।९५	१४४३	अशब्दे यत्खावन्य० ४।३।६४
२६४९	अयङ् यि किङिति ७।४।२२	८८	अवङ् स्फोटायनस्य ६।१।१२३	८२७	अशाला च २।४।२४
३२९५	अयनं च ८।४।२५	३४४२	अवक्षे च ३।४।१५	२५३३	अश्रोतेश्च ७।४।७२
३३९०	अयस्मयादीनि च्छ० १।४।२०	२८४९	अवद्यपण्यवर्याग० ३।१।१०१	२६६२	अश्वक्षीरवृषलवणा० ७।१।५१
२३११	अयामन्ताल्वाव्ये० ६।४।५५	३५२४	अवपथासि च ६।१।१२१	१०७४	अश्वपत्यादिभ्यश्च ४।१।८४
१३५३	अरण्यान्मनुष्ये ४।२।१२९	१३९७	अवयवादृतोः ७।३।११	१८२०	अश्वस्यैकाहगमः ५।२।१९
३८३४	अरिष्टगौडपूर्वे च ६।२।१००	१५१५	अवयवे च प्राण्यौ० ४।३।१३५	३५९०	अश्वघस्यात् ७।४।३७
२९४२	अरुद्विषदजन्तस्य मु० ६।३।६७	१७४८	अवयसि ठश्च ५।१।८४	१११३	अश्वदिभ्यः फञ् ४।१।११०
२१२१	अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोर० ५।४।५१	३४१६	अवयाः श्वेतवाः पु० ८।२।६७	३४७२	अश्विमानण् ४।४।१२६
२४९३	अर्तिपिप्तयौश्च ७।४।७७	९४७	अवसमन्धेभ्यस्त० ५।४।७९	२०७९	अषडक्षाशितंग्वलं० ५।४।७
३१६५	अर्तिलूधूसूखनस० ३।२।१८४	२२७३	अवाच्चालम्बनावि० ८।३।६८	१०२५	अषष्ठ्यतृतीयास्थ० ६।३।९९
२५७०	अर्तिह्रीव्लीरीन्कू० ७।३।३६	१८३४	अवात्कुटारच्च ५।२।३०	*३७१	अष्टन आ विभक्तौ ७।२।८४
१७८	अर्थवदधातुरप्रत्ययः १।२।४५	२७२४	अवाग्रः १।३।५१	१०४६	अष्टनः संज्ञायाम् ६।३।१२५
३७७८	अर्थे ६।२।४४	१७१२	अवारपारात्यन्तानु० ५।२।११	३७१८	अष्टनो दीर्घात् ६।१।१७२
१०२६	अर्थे विभाषा ६।३।१००	१३४९	अवृद्धादपि बहु० ४।२।१२५	३७२	अष्टाभ्य औश् ७।१।२१
३०६४	अर्देः संनिविभ्यः ७।२।२४	१११६	अवृद्धाभ्यो नदी० ४।१।११३	२२४२	असंयोगाल्लिट् कित् १।२।५
७१३	अर्थं नुपंसकम् २।२।२	२०९६	अवेः कः ५।४।२८	१५२९	असंज्ञायां तिल० ४।२।१४९
८१६	अर्थर्चाः पुंसि च २।४।३१	३२२६	अवो ग्रहो वर्षप्रति० ३।३।५१	१६८२	असमासे निष्का० ५।१।२०
८०२	अर्थाच्च ५।४।१००	३९९९	अवे तृस्त्रोर्घञ् ३।३।१२०	१३७९	अ सांप्रतिके ४।३।९
१६८४	अर्धात्परिमाणस्य पू० ७।३।२६	३४१५	अवे यजः ३।२।७२	२१८३	असिद्धवदत्राभात् ६।४।२२
१३७४	अर्धाद्यत् ४।३।४	३१८७	अवोदैधौद्यप्रथम० ६।४।२९	३४६९	असुरस्य स्वम् ४।४।१२३
३८२४	अर्मे चावर्णं व्यच्च्यच् ६।२।९०	३१९७	अवोदोनियः ३।३।२६	२९५१	असूर्यललाटयोर्द्व० ३।२।३६
२८५१	अर्यः स्वामिवैश्ययोः ३।१।१०३	८१	अव्यक्तानुकरणस्या० ६।१।९८	७६९	अस्तं च १।४।६८
३६४	अर्वणस्त्रसावनजः ६।४।१२७	२१२८	अव्यक्तानुकरणाद्व्य० ५।४।५७	१९७६	अस्ताति च ५।३।४०
१९३३	अर्शादिभ्योऽच् ५।२।१२७	६५२	अव्ययं विभक्तिसमी० २।१।६	१५१०	अस्तिनास्तिटिष्टं० ४।४।६०
२९२६	अर्हः ३।२।१२	२०२६	अव्ययसर्वनाम्नाम० ५।३।७१	२२५	अस्तिसिचोऽपृक्ते ७।३।९६
३११३	अर्हः प्रशंसायाम् ३।२।१३३	१३२४	अव्ययात्त्यप् ४।२।१०४	२४७०	अस्तेर्भूः २।४।५२
२८२२	अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९	४५२	अव्ययादाप्सुपः २।४।८२	३२२२	अस्थिदधिसक्थ्य० ७।१।७५
३११६	अलंकृज्जिराकृ० ३।२।१३६	६५१	अव्ययीभावः २।१।५	८१८	अस्मदो द्वयोश्च १।२।५९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२१६४	अस्मद्युत्तमः १।४।१०७	२८४५	आडो यि ७।१।६५	१५१३	आथर्वणिकस्ये० ४।३।१३३
१९२८	अस्मायामेधासं० ५।२।१२१	६६७	आङ् मर्यादाभिवि० २।१।१३	७६४	आदरानादरयोः सं० १।४।६३
२११८	अस्य च्वौ ७।४।३२	५९७	आङ् मर्यादावचने १।४।८९	४६८	आदाचार्याणाम् ७।३।४९
३३७९	अस्यतिवृषोः क्रिया० ३।४।५७	१४७	आङ्माडोश्च ६।१।७४	३७६१	आदिः प्रत्येनसि ६।२।२७
२४३८	अस्यतिवक्तिख्या० ३।१।५२	१७८२	आ च त्वात् ५।१।१२०	३७३१	आदिः सिचोऽन्य० ६।१।१८७
२५२०	अस्यतेस्थुक् ७।४।१७	२४९८	आ च हौ ६।४।११७	३०५३	आदिकर्मणि क्तः क० ३।४।७१
५०९	अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ४।१।५३	३८३८	आचर्योपसर्जन० ६।२।१०४	३०३६	आदितश्च ७।२।१६
७८७	अहःसर्वैकदेसं० ५।४।८७	३७७०	आचार्योपसर्जनश्चा० ६।२।३६	२	आदिरन्त्येन सहेता १।१।७१
१९४६	अहंशुभमोर्युस् ५।२।१४०	४८५	आच्छीनघोर्नुम् ७।१।८०	३७९८	आदिरुदातः ६।२।६४
४४३	अहन् ८।२।६८	३५७२	आज्जसेरसुक् ७।१।५०	२२८९	आदिर्जिटुडवः १।३।५
३७८१	अहीने द्वितीया ६।२।४७	९६२	आज्ञायिनि च ६।३।५	३६७७	आदिर्णमुल्यन्यत० ६।१।१९४
३९६८	अहेतिविनियोगे च ८।१।६१	२६९	आटश्च ६।१।१०	३८५९	आदिश्चिहणादीनाम् ६।२।२२५
३९४७	अहो च ८।१।४०	२२५४	आडजादीनाम् ६।४।७२	३१५१	आदृगमहनजनः० ३।२।१७१
७८९	अह्नोखोरेव ६।४।१४५	२२०४	आडुत्तमस्य पिञ्च ३।४।९२	४४	आदेः परस्य १।१।५४
७९१	अह्नोऽदन्तात् ८।४।७	१७१९	आढकाचितपात्रा० ५।१।५३	२३७०	आदेच उपदेशेऽशिति ६।१।४५
७९०	अहोऽह एतेभ्यः ५।४।८८	२९७३	आढ्यसुभगस्थूल० ३।२।५६	२१२	आदेशप्रत्यययोः ८।३।५९
२३२	आकडारादेका संज्ञा १।४।१	२६८	आण् नद्याः ७।३।११२	६९	आहुणः ६।१।८७
१५५७	आकर्षाष्टल् ४।४।९	३४२९	आत ऐ ३।४।९५	३४८	आद्यन्तवदेकस्मिन् १।१।२१
१८६४	आकर्षादिभ्यः कन् ५।२।६४	२३७१	आत औ णलः ७।१।३४	३६	आद्यन्तौ टकितौ १।१।४६
१७७७	आकालिकडाद्य० ५।१।११४	२२२७	आतः ३।४।११०	३८५३	आद्युदात्तं द्व्यच्छ० ६।२।११९
१५८८	आक्रन्दादुच्च ४।४।३८	२८९८	आतश्चोपसर्गे ३।१।१३६	३७०८	आद्युदात्तश्च ३।१।३
३८९२	आक्रोशे च ६।२।१५८	३२८३	आतश्चोपसर्गे ३।३।१०६	६३२	आधारोऽधिकरण् १।४।४५
३२८९	आक्रोशे नञ्यनिः ३।३।११२	२२३५	आतो डितः ७।२।८१	९२१	आनङ्गतो द्वन्द्वे ६।३।२५
३२२०	आक्रोशे वन्योर्ग्रहः ३।३।४५	३६३२	आतोऽटि नित्यम् ८।३।३	२८८८	आनाय्योऽनित्ये ३।१।१०७
३११४	आ क्वेस्तच्छीलत० ३।२।१३४	२४०	आतो धातोः ६।४।१४०	२२३१	आनि लोट् ८।४।१६
५९२	आख्यातोपयोगे १।४।२९	२९१५	आतोऽनुपसर्गे कः ३।२।३	३१०१	आने मुक् ७।२।८२
१८१५	आगवीनः ५।२।१४	३४१८	आतो मनिन्क्वनि० ३।२।७४	८०७	आन्महतः समाना० ६।३।४६
११५२	आगस्त्यकौण्डिन्य० २।४।७०	२७६१	आतो युक् चिण् ७।३।३३	१०८२	आत्यस्य च तद्धि० ६।४।१५१
१२२४	आग्रहायण्यश्चत्थाड्क् ४।२।२२	३३०९	आतो युक् ३।३।१२८	३५२१	आपो जुषाणो वृ० ६।१।११८
२७१३	आङ उद्गमने १।३।४०	२३७२	आतो लोप इटि च ६।४।६४	८९२	आपोऽन्यतरस्याम् ७।४।१५
२८९	आङि चापः ७।३।१०५	९६३	आत्मनश्च ६।३।६	२६१९	आप्लप्यधामीत् ७।४।५५
२९२५	आङि ताच्छील्ये ३।२।११	२२५८	आत्मनेपदेष्वनतः ७।१।५	१८०९	आप्रपदं प्राप्नोति ५।२।८
३२५०	आङि युद्धे ३।३।७३	२६९६	आत्मनेपदेष्वन्यत० २।४।४४	२१४५	आबाधे च ८।१।१०
२६८६	आडो दोऽनास्यवि० १।३।२०	२४१९	आत्मनेपदेष्वन्यतर० ३।१।५४	३३४३	आभीक्ष्ये णमुल्च ३।४।२२
२४४	आडो नाऽस्त्रियाम् ७।३।१२०	१६७०	आत्मन्विश्वजन० ५।१।९	३९६२	आम एकान्तरमाम० ८।१।५५
३५२५	आडोऽनुनासिक० ६।१।१२६	२९९३	आत्ममाने खश्च ३।२।८३	२२३८	आमः २।४।८१
२६९५	आडो यमहनः १।३।२८	१६७१	आत्माध्वानौ खे ६।४।१६९	४१२	आमन्त्रितं पूर्वमवि० ८।१।७२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३६५३	आमन्त्रितस्य च ६।१।१९८	१०६१	आस्वदं प्रतिष्ठा० ६।१।१४६	२४५५	इणो वण् ६।४।८१
३६५४	आमन्त्रितस्य च ८।१।१९	२४५१	आहस्वः ८।२।३५	२११	इणकोः ८।३।५७
२१७	आमि सर्वनाम्नः सुट् ७।१।५२	१९८६	आहि च दूरे ५।३।३७	३१४२	इण्णजिसर्तिभ्यः ३।२।१६३
२२५१	आमेतः ३।४।९०	३९५६	आहो उताहो चान० ८।१।४९	३०४५	इण्णिष्ठायां ७।२।४७
२२४०	आम्प्रत्ययवत्कृजो० १।३।६३	१०४५	इकः काशे ६।३।१२३	१९६३	इतराभ्योऽपि दृश्यते ५।३।१४
३६१४	आम्नेडितं भर्त्सने ८।२।९५	३५३६	इकः सुजि ६।३।१३४	२६८२	इतरेतरान्योन्योपप० १।३।१६
४७५	आयनेयीनीयियः फ० ७।१।२	३४	इको गुणवृद्धि १।१।३	२२०७	इतश्च ३।४।१००
२३०५	आयादय आर्धधा० ३।१।३१	३२०	इकोऽचि विभक्तौ ७।१।७३	३४२६	इतश्च लोपः परस्मै० ३।४।९७
६६७	आयुक्तकुशलाभ्यां० २।३।४०	२६१२	इको झल् १।२।९	१०२५	इतश्चानिजः ४।१।१२२
१४७१	आयुधजीविभ्यश्छः० ४।३।९१	४७	इको यणचि ६।१।७७	३६६	इतोऽत्सर्वनामस्थाने ७।१।८६
२०६७	आयुधजीविसंघा० ५।३।११४	१०४३	इको वहेऽपीलोः ६।३।१२१	५२०	इतो मनुष्यजातेः ४।१।६५
१५६४	आयुधाच्छ च ४।४।१४	९१	इकोऽसवर्णे शाक० ६।१।१२७	५६६	इत्थंभूतलक्षणे २।३।२१
११३६	आरगुदीचाम् ४।१।१३०	९९९	इको हस्वोऽङ्यो गा० ६।३।६१	३८८३	इत्थंभूतेन कृतमि० ६।२।१४९
२१८७	आर्धधातुकं शेषः ३।४।११४	३७६३	इगन्तकालकपाल० ६।२।२९	१०१८	इदंकिमोरीशकी ६।३।९०
२१८४	आर्धधातुकस्येड्वला० ७।२।३५	१७९६	इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ५।१।१३१	३५६८	इन्दतो मसि ७।१।४६
२४३२	आर्धधातुके २।४।३५	२८९७	इगुपथज्ञापीकिरः० ३।१।१३५	१९४९	इदंम् इश् ५।३।३
२३०७	आर्धधातुके ६।४।४६	३२८	इग्युणः संप्रसारणम् १।१।४५	१९७२	इदमस्थमुः ५।३।२४
३७९२	आर्यो ब्राह्मणकुमा० ६।२।५८	२६१६	इडश्च २।४।४८	३५०	इदमोऽन्वादेशेऽश० २।४।३२
१६८१	आर्हादगोपुच्छसं० ६।१।१९	३१९१	इडश्च ३।३।२१	३४३	इदमो मः ७।२।१०८
१९३१	आलजाटचौ बहु० ५।२।१२५	३११०	इड्धार्योः शत्रुक० ३।२।१३०	१९६५	इदमोर्हिल् ५।३।१६
५२९	आवट्याञ्च ४।१।७५	२९९४	इच एकाचोऽम्प्रत्य० ६।३।६८	१९५८	इदमो हः ५।३।११
३३११	आवश्यकधम० ३।३।१७०	८६६	इच्कर्मव्यतिहारे ५।४।१२७	२२६२	इदितो नुम्धातोः ७।१।५८
१६२५	आवसयात्थल् ४।४।७४	३२७८	इच्छा ३।३।१०१	१५५	इदुदुपधस्य चाप्रत्य० ८।३।४१
२७९०	आशंसाया भूतवञ्च ३।३।१३२	२८१६	इच्छार्थेभ्यो विभा० ३।३।१६०	२९७	इदुभ्याम् ७।३।११७
२७९२	आशंसावचने लिङ् ३।३।१३४	२८१४	इच्छार्थेषु लिङ्लो० ३।३।१५७	३४४	इदोऽय् पुंसि ७।२।१११
३७५५	आशङ्काबाधनेदीय० ६।२।२१	२८३८	इजादेः सनुमः ८।४।३२	१७०३	इद्रोण्याः १।२।५०
३६९५	आशितः कर्ता ६।१।२०७	२२३७	इजादेश्च गुरुमतोऽ० ३।१।३६	२४८२	इदरिद्रस्य ६।४।११४
२९६२	आशिते भुवःकरण० ३।२।४५	१०८५	इजः प्राचाम् २।४।६०	९२५	इद्वद्धौ ६।३।२८
२९१२	आशिषि च ३।१।१५०	१३३३	इजश्च ४।२।११२	८९०	इनः स्त्रियाम् ५।४।१५२
६१६	आशिषि नाथः २।३।५५	२२६६	इट ईटि ८।२।२८	१८३४	इनचिपटञ्चिकचि च ५।२।३३
२१९५	आशिषि लिङ्लोटौ ३।३।१७३	२२५७	इटोऽत् ३।४।१०६	१२४५	इनण्यनपत्ये ६।४।१६४
२९६६	आशिषि हनः ३।२।४९	२६२५	इट् सनि वा ७।२।४१	१२६०	इनित्रकठयचश्च ४।२।५१
१०६२	आश्चर्यमनित्ये ६.१.१४७	२३८४	इडत्यतिव्ययतीनाम् ७।२।६६	५०५	इन्द्रवरुणभवशर्वरु० ४।१।४९
१४२०	आश्चर्ययुज्या वुज् ४।३।४५	३६३९	इडाया वा ८।३।५४	१८९३	इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमि० ५।२।९३
१९००	आसन्दीवदष्ठीवच्च० ८।२।१२	१५३	इणः घः ८।३।३९	८९	इन्द्रे च ६।१।१२४
४३०	आ सर्वनाम्नः ६।३।९१	२२४७	इणः षीध्वलुङ्लिटां० ८।३।७८	३३९३	इन्धिभवतिभ्यां च १।२।६
२८८७	आसुयुवपिरपि० ३।१।१२६	२४५८	इणो गा लुङि २।४।४५	३५६	इन्हन्पूषार्यम्णां शौ ६।४।१२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३५४७	इरयोरे ६।४।७६
२२६९	इरितो वा ३।१।५७
२०५१	इवे प्रतिकृतौ ५।३।९६
२४००	इषुगमियमां छः ७।३।७७
१००६	इष्टकेषीकामां ६।३।६५
१८८८	इष्टादिभ्यश्च ५।२।८८
३५७०	इष्ट्वीनमिति च ७।१।४८
२०१८	इष्टस्य यिट् च ६।४।१५९
१२२१	इसुसुक्तान्तात्कः ७।३।५१
१५८	इसुसोः सामर्थ्ये ८।३।४४
२९८५	इस्मन्त्रन्विषु च ६।४।९७
२६४८	ई ब्राघ्मोः ७।४।३१
२८६०	ई च खनः ३।१।१११
२५७३	ई च गणः ७।४।९७
३५७६	ई च द्विवचने ७।१।७७
२४४०	ईडजनोर्ध्वे च ७।२।७८
३७०२	ईडवन्दवृशांसदुं ६।१।२१४
२३३	ईदग्रेः सोमवरुणयोः ६।३।२७
३१०४	ईदासः ७।२।८३
१०९	ईदूतौ च सप्तम्यर्थे १।१।१९
१००	ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम् १।१।११
२८४३	ईद्यति ६।४।६५
८९४	ईयसश्च ५।४।१५६
३७०७	ईवत्याः ६।१।२२१
२४३९	ईशः से ७।२।७७
३४४०	ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ३।४।१३
७५५	ईषदकृता २।२।७
३७८८	ईषदन्यतरस्याम् ६।२।५४
१०३१	ईषदर्थे ६।३।१०५
२०२२	ईषदसमाप्तौ क्लपब् ५।३।६७
३३०५	ईषदुः सुषु कृच्छ्रं ३।३।१२६
२४९७	ई हल्यघोः ६।४।११३
९९	ई ३ चाक्रवर्मणस्य ६।१।१३१
१६६२	उगवादिभ्यो यत् ५।१।२
४५५	उगितश्च ४।१।६
९८७	उगितश्च ६।३।४५
३६१	उगिदचां सर्वनामं ७।१।७०

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२९५२	उग्रपश्येरमदषाणिं ३।२।३७
५	उच्चैरुदात्तः १।२।२९
३६६४	उच्चैस्तरां वा वषट् १।२।३५
१०६	उजः १।१।१७
१७०	उजि च पदे ८।३।२१
१५८२	उज्छति ४।४।३२
३६८१	उज्छादीनां च ६।१।१६०
३१६९	उणादयो बहुलम् ३।३।१
२३३४	उतश्च प्रत्ययां ६।४।१०६
२८०९	उताप्योः समर्थं ३।३।१५२
२३४४	उतो वृद्धिर्लुकि हलि ७।३।८९
१८८०	उत्क उन्मनाः ५।२।८०
२३०९	उत्कारादिभ्यश्छः ४।२।९०
७९४	उत्तमैकाभ्यां च ५।४।९०
१६४१	उत्तरपथेनाहतं च ५।१।७७
३८३९	उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ६।२।१०५
१३९६	उत्तरपदस्य ७।३।१०
३८४५	उत्तरपदादिः ६।२।१११
८००	उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थः ५।४।९८
१९८७	उत्तराच्च ५।३।३८
१९८३	उत्तराधरदक्षिणादां ५।३।३४
२६३७	उत्तरस्यातः ७।४।८८
१०७८	उत्सादिभ्योऽञ् ४।१।८६
४२०	उद ईत् ६।४।१३९
११८	उदः स्थास्तम्भोः पूं ८।४।६१
९९५	उदकस्योदः संज्ञायाम् ६।३।५७
३८३०	उदकेऽकेवले ६।२।९६
१२८६	उदक्च विपाशः ४।२।७४
३३०२	उदङ्गोऽनुदके ३।३।१२३
१९०१	उदन्वानुदधौ च ८।२।१३
१८६७	उदराङ्गाघूने ५।२।६७
३८४१	उदराश्वेषु ६।२।१०७
२७२६	उदश्वरः सकर्मकात् १।३।५३
१२२०	उदश्वितोऽन्यतरस्यां ४।२।१९
३७२०	उदात्तयणोहलपूर्वात् ६।१।१७४
३६६९	उदात्तस्वरितपरस्य १।२।४०
३६५७	उदात्तस्वरितयोर्यणः ८।२।४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३६६०	उदात्तादिनुदात्तस्य ८।४।६६
२९४५	उदि कूले रुजिवहोः ३।१।३१
३२०७	उदि ग्रहः ३।३।३५
३३२८	उदितो वा ७।३।५६
३२२४	उदि श्रयतियौतिपू ३।३।४९
११८१	उदीचां वृद्धादगो ४।१।१५७
४६५	उदीचामातः स्थाने ७।३।४६
३३१७	उदीचां माडो व्यती ३।४।१९
११७७	उदीचामिञ् ४।१।१५३
१३३०	उदीच्यग्रामाच्च ब ४।२।१०९
३०५६	उदुपधाद्वावादिकं १।२।३१
२६९१	उदोऽनूर्ध्वकर्मणि १।३।२४
२४१४	उदोष्पपूर्वस्य ७।१।१०२
३२५७	उदघ्नोऽत्याधानम् ३।३।८०
८८६	उद्विभ्यां काकुदस्य ५।४।१४८
२६९४	उद्विभ्यां तपः १।३।२७
३२००	उद्योर्ग्रः ३।३।२९
११५१	उपकादिभ्योऽन्यत २।४।६९
३२६३	उपघ्न आश्रये ३।३।८५
१४१५	उपजानूपकर्णोपनी ४।३।४०
१४९५	उपज्ञाते ४।३।११५
८२४	उपज्ञोपक्रमं तदाद्यां २।४।२१
३३६८	उपदंशस्तृतीयायाम् ३।४।४७
३	उपदेशोऽजनुनासिक १।३।२
२२७५	उपदेशोऽत्वतः ७।३।६२
२२६५	उपधायां च ८।२।७८
२५७१	उपधायाश्च ७।१।१०१
७८२	उपपदमतिङ् २।२।१९
२७१२	उपपराभ्याम् १।३।३९
३८१४	उपमानं शब्दार्थं ६।२।८०
८७६	उपमानाच्च ५।४।१३७
७९९	उपमानादप्राणिषु ५।४।९७
२६४४	उपमानादाचारे ३।१।१०
७३४	उपमानानि सामान्यं २।१।५५
३३६६	उपमाने कर्मणि च ३।४।४५
७३५	उपमितं व्याघ्रादि २।१।५६
३६२१	उपरिस्विदासीदि ८।२।१०२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२१४२	उपर्यध्यधः सामीप्ये ८।१।७	३६३०	उभयथर्शु ८।३।८	९९३	ऋचः शे ६।३।५५
१९८१	उपर्युपरिष्ठात् ५।३।३१	६२४	उभयप्राप्तौ कर्मणि २।३।६६	३५३६	ऋचितनुधमक्षुतं ६।३।१३३
३४३१	उपसंवादाशङ्कयोश्च ३।४।८	१८४५	उभादुदात्तो नित्यम् ५।२।४४	२३८३	ऋच्छत्यृताम् ७।४।११
२४७२	उपसर्गप्रादुर्भ्यामं ८।३।८७	४२६	उभे अभ्यस्तम् ६।१।५	३०४३	ऋणमाधमर्ण्ये ८।२।६०
३९४५	उपसर्गव्यपेतं च ८।१।३८	३८७४	उभे वनस्पत्यादिं ६।२।१४०	२७९	ऋत उत् ६।१।१११
१०४४	उपसर्गस्य घञ्यं ६।३।१२२	२६०६	उभौ साभ्यासस्य ८।४।२०	२६५३	ऋतश्च ७।४।९२
२३२६	उपसर्गस्यायतौ ८।२।१९	१५३६	उमोर्णयोर्वा ४।३।१५८	२५२६	ऋतश्च संयोगादेः ७।२।४३
२२	उपसर्गाः क्रियायोगे १।४।५९	८८९	उः प्रभृतिभ्यः कप् ५।४।१५०	२३७९	ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ७।४।१०
८५८	उपसर्गाच्च ५।४।११९	७०	उरण् रपरः १।१।५१	३५०८	ऋतश्छन्दसि ५।४।१५८
३४९६	उपसर्गाच्छन्दसि ५।१।११८	२२४४	उरत् ७।४।६६	१४५७	ऋतष्टञ् ४।३।७८
३३०६	उपसर्गात्खल्वजोः ७।१।६७	१६४६	उरसोऽण्च ४।४।९४	२४२२	ऋतेरीयङ् ३।१।२९
२२७०	उपसर्गात्सुनोतिषु ८।३।६५	१४९४	उरसो यच्च ४।३।११४	२७५	ऋतो डिसर्वनामं ७।४।११०
३९११	उपसर्गात्खाङ्गं ६।२।११७	२५६७	उर्कृत् ७।४।७	१५९९	ऋतोऽञ् ४।४।४९
९५३	उपसर्गादध्वनः ५।४।८५	२३६८	उश्च १।२।१२	२२९६	ऋतो भारद्वाजस्य ७।२।६३
२२८७	उपसर्गादसमासेपि ८।४।१४	२३४१	उषविदजागृभ्यो ३।१।३८	१७६९	ऋतोरण् ४।१।१०५
७४	उपसर्गादृति धातौ ६।१।९१	९२८	उषासोषसः ६।३।३१	९८१	ऋतो विद्यायोनिसंबं ६।३।२३
२७०२	उपसर्गाद्वस्व ऊहतेः ७।४।२३	३७७४	उष्ट्रः सादिवाम्योः ६।२।४०	९२	ऋत्यकः ६।१।१२८
८५९	उपसर्गाद्वहुल् ८।४।२८	१५३५	उष्ट्राद्बुञ् ४।३।१५७	३७३	ऋत्विग्दधृक्स्तदिगुं ३।२।५९
३२७०	उपसर्गे घोः किः ३।३।९२	२२१४	उस्यपदान्तात् ६।१।९६	३५५६	ऋत्त्यवास्त्वयवां ६।३।१७५
३००९	उपसर्गे च संज्ञायाम् ३।२।९९	१०७	ऊँ १।१।१८	२८५९	ऋदुपधाच्चाक्लपि ३।१।११०
३२३५	उपसर्गेऽदः ३।३।५९	४	ऊकालोऽञ्जस्वदीर्घं १।२।२७	२७६	ऋदुशनस्पुरदंसोऽने ७।१।९४
३१९२	उपसर्गे रुवः ३।३।२२	५२१	ऊङुत्तः ४।१।६६	२४०६	ऋदृशोऽङि गुणः ७।४।१६
६५४	उपसर्जनं पूर्वम् २।२।३०	३७१७	ऊङिदंपदाद्यप् ६।१।१७१	२३६६	ऋद्धनोः स्ये ७।२।७०
२८५२	उपसर्गा काल्या ३।१।१०४	३२७४	ऊतियूतिजूतिताति ३।३।९७	३०६	ऋन्नेभ्यो डीप् ४।१।१४
२७५०	उपाच्च १।३।८४	९४२	ऊदनोदेशे ६।३।९८	१६७६	ऋषभोपानहोर्ज्यः ५।१।१४
७७४	उपाजेऽन्वाजे १।४।७३	२३६४	ऊदुपधाया गोहः ६।४।८९	१११७	ऋष्यन्धकवृष्णिक् ४।१।११४
२५५२	उपात्प्रतियत्यवै ६।१।१३९	४८३	ऊधसोऽनङ् ५।४।१३१	२८७२	ऋहलोर्ण्यत् ३।१।१२४
२८४२	उपात्प्रशंसायाम् ७।१।६६	३८८७	ऊनार्थकलहं तृती ६।२।१५३	२३९०	ऋत इद्धातोः ७।१।१००
३९२८	उपाद्व्यजनिमं ६।२।१९४	५२४	ऊरुत्तरपदादौप्ये ४।१।६९	३२३२	ऋदोरप् ३।३।५७
२७२९	उपाद्यमः स्वकरणे १।३।५६	१९२९	ऊर्णाया युस् ५।२।१२३	६८	एकः पूर्वपरयोः ६।१।८४
१८३५	उपाधिभ्यां त्यक्त्रा ५।२।३४	२४४९	ऊर्णोतेर्विभाषा ७।२।६	१९२५	एकगोपूर्वाङ्गि ५।२।११८
२६९२	उपान्मन्त्रकरणे १।३।२५	२४४५	ऊर्णोतेर्विभाषा ७।३।९०	१०००	एकतद्धिते च ६।३।६२
५४४	उपान्वध्याङ्सः १।४।४८	८६९	ऊर्ध्वाद्भिभाषा ५।४।१३०	१६३१	एकधुराल्लुक्च ४।४।७९
३०९८	उपेयिवाननाश्च ३।२।१०९	३३६५	ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ३।४।४४	२१४४	एकं बहुव्रीहिवत् ८।१।९
३७३३	उपोत्तमं रिति ६।१।२१७	७६२	ऊर्यादिक्विडाचश्च १।४।६१	१९२	एकवचनं संबुद्धिः २।३।४९
५५१	उपोऽधिके च १।४।८७	१९१४	ऊषसुषिमुष्कमथो ५।२।१०७	३९६	एकवचनस्य च ७।१।३२
१४१९	उप्ते च ४।३।४४	९४०	ऋक्पूरब्धूपथामानक्षे ५।४।७४	६५५	एकविभक्ति चापूर्वं १।२।४४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२०६४	एकशालायाष्ठज० ५।३।१०९	३२३१	एरच् ३।३।५६	१३५०	कच्छाग्निवक्रव० ४।२।१२६
३६६२	एकश्रुति दूरात्संबुद्धौ १।२।३३	२७२	एरनेकाचोऽसंयोग० ६।४।८२	१३५७	कच्छादिभ्यश्च ४।२।१३३
२०८७	एकस्य सकृच्च ५।४।१९	२१९६	एरुः ३।४।८६	१४८७	कठचरकाल्लुक् ४।३।१०७
९९७	एकहलादौ पूरयित० ६।३।५९	२३७४	एलिङि ६।४।६७	१६२३	कठिनान्तप्रस्तारसं० ४।४।७२
२२४६	एकाच उपदेशेऽनु० ७।२।१०	३९५३	एहि मन्ये प्रहासे लट् ८।१।४६	१७३३	कडंकरदक्षिणाच्छ च ५।१।६९
२१७५	एकाचो द्वे प्रथमस्य ६।१।१	१००६	एकागारिकट् चौरै ४।१।११३	७५१	कडाराः कर्मधारये २।२।३८
३२६	एकाचो बशो भष् झ० ८।२।३७	१३२६	ऐषमोह्यःश्चसोऽन्यव ४।२।१०५	७६७	कणेमनसी श्रद्धाप्र० १।४।६६
२०४९	एकाच्च प्राद्याम् ५।३।९४	२५७७	ओः पुण्यज्यपरे ७।४।८०	३८४८	कण्ठपृष्ठप्रीवाजङ्घं च ६।२।११४
३०७	एकाजुत्तरपदे णः ८।४।१२	२८१	ओः सुपि ६।४।८३	२६७८	कण्ठवादिभ्यो यक् ३।१।२७
१९९८	एकादाकिनिच्चास० ५।३।५२	२८८०	ओक उचः के ७।३।६४	१३३२	कण्वादिभ्यो गोत्रे ४।२।१११
८११	एकादिश्चैकस्य चादुक् ६।४।७६	१५७७	ओजःसहोम्भासां ४।४।२७	३७९१	कतरकतमौ कर्म० ६।२।५७
३६५८	एकादेश उदात्तेनोदात्तः ८।२।५	९६०	ओजःसहोमस्तम० ६।३।३	७४२	कतरकतमौ जाति० २।१।६३
२१९०	एकाद्धोध्यमुजन्य० ५।३।४४	३४७६	ओजसोऽहनि यत्खौ ४।४।१३०	१३१५	कत्यादिभ्यो ठक् ४।२।९५
३९७२	एकान्याभ्यां सम० ८।१।६५	१०४	ओत् १।१।१५	१६५४	कथादिभ्यश्चक् ४।४।१०२
८६	एको गोत्रे ४।१।९३	२५१०	ओतः श्यनि ७।३।७१	३४४९	कद्रुकमण्डल्वोश्च० ४।१।७१
८६	एङपदान्तादति ६।१।१०९	१७९	ओतो गार्ग्यस्य ८।३।२०	३८५८	कन्था च ६।२।१२४
७८	एङि पररूपम् ६।१।९४	३०१९	ओदिश्च ८।२।४५	१३६६	कन्थापलदनगर० ४।२।१४२
१३३८	एङ् प्राचां देशे १।१।७५	३६०६	ओमभ्यादाने ८।२।८७	१३२२	कन्थायाष्ठक् ४।२।१०२
१९३	एङ्हस्वात्संबुद्धेः ६।१।६९	८०	ओमाडोश्च ६।१।९५	१११९	कन्यायाः कनीन च ४।१।११६
३२३	एच इग्घ्रस्वादेशे १।१।४८	१२८३	ओरञ् ४।२।७१	१७९२	कपिज्ञात्योर्ढक् ५।१।१२७
३६२६	एचोऽप्रगृह्यस्यां ८।२।१०७	१५१९	ओरञ् ४।३।१३९	३९०७	कपि पूर्वम् ६।२।१७३
६१	एचोऽयवायावः ६।१।७८	२८८६	ओरावश्यके ३।१।१२५	१११०	कपिबोधादाङ्गिरसे ४।१।१०७
२९४१	एजेः खश् ३।२।२८	८४७	ओर्गुणः ६।४।१४६	३०८४	कपिष्ठलो गोत्रे ८।३।९१
१५३७	एण्या ढञ् ४।३।१५९	१३४३	ओर्देशे ठञ् ४।२।११९	२३१०	कर्मेणिङ् ३।१।३०
४३८	एत ईद्रहुवचने ८।२।८१	२१०५	ओषधेश्च जातौ ५।४।३७	१६६३	कम्बलाच्च संज्ञायाम् ५।१।३
२३५३	एत ऐ ३।४।९३	३५३४	ओषधेश्च विभक्तां ६।३।१३२	११९४	कम्बोजाल्लुक् ४।१।१७५
१७६	एतत्तदोः सुलोपो० ६।१।१३२	२०७	ओसि च ७।३।१०४	३२९३	करणाधिकरणयोश्च ३।३।११७
१९६२	एतदस्त्रतसोस्त्रतसौ० २।४।३३	११५९	औक्षमनपत्ये ६।४।१७३	६०४	करणे च स्तोकाल्प० २।३।३३
१९५१	एतदोऽन् ५।३।५	२८७	औड आपः ७।१।१८	२९९६	करणे यजः ३।२।८५
१०२३	एति संज्ञायामगात् ८।३।९९	२५६	औत् ७।३।१२८	३२५८	करणेऽयोविदुषु ३।३।८२
२८५७	एतिस्तुशास्वृद्जु० ३।१।१०९	२८५	औतोऽम्शासोः ६।१।९३	३३५९	करणे हनः ३।४।३७
१९५०	एतेतौ रथोः ५।३।४	३६३५	कः कर्त्तरति कृ० ८।३।५०	२०६५	कर्कलोहितादीकक् ५।३।११०
२४५७	एतेर्लिङि ७।४।२४	१९४४	कंशंभ्यां बभयुस्ति० ५।२।१३८	१४४४	कर्णललाटात्कनलं० ४।३।६५
७३	एत्येधत्यूटसु ६।१।८९	३८५६	कंसमन्थशूर्पपा० ६।२।१२२	१०३६	कर्णे लक्षणस्यावि० ६।३।११५
१९९२	एधाञ्च ५।३।४६	१६९०	कंसाड्डित् ५।१।२५	३८४६	कर्णो वर्णलक्षणात् ६।२।११२
६१०	एनपा द्वितीया २।३।३१	१५४७	कंसीयपरशव्ययो० ४।३।१६८	२६८०	कर्तरि कर्मव्यतिहारे १।३।१४
१९८४	एनबन्यतरस्यामदूरे० ५।३।३५	८८४	ककुदस्यावस्थायां० ५।४।१४६	२८३२	कर्तरि कृत् ३।४।६७

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
७१०	कर्तरि च २।२।१६	३६८०	कर्षात्वतो घ० ६।१।१५९	१७७०	कालाद्यत् ५।१।१०७
३१६७	कर्तरि चर्षिदेवतयोः ३।२।१८६	१४८८	कलापिनोऽण् ४।३।१०८	५५८	कालाध्वनोरत्यन्त० २।३।५
२९७४	कर्तरि भुवः खिष्णुच् ३।२।५७	१४८४	कलापिवैशम्पाय० ४।३।१०४	१२३७	कालेभ्यो भववत् ४।२।३४
२१६७	कर्तरि शप् ३।१।६८	१४२३	कलाप्यश्चत्ययवबु० ४।३।४८	१२९९	कालोपसर्जने च १।२।५७
२९८९	कर्तृयुपमाने ३।२।६९	१२०९	कलेर्ढक् ४।२।८	१४८३	काश्यपकौशिका० ४।३।१०३
२६६५	कर्तुः क्यङ् सलोपश्च ३।१।११	११३१	कल्याण्यादीनामि० ४।१।१२६	१३४०	काश्यादिभ्यश्च ४।२।११६
५३५	कर्तुरीप्सिततमं कर्म १।४।४९	१०३३	कवं चोष्णे ६।३।१०७	२०४५	कासूगोणाभ्यां ष्टश्च ५।३।९०
५६१	कर्तृकरणयोस्तृतीया २।३।१८	३५९२	कव्यध्वरपृतनस्यर्चि० ७।४।३९	१०६९	कास्तीराजस्तुन्दे० ६।१।१५५
६९४	कर्तृकरणे कृता बहु० २।१।३२	३४११	कव्यपुरीष्येषु० ३।२।६५	२३०६	कास्प्रत्ययादाममन्त्रे० ३।१।३५
६२३	कर्तृकर्मणोः कृति २।३।६५	३३५७	कषादिषु यथाविध्य० ३।४।४६	२०४७	किंयत्तदोर्निर्धारणे० ५।३।९२
३३०८	कर्तृकर्मणोश्च भूकृ० ३।३।१२७	२६७०	कष्टाय क्रमणे ३।१।१४	३९५५	किंवृत्तं च चिदुत्तरम् ८।१।४८
२७१०	कर्तृस्थे चाशरीरे क० १।३।३७	१४४	कस्कादिषु च ८।३।४८	२८०१	किंवृत्ते लिङ्लटौ ३।३।१४४
३३६४	कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्न० ३।४।४३	२०२७	कस्य च दः ५।३।७२	२७८५	किंवृत्ते लिप्सायाम् ३।३।६
१७६७	कर्मण उक्ञ् ५।१।१०३	१२२७	कस्येत् ४।२।२५	१९४८	किं सर्वनामबहुभ्यो० ५।३।२
५६९	कर्मणा यमभिप्रैति १।४।३२	१९१८	काण्डाण्जादीरन्त्री० ५।२।१११	२८०३	किंकिलास्त्यर्थेषु० ३।३।१४६
१८३६	कर्मणि घटोऽठच् ५।२।३५	४८१	काण्डान्ताक्षेत्रे ४।१।२३	३९५१	किं क्रियाप्रश्नेऽनुप० ८।१।४४
७०८	कर्मणि च २।२।१४	१४३	कानाप्रैडिते ८।३।१२	७४३	किं क्षेपे २।१।६४
३२९१	कर्मणि च येन सं० ३।३।११६	१०३०	का पथ्यक्षयोः ६।२।१०४	३७१२	कितः ६।१।१६५
३३५०	कर्मणि दृशिदिदोः० ३।४।२९	१३१९	कापिश्याः ष्फक् ४।२।९९	१०७६	किति च ७।२।११८
५६७	कर्मणि द्वितीया २।३।२	२८१०	कामप्रवेदनेऽक० ३।३।१५३	२२१६	किदाशिषि ३।४।१०४
२९३६	कर्मणि भृतौ ३।२।२२	२६६३	काम्यच्च ३।१।९	३४२	किमः कः ७।२।१०३
२९९७	कर्मणि हनः ३।२।८६	३८८२	कारकादुत्तश्रुतयोः० ६।२।१४८	९५५	किगः क्षेपे ५।४।७०
३००३	कर्मणीनि विक्रियः ३।२।९३	५३४	कारके १।४।२३	१८४२	किमः संख्यापरि० ५।२।४१
२६७१	कर्मणि रोमन्थत० ३।१।१५	९६८	कारनन्नि च प्राचां० ६।३।१०	१९७३	किमश्च ५।३।२५
३००२	कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ३।२।९२	१०७०	कारस्करो वृक्षः ६।१।१५६	१८४१	किमिदंभ्यां वो घः ५।२।४०
२९१३	कर्मण्यण् ३।२।१	१००७	कारे सत्यागदस्य ६।३।७०	२००४	किमेतिडव्ययघादा० ५।४।११
३२७१	कर्मण्यधिकरणे च ३।३।९३	३७७०	कार्तकौजपादयश्च ६।२।३७	१९५९	किमोऽत्त ५।३।१२
३३४६	कर्मण्याक्रोशे कृ० ३।४।२५	१६१४	कार्मस्ताच्छील्ये ६।४।१७२	२५३९	किरतौ लवने ६।१।१४०
२१४६	कर्मधारयदुत्तरेषु ८।१।८१	१८८१	कालप्रयोजनाद्रोगे ५।२।८१	२६११	किरश्च पञ्चभ्यः ७।२।७५
३७८०	कर्मधारयेऽनिष्ठा ६।२।४६	२७९५	कालविभागे चान० ३।३।१३७	१६०३	किसरादिभ्यः ष्टन् ४।४।५३
१४९१	कर्मन्दकृशाश्वादि० ४।३।१११	३१७९	कालसमयवेलासु० ३।३।१६७	७६१	कुगतिप्रादयः २।२।१८
५४८	कर्मप्रवचनीययुक्ते० २।३।८	६९०	कालाः २।१।२८	२०४३	कुटीशमीशुण्डा० ५।३।८८
५४६	कर्मप्रवचनीयाः १।४।८३	७१६	कालाः परिमाणिना २।२।५	३८७०	कुण्डं वनम् ६।२।१३६
२७६६	कर्मवत्कर्मणा तुल्य० ३।१।८७	२१०१	कालाच्च ५।४।३३	१९५४	कुतिहोः ७।२।१०४
१७६४	कर्मवेषाद्यत् ५।१।१००	१३८१	कालाङ्क् ४।३।११	२०४४	कुत्वा डुपच् ५।३।८९
३२८५	कर्मव्यतिहारे ण० ३।३।४३	१७४२	कालात् ५।१।७८	३९७६	कुत्सने च सुप्यगो० ८।१।६९
१६१४	कर्माध्ययने वृत्तम् ४।४।६३	१४१८	कालात्माधुपुष्य० ४।३।४३	७३२	कुत्सितानि कुत्सनैः २।१।५३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२०२९	कुत्सिते ५।३।७४
१४२	कुप्वो - क - पौ च ८।३।३७
१०५६	कुमति च ८।४।१३
८०६	कुमहद्भ्यामन्य० ५।४।१०५
७५२	कुमारश्रमणादिभिः २।१।७०
२९६८	कुमारशीर्षयोर्णिनिः ३।२।५१
३७६०	कुमारश्च ६।२।२६
३८२९	कुमार्या वयसि ६।२।९५
१३०६	कुमुदनडवेतसे० ४।२।८७
८७८	कुम्भपदीषु च ५।४।१३९
३७७६	कुरुगार्हपतरिक्तगु० ६।२।४२
११९०	कुरुनादिभ्यो ण्यः ४।१।१७२
११७५	कुर्वादिभ्यो ण्यः ४।१।१५१
१३१६	कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः० ४।२।९६
११३२	कुलटाया वा ४।१।१२७
१५५२	कुलत्थकोपधादण् ४।४।४
११६२	कुलात्त्वः ४।१।१३९
१४९८	कुलालादिभ्यो वुञ् ४।३।११८
१७२१	कुलिजाल्लुक्खौ च ५।१।५५
१८८३	कुल्माषादञ् ५।२।८३
२०६०	कुशाग्राच्छः ५।३।१०५
२७७२	कुषिरजोः प्राचां श्य० ३।१।९०
१५८१	कुसीददशैकादशां० ४।४।३१
३८३६	कुसूलकूपकुम्भ० ६।२।१०२
१०५८	कुस्तुम्बुरुणि जातिः ६।१।१४३
२२४५	कुहोश्चु ७।४।१६२
३८५५	कूलतीरतूलमूल० ६।२।१२१
३८६३	कूलसूदस्थलक० ६।२।१२९
१३६९	कृकणपर्णाद्भारद्वा० ४।२।१४५
३०६२	कृच्छ्रगहनयोः कषः ७।२।२२
६१४	कृजः प्रतियत्ने २।३।५३
३२७७	कृजः श च ३।३।१००
२१२९	कृजो द्वितीयतृतीय० ५।४।५८
२९३४	कृजो हेतुताच्छी० ३।२।२०
२२३९	कृञ् चानुप्रयुज्यते० ३।१।४०
१४१३	कृतलब्धक्रीतकृश० ४।३।३८
१४९६	कृते ग्रन्थे ४।३।११६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१७९	कृतद्धितसमासाश्च १।२।४६
२८३५	कृत्यचः ८।४।२९
७४९	कृत्यतुल्याख्या अ० २।१।६८
२८४१	कृत्यल्युटो बहुलम् ३।३।११३
२८३१	कृत्याः ३।१।९५
६२९	कृत्यानां कर्तरि वा २।३।७१
३४४१	कृत्यार्थे तवैकेन्के० ३।४।१४
३३१२	कृत्याश्च ३।३।७१
६९५	कृत्यैरधिकार्थवचने २।१।३३
७२०	कृत्यैर्ऋणे २।१।४३
३८९४	कृत्योक्तेषुच्चार्याद० ६।२।१६०
६२२	कृत्योर्थप्रयोगे का० २।३।६४
३७४	कृदतिङ् ३।१।९३
४४९	कृन्मेजन्तः १।१।३९
२३५०	कृपो रो लः ८।२।१८
२११७	कृभ्वस्तियोगे संपद्य० ५।४।५०
३४०६	कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ३।१।५९
३५९२	कृषेश्छन्दसि ७।४।६४
२२९३	कृसृमृवस्तुद्रुसृश्रुवो० ७।२।१३
३२०१	कृ धान्ये ३।३।३०
११४४	कैकयमित्रयुप्रलयानां० ७।३।२
८३४	कैऽणः ७।४।१३
१२४८	केदाराद्यश्च ४।२।४०
४८८	केवलमामकभागधे० ४।१।३०
१९१६	केशाद्दोऽन्यतर० ५।२।१०९
१२५७	केशाश्चाभ्यां य० ४।२।४८
१०२७	को; कतत्पुरुषेऽचि ६।३।१०१
१२९१	कोपधाच्च ४।२।७९
१५१७	कोपधाच्च ४।३।१३७
१३५६	कोपधादण् ४।२।१३२
१४१७	कोशाद्गुञ् ४।३।४२
१५१२	कौपिञ्जलहास्तिप० ४।३।१३२
१२१४	कौमारापूर्ववचने ४।२।१३
४७७	कौरव्यमाण्डूकाभ्यांच ४।१।१९
११७९	कौशस्वकार्मार्यां० ४।१।११५
२२१७	किङिति च १।१।५
३०१२	क्तवतू निष्ठा १।१।२६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
६२५	क्तस्य च वर्तमाने २।३।६७
५०७	क्तादल्पाख्यायाम् ४।१।५१
३३१३	किच्छतौ च सं० ३।३।१७४
३७७९	क्ते च ६।२।४५
७०६	क्तेन च पूजायाम् २।२।१२
७३९	क्तेन नञ्विशिष्टे० २।१।६०
७२२	क्तेनाहोरात्रावयवाः २।१।४५
३७९५	क्ते नित्यार्थे ६।२।६१
३०८७	क्तोऽधिकरणे च ध्रौ० ३।४।७६
७८५	क्त्वा च २।२।२२
४५०	क्त्वातोऽनुक्तसुनः १।१।४०।
३५६०	क्त्वापि च्छन्दसि ७।१।३८
३३२१	क्त्वि स्फन्दिस्यन्दोः ६।४।३१
३५६९	क्त्वो यक् ७।१।४७
८३७	क्यङ्मानिनोश्च ६।३।३६
२६५८	क्यचि च ७।४।३३
२११९	क्यच्च्योश्च ६।४।१५२
२६६०	क्यस्य विभाषा ६।४।५०
३१५०	क्याच्छन्दसि ३।२।१७०
१४४७	क्रतुयज्ञेभ्यश्च ४।३।६८
१२७०	क्रतुव्यादिसूत्रान्ताद्गुक् ४।२।६०
२८९१	क्रतौकुण्डपायसं० ३।१।१३०
३८५२	क्रत्वादयश्च ६।२।११८
२३२२	क्रमः परस्मैपदेषु ७।३।७६
३३२९	क्रमश्च क्त्वि ६।४।१८
१२७१	क्रमादिभ्यो वुन् ४।२।६१
६६	क्रय्यस्तदर्थे ६।१।८२
२९७८	क्रव्ये च ३।२।६९
६८१	क्रियाथोपपदस्य च क० २।३।१४
२८२५	क्रियासमभिहारे लोट्० ३।४।२
२६००	क्रीङ्जीनां णौ ६।१।४८
२६८७	क्रीडोऽनुसंपरिभ्य० १।३।२१
१५३४	क्रीतवत्परिमाणात् ४।३।१५६
५०६	क्रीतात्करणपूर्वात् ४।१।५०
५७५	क्रुधद्रुहेष्यासूयार्थां० १।४।३७
५७६	क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः० १।४।३८
३१३१	क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ३।२।१५१

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १२०० क्रीड्यादिभ्यश्च ४।१।८१
 २५५४ क्रयादिभ्यः श्ना ३।१।८१
 ३०४९ क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ७।२।५०
 ३२४२ क्वणो वीणायां च ३।३।६५
 ३०९५ क्वसुश्च ३।२।१०७
 १९६० क्वाति ७।२।१०५
 ३७७ क्विन्त्रत्यस्य कुः ८।२।६२
 २९८३ क्विप् च ३।२।७६
 ११६१ क्षत्राद्धः ४।१।१३८
 ३६८९ क्षयो निवासे ६।१।१०१
 ६५ क्षय्यज्यौ शक्यार्थे ६।१।८१
 ३०३२ क्षायो मः ८।२।५३
 २७९१ क्षिप्रवचने लट् ३।३।१३३
 ३३३८ क्षियः ६।४।५९
 ३६२३ क्षियाशीः प्रैषेति ८।२।१०४
 ३०१५ क्षियो दीर्घात् ८।२।४६
 १२२२ क्षीराङ्गञ् ४।२।२०
 ९१२ क्षुद्रजन्तवः २।४।८
 ११३७ क्षुद्राभ्यो वा ४।१।१३१
 १४९९ क्षुद्राभ्रमरवटरपां ४।३।११९
 ३०५८ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तं ७।२।१८
 ७९२ क्षुभ्रादिषु च ८।४।३९
 ३७७३ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ६।२।३९
 १८९२ क्षेत्रियच्चारक्षेत्रे चिं ५।२।९२
 ७२४ क्षेपे २।१।४७
 ३८४२ क्षेपे ६।२।१०८
 २९६१ क्षेमप्रियमद्रेऽण्च ३।२।४४
 २३३७ क्सस्याचि ७।३।७२
 १६३० खः सर्वधुरात् ४।४।७८
 ३४७८ ख च ४।४।१३२
 २९५५ खचि ह्रस्वः ६।४।९४
 ६८८ खट्वा क्षेपे २।१।२६
 १२५४ खण्डिकादिभ्यश्च ४।२।४५
 ३३०४ खनौ घ च ३।३।१२५
 ७६ खरवसानयोर्विसर्जं ८।३।१५
 १२१ खरि च ८।४।५५
 १२५९ खलगीरथात् ४।२।५०

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १६६८ खलयवमाषतिलवृषं ५।१।७
 १७९८ खार्या ईकन् ५।२।३३
 ८०३ खार्याः प्राचाम् ५।४।१०१
 २९४३ खित्यनव्यस्य ६।३।६६
 ३५१३ खिदेश्छन्दसि ६।१।५२
 २५५ ख्यत्यात्परस्य ६।१।११२
 ३८७३ गतिकारकोपपदां ६।२।१३९
 ५४० गतिबुद्धिप्रत्यवसां १।४।५२
 ३७८३ गतिरनन्तरः ६।२।४९
 ३९७० गतिर्गतौ ८।१।७०
 २७ गतिश्च १।४।६०
 ५८५ गत्यर्थकर्मणि द्वितीं २।३।१२
 ३९५८ गत्यर्थलोटा लृण् ८।१।५१
 ३०८६ गत्यर्थकर्मकश्लिषं ३।४।७२
 ३१४४ गत्वरश्च २।३।१६४
 २८४८ गदमदचरयमश्चां ३।१।१००
 ३७४७ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ६।२।१३
 २७०५ गन्धनावक्षेपणसेव १।३।३२
 ८७४ गन्धस्येदुत्पूतिसुं ५।४।१३५
 २९८६ गमः क्वौ ६।४।४०
 २९६४ गमश्च ३।२।४७
 २३६३ गमहनजनखनघं ६।४।९८
 २४०१ गमेरिट् परस्मैपदेषु ७।२।५८
 १४३५ गम्भीराञ्जः ४।३।५८
 ११०७ गर्गादिभ्यो यञ् ४।१।१०५
 १३६१ गर्तोत्तरपदाच्छः ४।२।१३७
 २७९९ गर्हायां लङि ३।३।१४२
 २८०६ गर्हायां च ३।३।१४९
 ९१५ गवाश्चभृतीनि च २।४।१
 ९६७ गवियुधिभ्यां स्थिरः ८।३।९५
 २९०८ गः स्थकन् ३।१।१४६
 १३६२ गहादिभ्यश्च ४।२।१३८
 २४६१ गाङ्कुटादिभ्योऽङ्गि १।२।१
 २४५९ गाङ् लिटि २।४।४९
 १९१७ गाण्ड्यजगात्संज्ञां ५।२।११०
 २२२३ गतिस्थाधुपाभूभ्यः २।४।७७
 १२७५ गाथिविदथिकेशिं ६।४।१६५

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३७३८ गाधलवणयोः प्रमाणे ६।२।४
 २९२२ गापोष्टक् ३।२।८
 ६८३ गिरेश्च सेनकस्य ५।४।११२
 १६५५ गुडादिभ्यष्ठञ् ४।४।१०३
 १७८८ गुणवचनब्राह्मणां ५।१।१२४
 २४४८ गुणोऽपृक्ते ७।३।९१
 २६३० गुणो यद्दलुकोः ७।४।८२
 २३८० गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ७।४।२९
 २३०३ गुपधूपविच्छिपणिं ३।१।२८
 ३४०४ गुपेश्छन्दसि ३।१।५०
 २३९३ गुप्तिज्जिभ्यः सन् ३।१।५
 ९७ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्यां ८।२।८६
 ३२८० गुरोश्च हलः ३।३।१०३
 २७३९ गृधिवङ्ग्योः प्रलम्भने १।३।६९
 ११४३ गृष्ट्यादिभ्यश्च ४।१।१३६
 १६४२ गृहपतिना संयुक्ते ज्यः ४।४।९०
 २९०६ गेहे कः ३।१।१४४
 ३५७४ गोः पादान्ते ७।१।५७
 ३२९८ गोचरसंचरवहन्नं ३।३।११९
 ३८१२ गोतन्तिवयं पाले ६।२।७८
 २७४ गोतो णित् ७।१।९०
 १४७९ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो ४।३।९९
 १७९९ गोत्रचरणाच्छ्लाघां ५।१।१३४
 १५०६ गोत्रचरणाद्वुञ् ४।३।१२६
 ११७१ गोत्रस्त्रियाः कुत्सं ४।१।१४७
 १४५९ गोत्रादङ्गवत् ४।३।८०
 १०९४ गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् ४।१।९४
 ३८०३ गोत्रान्तेवासिमाणव ६।२।६९
 ११९९ गोत्रावयवात् ४।१।७९
 १०९९ गोत्रे कुञ्जादिभ्यः ४।१।९८
 १०८१ गोत्रऽलुगचि ४।१।८९
 १२४६ गोत्रोक्षोष्टोरभ्रराजं ४।२।३९
 १७०५ गोव्यचोऽसंख्यां ५।१।३९
 ११३५ गोधाया द्रक् ४।१।१२९
 १५३८ गोपयसोर्यत् ४।३।१६०
 १५५४ गोपुच्छाङ्गञ् ४।४।६
 १३६० गोयवाग्वोश्च ४।२।१३६

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ७१९ गोरतद्धितलुकि ५।४।९२
३८०६ गोबिडालसिंहसैन्ध० ६।२।७२
१५२५ गोश्च पुरीषे ४।३।१४५
१८६२ गोषदादिभ्यो वुन् ५।२।६२
१८१९ गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे ५।२।१८
१०६० गोष्पदं सेवितासे० ६।१।१४५
६५६ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य १।२।४८
३७७५ गौः सादसादिसार० ६।२।४१
१०१० ग्रन्थान्ताधिके च ६।३।७९
३५८२ ग्रसितस्कथितस्त० ७।२।३४
३२६४ ग्रहवृद्धिनिश्चिगमश्च ३।३।५८
२४१२ ग्रहिज्यावयिधिव० ६।१।१६
२५६२ ग्रहोऽलिटि दीर्घः ७।२।३७
३७९६ ग्रामः शिल्पिनि ६।२।६२
७९७ ग्रामकौटाभ्यां च त० ५।४।९५
१३७७ ग्रामजनदैकदैशाद० ४।३।७
१२५१ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ४।२।४३
१४४० ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् ४।३।६१
१३१४ ग्रामाद्यखजौ ४।२।९४
३८१८ ग्रामेऽनिवसन्तः ६।२।८४
८३९ ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरु० १।२।७३
१४३४ ग्रीवाभ्योऽण्च ४।३।५७
१४२१ ग्रीष्मवसन्तादन्यत० ४।३।४६
१४२४ ग्रीष्मावरसमाद्गृ ४।३।४९
२६३९ ग्रो यङि ८।२।२०
३११९ ग्लाजिस्थश्च गस्तुः ३।२।१३९
९७५ घकालतनेषु काल० ६।३।१७
३४६३ घच्छौ च ४।४।११७
१२६७ घञः सास्यां क्रिये० ४।२।२८
३२३६ घञपोश्च २।४।३८
३१८९ घञि च भावकरणयोः ६।४।२७
२०३४ घनिलचौ च ५।३।७९
९८५ घरूपकल्पचेलङ्ब्रुव० ६।३।४३
३५५० घसिभसोर्हलि च ६।४।१००
२४६२ घुमास्थागापाजहा० ६।४।६६
३०६३ घुघिरविशब्दने ७।२।२३
२४५ घेडिति ७।३।१११

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३५८४ घोलोपो लेटि वा ७।२।७०
३८१९ घोषादिषु च ६।२।८५
२४७१ ध्वसोरेद्धावभ्यास० ६।४।११९
१३४ डमोहस्वादचि डमु० ८।३।३२
३७०० डयि च ६।१।२१२
२४६ डसिङ्सोश्च ६।१।११०
२१६ डसिङ्योः स्मात्स्मिना ७।१।१५
४३ डिच्च १।१।५३
२९६ डिति ह्रस्वश्च १।४।६
३८२ डेप्रथमयोर्म् ७।१।२८
२७० डेराम्नाघात्रीभ्यः ७।३।११६
२०४ डेर्यः ७।१।१३
१३० ड्योः कुट्टकुशरि ८।३।२८
१००१ ड्यापोः संज्ञाछन्द० ६।३।६३
१८२ ड्याप्तातिपदिकात् ४।१।१
३७२४ ड्यश्छन्दसि बहु० ६।१।१७८
२४३६ दक्षिङ् ख्याञ् २।४।५४
२३१५ दङि ६।१।११
३६७९ दङ्यन्यतरस्याम् ६।१।२१८
२८६३ दजोः कुधिण्यतोः ७।३।५२
११३४ दटकाया ऐरक् ४।१।१२८
३६८२ दतुरः शसि ६।१।१६७
३३१ दतुरन्डुहोरामुदात्तः ७।१।९८
६३१ दतुर्थी चाशिष्यायु० २।३।७३
६९८ दतुर्थी तदर्थाथव० २।१।३६
३७७७ दतुर्थी तदर्थे ६।२।४३
५७० दतुर्थी संप्रदाने २।३।१३
३३९६ दतुर्थ्यर्थे बहुलं छ० २।२।६२
७५३ दंतुप्पादो गर्भिण्या २।१।७१
११४१ दंतुष्पाभ्यो ङ् ४।१।१३५
३९६४ दनचिदिवगोत्रादि० ८।१।५७
१०१४ दरणे ब्रह्मचारिणि ६।३।८६
१२५५ दरणेभ्यो धर्मवत् ४।२।४६
१५५६ दरति ४।४।८
२६३६ दरफलोश्च ७।४।८७
३९३० दरेष्टः ३।२।१६
१६७७ चर्मणोऽण् ५।१।१५

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३३५२ चमोदरयोः पूरेः ३।४।३१
३१२८ चलनशब्दार्थाद० ३।२।१४८
३९६६ चवायोगे प्रथमा ८।१।५९
२० चादयोऽसत्वे १।४।५७
३९७० चादिलोपे विभाषा ८।१।६३
३९६५ चादिषु च ८।१।५८
२६४७ चायः की ६।१।२१
३५११ चायः की ६।१।३५
९०१ चार्थे द्वन्द्वः २।२।२९
३९६९ चाहलोपः एवेत्यव० ८।१।६२
२३२९ चिणो लुक् ६।४।१०४
२७६२ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्य० ६।४।९३
२४१३ चिण्ते पदः ३।१।६०
२७५८ चिण्भावकर्मणोः ३।१।६६
३७१० चितः ६।१।१६३
१०४७ चितेः कपि ६।३।१२७
१७५५ चित्तवति नित्यम् ५।१।८९
२८९३ चित्याग्रिचित्ये च ३।१।१३२
२८०७ चित्रीकरणे च ३।३।१५०
३६२० चिदिति चोपमार्थे० ८।२।१०१
३२८२ चिन्तिपूजिकथि० ३।३।१०५
२५६९ चिस्फुरोर्णी ६।१।५४
३८६१ चीरमुपमानम् ६।२।१२७
१८९ चुटू १।३।७
१५७३ चूर्णादिनिः ४।४।२३
३८६८ चूर्णादीन्यप्राणि० ६।२।१३४
३८६० चेलखेटकटुकका० ६।२।१२६
३३५४ चेलेक्रोपेः ३।४।३३
३७८ चोः कुः ८।२।३०
३६५२ चौ ६।१।२२२
४१७ चौ ६।३।१३८
२५६१ च्छ्वोः शूडनुनासिके च ६।४।१९
२२२१ च्लि लुङि ३।१।४३
२२२२ च्लेः सिच् ३।१।४४
२१२० च्वौ च ७।४।२६
१४८९ छगलिनो ढिनुक् ४।३।१०९
१२३० छ च ४।२।२८

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १६१२ छत्रादिभ्यो णः ४।४।६२
 १६७५ छदिरुपधिबलेर्ज् ५।१।१३
 ३४२१ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ३।३।१२९
 ३४९५ छन्दसि घस् ५।१।१०६
 ३४९२ छन्दसि च ५।१।६७
 ३५०७ छन्दसि च ५।४।१४२
 ३५३२ छन्दसि च ६।३।१२६
 ३४५० छन्दसि ठञ् ४।३।१९
 ३४०७ छन्दसि निष्ठक्यं ३।१।१२३
 १८८९ छन्दसि परिपन्थि ५।२।८९
 ३३९१ छन्दसि परेऽपि १।४।८१
 ३३८७ छन्दसि पुनर्वस्वोरे १।२।६१
 ३०९३ छन्दसि लिट् ३।२।१०५
 ३४२३ छन्दसि लुङ्लङ् ३।४।६
 ३४०८ छन्दसि वनसनर ३।२।२७
 ३६३४ छन्दसि वा प्राप्ते ८।३।४९
 ३४३२ छन्दसि शायजपि ३।१।८४
 ३४०९ छन्दसि सहः ३।२।६३
 ३६०० छन्दसीरः ८।२।१५
 १६४५ छन्दसो निर्मिते ४।४।९३
 १४५० छन्दसो यदणौ ४।३।७१
 ३९४२ छन्दस्यनेकमपि ८।१।३५
 ३५४५ छन्दस्यपि दृश्यते ६।४।७३
 ३५७५ छन्दस्यपि दृश्यते ७।१।७६
 ३४३५ छन्दस्युभयथा ३।४।११७
 ३५४० छन्दस्युभयथा ६।४।५
 ३५४८ छन्दस्युभयथा ६।४।८६
 ३६४८ छन्दस्युदवग्रहात् ८।४।२६
 १५०९ छन्दोगौक्थिकया ४।३।१२९
 ३२०५ छन्दोनाम्नि च ३।३।३४
 ३२०६ छन्दोनाम्नि च ८।३।९४
 १२८८ छन्दोब्राह्मणानि च त ३।२।६६
 ३८२० छात्रादयः शालाया ६।२।८६
 ३२९७ छादेर्धेऽव्युपसर्गस्य ६।४।९६
 ८२५ छायाबाहुल्ये २।४।२२
 १४६ छे च ६।१।७३
 १७२९ छेदादिभ्यो नित्यम् ५।१।६४

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३१२ जश्शसोः शिः ७।१।२०
 ४२८ जक्षित्यादयः षट् ६।१।६
 १४३२ जङ्गलधेनुवलजान्त ७।३।२५
 १३४८ जनपदतवध्योश्च ४।२।१२४
 ११८६ जनपदशब्दात्क्ष ४।१।१६८
 १४८० जनपदिनां जनपद ४।३।१००
 १२९३ जनपदे लुप् ४।२।८१
 ३४१३ जनसनखनक्रमय ३।२।६७
 २५०४ जनसनखनां सञ्ज्ञलोः ६।४।४२
 ५९३ जनिकर्तुः प्रकृतिः १।४।३०
 ३५४२ जनिता मन्त्रे ६।४।५३
 २५१२ जनिवध्योश्च ७।३।३५
 २६३८ जपजभदहदशभञ्ज ७।४।८६
 १५४४ जम्बा वा ४।३।१६५
 ८६४ जम्भासुहरिततृण ५।४।१२५
 ३६९० जयः करणम् ६।१।२०२
 २२७ जराया जरसन्य ७।२।१०१
 ३१३५ जल्पभिक्षकुडुलुण्ट ३।२।१५५
 २१४ जसः शी ७।१।१७
 २४१ जसि च ७।३।१०९
 २४९८ जहातेश्च ६।४।११६
 ३३३१ जहातेश्च क्तिव ७।४।४३
 ३१४५ जागरूकः ३।२।१६५
 २४८० जाग्रोऽविचिण्ण ७।३।८५
 १५३१ जातरूपेभ्यः प ४।३।१५३
 ३९०४ जातिकालसुखा ६।२।१७०
 २०३७ जातिनाम्नः कन् ५।३।८१
 ९१० जातिरप्राणिनाम् २।४।६
 २८०४ जातुयदोर्लिङ् ३।३।१४७
 ५१८ जातेरस्त्रीविषयाद ४।१।६३
 ८४२ जातेश्च ६।३।४१
 २०८१ जात्यन्ताच्छ बन्धुनि ५।४।९
 ८१७ जात्याख्यायामेक १।२।५८
 ३९५४ जात्वपूर्वम् ८।१।४७
 ५०० जानपदकुण्ड ४।१।४२
 ३३३० जान्तनशां विभाषा ६।४।३२
 ८७२ जायाया निङ् ५।४।१३४

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३३०३ जालमानायः २।३।१२४
 ६१७ जासिनिप्रहणनाट २।३।५६
 २५८९ जिघ्रतेर्वा ७।४।६
 ३१३७ जिदृक्षिवित्री ३।२।१५७
 १४४१ जिह्वामूलाङ्गुलेश्च ४।३।६२
 ३०९२ जीर्यतेरतृन् ३।२।१०४
 १०९० जीवति तु वश्ये ४।१।१६३
 २०५४ जीविकार्थे चापण्ये ५।३।९९
 ७८० जीविकोपनिषदावा १।४।७९
 ३१३० जुचङ्क्रम्वदन् ३।२।१५०
 ३६९७ जुष्टार्पिते च च्छ ६।१।२०९
 २४८१ जुसि च ७।२।८३
 २४८९ जुहोत्यदिभ्यः श्लुः २।४।७५
 ३३२७ जूत्रश्च्योः क्तिव ७।२।५५
 २२९१ जृस्तम्भुमुचु ३।१।५८
 १४०९ जे प्रोष्ठपदानाम् ७।३।१८
 २५११ ज्ञाननोर्जा ७।३।७९
 २७३१ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः १।३।५७
 ६१२ ज्ञोऽविदर्थस्य करणे २।३।५१
 २०११ ज्य च ५।३।६१
 ३३४० ज्यश्च ६।१।४२
 २०१२ ज्यादादीयसः ६।४।१६०
 १०२१ ज्योतिरायुषः स्तोमः ८।३।८३
 १०१३ ज्योतिर्जनपदरा ६।३।८५
 १९२१ ज्योत्स्नातमिस्रा ५।२।११४
 २६५४ ज्वरत्वर स्त्रिव्यवि ६।४।२०
 २९०२ ज्वलितिकसन्ते ३।१।१४०
 ६८२ झयः ५।४।१११
 १८९८ झयः ८।२।१०
 ११९ झयो होऽन्यतरस्याम् ८।४।६२
 ७१ झरो झरि सवर्णे ८।४।६५
 ८४ झलां जशोऽन्ते ८।२।३९
 ५२ झलां जश्झशि ८।४।५३
 २२८१ झलो झलि ८।२।२६
 ३६८३ झल्युपोत्तमम् ६।१।१८०
 २२८० झषस्तथोऽर्धो धः ८।२।४०
 २२५६ झस्य रन् ३।४।१०५

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २२१३ ज्ञेर्जुस् ३।४।१०८
 २१६९ झोऽन्तः ७।१।३
 १५३३ जितश्च तत्प्रत्ययात् ४।३।१५५
 ३०८८ जीतः क्तः ३।२।१८७
 ३६८६ जित्यादिर्नित्यम् ६।१।१९७
 २०७२ ज्यादयस्तद्राजाः ५।३।११९
 २०१ टाडसिडसामि० ७।१।१२
 ४५८ टाबृचि ४।१।९
 ४७० टिङ्गाणञ्चयसज् ४।१।१५
 २२३३ टित आत्मनेपदा० ३।४।७९
 ३१६ टेः ६।४।१४३
 १७८६ टेः ६।४।१५५
 ३२६७ टितोऽथुच् ३।३।८९
 १३०३ ठक्छौ च ४।२।८४
 १४५४ ठगायस्थानेभ्यः ४।३।७५
 १२४९ ठक्वचिन् श्र ४।२।४
 ११७० ठस्येकः ७।३।५०
 २०३५ ठाजादावूर्ध्वं द्विती० ५।३।८३
 १३१ डः सि धुट् ८।३।२९
 २५९ डति च १।१।२५
 ४६१ डाबुभाभ्यामन्य० ४।१।१३
 ३२६६ डिवतः क्तिन् ३।३।८८
 ११३९ ढकि लोपः ४।१।१३३
 ११२२ ढक्च मण्डूकात् ४।१।११९
 ३४५५ ढश्छन्दसि ४।४।१०६
 ११४२ ढे लोपोऽकद्रवाः ६।४।१४७
 २३३५ ढो ढे लोपः ८।३।१३
 १७४ ढ्रलोपे पूर्वस्य० ६।३।१११
 ३२१६ णचः स्त्रियामञ् ५।४।१४
 २२८३ णलुतमो वा ७।१।९१
 २५६४ णिचश्च १।३।७४
 २५०२ णिजां त्रयाणां गुणः० ७।४।७५
 ३८१३ णिनि ६।२।७९
 २३१२ णिश्रिद्रुसु० ३।१।४८
 २७३८ णेरणौ यत्कर्म णौ० १।३।६७
 ३०६६ णेरघ्ययने वृत्तम् ७।२।२६
 २३१३ णेरनिटि ६।४।५१

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २८३६ णेर्विभाषा ८।४।३०
 ३११७ णेश्छन्दसि ३।२।१३७
 २२८६ णो नः ६।१।६५
 २६०७ णौ गमिर्बोधने २।४।४६
 २३१४ णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ७।४।१
 २६०१ णौ च संश्रद्धोः २।४।५१
 २५७९ णौ च संश्रद्धोः ६।१।३१
 २८८१ ण्य आवश्यकैः ७।३।६५
 १२७६ ण्यक्षत्रियार्थजितो० २।४।५८
 ३२८४ ण्यासश्रन्त्यो युच् ३।३।१०७
 २९०९ ण्युट् च ३।३।१४७
 २८९५ ण्वुल्लुचौ ३।१।१३३
 २१५६ तडानावात्मनेपदम् १।४।१००
 १४५३ तत आगतः ४।३।७४
 ६८४ तत्पुरुषः २।१।२२
 ७४५ तत्पुरुषः समानाधि० १।२।४२
 ७८४ तत्पुरुषयाङ्गुलेः० ५।४।८६
 ९७२ तत्पुरुषे कृति ब० ६।३।१४
 ३७३६ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृती० ६।२।२
 ३८५७ तत्पुरुषे शालायां० ६।२।१२२
 ८२२ तत्पुरुषोऽनञ्कर्म० २।४।१९
 २०८९ तत्प्रकृतवचने मयट् ५।४।२१
 १५७८ तत्प्रत्यनु ४।४।२८
 ११२८ तत्प्रत्ययस्य च ७।३।२९
 २५७५ तत्प्रयोजको हेतुश्च १।४।५४
 ७२३ तत्र २।१।४६
 १८६३ तत्र कुशलः पथः ५।२।६३
 १७६० तत्र च दीयते कार्य० ५।१।९६
 १३९३ तत्र जातः ४।३।२५
 १७७९ तत्र तस्येव ५।१।११६
 ८४६ तत्र तेनेदमिति स० २।२।२७
 १६२० तत्र नियुक्तः ४।४।६९
 १४२८ तत्र भवः ४।३।५३
 १७०९ तत्र विदित इति च ५।१।४३
 १६५० तत्र साधुः ४।४।९८
 १२१५ तत्रोद्धतममत्रेभ्यः ४।२।१४
 ७८१ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ३।१।९२

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १८०८ तत्सवदिः पथ्यङ्ग० ५।२।७
 ५३८ तथायुक्तं चानी० १।४।५०
 १२६९ तदधीते तद्वेद ४।२।५९
 २१२५ तदधीनवचने ५।४।५४
 १६७४ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ५।१।१२
 १७२८ तदर्हति ५।१।६३
 १७८० तदर्हम् ५।१।११७
 १२९५ तदशिष्यं संज्ञाप्र० १।२।५३
 १८४६ तदस्मिन्नधिकमि० ५।२।४५
 १८८२ तदस्मिन्नत्र प्राये० ५।२।८२
 १२७९ तदस्मिन्नस्तीति टे० ४।२।६७
 १७१३ तदस्मिन्वृद्धयायला० ५।१।४७
 १६१७ तदस्मै दीयते नि० ४।४।६६
 १६७८ तदस्य तस्मिन्त्यादिति ५।१।१६
 १६०१ तदस्य पण्यम् ४।४।५१
 १७२३ तदस्य परिमाणम् ५।१।५७
 १७५८ तदस्य ब्रह्मचर्यम् ५।१।९४
 १८३७ तदस्य संजातं तार० ५।१।३६
 १४२७ तदस्य सोढम् ४।३।५२
 १२६६ तदस्यां प्रहरणमि० ४।२।५७
 १८९४ तदस्यास्त्यस्मिन्नि० ५।२।९४
 ३८१ तदोः सः सावन० ७।२।१०६
 १९६८ तदो दा च ५।३।१९
 १४६५ तद्वच्छति पथिदूतयोः ४।३।८५
 १७१६ तद्वरतिवहत्यावहति० ५।१।५०
 ४४८ तद्वितश्चासर्वविभक्तिः १।१।३८
 ३७११ तद्वितस्य ६।१।१६४
 ५३० तद्विताः ४।१।७६
 ७२८ तद्वितार्थोत्तरपद० २।१।५१
 १०७५ तद्वितेष्वचामादेः ७।२।११७
 २१०४ तद्युक्तात्कर्मणोऽण् ५।४।३६
 ११९३ तद्राजस्य बहुषु० २।४।६२
 १६२७ तद्वहति रथयुगग्रास० ४।४।७६
 ३४७१ तद्वानासामुपधा० ४।४।१२५
 २४६६ तनादिकृष्य उः ३।१।७९
 २५४७ तनादिभ्यस्तथासोः २।४।७९
 ३५४९ तनिपत्योश्छन्दसि ६।४।९९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२३३९	तनूकरणे तक्षः ३।१।७६	८३	तस्य परमाग्रेडितम् ८।१।२	१५६	तिरसोऽन्यतरस्याम् ८।३।४२
२७५९	तनोतेर्यकि ६।४।४४	१८२५	तस्य पाकमूले पी० ५।२।२४	७७२	तिरोऽन्तर्धौ १।४।७९
२६२२	तनोतेर्विभाषा ६।४।१७	१८४९	तस्य पूरणे डट् ५।२।४८	३३८२	तिर्यच्यपवर्गे ३।४।६०
१८७०	तन्नादचिरापहते ५।२।७०	१७८१	तस्य भावस्त्वतलौ ५।१।११९	८४४	तिर्विशतेर्दिति ६।४।१४२
१९०९	तपःसहस्राभ्यां वि० ५।२।१०२	६२	तस्य लोपः १।३।९।	२५८८	तिष्ठतेरित् ७।४।५
१५	तपरस्तत्कालयस्य १।१।७०	१७११	तस्य वापः ५।१।४५	६७१	तिष्ठद्भुप्रमृतीनि च २।१।१७
२७७१	तपस्तपःकर्मकस्यै० ३।१।८८	१५१४	तस्य विकारः ४।३।१३४	८२०	तिष्ठ्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्र० १।२।६३
२७६०	तपोऽनुतापे च ३।१।६५	१४४५	तस्य व्याख्यान इति० ४।३।६६	३७१३	तिसृभ्यो जसः ६।१।१६६
३५६७	तप्तनप्तनथनाश्च ७।१।४५	१२४३	तस्य समूहः ४।२।३७	१३२७	तीररूप्योत्तरपदा० ४।२।१०६
१७४४	तमधीष्टो भृतो० भू० ५।१।८०	८	तस्यादित उदात्त० १।२।३२	१०१५	तीर्थे ये ६।३।८७
२८३३	तयोरेव कृत्यत्तल० ३।४।७०	१०८८	तस्यापत्यम् ४।१।९२	२३४०	तीषसहलुभरुषरीषः ७।२।४८
३४९५	तयोर्दाहिलौ च च्छ० ५।३।२०	१५००	तस्येदम् ४।३।१२०	३४६१	तुग्राद्धन् ४।४।११५
३६२७	तयोर्वावचि संहि० ८।२।१०८	१७०८	तस्येश्वरः ५।४।४२	३५०९	तुजादीनां दीर्घो० ६।१।७
१५५३	तरति ४।४।५	३१०९	ताच्छील्यवयोवच० ३।२।१२९	२५३४	तुदादिभ्यः शः ३।१।७७
२००३	तरप्तमपौ घः १।१।२२	३७८४	तादौ च निति कृ० ६।२।५०	२९१९	तुन्दशोकयोःपरिमृ ३।२।५
१३७२	तवकममकावेकवचने ४।३।३	२१६१	तान्येकवचनद्वि० १।४।१०२	१९२४	तुन्दादिभ्य इलच्च ५।२।११७
३९८	तवममौ डसि ७।२।९६	३१७४	ताभ्यामन्यत्रोणादयः ३।४।७५	१९४५	तुन्दिबलिवटेर्भः ५।२।१३९
३७८५	तवै चान्तश्च युगपत् ६।२।५१	१५३०	तालादिभ्योऽण् ४।३।१५२	३९४६	तुपश्यपश्यताहैः पू० ८।१।३९
२८३४	तव्यत्तव्यानीयरः ३।१।९६	१८७७	तावतिथं ग्रहणमिति० ५।२।७७	३९४	तुभ्यमहौ डयि ७।२।९५
८३६	तसिलादिष्वाकृत्व० ६।३।३५	२१९१	तासस्त्योलोपः ७।४।५०	५८२	तुमर्थाच्च भाववचनात् २।३।१५
१४९३	तसिश्च ४।३।११३	२३५२	तासि च क्लृपः ७।२।६०	३४३६	तुमर्थे सेसेनसेऽसे० ३।४।९
१९५५	तसेश्च ५।३।८	३७३०	तास्यदात्तेन्डिद० ६।१।१८६	३१७५	तुमुन्णकुलौ क्रियायां० ३।३।१०
१८९६	तसौ मत्वर्थे १।४।१९	११५०	तिककितवादिभ्यो० २।४।६८	२००८	तुरिष्ठेमेयःसु ६।४।१५४
२११९	तस्थस्थमिपां तां० ३।४।१०१	११७८	तिकादिभ्यः फिञ् ४।१।१५४	२४४४	तुरुस्तुशम्यमः सा० ७।३।९५
१९६	तस्माच्छसो नः पुंसि ६।१।१०३	२००२	तिङश्च ५।३।५६	६३०	तुल्यार्थैरतुलोपमा० २।३।७२
४१	तस्मादित्युत्तरस्य १।१।६७	२१६०	तिङस्त्रीणि त्राणि० १।४।१०१	१०	तुस्यास्य प्रयत्नं स० १।१।९
७५८	तस्मानुडचि ६।३।७४	३९७८	तिङि चोदात्तवति० ८।१।७१	२००७	तुश्छन्दसि ५।३।५९
२२८८	तस्मानुड द्विहलः ७।४।७१	३९३४	तिङो गोत्रादीनि कु० ८।१।२७	२१९७	तुह्योस्तातङ्ङाशि० ७।१।३५
१३७१	तस्मिन्नचि युष्माका० ४।३।२	३९३५	तिङ्ङतिङः ८।१।२८	१४७४	तूदीशलातुरवर्मती० ३।४।९४
४०	तस्मिन्निति निर्दिष्टे० १।१।६६	२१६६	तिङ्ङिशित्साधधातु० ३।४।११	३३८५	तूष्णीमि भुवः ३।४।६३
१७६५	तस्मै प्रभवति सं० ५।१।१०१	३०३७	ति च ७।४।८९	७०९	तृजकाभ्यां कर्तरि २।२।१५
१६६५	तस्मै हितम् २।१।५	३१६३	तितुत्रतथसिसुसरक० ७।२।९	२७४	तृज्वत्क्रोष्टुः ७।१।९५
१७५९	तस्य च दक्षिणा यज्ञा० ५।१।९५	१४८२	तित्तिरिवरतन्तु० ४।६।१०२	२५४५	तृणह इन् ७।३।९२
३५६६	तस्य तात् ७।१।४४	३७२९	तित्त्वरितम् ६।१।१८५	१०२९	तृणे च जातौ ६।३।१०३
१५९७	तस्य धर्म्यम् ४।४।४७	२१५४	तिप्तस्झिसिष्थमि० ३।४।७८	३७८२	तृतीया कर्मणि ६।२।४८
१७०४	तस्य निमित्तं संयो० ५।१।३८	२४८४	तिप्यनस्तेः ८।२।७३	३३९४	तृतीया च होश्छन्दसि २।३।३
१२८१	तस्य निवासः ४।२।६९	४२३	तिरसस्तिर्यलोपे ६।३।९४	६०२	तृतीया तत्कृतार्थेन० २।१।३०

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३२१	तृतीयादिषु भाषित० ७।१।७४	१५७०	त्रैर्मन्त्रित्यम् ४।४।२०	३५९६	दाधर्तिदर्धति० ७।४।६५
७८४	तृतीयाप्रमृतीन्य० २।२।२१	१८५५	त्रेः संप्रसारणं च ५।२।५५	२३७६	दाधा ध्वदाप् १।१।२०
५४९	तृतीयाथे १।४।८५	८०९	त्रेस्त्रयः ६।३।४८	३१३९	दाधेट्सिशदस० ३।२।१५९
६५८	तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् २।४।८४	२६४	त्रेस्त्रयः ७।१।५३	१९६७	दानीं च ५।३।१८
२२३	तृतीयासमासे १।१।३०	३८९	त्वमावेकवचने ७।२।९७	२०६९	दामन्यादित्रि० ५।३।११६
३११५	तृन् ३।२।१३५	४०७	त्वामौ द्वितीयायाः ८।१।२३	४८६	दामहायनान्ताच्च ४।१।२७
३३२६	तृषिमृषिकृषेः काश्य० १।२।२५	३८४	त्वामौसौ ७।२।९४	३१६२	दाम्रीशसयुजुज० ३।२।१८२
२३०१	तृफलभजत्रपश्च ६।४।१२२	१००२	त्वे च ६।३।६४	३७३९	दायाद्यं दायादे ६।२।५
११९२	ते तद्राजाः ४।१।१७४	३४९४	थट् च च्छन्दसि ५।२।५०	३१७२	दाशगोष्ठी सं० ३।४।७३
१७०२	तेन क्रीतम् ५।१।३७	२२६१	थलि चे सेटि ६।४।१२१	३६२९	दाशान्साह्वान्मी० ६।१।१२
१७७८	तेन तुल्यं क्रियाचे० ५।१।११५	३७३२	थलि च सेटीड० ६।१।१९६	३८३७	दिकशब्दा ग्रामज० ६।२।१०३
१५५०	तेन दीव्यति खनति० ४।४।१	३८७८	थाथघञ्काजबि० ६।२।१४४	१९७४	दिकशब्देभ्यः सप्त० ५।३।२७
१२८०	तेन निर्वृतम् ४।२।६८	२२३६	थासः से ३।४।८०	१३७६	दिक्पूर्वपदाड्ड ४।३।६
१७४३	तेन निर्वृतम् ५।१।७९	३५००	थाहेतौ च च्छन्दसि ५।३।२२	१३२८	दिक्पूर्वपदादसंज्ञा० ४।२।१०
१७५७	तेन परिज्यलभ्य० ५।१।९३	३६७	थो न्यः ७।१।८७	५१५	दिक्पूर्वपदान्कीप् ४।१।६०
१४८१	तेन प्रोक्तम् ४।३।१०१	२३९६	दंशसञ्जसञ्ज्ञां शपि ६।४।२५	७२७	दिवसंख्ये संज्ञायाम् २।१।५०
१७६२	तेन यथाकथा च ह० ५।१।९८	१९८५	दक्षिणादाच् ५।३।३६	१४२९	दिगादिभ्यो यत् ४।३।५४
१२०२	तेन रक्तं रागात् ४।२।१	१३१८	दक्षिणापश्चात्पुर० ४।२।९८	८४५	दिङ्नामान्यन्तराले २।२।२६
१८२७	तेन वित्तशुश्रुषणपौ ५।२।२६	८६५	दक्षिणोर्मालुब्धयोगे ५।४।१२६	१०७७	दित्यदित्यादित्य० ४।१।८५
८४८	तेन सहेति तुल्य० २।२।२८	१९७८	दक्षिणोत्तराभ्यामत० ५।३।२८	३३७	दिव उत् ६।१।१३१
१४९२	तेनैकदिक् ४।३।११२	२०७४	दण्डव्यवसर्गयोश्च ५।४।२	३३६	दिव औत् ७।१।८४
२२३०	ते प्राग्धातोः १।४।८०	१७३१	दण्डादिभ्यो यत् ५।१।६६	५६२	दिवः कर्म च १।४।४३
४०६	तेमयावेकवचनस्य ८।१।२२	२९०१	ददातिदधात्योर्वि० ३।१।१३९	९२७	दिवसश्च पृथिव्याम् ६।३।३०
११५	तोः षि ८।४।४३	२५०१	दधस्तयोश्च ८।२।३८	६१९	दिवस्तदर्थस्य २।३।५८
११७	तोर्लि ८।४।६०	३०७६	दधातेर्हिः ७।४।४२	२५०५	दिवादिभ्यः श्यन् ३।१।६९
३१०६	तौ सत् ३।२।१२७	१२१९	दध्नष्ठक् ४।२।१८	२९३५	दिवाविभानिशाप्र० ३।२।२१
४२९	त्यादादिषु दृशोऽना० ३।२।६०	१९१३	दन्त उन्नत उरच् ५।२।१०६	३७२७	दिवो झल् ६।१।१८३
२६५	त्यादादीनामः ७।२।१०२	१९२०	दन्तशिखात्संज्ञा० ५।२।११३	९२६	दिवो घावा ६।३।२९
१३३६	त्यदादीनि च १।१।७४	२६२१	दम्भ इच्च ७।४।५६	३०२८	दिवोऽविजिगीषा० ८।२।४९
९३८	त्यादादीनि सर्वैर्नित्यं १।२।७२	२३८८	दयेतर्दिगलिति ७।४।९	१३९९	दिशो मद्राणाम् ७।३।१३
३७०४	त्यागरागहासकुह० ६।१।२१६	२३२४	दयायासश्च ३।१।३७	३७६५	दिष्टवितस्त्योश्च ६।२।३१
१५१८	त्रपुजतुनोः षुक् ४।३।१३८	३४५	दश्च ७।२।१०९	२५०७	दीडो युडचि किडति ६।४।६३
३१२०	त्रसिगृधिघृषि० ३।२।१४०	२४६८	दश्च ८।२।७५	२१९०	दीधीवेवीटाम् १।१।६
१७२७	त्रिशच्चत्वारिंशतो० ५।१।६२	३०८९	दस्ति ६।३।१२४	२३२८	दीपजनबुधपूरि० ३।१।६१
८८४	त्रिककुत्पर्वते ५।४।१४७	२७२८	दाणश्च सा चेच्चतु० १।३।५५	२४५६	दीर्घ इणः किति ७।४।६९
२९८	त्रिचतुरोः स्त्रियां ७।२।९९	११४५	दाण्डिनायनहा० ६।४।१७४	३८१६	दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्र० ६।२।८३
५६	त्रिप्रभृतिषु शाकटा० ८।४।५०	३२५	दादेर्धातोर्धः ८।२।३२	३४४८	दीर्घजिह्वी च च्छन्द० ४।१।५९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३३	दीर्घं च १।४।५९	३१२७	देविक्रुशोश्चोप० ३।२।१४७	३९०	द्वितीयायां च ७।२।८७
१२४१	दीर्घाच्च वरुणस्य ७।३।२३	१९१२	देशे लुबिलचौ च ५।२।१०५	३३७४	द्वितीयायां च ३।४।५३
२३९	दीर्घाज्जसि च ६।१।१०५	१२०१	दैवयज्ञिशौचिवृ० ४।१।८१	६८६	द्वितीयाश्रितातीत० २।१।२४
१४८	दीर्घात् ६।१।७५	३०७७	दौ दद्धोः ७।४।४६	१०११	द्वितीये चानुपाख्ये ६।३।८०
३६३१	दीर्घादटि समानपादे ८।३।९	२६०४	दोषो णौ ६।४।९०	२०८६	द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ५।४।१८
५८	दीर्घादाचार्याणायाम् ८।४।५२	३०७४	द्यतिस्यतिमास्थानं ७।४।४०	१७०१	द्वित्रिपूर्वा दण् च ५।१।३६
२३३२	दीर्घोऽकितः ७।४।८३	१२३५	द्यावापृथिवीशुना० ४।३।३२	१६९५	द्वित्रिपूर्वात्रिष्कात् ५।१।३०
२३१८	दीर्घो लघोः ७।४।९४	२३४४	द्युतिस्वाप्योः सं० ७।४।६७	८५४	द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ५।४।११५
२१३५	दुःखात्त्रातिलोम्ये ५।४।६४	२३४५	द्युद्भो लुङि १।३।९१	१८४४	द्वित्रिभ्यां तयस्याय० ५।२।४३
२९०४	दुन्योरनुपसर्गे ३।१।१४२	१९१५	द्युद्भ्यां मः ५।२।१०८	८०४	द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ५।४।१०२
३५८९	दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृ० ७।४।३६	१३२१	द्युप्रागपागुदक्प्र० ४।२।१०१	३९३१	द्वित्रिभ्यां पाहन्मू० ६।२।१९७
११६५	दुष्कुलाङ्गक् ४।१।१४२	३०२०	द्रव्यमूर्तिस्पर्शयोः ६।१।२४	१९९१	द्वित्र्योश् धमुज् ५।३।४५
२९७९	दुहः कब्धश्च ३।२।७०	२०५९	द्रव्यं च भव्ये ५।३।१०४	८६७	द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ५।४।१२८
२७६९	दुहश्च ३।१।६३	११०५	द्रोणपर्वतजीवन्ता० ४।१।१०३	२२४३	द्विर्वर्चनेऽचि १।१।५९
३४६६	दूतस्य भागक० ४।४।१२०	१५३९	द्रोश्च ४।३।१६१	२००५	द्विवचनविभज्यो० ५।३।५७
९५	दूरान्दूते च ८।२।८४	२१५०	द्रव्यं रहस्यमर्यादाव० ८।१।१५	२९५४	द्विषत्परयोस्तापेः ३।२।३९
६०५	दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वि० २।३।३५	१७९८	द्रव्यमनोज्ञादिभ्य० ५।१।१३३	२४३५	द्विषश्च ३।४।११२
६११	दूरान्तिकार्थेः ष्य० २।३।३४	९०६	द्रव्यश्च प्राणितूर्य २।४।२	३१११	द्विषोऽमित्रे ३।२।१३१
३५७७	दृक्स्ववस्वतवसां० ७।१।८३	९३०	द्रव्यच्चुदषहा० ५।४।१०६	९५२	द्विस्तावा त्रिस्तावा० ५।४।८४
१०१७	दृग्दृशवतुषु ६।३।८९	१२०७	द्रव्यच्छः ४।२।६	१५७	द्वित्रिश्चतुरिति० ८।३।४३
३०६०	दृढः स्थूलबलयोः ७।२।२०	१५०५	द्रव्यद्वाहुन् वैरमैथु० ४।३।२२५	१३८०	द्वीपादनुसमुद्रं यज् ४।३।१०
१४३३	दृत्तिकुक्षिकलशिव० ४।३।५६	९०३	द्रव्ये घि २।२।३२	१८५४	द्वेस्तीयः ५।२।५४
३००४	दृशेः क्वनिप् ३।२।९४	२२४	द्रव्ये च १।१।३१	१२१५	द्वैपवैयाघ्रादज् ४।२।१२
३४३८	दृशे विख्ये च ३।४।११	१९३४	द्रव्योपतापगर्हा० ५।२।१२८	११२४	द्व्यचः ४।१।१२१
१२०८	दृष्टं साम २।३।४७	१३८६	द्रादादीनां च ७।३।४	३४५३	द्व्यचश्छन्दसि ४।३।१५०
१४२२	देयमृणे ४।३।४७	७३१	द्विगुरेकवचनम् २।४।१	३५३७	द्व्यचोतस्तिङः ६।३।१३५
२१२६	देये त्रा च ५।४।५५	६८५	द्विगुश्च २।१।२३	१४५१	द्व्यजुद्ब्राह्मणकर्षथमा० ४।३।७२
३८७५	देवताद्वन्द्वे च ६।२।१४१	४७९	द्विगोः ४।१।२१	११८८	द्व्यज्मगधकलि० ४।१।१७०
९२२	देवताद्वन्द्वे च ६।३।२६	१७२०	द्विगोष्ठश्च ५।१।५४	९४१	द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप० ६।३।९७
१२३९	देवताद्वन्द्वे च ७।३।२१	१७४६	द्विगोर्यष् ५।१।८२	८०८	द्व्यष्टनः संख्यायाम० ६।३।४७
२०९२	देवतान्तात्तादर्थ्ये० ५।४।२४	१०८०	द्विगोर्लुगनपत्ये ४।१।८८	१८६	द्व्येकयोर्द्विवचैक० १।४।२२
२०५५	देवपथादिभ्यश्च ५।३।१००	१७५०	द्विगोर्वा ५।१।८६	३१६१	धः कर्मणि घ्न ३।२।१८१
३६६७	देवब्रह्मणोरनु० १।२।३८	३८३१	द्विगौ क्रतौ ६।२।९७	१३३६	धनगणं लब्धा ४।४।८४
२१२७	देवमनुष्यपुरुष० ५।४।५६	३७४६	द्विगौ प्रमाणे ६।२।१२	१८६५	धनहिरण्यात्कामे ५।२।६५
३५९१	देवसुमन्योर्यनुषि० ७।४।३८	७१४	द्वितीयतृतीयच० २।२।३	८७०	धनुषश्च ५।४।१३२
२०९५	देवात्तल ५।४।२७	३५१	द्वितीयाटौस्वेनः २।४।३४	१३४५	धन्वयोपधाहुज् ४।२।१२१
१४३९	देविकांशिशापा० ७।३।१	३३९५	द्वितीया ब्राह्मणे २।३।६०	१५९१	धर्मं चरति ४।४।४१

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १६४५ धर्मपथ्यर्थन्याया० ४।४।९२
 १९३८ धर्मशीलवर्णान्ता० ५।२।१३२
 ८६३ धर्मादनित्केवलतात् ५।४।१२४
 २८२४ धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ३।४।१
 २८२९ धतोः ३।१।९१
 ३६७१ धातोः ६।१।१६२
 २६०८ धतोः कर्मणः सं० ३।१।७
 २६२९ धातोरिकाचो हला० ३।१।२२
 ६४ धातोस्तत्रिमि० ६।१।८०
 २२६४ धात्वादेः षः ६।१।६४
 १८०२ धान्यानां भवने क्षे० ५।२।१
 ५७३ धारेरुत्तमर्णः १।४।३५
 २२४९ धि च ८।२।२५
 २३३२ धिन्विकृण्वोर च ३।१।८०
 १६२८ धुरो यङ्गकौ ४।४।७७
 १३५१ धूमादिभ्यश्च ४।२।१२७
 ३०५९ धृषिशासी वैयात्वे ७।२।१९
 ५८६ ध्रुवमपायेऽपादानम् १।४।२४
 ३५६४ ध्वमो ध्वात् ७।१।४२
 ७१९ ध्वाङ्गेण क्षेपे २।१।४२
 २६५९ नः क्ये १।४।१५
 ८३५ न कपि ७।४।१४
 ३२१७ न कर्मव्यतिहारे ७।३।६
 २६४१ न कवतेर्यङि ७।४।६३
 ८३८ न कोपधायाः ६।३।३७
 ३३१४ न क्तिचि दीर्घश्च ६।४।३९
 ३३२२ न क्त्वा सेट् १।२।१८
 ५१२ न क्रोडादिवहचः ४।१।५६
 २८८५ न क्वादेः ७।३।५९
 ३४८७ नक्षत्राद्भ्यः ४।४।१४१
 १०२४ नक्षत्राद्वा ८।३।१००
 ६४२ नक्षत्रे च लुपि २।३।४५
 १२०४ नक्षत्रेण युक्तः कालः ४।२।३
 १४१२ नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ४।३।३७
 ५१४ नखमुखात्संज्ञायाम् ४।१।५८
 २६८१ न गतिहिंसार्थेभ्यः १।३।१५
 १३५२ नगरात्कुत्सनप्रा० ४।२।१२८

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३९१० न गुणादयोऽवयवाः ६।२।७६
 ११४९ न गोपवनादिभ्यः २।४।६७
 ७६० न गोप्राणिध्वन्य० ६।३।७७
 ३७३६ न गोश्चनसाववर्ण० ६।१।१८१
 ३५२ न डिंसंबुध्योः ८।२।८
 ४०८ न चवाहाहैवयुक्ते ८।१।२४
 ३५८८ न च्छन्दस्य पुत्रस्य ७।४।३५
 ७५६ नञ् २।२।६
 १४६० नञः शुचिश्चक्षेत्र० ७।३।३०
 ९५६ नञस्तत्पुरुषात् ५।४।७१
 ३८८९ नञो गुणप्रतिषेधे० ६।२।१५५
 ३८५० नञो जरमरमि० ६।२।११६
 ८६१ नञदुःसुभ्यो हलि० ५।४।१२१
 ३९०७ नञसुभ्याम् ६।२।१७२
 १३०७ नडशादादङ्गलच् ४।२।८८
 ११०३ नडादिभ्यः फक् ४।१।९९
 १३१० नडादीनां कुक्च ४।२।९१
 ३०० न तिसृचतसृ ६।४।४
 १८३२ नते नासिकायाः सं० ५।२।३१
 १०८६ न तौत्वलिभ्यः २।४।६१
 १५१० न दण्डमाण्डवान्ते० ४।३।१३०
 ९१८ न दधिपयआदीनि २।४।१४
 ६८१ नदीपौर्णमास्याग्र० ५।४।११०
 ३८४३ नदी बन्धुनि ६।२।१०९
 ६७४ नदीभिश्च २।१।२०
 २७६७ न दुहस्तुनमां य० ३।१।८९
 २४०७ न दृशः ३।१।४७
 ९८६ नद्याः शेषस्यान्य० ६।३।४४
 १३१७ नद्यादिभ्यो ढक् ४।२।९७
 १३०४ नद्यां मतुप् ४।२।८५
 ८३३ नद्यतश्च ५।४।१५३
 १३३४ न व्यचः प्राच्य० ४।२।११३
 २६५६ न धातुलोप आर्ध० १।१।४
 ३०४० न ध्याख्यापृमूर्च्छि० ८।२।५७
 १७८३ न नञपूर्वातत्पुरु० ५।१।१२१
 ७०४ न निर्धारणे २।२।१०
 ३९१५ न निविभ्याम् ६।२।१८१

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २७८० ननौ पृष्टप्रतिवचने ३।२।१२१
 २८९६ नन्दिग्रहिपचादि० ३।१।१३४
 २४४६ नन्दाः संयोगादयः ६।१।३
 ३९५० नन्वित्युनज्ञैषणा० ८।१।४३
 २७८१ नन्वोर्विभाषा ३।२।१२१
 ५१ न पदान्तद्विर्वचन० १।१।५८
 ११४ न पदान्ताद्वोरनाम् ८।४।४२
 १२९ नपरे नः ८।३।२७
 २७५५ न पादम्याङ्यमाङ्य० १।३।८९
 ९३५ नपुंसकमनपुंसके० १।२।६९
 ३१४ नपुंसकस्य झलचः ७।१।७२
 ३१० नपुंसकाच्च ७।१।१९
 ६८० नपुंसकादन्यतरस्यां ५।४।१०९
 ३०९० नपुंसके भावे क्तः ३।३।११४
 ९५४ न पूजनात् ५।४।६९
 ११९७ न प्राच्यभर्गादि० ४।१।१७८
 २२२ न बहुव्रीहौ १।१।२९
 १६२९ न भकुर्छुगम् ८।२।७९
 २८४० न भाभूपूकमिगमि० ८।४।३४
 ३८२५ न भूताधिकसंजीव० ६।२।९१
 ३७५३ न भूवाक्चिद्विषिषु ६।२।१९
 २७३ न भूसुधियोः ६।४।८५
 ७५९ न भ्राणनपात्रवेदाना० ६।३।७५
 ११५७ न मपूर्वोऽपत्येऽव० ६।४।१७०
 ५८३ नमःस्वस्तिस्वाहास्व० २।३।१६
 १५४ नमस्पुरसोर्गत्योः ८।३।४०
 २२२८ न माङ्योगे ६।४।७४
 ३१४७ नमिकम्पिस्म्यज० ३।२।१६७
 ४३९ न मु ने ८।२।३
 २६७५ नमोवरिविश्वित्रडः० ३।१।१९
 ३१३२ न यः ३।२।१५२
 २७७४ न यदि ३।२।११३
 ३३४४ न यद्यनाकाङ्क्षे ३।४।२३
 ४६४ न यासयोः ७।३।४५
 १०९८ न य्वाभ्यां पदान्ता० ७।३।३
 ३१६८ न रपरसृपिसृजि० ८।३।११०
 २७७० न रुधः ३।१।६४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१०४८	नरे संज्ञायाम् ६।३।१२९	३८६७	नाचार्यराजत्वि० ६।२।१३३	२६३४	नित्यं कौटिल्ये गतौ ३।१।२३
२५२९	न लिङि ७।२।३९	१३	नाञ्जलौ १।१।१०	७११	नित्यं क्रीडाजीविकयोः २।२।१७
३९३६	न लुट् ८।१।२९	४२४	नाञ्जेः पूजयाम् ६।४।३०	२२००	नित्यं झितः ३।४।९९
२६३	न लुमताङ्गस्य १।१।६३	८९६	नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ५।४।१५९	३४४६	नित्यं छन्दसि ४।१।४६
६२७	न लोकाव्ययनिष्ठा० २।३।६९	२९४५	नाडीमुष्टयोश्च ३।२।३०	३५८७	नित्यं छन्दसि ७।४।८
२३६	नलोपः प्रातिपदि० ८।२।७	१६८५	नातः परस्य ७।३।२७	८६२	नित्यमसिच्यजा० ५।४।१२२
३५३	नलोपः सुप्वर० ८।२।२	१६५	नादिचि ६।१।१०४	३२४३	नित्यं पणः परिमाणे ३।३।६६
७५७	नलोपो नञः ६।३।७३	५५	नादिन्याक्रोशे० ८।४।४८	३६९८	नित्यं मन्त्रे ६।१।२१०
३३३५	न ल्यपि ६।४।६९	३६०२	नाद्धस्य ८।२।१७	२१४०	नित्यवीप्सयोः ८।१।४
२६४६	न वशः ६।१।२०	३३८४	नाधार्थप्रत्यये० ३।४।६२	३०८२	निनदीभ्यां स्नातेः० ८।३।८९
१९०	न विभक्तौ तुस्माः १।३।४	२७९३	नानघतनवत्० ३।३।१३५	३१२६	निन्दहिंसासक्लिशखाद ३।२।१४६
२३४८	न वृद्ध्यश्चतुर्थ्यः ७।२।५९	२७३२	नानोर्ज्ञः १।३।५८	१०३	निपात एकाजनाङ् १।१।१४
२४	न वेति विभाषा १।१।४४	१८५०	नान्तादसंख्यादेर्मट् ५।२।४९	३५३८	निपातस्य च ६।३।१२६
२४१६	न व्यो लिटि ६।१।४६	२५०३	नाभ्यस्तस्याचि पि० ७।३।८७	३९३७	निपातैर्यद्यदिहन्तकु० ८।१।३०
२९३७	न शब्दश्लोककलह० ३।२।२३	४२७	नाभ्यस्ताच्छतुः ७।१।७८	३२५१	निपानमाहावः ३।३।७४
२२६३	न शप्सदवादि० ६।४।१२६	४१३	नामन्त्रिते समा० ८।१।७३	३३५५	निमूलसमूलयोः कषः ३।४।३४
२५१८	नशोः षान्तस्य ८।४।३६	३७२३	नामन्यतरस्याम् ६।१।१७७	२५६०	निरः कुषः ७।२।४६
४३१	नशेर्वा ८।२।६३	२०९	नामि ६।४।३	३२९९	निरभ्योः पूल्वोः ३।३।२८
१३२	नश्च ८।३।३०	३३८०	नाम्नयादिशिग्रहोः ३।४।५८	३९१८	निरुदकादीनि च ६।२।१८४
३६४९	नश्च धातुस्थो० ८।४।२७	८२	नाम्नेतस्यान्त्ये० ६।१।९९	३०२९	निर्वाणोऽवाते ८।२।५०
१२३	नश्चापदान्तस्य झ० ८।३।२४	८०१	नावो द्विगोः ५।४।९९	१५६९	निर्वृत्तेऽक्षघृतादिभ्यः ४।४।१९
१४०	नश्छव्यप्रशान् ८।३।७	३९०२	नाव्ययदिकृशब्द० ६।२।१६८	३७४२	निवाते वातत्राणे ६।२।८
३०८	नषट्स्वस्नादिभ्यः ४।१।१०	६५७	नाव्ययीभावादतो० २।४।८३	३२१३	निवासचितिशरीर० ३।३।४१
३५५	न संयोगाद्वमन्तात् ६।४।१३७	२९४४	नासिकास्तनयी० ३।२।२९	३६४७	निव्यभिभ्योऽङ् ८।३।१९९
७९३	न संख्यादेः सं० ५।४।८९	५११	नासिकोदरौष्ठ० ४।१।५५	१३८४	निशाप्रदोषाभ्यां च ४।३।१४
८९३	न संज्ञायाम् ५।४।१५	१६२४	निकटे वसति ४।४।७३	२१३३	निष्कुलान्निष्कोषणे ५।४।६२
३६०३	नसत्तनिष्तानु० ८।२।६१	२७५३	निरगणचलनार्थे० १।३।८७	८९९	निष्ठा २।२।३६
३६३	न संप्रसारणे सं० ६।१।३७	३६१३	निगृह्यानुयोगे च ८।२।९४	३०१३	निष्ठा ३।२।१०२
२०७७	न सामि वचने ५।४।५	३२६५	निधो निमित्तम् ३।३।८	३६९३	निष्ठा च व्यजनात् ६।१।२०५
३३०७	न सुदुर्भ्यां केव० ७।१।६८	१५२४	नित्यं वृद्धशरा० ४।३।१४	३०५७	निष्ठायां सेटि ६।४।५२
३६६६	न सुब्रह्मण्यायां स्व० १।२।३७	१८५७	नित्यं शतादिमा० ५।२।५७	३०१४	निष्ठायामण्यदर्थे ६।४।६०
६७९	नस्तद्धिते ६।४।१४४	४८७	नित्यं संज्ञाछन्दसोः० ४।१।२९	३०५२	निष्ठा शीङ्स्विदि० १।२।१९
३९३८	नह प्रत्यारम्भे ८।१।३१	४९२	नित्यं सपत्न्यादिषु ४।१।३५	३९०३	निष्ठोपमानादन्यत० ६।२।१६९
३८३५	न हास्तिनफलक० ६।२।१०१	१५९	नित्यं समासेऽनुत्तर० ८।३।४५	३८४४	निष्ठोपसर्गपूर्वमन्य० ६।२।११०
१०३७	नहिवृत्तिवृषि० ६।३।११६	२५९६	नित्यं स्मयतेः ६।१।५७	८९७	निष्प्रवाणिश्च ५।४।१६०
४४०	नहो धः ८।२।३४	७७८	नित्यं हस्ते पाणा० १।४।७७	२७०३	निसमुपविभ्यो ह्रः १।३।३०
२५७२	नाग्लोपिशास्व० ७।४।२	२५४८	नित्यं करोतेः ६।४।१०८	२४०३	निसस्तपतावना० ८।३।१०२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२६४२	नीग्वञ्चसंसुध्वंसु० ७।४।८४
६	नीचैरनुदात्तः १।२।३०
२०३२	नीतां च तद्युक्तात् ५।३।७७
२६४३	नुगतोऽनुनासिका० ७।४।८५
३०३८	नुदविदोन्दत्राघ्रा० ८।२।५६
४३४	नुम्बिसर्जनीयशर्व्य० ८।३।५८
२८३	नृ च ६।४।६।
३७२८	नृ चान्यतरस्याम् ६।१।१८४
१४१	नृन् ८।३।१०
२२६८	नृटि ७।२।४
२५१६	नेट्यलिटि रधेः ७।१।६२
२९८१	नेड्वशि कृति ७।२।८
३५५९	नेतराच्छन्दसि ७।१।२६
३४९	नेदमदसोरकोः ७।१।११
१२४०	नेन्द्रस्य परस्य ७।३।२२
९७७	नेन्सिद्धबध्नातिषु च ६।३।१९
३०३	नेयडुवड्स्थानावस्त्री १।४।४
३९२६	नेरनिधाने ६।२।१९२
२२८५	नेर्गदनदपतपद० ८।४।१७
१८३३	नेर्बिडज्विरीसचौ ५।२।३२
२६८७	नेर्विशः १।३।१७
३७२१	नोड्धात्वोः ६।१।१७५
३८७६	नोत्तरपदेऽनुदात्ता० ६।२।१४२
३४५४	नोत्वद्धर्धित्वात् ४।३।१५१
३६६१	नोदात्तस्वरितोदय० ८।४।६७
२७६३	नोदात्तोपदेशस्य० ७।३।३४
३४०५	नोनयतिध्वनयत्ये० ३।१।५१
३३२४	नोपधात्यफान्ताद्वा १।२।२३
३७०	नोपधायाः ६।४।७
३२४१	नौ गदनदपठस्वनः ३।३।६४
३२३७	नौ ण च ३।३।६०
१५५५	नौ द्व्यचष्टन् ४।४।७
१६४३	नौवयोधर्मविषमूल० ४।४।९१
३२२३	नौ वृ धान्ये ३।३।४८
१५४३	न्यग्रोधस्य च केवलस्य ७।३।५
२८६४	न्यङ्क्वदीनां च ७।३।५३
३७८७	न्यधी च ६।२।५३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१८२६	पक्षातिः ५।२।२५
१५८५	पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति ४।४।३५
१७२५	पङ्क्तिर्विशतित्रिंशच्च० ५।१।५९
५२३	पङ्गोश्च ४।१।६८
३०३१	पचो वः ८।२।५२
१७२६	पञ्चदशतौ वर्मे वा ५।१।६०
६९९	पञ्चमी भयेन २।१।३७
६३९	पञ्चमी विभक्ते २।३।४२
५९८	पञ्चम्यपाङ्परिभिः २।३।१०
३९७	पञ्चम्या अत् ७।१।३१
३६३६	पञ्चम्याः परावध्यर्थे ८।३।५१
९५९	पञ्चम्यास्तोकादिभ्यः ६।३।२
३००८	पञ्चम्यामजातौ ३।२।९८
१९५३	पञ्चम्यास्तसिल् ५।३।७
१६९९	पणपादमाषशताद्यत् ५।१।३४
२३५५	पतः पुम् ७।४।१९
२५७	पतिः समास एव १।४।८
१७९३	पत्यन्तपुरोहिता० ५।१।१२८
३७५२	पत्यावैश्वर्ये ६।२।१८
४९०	पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ४।१।१३३
१५०२	पत्रपूर्वादन् ४।३।१२३
१५०३	पत्राध्वर्युपरिषदश्च ४।३।१२३
१४०२	पथः पन्थ च ४।३।२९
१७३९	पथः फ्न ५।१।७५
३५३०	पथि च छन्दसि ६।३।१०८
३६८७	पथिमथोः सर्वना० ६।१।११९
३६५	पथिमथ्यभुक्षामात् ७।१।८५
९५७	पथो विभाषा ५।४।७२
१६५६	पथ्यतिथिवसति० ४।४।१०४
१६३९	पदमस्मिन्दृश्यम् ४।४।८७
३१८२	पदरुजविशस्पृशो० ३।३।१६
१०५७	पदव्यवायेऽपि ८।४।३८
४०१	पदस्य ८।१।१६
४०२	पदात् ८।१।१७
१९८	पदान्तस्य ८।४।३७
१५६१	पदान्तस्यान्यतरस्याम् ७।३।९
१४९	पदान्ताद्वा ६।१।७६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२८७०	पदास्वैरिवाह्याप० ३।१।१९९
३७४१	पदेऽपदेशे ६।२।७
१५८९	पदोत्तरपदं गृह्णाति ४।४।३९
२२८	पदत्रोमासहन्निशस० ६।१।६३
९९१	पद्यस्यतदर्थे ६।३।५३
१७४०	पन्थो ण नित्यम् ५।१।७६
२८	परः सन्निकर्षः सं० १।४।१०९
८१२	परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पु० २।४।२६
१८१	परश्च ३।१।२
१६०८	परश्चधादुञ्च ४।४।५८
२७९६	परस्मिन्विभाषा ३।३।१३८
२१७३	परस्मैपदानां णल० ३।४।८२
९६५	परस्य च ६।३।८
५८९	पराजेरसोढः १।४।२६
३९३३	परादिश्छन्दसि० ६।२।१९९
३२१०	परावनुपात्यय इणः ३।३।३८
३३१९	परावरयोगे च ३।४।२०
१३७५	परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ४।३।५
५८०	परिक्रयणे संप्रदान० १।४।४४
३३७७	परिक्लिश्यमाने च ३।४।५५
१६७९	परिखाया ढञ् ५।१।१७
२२७५	परिनिविभ्यः सेवं ८।३।७०
३२०९	परिन्योर्नीणोर्दृता० ३।३।३७
१५८६	परिपन्थं च तिष्ठति ४।४।३६
३७६७	परिप्रत्युपापावर्ज्य० ६।२।३३
३१९०	परिमाणख्यायां सं० ३।३।२०
१६८३	परिमाणान्तस्यासं० ७।३।१७
२९४८	परिमाणे पचः ३।२।३३
१५७९	परिमुखं च ४।४।२९
१२११	परिवृतो रथः ४।२।१०
२६८४	परिव्यवेभ्यः क्रियः १।३।१८
१५९४	परिषदो ण्यः ४।४।४४
१६५३	परिषदो ण्यः ४।४।१०१
३०२६	परिस्कन्दः प्राच्यभ० ८।३।७५
३९१६	परेरभितो भावि० ६।२।१८२
२७४८	परेर्मृषः १।३।८२
२१४१	परेर्वर्जने ८।१।५

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२३९९	परेश्च ८।३।७४
३२६२	परेश्च षाङ्कयोः ८।२।२२
२१७१	परोक्षे लिट् ३।२।११५
१८११	परोवरपरंपरपुत्रपौ० ५।३।१०
३२६१	परौ घः ३।३।८४
३२३०	परौ भुवोऽवज्ञाने ३।३।५५
३२२२	परौ यज्ञे ३।३।७७
१५५८	पर्यादिभ्यः षन् ४।४।१०
१९५६	पर्यभिभ्यां च ५।३।९
३१७८	पर्याप्तिवचनेष्वलम० ३।४।६६
३२८८	पर्यायार्हणोत्पत्ति० ३।३।१११
१३६७	पर्वताच्च ४।२।१४३
३०७०	पर्श्यादियौधेयादि० ५।३।११७
३८६२	पललसूपशाकं मिश्रे ६।३।१२८
१५२१	पलाशादिभ्यो वा ४।३।१४१
३५०१	पश्वपश्वा च च्छन्दसि ५।३।३३
१९८२	पश्वात् ५।३।३२
४०९	पश्यार्थैश्चानालोचने ८।१।२५
५१९	पाककर्णपर्णपुष्पफ० ४।१।६४
२३६०	पाम्राध्यास्थाम्रादा० ७।३।७८
२९७२	पाणिघताडघौ शि० ३।३।५५
२८९९	पाम्राध्याधेटदृशः शः ३।१।१३७
१२१२	पाण्डुकम्बलादिनिः ४।२।११
३६३७	पातौ च बहुलम् ८।३।५२
१७१२	पात्राङ्गन् ५।१।४६
१७३२	पात्राङ्गश्च ५।१।६८
७२५	पात्रेसमितादयश्च २।१।४८
३४५७	पाथोनदीभ्यां ङ्यण् ४।४।१११
४१४	पादः पत् ६।४।१३०
२०७३	पादशतस्य संख्यादे० ५।४।१
९९०	पादस्य पदाज्याति० ६।३।५२
८७७	पादस्य लोपोऽह० ५।४।१३८
२०९३	पादार्धाभ्यां च ५।४।२५
४५७	पादोऽन्यतरस्याम् ४।१।८
१०५३	पानं देशे ८।४।९
३८०२	पापं च शिल्पिनि ६।२।६८
७३३	पापाणके कुत्सितैः २।१।५४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२८९०	पाय्यसांनाय्यनि० ३।१।१२९
१०७१	पारस्करप्रभृतीनि० ६।१।१५७
१७३६	पारायणतुरायणचा० ५।१।७२
१४९०	पाराशर्यशिलालि० ४।३।११०
६७२	पारेमध्ये षष्ठ्या वा २।१।१८
१८७५	पार्श्वेनान्विच्छति ५।२।७५
१२५८	पाशादिभ्योः यः ४।२।४९
३५२८	पितरामातरा च च्छ० ६।३।३३
९३६	पिता मात्रा १।२।७०
१४५८	पितुर्यच्च ४।३।७९
१२४२	पितृव्यमातुलमाता० ४।२।३६
११३८	पितृव्यसुश्छण् ४।१।१३२
१५२६	पिष्टाच्च ४।३।१४६
११२१	पीलाया वा ४।१।११८
५०४	पुंयोगादाख्यायाम् ४।१।४८
७४६	पुंवत्कर्मधारयजाती० ६।३।४२
३२९६	पुंसि संज्ञायां घः ३।३।११८
४३६	पुंसोऽसुङ् ७।१।८९
२१८९	पुगन्तलधूपस्य च ७।३।८६
२६७६	पुच्छमाण्डचीवरा० ३।१।२०
३८६६	पुत्रः पुम्यः ६।२।१३२
१७०६	पुत्राच्छ च ५।१।४०
११८३	पुत्रान्तादन्यत० ४।१।५९
९८०	पुत्रेऽन्यतरस्याम् ६।३।२२
१३९	पुमः खय्यम्परे ८।३।६
९३३	पुमान्स्त्रिया १।२।६७
३९४९	पुरा च परीप्सायाम् ८।१।४२
१४८४	पुराणप्रोक्तेषु ब्रा० ४।३।१०५
२७८२	पुरि लुङ् चास्मे ३।२।१२२
३९२४	पुरुषश्चान्वादिष्टः ६।२।१९०
१८३९	पुरुषहस्तिभ्यामणच ५।२।३८
४८२	पुरुषात्प्रमाणेऽन्य० ४।१।२४
३८३३	पुरे प्राचाम् ६।२।९९
२९३२	पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सतैः ३।२।१८
७६८	पुरोऽव्ययम् १।४।६७
३१६६	पुवः संज्ञायाम् ३।२।१८५
२३४३	पुषादिद्युताद्यल्लदितः ३।१।१५५

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१९४१	पुष्करादिभ्यो देशे ५।२।१३५
२८६७	पुष्यसिध्या नक्षत्रे ३।१।११६
२९५८	पूः सर्वयोर्दारिसहोः ३।२।४१
२०६६	पूगाज्योऽग्रा० ५।३।११२
३७६२	पूगेष्वन्यतरस्याम् ६।२।२८
३०५१	पूडः क्त्वा च १।२।२२
३०५०	पूडश्च० ७।२।५१
३१०८	पूड्यजोः शानन् ३।२।१२८
३९७४	पूजनात्पूजितमनु० ८।१।६७
३९४४	पूजायां नानन्तरम् ८।१।३७
४९३	पूतक्रतोरै च ४।१।३६
७०५	पूरणगुणसुहितार्थ० २।२।११
१९९४	पूरणाद्भागे तीयादन् ५।३।४८
१७१४	पूरणार्धाङ्गन् ५।१।४८
८८७	पूर्णाद्विभाषा ५।४।१४९
७२९	पूर्वकालैकसर्वजर० २।१।४९
१२	पूर्वत्रासिद्धम् ८।२।१
३६१७	पूर्वं तु भाषायाम् ८।२।९८
३६४३	पूर्वपदात् ८।३।१०३
८५७	पूर्वपदात्संज्ञायामगः ८।४।३
२१८	पूर्वपरावरदक्षिणे० १।१।३४
२७३४	पूर्ववत्सनः १।३।६२
८१३	पूर्ववदश्ववडौ २।४।२७
६९३	पूर्वसदृशसमोनार्थ० २।१।३१
१८८६	पूर्वादिनिः ५।२।८६
२२१	पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ७।१।१६
१९७५	पूर्वाधरावराणामसि० ५।३।३९
७३७	पूर्वापरप्रथमचरम० २।१।५८
७१२	पूर्वापराधरोत्तरमेक० २।२।१
१४०१	पूर्वाह्णापराह्णाद्रामूल० ४।३।२८
२९३३	पूर्वं कर्तरि ३।२।१९
३७५६	पूर्वं भूतपूर्वं ६।२।२२
३४७९	पूर्वैः कृतमिनयां च ४।४।१३३
२१७८	पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४
६०३	पृथग्विनानाभि २।३।३२
१७८४	पृथ्वादिभ्य इमनि० ५।१।१२२
१०३४	पृषोदरादीनि य० ६।३।१०९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
९९६	पेषं वासवाहनघिषु० ६।३।५८
१०८४	पैलादिभ्यश्च २।४।५९
७४४	पोटायुवतिस्तोक० २।१।६५
२८४४	पोरदुपधात् ३।१।९८
१४४९	पौरोडाशपुरोडाशा० ४।३।७०
३०७२	प्यायः पी ६।१।२८
२०२४	प्रकारवचने जाती० ५।३।६९
१९७१	प्रकारवचने थाल् ५।३।३३
२१४१	प्रकारे गुणवचनस्य ८।१।१२
२६९०	प्रकाशनस्थेयाख्य० १।३।२३
३५१८	प्रकृत्यान्तःपादम० ६।१।११५
३८७१	प्रकृत्या भगालम् ६।२।१३७
८५०	प्रकृत्याशिषि ६।३।८३
२०१०	प्रकृत्यैकाच् ६।४।१६३
१७७१	प्रकृष्टे ठञ् ५।१।१०८
२६०३	प्रजने वीयतेः ६।१।५५
३२४८	प्रजने सतेंः ३।३।७१
३१३६	प्रजोरिनिः ३।२।१५६
२१०६	प्रज्ञादिभ्यश्च ५।४।३८
१९०८	प्रज्ञाश्रद्धार्चा० ५।२।१०१
३६०८	प्रणवष्टेः ८।२।८९
२८८९	प्रणाय्यो संमतौ ३।१।१२८
५९९	प्रतिः प्रतिनि० १।४।९२
१५९०	प्रतिकण्ठार्थललाम० ४।४।४०
१६५१	प्रतिजनादिभ्यः० ४।४।९९
६००	प्रतिनिधिप्रतिदाने० २।३।११
१५९२	प्रतिपथमेति ठञ्च ४।४।४२
३७४०	प्रतिबन्धि चिरकृ० ६।२।६
२१११	प्रतियोगे पञ्चम्याः ५।४।४४
३६१८	प्रतिश्रवणे च ८।२।९९
१०६६	प्रतिष्कशश्च कशेः ६।१।१५२
३०२७	प्रतिस्तब्धनिस्त० ८।३।११४
३९२७	प्रतेरंश्चादस्तत्पुरुषे० ६।२।१९३
९५०	प्रतेरुरसः सप्तमी० ५।४।८२
३०२२	प्रतेश्च ६।१।२५
३५०२	प्रत्नपूर्वविश्वेमात्या० ५।३।१११
२८६९	प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ३।१।११८

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
९४	प्रत्यभिवादेऽभूदे ८।२।८३
१८०	प्रत्ययः ३।१।१
२६२	प्रत्ययलोपे प्रत्यय० १।१।६२
४६३	प्रत्ययस्थात्कात्पूर्व० ७।३।४४
२६०	प्रत्ययस्य लुक्शलुलुपः १।१।६१
१३७३	प्रत्ययोत्तरदयोश्च ७।२।९८
२७३३	प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः १।३।५९
५७८	प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पू० १।४।४०
३२०४	प्रथने वावशब्दे ३।३।३३
२२६	प्रथमचरमतयात्पा० १।१।३३
१६४	प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ६।१।१०२
६५३	प्रथमार्निदिष्टं समा० १।२।४३
३८७	प्रथमायाश्च द्विव० ७।२।८८
३७९०	प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ ६।२।५६
१२९८	प्रधानप्रत्ययार्थ० १।२।५६
१०५०	प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षा० ८।४।५
१४६३	प्रभवति ४।३।८३
३०६१	प्रभौ परिवृढः ७।२।२१
३२४५	प्रमदसंमदौ हर्षे ३।३।६८
३३७२	प्रमाणे च ३।४।५१
१८३८	प्रमाणे द्वयसज्द० ५।२।३७
१५८०	प्रयच्छति गर्हम् ४।४।३०
२८७८	प्रयाजानुयाजौ य० ७।३।६२
३४३७	प्रयै रोहिष्यै अव्य० ३।४।१०
१७७२	प्रयोजनम् ५।१।१०९
२८८४	प्रयोज्यनियोज्या० ७।३।६८
११२७	प्रवाहणस्य ढे ७।३।२८
३८८१	प्रवृद्धादीनां च ६।२।१४७
२०२१	प्रशंसायां रूपम् ५।३।६६
७४७	प्रशंसावचनेश्च २।१।६६
२००९	प्रशस्यस्य श्रः ५।३।६०
२७७७	प्रश्ने चासन्नकाले ३।२।११७
२९१७	प्रष्टोऽप्रगामिनि ८।३।९२
३५९९	प्रसमुपोदः पादपूरणे ८।१।६
८६८	प्रसंभ्यां जानुनोर्जुः ५।४।१२९
६४१	प्रसितोत्सुकाभ्यां० २।३।४४
१०६७	प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रा० ६।१।१५३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३०३४	प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ८।२।५४
१३४६	प्रस्थपुरवहान्ताच्च ४।२।१२२
३८२१	प्रस्थेऽवृद्धमकव्या० ६।२।८७
१३३१	प्रस्थोत्तरपदपल० ४।२।११०
१६०७	प्रहरणम् ४।४।५७
२१६३	प्रहासे च मन्योप० १।४।१०६
६४८	प्राक् कडारात्समासः २।१।३
१६६१	प्राक् क्रीताच्छः ५।१।१
२२७६	प्राक्सिताद्व्यवा० ८।३।६३
२०२५	प्रागिवात्कः ५।३।७०
१९९५	प्रागेकादशभ्योऽञ्च० ५।३।४९
१६२६	प्राग्विधाद्यत् ४।४।७५
१९४७	प्राग्विदशो विभक्तिः ५।३।१
१०७३	प्राग्विदशोऽण् ४।१।८३
१९	प्राग्विदशोऽण् ४।१।८३
१६८०	प्राग्विदशोऽण् ४।१।८३
१५४८	प्राग्विदशोऽण् ४।१।८३
१३६३	प्राचां कटादेः ४।२।१३९
३८०८	प्राचां क्रीडायाम् ६।२।७४
१४००	प्राचां ग्रामनगराणाम् ७।३।१४
१४३१	प्राचां नगरान्ते ७।३।२४
४७३	प्राचां ष्फतद्धितः ४।१।१७
११८४	प्राचामवृद्धात्फिन्० ४।१।१६०
२०३६	प्राचामुपादेरड० ५।३।८०
१७९४	प्राणभृज्जातिवयो० ५।१।१२९
१५३२	प्राणिरजतादिभ्यो० ४।३।१५४
१९०३	प्राणिस्थादातो लज० ५।२।९६
१०५५	प्रातिपदिकान्तनुम्० ८।४।११
५३२	प्रातिपदिकार्थलिङ्गव० २।३।४६
२१	प्रादयः १।४।५८
३९१७	प्रादस्वाङ्गं संज्ञा० ६।२।१८३
२७४७	प्राद्वहः १।३।८१
७७९	प्राध्वं बन्धने १।४।७८
७१५	प्राप्तापत्रे च द्वितीयया २।२।४
१४१४	प्रायभवः ४।३।३९
९७३	प्रावृट्शरत्कालादि० ६।३।१५
१३८८	प्रावृष एण्यः ४।३।१७

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१३९४	प्रावृषष्ठप् ४।३।२६
२९५३	प्रियवशे वदः खच् ३।२।३८
२०१६	प्रियस्थिरस्फिरोरु० ६।४।१५७
३७५०	प्रीतौ च ६।२।१६
२९११	प्रुसृत्वः समभि० ३।१।१४९
२९२०	प्रेदाज्ञः ३।२।६
३१९८	प्रेद्रुस्तुसुवः ३।३।२७
३१२५	प्रे लपसृद्रुमथवद० ३।२।१४५
३२२१	प्रे लिप्सायाम् ३।३।४६
३२२७	प्रे वणिजाम् ३।३।५२
६२१	प्रेष्यब्रुवोर्हविषो दे० २।३।६१
३२०३	प्रेस्त्रोऽयज्ञे ३।३।३२
३८१७	प्रेषातिसर्गप्राप्तका० ३।३।१६३
१२७४	प्रोक्ताल्लुक् ४।२।६४
२७१५	प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञ० १।३।६४
२७३५	प्रोपाभ्यां समर्थभ्याम् १।३।४२
१५४२	प्लक्षादिभ्योऽण् ४।३।१६४
९०	प्लुतप्रगृह्या अचि० ६।१।१२५
२७२५	प्लुतावैच इदुतौ ८।२।१०६
२५५८	प्लादीनां ह्रस्वः ७।३।८०
१०८७	फक्फिजोरन्यत० ४।१।९१
२३५४	फणां च सप्तानाम् ६।४।१२५
२९४०	फलेग्रहिरात्मभरिश्च ३।२।२६
१५४१	फले लुक् ४।३।१६३
८१९	फल्गुनीप्रोष्टपदा० १।२।६०
११७४	फाण्टाहृतिमिमता० ४।१।१५०
१८०६	फेनादिलच्च ५।२।९९
११७३	फेश्छ च ४।१।१४९
१६४८	बन्धने चर्षौ ४।४।९६
१००५	बन्धुनि बहुव्रीहौ ६।१।१४
९७१	बन्धे च विभाषा ६।३।१३
२५२७	बभूथाततन्थजगृभ्म ७।२।६४
३४६५	बर्हिषि दत्तम् ४।४।११९
१९४२	बलादिभ्यो मतुब० ५।२।१३६
२५८	बहुगणवतुडति संख्या १।१।२३
१८५२	बहुपूगणसङ्ख्यस्य० ५।२।५२
३५०६	बुहप्रजाश्छन्दसि ५।४।१२३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३३९८	बहुलं छन्दसि २।४।३९
३४००	बहुलं छन्दसि २।४।७३
३४०१	बहुलं छन्दसि २।४।७६
३४१९	बहुलं छन्दसि ३।२।८८
३४९८	बहुलं छन्दसि ५।२।१२२
३५१०	बहुलं छन्दसि ६।१।३४
३५५७	बहुलं छन्दसि ७।१।८
३५५८	बहुलं छन्दसि ७।१।१०
३५७८	बहुलं छन्दसि ७।१।१०३
३५८६	बहुलं छन्दसि ७।३।९७
३५९८	बहुलं छन्दसि ७।४।७८
३५४६	बहुलं छन्दस्यमा० ६।४।७५
२९९१	बहुलमामीक्ष्ये ३।२।८१
४०५	बहुवचनस्य वस्नसौ ८।१।२१
२०५	बहुवचने झल्येत् ७।३।१०३
३८९६	बहुव्रीहाविदभेत० ६।२।१६२
४८४	बहुव्रीहेरुधसो डीष् ४।१।२५
५०८	बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ४।१।५२
३७३५	बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्व० ६।२।१
३८४०	बहुव्रीहौ विश्वं सं० ६।२।१०६
८५२	बहुव्रीहौ स्कथ्य० ५।४।११३
८५१	बहुव्रीहौ संख्येये० ५।४।७३
१८७	बहुषु बहुवचनम् १।४।२१
३९०९	बहोर्नज्वदुत्तरपद० ६।२।१७५
२०१७	बहोलोपो भू च बहोः ६।४।१५८
११४८	बह्वच इजः प्राच्यभ० २।४।६६
१२८५	बह्वचः कूपेषु ४।२।७३
१४४६	बह्वचोऽन्तोदात्ताद् ४।३।६७
२०३३	बह्वचो मनुष्यना० ५।३।७८
१६१५	बह्वचपूर्वपदाद् ४।४।६४
३७६४	बह्वन्यतरस्याम् ६।२।३०
२१०९	बह्वल्यार्थाच्छस्का० ५।४।४२
५०३	बह्वादिभ्यश्च ४।१।४५
२६७२	बाष्पोष्मभ्यामुद्र० ३।१।१६
५२२	बाह्वन्तात्संज्ञायाम् ४।१।६७
१०९६	बाह्वादिभ्यश्च ४।१।९६
२५९३	बिभेतेहेतुभये ६।१।५६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१३११	बिल्वकादिभ्यश्छ० ६।४।१५३
१५१६	बिल्वदिभ्योऽण् ४।३।१३६
१६९६	बिस्ताच्च ५।१।३१
२०७८	बृहत्या आच्छादने ५।४।६
२७४८	बुधयुधनशजनेङ् १।३।८६
१८०१	ब्रह्मणस्त्वः ५।१।१३६
८०५	ब्रह्मणो जानपदा० ५।४।१०४
२९९८	ब्रह्मभूणवृत्रेषु क्विप् ३।२।८७
९४६	ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः ५।४।७८
१८७१	ब्राह्मणकोष्णिके सं० ५।२।७१
१२५०	ब्राह्मणमाणववाडवा० ४।२।४२
११५८	ब्राह्मोजातौ ६।४।१७१
२४५२	ब्रुव ईट् ७।३।९३
२४५०	ब्रुवः पञ्चानामा० ३।७।८४
२४५३	ब्रुवो वचिः २।४।५३
३६१०	ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषट् ८।२।९१
३८०५	भक्ताख्यास्तदर्थेषु ६।२।७१
१६५२	भक्ताणः ४।४।१००
१६१९	भक्तादन्यतरस्याम् ४।४।६८
१४७५	भक्तिः ४।३।९५
६९७	भक्ष्येण मिश्रीकरणम् २।१।३५
२९७६	भजो णिवः ३।२।६२
३१४१	भञ्जभासमिदो घु० ३।२।१६१
२७६४	भञ्जेश्च चिणि ६।४।३३
३५१७	भय्यप्रवय्ये च च्छ० ६।१।८३
१११४	भर्गात्रैगतं ४।१।१११
१३३९	भवतष्टक्छसौ ४।२।११५
२१८१	भवतेरः ७।४।७३
३१७१	भविष्यति गम्यादयः ३।३।३
२७९४	भविष्यति मर्यादा० ३।३।१३६
३४५६	भवे छन्दसि ४।४।११०
२८९४	भव्यगेयप्रवचनीयो० ३।४।६८
१५६६	भस्त्रादिभ्यः छन् ४।४।१६
४६६	भस्त्रैषाजाज्ञास्वान० ७।३।४७
२३३	भस्य ६।४।१२९
३६८	भस्य टेलोपः ७।१।८८
१७१५	भागाद्यच्च ५।१।४९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२६७९	भावकर्मणोः १।३।१३	२४९६	भृजामित् ७।४।७६	४५९	मनः ४।१।११
३४४३	भावलक्षणे स्थण्कृ० ३।४।१६	२८६१	भृजोऽसंज्ञायाम् ३।१।१२२	९६१	मनसः संज्ञायाम् ६।३।४
३१८०	भाववचनाश्च ३।३।११	२६६७	भृशादिभ्यो भुव्यच्चे० ३।१।१२	१३५८	मनुष्यतत्स्थयो० ४।२।१३४
३१८४	भावे ३।३।१८	२८८५	भोज्यं भक्ष्ये ७।३।६९	४९५	मनोरौ वा ४।१।३८
३४९०	भावे च ४।४।११४	१६७	भोभगोअघोअपूर्व० ८।३।१७	११८५	मनोर्वातावज्य० ४।१।१६१
३२५२	भावेऽनुपसर्गस्य ३।३।७५	१२६३	भौरिक्यघैषुकार्या० ४।२।५४	३८८५	मन्तिन्व्याख्या० ६।२।१५१
३०९७	भाषायां सदवसश्रु० ३।२।१०८	३९५	भ्यसो भ्यम् ७।१।३०	३४०२	मन्त्रे घसह्मरणश० २।४।८०
२७२०	भासनोपसंभाषा० १।३।४७	२५३५	भ्रस्जो रोपधयो० ६।४।४७	३४२०	मन्त्रे वृषेषपचमन० ३।३।९६
१२४४	भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३८	३१५७	भ्राजभासधुर्विद्यु० ३।२।१७७	३४१४	मन्त्रे श्वेतवहोक्थश० ३।२।७१
२९३१	भिक्षासेनादायेषु च ३।२।१७	२५६५	भ्राजभासभाषदीप० ७।४।३	३५५४	मन्त्रेवाष्वाङ्घ्रादे० ६।४।१४१
३०४२	भित्तं शकलम् ८।२।५९	१०९१	भ्रातरि च ज्यायसि ४।१।१६४	३५३३	मन्त्रे सोमाश्चेन्द्रि० ६।३।१३१
२८६६	भित्तादध्यां नदे ३।१।११५	११६७	भ्रातृर्व्यच्च ४।१।१४४	९९८	मन्यौदनसक्तुबि० ६।३।६०
३१५४	भियः कुक्लुकनौ ३।२।१७४	९३४	भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहि० १।२।६८	५८४	मन्यकर्मण्यानादरे वि० २।३।१७
२४९२	भियोऽन्यतरस्याम् ६।४।११५	१०३०	भ्रुवो वुक्च ४।१।१२५	३८३	मपर्यन्तस्य ७।२।९१
२५९५	भियो हेतुभये षुक् ७।३।४०	३६०	मघवा बहुलम् ६।४।१२८	१०८	मय उजो वो वा ८।३।३३
५८८	भीत्रार्थानां भयहेतुः १।४।२५	१६०६	मङ्कुझझरादन्य० ४।४।५६	१४६२	मयट् च ४।३।८२
३१७३	भीमादयोऽपादाने ३।४।७४	१६४९	मतजनहलात्करण० ४।४।९७	१५२३	मयड्वैतयोर्भाषा० ४।३।१४३
१०२०	भीरोः स्थानम् ८।३।८१	३०८९	मतिबुद्धिपूजाथे० ३।२।१८८	३३१८	मयतेरिदन्यतर० ६।४।७०
२५९४	भीस्म्योर्हेतुभये १।३।६८	२६२८	मतुवसो रु संबुद्धौ० ८।३।१	७५४	मयूरव्यंसकादयश्च २।१।७२
३६७५	भीहीभृहुमदजन० ६।१।१९१	३७०५	मतोः पूर्वमात्संज्ञा० ६।१।२१९	३४८४	मये च ४।४।१३८
२४९१	भीहीभृहुवां श्लुवच्च ३।१।३९	१२८५	मतोश्च बह्वज्जात् ४।२।७२	१०६८	मस्करमस्करिणौ० ६।१।१५४
२८७७	भुजन्युब्जौ पाण्युप० ७।३।६१	३४८२	मतौ च ४।४।१३६	२५१७	मस्जिनशोर्झलि ७।१।६०
२७२७	भुजोऽनवने १।३।६६	१८५९	मतौ छः सूक्तसाभोः ५।२।५९	११६४	महाकुलादस्वजौ ४।१।१४१
५९४	भुवः प्रभवः १।४।३१	१०४१	मतौ बह्वोऽनजि० ६।३।११९	३७७२	महान्त्रीह्यपराह्मण० ६।२।३८
३१५९	भुवः संज्ञान्तरयोः ३।२।१७९	३४७४	मत्वर्थे मासतन्वोः ४।४।१२८	१२३८	महाराजप्रोष्ठपदा० ४।२।३५
३११८	भुवश्च ३।२।१३८	३२४४	मदोऽनुपसर्गे ३।३।६७	१४७७	महाराजाद्वज् ४।३।९७
३४४७	भुवश्च ४।१।४७	१३५५	मद्रवृज्योः कन् ४।२।१३१	१२३१	महेन्द्रद्वाणौ च ४।२।२९
३६०५	भुवश्च महाव्याहतेः ८।२।७१	२१३८	मद्रात्परिवापणे ५।४।६७	२२१९	माडि लुङ् ३।३।१७५
२०५५	भुवो भावे ३।१।१०७	१३२९	मद्रेभ्योऽञ् ४।२।१०८	१६७३	माणवचरकाभ्यां खञ् ५।१।११
२१७४	भुवो बुग्लुङ्लिटोः ६।४।८८	११०९	मधुवभ्रोर्ब्राह्मण० ४।१।१०६	९२९	मातरपितरावुदीचाम् ६।३।३२
१९९९	भूतपूर्वे चरट् ५।३।५३	३४८५	मधोः ४।४।१३९	९८३	मातुःपितुर्भ्यामन्य० ८।३।८५
२९९५	भूते ३।२।८४	३४७५	मधोर्ञ च ४।४।१२९	१११८	मातुरुत्संख्यासंभ० ४।१।११५
२७९७	भूते च ३।३।१४०	९६९	मध्यादुरौ ६।३।११	९८४	मातृपितृभ्यां स्वसा ८।३।८४
३१७०	भूतेऽपि दृश्यन्ते ३।३।२	१३७८	मध्यान्मः ४।३।८	११४०	मातृष्वसुश्च ४।१।१३४
१८	भूवादयो धातवः १।३।१	७७७	मध्येपदे निवचने च १।४।७६	३७४८	मात्रोपज्ञोपक्रम० ६।२।१४
७३५	भूषणेऽलम् १।४।६४	१३०५	मघ्वादिभ्यश्च ४।२।८६	१५८७	माथोत्तरपद० ४।४।३७
२२२४	भूसुबोस्तिङि ७।३।८८	२९९२	मनः ३।२।८२	१८९७	मादुपधायाश्च म० ८।२।९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१९९७	मानपस्वङ्गयोः क० ५।३।५१
१५४०	माने वयः ४।३।१६२
२३९४	मान्वधदानशान् ३।१।६
३४७०	मायायामण् ४।४।१२४
३८२२	मालादीनां च ६।२।८८
१७४५	मासाद्वयसि य० ५।१।८१
२९४९	मितनखे च ३।२।३४
२५६८	मितां ह्रस्वः ६।४।९२
१०४९	मित्रे-चर्षौ ६।३।१३०
२७४०	मिथ्योपपदात्कृ० १।३।७१
३७	मिदचोऽन्त्या० १।१।४७
२३४६	मिदेर्गुणः ७।३।८२
३८८८	मिश्रं चानुपसर्ग० ६।२।२५४
२५०८	मीनातिमिनोतिदी० ६।१।५०
३५८५	मीनातेर्निगमे ७।३।८१
३९०१	मुखं स्वाङ्गम् ६।२।१६७
९	मुखनासिकावच० १।१।८
२६२४	मुचोऽकर्मकस्य ७।४।५७
२६७७	मुण्डमिश्रश्लक्ष्ण० ३।१।२१
१५७५	मुद्रादण् ४।४।२५
३२५४	मूर्ती घनः ३।३।७७
१६४०	मूलमस्यावर्हि ४।४।८८
२८६२	मृजेर्विभाषा ३।१।११३
२४७३	मृजेवृद्धिः ७।२।११४
३३२३	मृडमृदगुध० १।२।७
२१०७	मृदस्तिक् ५।४।३९
३०५५	मृषस्तिक्षायाम् १।२।२०
२९६०	मेषर्तिभयेषु कृजः ३।२।४३
२२०३	मेर्निः ३।४।८९
१२३	मोऽनुस्वारः ८।३।२३
१४१	मो नो घातोः ८।२।६४
१२६	मो राजि समः क्वौ ८।३।२५
२५३८	प्रियतेर्लुङ्लिङो १।३।६१
२३०९	प्वोश्च ८।२।६५
७४१	यः सौ ७।२।११०
५२८	यङश्चाप् ४।१।७४
२६३३	यङि च ७।४।३०

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२६५०	यङोऽचि च २।४।७४
२६५१	यङो वा ७।३।९४
२३६	यचि भम् १।४।१८
२८०५	यच्चयत्रयोः ३।३।१४८
३१४६	यजजपदशां यङः ३।२।१६६
३६६५	यजध्वैनमिति च ७।१।४३
३२६८	यजयाचयतविच्छ० ३।३।९०
२८८२	यजयाचरुचप्रवच० ७।३।६६
३५२०	यजुष्युरः ६।१।११७
३६४१	यजुष्येकेषाम् ८।३।१०४
३३९७	यजेश्च करणे २।३।६३
३६६३	यज्ञकर्मणजप० १।२।३४
१७३५	यज्ञर्त्विग्भ्यां घख० ५।१।७१
३२०२	यज्ञे समि स्तुवः ३।३।३१
११०८	यज्जोश्च २।४।६४
४७१	यजश्च ४।१।१६
११०३	यजिजोश्च ४।१।१०१
६३८	यतश्च निर्धारणम् २।३।४१
३७०१	यतोऽनावः ६।१।२१३
१८४०	यत्तदेतेभ्यः परिमा० ५।१।३९
१७८९	यथातथयथापुर० ७।३।३१
३३४९	यथातथयोरस् ३।४।२८
१८०७	यथामुखसंमुख० ५।२।६
२८२७	यताविध्यनुप्र० ३।४।४
१२८	यथासंख्यमनु० १।३।१०
६६१	यथासादृश्ये २।१।७
२१४९	यथास्वे यथायथम् ८।१।१४
३९६३	यद्धितुपरं छन्दसि ८।१।५६
३९७३	यद्धृत्तान्त्रित्यम् ८।१।६६
३२४०	यमः समुपनिविषु० ३।३।६३
२३७७	यमरमनमातां ७।२।७३
२६९८	यमो गन्धने १।२।१५
३८९०	ययतोश्चातदर्थे ६।२।१५६
११६	यरोऽनुनासिकेऽनु० ८।४।४५
१८०४	यवयवकषष्टिका० ५।२।३
३१५६	यश्च यङः ३।२।१७६
२५२१	यसोऽनुपसर्गात् ३।१।७१

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
११४६	यस्क्रदिभ्यो गोत्रे २।४।६३
१९९	यस्मात्प्रत्ययविधि० १।४।१३
६४५	यस्मादधिकं यस्य चे० २।३।९
६३४	यस्य च भावेन० २।३।३७
६७०	यस्य चायामः २।१।१६
३०२५	यस्य विभाषा ७।२।१५
२६३१	यस्य हलः ६।४।४९
३११	यस्येति च ६।४।१४८
७०३	याजकादिभिश्च २।२।९
३६०९	याज्यान्तः ८।२।९०
२९०	याडापः ७।३।१२३
१९९३	याप्ये पाशप् ५।३।४७
३३५१	यावति विन्दजीवोः ३।४।३०
२७८३	यावत्पुरानिपात० ३।३।४
६६२	यावदवधारणे २।१।८
३९४३	यावद्यथाभ्याम् ८।१।३६
२०९७	यावादिभ्यः कन् ५।४।२९
२२०९	यासुट् परस्मैपदे० ३।४।१०३
२४८८	यीवर्णयोर्दीधीवे० ७।४।५३
३८१५	युक्तारोह्यादयश्च ६।२।८१
३८००	युक्ते च ६।२।६६
२८७३	युग्यं च पत्रे ३।१।१२१
३७६	युजेरसमासे ७।१।७१
३५४४	युप्तुवोर्दीर्घ० ६।४।५८
७४८	युवा खलतिप० २।१।६७
२०१९	युवात्पयोः कनन्य० ५।३।६४
३८६	युवावौ द्विव० ७।२।९२
१२४७	युवोरनाकौ ७।१।१
३६४०	युष्मत्तत्तक्षु० ८।३।१०३
४०४	युष्मदस्मदोः षष्ठी० ८।१।२०
३९३	युष्मदस्मदोरनादे० ७।२।८६
१३७०	युष्मदस्मदोरन्य० ४।३।१
३६९९	युष्मदस्मदोर्दसि ६।१।२११
३९९	युष्मदस्मद्भ्यां ङ० ७।१।२७
२१६२	युष्मदद्युपपदे स० १।४।१०५
५३१	यूनस्तिः ४।१।७७
१०८३	यूनि लुक् ४।१।९०

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३८८	यूयवयौ जसि ७।२।९३
२६६	यूस्त्र्याख्यौ नदी १।४।३
२५४९	ये च ६।४।१०९
१६६७	ये च तद्धिते ६।१।६१
११५४	ये चाभावकर्म० ६।४।१६८
२६	येन विधिस्तदन्तस्य १।१।७२
५६५	येनाङ्गविकारः २।३।२०
३६०७	ये यज्ञकर्मणि ८।२।८८
२३१९	ये विभाषा ६।४।४३
९१३	येषां च विरोधं शा० २।४।९
१२९७	योगप्रमाणे च० १।२।५५
१७६६	योगाद्यच्च ५।१।१०२
३९२	योऽचि ७।२।८९
१७३८	योजनं गच्छति ५।१।७४
१७९७	योपधादुत्त० ५।१।१३२
१७८५	युक्तो हलादेर्ल० ६।४।१६१
२१००	रक्ते ५।४।३२
१५८३	रक्षति ४।४।३३
३४६७	रक्षोयातूनां ह० ४।४।१२१
१३२०	रङ्कोरमनुष्ये० ४।२।१००
१९१९	रजःकृष्यासु० ५।२।११२
२३९७	रज्जेश्च ६।४।२६
१०२८	रथपदयोश्च ६।३।१०२
१५०१	रथाद्यत् ४।३।१२१
३०१६	रदाभ्यां निष्ठातो नः० ८।२।४३
२५१५	रधादिभ्यश्च ७।२।४५
२३०२	रधिजभोरचि ७।१।६१
२५८१	रमेशबलितोः ७।१।६३
२६१७	रत्नो व्युपधाद्ध० १।२।२६
३२२८	रश्मौ च ३।३।५३
२३५	रषाभ्यां नो णः स० ८।४।१
१८९५	रसादिभ्यश्च ५।२।९५
९०२	राजदन्तादिषु० २।२।३१
३००५	राजनि युधि० ३।२।९५
३७६८	राजन्यबहुवचन० ६।२।३४
१२६२	राजन्यादिभ्यो वु० ४।२।५३
१९०२	राजन्वान्सौराज्ये ८।२।१४

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
११५३	राजश्वशुराद्यत् ४।१।१३७
२८६५	राजसूयसूर्य० ३।१।११४
३७९३	राजा च ६।२।५९
३७९७	राजा च प्रशंसायाम् ६।२।६३
७८८	राजाहःसखि० ५।४।९१
१३६४	राज्ञः क च ४।२।१४०
८१४	रात्राह्नाहः पुंसि २।४।२९
१००८	रात्रेः कृति वि० ६।३।७२
३४४५	रात्रेश्चाजसौ ४।१।३१
१७५१	रात्र्यहःसंवत्स० ५।१।८७
३८०	रात्सस्य ८।२।२४
५७७	राधीक्ष्योर्यस्य० १।४।३९
२५३२	राधो हिंसायाम् ६।४।१२३
२८६	रायो हलि ७।२।८५
२६५५	राल्लोपः ६।४।२१
१३१३	राष्ट्रावारपारा० ४।२।९३
३६९६	रक्ते विभाषा ६।१।२०८
२३६७	रिङ् शयग्लिङ्क्षु ७।४।२८
२१९२	रि च ७।४।५१
२६४४	रिगृदुपधस्य च ७।४।९०
१२३४	रीडत्तः ७।४।२७
२६५२	रुग्निर्कौ च लुकि ७।४।९१
५७१	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः १।४।३३
६१५	रुजार्थानां भावव० २।३।५४
२६०९	रुदविदमुषग्रहि० १।२।८
२४७५	रुदश्च पञ्चभ्यः ७।३।९८
२४७४	रुदादिभ्यः सार्व० ७।२।७६
२५४३	रुधादिभ्यः श्नम् ३।१।७८
३०६९	रुष्यमत्वरसंघु० ७।२।२८
२५९९	रुहः पौऽन्यतरस्याम् ७।३।४३
१९२७	रूपादाहतप्र० ५।२।१२०
३४६८	रेवतीजगती० ४।४।१२२
११६९	रेवत्यादिभ्यश्च ४।१।१४६
१५११	रैवतिकादिभ्यश्च ४।३।१३१
३३९	रोः सुपि ८।३।१६
३२८५	रोगाख्यायां ण्वु० ३।३।१०८
२११६	रोगाच्चापनयने ५।४।४९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१२९०	रोणी ४।२।७८
१३४७	रोपधेतोः प्राचां ४।२।१२३
१७३	रो रि ८।३।१४
१७२	रोऽसुपि ८।२।६९
४३३	वोरूपधाय० ८।२।७६
२१५२	लः कर्मणि च भावे० ३।४।६९
२१५५	लः परस्मैपदम् १।४।९९
३१०३	लक्षणहेत्वोः० ३।२।१२६
२९६९	लक्षणे जायापत्योष्टक् ३।२।५२
५५२	लक्षणेत्थंभूताख्यान० १।४।९०
६६८	लक्षणेनाभिप्रती० २।१।१४
२४६३	लङः शाकटायन० ३।४।१११
३१००	लटः शतृशानचा० ३।२।१२४
२७७८	लट् स्मे ३।२।११८
२५८२	लभेश्च ७।१।६४
१६०२	लवणाद्भुक् ४।४।५२
१५७४	लवणाल्लुक् ४।४।२४
१९५	लशक्वतद्धिते १।३।८
३१३४	लषपतपदस्या० ३।२।१५४
२१५३	लस्य ३।४।७७
१२०३	लाक्षारोचनाद्भुक् ४।२।२
२२११	लिङः सलोपोऽनन्त्य० ७।२।७९
२२५५	लिङः सीयुट् ३।४।१०२
३४२४	लिङर्थे लेट् ३।४।७
२२१५	लिङाशिषि ३।४।११६
२८१५	लिङ् च ३।३।१५९
२७८८	लिङ् चोर्ध्वमौहू० ३।३।९
२८१८	लिङ् चोर्ध्वमौहू० ३।३।१६४
२२२९	लिङ्निमित्ते ल० ३।३।१३९
२८२१	लिङ् यदि ३।३।१६८
३४३४	लिङ्याशिष्यङ् ३।१।८६
२३००	लिङ्सिचावात्म० १।२।११
२५२८	लिङ्सिचोरात्म० ७।२।४२
३०९४	लिटः कानज्वा ३।२।१०६
२२४१	लिटस्तङ्गयोरेशि० ३।४।८१
२१७७	लिटि धातोर्नभ्या० ६।१।८
२४१३	लिटि वयो यः ६।१।३८

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
२१७२	लिट् च ३।४।११५	३९५२	लोपे विभाषा ८।१।४५	३८६५	वर्ग्यादयश्च ६।२।१३१
२४२४	लिठ्यन्यतरस्याम् २।४।४०	२५००	लोपो यि ६।४।११८	१०६३	वर्चस्कोऽवस्करः ६।१।१४८
२४०८	लिठ्यभ्यासस्यो ६।१।१७	८७३	लोपो व्योर्वलि ६।१।६६	१७८७	वर्णदृढादिभ्यः घ्यञ्च ५।१।१२३
२३२७	लिङ्यङोश्च ६।१।२९	१९०७	लोमादिपामादिपि ५।२।१००	४९६	वर्णादनुदात्तात्तोप ४।१।३९
३६७६	लिति ६।१।१९३	२६६८	लोहितादिडाज्यः ३।१।१३	१९४०	वर्णाद्विचारिणि ५।२।१३४
२४१८	लिपिसिचिह्वश्च ३।१।५३	२०९८	लोहितान्मणौ ५।४।३०	२०९९	वर्णे चानित्ये ५।४।३१
२७८६	लिप्स्यमानसि ३।३।७	३३३९	ल्यपि च ६।१।४१	७५०	वर्णो वर्णेन २।१।६९
३३९२	लियः संमानन १।३।७०	३४३६	ल्यपि लघुपूर्वात् ६।४।५६	३७३७	वर्णो वर्णेष्वाते ६।२।३
२५९१	लीलोर्नुलुकाव ७।३।३९	३२९०	ल्युट् च ३।३।११५	१३२३	वर्णो वुक् ४।२।१०३
१४०८	लुक् द्वितलुकि १।२।४९	३०१८	ल्वादिभ्यः ८।२।४४	२७८९	वर्तमानसामीप्ये व ३।३।१३१
१११२	लुक् स्त्रियाम् ४।१।१०९	२४५४	वच उम् ७।४।२०	२१५१	वर्तमाने लट् ३।२।१२३
२३६५	लुग्व दुहदिह ७।३।७३	२४०९	वचिस्वपियजादी ६।१।१५	३३५२	वर्षप्रमाण ऊलोपश्चा ३।४।३२
२२१८	लुङ् ३।२।११०	२८८३	वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ७।३।६७	१७५४	वर्षस्याभविष्यति ७।३।१६
२४३४	लुङि च २।४।४३	३३२५	वञ्चिलुङ्युतश्च १।२।२४	१३८९	वर्षाभ्यष्टक् ४।३।१८
२२०६	लुङ्लङ्लङ् ६।४।७१	२८७९	वञ्जेर्गता ७।३।६३	२८२	वर्षाभ्यश्च ६।४।८४
२४२७	लुङ्सनोर्घस्त्व २।४।३७	११११	वतण्डाच्च ४।१।१०८	१७५३	वर्षाल्लुक्च ५।१।८८
२१८८	लुटः प्रथमस्य २।४।८५	१६८८	वतोरिङ्वा ५।१।२३	१०४०	वले ६।३।११८
२३५१	लुटि च क्लृपः १।३।९३	१८५३	वतोरिथुक् ५।२।५३	१६३८	वशं गतः ४।४।८६
२४३५	लुपसदचरजप ३।१।२४	३४९३	वत्सरान्ताच्छश्छ ५।१।९१	२४१४	वशास्यान्यतरस्यां ६।१।३९
१२९४	लुपि युक्तवद १।२।५१	१४११	वत्सशालाभिजिद ४।३।३६	३०४६	वसतिक्षुधोरिट् ७।२।५२
१५४५	लुप् च ४।३।१६६	१९०५	वत्सांशाभ्यां कामबले ५।२।९८	३४५१	वसन्ताच्च ४।३।२०
१२०५	लुबविशेषे ४।२।४	२०४६	वत्सोक्षाश्वर्षमेभ्यश्च ५।३।९१	१२७३	वसन्तादिभ्यष्टक् ४।२।६३
१२९६	लुब्योगाप्रख्या १।२।५४	२८५४	वदः सुपि क्यप् च ३।१।१०६	३३४	वसुक्षंसुध्वंस्वनडु ८।२।७२
३०४८	लुभो विमोहने ७।२।५४	२२६७	वदव्रजहलन्तस्याचः ७।२।३	३४८६	वसोः समूहे च ४।४।१४०
२०५३	लुम्पनुष्ये ५।३।९८	३९१२	वनं समासे ६।२।१७८	४३५	वसोः संप्रसारणम् ६।४।१३१
३१०७	लटः सद्वा ३।३।१४	१०३८	वनगिर्योः संज्ञायां ६।३।११७	२०५६	वस्तेर्ढञ् ५।३।१०१
२१९३	लट् शेषे च ३।३।१३	१०३९	वनं पुरगामिश्रका ८।४।४	१५६३	वस्नक्रयविक्रयाड्नु ४।४।१३
३४२७	लोटो डोटौ ३।४।९४	४५६	वनो र च ४।१।७	१७१७	वस्नद्रव्याभ्यां ठन्कनौ ५।१।५१
१७०७	लोकसर्वलोक ५।१।४४	८९५	वन्दिते भ्रातुः ५।४।१५७	३०९६	वस्वेकाजाद्धसाम् ७।२।६७
२१९८	लोटो लङ्बत् ३।४।८५	२४२९	वमोर्वा ८।४।२३	३४१०	वहश्च ३।२।६४
२१९४	लोट् च ३।३।१६२	२९२४	वयसि च ३।२।१०	२९४७	वहाभ्रे लिहः ३।२।३२
३९५९	लोट् च ८।१।५२	८८०	वयसि दन्तस्य दत् ५।४।१४१	२८५०	वह्मं करणम् ३।१।१०२
२७८७	लोट्थलक्षणे च ३।३।८	१९३६	वयसि पुरणात् ५।२।१३०	११८२	वाकिनादीनां कुक्च ४।१।१५८
२५८७	लोपः पिबतेरी ७।४।४	४७८	वयसि प्रथमे ४।१।२०	२६६९	वा क्यषः १।३।९०
६७	लोपः शाकल्यस्य ८।३।१९	३४७३	वयस्यासु मूर्धो म ४।४।१२७	९३	वाक्यस्य टेः प्लुत उ ८।२।८२
२३३३	लोपश्चास्यान्यतर ६।४।१०७	१३०१	वरणादिभ्यश्च ४।२।८२	२१४३	वाक्यादेरामन्त्रित ८।१।८
३५६३	लोपस्त आत्मनेप ७।१।४१	१४४२	वर्गान्ताच्च ४।३।६३	३०८१	वा क्रोशदैन्ययोः ६।४।६१

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २७०० वा गमः १।२।१३
 ९९४ वा घोषमिश्रशब्देषु ६।३।५६
 २९५७ वाचंयमपुरंदरौ च ६।३।६९
 २६०५ वा चित्तविरागे ६।४।९१
 २९५६ वाचि यमो व्रते ३।२।४०
 १९३० वाचो ग्मिनिः ५।२।१२४
 २१०३ वाचो व्याहृतार्थायाम् ५।४।३५
 ३५५२ वा छन्दसि ३।४।८८
 ३५१५- वा छन्दसि ६।१।१०६
 ३९०५ वा जाते ६।२।१७१
 २३५६ वा जृष्टमुत्रसाम् ६।४।१२४
 १९३५ वातातीसाराभ्यां ५।२।१२९
 ३०६८ वा दान्तशान्तपूर्णं ७।२।२७
 ३२७ वा दुहमुहष्णहृष्णि ८।२।३३
 ४४४ वा नपुंसकस्य ७।१।७९
 २८३९ वा निसनिक्षनिन्दाम् ८।४।३३
 ६३ वान्तो यि प्रत्यये ६।१।७९
 १०९२ वान्यस्मिन्सपिण्डे ४।१।१६५
 २३७८ वान्यस्य संयोगादेः ६।४।६८
 १२५ वा पदान्तस्य ८।४।५९
 २०४८ वा बहूनां जातिपरिं ५।३।९३
 १०५४ वा भावकरणयोः ८।४।१०
 ३७५४ वा भुवनम् ६।२।२०
 २३२१ वा भ्राशभ्लाशभ्रमुं ३।१।७०
 १२१० वामदेवाङ्गुल्यौ ४।२।९
 ३०४ वामि १।४।५
 ३०२ वाम्शसोः ६।४।८०
 ३२९२ वा यौ २।४।५७
 १२३३ वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ४।२।३१
 ५९० वारणार्थानामीप्सितः १।४।२७
 २४३७ वा लिटि २।४।५५
 ३३३४ वा ल्यपि ६।४।३८
 २०६ वावसाने ८।४।५६
 १५१ वा शरि ८।३।३६
 ९८९ वा शोकष्यजोगेषु ६।३।५१
 ३५४१ वा षपूर्वस्य निगमे ६।४।९
 ८७१ वा संज्ञायाम् ५।४।१३३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २८३० वासरूपोऽस्त्रियाम् ३।१।९४
 १४७८ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ४।३।९८
 ७७ वा सुप्यापिशलेः ६।१।९२
 ३२९ वाह ऊट् ६।४।१३२
 ५१६ वाहः ४।१।६१
 १९६१ वा ह च छन्दसि ५।३।१३
 १०५२ वाहनमाहितात् ८।४।८
 ९०० वाहिताग्न्यादिषु २।२।३७
 १३४१ वाहीकग्रामेभ्यश्च ४।२।११७
 १६९७ विंशतिकात्खः ५।१।३२
 १६८९ विंशतित्रिंशद्भ्यां ५।१।२४
 १८५६ विंशत्यादिभ्यस्तमडं ५।२।५६
 ११२७ विकर्णकुषीतकां ४।१।१२४
 ११२० विकर्णशुङ्गच्छगं ४।१।११७
 ३०८५ विकुशमिपरिभ्यः ८।३।९६
 ३६१६ विचार्यमाणानाम् ८।२।९७
 २५३६ विज इट् १।२।२
 ३४१७ विजुपे छन्दसि ३।२।७३
 २९८२ विड्वनोरनुनासिकं ६।४।४१
 ३०४१ वित्तो भोगप्रत्ययोः ८।२।५८
 २४६५ विदांकुर्वन्त्वित्यन्यं ३।१।४१
 ३१४२ विदिभिदिच्छिदेः ३।२।१६२
 १४६४ विदूराज्यः ४।३।८४
 ३१०५ विदेः शतुर्वसुः ७।१।३६
 २४६४ विदो लटो वा ३।४।८३
 १४५६ विद्यायोनिबंधे ४।३।७७
 २२०८ विधिनिमन्त्रणां ३।३।१६१
 १६३५ विध्यत्यधनुषा ४।४।८३
 २९५० विध्वरुषोस्तुदः ३।२।३५
 १८२८ विनज्यां नानजौ ५।२।२७
 २१०२ विनयादिभ्यष्ठक् ५।४।३४
 ३१४९ विन्दुरिच्छुः ३।२।१६९
 २०२० विन्मतोलुक् ५।३।६५
 २६८५ विपराभ्यां जेः १।३।१९
 २८७८ विपूयविनीयजिं ३।१।११७
 ९१७ विप्रतिषिद्धं चानधि २।४।१३
 १७५ विप्रतिषेधे परं कार्यम् १।४।२

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ३१६० विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञां ३।२।१८०
 १८४ विभक्तिश्च १।४।१०४
 ३५५५ विभाषजोश्छन्दसि ६।४।१६२
 ६६५ विभाषा २।१।११
 २८०० विभाषा कथमिं ३।३।१४३
 २७८४ विभाषा कदाकह्योः ३।३।५
 २७५१ विभाषाकर्मकात् १।३।८५
 १६९४ विभाषाकार्षापणसं ५।१।२९
 १३५४ विभाषा कुरुगुं ४।२।१३०
 ७७३ विभाषा कृजि १।४।७२
 ६४६ विभाषा कृजि १।४।९८
 २८७१ विभाषा कृवृषोः ३।१।१२०
 ३२८७ विभाषाख्यानपरिं ३।३।११०
 ३०९९ विभाषा गमहनविं ७।२।६८
 ६०२ विभाषा गुणोऽस्त्रिं २।३।२५
 २९०५ विभाषा ग्रहः ३।१।१४३
 ३३४५ विभाषाग्रे प्रथमपूर्वेषु ३।४।२४
 २३७६ विभाषा ग्राघेट्शां २।४।७८
 ३२२५ विभाषा डिः रप्लुवोः ३।३।५०
 २३७ विभाषा डिश्योः ६।४।१३६
 ८१० विभाषा चत्वारिंशं ६।३।४९
 २७६५ विभाषा चिण्णमुलोः ७।१।६९
 २५२५ विभाषा चेः ७।३।५८
 ३६६५ विभाषा छन्दसि १।२।३६
 ३८९८ विभाषा छन्दसि ६।२।१६४
 ३५९३ विभाषा छन्दसि ७।४।४४
 २२५ विभाषा जसि १।१।३२
 २०८० विभाषाञ्जेरदिविस्त्रं ५।४।८
 १८०५ विभाषा तिलमाणो ५।२।४
 २७८ विभाषा तृतीयां ७।१।९७
 ३८९५ विभाषा तृत्रत्रती ६।२।१६१
 २९२ विभाषा दिक्समासे १।१।२८
 २९३ विभाषा द्वितीयां ७।३।११५
 २८१२ विभाषा धातौ सं ३।३।१५५
 २३७५ विभाषा धेट्श्योः ३।१।४९
 ३८०१ विभाषाध्यक्षे ६।२।६७
 ३३४२ विभाषापः ६।४।५७

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- १९७९ विभाषा परावराभ्याम् ५।३।२९
 ३३३७ विभाषा परेः ६।१।४४
 १०३२ विभाषा पुरुषे ६।३।१०६
 १३९२ विभाषा पूर्वाह्णापरां ४।३।२४
 ३६१२ विभाषा पृष्टप्रतिवचं ८।२।९३
 १२२५ विभाषा फाल्गुनीश्रं ४।२।२३
 २०८८ विभाषा बहोर्धा विप्रं ५।४।२०
 ३०५४ विभाषा भावादिकं ७।२।१७
 ३६८४ विभाषा भाषायाम् ६।६।१८१
 ३०२३ विभाषाभ्यवपूर्वस्य ६।१।२६
 १३६८ विभाषा मनुष्ये ४।२।१४४
 १३८२ विभाषा रोगातपयोः ४।३।१३
 २५०९ विभाषा लीयतेः ६।१।५१
 २४६० विभाषा लुङ्लङोः २।४।५०
 १९७७ विभाषावरस्य ५।३।४१
 ९७४ विभाषा वर्षक्षरशरं ६।३।१६
 २७२३ विभाषा विप्रलापे १।३।५०
 १५६७ विभाषा विवधात् ४।४।१७
 ९१६ विभाषा वृक्षमृगतृ २।४।१२
 ३७०३ विभाषा वेण्विन्धां ६।१।२१५
 २५८३ विभाषा वेष्टिचेष्टयोः ७।४।९६
 ८८२ विभाषा श्यावारो ५।४।११४
 २४२० विभाषा श्वेः ६।१।३०
 ४९१ विभाषा सपूर्वस्य ४।१।३४
 ९२० विभाषा समीपे २।४।१६
 २७७५ विभाषा साकाङ्क्षे ३।२।११४
 २१२२ विभाषा साति कां ५।४।५२
 २०२३ विभाषा सुपो बहु ५।३।६८
 २४०४ विभाषा सृजिदृशोः ७।२।६५
 ८२८ विभाषा सेनासुरां २।४।२५
 ९८२ स्वसृपत्योः ६।३।२४
 १६६४ विभाषा हविरपूपादि ५।१।४
 ३३५५ विभाषितं विशेषव ८।१।७४
 ३९६० विभाषितं सोपसर्गं ८।१।५३
 २३२५ विभाषेष्टः ८।३।७९
 ३९३० विभाषोत्पुच्छे ६।२।१९६
 १०१६ विभाषोदरे ६।३।८८

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- २७४४ विभाषोपपदेन प्रती १।३।७७
 २७३० विभाषोपयमने १।२।१६
 ६२० विभाषोपसर्गे २।३।५९
 २४४७ विभाषोर्णोः १।२।३
 १३४२ विभाषोशीनरेषु ४।२।११८
 १०५१ विभाषौषधिवनस्प ८।४।६
 १६४१ विमुक्तादिभ्योऽण् ५।२।६१
 २७ विरामोऽवसानम् १।४।११०
 ३३८८ विशाखयोश्च १।२।६२
 १७७३ विशास्वाषाढादं ५।१।१००
 ३३७८ विशिपतिपदिस्कं ३।४।५६
 ९११ विशिष्टलिङ्गो नदीदे २।४।७
 ७३६ विशेषणं विशेष्ये २।१।५७
 १३०० विशेषणानां चाजातेः १।२।५२
 ३७९ विश्वस्य वसुराटोः ६।३।१२८
 १२६१ विषयो देशे ४।२।५२
 १०६५ विष्किरः शकुनौ ६।१।१५०
 ४१८ विष्ण्वदेवयोश्च टेरं ६।३।९२
 १३८ विसर्जनीयस्य सः ८।३।३४
 २०८४ विसारिणो मत्स्ये ५।४।१६
 ३७५८ विस्पष्टादीनिगुणव ६।२।२४
 ३८५४ वीरवीर्यौ च ६।२।१२०
 १२९२ वृच्छणकठजिलसे ४।२।८०
 ३५०४ वृक्षज्येष्ठाभ्यां ति ५।४।४१
 २०६८ वृकाट्टेण्यण् ५।३।११५
 ३२३३ वृक्षासनयोर्विष्टरः ८।३।९३
 ३२२९ वृणोतेराच्छादने ३।३।५४
 २७११ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः १।३।३८
 २०२३ वृद्धस्य च ५।३।६२
 १३३७ वृद्धाच्छः ४।२।११४
 ११७२ वृद्धाडुक्सौवीरेषु ४।१।१४८
 १३४४ वृद्धात्पाचाम् ४।२।१२०
 १३६५ वृद्धादकेकान्तस्वो ४।२।१४१
 ८४० वृद्धिनिमित्तस्य च ६।३।३९
 १६ वृद्धिरादैच् १।१।१
 ७२ वृद्धिरेचि ६।१।८८
 १३३५ वृद्धिर्यस्याचामादि १।१।७३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

- ११८९ वृद्धेत्कोसलाजादां ४।१।१७१
 ९३१ वृद्धोयूना तल्लक्षणं १।२।६५
 २३४७ वृद्ध्यः स्यसनोः १।३।९२
 ७४१ वृन्दारकनागकुञ्जं २।१।६२
 ४९४ वृषाकप्यग्रिकुसि ४।१।३७
 ३६९१ वृषादीनां च ६।१।२०३
 २३९१ वृत्तो वा ७।२।३८
 २७१४ वेः पादविहरणे १।३।४१
 २७०७ वेः शब्दकर्मणः १।३।३४
 १८२९ वेः शालच्छङ्कटचौ ५।२।२८
 २३९८ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ८।३।७३
 २५५६ वेः स्कन्हातेर्नित्यम् ८।३।७७
 २४१५ वेजः ६।१।४०
 २४११ वेजो वयिः २।४।४१
 १५६२ वेतनादिभ्यो जीवति ४।४।१२
 २७०१ वेतेर्विभाषा ७।१।७
 ३७५ वेरपृक्तस्य ६।१।६७
 ३४५८ वेशन्तहिमवद्भ्यां ४।४।११२
 ३४७७ वेशोयशआदेर्धं ४।४।१३१
 २२७४ वेश्च स्वनो भोजने ८।३।६९
 ३४३० वैतोऽन्यत्र ३।४।९६
 ९६४ वैयाकरणाख्यायां च ६।३।७
 ३९७१ वैवावेति च छन्दसि ८।१।६४
 २७९८ वोताप्योः ३।३।१४१
 ५०२ वोतो गुणवचनां ४।१।४४
 ८४९ वोपसर्जनस्य ६।३।८२
 २५९० वो विधूनने जुक् ७।३।३८
 ३१२३ वौ कषलसकत्यं ३।२।१४३
 ३१९६ वौ क्षुश्रुवः ३।३।२५
 २७२१ व्यक्तवाचां समुच्चारणे १।३।४८
 १५७६ व्यञ्जनैरुपसिक्ते ४।४।२६
 ३४३३ व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५
 २३५३ व्ययो लिटि ७।४।६८
 ३२३८ व्यधजपोरनुसर्गे ३।३।६१
 ११६८ व्यन्सपत्ने ४।१।१४५
 ३३९२ व्यवहिताश्च १।४।८२
 ६१८ व्यवहपणोः समर्थयोः २।३।५७

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३९००	व्यवायिवोऽन्तरम् ६।२।१६६	१५२२	शम्याः प्लज् ४।३।१४२	३१३	शि सर्वनामस्थानम् १।१।४२
३३४१	व्यश्च ६।१।४३	९७६	शयवासवासिष्वकां ६।३।१८	२४४१	शीङः सार्वधातुके ७।४।२१
२७४९	व्याङ्परिभ्यो रमः १।३।८३	११०४	शरद्वच्छुनकदर्भां ४।१।१०२	२४४२	शीङो रुट् ७।१।६
१४२६	व्याहरति मृगः ४।३।५१	१०४२	शरादीनां च ६।३।१२०	१८७२	शीतोष्णाभ्यां कारिणि ५।२।७२
३२११	व्युपयोः शेतेः पर्याये ३।३।३९	१४३०	शरीरावयवाच्च ४।३।५५	३५१४	शीर्षश्छन्दसि ६।१।६०
१७६१	व्युष्टादिभ्योऽण् ५।१।९७	१६६६	शरीरावयवाद्यत् ५।१।६	१७३०	शीर्षच्छेदाद्यच्च ५।१।६५
१६८	व्योर्लघुप्रयत्नतरः ८।३।१९	३४०	शरोऽचि ८।४।४९	१६११	शीलम् ४।४।६१
३२७५	व्रवयजोर्मानि क्यप् ३।३।९८	२०६२	शर्करादिभ्योऽण् ५।३।१०७	१२२८	शुक्राङ्गन् ४।२।२६
२९९०	व्रते ३।२।८०	१३०२	शर्कराया वा ४।२।८३	१४५५	शुण्डिकादिभ्योऽण् ४।३।७६
२९४	व्रश्चभ्रस्जसृजमृजं ८।२।३६	१५०	शर्पे विसर्जनीयः ८।३।३५	११२६	शुभ्रादिभ्यश्च ४।१।१२३
११००	व्रातचफजोरस्त्रियाम् ५।३।११३	२२५९	शर्पूर्वाः खयः ७।४।६१	३०३०	शुषः कः ८।२।५१
१८२२	व्रातेन जीवति ५।२।२१	२३३६	शल इगुपधादनितः ३।१।४५	३३५६	शुष्कचूर्णरूपेषु पिषः ३।४।३५
१८०३	व्रीहिशाल्योर्ढक् ५।२।२	१६०४	शलालुनोऽन्यतरं ४।४।५४	३६९४	शुष्कघृष्टौ ६।१।२०६
१५२८	व्रीहेः पुरोडाशे ४।३।१४८	१२०	शश्छोऽटि ८।४।६३	९१४	शूद्राणामनिरवसि २।४।१०
१९२३	व्रीह्यादिभ्यश्च ५।२।११६	३९१	शसो न ७।१।२९	१६९१	शूर्पादन्यतरस्याम् ५।१।२६
१६३२	शकटादण् ४।४।८०	१५०८	शाकलाद्वा ४।३।१२८	२१३६	शूलात्पाके ५।४।६५
३१७७	शकधृषज्ञागलाघटं ३।४।६५	२०५८	शाखादिभ्यो यः ५।३।१०३	१२१८	शूलोखाद्यत् ४।२।१७
३४३९	शकि णमुल्कमुलौ ३।४।१२	२५८५	शाच्छासाह्वाव्ये ७।३।३७	१८७९	शृङ्गलमस्य बन्धं ५।२।७९
२८३३	शकि लिङ् च ३।३।१७२	३०७५	शाच्छोरन्यतरस्याम् ७।४।४१	३८४९	शृङ्गमवस्थायां च ६।२।११५
२८४७	शकिसहोश्च ३।१।९९	१७००	शाणाद्वा ५।१।३५	३०६७	शृतं पाके ६।१।२७
१६०९	शक्तियष्टयोरीकक् ४।४।५९	११२	शात् ८।४।४४	२४९५	शृदृषां ह्रस्वो वा ७।४।१२
२९७१	शक्तौ हस्तिकपाटयोः ३।२।५४	३७४३	शारदेऽनार्तवे ६।२।९	३१५३	शृवन्द्योरारुः ३।२।१७३
१४७२	शण्डिकादिभ्यो ज्यः ४।३।९२	५२७	शार्ङ्गर्वाद्यजो डीन् ४।१।७३	१०२	शो १।१।१३
१६९२	शतमानविंशतिकसं ५।१।२७	१८२१	शालीनकौपीने अं ५।२।२०	२५४२	शो मुचादीनाम् ७।१।५९
१९२६	शतसहस्रान्ताच्च ५।२।११९	२४८६	शास इदङ्गलोः ६।४।३४	२०३८	शेवलसुपरिविशालं ५।३।८४
१६८६	शताश्च ठन्यतावशते ५।१।२१	२४१०	शासिवसिषसीनां ८।३।६०	३५१६	शेश्छन्दसि बहुलम् ६।१।७०
३७१९	शतुरनुमो नद्यजादी ६।१।१७३	२४८७	शा हौ ६।४।३५	२१५९	शेषात्कर्तरि परस्मै १।३।७८
१८४७	शदन्तविंशतेश्च ५।२।४६	१३०८	शिखाया वलच् ४।२।८९	८९१	शेषाद्विभाषा ५।४।१५४
२३६२	शदेः शितः १।३।६०	१३३	शि तुक् ८।३।३१	१३१२	शेषे ४।२।९२
२५९८	शदेरगतौ तः ७।३।४२	३८७२	शितेर्नित्याबह्वज् ६।२।१३८	२१६५	शेषे प्रथमः १।४।१०८
४४६	शप्श्यनोर्नित्यम् ७।१।८९	२०५७	शिलायाः ङः ५।३।१०२	२८०८	शेषे लङ्यदौ ३।३।१५१
१५८४	शब्ददर्दुरं करोति ४।४।३४	१६०५	शिल्पम् ४।४।५५	३८५	शेषे लोपः ७।२।९०
२६७३	शब्दवैरकलहाभ्रं ३।१।१७	३८१०	शिल्पिनि चाकृजः ६।२।७६	३९४८	शेषे विभाषा ८।१।४१
२५१९	शमामष्टानां दीर्घः ७।३।७४	२९०७	शिल्पिनि घ्नुन् ३।१।१४५	३९५७	शेषे विभाषा ८।१।५०
३५४३	शमिता यज्ञे ६।४।५४	३४८९	शिवशमरिष्टस्य करे ४।४।१४३	२२३२	शेषे विभाषाकस्वां ८।४।१८
३१२१	शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ३।२।१४१	१११५	शिवादिभ्योऽण् ४।१।११२	२४३	शेषो ध्यसखि १।४।७
२९२८	शमि धातोः संज्ञायाम् ३।२।१४	१६६८	शिशुकन्दयमसभं ४।३।८८	८२९	शेषो बहुव्रीहिः २।२।२३

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
५०१	शोणात्प्राचाम् ४।१।४३	२९५	षढोः कः सि ८।२।४१	१५७२	संसृष्टे ४।४।२२
१४८६	शौनकादिभ्यश्छं ४।३।१०६	१७४७	षण्मासाण्यच्च ५।१।८३	१५५१	संस्कृतम् ४।४।३
२४६९	श्रसोरल्लोपः ६।४।१११	३३३६	षत्वतुकोरसिद्धः ६।१।८६	१२१७	संस्कृतं भक्षाः ४।२।१६
२५४४	श्रात्रलोपः ६।४।२३	११६०	षपूर्वहन्धृतं ६।४।१३५	५२५	संहिताफलं ४।१।७०
२४८३	श्राभ्यस्तयोरातः ६।४।११२	१७५६	षष्टिकाः षष्टिरां ५।१।९०	१४५	संहितायाम् ६।१।७२
२९०३	श्याद्वधास्तुसं ३।१।१४१	१८५८	षष्ठ्यादेशसंख्यादेः ५।२।५८	१०३५	संहितायाम् ६।३।११४
१२६८	श्येनतिलस्य पाते ० ६।३।७१	१९८६	षष्ठाष्टमाभ्यां ज च ५।३।५०	३९३२	सक्थं चाक्रां ० ६।२।१९८
३०२१	श्योऽस्पशं ८।२।४७	७०२	षष्ठी २।२।८	५१७	सख्यशिशीति ० ४।१।६२
३७५९	श्रज्यावमकन्याप ० ६।२।२५	६३५	षष्ठी चानादरे २।३।३८	२५३	सख्युरसंबुद्धौ ७।१।९२
१४०७	श्रविष्ठाफल्युन्यनु ० ४।३।३४	३७९४	षष्ठी प्रत्येनसि ६।२।६०	१७९१	सख्युर्यः ५।१।१२६
१६१८	श्राणामांसौदनाद्विठन् ४।४।६७	३३८९	षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा १।४।९	३९७५	सगतिरपि तिङ् ८।१।६८
१८८५	श्राद्धमनेन भुक्तं ५।२।८५	६०६	षष्ठी शेषे २।३।५०	३४६०	सगर्भसयूथसं ४।४।११४
१३८२	श्राद्धे शरदः ४।३।१२	३८	षष्ठी स्थानेयोगा १।१।४९	१२८७	संकलादिभ्यश्च ४।२।७५
३१९५	श्रिणीभुवोऽनु ० ३।३।२४	६०७	षष्ठी हेतुप्रयोगे २।३।२६	८४३	संख्याव्ययासन्नां २।२।२५
३५७३	श्रीग्रामण्योश्छं ७।१।५६	६०९	षष्ठ्यतसर्थप्र ० २।३।३०	३७६९	संख्या ६।२।३५
२३८६	श्रुवः शृ च ३।१।७४	९७९	षष्ठ्या आक्रोशे ६।३।२१	७३०	संख्यापूर्वो द्विगुः २।१।५२
३५५१	श्रुशृणुपृक्वृ ० ६।४।१०२	३६३८	षष्ठ्याः पतिपुत्रपृ ० ८।३।५३	१६८७	संख्याया अति ० ५।१।२२
७३८	श्रेण्यादयः कृता ० २।१।५९	२०००	षष्ठ्या रूप्य च ५।३।५४	१८४३	संख्याया अवयवे ० ५।२।४२
१८८४	श्रोत्रियंश्छन्दो ० ५।२।८४	२११५	षष्ठ्या व्याश्रये ५।४।४८	२०८५	संख्यायाः क्रिया ० ५।४।१७
२३८१	श्रुकः किति ७।४।११	३३१०	षात्पदान्तात् ८।४।३५	१७५२	संख्यायाः संवत्सर ० ७।३।१५
५७२	श्लोषहुङ्स्थाशं १।४।३४	४९८	षिद्वौरादिभ्यश्च ४।१।४१	१७२४	संख्यायाः संज्ञासंघ ० ५।१।५८
२५१४	श्लिष आलिङ्गने ३।१।४६	३२८१	षिद्धिदादिभ्योङ् ३।३।१०४	३८९७	संख्यायाः स्तनः ६।२।१६३
२४९०	श्लौ ६।१।१०	११३	ष्टुना ष्टुः ८।१।४१	१८४८	संख्याया गुणस्य ० ५।२।४७
१५५९	श्वगणाद्वञ्च ४।४।११	२३२०	ष्ठिवुक्लमुचमां शि ० ७।३।७५	१९८८	संख्याया विधार्थे ० ५।३।४२
२४२१	श्वयतेरः ७।४।१८	३६९	ष्णान्ता षट् १।१।२४	२१३०	संख्यायाश्च गुणा ० ५।४।५९
३६२	श्वयुवमघोनामत ० ६।४।१३३	१००३	ष्यङः संप्रसारणम् ० ६।१।१३	६७३	संख्या वंश्येन २।१।१९
९३७	श्वशुरः श्वश्वा १।२।७१	३४२८	स उत्तमस्य ३।४।९८	२३८	संख्याविशायपूर्व ० ६।३।११०
१३८५	श्वसस्तुट् च ४।३।१५	१८७८	स एषां ग्रामणीः ५।२।७८	४८५	संख्याव्ययादेर्दीप् ४।१।२६
९४८	श्वसोवसीयः श्रे ० ५।४।८०	२३४२	सः स्यार्धधातुके ७।४।४९	८७९	संख्यासुपूर्वस्य ५।४।१४०
१५६०	श्वदेरिजि ७।३।८	२६२८	सः स्विदिस्वदिसं ८।३।६२	२११०	संख्यैकवचनां ५।४।४३
३०३९	श्वीदितो निष्ठायाम् ७।२।१४	२५२२	संयसश्च ३।२।७२	१२०५	संग्रामे प्रयोजन ० ४।२।५६
४७४	षः प्रत्ययस्य १।३।६	११५६	संयोगादिश्च ६।४।१६६	१५०७	संघाङ्कलक्षणे ० ४।३।१२७
१८५१	षट्कतिकतिषय ० ५।२।५१	३०१७	संयोगादेरातो धा ० ८।२।४३	३२१४	संघे चानौत्तरा ० ३।३।४२
३८६९	षट् च काण्डादीनि ६।२।१३५	५४	संयोगान्तस्य लो ० ८।२।२३	३२६४	संघोद्धौ गणप्र ० ३।३।८६
३३८	षट्चतुर्थ्यश्च ७।१।५५	३२	संयोगे गुरु १।४।११	८३९	संज्ञापूरण्योश्च ६।३।३८
३७२५	षट्त्रिचतुर्थ्यो ० ६।१।१७९	१४२५	संवत्सराग्रहा ४।३।५०	७२१	संज्ञायाम् २।१।४४
२६१	षड्भ्यो लुक् ७।१।२२	१७३७	संशयमापन्नः ५।१।७३	३२८६	संज्ञायाम् ३।३।१०९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३३६३	संज्ञायाम् ३।४।४२
५२६	संज्ञायाम् ४।१।७२
१४९७	संज्ञायाम् ४।३।११७
३८९३	संज्ञायाम् ६।२।१५९
१८९९	संज्ञायाम् ८।२।११
१५९६	संज्ञायां लला० ४।४।४६
१३९५	संज्ञायां शरदो० ४।३।२७
१२०६	संज्ञायां श्रवणा० ४।२।५
३२७६	संज्ञायां समजनि० ३।३।९९
१५२७	संज्ञायां कन् ४।३।१४७
२०३०	संज्ञायां कन् ५।३।७५
२०४२	संज्ञायां कन् ५।३।८७
८२३	संज्ञायां कन्थोशीनरेषु २।४।२०
३८२८	संज्ञायां गिरनि० ६।२।९४
२०५२	संज्ञायां च ५।३।९७
३८१०	संज्ञायां च ६।२।७७
१६३४	संज्ञायां जन्या ४।४।८२
१६४१	संज्ञायां धेनुष्या ४।४।८९
३८८०	संज्ञायामनाचिता० ६।१।१४६
३६९२	संज्ञायां भृतृवृजिधा० ३।२।४६
२९६३	संज्ञायां भृतृवृजा० ३।२।४६
१९४३	संज्ञायां मन्माभ्यां ५।२।१३७
३८९९	संज्ञायां मित्राजिन० ६।२।१६५
५६७	संज्ञोऽन्यतरस्यां २।३।२२
३८४७	संज्ञौपम्ययोश्च ६।३।११३
३९३९	सत्यं प्रश्ने ८।१।३२
२१३७	सत्यादशपथे ५।४।६६
२५६३	सत्यापपाशरूपवी० ३।१।२५
२९७५	सत्सूद्विषद्रु० ३।२।६१
२२७१	सदिरप्रतेः ८।३।६६
३७४५	सदृशप्रतिरूपयो० ६।२।११
२३६१	सदेः परस्य लिटि ८।३।११८
१९७०	सद्यः परुत्परार्थेषमः ५।३।२२
३५१९	सध् माधस्थयोश्छ० ६।३।९६
३३१५	सनः क्तिचि लो० ६।४।४५
८२१	स नपुंसकम् २।४।१७
२३०४	सनाद्यन्ता धातवः ३।१।३२

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३१४८	सनाशंसभिक्ष उः ३।२।१६८
३५८३	सनिंससनिवांसम् ७।२।६९
२६१०	सनि ग्रहगुहोश्च ७।२।१२
२६१५	सनि च २।४।४७
२६२३	सनि मीमाधुरभल० ७।४।५४
२६१८	सनीवन्तर्ध्रस्जद० ७।२।४९
३६४५	सनोतेरनः ८।३।१०८
१३८७	संधिवेलाद्युतुनक्षत्रे० ४।३।१६
७४०	सन्महत्परमोत्तमो० २।१।६१
२३९५	सन्यडोः ६।१।९
२३१७	सन्यतः ७।४।७९
२३३१	सन्लिटोर्जेः ७।३।५७
२३१६	सन्वल्लघुनि चङ्परे० ७।४।९३
२१३२	सपत्रनिष्पत्रादति ५।४।६१
१८८७	सपूर्वाच्च ५।२।८७
४१०	सपूर्वायाः प्रथमाया ८।१।२६
३४९१	सप्तनोऽञ्छन्दसि ५।१।६१
६४३	सप्तमीपञ्चम्यौ कार० २।३।७
८९८	सप्तमीविशेषणे बहु २।२।३५
७१७	सप्तमी शौण्डैः २।१।४०
३७६६	सप्तमी सिद्धशुष्कप० ६।२।३२
३७९९	सप्तमीहारिणौ धर्म्ये० ६।२।६५
६३३	सप्तम्यधिकरणे च २।३।३६
३८८६	सप्तम्याः पुण्यम् ६।२।१५२
३३७०	सप्तम्यां चोपपीड० ३।४।४९
३००७	सप्तम्यां जनेर्दः ३।२।९७
१९५७	सप्तम्यास्त्रल् ५।३।१०
३८३२	सभायां नपुंसके ६।२।९८
१६५७	सभाया यः ४।४।१०५
८२६	सभाराजामनुष्यपूर्वा २।४।२३
२७३६	समः क्षणुवः १।३।६५
२७२५	समः प्रतिज्ञाने १।३।५२
४२१	समः समि ६।३।९३
१३५	समः सुटि ८।३।५
१७६८	समयस्यदस्य० ५।१।१०४
२१३१	समयाच्च यापना० ५।४।६०
६४७	समर्थः पदविधिः २।१।१

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१०७२	समर्थानां प्रथ० ४।१।८२
२६८९	समवप्रविध्य स्थः १।३।२२
१५९३	समवायान् समवैति ४।४।४३
२५५१	समवाये च ६।१।१३८
२७२७	समस्तृतीयायुक्तात् १।३।५४
१८१३	समांसमां विजायते ५।२।१२
३३२०	समानकर्तृकयोः पूर्व० ३।४।२१
३१७६	समानकर्तृकेषु तुमुन् ३।३।१५८
१६५८	समानतीर्थेवासी ४।४।१०७
१०१२	समानस्य छन्द० ६।३।८४
१६५९	समानोदरे श० ४।४।१०८
१७७५	समापनात्सपूर्व० ५।१।११२
१७४९	समायाः खः ५।१।८५
३३७१	समासतौ ३।४।५०
३७३४	समासस्य ६।१।२३३
२०६१	समासाच्च तद्धि० ५।३।१०६
६७६	समासान्ताः ५।४।६८
१०१९	समासेऽङ्गुलेः सङ्गः ८।३।८०
३३३२	समासेऽनञपूर्वे० ७।१।३७
७	समाहारः स्वरितः १।२।३१
२९२१	समि ख्यः ३।२।७
३२०८	समि मुष्टौ ३।३।३६
३१९४	समि युद्गुदुवः ३।३।२३
२८२६	समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ३।४।३
२८२८	समुच्चये सामान्यव० ३।४।५
२७४२	समुदाङ्भ्यो० १।३।७५
३२४६	समुदोरजः पशुषु ३।३।६९
३४६४	समुद्राभ्राद्धः ४।४।११८
३३५७	समूलाकृतजीवेषु० ३।४।३६
२०९०	समूहवच्च बहुषु ५।४।२२
२६९९	समो गम्यच्छिभ्याम् १।३।२९
३४९४	संपरिपूर्वात्ख च ५।१।९२
२५५०	संपरिभ्यां करोतौ ६।१।१३७
१७६३	संपादिनि ५।१।९९
३१२२	संपृचानुरुधा० ३।२।१४२
२७१९	संप्रतिभ्यामना० १।३।४३
१००४	संप्रसारणस्य ६।३।१३९

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
३३०	संप्रसारणाच्च ६।१।१०८
१८३०	संप्रोदश्च कटच् ५।२।२९
२८८	संबुद्धौ च ७।३।१०६
१०५	संबुद्धौ शाक० १।१।१६
५३३	संबोधने च २।३।४७
३१०२	संबोधने च ३।२।१२५
१७१८	संभवत्यवहर० ५।१।५२
२८११	संभावनेऽलमिति० ३।३।१५४
१४१५	संभूते ४।३।४१
२७०९	संमाननोत्संजना० १।३।३६
१८८	सरूपाणामेकशे० १।२।६४
२३८२	सर्तिशास्त्यर्तिभ्य० ३।१।५६
२९५९	सर्वकूलाभ्रकरीषेषु० ३।२।४२
३८२७	सर्व गुणकात्स्न्य ६।२।९३
१८०६	सर्वचर्मणः कृतः० ५।२।५
४७६	सर्वत्र लोहितादि० ४।१।१८
८७	सर्वत्र विभाषा गोः ६।१।१२२
५७	सर्वत्र शाकल्यस्य ८।४।५१
१३९०	सर्वत्राण च त० ४।३।२२
३४८८	सर्वदेवात्तातिल् ४।४।१४२
२५०	सर्वनामस्थाने चासं० ६।४।८
२१५	सर्वनामः स्मै ७।१।१४
२९१	सर्वनामः स्याड्० ७।३।११४
६०८	सर्वनामस्तृतीया० २।३।२७
१६७२	सर्वपुरुषाभ्यां ण्ड० ५।१।१०
१७०७	सर्वभूमिपृथि० ५।१।४१
२१३९	सर्वस्य द्वे ८।१।१
३६८५	सर्वस्य सुपि ६।१।१९१
१९५२	सर्वस्य सोऽन्यत० ५।३।६
२१३	सर्वादीनि सर्वना० १।१।२७
१९६४	सर्वैकान्यकिंयत्तदः० ५।३।१५
२२५२	सवाभ्यां वामौ ३।४।९१
३७५७	सविधसनीडसमर्था० ६।२।२३
१६२	ससजुषो रुः ८।३।६६
३५९७	ससुवेति निगमे ७।४।७४
२१०८	सस्त्री प्रशंसायाम् ५।४।४०
१८६८	सस्येन परिजातः ५।२।६८

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
५१३	सहनज्विद्यमानपू० ४।१।५७
४६४	सहयुक्तेऽप्रधाने २।३।१९
६४९	सह सुपा २।१।४
१००९	सहस्य सः संज्ञायाम् ६।३।७८
४२२	सहस्य सध्निः ६।३।९५
३४८१	सहस्रेण संमितौ घः ४।४।१३५
२३५७	सहिवहोरोदवर्णस्य ६।३।११२
३६४६	सहेः पृतनर्ताभ्यां च ८।३।१०९
३३५	सहेः साडः सः ८।३।५६
३००६	सहे च ३।२।९६
७७५	साक्षात्प्रभृतीनि च १।४।७४
१८९१	साक्षाद्रष्टरि संज्ञायाम् ५।२।९१
३५३१	साढ्यै साढ्वा साढ्वे० ६।३।११३
२१२३	सात्पदाद्योः ८।३।१११
५६०	साधकतमं करणम् १।४।४२
६४०	साधुनिपुणाभ्याम० २।३।४३
३१७	सान्तमहतः संयोगस्य ६।४।१०
१८२३	साप्तपदीनं सख्यम् ५।२।२२
४००	साम आकम् ७।१।३३
४११	सामन्त्रितम् २।३।४८
६८९	सामि २।१।२७
१३९१	सायं चिरं प्राह्मे प्रगे० ४।३।२३
२२३४	सार्वाधातुकमपित् १।२।४
२१६८	सार्वाधातुकार्धधातु० ७।३।८४
२७५६	सार्वाधातुके यक् ३।१।६७
११९१	साल्वावयवप्रत्यग्र० ४।१।१७३
११८७	साल्वेयगान्धारि० ४।१।१६९
३३२	सावनडुहः ७।१।८२
३७१४	सावेकाचस्तृतीया० ६।१।१६८
१२२३	सास्मिन्यौर्णमासीति ४।२।२१
१२२६	सास्य देवता ४।२।२४
१९११	सिकताशर्कराभ्यां च ५।२।१०४
२३९२	सिचि च परस्मैपदेषु ७।२।४०
२२९७	सिचि वृद्धिः परस्मै० ७।२।१
२६४०	सिचो यङि ८।३।११२
२२२६	सिजभ्यस्तविदि० ३।४।१०९
१२५२	सिति च १।४।१६

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
७१८	सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च २।१।४१
१९०४	सिध्मादिभ्यश्च ५।२।९७
२६०२	सिध्यतेरपारलौकिके ६।१।४९
१४९३	सिन्धुतक्षशिलादि० ४।३।९३
१४०५	सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ४।३।३२
२४८५	सिपि धातो र्वा ८।२।७४
३४२५	सिब्बहुलं लेटि ३।१।३४
२३५९	सिवादीनां वाङ्म्य० ८।३।७१
५५५	सुः पूजायाम् १।४।९४
२९९९	सुकर्मपापमन्त्रपुण्ये० ३।२।८९
३७४९	सुखप्रिययोर्हिते ६।२।१५
२१३४	सुखप्रियादानलोम्ये ५।४।६३
२६७४	सुखादिभ्यः कर्तृवे० ३।१।१८
१९३७	सुखादिभ्यश्च ५।२।१३१
३६४४	सुजः ८।३।१०७
३११२	सुजो यज्ञसंयोगे ३।२।१३२
२५५३	सुट् कात्पूर्वः ६।१।१३५
२२१०	सुट् तिथोः ३।४।१०७
२२९	सुडनपुंसकस्य १।१।४३
१०९७	सुधातुरकड् च ४।१।९७
३५९४	सुधितवसुधितनेम० ७।४।४५
२५२४	सुनोतेः स्यसनोः ८।३।११७
२६५७	सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८
१८५	सुपः १।४।१०३
३५६१	सुपां सुलुक्पूर्वसव० ७।१।३९
२०२	सुपि च ७।३।१०२
२९१६	सुपि स्थः ३।२।४
६५०	सुपो धातुप्रातिप० २।४।७१
२९	सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१४
६६३	सुप्प्रतिना मात्रार्थे २।१।९
२९८८	सुप्यजातौ णिनिस्ता० ३।२।७८
८६०	सुप्रातसुश्वसुदिव० ५।४।१२०
३६५६	सुबामन्त्रिते पराङ्गव० २।१।२
३०९१	सुयजोर्द्वनिप् ३।२।१०३
१२८९	सुवास्त्वादिभ्योऽण् ४।२।७७
२४७७	सुविनिर्दुर्भ्यः सुपि० ८।३।८८
१०२२	सुषामादिषु च ८।३।९८

सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्	सूत्राङ्कः	सूत्रम्
१३९८	सुसर्वाधज्जनपदस्य ७।३।१२	३६४२	स्तुतस्तोमयोश्छ० ८।३।१०५	३१३८	स्पृहृगृहिपतिद० ३।२।१५८
८८८	सुहृदुर्हदौ मित्रा० ५।४।१५०	२३८५	स्तुसुधूञ्यः परस्मै० ७।२।७२	५७४	स्पृहेरीप्सितः १।४।२६
३०८३	सूत्रं प्रतिष्ठातम् ८।३।९०	१७९०	स्तेनाद्यत्रलोपश्च ५।१।१२५	३०४४	स्फायः स्फी निष्ठायाम् ६।१।२२
१२७७	सूत्राच्च कोपधात् ४।२।६५	१११	स्तोः श्रुना श्रुः ८।४।४०	२५९७	स्फायो वः ७।३।४१
३१३३	सूददीपदीक्षश्च ३।२।१५३	७०१	स्तोकान्तिकदूरार्थ० २।१।३९	३९२१	स्फिगपूतवीणाञ्जो० ६।२।१८७
३८७९	सूपमानात्कः ६।२।१४५	२६२७	स्तौतिण्योरेव षण्य० ८।३।६१	३१८५	स्फुरतिस्फुलत्योर्ध्वि ६।१।४७
४९९	सूर्यतिष्यागस्त्यम० ६।४।१४९	३०३३	स्त्यः प्रपूर्वस्य ६।१।२३	२५३७	स्फुरतिस्फुलत्योर्नि० ८।३।७६
३१४०	सृघस्यदः क्मरच् ३।२।१६०	३०१	स्त्रियाः ६।४।७९	२६२६	स्मिपूङ्गञ्जशां० ७।२।७४
२४०५	सृजिदृशोर्झल्यमकिति ६।१।५८	८३१	स्त्रियाः पुंवद्भाषित० ६।३।३४	२८१९	स्मे लोट ३।३।१६५
३४४४	सृपितृदोः कसुन् ३।४।१७	४५३	स्त्रियाम् ४।१।३	२२२०	स्मोत्तरे लङ् च ३।३।१७६
३१८३	सृ स्थिरे ३।३।१७	८८१	स्त्रियां संज्ञायाम् ५।४।१४३	२१८६	स्यतासी लुलुटीः ३।१।३३
२२७८	सेधतेर्गतौ ८।३।११३	३२७२	स्त्रियां क्तिन् ३।३।९४	३१८६	स्यदो जवे ६।४।२८
११७६	सेनान्तलक्षणवा० ४।१।१५२	३०५	स्त्रियां च ७।१।९६	३५२६	स्यश्छन्दसि बहुलम् ६।१।१३३
१५९५	सेनाया वा ४।४।४५	११९५	स्त्रियामवन्तिकु० ४।१।१७६	२७५७	स्यसिच् सीयुट्तासि० ६।४।६२
२२०१	सेर्हपिच्च ३।४।८७	९३२	स्त्रीपुंवच्च १।२।६६	२५७८	स्त्रवतिशृणोतिद्रवति० ७।४।८१
२५०६	सेऽसिचि कृतचृतद्ध० ७।२।५७	१०७९	स्त्रीपुंसाभ्या नञ्सन् ४।१।८७	३४५९	स्रोतसो विभाषा० ४।४।११३
१७७	सोऽचि लोप चे० ६।१।१३४	११२३	स्त्रीभ्यो ढक् ४।१।१२०	२५	स्वं रूपं शब्दस्यांश० १।१।६८
२३५८	सोढः ८।३।११५	१२८८	स्त्रीषु सौवीरिसाल्व० ४।२।७६	३७५१	स्वं स्वामिनि ६।२।१७
१६६०	सोदराद्यः ४।४।१०९	२९८७	स्थः क च ३।२।७७	५६९	स्वतन्त्रः कर्ता १।४।५४
१५२	सोऽपदादौ ८।३।३८	१२१६	स्थण्डिलाच्छयि० ४।२।१५	३६३३	स्वतवान्पायौ ८।३।११
३४८३	सोममर्हति यः ४।४।१३७	३२७३	स्थागापापचो भावे ३।३।२५	३२३९	स्वनहसोर्वा ३।३।६२
१२३२	सोमाङ्ग्यण् ४।२।३०	२३८९	स्थाघ्नोरिच्च १।२।२७	३६७२	स्वपादिर्हिसामच्य० ६।१।१८८
३०००	सोमे सुनः ३।२।९०	२२७७	स्थादिष्वभ्यासेन० ८।३।६४	३१५२	स्वपितृषोर्निजङ् ३।२।१७२
३५८१	सोमे ह्वरितः ७।२।३३	१४१०	स्थानान्तगोशाल० ४।३।३५	२६४५	स्वपिस्थामिव्येजां० ६।१।१९
३९२९	सोरवक्षेपणे ६।२।१९५	२०८२	स्थानान्ताद्दिभाषा० ५।४।१०	३२६९	स्वपो नन् ३।३।९१
३८५१	सोर्मनसी अलो० ६।२।११७	४९	स्थानिवदादेशोऽन० १।१।५६	२१९	स्वमज्ञातिधनाख्या० १।१।३५
१४६९	सोऽस्य निवासः ४।३।८९	३९	स्थानेऽन्तरतमः १।१।५०	३१९	स्वमोर्नपुंसकात् ७।१।२३
१७२२	सोऽस्यां शवस्नभृतयः ५।१।५६	१७३४	स्थालीबिलात् ५।१।७०	६८७	स्वयं केन २।१।२५
१२६४	सोऽस्यादिरिति छं० ४।२।५५	२०१५	स्थूलदूरयुवहस्व० ६।४।१५६	२२७९	स्वरतिसूतिसूयति ७।२।४४
३५७	सौ च ६।४।१३	२०७५	स्थूलादिभ्यः प्रकार० ५।४।३	४४७	स्वरदिनिपातमव्ययम् १।१।३७
३८०	स्कोः संयोगाद्योर० ८।२।२९	९७८	स्थे च भाषायाम् ६।३।२०	२१५८	स्वरितजितः कर्त्रे० १।३।७२
२५५५	स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भु० ३।१।८२	३१५५	स्थेशभासपिसक० ३।२।१७५	३६२२	स्वरितमाध्रेडिते० ८।२।१०२
२९२७	स्तम्बकर्णयोरमिजपोः ३।२।१३	३५७१	स्तात्स्यादयश्च ७।१।४९	३६६८	स्वरितात्संहितायाम् १।२।३९
२९३८	स्तम्बशकृतोर्नि ३।२।२४	२३२३	स्तुक्रमोरनात्मनेपद० ७।२।३६	४६	स्वरितेनाधिकारः १।३।११
३२६०	स्तम्बे क च ३।३।८३	३३५९	स्नेहने पिषः ३।४।३८	३६५९	स्वरितो वानुदात्ते० ८।२।६
२५८०	स्तम्भुसिवुसहां० ८।३।११६	२७०४	स्पर्धायामाङ् १।३।३१	११६६	स्वसुश्छः ४।१।१४३
२२७२	स्तम्भेः ८।३।६७	४३२	स्पृशोऽनुदके क्विन् ३।२।५८	१५४९	स्वागतादीनां च ७।३।७

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

८४१	स्वाङ्गाच्चेतः ६।३।४०
५१०	स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद० ४।१।५४
३३८३	स्वाङ्गे तस्मत्यये कृभ्वोः ३।४।६१
३३७६	स्वाङ्गेऽध्रुवे ३।४।५४
१८६६	स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ५।२।६६
२५२३	स्वादिभ्यः णुः ३।१।७३
२३०	स्वादिष्वसर्वनाम० १।४।१७
३३४७	स्वादुमि णमुल् ३।४।२६
२५८४	स्वापेश्चङि ६।१।१८
१९३२	स्वामित्रैश्चयै ५।२।१२६
६३६	स्वामीश्वराधिपति० २।३।३९
३३६१	स्वे पुषः ३।४।४०
१८३	स्वौजसमौट्छष्टाभ्यां० ४।१।२
२२५०	ह एति ७।४।५२
३२५३	हनश्च वधः ३।३।७६
२६९७	हनः सिच् १।२।१४
२८५६	हनस्त च ३।१।१०८
२५७४	हनस्तोऽचिण्णलोः ७।३।३२
२४३३	हनो वध लिङि २।४।४२
३९६१	हन्त च ८।१।५४
३५९	हन्तेरत्पूर्वस्य ८।४।२२
२४३१	हन्तेर्जः ६।४।३६
२९२३	हरतेनुधमनेऽच् ३।२।९
२९३९	हरतेर्दृतिनाथयोः ३।२।२५
१५६५	हरत्युसङ्गादिभ्यः ४।४।१५
११०२	हरितादिभ्योऽजः ४।१।१००
१५४६	हरीतक्यादिभ्यश्च ४।३।१६७
२५५९	हलः ६।४।२
२५५७	हलः श्रः शानज्झौ ३।१।८३
९६६	हलन्तात्सप्तम्याः सं० ६।३।९
२६१३	हलन्ताच् च १।२।१०
१	हलन्त्यम् १।३।३
३३००	हलश्च ३।३।१२१
२८३७	हलश्चेजुपधात् ८।४।३१
१५०४	हलसीराड्क् ४।३।१२४
१६३३	हलसीराड्क् ४।४।८१
३१६४	हलसूकरयोः पुवः ३।२।१८३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

४७२	हलस्तद्धितस्य ६।४।१५०
२१७९	हलादिः शेषः ७।४।६०
३५४	हलि च ८।२।७७
३४७	हलि लोपः ७।२।११३
१७१	हलि सर्वेषाम् ८।३।२२
३०	हलोऽनन्तराः संयोगः १।१।७
६०	हलोयमां यमि लोपः ८।४।६४
२५२	हल्ङ्याभ्यो दीर्घां ६।१।६८
३४१२	हल्येऽनन्तःपादम् ३।२।६६
२७७६	हशश्चतर्लङ् च ३।२।११६
१६६	हशि च ६।१।११४
२९१०	हश्च ग्रीहिकालयोः ३।१।१४८
१९३९	हस्ताज्जातौ ५।२।१३३
३२१२	हस्तादाने चेरस्तेये ३।३।४०
३३६०	हस्ते वर्तिग्रहोः ३।४।३९
१७९५	हायनान्त्युवा० ५।१।१३०
२५४०	हिंसायां प्रतेश्च ६।१।१४१
३३६९	हिंसार्थानां च समा० ३।४।४८
३९४१	हि च ८।१।३४
१६१६	हितं भक्षाः ४।४।६५
२५३०	हिनु मीना ८।४।१५
९९२	हिमकाषिहतिषु च ६।३।५४
३७८९	हिरण्यपरिमाणं धने ६।२।५५
५५०	हीने १।४।८६
२११४	हीयमानपापयोगाच्च ५।४।४७
२४२५	हुङ्गल्भ्यो हेर्धिः ६।४।१०१
२३८७	हुंश्रुवोः सार्वधातुके ६।४।८७
५४१	हकोरन्यतरस्याम् १।४।५३
१६४७	हृदयस्य प्रियः ४।४।९५
९८८	हृदयस्य हल्लेखयद० ६।३।५०
११३३	हृद्गसिन्ध्वते पूर्व० ७।३।१९
३०७०	हृषोलोमसु ७।२।२९
३९६७	हेति क्षियायाम् ८।१।६०
२५७६	हेतुमति च ३।१।२६
१४६१	हेतुमनुष्येभ्योऽन्य० ४।३।८१
२८१३	हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३।३।१५६
५६८	हेतौ २।३।२३

सूत्राङ्कः

सूत्रम्

३३९९	हेमन्तशिशिराव० २।४।२८
३४५२	हेमन्ताच्च ४।३।२१
१२७	हे मपरे वा ८।३।२६
२५३१	हेरचङि ७।३।५६
१८२४	हैयंगवीनं संज्ञायाम् ५।२।२३
९६	हैहेप्रयोगे हैहयोः ८।२।८५
३२४	हो ङः ८।२।३१
१८००	होत्राभ्यश्छः ५।१।१३५
३५८	होहन्तेऽग्नित्रेषु ७।३।५४
२२९९	ह्ययन्तक्षणश्चसजा० ७।२।५
२१८०	ह्रस्वः ७।४।५९
३१	ह्रस्वं लघु १।४।१०
२०८	ह्रस्वनद्यापो नुट् ७।१।५४
३७२२	ह्रस्वनुङ्भ्यां मतुप् ६।१।१७६
२४२	ह्रस्वस्य गुणः ७।३।१०८
२८५८	ह्रस्वस्य पितिः कृति० ६।१।७१
३५२७	ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तर० ६।१।५१
१३२५	ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ८।३।१०१
२३६९	ह्रस्वादङ्गात् ८।२।२७
३९०८	ह्रस्वान्तेऽन्यात्पूर्व ६।२।१७४
२०४१	ह्रस्वे ५।३।८६
३१८	ह्रस्वो नपुंसके० १।२।४७
३५७९	हुहरेश्छन्दसि ७।२।३१
३०७३	हादो निष्ठायाम् ६।४।९५
२५८६	ह्रः संप्रसारणम् ६।१।३२
३२४९	ह्रः संप्रसारणं च न्य० ३।३।७२
२९१४	हावामश्च ३।२।२

सपरिशिष्टवार्तिकसूची (२)

+ एतच्चिह्नाङ्कितम् परिशिष्टीयं वार्तिकम् ।

अकचप्रकरणे ५.३.७२
 अकचस्वरौ १.१.२९
 अकर्मकधातुभिः १.४.५१
 अकारान्तोत्तरपदो २.४.३०
 अक्षर समूहे छन्दस ४.४.१४०
 अक्षादूहिन्याम् ६.१.८९
 अगोवत्सहलेषु ६.३.८३
 अग्रिकलिभ्याम् ४.२.८
 अग्रिपदादिभ्य ५.१.९७
 अग्रीधः शरणे ४.३.१२०
 अग्रग्रामाभ्याम् ८.४.३९
 अग्रादिपश्चात् ४.३.२३
 + अग्रामा २.४.७.
 + अगङ्गनावकण्ठ ४.१.५४
 अङ्गक्षत्रधर्म ४.२.६०
 अचिशीर्ष इति ६.१.६१
 अजपथशङ्कु ५.१.७७
 अजसादिष्विति ४.१.३१
 + अजिनान्ताच्च ४.३.६०
 अज्वरिसंताप्योः २.३.५४
 अञ्चतेश्चोप ४.१.६
 अञ्जस उपसंख्या ६.३.३
 + अटाट्टाशीका ३.१.१७
 अण्प्रकरणे ५.४.३६
 अतद्धित इति ८.४.३८
 अतेर्धातुलोपः ६.२.१९१
 अत्यन्तापह्नवे ३.२.११५
 अत्याद्यः क्रा २.२.१८
 अत्र व्यवहिते ८.१.६६
 + अत्रापि सन्नर्थ ३.१.६
 अदस औत्व ७.३.१०७
 अदेः प्रतिषेधः १.३.८७
 + अद्यतन्या वेति ६.४.११४
 अद्वन्द्वतत्पुरुष १.२.७२

+ अद्विप्रभृति ६.४.९६
 अधर्माच्चेति ४.४.४१
 अधिकरणाच्चेति ३.१.१०
 अध्यात्मादेष्टञ् ४.३.६०
 + अध्वन्यर्थ २.३.१२
 अध्वपरिमाणे च ६.१.७९
 अनजादौ च ५.३.८३
 + अनद्यतन ३.३.३
 अनव्ययस्येति ८.३.३८
 + अनसन्तात् ५.४.१०३
 अनाचमिकर्म ७.३.५४
 अनाम्नवति ८.४.४२
 अनिदितां न लोपे ६.४.२४
 अनिनस्मिन्यहण १.१.७२
 अनुपसर्ग इति ६.२.४७
 + अनुवाकादयः २.४.२९
 अनेक प्राप्तावेकत्र २.२.३
 अनेकशफेष्विति १.२.७३
 अनेकान्त ग्रहणे ४.३.१४१
 अनो न लोपश्च २.४.३०
 अन्तर्वत्पति ४.१.३२
 अन्तः शब्दस्याङ् १.४.६५
 अन्ताच्च ४.३.२३
 अन्ताच्च ६.३.११
 + अन्तिकस्य तसि ६.४.१४९
 अन्तोदात्तादबहु ४.१.५२
 अन्त्यात्पूर्वो मस्ज १.१.४७
 अन्त्यात्पूर्वोवानुम् ७.१.७२
 अन्यत्रापि दृश्यते ३.२.४८
 अन्येभ्योऽपि दृश्यते ३.२.१०१
 अन्येभ्योऽपि दृश्यते ५.२.१०९
 अन्येभ्योऽपि दृश्यते ५.२.११२
 अन्येभ्योऽपि दृश्यते ५.२.१२०
 अन्वादेशे नपुंसके २.४.३४

अपरस्तार्थे पञ्चभावः ५.३.३२
 अपादाने स्त्रियामुप ३.३.२१
 + अपि प्रधानपूरणी ५.४.११६
 अपील्लादीनामिति ६.३.१२१
 अपुत्रादीनामिति ७.४.३५
 अपुरीति वक्तव्यम् १.१.३६
 अपो योनियन्मतुषु ६.३.१८
 अप्रत्यादिभिरिति २.३.४३
 अप्रत्ययोऽपि ५.४.११८
 अप्राणिजातेः ४.१.६६
 + अब्राह्मण गोत्र २.४.५८
 अमितः परितः समया २.३.२
 अमिवादिदृशोः १.४.५३
 अमृततद्भाव ५.४.५०
 अभ्यर्हितं च २.२.३४
 + अभ्यास जश्त्व ८.२.६
 अभ्रुकुंसादीनामिति ६.३.६१
 अमानिनीति वक्तव्यम् ६.३.४०
 + अमनुष्यादिषु ६.३.१२२
 अर्णसो लोपश्च ५.२.१०९
 अर्तिश्रुदृशिभ्यः १.३.२९
 अर्थवद्ग्रहणे १.१.६८
 अर्थवेदयोरप्यापु ३.१.२५
 अर्थान्नजः ५.४.१५२
 अर्थेन नित्यसमासो २.१.३६
 अर्धाच्चेति ५.१.२५
 + 'अर्धे च ५.३.३२
 + अर्धोत्तर पदस्य ५.३.३२
 अर्यक्षत्रियाभ्याम् ४.१.४९
 + अर्हतो नुम् ५.१.१२४
 + अलङ्कृजो ३.२.१३६
 अलमितिपर्याप्ति २.३.१६
 अलाबूतिलोमाभङ्गां ५.२.२९
 अवरस्योपसं २.१.३१

अवर्णान्ताद् वा ६.३.९७
 अवयस मरुद्भ्याम् ५.४.३६
 अवयाः श्वेतवाः ३.२.७१
 + अवश्यमः क्रत्ये ६.१.१४४
 अवादयः कृष्टाद्यर्थे २.२.१८
 अवान्तरदीक्षा ५.१.९४
 अवारयाराद् ४.२.९३
 अवेर्दुग्धे ४.२.३६
 अवोधसोलोपश्च ४.३.८
 + अव्ययं प्रवृद्धादिभ्यः २.२.१८
 अव्यय प्रतिषेधे २.३.६९
 + अव्ययानां च २.२.२४
 अव्ययानां न २.१.२
 अव्ययानां भमात्रे ६.४.१४४
 + अव्यये नञ् ६.२.२
 अव्ययीभावस्य त्वि २.१.२
 अशिष्ट व्यवहारे दाणः १.३.५५
 अश्मनो विकारे ६.४.१४४
 अश्ववृषथोर्मैथुनेच्छा ७.१.५१
 + अष्टचत्वारिंशतो ५.१.९४
 अष्टका पितृदैवत्ये ७.३.४५
 अष्टनः कपाले ६.३.४६
 असनयोश्च २.४.५४
 असितपलितयोर्न ४.१.३९
 + असिद्ध बहिरङ्ग ६.४.१३२
 अस्तोश्चेति ६.३.७०
 + असूद्रस्य ८.३.८३
 + असूयादिषु ८.२.१०३
 अस्मिन्नर्थेऽण् ४.२.८
 अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम् ५.४.८७
 अहरादीनां पत्यादिषु ८.२.६६
 अर्हाणां कर्तृत्वे २.३.३६
 अह्नः खः क्रतौ ४.२.४३
 अह्नो नलोपश्च ८.२.७
 आकालाद्वंश्च ५.१.११४
 आख्यानाख्या ४.२.६०
 आख्यानात्कृतः ३.१.२६
 आगमेः क्षमा १.३.२१

आग्रीध्रसाधारणा ५.४.३६
 आङ्पूर्वाच्च ६.४.३४
 आङ्पूर्वस्यान्धू ६.१.२८
 आङ्पूर्वदङ्गेः ३.१.१०९
 आङ् मर्यादाभि ६.४.३४
 आङ् याजयाराम् ७.१.३९
 + आङ् लोपश्च ३.१.२६
 आङ् प्रतिज्ञायाम् १.३.२२
 आङ् चम इति ७.३.७५
 आङ् नु प्रच्छयोः १.३.२१
 + आङ्गीषदर्थे २.२.१८
 आचारेऽवगल्भ ३.१.११
 आचार्यादणत्वं च ४.१.४९
 आचार्यादणत्वं च ५.१.९
 + आत्मनश्च पूरणे ६.३.५
 + आथर्वाणिकस्येक ४.३.१३१
 आदिकर्मणि निष्ठा ३.२.१०२
 आदि खाद्योर्न १.४.५२
 आदेशेति ४.३.८
 आद्यादिभ्यः ५.४.४४
 आद्युदात्त प्रकरणे ६.२.९१
 आनुपूर्व्ये द्वे ८.१.१२
 आपत्यहणम् ४.१.१६
 आबन्तो वा २.४.३०
 + आभीक्ष्ण्ये द्वे ८.१.१२
 + आमनडुहः स्त्रियाम् ७.१.९८
 आमन्त्रिते छन्दसि ८.२.१०७
 आमयस्योप ५.२.१२२
 आमुष्यायणा ६.३.२१
 आलस्य सुखा ३.१.५
 + आलुकि शीङो ३.२.१५८
 आशिषि नाथ इति १.३.२१
 आशिषि बुनश्च ७.३.४५
 आसुरेरूप ४.१.१७
 + आस्थित प्रति २.३.१२
 + आस्य विहरण १.३.२०
 + आस्यं व्यादाय ३.४.२१
 आहौ प्रभृतादिभ्यः ४.४.१

आहत प्रकरणे ५.१.७७
 इकन्पदोत्तरपदात् ४.२.६०
 इकारादाविति ७.२.८
 इके चरतानुप ६.३.५३
 इकास्तिषौ ३.३.१०८
 + इच्छा सन्नन्तात् ३.१.७
 + इज उपसंख्या ४.१.६५
 इज्वपादिभ्यः ३.३.१०८
 इण्वदिक इति २.४.४५
 इत ऊर्ध्वं तु ५.१.२०
 इत्येनभ्यासस्य ६.३.७०
 + इत्वोत्वाभ्याम् ७.१.१०२
 इदम इश् सम् ५.३.२२
 इदमोश् चश्च ५.३.२२
 इयडुवड्भाविनाम् ६.३.६१
 + इयडुभ्याम् ६.४.१४८
 इयाडिसर्व ७.१.३९
 इर इत्संज्ञा १.३.७
 इरिकादिभ्यः प्रति ८.४.६
 इवेन विभक्त्य २.२.१८
 इवेन समासो २.१.४
 इषेरनिच्छार्थस्य ३.३.१०७
 + इषेस्तकारे ७.२.४९
 ईकञ् छन्दसि ४.१.८५
 ईक्षिक्षाभिभ्याम् ३.२.१
 ईद्राथिनः ८.२.१७
 ईयसो बहुव्रीहेः १.२.४८
 ईयसो बहुव्रीहेः ५.४.१५६
 ईषदगुणवचन २.२.७
 + ईषा अक्षादिषु ६.१.१२७
 ईर्ष्यतेस्तृतीय ६.१.३
 ईहायामेव १.३.२४
 उगिद्वर्णग्रहण १.१.७२
 + उच्चयस्य ३.३.४०
 + उतश्च प्रत्ययात् ६.४.१०६
 उत्तरपदत्वे चापदादि १.१.६३
 उत्तरपदलोपे च ७.३.४५
 उत्तरपदस्य चेति ६.३.५७

उत्तरपदेन परिमाणि २.१.५१
उत्तानादिषु कर्तृषु ३.२.१५
उत्पातेन ज्ञापिते च २.३.१३
+ उत्पत्तिभ्याम् ३.२.७८
उत्फुल्लसंफुल्ल ८.२.५५
+ उदात्त यणि ६.१.१७४
+ उद्ग्राभ निग्राभ ३.३.३५
+ उदः पूर्वत्वे ८.४.६१
+ उपधा ह्रस्वत्वे ७.४.१
+ उपपदविधौ ३.२.४३
उपमानात् पक्षाच्च ४.१.५५
उपवस्त्रादिभ्यः ५.१.१०५
उपसर्गादस्थत्यू १.३.२९
उपादेव पूजा संगति १.३.२५
+ उभयतश्च २.४.७
उभय संज्ञान्यपीति १.४.२०
उभसर्वतसोः २.३.२
उरसो लोपश्च ३.२.४८
उवर्णाच्च इलस्य ५.३.८३
उष्णभद्रयोः करणे ६.३.७०
ऊङ् च गमादीनाम् ६.४.४०
ऊठ्युपधाग्रहणम् ६.१.१७१
ऊधसोऽनङि ५.४.१३१
+ ऊर्णोतिश्च ३.१.३६
+ ऊर्ध्व दमात् ४.२.६०
ऋचि त्रेरुत्तर ६.१.३७
+ ऋणदशाभ्याम् ६.१.८९
ऋति सवर्णे ६.१.१०१
ऋतु नक्षत्राणाम् २.२.३४
ऋते च तृतीया ६.१.८९
ऋतोवृद्धिभद्वि १.१.७२
ऋदुपधेभ्यो लिटः १.२.५
ऋत्ववर्णयोर्मिथः १.१.९०
ऋत्वादिभ्यः ८.२.४४
ऋवर्णादिपि ५.३.८३
ऋवर्णान्नस्य ८.४.१
ऋषिप्रतिषेधोऽत्र ६.२.१६५
लृति सवर्णे ६.१.१०१

एकतरात्प्रति ७.१.२६
एकविभक्ताव १.२.४४
एकाक्षरपूर्वपद ५.३.८४
एकाचो न ६.१.९८
+ एकादेश स्वरो ८.२.६
एतदोऽपि वाच्यः ५.३.२४
एमन्नादिषु ६.१.९४
एवे चानियोगे ६.१.९४
ओकारसकार ५.३.७२
+ ओजसोऽप्सरसो ३.१.११
ओतो णिदिति ७.१.९०
ओत्वोष्ठयोः समासे ६.१.९४
औङः श्यां प्रति ६.४.१४८
कच्छ्वा ह्रस्वत्वं च ५.२.१०७
+ कक्ष्यायाः संज्ञा ६.१.३७
कण्ड्वादेस्तृतीयस्य ६.१.३
कपिलकादीनाम् ८.२.१८
क प्रकरणे मूलविभुजदि ३.२.५
क प्रत्यय चिकादेशौ ५.२.३३
कबरमणि विषशर ४.१.५५
+ कमलादिभ्यः ४.२.५१
कमेरनिषेधः २.३.६९
कमेऽश्लेश्चङ् ३.१.४८
कम्बोजादिभ्यः ४.२.१७३
कर्तृकरणाद् धात्वर्थे ३.१.२६
कर्तृकरणयोश्च्यवर्थ ३.३.१२७
कर्मणः करणसंज्ञा १.४.३२
कर्मणि समि च ३.२.४९
कर्मधारयादेव ५.१.९
कर्मप्रवचनीयानाम् २.२.१८
+ कर्मव्यतिहारे ८.१.१२
कविधौ सर्वत्र ३.२.३
+ काकिण्याश्चोप ५.१.३३
काण्यादीनां वेति ७.४.३
कामप्रवेदन इति ३.३.१५७
काम्ये रोरेवेति ८.३.३८
कारिका शब्दस्य १.४.६०
कार्षापणाद्विठन् ५.१.२५

कास्यनेकाज्यग्रहणम् ३.१.३५
+ किकिनावुत्सर्ग ३.२.१७१
किंयत्तद् बहुषु ३.२.२१
किरतेर्हर्षजीविका १.३.२१
किरतेर्हर्षजीविका ६.१.१४२
कुक्कुट्यादीनाम् ६.३.४२
कुग्जनस्य परस्य ४.३.६०
कुरुवृज्योः ६.२.४२
कुत्सित ग्रहणम् ३.२.९३
कुत्सित इति ५.२.१२५
कुलिज शब्द ७.३.१७
+ कुः पापार्थे २.२.१८
+ कृजोऽसुङ् ७.२.१३
+ कृतापकृत २.१.६०
+ कृत्यग्रहणे २.१.३३
+ कृत्यैर्नियोगे २.१.४३
कृद्योगा च षष्ठी २.२.८
कृन्नद्या न ६.३.४४
+ कृपणादीनाम् ८.२.१८
कृष्णोदकपाण्डु ५.४.७५
केलिमर उपसं० ३.१.९६
केवलायाश्चेति ५.१.३३
कोपधप्रतिषेधे ६.३.३७
+ कौपिज्जलहास्तपद ४.३.१३१
+ कौरव्यमाण्डूकयोः ४.१.१९
क्तस्येन्विषयस्य २.३.३६
क्तिन्नपीष्यते ७.२.३०
क्रपेः संप्रसारणम् ३.३.१०४
+ 'क्रमेः कर्तर्यात्मनेपद ७.२.३६
क्रयाविक्रयग्रहणम् ४.४.१३
क्रियया यमभिप्रैति १.४.३२
क्रिया कुत्सन इति ८.१.६९
+ क्रियाविशेषणानाम् २.४.१८
क्रिया समभिहारे द्वे ८.१.१२
क्रुकन्नपि ३.२. १७४
क्रोशशतयोजन ५.१.७४
क्लिन्नस्य ५.२.३३
क्लृपि संपद्यमाने २.३.१३

विवब्बचिप्रच्छ ३.२.१७८
 विवल्गुपधात्व १.१.५८
 क्वौ च शास ६.४.३४
 क्षत्रियसमान ४.१.१६६
 क्षदेश्च ३.२.१३५
 क्षिपकादीनाम् ७.३.४५
 क्षीर लवणयोः ७.१.५१
 क्षेमाद् यः ५.४.३६
 खच्च द्विद्वाच्यः ३.२.३८
 खनेर्डडरे ३.३.१२५
 ख प्रत्ययानुत्पत्तौ ५.२.१२
 खरुसंयोगोपधाच्च ४.१.४४
 खर्पर शरि वा ८.३.३६
 खलतिकादिषु १.२.५२
 खलादिभ्यः इनिः ४.२.५१
 खुरखराभ्यां वा ५.४.११८
 ख्यश्च ५.४.११९
 + ख्शादि २.४.५४
 गच्छतौ परदारा ४.४.१
 गजसहायाभ्याम् ४.२.४३
 गड्वादेः परा २.२.३५
 गणिकायाः ४.२.४०
 गतिकारकेतर ६.४.८२
 गतिग्रहणे ८.१.६८
 + गत्युपसर्ग १.४.६०
 गन्धस्येत्वे ५.४.१३५
 गमादीनामिति ६.४.४०
 गमेरिगादेशस्य ६.४.१६
 गमेः सुपिवाच्यः ३.२.३८
 गम्यादीनामुप २.१.२४
 गवादिषु विन्देः ३.१.१३८
 गवि च युक्ते ६.३.४६
 गापोर्ग्रहणे २.४.७७
 गिरिनद्यादीनाम् ८.४.१०
 गिरौ डश्छन्दसि ३.२.१५
 गिल गिले च ६.३.७०
 गिलेऽगिलस्य ६.३.७०
 गुग्गुलु मधु जतु ४.१.७१

गुण कर्मणि वा २.३.६५
 गुणवचनास् डीबा ४.१.४४
 गुणवचनेभ्यः ५.२.९५
 गुणात्तरेण ६.२.९३ तथा * २.२.८
 + गुणादिभ्यो ग्रामच् ४.२.३७
 गोत्रादङ्कवत् ४.२.८
 + गोत्रान्तात् १.१.७३
 + गोत्रोत्तर १.१.७३
 गोरजादि प्रसङ्गे यत् ४.१.८५
 गोर्यूतौ छन्दसि ६.१.७९
 गोष्ठजादयः ५.२.२९
 ग्लाम्यालज्या ३.३.९५
 घ इति स्वरूपस्य ८.२.२२
 घञर्थे क विधानम् ३.३.५८
 घञपोः प्रतिषेधे २.४.५६
 घञ्विधाववहारा ३.३.१२१
 घटी खारी खरी ३.२.२९
 घट्टिवन्दि विटि ३.३.१०७
 घस्त्वभावे २.४.३७
 घोषग्रहणमणि ४.३.१२७
 घ्रः संज्ञायाम् न ३.१.१३७
 डावुत्तरपदे ८.२.८
 चञ्चदबृहतीरूप ५.४.३
 चतसर्वाद्युदात्तः ७.२.९९
 चतुरश्छयतावा ५.२.५१
 चतुर्थादच ऊर्ध्व ५.३.८३
 चतुर्थ्यर्थ उप० ५.१.४७
 चतुर्मासाण्यो ५.१.९४
 चतुर्वर्णादीनाम् ५.१.१२४
 चतुष्पाज्जाति २.१.७१
 चयो द्वितीयाः ८.४.४८
 चरणाद् धर्माग्नय ४.३.१२०
 चरिचलि पति ६.१.१२
 चरेराडि चागुरौ ३.१.१००
 चर्मणः कोशे ६.४.१४४
 + चातुर्मास्यानाम् ५.१.९४
 + चापले द्वे ८.१.१२
 चारौ वा ३.२.४९
 चित्रड आश्चर्ये ३.१.१९

चित्रारेवर्ता रोहिणी ४.३.३४
 + चित्रीकरणे ३.१.२६
 चिरपरुत्परारि ४.३.२३
 चीवरादर्जने ३.१.२०
 चुल् च ५.२.३३
 चूडादिभ्य उप० ५.१.११०
 चेलराज्यादि ६.२.१३०
 चोरतद्धित ६.१.२२२
 चौ प्रत्यङ्गस्य ६.३.१३८
 च्यवर्थ इति १.४.७४
 छत्वममीति ८.४.६३
 छन्दसि क्रमेके ४.१.३९
 + छन्दसि च नेतुः ५.४.११६
 छन्दसि तृच्च ३.२.१३५
 + छन्दसि परेच्छा ३.१.८
 + छन्दसि भाषायाम् ८.२.७०
 + छन्दसि वेति ७.३.१०७
 छन्दसि स्त्रियाम् ६.३.९२
 छन्दसीति वक्तव्यम् ३.१.११८
 छन्दसी वनिपौ ५.२.१०९
 + छन्दोवित्प्रकरणे ५.२.१२२
 छ प्रकरणे पैङ्गाक्षि ४.२.२८
 + छ प्रकरणे विशि ५.१.१११
 + जनपरयोः कुक् ४.३.६०
 जल्पति प्रभृतीनाम् १.४.५२
 जवसवौ छन्दसि ३.३.५६
 + जसादिषु छन्दसि ७.३.१०९
 जागर्तेरकारो वा ३.३.१०१
 जातान्ताच्च ४.१.५२
 जातार्थे प्रति ४.२.८
 जाति कालसुख २.२.३६
 जातिपूर्वादिति ४.१.५२
 + जित्पर्याय १.१.६८
 + जिह्वाकात्य १.१.७३
 जुगुप्सा विराम १.४.२४
 जुहोतेर्दीर्घश्च ३.२.१७८
 ज्योतिरुद्गमन १.३.४०
 ज्योत्स्नादिभ्यः ५.२.१०३

+ झितद्विशेषाणाम् १.१.६८
 ठक्छसोश्च ६.३.३५
 ठग्रहणमुको ५.३.८३
 + डट् स्तोमे वक्तव्यः ५.२.३७
 + डतरडतमयोः ८.२.१२
 ड प्रकरणे ३.२.४८
 + डलकवतीनाम् ७.३.१०७
 डाचि विवक्षिते द्वे ८.१.१२
 डे च विहायसो ३.२.३८
 णाविष्ठवत् ६.४.१५५
 णिङङ्गान्निरसने ३.१.२६
 णिङ्विधौ साधु ३.२.७८
 ण्यन्तभादीनाम् ८.४.३४
 ण्यल्लोपावियङ् ६.४.४८
 तकि शसि चति ३.१.९७
 तक्ष्णोऽण उप० ४.१.१५३
 + तच्चरतीति ५.१.९४
 ततोऽभिगमनम् ५.१.७४
 तत्करोति तदाचष्टे ३.१.२६
 + तत्स्थैश्च २.३.८
 तनि पति दरिद्राति ७.२.४९
 तन्मध्यपतितः १.१.७२
 तत्पचतीति ५.१.५२
 तत्परे च ८.४.४८
 तदन्ताच्च ५.२.१३५
 तदस्मिन्वर्तत ४.२.३५
 तदाहेति माशब्द ४.४.१
 तदो दावचनम् ५.३.१९
 तनोतेरुप.सं० ३.१.१४०
 तन्वादीनां छन्दसि ६.४.७७
 तपसः परस्मैपदम् ३.१.१५
 तप्पर्वमरुद्ध्याम् ५.२.१२२
 + तमे तादेश्च ६.४.१४९
 तस्य दोषः संयो १.१.५८
 + तलो ह्रस्वो वा ७.३.१०७
 तादर्थ्यं चतुर्थी २.३.१३
 तारका ज्योतिषि ७.३.४५
 तावतिथेन गृह्णाति ५.२.७७

तिङ् कृतद्धित २.३.१
 ति तु त्रेष्वग्रह ७.२.९
 तिलान्निष्फलात् ४.२.३६
 तिष्यपुष्ययोः ६.४.१४९
 + तिसृभावे ७.२.९९
 तीयादीकवस्वार्थे ४.२.८
 तुजादिषु छन्दः ६.१.७
 तृन्विधावृत्तिक्षु ३.२.१३५
 त्यकनश्च निषेधः ७.३.४५
 त्यक्त्यपोश्च ७.३.४४
 त्यजेश्च ७.३.६६
 त्यदादितः शेषे १.२.७२
 + त्यदादीनां फिज् ४.१.१५६
 + त्यदादीनां मिथः १.२.७२
 त्रिचक्रादीनाम् ६.२.१९९
 + त्रेश्च प्रतिषेधः ६.१.१७६
 त्रौ च ६.३.१०१
 त्र्युपाभ्यां चतुरो ५.४.७७
 त्वतलोर्गुणवचनस्य ६.३.३५
 त्विषेदेवतायाम् ३.२.१३५
 था हेतौ च ५.३.४
 दम्पेश्च ६.४.१२०
 दरिद्रातेरार्थ ६.४.११४
 + दंशेश्छन्दसि ३.२.१३९
 दारजारौ कर्तरि ३.३.२०
 दाराबाहनो ३.२.४९
 दिक्शब्देभ्यः ६.३.१०९
 दिग्धसहपूर्वात् ३.२.१५
 दिग्यादेशेन ७.४.९
 दिवश्च दासे ६.३.२१
 दुग्धो दीर्घश्च ८.२.४४
 दुरः षत्वणत्व १.४.६०
 दुरो दाशनाश ६.३.१०९
 + दुर्निन्दायाम् २.२.१८
 दुहिपच्योः ३.१.८७
 दूत वणिग्भ्याम् ५.१.१२६
 दृक्षे चेति ६.३.८९
 दृक्षे चेति ६.३.९०

दृक्षे चेति ६.३.९१
 दृणातेर्ह्रस्वश्च ३.३.१७८
 दृन्करपुनः ६.४.८४
 दृशिग्रहणात् ५.३.१४
 दृशेरग्वक्तव्यः ३.१.८६
 दृशेः क्सश्चेति ३.२.६०
 दृशेश्च १.४.५२
 दृशेश्च ७.२.६८
 देवाद्यजौ ४.१.८५
 देवानां प्रिय इति ६.३.२१
 + देहाच्च ४.३.६०
 दोष उपसंख्या ७.३.५१
 द्युतिगमिजुहोती ३.२.१७८
 द्युश्चोमयात् ५.३.२२
 + द्वन्द्वे घ्यजादि २.२.३३
 द्वन्द्वतत्पुरुषयोः २.१.५१
 द्वन्द्वे देवासुरादि ४.३.८८
 द्विगु प्राप्तापन्ना २.४.२६
 द्विगोश्च ४.२.६०
 द्विगोर्नित्यम् ५.२.३७
 द्वितीयं सन्ध्यक्षर ५.३.८३
 द्वित्ये गो युगच् ५.२.२९
 द्विपर्यन्तानामेव ७.२.१०२
 + द्विर्वचने परसवर्ण ८.२.६
 + द्विर्वचन प्रकरणे छन्दसि ६.१.८
 + द्विर्वचन प्रकरणे कृजादीनाम् ६.१.१२
 + द्विषः शतुर्वा ३.२.१२८
 द्विष शतुर्वा २.३.६९
 द्व्यच् त्र्यज्याम् ८.४.६
 धमुजन्तात् स्वार्थे ५.३.४५
 धर्मादिष्वनियमः २.२.३४
 धातुरूपं च ३.१.२६
 धातोरुगितः ४.१.६
 धात्वन्त यकोस्तु ७.३.४६
 धात्वर्थ निर्देशे ३.३.१०८
 धासु वेति ६.३.१०९
 धूञ्ज्रीजोर्नुग् ७.३.३७
 धृषेष्टेति ३.२.१७२

धेनोरनञ इति ४.२.४७
 धेनोर्भव्यायाम् ६.३.७०
 ध्यायतेः सम्प्रसारणम् ३.२.१७८
 + ध्वाक्षेण २.१.४२
 + न क्षत्रयोगे ३.१.२६
 नगपांसु पाण्डुभ्यः ५.२.१०७
 नञो न लोपस्तिङिः ६.३.७३
 नञोऽस्त्यर्थानाम् २.२.२४
 नञस्नञीकक् ४.१.१५
 + न तु तद् २.२.८
 + नदीभिः २.१.३०
 + नपुंसके भाव २.३.६७
 नमोऽङ्गिरोमनुषाम् १.४.१८
 नमसः पूजायाम् ३.१.१९
 नयतेः षुक् ३.२.१३५
 + नरकरितुरङ्गाणाम् ४.२.५१
 नराच्चेति वक्तव्यम् ४.४.४९
 नवसूरमर्त ५.४.३६
 नवस्य नू ५.४.३०
 न विद्यायाः ४.२.८
 नश्च पुराणेप्रात् ५.४.३०
 न समासे ६.१.१२७
 नस नासिकायाः ६.१.६३
 नान्तस्य टिलोपे ६.४.१४४
 नामाख्यातग्रहणम् ४.३.७२
 नासिकायां ध्मश्च ३.२.२९
 + निन्दाक्षमा ३.१.५
 निषातस्यानर्थकस्य १.२.४५
 निमित्तात्पर्याय २.३.२३
 निमित्तात् कर्मयोगे २.३.३६
 + निमीलित्याम् ६.१.५०
 नियन्तृकर्तृकस्य १.४.५२
 निरादयः क्रान्ताद्यर्थे २.२.१८
 निर्विण्णस्योप० ८.४.२९
 निष्के चेतिवाच्यम् ६.३.५६
 + निष्ठादेश ८.२.६
 निष्ठायामनिट् ७.३.५२
 निष्ठायां सेट इति ३.३.९४

निष्ठायां सेट इति ३.३.१०३
 निसो देशे ३.२.४८
 नीलादौषधौ ४.१.४२
 नील्या अन् ४.२.२
 नुम् चिरतृज्वद् ७.१.५४
 नृति स्वनिराङ्गिभ्यः ३.१.१४५
 नेतुर्नक्षत्रे अप् ५.४.११६
 नौ काकात्रशुक २.३.१७
 नौ लिम्मेर्वाच्यः ३.१.१३८
 पञ्चजनादुप ५.१.९
 पत्राद् वाह्ये ४.३.१२०
 पथः संख्या २.४.३०
 पथ्यध्यायन्याय ४.२.१२९
 पदाङ्गाधिकारे १.१.७२
 + पदाधिकारश्चेत् ८.२.६
 पदान्तग्रहणम् ८.२.१०७
 + पदान्तपदाद्योः ६.१.८६
 + पदान्तङ्कुच्चेति ७.४.८५
 परस्परपदात् १.३.१६
 परस्मादेद्यव्यहनि ५.३.२२
 परिचर्या परिसर्या ३.३.१०१
 + परिदेवने ३.३.१५
 परिमुखादिभ्यः ४.३.५९
 परेर्वर्जने वा ८.१.५
 परेर्वा ३.३.१०७
 + परोक्षे च ३.२.१११
 पर्यादयो ग्लाना २.२.१८
 पश्चाणस् ४.२.४३
 पल्यराजभ्याम् ५.४.७८
 पाटेर्णिलुक्च ६.१.१२
 पाणिगृहीती भार्या ४.१.५२
 पाणौ सृजेर्ण्यत् ३.१.१२४
 पाण्डोर्डचण् ४.१.१६६
 पातेर्णिलुक् ७.३.३७
 पात्राद्यन्तस्य न २.४.३०
 पादिषु घेट उप० १.३.८९
 पार्श्वादिषूप ३.२.१५
 पालकान्तात्र ४.१.४८

पावकादीनां छन्दसि ७.३.४५
 पाश कल्पकार्येषु ८.३.३८
 पिञ्जश्छन्दसि ४.२.३६
 + पित्पर्याय घ १.१.६८
 पितुर्भ्रातरि व्यत् ४.२.३६
 पिबतेः सुरासीध्वोः ३.२.८
 पिशाङ्गादुपसं० ४.१.३९
 पिशाचाच्च ५.२.१२९
 पीतात्कन् ४.२.२
 पीवोपवसनादीनाम् ६.३.१०९
 पुच्छाच्च ४.१.५५
 पुच्छादुदसने ३.१.२०
 पुण्यसुदिनाभ्या २.४.३०
 पुण्याहवाचनादिभ्यः ५.१.१११
 पुनश्च नसौ छन्दसि १.४.६०
 + पुम्मुहुसः ८.४.३१
 पुरुषाद् वध विकार ५.१.१०
 पुष्पमूलेषु बहुलम् ४.४.१
 पुंसानुजो जनुषान्ध ६.३.३
 पूज एवेह ग्रहणम् ८.४.३४
 पूजो विनाशे ८.२.४४
 पूतिश्चानुबन्ध ८.१.६९
 पूरण इति वक्तव्यम् ६.३.६
 पूरोरण् वक्तव्यः ४.१.१६६
 पूर्णमासादण् ४.२.३५
 पूर्वत्रासिद्धीयम् ८.२.१
 पूर्वत्रासिद्धीये न १.१.५८
 + पूर्वपदस्य यलोप ५.२.१२
 पूर्वपूर्वतरयोः पर ५.३.२२
 + पूर्व प्रथमयोः ८.१.१२
 पूर्वाङ्गवच्चेति २.१.२
 पूर्वादिभ्यः काण्डः ४.२.५१
 पूर्वान्यान्येतरतर ५.३.२२
 पृच्छतौ सुस्नातादि ४.४.१
 पृथिव्या जाजौ ४.१.८५
 पृष्ठादुपसं ४.२.४२
 प्रकृत्याके राजन्य १.४.१६३
 प्रकृत्याके राजन्य ६.४.१६३

प्रकृत्यादिभ्यः उप २.३.१८
 + प्रगस्य छन्दसि ४.३.२३
 प्रतिपदविधाना षष्ठी २.१.१०
 + प्रतिवेशादीनाम् ६.३.१२२
 प्रत्यय ग्रहणे चापञ्चभ्याः १.१.७२
 प्रत्यये भाषायाम् ८.४.४
 प्रथमलिङ्ग्रहणम् १.४.३
 प्रमाणपरिमाणाभ्याम् ५.२.३७
 प्रमाणे लः ५.२.३७
 प्रलम्भनाभिभव ६.१.५१
 प्रश्नान्ताभिपूजित ८.२.१०७
 प्रहरणार्थेभ्यः २.२.३६
 प्राक्शतादिति ६.३.४७
 + प्राग्बहुव्रीहग्रहणम् ५.४.६९
 प्राण्यङ्गादेव ५.२.९६
 प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे ३.१.२६
 प्रादयो गताद्यर्थे २.२.१८
 प्रादिभ्यो धातुजस्य २.२.२४
 प्रादूहोढो ६.१.८९
 प्रायस्य चिति ६.१.५७
 + प्लुतिस्तुग्विधौ ८.२.६६
 फल पाक शुषामुप० ४.३.१६६
 फलबर्हाभ्याम् ५.२.१२२
 फलसेनाङ्गवन २.४.१२
 फल्गुन्यषाढाभ्याम् ४.३.३४
 फेनाच्चेति ३.१.१६
 बलादूलः ५.२.१२२
 बहिर्देवपञ्च ४.३.५८
 बहिषष्टिलोपो ४.१.८५
 + बहुग्रहणे संख्या ५.३.२
 बहुपूर्वाच्चेति ५.१.३०
 + बहुव्रीहिः २.२.२४
 बहुव्रीहौ वा ४.१.७
 बहुलं छन्दसि ४.१.७
 बहुलं छन्दसि ७.३.८७
 बहुलं तणि ३.२.८
 बहुलमेतन्निदर्श ३.१.२६
 + बहुलं संज्ञा २.४.८४

बहुलं संज्ञाछन्दसोः ४.१.५२
 बहुवचनमित्यपि ८.१.७४
 + बहुष्वनियमः २.२.३३
 बहुर्जि नुम्प्रति ७.१.७२
 बहुलपार्थ ५.४.४२
 बाहूरुपूर्वपदात् ५.२.१३५
 बृहन्महतोरुप० ६.१.१७३
 ब्रह्मणि वदः ३.२.७८
 ब्रह्मवर्चसादुप० ५.१.३९
 ब्राह्मणाच्छंसिन ६.३.२
 भक्षस्य च छन्दसि ६.३.७०
 भक्षेरहिसार्थस्य १.४.५२
 भगे च दारेः ३.२.४१
 + भङ्गायाश्च ५.२.२९
 भद्राच्चेति ५.४.६७
 भयभीत भीति २.१.३७
 भय निर्गतजुगुप्स २.१.३७
 भयादीनामुप० ३.३.५६
 भर्त्सने पर्याये ८.२.९५
 + भवतेश्च ३.१.१४३
 भवने क्षेत्रे ५.२.२९
 भवार्थे तु लुक् ४.३.६०
 भस्याढे तद्धिते ६.३.३५
 भागरूपनामभ्यः ५.४.३६
 भाण्डात्समाचयने ३.१.२०
 भावप्रत्ययान्तात् ४.४.२०
 भाषायांघ्राज्कृसृ ३.२.१७१
 भाषायामष्टनो ६.३.१२६
 भाषायां शासियुधि ३.३.१३०
 भूरिदाप्नस्तुट् ८.२.१७
 भूषाकर्म किरादि ३.१.८९
 भृशादिष्वितराणि ३.१.१३
 भो राजन्य विशाम् ८.२.८३
 भ्रातुर्ज्यायसः २.२.३४
 भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे ६.३.७०
 + मणमीयौ ४.३.६०
 + मतुबुदात्तत्वे ६.१.१७६
 मत्वर्थाच्छः ३.३.१०८

मत्सस्य ड्याम् ६.४.१०९
 मधुकमरीचयोः ५.१.७७
 मनुष्यलुपि १.२.५२
 मरुच्छब्दस्योप० १.४.५८
 + मर्मणश्चेति ५.२.१२२
 महदात्वे घासकर ६.३.४६
 महाजनाद्वज् ५.१.९
 महानाम्न्यादिभ्यः ५.१.९४
 महिषाच्चेति ४.२.८७
 + माङ्याक्रोशे ३.२.१२४
 मातृमातृकमातृषु ६.१.१४
 मातुर्दुलच् ४.२.३६
 मातुलोपाध्यायोः ४.१.४९
 मातृपितृभ्यां पितरि ४.२.३६
 + मातृणां मातृच् ७.३.१०७
 मान्ताद व्यथाच्च ३.१.८
 मामक नरकयोः ७.३.४४
 मासश्छन्दसि ७.४.४८
 मासतन्वोरनन्त ४.४.१२८
 + मासाद्भृतिप्रत्यय ५.४.११६
 मांसपृतनासानूनाम् ६.१.६३
 मांसौदन ग्रहणम् ४.४.६७
 मित्द्रवादिभ्यः ३.२.१८०
 मित्राच्छन्दसि ५.४.३६
 मुखपार्श्वतसो ४.३.६०
 मुख्यार्थात्तुक्थ ४.२.६०
 मुद्गलाच्छन्दसि ४.१.४९
 मुहुसः प्रतिषेधः ८.३.४१
 मूलान्नजः ४.१.६४
 मेधारथाभ्याम् ५.२.१०९
 यक्विणोः प्रतिषेधे हेतु ३.१.८९
 यक्विणोः प्रतिषेधे णिश्च ३.१.८९
 यजिवप्योश्च ६.४.१२०
 यज्ञत्विग्भ्याम् ५.१.७१
 यजादीनामेकस्य २.४.६४
 यणः प्रतिषेधो ८.२.२३
 यणो मयो द्वे ८.४.४७
 यतश्चाध्वकाल २.३.२८

यत्रकरणे रथाच्च ५.१.६
 यधेष्टं नामधातुषु ६.१.३
 यदायघोरुप ३.३.१४७
 यमाच्चेति ४.१.८५
 यवरवदादिभ्यः ५.२.११६
 यवनाल्लिप्याम् ४.१.४९
 यवलपरे यवला ८.३.२६
 यवाद्दोषे ४.१.४९
 यस्मिन्विधिः १.१.७२
 युवादेर्न ८.४.११
 + युष्मदस्योदरन्य ८.१.२६
 युष्मदस्मदोः सादृश्ये ५.२.३९
 यून्श्च कुत्सायाम् ४.१.१६२
 योगे चेति वाच्यम् ८.२.२२
 रञ्जोर्णी मृगरमणे ६.४.२४
 + रथसीता हलेभ्यः ४.३.१२१
 + रथाङ्ग एव ४.३.१२१
 र प्रकरणे खमुख ५.२.१०७
 रयेर्मतौ बहुलम् ६.१.२७
 राज घ उपसंख्यानम् ३.२.५५
 + राजाचार्याभ्याम् ५.१.९
 राज्ञो जातावेवेति ४.१.१३७
 रादिफः ३.३.१०८
 राधो हिंसायां सनीस् ७.४.५४
 रीगृत्वत इति ७.४.९०
 रूपरात्रि रथन्तरेषु ८.२.६८
 लघ्वक्षरं पूर्वम् ३.२.३४
 लपर इति वक्तव्यम् १.१.५१
 लपि दभिभ्यां चेति ३.१.१२४
 लुगकारेकार ४.४.१२८
 लोकस्य षृणे ६.३.७०
 + लोकोत्तर पदाच्च ४.३.६०
 लोपः पूर्वपदस्य च ५.३.८३
 लोभो ऽप्रत्येषु ४.१.८५
 लोहितादि डाङ्भ्यः ३.१.१३
 लोहिताल्लिङ्ग ५.४.३०
 ल्यब्लोपे कर्मणि २.३.२८
 वटकेभ्य इनिः ५.२.८२

+ वडवाया वृषे ४.१.१२०
 वत्यन्तात्स्वार्थे ५.२.३७
 वदगुकोसल ४.१.१५५
 वन उपसंख्यानम् ८.३.१
 वनो न हश् ४.१.७
 + व प्रकरणे ५.२.१०९
 वयस्यचरम इति ४.१.२०
 वयोवाचकस्यैव ४.१.२७
 वरिवसः परिचर्या ३.१.१९
 + वरुणादीनाम् ५.३.८४
 वर्जने प्रतिषेधः २.४.५४
 वर्णका तान्तवे ७.३.४५
 वर्णनगरयोर्येति ६.१.६३
 वर्णात्कारः ३.३.१०८
 वर्णानामानुपूर्व्येण २.२.३४
 वर्णाश्रये नास्ति १.१.६२
 वर्तका शकुनौ ७.३.४५
 + वर्षाहन्कार ६.४.८४
 वलादावार्धधातुके २.४.५६
 वशिरण्योरूप ३.३.५८
 वशेरश्यर्थस्य न १.४.४८
 + वसतेर्लुङ् ३.२.११०
 + वसु शब्दादपि ४.४.१४०
 वसेस्तव्यत्कर्तरि ३.१.९६
 + वहीनरस्येद्वचनम् ७.३.१
 वहेस्तुरणिट् च ४.३.१२०
 वा केशेषु ६.१.६१
 वा गोममेषु ४.२.१२९
 वाग्दिव्यपश्यद् ६.३.२१
 वाङ्मति पितृ ४.१.८५
 + वाचो वादे ६.३.१०९
 वात पित्तश्लेष् ५.१.३८
 वातशुनीतिल ३.२.२८
 वातात्समूहेच ५.२.१२२
 वातादूलो वा ४.२.४२
 + वा नपुंसकानाम् ८.२.८
 + वा नामधातूनाम् ६.१.३
 वा नामधेयस्य १.१.७३

वा प्रियस्य २.२.३५
 + वाऽऽबन्तः ३.४.१७
 वा बह्वर्थमनु ८.१.६९
 + वा याथाकाम्ये ८.१.६६
 वायुशब्द प्रयोगो ६.३.२६
 वालमूललघ्व ८.२.१८
 वा लिप्सायाम् १.३.२५
 वा हतजघयोः ८.४.४८
 वा हितनाम्न इत ६.४.१७०
 + विगृहीतादपि ५.२.११
 विदि प्रच्छिस्वर १.३.२९
 विद्यायोनि सम्बन्धे ६.३.२३
 विद्यालक्षणकल्पान्ता ४.२.६०
 विनापि प्रत्ययम् ५.३.८३
 + विपरीतच्च ५.२.११
 + विभक्ति निमित्त ६.१.१५८
 विभक्ति स्वरात् ६.१.१५८
 + विभार्जायतुर्णि ४.४.४९
 विभाषा प्रकरणेतीय १.१.३६
 विभाषा भवद्भगवत् ८.३.१
 विरूपाणामपि १.२.६४
 विंशतेश्चेति ५.१.५८
 विशसितुरिङ्लोपः ४.४.४९
 विश्वजनादीनाम् ६.१.७६
 + विष्किरः शकुनौ ६.१.१५०
 विष्णौ न ६.३.२८
 विसर्जनीयोऽनुत्तर ८.३.१५
 विस्तारे पटच् ५.२.२९
 विस्मित प्रतिघात ७.२.२९
 विहायसो विह ३.२.३८
 वीवधादपि ४.४.१७
 वुग्युटावुवङ् ६.४.२२
 वृतेश्च ५.२.१०१
 वृद्धस्य च पूजा ४.१.१६३
 वृद्धाच्चेति ४.२.३९
 वृद्धेर्वधुषिभावो ४.४.३०
 वृषण्वस्वश्वयोः १.४.१८
 वेग्रो वक्तव्यः ५.४.११९

वैरे देवासुरा ४.३.१२५
व्यचेः कुटादि १.२.१
+ व्यधेः सम्प्रसारणम् ३.२.१६२
व्याधिमत्स्यबलेषु ३.३.१७
व्यास वरुडनिषाद ४.१.९७
व्रीहिवत्सयोरिति ३.२.२४
शकन्ध्वादिषु ६.१.९४
शकलकर्दमाभ्याम् ४.२.२
शक्तिलाङ्गूलाङ्गुश ३.२.९
+ शच्छनोर्दिनिः ५.२.३७
+ शतग्रहणेऽन्त ५.२.४६
+ शतप्रतिषेधे ५.१.२१
शतरुद्राद् यश्च ४.२.२८
शतषष्ठेष्मिकन् ४.२.६०
+ शतसहस्रौ २.१.३९
+ शताच्च ५.१.३५
शन्शतोर्दिनिश्छन्दसि ५.१.५८
शप उपालम्भे १.३.२१
शब्दायतेर्न १.४.५२
शमि संज्ञायाम् ३.२.१४
+ शरः खजो द्वे ८.४.४५
शरस्य च अवा ६.१.८३
+ शर्पूर्वशेषे ७.४.६१
शसि बह्वलपार्थस्य ६.३.३५
शंसि दहि गुहि ३.१.१०९
शाकपार्थिवादीनाम् २.१.६०
शिक्षेर्जिज्ञासायाम् १.३.२१
शिखामालासंज्ञादि ५.२.११६
शीतोष्ण तृ प्रेभ्यः ५.२.१२२
शीलिकामिभिक्षा ३.२.१
शीले को मलोपश्च ५.३.७२
शुनो दन्तदंष्ट्राकर्ण ६.३.१३७
शुनः संकोचे ६.४.१४४
शृङ्गवृन्दाभ्याम् ५.२.१२२
शृ वायुवर्ण ३.३.२१
शो तृम्फादीनाम् ७.१.५९
शेष पुच्छलाङ्गूलेषु ६.३.२१
+ शेषविज्ञानात् २.३.६७

शेषे विभाषा २.३.६६
शैषिकोष्मिति १.१.७५
श्रुत्वं धुटि ८.४.४०
श्रच्छब्दस्योपसं १.४.५८
श्रन्थि ग्रन्थि १.२.६
श्रन्थेऽश्चेति ६.४.१२२
श्यतेरित्वं व्रते ७.४.४१
श्रविष्ठाषाढाभ्याम् ४.३.३४
श्रुयजीषिस्तु ३.३.९५
श्रेण्यादिषु च्यवर्थ २.१.५९
श्वसुरस्योकाराकार ४.१.६८
श्वेतवहादीनाम् ३.२.७१
श्वेताच्च ४.१.६४
षट्त्वे षङ्गवच् ५.२.२९
षष उत्वं दतृदशधा ६.३.१०९
ष षष्ठाजादिवचन ५.३.८४
षष्ठ्यर्थे चतुर्थी २.३.६२
षष्ठ्यामान्त्रितकारक २.१.२
षाद्यजश्चाब्वाच्यः ४.१.७४
ष्वञ्जेरुपसंख्यानाम् ८.३.११८
सकर्मकाण प्रतिषे ३.१.८७
सडीति वक्तव्यम् ८.२.२५
+ संख्याग्रहणं च ५.२.४६
संख्यापूर्वं रात्रम् २.४.२९
+ संख्या प्रकृतेः ४.२.६५
संख्या प्रयोगे १.२.५८
संख्याया अल्पीयस्याः २.२.३४
संख्यायास्तत्पुरुषस्य ५.४.७३
संघाते कटच् ५.२.२९
+ संज्ञायामण् ५.१.९४
संज्ञायां वा ४.१.४२
संज्ञायां स्वार्थे ५.१.५८
सत्रकक्षकष्ट ३.१.१४
सदच्काण्डप्रान्त ४.१.६४
सं निपाताच्चेति ५.१.३८
संपदादिभ्यः क्विप् ३.३.१०८
+ सपूर्वपदात् ठञ् ४.३.४
संपुकाणा सो ८.३.५

+ संपूर्वात् ३.१.११२
सप्तम्या ऋद्धि २.४.८४
सप्तम्युपमान २.२.२४
संभस्त्राजिन ४.१.६४
समवपूर्वाच्च ३.१.१२४
+ समवपूर्वाच्च ३.१.११०
समश्च बहुलम् ३.१.११२
समानवाक्ये निधा ८.१.१८
+ समान शब्दात् ४.३.६०
समानस्य सभावो ५.३.२२
समानान्ययोश्च ३.२.६०
समास उत्तरपदस्य १.२.५१
समास प्रत्ययविधौ १.१.७२
समिधामाधाने ४.३.१२०
+ समुदाय विकार २.२.२४
समोऽकूजने १.३.२१
+ समोहिततयोः ६.१.१४४
+ सप्तमुनोः ६.१.१४४
+ संयोगादेर्गुणविधाने ७.४.१०
+ संयोगान्त लोपो रो ८.२.६
+ सर्व एव वात्रा ८.१.२६
सर्वजनाद्वज् ५.१.९
+ सर्वत्रामयस्य ५.२.१२२
सर्वनामसंख्ययोः २.२.३५
सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे २.२.२८
+ सर्वप्रातिपादिकेभ्यः ३.१.११
सर्वप्रातिपदिकानाम् ७.१.५१
+ सर्वस्वरोऽन च्कस्ये ६.१.१९१
सर्वाणो वेति ५.१.१०
सर्वादिः सादेश्च ४.२.६०
सर्वादिः सादेश्च ५.२.१३५
सर्वोभयार्थाभ्यामेव ५.३.९
सविशेषणस्य प्रति १.२.५९
+ सहायाद् वा ५.१.१३२
सहित सहाभ्यां च ४.१.७०
+ सादकारयोः ६.३.१२२
साधुकारिण्युप ३.१.१४९
साध्वसाधु प्रयोगे २.३.३६

सामान्ये नपुंसकम् २.४.३०
 सासहि वावहि ३.२.१७१
 + सिच आद्युदात्तत्वे ६.१.१८९
 + सिज्जलोप एकादेशे ८.२.६
 सिति च ६.१.१२७
 + सित्तद्विशेष १.१.६८
 + सिद्धश्च प्रत्यय ६.४.११४
 सिनोतेर्ग्रासकर्म ८.२.४४
 सिम्बहुलं णिद् ३.१.३४
 + सीमन्तः केशवेशे ६.१.९४
 सुदिनदुर्दिन नीहारे ३.१.१७
 सुदुरोरधिकरणे ३.२.४८
 + सुबधिकारे २.२.२४
 सुबन्तस्य पराङ्गवत् २.१.२
 सुब्धातुष्वि ६.१.६४
 सुराया अहौ ५.४.३
 सुवर्ण शतमान ५.१.२९
 सुसर्वाधाद् दिक् १.१.७२
 सूचि सूत्रिमूत्र्य ३.१.२२
 सूतिका पुत्रिका ७.३.४५
 सूतोग्रराज भोज ६.३.७०
 सूत्रान्तात्वकल्पादे ४.२.६०
 सूत्रे च धार्येऽर्थे ३.२.९
 सूर्यागस्त्ययोश्छे ६.४.१४९
 सूर्याद् देवताम् ४.१.४८
 सृजियुज्योः ३.१.८७
 सृजेः श्रद्धोपपन्ने ३.१.८७
 स्तने घेटो ३.२.२९
 स्तोमे डविधि ५.१.५८
 + स्तम्भु सिवु ८.३.११४
 + स्त्रियाम् क्तिन् ३.३.९४
 स्त्रियां न ८.२.८३
 स्त्रीनपुंसकयोरुप ८.१.१२
 स्त्रीप्रत्ययोरैकाकार २.३.६६
 स्तामोऽकारः ४.१.८५
 + स्थाप्नो लुक् ४.३.६०
 स्थास्थिन् ८.३.९७
 स्थेणोर्लुङीति २.४.२

स्नेहे तैलच् ५.२.२९
 स्पृश उपातपे ३.३.१६
 स्पृशमृशकृश ३.१.४४
 स्वतिभ्यामेव ५.४.६९
 + स्वती पूजायाम् २.२.१८
 + स्वामिन्यन्तो ३.१.१०३
 स्वरदीर्घयलोपेषु १.१.५८
 स्वराद्यन्तोपसर्गा १.३.६४
 स्वरो रोहतौ ६.३.१०९
 स्वर्गादिभ्योयत् ५.१.१११
 स्ववः स्वतवसोरु ७.४.४८
 स्वाङ्ग कर्मकाच्चेति १.३.२०
 स्वाङ्गकर्मकाच्च १.३.२८
 स्वादीरेरिणोः ६.१.८९
 + स्वार्थेऽवधार्यमाणे ८.१.१२
 स्वार्थ उपसंख्यानाम् ४.२.५५
 हनुचलन इति ३.१.१५
 हनो वा यद्वधश्च ३.१.९७
 हन्तेर्धत्वं च ६.१.१२
 हन्तेर्हिसायाम् ७.४.३०
 हरतेप्रतिषेधः १.३.१५
 हरतेगतिताच्छील्ये १.३.२१
 हरिद्रा महारजना ४.२.२
 हरीतक्यादिषु १.२.५२
 हविषोऽप्रस्थितस्य २.३.६१
 हसादीनामुप १.३.१५
 हलिकल्योरत्त्व ३.१.२१
 हस्तिसूचकयोरिति ३.२.१३
 हितयोगे च २.३.१३
 हिमाच्चेलुः ५.२.१२२
 हिमारण्ययोर्महत्त्वे ४.१.४९
 हिरण्य इति वक्तव्यम् ३.१.१२३
 + हग्रहोर्भश्छन्दसि ८.२.२९
 हृदयाच्चालुरन्य ५.२.१२२
 हृदय्या उपसं० ६.१.८३
 हृद्युभ्यां च ६.३.९
 ह्रस्वात्तादौ ८.३.१०३

गणपाठसूची

गणपाठसूची (३क)

(वार्तिकगणपाठसहिता)

* एवंचिह्निता गणा वार्तिकस्थाः

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
२३१ अंश्वादि	६.२.१९३		५४ उत्सादि	४.१.८६		१४१ किसरादि	४.४.५३	
१३९ अक्षघृतादि	४.४.१९		१३७ उत्सङ्गादि	४.४.१५		* २३६ कुक्कुट्यादि	६.३.४२	
१९४ अङ्गुल्यादि	५.३.१०८		१६८ उद्गात्रादि	५.१.१२९		५६ कुञ्जादि	४.१.९८	
* १५६ अग्नि पदादि	५.१.९७		३१ उपकादि	२.४.६९		१०० कुमुदादि	४.२.८०	
४५ अजादि	४.१.४		* १५८ उपवस्त्रादि	५.१.१९७		८७ कुमुदादि	४.२.८०	
२४१ अजिरादि	६.३.११९		२०७ उरः प्रभृति	५.४.१५१		२०६ कुम्भपद्यादि	५.४.१३९	
* ११५ अध्यात्मादि	४.३.६०		५ ऊर्यादि	१.४.६१		६६ कुर्वादि	४.१.१५१	
* २३७ अण्डादि	६.३.४२		११६ ऋगयनादि	४.३.७३		१२२ कुलालादि	४.३.११८	
१६० अनुप्रवचनादि	५.१.१११		८६ ऋश्यादि	४.२.८०		१२ कृतादि	२.१.५९	
२४८ अनुशतिकादि	७.३.२०		७८ ऐषुकार्यादि	४.२.५४		८५ कृशाश्वादि	४.२.८०	
१४७ अपूपदि	५.१.४		११० कच्छादि	४.२.१३३		२३९ कोटरादि	६.३.११७	
८४ अरीहणादि	४.२.८०		१९ कडारादि	२.२.३८		२१९ क्रत्वादि	६.२.११८	
२५ अर्घर्चादि	२.४.३१		* २५१ कणादि	७.४.३		८० क्रमादि	४.२.६१	
१८६ अर्श आदि	५.२.१२७		३५ कण्डवादि	३.१.२७		५० क्रोडादि	४.१.५६	
* १५४ अवान्तरदीक्षादि	५.१.९४		१०५ कत्त्र्यादि	४.२.९५		५२ क्रौड्यादि	४.१.८०	
९१ अश्मादि	४.२.८०		१४४ कथादि	४.४.१०२		* २४९ क्षिपकादि	७.३.४५	
६० अश्वादि	४.१.११०		२५५ कपिलकादि	८.२.१८		२६४ क्षुभ्रादि	८.४.३९	
१४९ अश्वादि	५.१.३९		६९ कम्बोजादि	४.१.१७३		७३ खण्डिकादि	४.२.४५	
५३ अश्वपत्यादि	४.१.८४		२१८ कर्क्यादि	६.२.८७		* ७५ खलादि	४.२.५१	
* २५६ अहरादि	८.२.७०		९६ कर्णादि	४.२.८०		४१ गम्यादि	३.३.३	
१७६ आकर्षादि	५.२.६४		१७२ कर्णादि	५.२.२४		५९ गर्गादि	४.१.१०५	
२२६ आचितादि	६.२.१४६		६३ कल्याणादि	४.१.१२६		१४६ गवादि	५.१.२	
* २०२ आद्यादि	५.४.४४		२५८ कस्कादि	८.३.४८		२३ गवाश्वप्रभृति	२.४.११	
१८ आहिताग्न्यादि	२.२.३७		२२४ काण्डादि	६.२.१३५		१११ गहादि	४.२.१३८	
* २६१ इरिकादि	८.४.६		२१३ कार्तकौजपादि	६.२.३७		* २६२ गिरिनद्यादि	८.४.१०	
१७७ इष्टादि	५.२.८८		८८ काशादि	४.२.८०		१४५ गुडादि	४.४.१०३	
७९ उक्थादि	४.२.६०		१०८ काश्यादि	४.२.११६		२२९ गुणादि	६.२.१७६	
२१० उच्छादि	६.१.१६०		२५३ काष्ठादि	८.१.६७		६४ गृष्ट्यादि	४.१.१३६	
१०३ उत्करादि	४.२.९०		२४० किंशुलकादि	६.३.११७		२५२ गोत्रादि	८.१.२७	

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
२९ गोपवनादि	२.५.६७		१९१ देवपथादि	५.३.१००		२३८ पृषोदरादि	६.३.१०९	
१७५ गोपदादि	५.२.६२		२४६ द्वारादि	७.३.४		२६ पैलादि	२.४.५९	
४८ गौरादि	४.१.४१		२०४ द्विदण्ड्यादि	५.४.१२८		* २१ प्रकृत्यादि	२.३.१८	
२३२ गौरादि	६.२.१९४		१०९ धूमादि	४.२.१२७		९८ प्रगद्यादि	४.२.८०	
३७ ग्रहादि	३.१.१३४		५७ नडादि	४.१.९९		२०१ प्रज्ञादि	५.४.३८	
२१६ घोषादि	६.२.८५		१०४ नडादि	४.२.९१		१४३ प्रतिजनादि	४.४.९९	
* १६६ चतुर्वर्णादि	५.१.१२४		१०६ नद्यादि	४.२.९७		२२ * प्रत्यादि	२.३.४३	
३ चादि	१.४.५७		३६ नन्द्यादि	३.१.१३४		१३२ * प्रभूतादि	४.४.१	
२२८ चार्वादि	६.२.१६०		* २० नावादि	२.३.१७		२२७ प्रवृद्धादि	६.२.१४७	
२२१ चिहणादि	६.२.१२५		२३० निरुदकादि	६.२.१८४		४ प्रादि	१.४.५८	
* १५९ चूडादि	५.१.११०		१४८ निष्कादि	५.१.२०		२३४ प्रियादि	६.३.३४	
२२३ चूर्णादि	६.२.१३४		२५० न्यङ्क्वादि	७.३.५३		९० प्रेक्षादि	४.२.८०	
१४२ छत्रादि	४.४.६२		९५ पक्षादि	४.२.८०		१२९ प्लक्षादि	४.३.१६४	
२१७ छात्र्यादि	६.२.८६		३८ पचादि	४.१.१३४		९४ बलादि	४.२.८०	
१५१ छेदादि	५.१.६४		* २५७ पत्यादि	८.२.७०		१८९ बलादि	५.२.१३६	
* १८३ ज्योत्स्नादि	५.२.१०३		* १३४ परदारादि	४.४.१		४९ बह्नादि	४.१.४५	
१२० तक्षशिलादि	४.३.९३		* ११४ परिमुखादि	४.३.५९		५५ बाह्नादि	४.१.९६	
२३५ तसिलादि	६.३.३५		१३५ पर्पादि	४.४.१०		५८ बिदादि	४.१.१०४	
१७३ तारकादि	५.२.३६		१९६ पश्वादि	५.३.११७		* १२४ बिल्वादि	४.३.१३६	
१२७ तालादि	४.३.१५२		१०७ पलद्यादि	४.२.११०		२४४ बिल्वकादि	६.४.१५३	
६७ तिकादि	४.१.१५४		१२५ पलाशादि	४.३.१४१		१६५ ब्राह्मणादि	५.१.१२४	
३० तिककितवादि	२.४.६८		९ पात्रेसमितादि	२.१.४८		७० भर्गादि	४.१.१७६	
७ तिष्ठदगु प्रभृति	२.१.१७		१८१ पामादि	५.२.१००		* १९० भवदादि	५.३.१४	
१८५ तुन्दादि	५.२.११७		२०९ पारस्करप्रभृति	६.१.१५७		१३८ भस्त्रादि	४.४.१६	
८९ तुणादि	४.२.८०		* ४० पार्श्वादि	३.२.१५		७२ भिक्षादि	४.२.३८	
२७ तौल्वल्यादि	२.४.६१		७४ पाशादि	४.२.४९		४२ भिदादि	३.३.१०४	
* २३३ त्रिचक्रादि	६.२.१९९		१८२ पिच्छादि	५.२.१००		४४ भीमादि	३.४.७४	
१५२ दण्डादि	५.१.६६		१७१ पील्वादि	५.२.२४		३२ भृशादि	३.१.१२	
२४ दधि पय आदि	२.४.१४		* २४३ पील्वादि	६.३.१२१		७७ भौरिक्यारि	४.२.५४	
१९५ दामन्यादि	५.३.११६		* १६२ पुण्याह्वानादि	५.१.१११		१०२ मध्वादि	४.२.८६	
२१४ दासीभारादि	६.२.४२		१६७ पुरोहितादि	५.१.१२८		१७० मनोज्ञादि	५.१.१३३	
११३ दिगादि	४.३.५४		१८८ पुष्करादि	५.२.१३५		१५ मयूर व्यंसकादि	२.१.७२	
१६४ दृढादि	५.१.१२३		१६३ पृथ्वादि	५.१.१२२		* १५३ महानाम्न्यादि	५.१.९४	

गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः	गणक्रमाङ्कः	गणः	सूत्राङ्कः
१४० महिष्यादि		४.४.४८	१० व्याघ्रादि		२.१.५६	९७ सुतङ्गमादि		४.२.८०
२१९ मालादि		६.२.८८	१५५ व्युष्टादि		५.१.९७	८३ सुवास्तुवादि		४.२.७७
* १३१ माशब्दादि		४.४.१	१८४ ब्रीह्यादि		५.२.११६	२५९ सुषामादि		८.३.९८
* ३९ मूलविभुजादि		३.२.५	* २०८ शकन्ध्वादि		६.१.९४	* १३३ सुस्नातादि		४.४.१
२५४ यवादि		८.२.९	११८ शण्डिकादि		४.३.५२	१९८ स्थूलादि		५.४.३
२८ यस्कादि		२.४.६३	२०३ शरत्प्रभृति		५.४.१०७	२४५ स्नात्वादि		७.१.४९
१६ याजकादि		२.२.९	१२६ शरादि		४.३.१४४	२ स्वरादि		१.१.३७
१९९ यावादि		५.४.२९	२४२ शरादि		६.३.१२०	* १६१ स्वर्गादि		५.१.१११
२१५ युक्तरोह्यादि		६.२.८१	१९३ शर्करादि		५.३.१०७	४६ स्वस्नादि		४.१.१०
१६९ युवादि		५.१.१३०	* १३ शाकपार्थिवादि		२.१.६०	२४७ स्वागतादि		७.३.७
२६३ युवादि		८.४.११	१९२ शाखादि		५.३.१०३	१३० हरीतक्यादि		४.३.१६७
७१ यौधेयादि		४.१.१७६	५१ शार्ङ्गरवादि		४.१.७३	२०५ हस्त्यादि		५.४.१३८
१९७ यौधेयादि		५.३.११७	६१ शिवादि		४.१.११२			
१२८ रजतादि		४.३.१५४	११७ शुण्डादि		४.३.७६			
१७८ रसादि		५.२.९५	६२ शुभ्रादि		४.१.१२३			
१७ राजदन्तादि		२.२.३१	८ शौण्डादि		२.१.४०			
७६ राजन्यादि		४.२.५३	१२१ शौनकादि		४.३.१०६			
६५ रेवत्यादि		४.१.१४६	१४ श्रमणादि		२.१.७०			
१२३ रैवतिकादि		४.३.१३१	११ श्रेण्यादि		२.१.५९			
१८० लोमादि		५.२.१००	९२ सख्यादि		४.२.८०			
३३ लोहितादि		३.१.१३	८२ संकलादि		४.२.७५			
१५० वंशादि		५.१.५०	९३ संकोशादि		४.२.८०			
२२५ वनस्पत्यादि		६.२.१४०	१५७ संतापादि		५.१.१०१			
१०१ वरणादि		४.२.८२	११२ संधिवेलादि		४.३.१६			
९९ वराहादि		४.२.८०	४७ सपत्न्यादि		४.१.३५			
२२२ वर्ग्यादि		६.२.१३१	* ४३ सम्पदादि		३.३.१०८			
८१ वसन्तादि		४.२.६३	१ सर्वादि		१.१.२७			
६८ वाकिनादि		४.१.१५८	२६० सवनादि		८.३.११०			
२०० विनयादि		५.४.३४	६ साक्षात्प्रभृति		१.४.७४			
१७४ विमुक्तादि		५.२.६१	१७९ सिध्यादि		५.२.९७			
२१२ विस्पष्टादि		६.२.२४	११९ सिन्ध्वादि		४.३.९३			
२११ वृषादि		६.१.२०३	३४ सुखादि		३.१.१८			
१३६ वेतनादि		४.४.१२	१८९ सुखादि		५.२.१३१			

(ख) गणपाठे स्वतन्त्ररूपेण न लिखिताः परमष्टाध्याय्यां
प्रयुक्ताः, धातुपाठादौ भृशं व्यवहताः केचन गणाः ।

गणः	उल्लेखस्थलम्	गणः	उल्लेखस्थलम्	गणः	उल्लेखस्थलम्
आदिप्रभृति २.४.७२		तनोत्यादि ६.४.३७	धातुपाठे	मुचादि ७.१.५९	धातुपाठे
अयस्मयादि १.४.२०	न गणशब्दाः	तुजादि ६.१.७	आकृतिगणः	यजादि ६.१.१५	धातुपाठे
इन्द्रजननादि ४.३.८८	आकृतिगणः	तुदादि ३.१.७७	धातुपाठे	रधादि ७.२.४५	धातुपाठे
कण्वादि ४.१.१०५	गर्गादिगणे	त्यदादि १.१.७४	सर्वादिगणे	रुदादि ७.२.७६	धातुपाठे
किरादि ७.२.७५	धातुपाठे	दिवादि ३.१.९१	धातुपाठे	रधादि ३.१.७८	धातुपाठे
कुटादि १.२.१	धातुपाठे	द्युतादि १.३.९१	धातुपाठे	लोहितादि ४.१.१८	गर्गादिगणे
क्र्यादि ३.१.८१	धातुपाठे	द्व्यादि ५.३.२	सर्वादिगणे	ल्वादि ८.२.४४	धातुपाठे
चुरादि ३.१.२५	धातुपाठे	पदादि ६.१.१७१	पददन्तोमासादौ	वर्ग्यादि ६.२.१३१	दिगादिगणे
जक्षादि ६.१.६	धातुपाठे	पुषादि ३.१.५५	धातुपाठे	वृतादि १.३.९२	धातुपाठे
जुहोत्यादि २.४.७५	धातुपाठे	प्वादि ७.३.८०	धातुपाठे	शमादि ३.२.१४१	धातुपाठे
ज्वलादि ३.१.१४०	धातुपाठे	फणादि ६.४.१२५	धातुपाठे	स्वपादि ६.१.१८८	धातुपाठे
डतरादि ७.१.२५	सर्वादिगणे	बिल्वकादि ६.४.१५३	नडादिगणे	स्वादि १.४.१७	धातुपाठे
तनादि २.४.७९	धातुपाठे	भूवादि १.३.१	धातुपाठे	हरितादि ४.१.१००	विदादौ

(ग) वार्तिकेषूपलभ्यमाना भाष्यकारेण विवेचिताः केचन गणाः ।

अश्वघासादि २.१.३६	पावकादि ७.३.४५	रथक्त्वादि ७.३.४४
उपकूलादि ४.३.५८	पैङ्गाक्षीपुत्रादि ४.२.२८	रौढ्यादि ४.१.७९
कम्बोजादि ४.१.१७५	प्रतिवेशादि ६.३.१२२	वतण्डादि ६.३.३४
खलतिकादि १.२.५२	ब्रह्मप्रजापत्यादि ६.३.२	विश्वजनादि ६.१.७६
खलादि ४.२.५१	भुज्यादि ७.१.१	वृषलादि ५.३.६६
खलेयवादि २.१.१७२	मरुद्वृधादि ६.२.१०६	वेदाध्यायादि ३.२.१
देवासुरादि ४.३.८८	यवरवदादि ५.२.११६	व्यतीक्षादि ३.३.४३
पादहारकादि २.१.३३	याज्ञवल्क्यादि ४.२.६६	शिखादि ५.२.११६
		स्नात्वाकालकादि ७.१.३४

अन्तर्गण सूत्र सूची

अन्तर्गणसूत्रसूची

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
६३	अग्निशर्मन्	४.१.९९	१४४	उपायो ह्रस्वत्वं च	५.४.३४	१३१	गोमूत्र आच्छादने	५.४.३
११८	अङ्गात्कल्याणे	५.२.१००	९७	ऊधसोऽनङ्	५.१.२	१८१	गौषिव्यः संज्ञायाम्	८.३.९८
२६	अचामचित्त	३.१.१३४	१३५	ऋतावुष्णाशीते	५.४.२९	५८	ग्रीष्मादच्छन्दसि	४.१.८६
१३७	अणु निपुणे	५.४.२९	११३	एकाचः	५.२.९५	१०५	चतुर्वेदस्य	५.१.१२४
३	अन्तरं बहिर्योग	१.१.२७	(इदमपि ग्राह्यम्) एतान्युत्तर	८.४.३९	५२	चन्द्रभागात्रघाम्	४.१.४५	
९८	अन्नविकारेभ्य	५.१.४	१८२	एति संज्ञायाम्	८.३.९८	७७	चर्मवर्मिणोः	४.१.१५८
२८	अभिभावी	३.१.१३४	४२	एषणः करणे	४.१.४१	१३	च्यवर्थाः	१.१.३७
१४	अम्	१.१.३७	१८	एहीडादयः	२.१.७२	३०	छिदा द्वैधीकरणे	३.३.१०४
५९	अमितौजसः	४.१.९६	४६	कटाच्छ्रेणिवचने	४.१.४१	११६	जटा घटाकटा	५.२.९७
१४९	अर्थान्नजः	५.४.१५१	१५३	कारस्कारो वृक्षः	६.१.१५७	१२२	जटा घटाकटा	५.२.१००
१०३	अर्हतो नुम्	५.१.१२४	३३	कारा बन्धने	३.३.१०४	८९	जनपरयोः कुक्	४.२.१३८
१७५	अवहितो भोगेषु	६.२.१४७	१५६	किष्किन्धा गुहा	६.१.१५७	१४७	जराया जरस्	५.४.१०७
(इदमपि ग्राह्यम्) अवहित लक्षणम्	६.३.२०३		१५५	किष्कुः प्रमाणम्	६.१.१५७	१९	जहि कर्मणा बहुलम्	२.१.७२
९	अव्ययीभावश्च	१.१.३७	८२	कुट्याया यलोपश्च	४.२.९५	१३३	जीर्ण शालिषु	५.४.३
१७४	आकर्षे अवहितः	६.२.१४७	(इदमपि ग्राह्यम्) कुमारी क्रीडनकानि	५.४.२९	८१	तक्षन्नलोपश्च	४.२.९१	
२०	आख्यातमाख्यातेन	२.१.७५	८५	कूलात्सौवीरेषु	४.२.१२७	१५७	तद्बृहतोः कर	६.१.१५७
१८४	आचार्यादणत्वं च	८.४.३९	१०	कृत्वसुच्	१.१.३७	२१	तद्राजाच्चाणः	२.४.५९
७०	आत्रेय भरद्वाजे	४.१.११०	५०	कृदिकाराक्तिनः	४.१.४५	१४२	तनु सूत्रे	५.४.२९
८४	आपदादि पूर्वपदात्	४.२.११६	६	कृन्मकार	१.१.३७	(इदमपि ग्राह्यम्) तसिलादयः प्राक्	१.१.३७	
१५	आम्	१.१.३७	१२८	कृष्णातिलेषु	५.४.३	८	तसिलादयस्तद्धितः	१.१.३७
३२	आरा शख्याम्	३.३.१०४	१४६	कृष्णामृगे	५.४.३८	(इदमपि ग्राह्यम्) तसिवती	१.१.३७	
१२	आस्थाली	१.१.३७	६४	कृष्णरणौ	४.१.९९	३४	तारा ज्योतिषि	३.३.१०४
१३०	इक्षुतिल	५.४.३	५	क्त्वातोसुन्	१.१.३७	९४	तालाद् धनुषि	४.३.१४२
१७	इच्चत्ययः	२.१.१७	३६	क्रपेः सम्प्रसारणम्	३.३.१०४	४१	त्रिफलात्र्यनीका	४.१.४
४९	इतः प्राण्यङ्गात्	४.१.४५	८०	क्रुञ्चा ह्रस्वत्वम्	४.२.९१	७३	त्रिवेणी त्रिवणम्	४.१.११२
१८५	इरिकादीनि	८.४.३९	६५	क्रोष्टु क्रोष्टं च	४.१.९९	१४१	दान कुत्सिते	५.४.२९
१४३	ईयसश्च	५.४.२९	७८	क्षुद्रकमालव	४.२.४५	(इदमपि ग्राह्यम्) दासान्छन्दसि	४.१.३५	
१६६	उत्तमशश्वत्तम	६.१.१६०	११७	क्षुद्रजन्तूपतापयोश्च	५.२.९७	९०	देवस्य च	४.१.१३८
६०	उदकः संज्ञायाम्	४.३.९६	१६०	गरो दूष्ये	६.१.१६०	७२	द्वयचो नद्याः	४.१.११२
९३	उदकः संज्ञायाम्	४.३.५४	१११	गर्भादप्राणिनि	५.२.३६	३५	धारा प्रपातने	३.३.१०४
५७	उदस्थान देशे	४.१.८६	११२	गुणात्	५.२.९५	१८३	नक्षत्राद् वा	८.३.९८
१६	उपसर्ग विभक्ति	१.४.५७	३१	गुहागिर्योषध्योः	३.३.१०४	२२	नन्दिवाशिमादि	३.१.१३४

गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः	गणसूत्राङ्कः	गणसूत्रम्	सूत्राङ्कः
(इदमपि ग्राह्यम्) नानाजौ	१.१.३०		४० मूलत्रजः	४.१.४		९६ शुनः सम्प्रसारणम्	५.१.२	
९५ नामि नभं च	५.१.२		१२९ यवग्रीहिषु	५.४.३		३९ शूद्रा चामहत्पूर्वा	४.१.४	
(इदमपि ग्राह्यम्) नृतिर्यडि	८.४.३९		२५ याचुव्याह	३.१.१३४		१४० शून्य रिक्ते	५.४.२९	
५४ नृनरयोर्वृद्धिश्च	४.१.७३		१५९ युगकालविशेषे	६.१.१६०		१४५ श्रोत्र शरीरे	५.४.३८	
१३४ पत्रमूले	५.४.३		२४ रक्षश्रुवपशां	३.१.१३४		११० श्रोतियस्य यलोपः	५.१.१३०	
७९ पाथन्य च	४.२.८०		१५४ रथस्था नदी	६.१.१५७		१६४ श्वप्रे दरः	६.१.१६०	
६६ परस्त्री परशुं च	४.१.१९४		(इदमपि ग्राह्यम्) राजपुरुषात् प्यजि	७.३.२०		९२ संवत्सरात्फल	४.३.१६	
१७९ परेहस्तपाद	६.२.१८४		१०६ राजासे	५.१.१२८		१८० संज्ञायां मेघ	७.३.५३	
१३६ पशौ लूनविधाते	५.४.२९		१७८ राजाहोश्छन्दसि	६.२.१६०		३८ सदच्चाण्ड	४.१.४	
१६९ पात्रेसमितादयः	६.२.८१		४५ रेवती नक्षत्रे	४.१.४१		८६ समुद्रान्नावि	४.२.१२७	
क्वचित् पादः पत् च	४.४.१०		४४ रोहिणी नक्षत्रे	४.१.४१		१०२ समा मतिमनंसो	५.१.१२३	
१५२ पारस्करो देशः	६.१.१५७		७४ लक्ष्मण श्यामयोः	४.१.१२३		३७ संभस्त्राजिन	४.१.४	
११४ पार्णिधमन्योः	५.२.९७		१२१ लक्ष्म्या अच्च	५.२.१००		६१ संभूयोऽभ्मसो	४.१.९६	
४७ पिप्पलादयश्च	४.१.५१		८३ वडवाया वृषे	४.२.९७		७५ सम्राजः क्षत्रिये	४.१.१५१	
१३८ पुत्र कृत्रिमे	५.४.२९		४ वत्सत्समत्	१.१.३७		५१ सर्वतोऽक्तिन्	४.१.४५	
६९ पुंसि जाते	४.१.११०		१६३ वर्तनिः स्तोत्रे	६.१.१६०		१०४ सर्ववेदादिभ्यः	५.१.१२४	
१०८ पुरुषासे	५.१.१३०		१७६ वर्तमान वर्धमान	६.२.१६०		१७० संहिता गवि	६.२.१४६	
१ पूर्वपरावर	१.१.२७		६७ वाजासे	४.१.१०५		२३ सहि तपि दमः	३.१.१३४	
१४८ प्रतिपरिसमनु	५.४.१०७		११५ वात दन्त बल	५.२.९७		१६५ साम्बतापौ	६.१.१६०	
१७३ प्रयुता सृष्णवः	६.२.१४७		१७७ विकारैः सदृशे	६.२.१६०		१५१ सारङ्ग पशु	६.१.९४	
१७१ प्रवृद्धं यानम्	६.२.१४७		९९ विराग विरङ्ग	५.१.६४		१५० सीमन्तः केशवेशे	६.१.९४	
१७२ प्रवृद्धो वृषलः	६.२.१४७		२७ विशयी विषयी	३.१.१३४		११ सुचं	१.१.३७	
१५८ प्राप्तुम्पतौ	६.१.१५७		१२० विष्वगुत्तरपद	५.२.१००		(इदमपि ग्राह्यम्) सुपन्थिन् पन्थ	४.२.८०	
क्वचित् वष्कयासमासे	४.१.८६		९१ वेणुकादिभ्य	४.२.१३८		१०७ सुभग मन्त्रे	५.१.१२९	
१६७ भक्षमन्यभोग	६.१.१६०		१६१ वेद वेग वेष्ट	६.१.१६०		४३ सुमङ्गलात्संज्ञा	४.१.४१	
७१ भरद्वाज आत्रेये	४.१.११०		७६ वेनाच्छन्दसि	४.१.१५१		१३२ सुरा अहौ	५.४.३	
२९ भिदा विदारणे	३.३.१०४		१०१ वेर्यातलात	५.१.१२३		५५ सूत युवत्याम्	४.१.८०	
५३ भोगिवद् गौरियतोः	४.१.७३		४८ शक्तिः शस्त्रे	४.१.४५		१३९ स्नात वेदसमाप्तौ	५.४.२९	
५६ भोग क्षत्रिये	४.१.८०		६८ शप आत्रेये	४.१.११०		१६२ स्तु यु द्रुवः	६.१.१६०	
८७ मध्य मध्यमम्	४.२.१३८		१६८ शमरणौ संज्ञा	६.१.२०३		२ स्वमज्ञाति धन	१.१.२७	
(इदमपि ग्राह्यम्) मध्यमा पुंयोगे	४.१.४		६२ शलङ्कु शलङ्कं	४.१.९९		१२५ स्वाङ्गदधीनात्	५.२.१२७	
१०० मांसौदनाद् विगु०	५.१.१०१		९ शस्तसी	१.१.३७		१२४ स्वाङ्गाद् विवृद्धौ	५.२.११७	
(इदमपि ग्राह्यम्) मान्तः कृत्वोर्यः	१.१.३७		(इदमपि ग्राह्यम्) शस्त्रभृतयः	१.१.३७		१०९ हृदयासे	५.१.१३०	
१२६ माला क्षेपे	५.२.१३१		११९ शाकी पलाली	५.२.१००				
८८ मुखपार्श्वतसोः	४.२.१३८		१२३ शीर्षात्रजः	५.२.११६				

जमुई-पण्डित-ग्रामे गोरखपुरमण्डले

वसतः सारवार्यस्य कृतिः स्याद् बुधहर्षदा ।।

संस्कृत सेवा संस्थान के प्रकाशन

व्याकरण :—

१. महाभाष्य (प्रथम आह्निक) —हिन्दी अनुवाद व्याख्या तथा विशेष विवरण के साथ
२. वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी
(कारक प्रकरण) —हिन्दी अनुवाद व्याख्या विशेष विवरण तथा उदाहरणों के साथ ।
३. पाणिनीयो धातुपाठः —धातुपाठ धात्वर्थविभाग सोदाहरण धात्वनुक्रमणिका तथा अर्थानुक्रमणिका के साथ ।
४. (क) कौमुदीनामरूपमाला —सिद्धान्तकौमुदी में आये सभी प्रातिपदिक शब्दों के सभी रूपों का सम्पूर्ण सङ्कलन ।
(ख) धातुगुच्छकम् —पठनमात्र से धातु गण अर्थ पद इङ्विचार तथा प्रथम पुरुष के एकवचन के रूप के ज्ञान के साथ धातु वैशिष्ट्य बताने वाला ।
५. अष्टाध्यायी —अनुवृत्तिविवेचनपुरःसर वार्तिकपाठ गणपाठ अर्थ एवं आवश्यक परिशिष्टों के साथ ।

साहित्य :—

१. अभिनवा स्तुतिः —स्तुति के सभी प्रकारों के निदर्शन के साथ षड्देव-स्तुति ।
२. मूषकवैदुष्यम् —वर्तमान भारत की अवस्था का दिग्दर्शक एवं संस्कृत व्यङ्ग्य नाटिका ।
३. राघवेन्द्रचरितम् —संस्कृत महाकाव्य, हिन्दी अनुवाद एवं विशिष्ट भूमिका के साथ रामकथा की नूतन प्रस्तुति ।
४. संस्कृत साहित्य में स्तोत्र काव्य —स्तोत्रविषयक प्रामाणिक भूमिका के साथ नित्य पठनीय स्तोत्रों का संग्रह ।
५. मुक्तकम् —गेय एवं पाठ्य काव्यों के विविध रूपों का परिचायक उत्तम संग्रह ।
६. राघवेन्द्रचरितम् (प्रथम सर्ग) —सानुवाद

दर्शन :—

१. भारतीय दर्शन परम्परा और साहित्य दर्शन—दर्शनों के पौर्वापर्य विचार के साथ साहित्यदर्शन का प्रतिपादन ।

तन्त्र :—

१. दुर्गासप्तशती (प्रथमचरित) —हिन्दी अनुवाद के साथ प्रत्येक पदों के तान्त्रिक दार्शनिक तथा साहित्यिक अर्थबोध के साथ ।